12:14 PM

405
भक्तों की महिमा वास्तव में ऐसी ही है। वे अकेले ही मुक्त नहीं होते, अपितु अपने कुल भर को मुक्त कर देते हैं।

पाँचवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! इस प्रकार शिवजी जब काशी में राज्य कर रहे थे, उसी समय दुर्ग नामक एक महाबलवान् दैत्य देवताओं को अत्यन्त दुःख पहुँचाने लगा। उसे यह वरदान प्राप्त था कि वह किसी भी पुरुष के हाथ से नहीं मरेगा। उस वरदान के कारण उसने तीनों लोकों को अपने वश में कर लिया और सम्पूर्ण धर्म-कर्मों को नष्ट कर डाला। उस दैत्य के अत्याचारों से दुःखी हो कर मैं, विष्णु जी तथा अन्य देवता ऋषि-मुनियों को साथ ले, शिवजी की शरण में गये और उनसे अपने कष्ट का सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। उस समाचार को सुन कर शिवजी ने भगवती गिरिजा को यह आज्ञा दी कि तुम उस दैत्य का वध कर डालो। भगवती गिरिजा ने शिवजी की आज्ञा सुन कर विन्ध्यवासिनी का स्वरूप धारण कर उस दुर्ग नामक दैत्य को मार डाला। तभी से वे 'दुर्गा' के नाम से प्रसिद्ध हुईं। उस दैत्य के मारे जाने से देवताओं को अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ।

हे नारद ! इस प्रकार शिवजी ने बहुत दिनों तक काशी में राज्य किया। जब राजा दिवोदास ने उन्हें कष्ट पहुँचाया, तब उन्होंने काशी को छोड़ दिया और मन्दराचल पर्वत पर अपनी राजधानी बना कर रहने लगे।" इस कथा को सुन कर नारद जी ने अत्यन्त आश्चर्य में भर कर ब्रह्मा जी से पूछा—"हे पिता ! वह राजा दिवोदास कौन था, जिसने शिवजी को काशी ही छुड़ा दिया था? तदुपरान्त शिवजी ने किस उपाय द्वारा काशी को फिर प्राप्त किया, वह कथा भी आप मुझे सुनाने की कृपा करें।" ब्रह्मा जी बोले—हे नारद ! पहले पद्मकल्प में स्वायंभुव मन्वन्तर के मनु के वंश में दिवोदास नामक एक राजा उत्पन्न हुआ। वह राजा अपने नाम के अनुरूप ही क्षात्रधर्म में अत्यन्त दृढ़, परम ज्ञानी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:15 PM

और शिवजी का भक्त था। उसने अपना राज्य छोड़ कर, काशीपुरी में जा, अत्यन्त तप किया। उसके राज्य त्याग देने से संसार में बहुत अकाल पड़ा, जिसके कारण सब मनुष्य अत्यन्त दुःखी हुए। राजा न होने के कारण सब जगह चोरियाँ होने लगीं, धर्म भ्रष्ट हो गया, यज्ञ-कर्म नष्ट हो गये। सर्वत्र दुःख का साम्राज्य छा गया तथा सब लोग पापाचरण करने लगे।

हे नारद ! उस समय देवताओं ने मेरे पास आ कर यह कहा—"हे ब्रह्मन् ! राजा न होने के कारण संसार की दशा अत्यन्त खराब हो रही है। अस्तु, आप शीघ्र ही कोई उपाय कीजिए। यह सुन कर मैं देवताओं को साथ ले काशीपुरी में जा पहुँचा और जिस स्थान पर राजा दिवोदास तप कर रहा था, वहाँ पहुँच कर उससे बोला—"हे राजन् ! तुम अपना राज्य फिर से सम्भालो। जब तुम पुनः शासन कर उठोगे, तब तुम्हारे राज्य में वर्षा होगी, जिससे प्रजा को दुःखों से मुक्ति मिलेगी। उस समय बासुकि नामक नाग अपनी अनंग-मोहिनी नामक कन्या का विवाह तुम्हारे साथ कर देगा। वह कन्या अत्यन्त पतिव्रता तथा धर्मव्रत-धारिणी होगी। उसके द्वारा तुम अत्यन्त आनन्द प्राप्त करोगे।" यह सुन कर राजा दिवोदास ने मुझसे कहा—"हे प्रभो ! मैं केवल उसी शर्त पर राज्य करने के लिए तैयार हूँ कि अब से सभी देवता आकाश में स्थित रहें और नाग आदि पाताल में जा कर निवास करें। पृथ्वी पर मनुष्यों के अतिरिक्त और कोई नहीं रहे।"

हे नारद ! राजा दिवोदास की इस शर्त को मैंने अपने अहंकार में भर कर स्वीकार कर लिया। मुझे परिणाम का ध्यान नहीं रहा। अस्तु, राजा की शर्त के कारण हम तीनों देवताओं तथा इन्द्र आदि को पृथ्वी छोड़ देनी पड़ी। इसके पश्चात् जब मैं शिवजी के समीप पहुँचा, उस समय शिवजी ने मुझसे यह कहा—"हे ब्रह्मा ! मन्दराचल पर्वत तपस्या कर रहा है। हम उसे वरदान देने जा रहे हैं, सो तुम भी हमारे साथ वहाँ चलो।"

हे नारद ! शिवजी की आज्ञा सुन कर मैं उनके साथ चल दिया।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:15 PM

अब हम लोग वहाँ पहुँचे और शिवजी ने अपने भक्त से वरदान माँगने के लिए कहा, उस समय मन्दराचल पर्वत ने शिवजी से यह प्रार्थना की कि, ''हे प्रभो ! मैं काशी के समान होना चाहता हूँ। आप कृपा करके मेरे ऊपर निवास करें। मेरी यह अभिलाषा है कि आप गिरिजा जी तथा अन्य गणों सहित कुशद्वीप को पवित्र करें।'' मन्दराचल का यह प्रार्थना सुन कर शिवजी को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उस समय मैंने शिवजी से यह कहा—''हे प्रभो ! मैंने आपकी माया में मोहित हो कर राजा दिवोदास को वरदान दे दिया है कि अब से सभी देवता पृथ्वी पर वास न करके, आकाश में रहेंगे; इसलिए आप भी मन्दराचल की इस प्रार्थना को स्वीकार कर लें।'' मेरे यह वचन सुन कर शिवजी ने अपना लिंग काशी में स्थित कर दिया और मन्दराचल को इच्छित वरदान दे अपने गणों सहित वहीं निवास करने लगे।

हे नारद ! इस प्रकार शिवजी लिंग रूप हो कर काशी में रहे। उस लिंग का नाम 'अविमुक्त' प्रसिद्ध हुआ। उस लिंग का ध्यान करने से समस्त कार्य पूर्ण होते हैं। इस प्रकार शिवजी काशी को त्याग कर, मन्दर गिरि पर चले गये और विष्णु जी भी अपना धाम त्याग कर उसी पर्वत पर सुशोभित हुए। गिरिजा, गणपति, सूर्य आदि देवता तथा ऋषि-मुनि भी अपने-अपने स्थान को छोड़ कर वहीं विराजमान हुए। शेष जी आदि सभी नाग पाताल लोक को गये। उस समय जो देवता, नाग आदि पृथ्वी को छोड़ कर आकाश-पाताल को गये थे, उन्हें अपने मन में दुःख तो बहुत हुआ, परन्तु मेरे वरदान के कारण सभी विवश थे। जब हम सब लोग पृथ्वी से हट गये, तब राजा दिवोदास काशी को अपनी राजधानी बना कर, राज्य करने लगा। उसने अपनी विद्या तथा बल द्वारा ऐसे नियम प्रचलित किया कि उसके राज्य में कोई भी व्यक्ति, किसी भी प्रकार का कुकर्म नहीं कर पाता था। देवताओं ने अपने गुरु बृहस्पति के समीप जा कर उनकी स्तुति करते हुए यह प्रार्थना की—''हे प्रभो ! आप हमें कोई ऐसा उपाय बताइये, जिससे राजा दिवोदास को कोई पाप लग जाए और वह अपने राज्य से निराश

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हो कर प्रताप-हीन हो जाए। वेद कहते हैं कि पृथ्वी पर वास पाना परम दुर्लभ है। यदि किसी को पृथ्वी पर वास मिल जाए तो उसे परमपद प्राप्त होने में कोई सन्देह नहीं रहता विशेष कर काशी में, जहाँ साक्षात् भगवान् सदाशिव रहते हैं, मृत्यु होने से मुक्ति की प्राप्ति होती है। जिसने काशी-वास त्यागा, उसने मानो अपना सर्वस्व नष्ट कर लिया। काशी का चांडाल भी अन्य स्थान के राजाओं से अधिक श्रेष्ठ है, क्योंकि अन्य स्थानों में आवागमन का भय बना रहता है और काशी में वह भय कहीं ढूँढ़े भी नहीं मिलता।''

देवताओं की यह प्रार्थना सुन कर बृहस्पति जी ने कहा—''हे देवताओ ! जब तक कोई राजा अपने धर्म को नहीं त्याग देता, तब तक उसका राज्य नष्ट नहीं हो सकता। राजा दिवोदास परम धार्मिक है। जब तक वह धर्म को नहीं छोड़ेगा, तब तक तुम्हें वह स्थान प्राप्त नहीं होगा। अस्तु, तुम कोई ऐसा उपाय करो, जिससे राजा का धर्म नष्ट हो जाए। नल, दधीचि, शंख, ययाति, रावण तथा बाणासुर आदि बड़े-बड़े तेजस्वी, धर्मात्मा योद्धा भी तुम लोगों को दु:ख पहुँचा कर सुखी नहीं हुए, फिर मनुष्य तो किस गिनती में है? अब तुम यह करो कि अग्नि को बुला कर यह आज्ञा दो कि वह पृथ्वी से अपना अंश खींच ले। जब पृथ्वी पर अग्नि का निवास नहीं रहेगा, तो वहाँ के सब कार्य नष्ट हो जायेंगे। उस समय राजा दिवोदास का राज्य भी स्वत: समाप्त हो जाएगा।''

हे नारद ! बृहस्पति द्वारा बताये गये इस उपाय को सुन कर, देवता प्रसन्न हो गये। तदुपरान्त इन्द्र ने अग्नि को बुला कर सब वृत्तान्त कह सुनाया। अग्नि ने इन्द्र की आज्ञा का पालन करते हुए, अपने प्रत्यक्ष, जलगत तथा उदरगत—इन तीनों प्रकार के रूपों को पृथ्वी से खींच लिया। अग्नि के इस प्रकार लोप होते ही पृथ्वी निवासी सभी जीव अत्यन्त दु:खी हो गये। उस समय सम्पूर्ण प्रजा एकत्र हो कर राजा के पास गयी और उनसे अपने दु:ख का हाल कहने लगी। उस समाचार को सुन कर राजा दिवोदास को यह विश्वास हो गया कि इस प्रकार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:15 PM

देवताओं ने मेरे साथ शत्रुता की है। अपनी प्रजा को यह आश्वासन दे कर विदा किया तो तुम लोग किसी प्रकार की चिन्ता मत करो, मैं अपनी शक्ति द्वारा तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दूँगा।

हे नारद ! प्रजा के चले जाने पर राजा ने अपने मन में यह विचार किया कि आज तो देवताओं ने अग्नि को बुला लिया है, कल को वे किसी दूसरे को बुला लेंगे। ऐसी अवस्था में प्रजा को और अधिक कष्ट उठाना पड़ेगा। इसलिए मुझे उचित है कि देवताओं से किसी प्रकार की सहायता न ले कर मैं अपने बल पर ही राज्य करूँ। यह निश्चय कर उसने उन सब देवताओं को भी, जो पृथ्वी के प्राणियों के लिए आवश्यक कार्यों को करने के लिए नियुक्त थे, अपने यहाँ से विदा कर दिया। तदुपरान्त उसने स्वयं ही अग्नि का स्वरूप धारण कर अपनी प्रजा के कष्ट को दूर किया। इस प्रकार वह स्वयं वायु, जल, चन्द्रमा तथा सूर्य बन कर प्रजा को लाभ पहुँचाने लगा। जिस वस्तु द्वारा प्रजा का उपकार होता था, वह उसी का रूप धारण कर सब का दुःख दूर किया करता था। उसके इस पराक्रम को देख कर सभी देवता अत्यन्त लज्जित हुए और उनका कोई उपाय काम नहीं आया।''

छठा अध्याय

इतनी कथा सुन कर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! राजा दिवोदास से पूर्व ऐसा कोई राजा नहीं हुआ, जिसके ऊपर देवताओं की युक्ति भी निष्फल हो गयी हो। अतः मेरी यह इच्छा है कि ऐसे प्रतापी राजा का वृत्तान्त आप मुझे विस्तारपूर्वक सुनावें। मैं यह जानना चाहता हूँ कि जिस राजा ने अपनी प्रजा को दुःखी नहीं होने दिया, उसके ऊपर देवताओं ने फिर कोई युक्ति चलाई अथवा लज्जित हो कर बैठे रहे।''

इतनी कथा सुना कर सूत जी बोले—''हे ऋषियो ! जब ब्रह्मा जी ने नारद के मुख से यह वचन सुने तो अत्यन्त प्रसन्न हो कर इस प्रकार कहा—''हे नारद ! तुम परम धन्य हो, क्योंकि तुम शिवजी के चरित्र

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:15 PM

रूपी कथामृत को बारम्बार पी कर भी तृप्त नहीं होते हो। भला, संसार में ऐसा कौन है, जो भगवान् सदाशिव को कष्ट पहुँचा सके? अब मैं तुमसे सम्पूर्ण वृत्तान्त कहता हूँ, उसे तुम मन लगा कर सुनो। राजा दिवोदास शिवजी का परम भक्त था। जब उसने यह देखा कि काशी जी शिवजी को प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं, तो उसने स्वयं भी काशी में ही रहना स्वीकार किया। वह काशी में रह कर अत्यन्त नम्रता-पूर्वक प्रजा का पालन करता था, इसलिए उसके सम्मुख देवताओं की कुछ भी नहीं चलती थी। वह किसी भी प्राणी को दुःख नहीं देता था, यद्यपि युद्ध के समय वह सिंह के समान महान् पराक्रम का प्रदर्शन करता था। सभी देवता उसकी आज्ञा का पालन करते थे। उसकी सभा में गन्धर्व और विद्याधर नृत्य करते थे।

हे नारद ! उस राजा दिवोदास ने सूर्य बन कर शत्रुओं को भस्म किया तथा चन्द्रमा रूप हो कर अपने मित्रों को सुख पहुँचाया। युद्ध-क्षेत्र में वह अपने धनुष द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता रहा, इसलिए लोग उसे इन्द्र भी कहते थे। धर्म-अधर्म का उचित विचार कर दंड देने के कारण उसे धर्मराज कहा गया। वह अपराधियों को दंड देता था तथा धर्मात्मा एवं सज्जनों को आनन्द प्रदान करता था। उसने याचकों को धन दे कर कुबेर का पद प्राप्त किया तथा सब का पालन करने के कारण शिवजी का पद पाया। सब को भाग्य का फल देने के कारण ग्रह तथा उपग्रह के रूप में उसे माना गया। सम्पूर्ण कला-कौशलों में वह अत्यन्त प्रवीण था, इसलिए उसे विश्वकर्मा की उपाधि दी गयी। सुन्दरता में वह अश्विनीकुमार से भी अधिक सुन्दर था तथा गान-विद्या में उसने विद्याधरों को भी पराजित किया था।

हे नारद ! उसने यक्षों को अनेक प्रकार के अधिकार सौंपे तथा नागों को भी विभिन्न प्रकार के उच्च पदों पर प्रतिष्ठित किया। राजा दिवोदास के प्रताप से प्रभावित हो कर इन्द्र ने अपना ऐरावत हाथी तथा सूर्य ने उच्चैःश्रवा घोड़ा उसे दे दिया। राजा दिवोदास की सेना के योद्धा कभी किसी से हारते नहीं थे। उस राजा के शासन-काल में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:15 PM

पृथ्वी का राज्य आकाश से भी अधिक बढ़ गया। आकाश पर केवल एक ही इन्द्र का साम्राज्य है और वे अपने वज्र द्वारा पर्वतों के पंख काटते हैं, परन्तु पृथ्वी पर राजा दिवोदास ने अनेक शत्रुओं के मस्तकों को चूर्ण कर दिया था और वह गोत्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ था। आकाश में केवल एक ही चन्द्रमा है और वह पन्द्रह दिन के अन्तर से घटता-बढ़ता है, परन्तु पृथ्वी पर क्षीण होने वाला कोई भी नहीं था।

हे नारद ! आकाश पर केवल एक ही प्रकार के नवग्रह प्रसिद्ध हैं, परन्तु पृथ्वी पर सभी गृहों में नवग्रह विद्यमान रहते थे। आकाश में केवल एक ही सुवर्णगर्भ अर्थात् ब्रह्मा हैं, परन्तु पृथ्वी पर सभी भवन सुवर्णगर्भ अर्थात् स्वर्ण से भरे हुए थे।

हे नारद ! इस प्रकार राजा दिवोदास के राज्य में सभी आनन्द वर्तमान थे। कोई भी मनुष्य धर्मशास्त्र के विरुद्ध आचरण नहीं करता था। वहाँ की सभी स्त्रियाँ भी परम पतिव्रता थीं। उसके राज्य में कोई भी मनुष्य धनहीन, हिंसक अधर्मी, व्यभिचारी, निर्लज्ज, चुगलखोर, शीलरहित तथा असत्यवादी न था, अपने-अपने धर्म पर सब दृढ़ रहते थे। सभी बालक अपने माता-पिता की सेवा करते थे तथा सभी छोटे भाई निष्कपट भाव से अपने बड़े भाई की सेवा करते थे। सभी सेवक अपने स्वामी की सेवा करना परमधर्म समझते थे और विपत्ति पड़ने पर भी वे अपने स्वामी को नहीं छोड़ते थे।

हे नारद ! उस राजा के राज्य में स्थान-स्थान पर ब्रह्मभोज हुआ करते थे। राजा और प्रजा के सभी लोग ब्राह्मणों की सेवा करना अपना परम धर्म समझते थे। कुआँ, बावली, तालाब, फुलवारियाँ, उद्यान आदि चारों ओर पाये जाते थे। शिवभक्ति के अतिरिक्त किसी को अन्य कोई कार्य न था। सब स्त्री-पुरुष वेद की आज्ञा का पालन करते थे और उसी के अनुसार आचरण भी करते थे। वे सब शरीर से हृष्ट-पुष्ट तथा आर्थिक दृष्टि से भी सम्पन्न थे। किसी को स्त्री, पुत्र, धन, वस्त्र, आभूषण आदि का कष्ट नहीं था। राजा दिवोदास उन सब में अधिक धनी था। वह अपनी प्रजा का पुत्र के समान पालन करता था।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:15 PM

हे नारद ! जिसके हृदय में रात-दिन भगवान् सदाशिव का निवास रहे, उसे आनन्द के अतिरिक्त किसी भी प्रकार का कष्ट प्राप्त नहीं हो सकता। अस्तु, देवताओं ने उसके राज्य में बहुत कुछ ढूँढ़ने पर भी कोई दोष नहीं पाया, तब वे थक कर बैठ गये। राजा दिवोदास राजनीति तथा धर्म का महान् ज्ञाता था। वह सब का मित्र था तथा तीनों प्रकार की शक्तियाँ और सब प्रकार के गुणों को धारण करके, चारों उपायों का समयानुसार भली-भाँति प्रयोग किया करता था।

हे नारद ! जब देवता सब उपाय करके थक गये तथा राजा को किसी भी प्रकार नुकसान नहीं पहुँचा सके, तब वे इन्द्र को साथ ले कर मेरे पास आये और अपने दुःख का वर्णन करते हुए मुझसे इस प्रकार बोले—"हे ब्रह्मन् ! आप हमें वह उपाय बताने की कृपा कीजिये, जिसके द्वारा राजा दिवोदास को किसी प्रकार से पाप लग जाए और वह पृथ्वी के राज्य से वंचित हो जाए। जब तक हमें पृथ्वी नहीं मिलेगी, तब तक हमारा कष्ट दूर नहीं होगा। पृथ्वी का पद स्वर्ग से भी अधिक है। पृथ्वी में भी तीर्थों का पद ऊँचा है और सब तीर्थों में काशी का पद सर्वोत्तम है। काशी सेवन किए बिना सहज ही मुक्ति प्राप्ति नहीं होती। अस्तु, आप कोई ऐसा उपाय बताइए, जिससे हम लोग पुनः काशीवास प्राप्त कर सकें?"

हे नारद ! देवताओं की प्रार्थना सुन कर मैंने उनसे कहा—"हे देवताओ ! दिवोदास अत्यन्त धर्मात्मा है। वह अपने तप के कारण ही देवताओं को दुःख दे कर अभी तक बचा हुआ है। तुमने जो कष्ट उठाया है, वही कष्ट मुझे भी है; क्योंकि मुझे प्रयाग में रहना अत्यन्त प्रिय था; परन्तु उस राजा को वरदान देने के कारण अब मेरा भी प्रयाग में रहना असम्भव हो गया है। अस्तु, अब तुम सब लोग मेरे साथ विष्णु जी के पास चलो। वे ही इस समय हमारी सहायता करेंगे।" यह कह कर मैं सब देवताओं को अपने साथ ले कर श्री विष्णु जी के समीप जा पहुँचा और उनकी स्तुति करने के उपरान्त इस प्रकार बोला—"हे विष्णु जी ! आप कोई ऐसा उपाय कीजिये, जिससे मुझे तथा सब

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:15 PM

देवताओं को आनन्द प्राप्त हो।'' हमारी प्रार्थना सुन कर विष्णु जी ने यह उत्तर दिया—''हे ब्रह्मन् ! राजा दिवोदास परम धार्मिक है। यद्यपि मैं स्वयं भी यह चाहता हूँ कि दिवोदास के हाथ से पृथ्वी का शासन छीन लिया जाए; क्योंकि उसके कारण मैं अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय वृन्दावन में नहीं जा सकता हूँ, परन्तु उस पर मेरा कोई वश नहीं चलता है। भगवान् सदाशिव भी काशी छूट जाने के कारण बहुत दुःखी हैं। वे अपना दुःख मुझसे कई बार कह चुके हैं, परन्तु बिना किसी अपराध के वे भी दिवोदास के राज्य में कोई विघ्न नहीं डाल सकते।

हे ब्रह्मन् ! राजा दिवोदास के ऊपर देवताओं की कोई भी युक्ति नहीं चल सकती। इसका कारण यही है कि वह उस काशी की सेवा करता है, जो साक्षात् शिवजी का ही एक स्वरूप है। अब तुम्हीं कहो कि उसके राज्य का नाश किस प्रकार किया जाए? हाँ, यदि स्वयं शिवजी ही हम पर कोई कृपा करें तो हमारी मनोकामना पूर्ण हो सकती है। अस्तु, अब यही उचित है कि हम सब लोग शिवजी के पास चलें और उन्हें अपना दुःख कह सुनायें।'' हे नारद ! इस प्रकार निश्चय करके विष्णु जी तथा मैं अन्य सब देवताओं सहित शिवजी के समीप जा पहुँचे। वहाँ हम ने भगवान् सदाशिव की बहुत प्रकार से स्तुति करते हुए यह कहा—''हे महाप्रभु ! आप हमारी रक्षा करने की कृपा करें।''

सातवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! हम देवताओं की स्तुति सुन कर शिवजी ने कहा—''हे ब्रह्मा, हे विष्णु तथा अन्य सब देवताओ ! तुम लोग हमारे पास किस लिए आये हो? तुम हमें अपने दुःख का कारण सुनाओ।'' भगवान् सदाशिव के मुख से यह वचन सुन कर देवताओं ने कुछ सोच-विचार करके यह उत्तर दिया—''हे प्रभो ! राजा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:15 PM

दिवोदास धर्म पर आरूढ़ हो कर तथा सब प्रकार के पापों को त्याग कर, पृथ्वी पर शासन कर रहा है और उसके राज्य में सब लोग सुखी हैं। यद्यपि वह आपका भक्त है और हम सब देवताओं की सेवा में भी संलग्न रहता है, परन्तु उसने हठपूर्वक किसी भी देवता अथवा नाग आदि को पृथ्वी पर नहीं रहने दिया है। अस्तु, आपको यह उचित है कि किसी उपाय द्वारा आप राजा दिवोदास को राज्य से पदच्युत करने का प्रयत्न करें। राजा दिवोदास के राज्य-त्याग के पश्चात् ही हम लोग काशी को प्राप्त कर सकेंगे, अन्यथा नहीं।" इतना कह कर सब देवता चुप हो गये।

हे नारद ! देवताओं की यह प्रार्थना सुन कर शिवजी ने कहा—"हे देवताओ ! राजा दिवोदास हमारा परम भक्त है। वह काशी का, जो हमारे दूसरे शरीर के समान है, रक्षक है। अस्तु, काशी के रक्षक को किसी प्रकार का दुःख प्राप्त नहीं हो सकता।" इतना कह कर शिवजी चुप हो गये, परन्तु उसी समय काशी का स्मरण आ जाने के कारण, उनकी आँखें आँसुओं से भर गयीं। कुछ देर तक वे काशी के प्रेम में ऐसे मग्न रहे कि उनकी अवस्था मुर्च्छित के समान हो गयी। जब वे चैतन्य हुए तो उन्होंने काशी की स्तुति करते हुए इस प्रकार कहा—"हे आनन्दायिनी काशी ! अब तू मुझे कब प्राप्त होगी? यदि तू मुझे शीघ्र ही प्राप्त नहीं हुई, तो मेरा जीवन कठिन हो जाएगा।" इतना कह कर, काशी के प्रेम में मग्न हो, शिवजी मूर्छित हो गये।

हे नारद ! शिवजी की यह दशा देख कर गिरिजा ने उन्हें चैतन्य करते हुए कहा—"हे प्रभो ! आप तीनों लोकों के स्वामी हैं। संयोग और वियोग सब आपकी ही लीला है। आपकी कोप दृष्टि से प्रलय हो जाता है। आप पूर्ण स्वाधीन हैं। यदि आप काशी में पहुँचेंगे तो राजा दिवोदास आपको किसी भी प्रकार नहीं रोक सकेगा। काशी के निवासी यमराज से भी भय नहीं खाते। पापियों की मुक्तिदायिनी होने के कारण वह मुझे भी अत्यन्त प्रिय है। आप ऐसा उपाय कीजिये, जिससे हमें काशी पुनः प्राप्त हो सके तथा सब को शान्ति मिले।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे नारद ! गिरिजा के यह वचन सुनकर शिवजी ने प्रसन्न हो कर कहा—"हे गिरिजे ! तुम मुझे अत्यन्त प्रिय हो, परन्तु काशी मुझे तुमसे भी अधिक प्रिय है। इस समय तुम्हारे अमृत के समान वचन सुनकर मेरे हृदय को कुछ शान्ति प्राप्त हुई है, परन्तु तुम्हें यह ज्ञात होना चाहिए कि मैं राजा दिवोदास का अत्यन्त आदर तथा सम्मान करता हूँ। उसने ब्रह्मा जी से आज्ञा लेकर ही काशी का राज्य प्राप्त किया है। उसने वरदान माँगते समय ब्रह्मा जी से यह स्पष्ट कहा था कि यदि देवता आदि पृथ्वी पर न रहें, तभी मैं राज्य को स्वीकार कर सकता हूँ, अन्यथा नहीं। तब मुझे ब्रह्मा जी के वचन का पालन करने हेतु काशी छोड़ देनी पड़ी। राजा दिवोदास उस समय से मेरी पुरी की भली-भाँति रक्षा कर रहा है, इसलिए मुझे वह अत्यन्त प्रिय है। भला ऐसी दशा में, मैं उसका राज्य किस प्रकार छीन सकता हूँ? तुम्हें यह बात भी अच्छी तरह जान लेनी चाहिए कि जो लोग धर्मात्मा होते हैं, मैं उनकी सदैव रक्षा किया करता हूँ। यदि कोई उन्हें कष्ट पहुँचाने का प्रयत्न करता भी है, तो स्वयं ही दुःख उठाता है। इसीलिए मैं ऐसा उपाय सोच रहा हूँ जिससे मुझे काशी पुनः प्राप्त हो सकती है।"

हे नारद ! इस प्रकार शिवजी चिन्ता कर ही रहे थे कि उसी समय अचानक ही उन्होंने अपने सामने खड़ी हुई योगिनियों को देखा। तब शिवजी ने उन्हें अपने पास बुला कर बहुत आदर से बैठाया। फिर यह आज्ञा दी—"हे योगिनीगण ! तुम सब काशीपुरी में जाओ और वहाँ जा कर राजा दिवोदास के धर्म-कार्यों में कुछ ऐसा विघ्न डालो कि जिसके कारण वह काशी छोड़ कर हटने के तैयार हो जाए। ऐसा उपाय जब सफल हो जाएगा, तब मैं भी पुनः काशी में रह कर आनन्द प्राप्त करूँगा।" इस प्रकार आज्ञा दे कर शिवजी ने योगिनियों को काशी में भेज दिया और आप स्वयं समय की राह देखने के लिए वहीं स्थित रहे। उन योगिनियों ने काशी में पहुँच कर अपना स्वरूप बदल लिया। फिर वे तपस्विनियों के समान वेष धारण कर चारों ओर फैल गयीं। उनमें से कोई मालिन बनी, कोई दाई, कोई रसोई बनाने वाली,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:15 PM

कोई गाने वाली, कोई बाजा बजाने वाली, कोई मूर्ति बनाने वाली, कोई सामुद्रिक जानने वाली और कोई पुत्र देने वाली। इस प्रकार उन्होंने अनेक युक्तियाँ कीं, परन्तु राजा दिवोदास के नगर का कोई भी मनुष्य अपने धर्म को त्याग कर, पाप-कर्म में प्रवृत्त नहीं हुआ। तब वे सब एकत्र हो कर आपस में यह कहने लगीं कि हम मन्दराचल पर्वत पर जा कर शिवजी को किस प्रकार अपना मुँह दिखावें? अस्तु, वे चौंसठ योगिनियाँ मणिकर्णिका के आगे स्थित हो गयीं और लज्जा के कारण शिवजी के पास नहीं पहुँचीं। हे नारद ! जो मनुष्य उन योगिनियों को प्रणाम करता है, उसे किसी प्रकार का दुःख नहीं होता।"

आठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! योगिनियों के लौटने में जब विलम्ब हुआ, तब शिवजी ने चिन्तित हो कर सूर्य को यह आज्ञा दी ! "हे सूर्य ! अब तुम काशी में जा कर यह समाचार लाओ कि योगिनीगण अब तक क्यों नहीं लौटी हैं? इसके साथ ही तुम किसी उपाय द्वारा राजा दिवोदास को धर्म-भ्रष्ट करने का भी प्रयत्न करना, जिससे वह राज्य-हीन हो जाए; परन्तु यह ध्यान रखना कि राजा दिवोदास परम धार्मिक है, उसकी किसी प्रकार अप्रतिष्ठा नहीं होने पाये। हे सूर्य ! तुम त्रिभुवन में श्रेष्ठ हो तथा तुम्हारा नाम 'जगच्चक्षु' प्रसिद्ध है। अस्तु, तुम अपनी बुद्धिमानी से राजा दिवोदास को धर्म-मार्ग से हटा कर यहाँ लौट आओ।"

हे नारद ! भगवान् सदाशिव की आज्ञा पा कर सूर्य भी अपने स्वरूप को बदल कर काशी में जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने भिखारी, ज्योतिषी, दरिद्री, योगी, जटाधारी, परमहंस, दिगम्बर, छली तथा मतिहीन आदि अनेक प्रकार के रूप धारण किये। कहीं उन्होंने इन्द्रजाल को फैलाया, कहीं ब्रह्मज्ञान को प्रकट किया, कहीं वेद के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:15 PM

विरुद्ध प्रचार किया, कहीं मीमांसा शास्त्र की व्याख्या की, कहीं ब्राह्मण बने, कहीं राजकुमार हुए, कहीं सर्व ज्ञाता बने और कहीं अपने को तत्वज्ञानी के रूप में प्रकट किया; परन्तु तो भी वे राजा दिवोदास के राज्य में किसी को भी अधर्मी न बना सके। इस प्रकार जब एक वर्ष बीत गया और उनके किये कुछ न हो सका, तो उन्होंने मन में विचार किया कि मेरा यहाँ आ कर कुछ भी वश नहीं चल सका। अब यदि मैं विफल-मनोरथ हो कर शिवजी के पास लौटूँ तो वे मुझे अपने क्रोध से भस्म कर डालेंगे। उस समय ब्रह्मा और विष्णु भी मुझे नहीं बचा सकेंगे। इसलिए मुझे उचित है कि मैं शिवजी की आज्ञा उल्लंघन के पाप से बचने के लिए यहीं काशी में रह जाऊँ। काशी शिवजी का ही स्वरूप है और इसके सेवन का बड़ा धर्म कहा गया है। इसलिए मुझे सब ओर से अपना मन हटा कर, यहीं निवास करना चाहिए।

हे नारद ! इसके उपरान्त सूर्य ने यह विचार किया कि शिवजी की आज्ञा का पालन करना मेरा धर्म था, उसे पालन करने में असमर्थ रहने के कारण मुझे पाप लग सकता है। इसलिए यही उचित है कि मैं यहाँ से लौट कर नहीं जाऊँ। धर्म के विपरीत अर्थ और काम का सेवन नहीं करना चाहिए। कुछ लोग यह कहते हैं कि अर्थ रक्षा करना धर्म है, वह उचित नहीं है; क्योंकि राजा हरिश्चन्द्र, कुश तथा ययाति ने धर्म को न छोड़ते हुए, अपने शरीर को त्याग देना स्वीकार किया, जिसके कारण उन्हें मोक्षपद प्राप्त हुआ। इसके साथ ही राजा बलि, विरोचन तथा प्रह्लाद ने भी धर्म की रक्षा के लिए दुःख उठाये। अतः सब को त्याग कर, धर्म की रक्षा करना ही उचित है। काशी-सेवन करने से बढ़ कर और कोई धर्म नहीं है।

हे नारद ! इस प्रकार निश्चय करके सूर्य ने बारह शरीर धारण किये और उन सब शरीरों द्वारा वहीं काशी में स्थित हो गये। वे बारहों सूर्य सेवा करने पर मनुष्यों की सम्पूर्ण मनोकामनाओं को सिद्ध करते हैं। उसके नाम इस प्रकार हैं—पहले सूर्य 'लोलार्क' नाम से अस्सी-संगम पर स्थित हैं, वह स्थान सब तीर्थों का शिरोमणि माना जाता है। दूसरे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:16 PM

सूर्य 'उत्तरार्क' नाम से उस स्थान पर स्थित हैं, जहाँ पहले राजा प्रियव्रत ने स्त्री का शरीर पा कर तपस्या की थी और शिव-गिरिजा से वरदान पा कर, अन्त में गिरिजा की सखी बन गये थे। उसी स्थान पर एक बकरी ने राजकन्या के रूप में जन्म लेकर मुक्ति प्राप्त की थी। वे भी अपने भक्तों को उत्तम फल प्रदान करने वाले हैं। तीसरे सूर्य 'आदित्य' नाम से साम्बपुर में उपस्थित हैं, वहाँ साम्ब का कुष्ठ रोग दूर हुआ था। पाँचवें सूर्य 'मयूषादित्य' नामक हैं, जो शिवजी तथा गिरिजा की सेवा द्वारा शिवजी के दाहिने नेत्र बन कर प्रतिष्ठित हुए। उनकी गणना आठ वसुओं में से एक वसु के रूप में की जाती है। छठे सूर्य 'खखोलादित्य' के नाम से प्रसिद्ध हैं। जिस समय कद्रू और विनता में विवाद हुआ था तथा उसमें विनता हार कर कद्रू की सेविका बनी थी, उस समय अपनी माता की दुरावस्था को देख कर गरुड़ को अत्यन्त कष्ट हुआ था। तब गरुड़ अमृत लेने के लिए देव लोक में गये और वहाँ देवताओं पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् अमृत लेकर अपनी माता विनता के पास चल दिये। कश्यप के पुत्र गरुड़ जिस समय अमृत लेकर लौट रहे थे, उसी समय मार्ग में विष्णु जी ने उन्हें रोक कर बड़ा भारी युद्ध किया। उस युद्ध में विष्णु जी गरुड़ को नहीं जीत सके। तब उन्होंने छल करके गरुड़ से यह वरदान माँगा कि तुम हमें अमृत दे दो और हमारे वाहन भी हो जाओ। तब गरुड़ ने विष्णु जी की बात स्वीकार कर उन्हें अमृत दे दिया और उनके वाहन भी बन गये। उस समय विनता ने युद्ध स्थल पर खखोलादित्य सूर्य की स्थापना की थी, जिनकी उपासना से विनता की लज्जा दूर हुई ! वे खखोलादित्य अपने भक्तों की सम्पूर्ण मनोकामनाओं को पूरा करने वाले हैं।

हे नारद ! सातवें 'अरुण' नामक सूर्य शिवजी से उत्तर दिशा की ओर विराजमान हैं। वे विनता के पुत्र अरुण नाम से प्रसिद्ध हुए थे। उनकी सेवा करने से भी सम्पूर्ण कष्ट दूर होते हैं। आठवें 'बृहदादित्य' नामक सूर्य विशालाक्षी देवी के दक्षिण ओर स्थित हैं। उनकी सेवा करके अल्पायु हारीत नामक मुनि युवा हो गये थे। वे सम्पूर्ण रोगों को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:16 PM

दूर करने वाले तथा आनन्द प्रदान करने वाले हैं। नौवें सूर्य का नाम 'केशवादित्य' है। उन्होंने विष्णु जी से उपदेश प्राप्त किया था। एक दिन जब सूर्य ने यह देखा कि विष्णु जी पादोदक तीर्थ पर शिवलिंग की पूजा कर रहे हैं, तो उन्होंने उनके पास जा कर यह पूछा कि हे विष्णु जी ! आप तो सब से अधिक श्रेष्ठ हैं, फिर आप यहाँ किनकी पूजा कर रहे हैं? उस समय विष्णु जी ने उन्हें यह उत्तर दिया—"हे सूर्य ! भगवान् सदाशिव हम से बड़े हैं, अतः हम यहाँ पर उन्हीं का पूजन कर रहे हैं। तुम भी शिवलिंग का पूजन करो, तो तुमको उच्च पद की प्राप्ति होगी। यह सुन कर सूर्य उसी दिन से शिवलिंग का पूजन करने लगे और विष्णु जी को अपना गुरु जान कर वहीं स्थित हो गये। दसवें 'विमलादित्य' नामक सूर्य को हरिकेश ने वन में स्थापित किया था। प्रबाहु का पुत्र, जो उच्च देश का निवासी था, दुर्भाग्यवश कोढ़ी हो गया; तब वह अपने स्त्री-पुरुष, घर-बार आदि को छोड़ कर काशी में चला आया और इन्हीं विमलादित्य सूर्य की पूजा करके अच्छा हो गया। तभी से वे सूर्य कुष्ठ-रोग को दूर करने में विशेष प्रसिद्ध हैं।

हे नारद ! ग्यारहवें सूर्य का नाम 'कनकादित्य' है। वे भगवान् विश्वनाथ के दक्षिण की ओर स्थित हैं। वे प्रतिदिन गंगा की स्तुति किया करते हैं, इसी से उनका मुख गंगा की ओर है। बारहवें 'यमादित्य' नामक सूर्य उस स्थान पर स्थित हैं, जहाँ बैठ कर यमराज ने कठिन तपस्या की थी। उनके दर्शन से यमपुर में नहीं जाना पड़ता। उनकी स्थापना स्वयं यमराज ने की थी। जो मनुष्य चतुर्दशी के दिन भरणी नक्षत्र में, उस स्थान में जा कर श्राद्ध करते हैं, उन्हें गया में श्राद्ध करने के समान फल प्राप्त होता है।

हे नारद ! काशी में स्थित बारहों सूर्यों का वर्णन सुनने से रोग तथा पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य इनकी सेवा करता है, वह अत्यन्त आनन्द प्राप्त करता है तथा उस पर शिवजी भी प्रसन्न होते हैं। यह बारहों सूर्य शिवजी के परम भक्त हैं तथा शिवजी के मुख्य सेवक के रूप में स्मरण किये जाते हैं। हे नारद ! इसके अतिरिक्त पाँचों देवता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:16 PM

भी शिवजी के अनन्य सेवक हैं। जो मनुष्य शिव-भक्ति को त्याग कर किसी अन्य देवता की पूजा करता है तथा जो यह समझता है कि अन्य देवता शिवजी से भिन्न हैं, वह पशु के समान महामूर्ख है। वेद का कथन है कि शिवजी सब में सन्निहित हैं। वे परब्रह्म, निर्गुण, आनन्दस्वरूप तथा सब को प्रसन्नता प्रदान करने वाले हैं। अत: एकमात्र उन्हीं का पूजा श्रेयस्कर है।"

नौवाँ अध्याय

इतनी कथा सुन कर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! अब आप मुझे यह बताइये कि जब ये बारहों सूर्य अपना स्वरूप धारण करके काशी में स्थित हो गये, तदुपरान्त क्या हुआ?" ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! जब सूर्य काशी में रह गये और शिवजी के पास लौट कर नहीं पहुँचे, उस समय शिवजी अत्यन्त व्याकुल हो कर इस प्रकार कहने लगे—"हाय ! सूर्य भी अब तक लौट कर नहीं आये। इस भाँति शिवजी बहुत समय तक काशी का स्मरण कर व्याकुल होते रहे। तदुपरान्त उन्होंने यह विचार किया कि वेदज्ञ ब्रह्मा वहाँ जा कर सब समाचार ला सकते हैं। अस्तु, यह निश्चय करने के उपरान्त उन्होंने मुझसे यह कहा—"हे ब्रह्मन् ! हमने योगिनीगण तथा सूर्य को काशी में भेजा था, परन्तु वे लोग अभी तक लौट कर नहीं आये। पता नहीं, इसका क्या कारण है? काशी हमारे हृदय में बसी हुई है। यद्यपि हमारे मस्तक पर चन्द्रमा विराजमान है, फिर भी काशी का वियोग रूपी दाह हमारे हृदय से नहीं जाता है। अस्तु, अब तुम स्वयं काशी जाओ। वहाँ जाने से तुम्हें अत्यन्त पुण्य प्राप्त होगा और हमारा भी शोक दूर होगा।"

हे नारद ! शिवजी की यह आज्ञा सुनकर मैं हंस पर चढ़कर काशीपुरी चल दिया। वहाँ पहुँच कर मैंने एक दुर्बल ब्राह्मण का रूप बनाया और राजा दिवोदास के पास जा पहुँचा। राजा दिवोदास मुझे देखते ही अपने आसन से उठ खड़ा हुआ। तत्पश्चात् उसने मेरा बहुत

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

स्वागत सम्मान करते हुए तथा उचित आसन पर बैठाते हुए यह पूछा कि "हे प्रभो ! आपके आगमन का कारण क्या है?" उस समय मैंने राजा को यह उत्तर दिया—"हे राजन् ! मैं तुम्हारी नगरी में बहुत दिनों से रहता हूँ और तुमको भली-भाँति जानता हूँ। तुम्हारे समान धर्मात्मा राजा संसार में कोई और नहीं है। तुम्हारी प्रजा, सन्तान, भाई-बन्धु आदि तो अच्छी तरह है? हे नृपश्रेष्ठ ! अच्छा, अब मैं तुम्हें अपने आगमन का कारण बताता हूँ। हे राजन् ! मेरे पास शुद्ध धन तथा देवता आदि सभी उपस्थित हैं। अस्तु, मैं तुम्हारी काशीपुरी में यज्ञ करना चाहता हूँ। तुम्हारी इस राजधानी से अधिक उत्तम तीर्थ अन्य कोई नहीं है। वेदों का भी यही कहना है कि काशी शिवजी का दूसरा स्वरूप है।

हे राजन् ! तुम शिवजी की प्रसन्नता के निमित्त काशी का पालन करते हो, इसीलिए तुम्हारे ऊपर किसी की कोई युक्ति नहीं चल पाती। तुम अन्य देवताओं को शिवजी के समान मत समझना। शिवजी सब से श्रेष्ठ और सब का मनोरथ पूर्ण करने वाले हैं। हे राजन् ! जो ब्राह्मण पराये हित-चिन्तक होते हैं, वह इसी प्रकार का उपदेश दिया करते हैं। इसीलिए मैंने भी तुम्हें यह उपदेश दिया है। इन बातों पर ध्यान देने से तुम्हारी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी। अब तुम मुझे यज्ञ में सहायता प्रदान करो।"

हे नारद ! इतना कह कर जब मैं चुप हो गया, तब राजा ने हाथ जोड़ कर मुझ से इस प्रकार कहा—"हे ब्राह्मण ! आप यहाँ आनन्दपूर्वक यज्ञ करें और जिस वस्तु की इच्छा हो, वह मुझसे ले लें। मैं सब प्रकार से आपका सेवक हूँ तथा मेरे घर में जो भी सामग्री है, वह सब आपके लिए ही है। वेद में प्रजा का पालन राजा का सब से बड़ा धर्म कहा गया है। जिस देश में प्रजा दुःखी होती है, वहाँ वज्र से भी अधिक प्रभाव रखने वाली तीक्ष्ण अग्नि उत्पन्न होती है। वह अग्नि सब को भस्म कर डालती है। हे विप्र ! मेरा यह नियम है कि मैं सभी ब्राह्मणों का चरण-सेवक हूँ। उन्हीं की कृपा से मेरे सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण होते हैं। जब मुझे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:16 PM

स्नान करने की इच्छा होती है तब मैं ब्राह्मण के चरण धो कर, उस जल को अपने शरीर पर डाल लेता हूँ, और जब मैं ब्रह्मभोज करता हूँ, उस समय उसे सौ यज्ञों से कम नहीं समझता। मेरी रात-दिन यही अभिलाषा बनी रहती है कि कोई अतिथि मेरे घर पधारे और मुझे अपनी सेवा करने का अवसर प्रदान करे। अस्तु, आप प्रसन्नतापूर्वक यहाँ यज्ञ कीजिये। मैं आपकी सब प्रकार से सेवा करूँगा।''

हे नारद ! यह सुन कर मैं प्रसन्न हो कर 'हरिसर' नामक स्थान पर जा पहुँचा। वहाँ मैंने राजा दिवोदास की सहायता से दस अश्वमेध यज्ञ किये। तब से वह स्थान 'दशाश्वमेध तीर्थ' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। गंगा के समीप होने के कारण वह स्थान और अधिक पवित्र माना गया। तदुपरान्त मैंने वहाँ शिवलिङ्ग की स्थापना की और स्वयं भी वहीं स्थित हो गया। यद्यपि मैंने अनेक प्रयत्न किये, परन्तु उस राजा में किसी भी प्रकार का दोष निकालने में मुझे सफलता नहीं मिली। अस्तु, काशी को सर्वगुण सम्पन्न जान कर, मैंने शिवजी के पास लौटना उचित नहीं समझा। यद्यपि मैंने शिवजी की अवज्ञा की थी, तो भी मुझे इसलिए भय नहीं था; क्योंकि मैं यह जानता था कि जो व्यक्ति काशी का सेवन करता है, उसके ऊपर शिवजी कभी क्रोध नहीं करते। वहाँ शिवजी के भक्त स्वच्छन्द विचरण करते हैं। बड़े-बड़े पापियों के पाप भी काशी में आ कर नष्ट हो जाते हैं। वहाँ अन्य किसी देवता की आज्ञा नहीं चलती। वहाँ का कोई भी प्राणी यमराज से भयभीत नहीं होता। पापियों को तो काशी में रह कर जो आनन्द मिलता है, वह वैकुण्ठ में भी कभी प्राप्त नहीं होता। जो मनुष्य काशी में शिवलिङ्ग की स्थापना करता है, वह अपने मन में किसी भी बड़े पाप से नहीं डरता। यही जान कर मैंने अपने स्थान पर शिवलिङ्ग की स्थापना की थी। जिस लिङ्ग को मैंने वहाँ स्थापित किया था उसका नाम 'ब्रह्मेश्वर' है। वह लिङ्ग सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करने वाला तथा सम्पूर्ण चिन्ताओं को दूर करने वाला है। हे नारद ! जो मनुष्य इस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:16 PM

कथा को सुनता है अथवा किसी दूसरे को सुनाता है, उसके भी सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।"

दसवाँ अध्याय

इतनी कथा सुन कर नारद जी ने कहा—"हे ब्रह्मन् ! जब आप भी काशीपुरी में स्थित हो गये, तब भगवान् सदाशिव ने क्या किया, वह वृत्तान्त आप मुझे सुनाने की कृपा करें?" ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवजी निर्गुण ब्रह्म होते हुए भी अपने भक्तों की प्रसन्नता के निमित्त मनुष्य के समान लीला-चरित्रों को किया करते हैं। जब मेरे आने से अधिक विलम्ब हुआ, उस समय शिवजी अत्यन्त चिन्तित हो कर विलाप करने लगे। काशीपुरी की याद करके उनके नेत्रों से आँसू बह निकले और वे इस प्रकार कहने लगे कि कैसा आश्चर्य है कि जिसे भी हम काशी में भेजते हैं, वह वहीं रह जाता है। इस प्रकार बहुत कुछ सोच विचार करने के उपरान्त शिवजी ने अपने मुख्य गणों को पास बुलाया।

हे नारद ! उन गणों में कुछ के नाम इस प्रकार—शंकुकर्ण, महाकाल, घण्टाकर्ण, महोदर, सोमनन्द, नन्दसेन, सुरतदर्भ, चण्डकेश, विन्दक, छाग, कपर्दी, पिंगलाक्ष, वीरभद्र, किरात, चतुररत्न, निकुंभ, तेजाक्ष, भारभूत, लांगल, सुखादि, दुखादि—आदि। ये गण शिवजी को अत्यन्त प्रिय हैं। जब ये लोग आ गये, तब शिवजी ने इन सब को आज्ञा दी कि "तुम सब काशी में जा कर हमारे कार्य को सिद्ध करो। जिस प्रकार हमें स्कन्द, गणपति, शाख, विशाख, नैगमेयी, नन्दी तथा भृङ्गी प्रिय हैं, उसी प्रकार तुम सब भी मुझे अत्यन्त प्रिय हो। तुम्हें देख कर काल भी भयभीत हो जाता है। तुम सब कार्य करने में अत्यन्त कुशल हो। अस्तु, काशी में जा कर शीघ्र ही हमारा काम बनाओ। देखो, तुमसे पूर्व योगिनी, सूर्य तथा ब्रह्मा जी को भी हमने काशी में भेजा था; परन्तु उन्होंने लौट कर हमें कोई समाचार नहीं दिया और वे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:16 PM

स्वयं वहीं पर स्थित हो गये। इसलिए तुम वहाँ पहुँच कर बहुत सावधानी से कार्य करना और हमारी आज्ञा का भली-भाँति पालन करना। सबसे पहले तुम में से दो गण काशी जायें और वहाँ का समाचार ले कर लौटें, तदुपरान्त आवश्यकतानुसार और लोग जायें।''

हे नारद ! शिवजी की यह आज्ञा पा कर उनमें से शंकुकर्ण तथा महाकाल नामक दो गण काशी जी को चल दिये। इन्द्रजाल की माया से गुप्त हो कर वे दोनों शीघ्र ही काशी में जा पहुँचे, परन्तु जिस समय वे वहाँ पहुँचे तो उस पुरी की शोभा को देख कर उनका भी मन लौटने को न हुआ। फलस्वरूप सूर्य आदि की भाँति वे भी वहीं रह गये। उन्होंने भी वहाँ शिवलिङ्ग की स्थापना की। शिवजी की अवज्ञा करने का पाप, काशी निवास करने के कारण उन्हें भी पाप नहीं लगा। हे नारद ! सच बात तो यह है कि जो लोग एक बार काशी को प्राप्त करके, फिर उसे किसी प्रकार छोड़ देते हैं, वे मानो हाथ में आयी हुई मुक्ति को त्याग देते हैं। अस्तु, उन गणों को न लौटते देख कर शिवजी ने दो गण और भेजे, परन्तु वे भी पहले गणों की ही भाँति शिवलिङ्ग स्थापित करके काशी में ही रह गये और लौट कर शिवजी के पास नहीं पहुँचे। उस समय शिवजी को अत्यन्त चिन्ता हुई।

हे नारद ! इस अद्भुत गति को देख कर शिवजी ने चिन्ता करते हुए, अपने मन में यह विचार किया कि वास्तव में काशी परम मनोहर है, वहाँ मैं जिसे भी भेजता हूँ, वही लौट कर नहीं आता। यद्यपि अब मैं यह भली-भाँति जान गया हूँ कि जिसे भी काशी में भेजा जायेगा, वही वहाँ स्थित हो जाएगा, तो भी मैं और गणों को भेजने में नहीं चूकूँगा; क्योंकि चन्द्रमा और सूर्य ग्रहण लगने पर भी अपने कार्य को नहीं छोड़ते। पूर्व जन्म के कार्यों को ही इस जन्म में संस्कार कह कर पुकारा जाता है। अस्तु, उस संस्कार को दूर करने के लिए उपाय करना ही श्रेष्ठ कहा गया है। संस्कार के बल से भोजन बनाने आदि के सब उपकरण उपस्थित हो सकते हैं और भोजन भी तैयार हो कर आ सकता है, परन्तु जब तक उपाय द्वारा उसे हाथ के आश्रय से मुँह में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नहीं डाला जाता, तब तक क्षुधा की निवृत्ति नहीं होती। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को उचित है कि वह उपाय से अपना मुँह कभी न मोड़े।

हे नारद ! यह निश्चय करके शिवजी ने पाँच गणों को और भेजा, परन्तु वे भी काशी में पहुँच कर फिर वहाँ से लौट कर नहीं आये। उन्होंने भी शिवलिङ्ग स्थापित करके काशी में रहना स्वीकार कर लिया। जब शिवजी ने उन्हें भी काशी में स्थित होते हुए अनुमाना, उस समय अपने मन में यह विचार किया कि यह भी अच्छी ही बात है कि हमारे गण काशी में जा-जा कर स्थित हो रहे हैं। हमारे गणों को वहाँ रहना हमारे रहने के समान ही है। जब ये सब लोग वहाँ पहुँच जायेंगे, तब पीछे से हम भी वहीं निवास करेंगे। यह विचार कर सदाशिव जी ने कण्डू आदि चार गण और भेजे। वे भी शिवलिंग स्थापित करके काशी में ठहर गये। उन चारों गणों ने जो चार शिवलिङ्ग स्थापित किये थे, उनकी महिमा संसार में प्रसिद्ध है। वे समस्त पापों को नष्ट करने वाले तथा अपने भक्तों को सम्पूर्ण आनन्द प्रदान करने वाले हैं। अस्तु, इसके उपरान्त शिवजी ने तारक आदि बाईस गणों को और भेजा। वे सब जब काशी में पहुँचे तो उन्होंने अनेक उपायों द्वारा राजा दिवोदास को धर्म-भ्रष्ट करना चाहा; परन्तु उन्हें किसी भी प्रकार अपने कार्य में सफलता प्राप्त नहीं हुई। तब उन्होंने एकत्र हो कर परस्पर इस प्रकार विचार किया कि हमें सहस्त्रों बार धिक्कार है, जो हम शिवजी के गण होते हुए उनके कार्य को पूरा नहीं कर सके।

हे नारद ! उन गणों ने आपस में विचार करने के उपरान्त यह कहा कि हम शिवजी का आदेश पालन नहीं कर सके, इससे यह प्रतीत होता है मानो हम उनके शत्रु हों, इस अवज्ञा के कारण हम सब को नरक प्राप्त होगा। करोड़ों शुभ-कार्य किये जाने पर भी उन्हें आनन्द प्राप्त नहीं होता, जो लोग भगवान् सदाशिव की आज्ञा पालन करने में असमर्थ रहते हैं, उन्हें दुःख-रूप समझना चाहिए। इस प्रकार वार्तालाप करते हुए जब शिव-गणों ने भगवान् सदाशिव का ध्यान किया तो उन्हें श्रेष्ठ बुद्धि की प्राप्ति हुई। वे सब गण भी राजा से छिपकर,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:16 PM

काशी में स्थित हो गये। उन्होंने भी अपने-अपने नाम से शिवलिङ्गों की स्थापना की। उन शिव लिङ्गों की सेवा करके सब लोग अपने-अपने मनोरथ को प्राप्त करते हैं।

हे नारद ! उन शिव लिङ्गों में 'कपर्देश्वर' लिङ्ग की महिमा सर्व प्रसिद्ध है। उसी स्थान पर विमलोदक नामक सरोवर है, जिसका जल स्पर्श करने से मनुष्य शिव के समान हो जाता है। उस कुण्ड का इतिहास भी अत्यन्त आनन्ददायक है। संक्षेप में वह इतिहास इस प्रकार है कि त्रेतायुग में एक वाल्मीकि नामक व्यक्ति परम शैव तथा जितेन्द्रिय थे। वे प्रतिदिन उसी कुण्ड में स्नान करते और उसी के तट पर बैठ कर तपस्या करते थे। एक दिन उन्होंने एक भयानक पिशाच को देखा। ऋषि ने उसे दुःखी देख कर दुःख का कारण पूछा, तदुपरान्त उसे कुण्ड के भीतर ले जा कर शिवलिङ्ग के दर्शन कराये और उसी में स्नान भी करा दिया। फिर उसके सम्पूर्ण शरीर में उन्होंने भस्म भी लगा दी। इन सब क्रियाओं के कारण वह पिशाच पाप-मुक्त हो, सुन्दर शरीर धारण कर, शिवपुरी को चला गया। उसी समय से उस कुण्ड का नाम 'पिशाचमोचन' भी प्रसिद्ध हुआ है। वहाँ एक शिवभक्त को भोजन कराने से एक करोड़ ब्रह्मभोज का फल प्राप्त होता है। इस कपर्देश्वर शिवलिङ्ग के अतिरिक्त गणों द्वारा स्थापित किये हुए लिङ्ग भी वहाँ अत्यन्त प्रतिष्ठित हैं। उन सब की सेवा भी आनन्द प्रदान करने वाली है। जो लोग उन शिवलिङ्गों की पूजा करते हैं, वे अपने सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त करते हैं। हे नारद ! जो लोग इस कथा को सुनते तथा पढ़ते हैं, उन्हें कभी दुःख प्राप्त नहीं होता और भूत-पिशाचों का भय सदा के लिए छूट जाता है। यह कथा निःसन्देह महान् आनन्द देने वाली है।''

❁❁❁

ग्यारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! इस प्रकार अपने गणों के न लौटने पर शिवजी अत्यन्त चिन्तित हुए और विचार करने लगे कि अब वहाँ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:16 PM

किसे भेजा जाए। राजा दिवोदास ने मुझे अत्यन्त दुःख पहुँचाया है, जो उसने मेरा काशीवास छुड़ा दिया। अब इस समय मुझे अपना कोई भी मित्र दिखाई नहीं देता। इस प्रकार चिन्ता करने के उपरान्त शिवजी ने काशी का स्मरण किया और कहा—"जो लोग काशी में निवास करते हैं वे मानो हमारे ही उदर में स्थित हैं। उन्हें किसी प्रकार का भय नहीं रहता। जिस प्रकार हव्य को यज्ञ में जलते समय कोई भय नहीं होता, उसी प्रकार काशी में रहने वाले पापियों को भी किसी की चिन्ता नहीं रहती है। जो लोग वहाँ रह कर हमारी कथा को सुनते हैं और अपने मुख पर शिव-काशी शब्द लाते हैं, वे उच्च गति को प्राप्त करते हैं। काशी का विस्तार पाँच कोस का है। वह हमारे शरीर के ही समान है। जो लोग काशी का सेवन करते हैं, उन्हें अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है। वे किसी भी प्रकार हमारे शत्रु तथा पापी नहीं हैं। जो लोग शुद्ध हृदय से हमारी भक्ति करते हैं, उन्हें काशी की महिमा भली-भाँति विदित है। यही कारण है कि हमारे गणों ने काशी में पहुँच कर, वहीं अपना निवास बना लिया, अन्यथा वे हमें छोड़ कर कहीं भी नहीं रह सकते हैं। निश्चय ही उनके भाग्य बहुत उत्तम हैं। अस्तु, अब हमें कुछ और लोगों को भी वहाँ भेज देना चाहिए।"

हे नारद ! यह विचार करके शिवजी ने गणपति को बुलाया। फिर उन्हें आदर-प्यार सहित अपनी गोद में बैठा कर इस प्रकार कहा—"हे गणपति ! काशी का राजा दिवोदास मुझे बहुत दुःख पहुँचा रहा है, क्योंकि उसके कारण मेरा काशीवास छूट गया है। उसके इस व्यवहार से देवता भी अत्यन्त दुःखी हैं। जब तक वह वहाँ राज्य कर रहा है, तब तक मैं काशी नहीं जा सकता। जिन्हें मैंने उस राजा को धर्म से पतित करने के लिए भेजे थे, वे सब भी वहीं जा कर रह गये तथा अभी तक किसी ने भी लौट कर कोई समाचार नहीं दिया है। मेरे जितने भी गण हैं, वे सब युद्ध में तो प्रवीण हैं; परन्तु उनमें तुम्हारे जैसा बुद्धिमान् कोई नहीं है। तुम्हारे भाई स्कन्द ने भी अनेक बार अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया है, परन्तु तुम प्रत्येक कार्य बुद्धि के बल से करते हो। अतः मेरी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:16 PM

यह इच्छा है कि अब तुम स्वयं काशी में जाओ और मेरे कार्य को पूरा करो। तुम काशी में जा कर स्थित हो जाना तथा छिपे रह कर सब गणों सहित राजा को दुःख पहुँचाना, जिससे मेरा मनोरथ सिद्ध हो सके।''

हे नारद ! इतना कह कर शिवजी तथा गिरिजा जी ने गणपति को आशीर्वाद दिया। तब वे अनेक प्रकार के उपाय सोचते हुए, काशीपुर में जा पहुँचे। वहाँ वे ज्योतिषी, ब्राह्मण का स्वरूप धारण कंर, नगर में घूमने लगे। जब काशीवासियों ने उन्हें देखा तो वे सब उनका बहुत आदर-सत्कार करने लगे। इस प्रकार कुछ दिनों में जब सब काशीवासी उनसे परिचित हो गये तथा आदर-सम्मान करने लगे, तब उन्होंने यह युक्ति निकाली कि वे स्वयं सब लोगों के अन्तःकारण में प्रवेश करके, उन्हें बुरे स्वप्न दिखाने लगे। इस प्रकार रात्रि में तो वे लोगों को स्वप्न दिखाते और सबेरा होते ही उनके पास जा कर स्वप्न का फल बताते थे। जितने भी दुस्वप्न हो सकते थे, वे उन सब को गणेश जी ने काशीवासियों को दिखाया तथा उनका फल भी प्रत्यक्ष प्रकट कर दिया। इस प्रकार लोग भयभीत हो कर काशी छोड़ कर भागने लगे। गणपति ने किसी के ग्रहों को बुरा बताया तो किसी के भाग्य को खोटा कहा। वे कभी किसी के घर में घुस जाते और अनेक प्रकार की माया करके स्त्रियों के हृदय में सन्देह उत्पन्न किया करते थे। इसी प्रकार की बातें देख-सुन कर सब स्त्री-पुरुष गणेश जी पर विश्वास करने लगे और उन पर प्रेम भी रखने लगे। यहाँ तक कि राजा दिवोदास की पत्नी भी गणेश जी की भक्त बन गयी।

हे नारद ! काशी की स्त्रियाँ गणेश जी की प्रशंसा करती हुई परस्पर इस प्रकार कहती थीं कि जैसा ब्राह्मण यह है, वैसा हमने आज तक कहीं नहीं देखा है। यह जो कुछ भी कहता है, वह कभी मिथ्या नहीं होता। यह ब्राह्मण परम बुद्धिमान् तथा शीलवान् है। यह थोड़ा-सा जल पी कर ही प्रसन्न हो जाता है। इसके सभी कार्य अत्यन्त श्रेष्ठ हैं। यह पवित्र, विचारशील, उदार तथा दयालु है। यह ज्योतिष-विद्या को भली-भाँति जानता है और सभी श्रेष्ठ गुणों की खान के समान है। इस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:17 PM

प्रकार की बातें करके वे उन्हें अपने घरों में ठहरातीं और बहुत प्रकार से आदर-सत्कार करती थीं।

हे नारद ! एक दिन राजा दिवोदास की पत्नी लीलावती ने उचित अवसर जान कर अपने पति से यह कहा—"हे स्वामिन् ! इन दिनों काशीपुरी में एक ब्राह्मण आया हुआ है। वह सम्पूर्ण विद्याओं की खान है। हे पति ! वह ब्राह्मण दर्शन करने के योग्य है। अस्तु, मेरी यह इच्छा है कि आप भी उसका दर्शन प्राप्त करें।" रानी के मुख से यह शब्द सुन कर राजा ने प्रसन्न हो कर कहा—"हे प्रिये ! मैं अवश्य ही ऐसे ब्राह्मण का दर्शन प्राप्त करना चाहूँगा। तुम उसे शीघ्र ही यहाँ बुलाओ।" यह सुन कर रानी ने अपनी एक सखी को भेज कर गणेश जी को बुला लिया। जिस समय गणेश जी राजा के समीप पहुँचे, उस समय राजा को ऐसा अनुभव हुआ मानो साक्षात् ब्रह्मतेज ही शरीर धारण किये चला आया हो। राजा ने अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक उन्हें प्रणाम किया तथा गणपति ने भी वेद मन्त्रों द्वारा उसे आशीर्वाद दिया। दोनों ओर से कुशल-प्रश्न होने के बाद वार्तालाप प्रारम्भ हुआ। दोनों ही धर्मज्ञ तथा बुद्धिमान् थे. अस्तु, गणेश जी से परिचय प्राप्त करके राजा को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। जब गणेश जी विदा हो कर चले गये, उस समय राजा ने रानी की प्रशंसा करते हुए कहा—"हे प्रिये ! तुम ने इस ब्राह्मण के सम्बन्ध में जो प्रशंसा की थी, वास्तव में वह सर्वथा सत्य थी। यह ब्राह्मण निश्चय ही त्रिकालदर्शी है। अब मैं प्रातःकाल इस ब्राह्मण को फिर बुला कर अपने भविष्य के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न करूँगा।"

हे नारद ! प्रातःकाल होते ही राजा दिवोदास ने गणेश जी को फिर बुला भेजा और उन्हें रत्न आदि की बहुमूल्य भेंट दे कर इस प्रकार कहने लगा—"हे विप्रश्रेष्ठ ! मैंने अपने देश का धर्म पूर्वक राज्य किया है और अपनी प्रजा को पुत्र के समान पाला है। अपने धर्म के कारण मैंने अनेक प्रकार के सांसारिक भोग भी प्राप्त किये हैं तथा बहुत प्रकार के दान भी दिये हैं। ब्राह्मणों से अधिक श्रेष्ठ मैं देवताओं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:17 PM

को भी नहीं मानता। देवताओं ने मुझे पदच्युत करने के लिए अनेक जघन्य कार्य किये, परन्तु ब्राह्मणों का सेवक होने के कारण वे मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सके। मैंने अब तक अपने धर्म को एक पल के लिए भी नहीं छोड़ा है। इसलिए मेरी लोक में कभी निन्दा नहीं हुई है। मेरे हृदय में किसी प्रकार की अभिलाषा शेष नहीं रही है और न किसी वस्तु की इच्छा होती है। मेरा हृदय त्यागवृत्ति की ओर झुकता चला जा रहा है। न जाने मुझे यह क्या हो गया है, सो नहीं कह सकता। अब आप भली-भाँति विचार करके, मुझे इस सब का कारण बताने की कृपा करें।''

हे नारद ! राजा के इन वचनों को सुन कर ब्राह्मण रूपधारी गणेश जी ने उत्तर दिया—''हे राजन् ! तुमने जब मुझ से यह बात पूछी ही है, तो मैं इसका अवश्य उत्तर दूँगा। राजनीति तथा वेद का कथन है कि राजाओं के सम्मुख बिना पूछे कोई बात नहीं कहनी चाहिए, अस्तु, अब मैं तुम्हें यह बताता हूँ कि तुम्हारे मन न लगने का कारण क्या है? हे नृपश्रेष्ठ ! तुम वास्तव में बड़े भाग्यशाली हो, क्योंकि ब्राह्मणों के चरण-कमलों में तुम्हारा अगाध प्रेम है। तुम्हारा शरीर यश, कीर्ति एवं विद्या से अलंकृत है। तुम्हारा तेज अग्नि के समान है और सत्य पालन में तुम साक्षात् धर्मराज के तुल्य हो।''

हे राजन् ! तुम ऊँचाई में हिमाचल पर्वत के समान और राजाओं में मनु के समान हो। इसके साथ ही पवित्रता में गंगा के समान, मुक्ति देने में काशी के समान, दाह दूर करने में मेघ के समान, संहार करने में शिव के समान, पालन करने में विष्णु जी के समान, यज्ञ करने में ब्रह्मा जी के समान, वाचालता में सरस्वती के समान तथा सुन्दरता में कामदेव के समान हो। लक्ष्मी तुम्हारे हाथ में निवास करती है। तुम्हारे मुख को देख कर जो लक्षण प्रतीत होते हैं, वह हमने तुमसे कहे हैं। अब तुम हमारी एक बात और सुनो। वह बात यह है कि आज से अठारहवें दिन उत्तर दिशा से एक ब्राह्मण तुम्हारे पास आयेगा। वह तुम्हें जिस बात का उपदेश करे, तुम उसे सत्य समझना और उसी के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:17 PM

अनुसार आचरण भी करना। उसकी आज्ञा मानने से तुम्हारे सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होंगे।'' इतना कह कर ब्राह्मण रूपधारी गणपति अपने स्थान को लौट आये।

''हे नारद ! राजा दिवोदास गणपति द्वारा कहे हुए इन वचनों को अत्यन्त गुप्त रख कर समय की प्रतीक्षा करने लगा। इस प्रकार गणपति भी अपने पिता की आज्ञा का पालन करके अत्यन्त प्रसन्न हुए। तदुपरान्त वे अनेक स्वरूप धारण कर काशी में स्थित हो गये। जिस समय काशीपुरी राजा दिवोदास के आधीन न थी, उस समय भी गणेश जी वहाँ अनेक स्थानों पर विराजमान थे। उन्हीं सब स्थानों पर जा कर वे पुनः प्रतिष्ठित हो गये। वे सभी स्थान सिद्ध क्षेत्र हैं। जिस समय विष्णु जी ने आ कर राजा दिवोदास को काशी से भगाया और शिवजी ने मन्दराचल पर्वत से उतर कर पुनः काशी को बसाया, उस समय सर्वप्रथम शिवजी ने गणेश जी की ही प्रशंसा की थी। तदुपरान्त गणेश जी सर्वप्रथम हो कर वहीं सुख से निवास करने लगे। शिवजी ने अपनी काशीपुरी की रक्षा के निमित्त चारों ओर योगिनियों को स्थापित किया था। फिर उन्होंने सात ओर गणों को, आठवीं ओर ब्रह्मा को तथा सब ओर रक्षा करने के हेतु विष्णु जी को स्थापित किया। यह सभी गण तथा देवता अपने-अपने भक्तों को अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाले हैं। शिवजी का यह चरित्र दोनों लोकों में प्रशंसनीय तथा सम्पूर्ण मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। जो लोग इस चरित्र को ध्यानपूर्वक सुनते हैं, वे दोनों लोकों में आनन्द प्राप्त करते हैं।''

बारहवाँ अध्याय

इतनी कथा सुन कर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! राजा दिवोदास ने अपना राज्य किस प्रकार छोड़ा तथा शिवजी मन्दराचल पर्वत से उतर कर किस प्रकार काशी जी में पहुँचे और वहाँ उन्होंने क्या-क्या चरित्र किये, यह सब आप मुझे विस्तारपूर्वक सुनाने की

CC-0. Late.Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:17 PM

कृपा करें।'' ब्रह्मा जी बोले—''हे पुत्र ! जब शिवजी ने यह देखा कि गणेश जी भी काशी से लौट कर नहीं आये तो उन्हें अत्यन्त चिन्ता हुई। फिर उन्होंने विष्णु जी की ओर देखते हुए यह कहा—''हे विष्णु जी ! तुम सम्पूर्ण संसार को आनन्द प्रदान करने वाले तथा सब का पालन करने वाले हो। हम तुम्हें अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय समझते हैं। देखो, अब तक हमने बहुत-से लोगों को काशी भेजा, परन्तु वे सबके सब वहीं स्थित हो गये। न तो उन्होंने हमारा काम ही पूरा किया और न लौट कर ही आये। पता नहीं उन्हें किस विपत्ति ने घेर लिया। अस्तु, हम तुमसे यह कहते हैं कि अब तुम्हीं जा कर हमारे कार्य को पूर्ण करो। तुम अन्य लोगों के समान वहीं मत रह जाना। अब तुम वह उपाय करो, जिससे हमारा यह कार्य भी सिद्ध हो जाए। तुम स्वयं ही बुद्धिमान् हो, अतः तुम्हें अधिक क्या समझाया जाए?''

हे नारद ! भगवान् सदाशिव के मुख से निकले हुए इन वचनों को सुन कर विष्णु जी ने कहा—''हे प्रभो ! आप परब्रह्म हैं। हमारा तो यह विश्वास है कि सम्पूर्ण यश और अपयशों को दिलाने वाले आप ही हैं। आप यदि किसी को कोई सेवा करने की आज्ञा देते हैं तो उसका सौभाग्य ही समझना चाहिए। सब लोग अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार अनेक उपाय करते हैं, परन्तु उनकी सिद्धि आपके ही हाथ में रहती है। सभी सांसारिक कार्य आपकी कृपा के बिना निष्फल हैं। आप ही सब कर्मों के साक्षी तथा सब को जीवन-दान देने वाले हैं। सम्पूर्ण मन्त्र आप के ही अधीन रहते हैं तथा आप की कृपा से ही सब कार्यों की पूर्ति होती है। आपकी शुभ दृष्टि द्वारा ही जीव को आनन्द प्राप्त होता है। आपकी प्रदक्षिणा करके यदि किसी कार्य को किया जाए तो वह अवश्य ही सफल होता है। अब यदि आप स्वयं आज्ञा देकर इस कार्य को करने के लिए भेज रहे हैं तो मैं भी अपनी माया के बल द्वारा इसे पूर्ण करूँगा। मुझे मुहूर्त्त देखने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जिस समय आपने मुझे आज्ञा दी, वह समय ही मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ है। मैं अब शीघ्र ही काशी में पहुँचता हूँ और आप

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:17 PM

विश्वास रखें कि प्राण चले जाने पर भी मैं इस कार्य को पूर्ण करूँगा।''

हे नारद ! इतना कह कर विष्णु जी ने शिवजी को बारम्बार प्रणाम किया। तदुपरान्त वे उनकी स्तुति करते हुए काशीपुरी चल दिये। जिस समय वे काशी में पहुँचे तो वहाँ की सुन्दरता देख कर उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उन्होंने मस्तक नवा कर सर्वप्रथम काशी को प्रणाम किया, फिर उस स्थान को गये, जहाँ गंगा तथा वरुणा नदी परस्पर मिली हैं। उन्होंने वहाँ हाथ-पाँव धो कर आचमन किया तथा स्नान करके शिवजी का पूजा किया। जिस स्थान पर उन्होंने स्नान किया था, वह स्थान उसी दिन से पादोदक तीर्थ के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ। वहाँ जो व्यक्ति भगवान् विष्णु जी की पूजा करते हैं, उन्हें सम्पूर्ण पापों से मुक्ति प्राप्त होती है। विष्णु जी ने वहाँ आदिकेशव नामक अपने स्वरूप का भी पूजन किया। जिस स्थान पर वह मूर्ति प्रतिष्ठित है, उसे श्वेतद्वीप कह कर पुकारा जाता है। वहीं क्षीरोदधि आदि अनेक तीर्थ और भी हैं। वहाँ स्नान करने से मनुष्य के सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। उस तीर्थ से दक्षिण की ओर चक्रतीर्थ, गदातीर्थ, पद्मतीर्थ, रमातीर्थ, गरुड़तीर्थ, नारदतीर्थ तथा प्रह्लादतीर्थ आदि अनेक तीर्थ हैं। उन सब में स्नान करने से मनोकामना की प्राप्ति होती है और मनुष्य समस्त पापों से छूट कर मुक्ति-पद को प्राप्त करता है।''

तेरहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! विष्णु जी अपनी आदि केशव मूर्ति में प्रविष्ट हो कर काशी में स्थापित हुए और कुछ अंशों में निकल कर शिवजी के कार्य में प्रवृत्त हुए।'' यह सुन कर नारद जी बोले—''हे पिता ! विष्णु जी कुछ अंश से क्यों निकले और कहाँ गये, यह आप मुझे सुनाने की कृपा करें।'' ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया—''हे नारद ! जिस कारण से विष्णु जी का सम्पूर्ण अंश उस आदि केशव मूर्ति से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बाहर नहीं निकला, वह यह है कि जब पूर्वजन्म के पुण्य उदय होते हैं, तभी काशी का वास मिलता है। जिस प्राणी पर शिवजी की कृपा नहीं होती, वह काशी में नहीं रह पाता। जो मनुष्य काशी में नहीं रहते, उनके जन्म को व्यर्थ समझना चाहिए। संसार के सभी तीर्थसेवकों के समान काशी की सेवा किया करते हैं। काशी परमश्रेष्ठ और तीनों लोकों से न्यारी है। काशी में मृत्यु होने पर स्वर्ग से भी अधिक आनन्द प्राप्त होता है।

हे नारद ! यही कारण था कि विष्णु जी अपने पूर्ण अंश से आदि केशव रूप धारण कर काशी में स्थित हुए और अपने छोटे-से अंश से उस मूर्ति से निकल कर, काशी में भ्रमण करने लगे। गरुड़ और लक्ष्मी भी उनकी मूर्ति से कुछ दूर उत्तर की ओर स्थित हुईं। जिस स्थान पर गरुड़ तथा लक्ष्मी स्थित हुईं, उसे धर्म क्षेत्र कहा जाता है। उसके दर्शन से अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है। अस्तु, विष्णु जी ने अपना स्वरूप इस प्रकार का धारण किया जो तीनों लोकों को मोहित करने वाला था। उन्होंने श्रेष्ठ वस्त्राभूषणों से सुसज्जित हो, अपने को पुण्यकीर्ति नाम से प्रसिद्ध किया। गरुड़ भी उनके शिष्य बन कर विनयकीर्ति के नाम से प्रसिद्ध हुए। लक्ष्मी जी भी मनुष्यों के समान स्वरूप धारण कर गोमोक्ष नाम से विख्यात हुईं। सब लोग इन तीनों के सुन्दर स्वरूप को देख कर मोहित होने लगे। फिर विष्णु जी विभिन्न प्रकार के चरित्रों द्वारा काशीवासियों को मोहित करने लगे।

हे नारद ! जिस समय काशीवासी झुण्ड के झुण्ड विष्णु जी का दर्शन करने के लिए आते, उस समय विष्णु जी और गरुड़ जी, गुरु-शिष्य की भाँति आपस में इस प्रकार वार्तालाप करने लगते थे। शिष्य गरुड़ जी, जिन्होंने अपना नाम विनयकीर्ति रख छोड़ा था, पुण्यकीर्ति नामक विष्णु जी की स्तुति करते हुए कहते—"हे गुरु जी ! आप उस धर्म का वर्णन करने की कृपा कीजिये, जिससे संसार को आनन्द प्राप्त हो।" गरुड़ की बात को सुन कर विष्णु जी मन ही मन मुस्कुराकर तथा उच्च-स्वर से सब लोगों को सुना कर इस प्रकार उत्तर देते—हे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शिष्य ! यह सृष्टि अनादि है, पुरातन काल से यह इसी प्रकार चली आती है। इसे उत्पन्न करने वाला कोई नहीं है। यह स्वयं ही प्रकट होती है और स्वयं ही नष्ट हो जाती है। ब्रह्मा से लेकर तृण पर्यन्त सभी जीव बारम्बार जन्म लेते हैं और बारम्बार मृत्यु को प्राप्त होते हैं। आत्मा को ही ईश्वर समझना चाहिए। आत्मा के अतिरिक्त अन्य कोई किसी का स्वामी नहीं है। ब्रह्मा आदि बड़े देवताओं को भी काल ने नहीं छोड़ा। इस बात पर जो विश्वास रखता है, उसी को बुद्धिमान् समझना चाहिए। हे शिष्य ! संसार में न कोई बड़ा है और न कोई छोटा। न कोई सुखी है और न कोई दुःखी आहार-विहार में सब एक समान हैं। अच्छा-बुरा भी कोई नहीं है। किसी को न तो पाप लगता है और न कोई निष्पाप रहता है। भोजन सब को तृप्त करता है और पानी सब की प्यास बुझाता है। मृत्यु का भय ऐसा है जो देवताओं को भी लगा रहता है। ब्रह्मा और विष्णु जी भी उससे भयभीत रहते हैं। जितने भी शरीरधारी हैं, वे सब विद्या, बुद्धि और ज्ञान के कारण एक से हैं। संसार में मनुष्य को केवल एक ही बात का ध्यान रखना चाहिए और वह बात यह है कि किसी भी जीव को दुःख देना पाप है। प्राणियों पर दया करने के समान अन्य कोई धर्म नहीं है।

"हे शिष्य ! दान चार प्रकार के होते हैं—रोगी को औषध देना, भयभीत का भय छुड़ाना, भूखे को भोजन कराना तथा विद्यार्थी को विद्यादान देना। औषध और मन्त्र के प्रभाव से धन एकत्र करना चाहिए और उससे अपने शरीर का पालन करना चाहिए। सुख को स्वर्ग और दुःख को नरक समझना चाहिए। वेद में प्रवृत्ति और निवृत्ति नामक जो दो प्रकार की मान्यताएँ हैं, उनका ठीक आशय यही है कि जीव-हिंसा प्रवृत्ति और जीवों पर दया निवृत्ति है। वेदान्त का यह वचन है कि प्रत्यक्ष से बढ़ कर प्रमाण योग्य और कोई बात नहीं है। तुम अपने मन में विचार करके स्वयं देखो कि जो लोग यज्ञ में जीवों को बलिदान करके उन्हें मार डालते हैं और स्वर्ग प्राप्त करने की इच्छा से अग्नि में तिल, घी आदि को जलाते हैं, भला इस सब से बढ़ कर आश्चर्य और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

क्या होगा? यह तो बिल्कुल व्यर्थ की बातें हैं।''

हे नारद ! इस प्रकार पुण्यकीर्ति नामक विष्णु ने धर्म के विपरीत बहुत-सी बातें कहीं। उन बातों को सुन कर काशी-निवासी मोहित हो गये और पुराने धर्म से उनका चित्त उचटने लगा। जिस प्रकार विष्णु जी ने पुरुषों को मोहित किया, उसी प्रकार लक्ष्मी जी ने भी स्त्रियों को बौद्धधर्म का उपदेश करके उन्हें उल्टी बातें सिखा दीं तथा उन्हें अपने अधीन कर लिया। उन्होंने स्त्रियों को केवल शरीर पालन करने की शिक्षा दी तथा अपने उपदेश से पातिव्रत धर्म को व्यर्थ सिद्ध कर दिया। उन्होंने वर्णाश्रम धर्म को समाप्त कर देने वाले अनेक उपदेश किये। हे नारद ! उनके उपदेश का सारांश यह था—

वेद जिसे आनन्द स्वरूप ब्रह्म कहते हैं, वह अन्यत्र नहीं है, अपितु उसका तात्पर्य यह है कि जब तक इस शरीर की इन्द्रियाँ शिथिल नहीं होतीं, तब तक खूब आनन्द उपभोग करना चाहिए। परोपकार के लिए इस प्रकार तैयार रहना चाहिए कि यदि कोई मनुष्य अपना शरीर माँगे तो उसे भी दान कर देना चाहिये। उसकी उत्पत्ति पर भी धिक्कार है। कौए, कुत्ते, सियार, कीड़े आदि इसे अपना भक्ष्य बनाते हैं। यह एक न एक दिन अवश्य ही जल जाता है। तब इसे रखने से भी क्या लाभ? यदि अन्य जीवों को इसके द्वारा कोई लाभ पहुँच सके तो वह उत्तम है। यदि सम्पूर्ण सृष्टि को उत्पन्न करने वाला ब्रह्मा जी को माना जाए तो सब लोग आपस में भाई के समान हैं। फिर उन्होंने परस्पर विवाह करके अधर्म क्यों किया है? इससे सिद्ध होता है कि इस सृष्टि को उत्पन्न करने वाला ब्रह्मा नहीं है। इस संबन्ध में वेद जो कहते हैं, वह मिथ्या है। वेदों के कहने पर कभी नहीं चलना चाहिए। जिन चार वर्णों का वर्णन किया जाता है, यदि उन पर विचार किया जाए तो वह भी मिथ्या प्रतीत होता है; क्योंकि यह शरीर पंच-तत्त्वों से उत्पन्न होता है और उसी में मिल जाता है। इस प्रकार जब सभी लोग पंच-तत्त्वों से उत्पन्न हुए हैं, तब उनमें अलग-अलग वर्ण किस प्रकार हो सकते हैं? अस्तु, जाति के विचार को झूठा समझना चाहिए और यह जानना

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:17 PM

चाहिए कि सब मनुष्य परस्पर एक समान हैं।

हे नारद ! इस प्रकार बहुत-सी बातें करके लक्ष्मी ने स्त्रियों के पातिव्रत धर्म को छुड़ा दिया। विष्णु जी और लक्ष्मी के इन उपदेशों का काशी की प्रजा पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि सब लोग अपने धर्म को त्याग कर अपनी इच्छानुसार भोग-विलास करने लगे। सब पुरुष स्त्रियों के कहने में चल उठे। स्त्रियाँ जो कहतीं उसी के अनुसार वे आचरण करते थे। इस प्रकार धर्म-विरुद्ध आचरण करने से सब ओर पाप फैल गया। उस समय राजा दिवोदास ने ब्राह्मणरूपी गणपति का स्मरण कर, राज्य-कार्य से अपना हाथ खींच लिया। अपनी प्रजा की ऐसी दशा देख कर, उनकी बात को सत्य समझ कर वह इस प्रतीक्षा में रहने लगा कि कब दूसरा ब्राह्मण आवे और मेरे मन के दुःख को दूर करें। इसी चिन्ता में वह दिन-रात निमग्न रहता था।"

चौदहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—हे नारद ! जब अठारहवाँ दिन आया तो राजा दिवोदास नित्यकर्म से निवृत्त हो कर गणपति जी द्वारा बताये गये ब्राह्मण की बाट देखने लगा। उसी दिन मध्याह्नकाल में विष्णु जी ब्राह्मण का स्वरूप बनाये हुए, अन्य कई ब्राह्मणों को अपने साथ लिये, अग्नि के समान तेज धारण कर, उसके पास जा पहुँचे। राजा ने जब दूर से उन्हें आते हुए देखा तो यह समझ कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ कि वही उपदेश करने वाले ब्राह्मण चले आ रहे हैं। अस्तु, राजा ने अगवानी कर उन्हें प्रणाम किया। तदुपरान्त उन्हें अपने अन्तःपुर में ले जा कर पूजन, भजन तथा सेवन के उपरान्त अत्यन्त सम्मानपूर्वक श्रेष्ठ आसन पर बैठाया एवं उत्तमोत्तम वस्तुएँ भेंट दे-दे कर उनकी अनेक प्रकार से स्तुति प्रशंसा करते हुए इस प्रकार कहने लगा।

राजा बोला—"हे महात्मन् ! मैं कुछ दिनों से बहुत दुःखी रहा करता हूँ। इस दुःख का कारण मेरी समझ में नहीं आता। आप मुझे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:17 PM

कोई ऐसा उपाय बताइये, जिसके करने से मेरे मन का दुःख दूर हो और आनन्द की प्राप्ति हो। इसी चिन्ता में मुझे एक मास का समय व्यतीत हो गया है, परन्तु मेरा कष्ट कुछ भी दूर नहीं हुआ है।'' इतना कह कर राजा दिवोदास ने अपने राज्य-पालन, प्रताप, ब्राह्मणों की सेवा आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। फिर कहा—''हे प्रभो ! मुझे अपने दुःख का कारण यह जान पड़ता है कि मैंने अपने तपोबल के गर्व में भर कर सभी देवताओं को तृण के समान समझा है। अब मेरी यह दशा है कि मैंने जिन भोगों को आनन्दपूर्वक भोगा, वे ही मुझे रोग के समान प्रतीत होते हैं। वैसे तो यह नियम है कि यदि मनुष्य एक कल्पतक भी जीवित रहे, तो भी भोगों से तृप्त नहीं होता, परन्तु मेरी अभी से यह दशा हो गयी है कि मुझे राज्य चलाना चक्की चलाने के समान भार स्वरूप लगता है। अस्तु, आप कृपा करके कोई ऐसा उपदेश कीजिये, जिससे मैं इस आवागमन के चक्कर से छूट जाऊँ। मैं आपकी शरण में आया हूँ। आप जो भी उपदेश मुझे करेंगे, उसे मैं श्रद्धापूर्वक अवश्य स्वीकार करूँगा। मुझे आपके दर्शनों से अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ है। अब आप मुझे वास्तविक आनन्द प्रदान करने की कृपा करें।

''हे प्रभो ! मुझे यह भी अनुभव होता है कि देवताओं से विरोध करके आज तक किसी ने आनन्द प्राप्त नहीं किया है। राजा बलि, त्रिपुर, वृत्रासुर, उपव्रत, दधीचि तथा सहस्त्रबाहु आदि की कथाएँ इसका प्रमाण हैं। परन्तु मुझे देवताओं के विरोध का इसलिए कोई भय नहीं है कि मैंने ब्राह्मणों की सेवा करके अत्यन्त सम्मान पाया है। जिस प्रशंसा को देवताओं ने यज्ञ, जप, तप आदि द्वारा प्राप्त किया है, उसी प्रशंसा को मैंने ब्राह्मणों की सेवा द्वारा सहज ही प्राप्त कर लिया है। अस्तु, ब्राह्मणों का कृपा पात्र होने के कारण मैं देवताओं से किसी भी प्रकार कम नहीं हूँ। अब मेरी यह इच्छा है कि आप मुझे उचित उपदेश देकर आवागमन से छुड़ा दें।''

हे नारद ! राजा दिवोदास की बातें सुन कर ब्राह्मण रूपी विष्णु जी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ने उसकी बहुत प्रशंसा करते हुए कहा—"हे राजन् ! हमें जो कुछ कहना था, उसे तुम स्वयं ही कह चुके हो। तुम्हारा कथन पूर्णतया सत्य है। हम तुम्हारे प्रताप को अच्छी तरह जानते हैं। तुम्हारे समान न तो कोई राजा हुआ है और न होगा ही। तुमने देवताओं के साथ भी कोई शत्रुता नहीं की है; क्योंकि तुमने अपनी प्रजा का पालन इस श्रेष्ठ प्रकार से किया है कि उससे देवता भी अत्यन्त आनन्दित हैं, परन्तु हमें तुम्हारा एक ही पाप मालूम होता है। तुमने शिवजी को काशी जी से दूर कर दिया, यह तुमसे बड़ा भारी पाप हो गया है। यदि इस पाप को तुम किसी प्रकार नष्ट कर दो तो, तुम्हारे सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जायेंगे। इसका केवल एक ही उपाय है, वह हम तुम्हें बताते हैं। वेद का कथन है कि जो मनुष्य शिवलिंग की स्थापना करता है, उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। मनुष्य के शरीर में जितने रोम हैं, उतने पाप एक शिवलिंग की स्थापना करने से नष्ट हो जाते हैं। विशेष करके काशी में शिवलिंग की स्थापना करने वाले को किसी पाप से स्वप्न में भी भयभीत नहीं होना चाहिए। जो प्राणी काशी में शिवजी का एक भी लिंग स्थापित कर दे, उसके सम्बन्ध में यह समझना चाहिए, मानो उसने बहुत-से देशों में शिवलिंग स्थापित किये हैं। इसलिए तुम्हें यह उचित है कि तुम भी काशी जी में शिवलिंग की स्थापना करो। इससे तीनों लोकों में तुम्हारा यश फैलेगा और तुम अपने सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त करोगे।"

हे नारद ! इतना कह कर विष्णु जी कुछ देर के लिए चुप हो गये। फिर कुछ मन्त्रों का पाठ करके, राजा के शरीर को अपने हाथ से स्पर्श करते हुए इस प्रकार बोले—"हे राजन् ! हमने ज्ञान दृष्टि से जो कुछ देखा है, अब उसे तुम्हें बताते हैं। तुम अत्यन्त ज्ञानी तथा सर्वगुणसम्पन्न हो। जिस मनुष्य को धन अथवा देश प्राप्त करने की इच्छा हो, उसे प्रातःकाल प्रतिदिन तुम्हारा नाम लेना चाहिए। तुम्हारे पास आकर हमें भी बहुत आनन्द प्राप्त हुआ है।" इतना कह कर ब्राह्मण वेषधारी विष्णु जी बारम्बार हँसने तथा मस्तक हिलाने लगे। तदुपरान्त मन ही

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मन गुनगुनाते हुए बोले—''इस राजा के बड़े भाग्य हैं। यह अब निश्चय ही मोक्ष को प्राप्त करेगा क्योंकि ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु आदि देवता और ऋषि-मुनि जिन शिवजी का हर समय ध्यान करते हैं, वे शिवजी स्वयं प्रतिदिन इस राजा का स्मरण करते हैं। तीनों लोकों में इसके समान भाग्यशाली अन्य कोई नहीं है।''

हे नारद ! इस प्रकार मन ही मन गुनगुनाने के पश्चात् विष्णु जी ने राजा से फिर कहा—''हे राजन् ! तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी। तुम इसी शरीर से परमपद को प्राप्त करोगे। जिस समय तुम शिवजी का लिंग स्थापित करोगे, उस समय तुम आवागमन के बन्धन से मुक्त हो जाओगे। आज के सातवें दिन शिवजी के गण तुम्हें लेने के लिए आवेंगे। तुम भले ही इस लाभ को किसी अन्य पुण्य का फल समझो, परन्तु हम तो इसे काशी-सेवन का ही माहात्म्य समझते हैं। काशी में निवास करने के कारण ही तुमने इस उच्च पद को प्राप्त किया है। तुम्हारे दर्शन का बड़ा फल है।'' उनकी बात सुन कर राजा दिवोदास अत्यन्त प्रसन्न हुआ और हाथ जोड़ कर कहने लगा—''हे प्रभो ! आपने मुझे भवसागर से पार उतार दिया। अब यदि मैं आपको कुछ भेंट करूँ तो वह सब इस उपकार के देखते हुए अत्यन्त तुच्छ होगा।'' राजा के ऐसे वचन सुन कर विष्णु जी उसे आशीर्वाद देने के उपरान्त विदा हो गये और अपने काशी के स्थान में स्थित हुए। तदुपरान्त उन्होंने गरुड़ को शिवजी के समीप भेजा और उनके आगमन की प्रतीक्षा करने लगे। फिर अग्निबिन्दु ब्राह्मण पर कृपा करके, उन्होंने उस देश का राज्य उसे दे दिया और स्वयं पंचनद के ऊपर बैठ कर, प्रेमपूर्वक शिवजी का ध्यान करने लगे।''

पन्द्रहवाँ अध्याय

इतनी कथा सुन कर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! आप मुझे यह सम्पूर्ण वृत्तान्त विस्तारपूर्वक सुनाइये।'' ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद !

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:18 PM

सुनो, ब्राह्मणरूपी विष्णु जी से उपदेश प्राप्त कर राजा दिवोदास ने अपने सेवकों द्वारा सभी राजा, प्रजा, मन्त्री मण्डलेश्वर, पारिवारिक-जन, पुरोहित, सेनापति, वेदपाठी, यज्ञ कराने वाले तथा राजकुमारों को बुलाया। तदुपरान्त उसने अपने बड़े पुत्र रिपुंजय एवं सब स्त्रियों को भी बुलाया। जब सब लोग आ गये, तब राजा ने ब्राह्मण वेषधारी विष्णु जी की कही हुई सब बातों को सुना कर, उनसे इस प्रकार कहा—"हे स्वजनो ! अब हम इस पृथ्वी पर सात दिन तक और हैं, तदुपरान्त शिवलोक को चले जायेंगे। इसलिए आप मेरे बड़े पुत्र रिपुंजय को राज्य पद पर आसीन कर दीजिये और मुझे अपनी सेवा से निवृत्त कीजिये।"

हे नारद ! राजा दिवोदास की यह बात सुन कर सब लोगों को अत्यन्त आश्चर्य हुआ, परन्तु भय के कारण किसी ने कुछ नहीं पूछा। तदुपरान्त राजा ने सम्पूर्ण सामग्री एकत्र करवा कर, शुभ-लग्न में अपने पुत्र रिपुंजय का अभिषेक कर दिया। इसके पश्चात् राजा ने गंगा के पश्चिम की ओर एक विशाल शिव मन्दिर का निर्माण कराया। उसने अन्य देशों को जीत कर जितना धन एकत्र किया था और जो धन श्रेष्ठ रीति-नीति द्वारा संग्रह हुआ, उस धन को शिवालय बनवाने में व्यय कर दिया। फिर उसने उस मन्दिर में नरेश्वर नामक शिवलिंग की स्थापना की। उसका स्मरण करने मात्र से ही सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। शिवलिंग स्थापना करने पर राजा के हृदय में प्रसन्नता भर गयी और उसका मुख सूर्य की भाँति चमकने लगा। सम्पूर्ण सामग्री एकत्र करके शिवलिंग की षोडषोपचार विधि से पूजा की। उस पूजन के कारण राजा के हृदय में जो थोड़ा बहुत दुःख अथवा विरक्ति का भाव बच गया था, वह भी नष्ट हो गया। उसने काशी में स्थापित अन्य शिवलिंगों की भी पूजा की। पूजन और प्रणाम करने के उपरान्त वह एक स्थान पर ध्यान मग्न हो कर बैठ गया।

हे नारद ! विष्णु जी के बताये अनुसार जब सातवाँ दिन आया उस दिन एक अत्यन्त श्रेष्ठ विमान आकाश से उतर कर उस स्थान पर आ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:18 PM

पहुँचा, जहाँ राजा दिवोदास बैठा हुआ था। उस विमान में चारों ओर शिवजी के गण बैठे हुए थे। उन सब गणों की चार-चार भुजाएँ थीं और उनके शरीर से निकलने वाला सूर्य के समान प्रकाश सब ओर फैल रहा था। वे सब अपने हाथ में त्रिशूल लिये हुए थे। देखने में साक्षात् शिवजी के समान ही प्रतीत होते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि सम्पूर्ण संसार की सुन्दरता उस विमान में हो।

हे नारद ! उन शिवगणों ने विमान से उतर कर राजा के शरीर को स्पर्श किया, जिसके कारण उसका शरीर दिव्य हो गया और शिवगणों के समान ही उसके शरीर में भी वे ही सब चिह्न प्रकट हो गये। तदुपरान्त वह विमान पर बैठ कर समस्त गणों के साथ शिवजी के लोक को चला गया। इस प्रकार वह शिवगणों में गिना गया और उसे मोक्ष की प्राप्ति हुई। जिस स्थान से शिवजी के गण राजा को विमान में बैठा कर शिवलोक ले गये थे, वह स्थान भूपश्री के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ। जिस लिंग की राजा दिवोदास ने स्थापना की थी, वह दिवोदासेश्वर के नाम से भी प्रसिद्ध है। उस शिवलिंग की पूजा करने से आवागमन का भय नष्ट हो जाता है तथा मनुष्यों को अपनी सम्पूर्ण मनोकामनाएँ प्राप्त होती हैं। हे नारद ! जो कोई इस कथा को सुनता अथवा दूसरे को सुनाता है, उसे भी इस लोग में सब प्रकार के आनन्द प्राप्त होते हैं तथा परलोक में शुभगति मिलती है।''

सोलहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! विष्णु जी की आज्ञानुसार गरुड़ शिवजी के समीप पहुँचे। उस समय शिवजी ने उनसे पूछा—''हे गरुड़ ! तुम कहाँ से आ रहे हो?'' गरुड़ बोले—''हे प्रभो ! आप सब कुछ जानते हुए भी संसारी रीति के अनुसार जो यह बात मुझ से पूछ रहे हैं, वह भी आपकी लीला ही है। इतना कह कर गरुड़ ने योगिनीगण, गणेश जी, ब्रह्मा एवं विष्णु जी की सब कथा शिवजी को कह सुनायी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:18 PM

और बताया कि इस समय मुझे विष्णु जी ने आपके पास भेजा है।

हे नारद ! गरुड़ की बात सुन कर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा गिरिजा भी आनन्दमग्न हो गयीं। शिवजी के सब गण परम प्रसन्न हुए। तदुपरान्त शिवजी ने गरुड़ से इस प्रकार कहा—"हे गरुड़ ! तुम हमारे परम हितैषी हो। अब तुम्हारी जो इच्छा हो, वह हम से वर माँग लो।" श्री शिवजी के श्रीमुख से ऐसे वचन सुन कर गरुड़ ने कहा—"हे प्रभो ! मैंने आपके चरणों के दर्शन प्राप्त किये, इससे बढ़ कर अन्य किसी भी वस्तु की मुझे इच्छा नहीं है। जब आप मुझ पर इतने प्रसन्न हैं तो मुझे यह निश्चय हो गया है कि मैं आपकी माया के बन्धन से मुक्ति प्राप्त कर चुका हूँ। मेरे लिए यही सब से बड़ा वरदान है। हे स्वामी ! यदि आप प्रसन्न हो कर मुझे कुछ देना ही चाहते हैं तो मैं आपसे यही माँगता हूँ कि मुझे आपके चरण-कमलों की भक्ति प्राप्त हो।"

हे नारद ! गरुड़ के ऐसे श्रेष्ठ वचन सुन कर शिवजी ने 'एवमस्तु' कहते हुए, उन्हें अपने हृदय से लगा लिया। तदुपरान्त शिवजी ने सब लोगों को बुला कर काशी चलने की तैयारी की। उस समय मन्दराचल पर्वत अत्यन्त दुःखी हो कर शिवजी के चरणों पर गिर पड़ा और हाथ जोड़ कर कहने लगा—"हे प्रभो ! आप मुझे इस प्रकार त्याग कर मत जाइये।" मन्दराचल की प्रार्थना सुन कर शिवजी ने उत्तर दिया—"हे पर्वतश्रेष्ठ ! तुम अपने मन में चिन्ता मत करो। हम तुमसे अत्यन्त स्नेह करते हैं और यह विश्वास दिलाते हैं कि तुम्हें कभी क्षण भर के लिए भी नहीं भूलेंगे तथा लिंग रूप हो कर यहां सदैव स्थित रहेंगे।" इस प्रकार बहुत कुछ समझा-बुझा कर शिवजी ने मन्दराचल के हृदय का दुःख दूर किया और लिंग रूप धारण कर अपने एक अंश से स्थित हो गये। तदुपरान्त शुभ लग्न का विचार कर शिवजी, गिरिजा तथा अन्य गणों सहित काशीपुरी को चले। चलने के पूर्व शिवजी ने गरुड़ को यह आज्ञा दी कि तुम आगे जा कर विष्णु जी को हमारे आगमन का समाचार दो। अस्तु, गरुड़ वहाँ से चल कर सीधे विष्णु जी के समीप

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:18 PM

जा पहुँचे। जिस समय विष्णु जी अग्निविन्दु को उपदेश दे रहे थे, उसी समय गरुड़ ने पहुँच कर उनके चरण-कमलों में अपना मस्तक झुकाया।''

सत्रहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! विष्णु जी को प्रणाम करने के उपरान्त गरुड़ ने उन्हें यह शुभ समाचार दिया कि शिवजी, गिरिजा जी तथा अन्य गणों सहित यहाँ पधार रहे हैं। इस सन्देश को सुन कर विष्णु जी को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उसी समय उन्होंने यह देखा कि शिवजी अपनी सेना सहित काशीपुरी में प्रवेश कर रहे हैं। उनकी भुजाएँ सहस्त्रों सूर्यों के समान चमक रही थीं, जिनसे चारों ओर प्रकाश फैल रहा था। अनेक प्रकार के बाजे बज रहे थे तथा जय-जयकार का शब्द हो रहा था। विष्णु जी ने उस दृश्य को देख कर 'जय शिव, जय शिव' शब्द का उच्चारण किया। तदुपरान्त अग्निविन्दु से यह कहा कि तुम हमारे चक्र को स्पर्श कर लो, इससे तुम्हें मुक्ति प्राप्त हो जाएगी। विष्णु जी की आज्ञानुसार अग्निविन्दु ने जब चक्र का स्पर्श किया तो उसे मुक्ति प्राप्त हुई। तत्पश्चात् विष्णु जी ने गरुड़ को भेज कर ब्रह्मा को बुलाया, साथ ही योगिनीगण, सूर्य तथा गणेश को भी ले आने की आज्ञा दी। कुछ देर में जब ये सब लोग आ गये, उस समय विष्णु जी प्रसन्नतापूर्वक शिवजी की अगवानी करने के लिए चले।

हे नारद ! जिस समय शिवजी ने काशीपुरी में प्रवेश किया, उसी समय विष्णु जी, ब्रह्मा, गणपति आदि ने उनके समीप पहुँच कर दण्डवत्-प्रणाम किया। शिवजी ने उन सब को आशीर्वाद देकर प्रसन्न किया तथा गणपति का मस्तक सूँघ कर उन्हें अपने आसन पर बैठा लिया। उस समय शिवजी की इच्छानुसार योगिनीगण मंगल गान करने लगीं तथा बारहों सूर्य स्तुति गान करने लगे। शिवजी ने विष्णु जी को आसन पर बायीं ओर तथा मुझे दाहिनी ओर बैठाया। और गणों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

की ओर कृपा-दृष्टि करके, उन्हें भी प्रसन्नता प्रदान की। फिर योगिनीगण एवं सूर्य को बैठने की आज्ञा दे कर हर्षित किया।

हे नारद ! उस समय मैंने शिवजी को प्रसन्न देख कर यह कहा— "हे प्रभो ! मैं आपकी सेवा नहीं कर सका, इस अपराध के लिए मुझे क्षमा प्रदान करें। आपकी यह काशीपुरी है ही ऐसी कि इसमें आने के बाद मेरा मन किसी भी प्रकार लौटने को न हुआ।" मेरे मुख से यह शब्द सुन कर शिवजी बोले—"हे ब्रह्मन् ! तुम अपने मन में किसी प्रकार का भय मत करो। मैं तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूँ। तुमने अश्वमेध यज्ञ किये हैं, इसलिए तुम्हारे सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गये हैं। इस सब के साथ ही तुमने काशीपुरी में हमारे लिंग की स्थापना भी की है, इससे तुम्हारा यश और भी अधिक बढ़ गया है। जो मनुष्य काशी में एक भी लिंग की स्थापना करता है, उसके सहस्त्रों पाप नष्ट हो जाते हैं। फिर भी ब्राह्मण कभी भी दंड के योग्य नहीं है। जो लोग ब्रह्मणों को दंड देते हैं, उनका सम्पूर्ण सुख-वैभव थोड़े ही दिनों में नष्ट हो जाता है।"

हे नारद ! इस प्रकार मुझे सान्त्वना दे कर, शिवजी ने योगिनी, सूर्य तथा गणों की लज्जा को भी दूर कर दिया। तदुपरान्त उन्होंने विष्णु जी की ओर देखा, परन्तु मुख से कुछ नहीं कहा। उस अवसर पर शिवजी तथा विष्णु जी मन ही मन अत्यन्त प्रसन्न हुए। सभा में उपस्थित सभी लोग शिवजी की जय-जयकार करने लगे। शिवजी और गिरिजा ने भी अत्यन्त प्रसन्न हो कर सब लोगों की ओर कृपा-दृष्टि से देखा। जब यह आनन्द हो रहा था, उसी समय गोलोक से पाँच गौ आकार शिवजी के सम्मुख खड़ी हो गयीं। हे नारद ! तुम्हें यह बात जान लेनी चाहिए कि गोलोक शिवजी को अत्यन्त प्रिय है और उस लोक की सेवा करने का भार उन्होंने विष्णु जी को सौंपा है। उस लोक का नाम सुनने मात्र से ही सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। जो पाँच गौ शिवजी के सम्मुख आकर खड़ी हुई थीं, उनके नाम इस प्रकार थे : 1. सनन्द, 2. सुमना, 3. शिवा, 4. सुरभि तथा 5. कपिला। शिवजी ने उन गौओं की ओर प्रसन्नतापूर्वक देखा, तो उनके थनों से दूध टपक कर पृथ्वी पर गिरने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:18 PM

लगा। जिस स्थान पर उनके थनों से दूध टपका, वह कुण्ड-रूप हो गया और कपिलाह्रद् के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उस कुण्ड में स्नान करने से कोई पाप नहीं रहता। तदुपरान्त शिवजी की आज्ञा से सब देवताओं ने उस कुण्ड में स्नान एवं तर्पण किया। फिर सब लोग शिवजी से इस प्रकार बोले—"हे प्रभो ! इस कुण्ड में स्नान करके हम सब अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। अस्तु, हमारी यह इच्छा है कि इस स्थान की महिमा अत्यन्त महान् हो।"

हे नारद ! देवताओं की यह प्रार्थना सुन कर शिवजी ने उत्तर दिया—"हे देवताओ ! हम आशीर्वाद देते हैं कि यह तीर्थ अत्यन्त महान् होगा। जो मनुष्य इस कुण्ड में तर्पण श्राद्ध आदि करेगा, उसे गया में श्राद्ध करने से भी अधिक फल की प्राप्ति होगी। इस तीर्थ को सब लोग शिवगया तीर्थ कह कर पुकारेंगे तथा हमारे वृषभध्वज नाम का स्मरण करने से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाया करें। काशी के भीतर चारों युगों में दूध, दही, घृत तथा मक्खन वर्तमान रहेंगे। हम सब लोग यहाँ अंश रूप से सदैव स्थित रहेंगे तथा अपने भक्तों को वर प्रदान किया करें। यहाँ किसी की किसी भी दशा में, किसी भी कारण मृत्यु क्यों न हो, वह अवश्य ही मुक्ति को प्राप्त करेगा। जिस समय शिवजी काशी को यह वर दे रहे थे, उसी समय नन्दीश्वरगण वहाँ आ पहुँचे और दोनों हाथ जोड़ कर प्रेमपूर्वक शिवजी की स्तुति करने लगे।"

अठारहवाँ अध्याय

नन्दीश्वर ने कहा—"हे प्रभो ! मैंने आपकी आज्ञानुसार आठ बैलों का रथ सजाया है। उन सभी बैलों के कंठ में घंटे बँधे हुए हैं। उनके साथ ही आठ घोड़े भी, जो वस्त्रालंकारों से अलंकृत हैं, रथ में जुत रहे हैं। सूर्य, चन्द्रमा, पवन, गंगा, सरस्वती, ब्रह्म आदि सब अपने-अपने स्थान पर सुशोभित हैं। अस्तु, आप कृपा करके उस रथ पर विराजमान हों।" इस प्रकार कह कर नन्दीश्वर चुप हो गये। उस समय मैं, विष्णु

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जी तथा अन्य सब देवता अत्यन्त प्रसन्न हुए। शिवजी ने भी प्रसन्न हो कर हम सब को पहले तो भक्ति का वरदान दिया, फिर चलने की तैयारी की। उस समय देव माताओं ने शिवजी का नीराजन किया तथा अनेक प्रकार के मंगल मनाये। सब लोगों के कंठ से शिवजी का जय-जयकार गूँज उठा, एवं अनेक प्रकार के बाजे बजने लगे। तदुपरान्त विष्णु जी ने शिवजी को हाथ पकड़ कर आसन से उठाया और उन्हें रथ की ओर ले चले।

हे नारद ! उस समय की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। शिवजी के गण अपने-अपने डमरू बजाने लगे। उसका शब्द सम्पूर्ण दिशाओं में भर गया। तदुपरान्त तीनों लोकों के निवासी उस स्थान पर आ पहुँचे। हम उनका संक्षेप में वर्णन करते हैं। तैंतीस करोड़ इन्द्र आदि देवता, दो करोड़ तुरंगगण, एक करोड़ भैरव दल, नौ करोड़ चामुण्डा दल तथा वीरभद्र की सेना, आठ करोड़ बालखिल्य ऋषि, छियासी सहस्त्र ब्रह्मज्ञानी मुनि, सात करोड़ गणेश जी के गण, जिनका स्वरूप गणेश जी के ही समान था, असंख्य गृहस्थ ब्राह्मण, आठ करोड़ पाताल के निवासी नाग आदि, तीन करोड़ शिवजी के गण, दो-दो करोड़ दनु तथा दिति की सन्तानें अर्थात् दानव और दैत्य, आठ करोड़ गन्धर्व, पचास लाख राक्षस तथा यक्ष, आठ सहस्त्र पंखधारी तथा पंखहीन पर्वत, छः अयुत गरुड़, एक अयुत विद्याधर, साठ सहस्त्र ईश्वर, तीन सौ वंशपति, आठ लाख शरीर धारण किये वनौषधियाँ, सात उत्तम-उत्तम रत्न लिए हुए समुद्र, तीन सहस्त्र तथा पाँच अयुत नदियाँ एवं आठों दिक्पाल उस स्थान पर आ पहुँचे।

हे नारद ! ये सब शिवजी को देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा विविध प्रकार से उनकी सेवा करने लगे। उन सब को सेवा करते हुए देख कर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन सब की ओर कृपा-दृष्टि से देख कर आशीर्वाद प्रदान करने लगे। इसके उपरान्त शिवजी उस रथ पर आरूढ़ हुए। गिरिजा को उन्होंने अपने वाम भाग में बैठाया। जिस समय शिवजी गिरिजा सहित रथ पर बैठे, उस समय इन्द्र आदि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:18 PM

देवताओं ने उनकी बहुत प्रकार से स्तुति की। तदुपरान्त शिवजी काशी के भीतर प्रविष्ट हुए। अपने शरीर काशी को देख कर उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त हुई और अपने मुख से 'जय काशी, जय आनन्दवन' आदि शब्दों का उच्चारण करने लगे। स्नेह की अधिकता के कारण उनका कण्ठ गद्गद हो गया। उस समय शिवजी के परमभक्त जैगीषव्य ने पर्वत की कन्दरा से निकल कर शिवजी के दर्शन किये। शिवजी ने भी उन्हें अपने समीप बुला कर प्रसन्न किया। तदुपरान्त शिवजी काशी निवासी ब्राह्मणों का सत्कार करते हुए वरुणा नदी के समीप पहुँचे। वहाँ हिमाचल के बनाये हुए दो मन्दिरों को देख कर उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई। फिर उन्होंने विश्वकर्मा को बुला कर अपना भवन बनाने के लिए आज्ञा दी। उसे सुन कर विश्वकर्मा ने तीनों लोकों से सामग्री एकत्र करके, एक सुन्दर मन्दिर का निर्माण किया। शिवजी ने अपने पुत्रों, गिरिजा, गणों तथा देवताओं के साथ अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक उसमें प्रवेश किया। फिर उन्होंने सब लोगों का आदर-सत्कार करके विदा कर दिया और आप गिरिजा तथा परिवार सहित वहीं निवास करने लगे। हे नारद ! शिवजी और काशी का यह आख्यान सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने वाला है। इसको पढ़ने तथा सुनने से दोनों लोकों में सुख की प्राप्ति होती है।''

उन्नीसवाँ अध्याय

इतनी कथा सुन कर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! जब शिवजी अपने भवन में आये, उस समय वे मार्ग में कहीं रुके भी थे अथवा नहीं? जो मनुष्य, योगी, ब्राह्मण आदि उनके दर्शनों के निमित्त आये, उन सब के चरित्रों को भी आप कहें।'' यह सुन कर ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! काशी में आ कर सर्वप्रथम शिवजी अपने भक्त जैगीषव्य के घर पर गये। वे मुनि एकान्त-निवास करते हुए शिवजी के ध्यान में दिन-रात संलग्न रहते थे। जिन दिनों शिवजी काशी को त्याग कर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:18 PM

मन्दराचल पर्वत पर गये थे, उस समय जैगीषव्य मुनि ने यह प्रतिज्ञा की थी कि जब शिवजी फिर यहाँ लौट कर आ जायेंगे, तभी मैं अन्न-जल ग्रहण करूँगा। यह निश्चय करके वे एक कन्दरा में जा छिपे और शिवजी का स्मरण एवं ध्यान करने लगे। अट्ठासी सहस्त्र वर्षों तक उन्होंने न तो पानी पीया और न भोजन किया। इसे या तो मुनि को योग बल समझना चाहिए अथवा यह समझना चाहिए कि उनके ऊपर शिवजी की कृपा थी। शिवजी के अतिरिक्त उन मुनि की महिमा को और कोई नहीं जान सकता। अपने इस भक्त के कारण ही शिवजी ने काशी में पुनः लौटने के लिए अनेक उपाय किये थे, क्योंकि शिवजी भक्त वत्सल हैं। उन्होंने अपने भक्त के प्रण की रक्षा के निमित्त ही राजा दिवोदास जैसे धर्मात्मा की हानि को स्वीकार कर लिया था।

हे नारद ! जैगीषव्य मुनि की कुटी में शिवजी के जाने का वृत्तान्त इस प्रकार है कि जब शिवजी उनके स्थान के समीप पहुँचे, उस समय उन्होंने नन्दीश्वरगण को यह आज्ञा दी—"हे नन्दी ! इस स्थान पर एक गड्ढा है, जिसके भीतर हमारा भक्त जैगीषव्य रहता है। उसने हमारे दर्शनों के निमित्त बहुत कष्ट उठाये हैं तथा उसके शरीर पर चर्म तथा हड्डियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं बचा है। जब से हमने काशी को त्यागा था, तभी से वह अन्न-जल त्याग कर हमारे लौटने की राह देख रहा है। जब तक हम उसे अपना दर्शन नहीं देंगे, तब तक हमें आनन्द नहीं मिलेगा। अस्तु, तुम इस कमल को ले कर उस गुफा के भीतर चले जाओ और मुनि के शरीर से इसका स्पर्श करा देना। कमल का स्पर्श पाते ही जैगीषव्य का शरीर पूर्ववत् हो जाएगा। तब तुम उनको अपने साथ लेकर यहाँ चले आना।"

हे नारद ! शिवजी की आज्ञा पा कर नन्दीश्वर ने ऐसा ही किया और वे जैगीषव्य को शिवजी के समीप ले आये। जिस समय मुनि ने शिवजी के दर्शन प्राप्त किये, उस समय इतना हर्ष हुआ कि वे आनन्द के कारण मूर्च्छित हो गये। तदुपरान्त जब उन्हें चैतन्यता प्राप्त हुई तो उन्होंने स्वनिर्मित स्तुति द्वारा शिवजी की बहुत प्रकार से प्रार्थना की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:18 PM

और यह कहा—"प्रभो ! मैं तीनों लोकों में आपको सब से श्रेष्ठ समझ कर, आपकी शरण में आया हूँ। आप मेरे ऊपर कृपा करें।" शिवजी ने इस स्तुति को सुन कर अत्यन्त प्रसन्न हो कर कहा—"हे मुनि ! हम तुम्हारे ऊपर अत्यन्त प्रसन्न हैं। अब तुम चाहो, वह वरदान हम से माँग लो।" यह सुन कर जैगीषव्य बोले—"हे प्रभो ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो कृपा करके मेरे मस्तक पर अपना हाथ रख दीजिए तथा यह वरदान दीजिए कि मैं आपके चरण-कमलों से कभी भी दूर न रहूँ। इसके अतिरिक्त मेरी यह अभिलाषा भी पूर्ण कीजिए कि मैंने जो आपका लिंग स्थापित किया है, उसमें आप गणपति तथा स्कन्द सहित निवास करें।" जैगीषव्य की प्रार्थना सुन कर शिवजी ने उत्तर दिया—"हे मुनि ! तुम जो चाहते हो, वही होगा। इसके अतिरिक्त हम तुम्हें यह भी वर देते हैं कि तुम योगसिद्धि को प्राप्त हो कर, निर्वाणपद को प्राप्त करोगे। तुम योगशास्त्र के आचार्य हो कर सब को उसका उपदेश करोगे और सब के सन्देहों को नष्ट करोगे। जिस प्रकार भृङ्गी, सोम तथा नन्दीश्वर हमारे गण हैं, उसी प्रकार तुम भी हमारे एक गण होगे।"

हे नारद ! इतना कह कर शिवजी ने जैगीषव्य के मस्तक पर हाथ फेरा, तदुपरान्त इस प्रकार कहा—"हे जैगीषव्य ! तुम जरामृत्यु से रहित होओगे। यद्यपि संसार में अनेक संयम-नियम हैं, परन्तु तुम्हारे समान नियमों का पालन करने वाला और कोई नहीं है। तुम हमारा दर्शन किये बिना कभी पानी भी नहीं पीते थे। जो मनुष्य हमारा दर्शन किये बिना भोजन कर लेता है, उसके समान पापी और किसी को नहीं समझना चाहिए। तुम हर समय हमारे समीप रहा करोगे। तुम्हें मोक्ष पद की प्राप्ति होगी। तीनों लोकों में किसी भी भक्त के साथ तुम्हारी समानता नहीं की जायेगी। तुमने हमारे जिस लिंग की स्थापना की है, वह 'जगीषव्येश्वर' नाम से प्रसिद्ध होगा। जो मनुष्य उस लिंग की तीन वर्षों तक सेवा करेगा, उसे योगसिद्धि प्राप्त होगी। उस लिंग के दर्शन तथा पूजन से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाया करेंगे और वह परम सिद्धि को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रदान करने वाला होगा। हमारी आज्ञानुसार इस क्षेत्र का नाम 'ज्येष्ठेश्वर' होगा। यहाँ पर आने से सब प्रकार की प्रसन्नता प्राप्त होगी। यदि यहाँ पर किसी एक शिवभक्त को भोजन कराया जाये तो उसका फल एक करोड़ गुना होगा।

हे जैगीषव्य ! तुम्हारे स्थापित किये हुए लिंग में हम पूर्ण रूप से सदैव स्थित रहेंगे, परन्तु कलियुग में यह लिंग सब की दृष्टि से छिपा रहेगा। जो लोग योग साधन करने वाले होंगे, वे ही इसके दर्शन प्राप्त कर सकेंगे। तुमने जिस स्तुति को बनाया है, वह सम्पूर्ण स्तुतियों की शिरोमणि होगी और उसे पढ़ने से सब लोगों के मनोरथ पूर्ण होंगे। इस स्तुति के पढ़ने तथा सुनने पर लोक में ऐसा कोई कार्य नहीं रह जाएगा, जो सिद्ध न हो सके। शिवजी के श्रीमुख से यह वचन सुन कर जैगीषव्य मुनि उनके चरण-कमलों पर गिर पड़े। तब शिवजी ने उन्हें उठा कर अपने हृदय से लगा लिया। मैंने तथा विष्णु जी ने भी मुनि को अपने कण्ठ से लगाया। शिवजी की इस दयालुता को देख कर सब लोग आनन्द में भर कर जय-जयकार करने लगे। तदुपरान्त जब शिवजी आगे बढ़ने को हुए, उसी समय ब्राह्मणों ने वहाँ आ कर शिवजी की स्तुति की।

बीसवाँ अध्याय

नारद जी ने कहा—"हे पिता ! ब्राह्मणों तथा शिवजी में जो वार्तालाप हुआ, अब आप उसका वर्णन करने की कृपा कीजिये और यह भी बताइये कि वे ब्राह्मण संख्या में कितने थे?" यह सुन कर ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! जिस समय शिवजी काशी को छोड़ कर मन्दराचल पर्वत पर चले गये, उस समय काशी के ब्राह्मणों ने अत्यन्त दुःखी हो कर क्षेत्र संन्यास ले लिया था। वे दिन-रात शिवजी का स्मरण करते और उन्हीं की प्रीति में मग्न रहते थे। वे अपने दण्ड द्वारा पृथ्वी को खोद कर वृक्षों की मूल को निकालते और उसी को खा कर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:19 PM

अपना जीवन-निर्वाह करते थे। जिस स्थान से वे जड़ों को खोदते थे, वह स्थान कुछ समय बाद एक कुण्ड के रूप में परिवर्तित हो कर और 'पुष्करिणी' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तब उसी स्थान पर उन ब्राह्मणों ने एक शिवलिंग की स्थापना की, जिसके दर्शन से सम्पूर्ण मनोरथ सफल होते हैं।

हे नारद ! वे ब्राह्मण प्रतिदिन शिवलिंग की उपासना करते, रुद्राक्ष की माला पहनते और शरीर में भस्म लगाते थे। वे शतरुद्री का जप करके शिवजी का पूजन किया करते थे तथा उन्हीं के स्मरण के अतिरिक्त अन्य किसी से कुछ प्रयोजन नहीं रखते थे। उन्होंने अपने-अपने स्थान पर अनेक शिवलिंगों की स्थापना की थी। जब उन ब्राह्मणों ने यह शुभ समाचार सुना कि शिवजी अपने परिवार सहित काशी में पधार रहे हैं, तो वे अत्यन्त प्रसन्न हो कर, शिवजी का दर्शन करने के लिए आये। उनकी संख्या इस प्रकार थी—दंडाघाट से पाँच सहस्र, मन्दाकिनी तीर्थ से दस सहस्र, हंस क्षेत्र से तीन सौ, ऋणमोचन तीर्थ से बारह सहस्र, दुर्वासा तीर्थ से भी बारह सहस्र, कपालमोचन तीर्थ से सोलह सहस्र, ऐरावत ह्रद से तीन सौ, मदनकुण्ड से दो सौ, गन्धर्वाप्सरस तीर्थ से नौ सौ, बृहस्पति तीर्थ से तीन सौ नब्बे, वैतरणी से एक सौ पचास, ध्रुव तीर्थ से छह सौ, पितृकुण्ड से एक सौ, उर्वशी ह्रद से एक सौ, पृथूदक तीर्थ से तेरह सौ, यक्षिणी ह्रद से इकतीस सौ, पिशाचमोचन कुण्ड से सोलह सौ, मानसर से तीन सौ, वासुकि ह्रद से एक अयुत, सीता ह्रद से आठ सौ, गौतम ह्रद से नौ सौ, दुर्गतिहर से ग्यारह सौ तथा गंगा के तट से पाँच सौ पचपन ब्राह्मण आये।

हे नारद ! ये सब ब्राह्मण अपने हाथों में मांगलिक वस्तुएँ लिये हुए थे। ये सब जय-जयकार करते हुए आये और शिवजी के दर्शन प्राप्त कर अत्यन्त आनन्द को प्राप्त हो गये। उन ब्राह्मणों ने शंकर सूत्र पढ़ कर शिवजी की अत्यन्त स्तुति की तथा दंडवत्-प्रणाम करके अनेक आशीर्वाद दिये। जिस समय शिवजी ने उनकी कुशलक्षेम पूछी, उस समय ब्राह्मणों ने यह उत्तर दिया—"हे प्रभो ! आप काशी छोड़ कर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

चले गये तो हम सब लोगों को अत्यन्त दुःख हुआ। और यहाँ रह कर आपका ध्यान करते हुए आपके पुनः लौटने की प्रतीक्षा करते रहे। हे नाथ ! इस काशी को तीनों लोकों से न्यारी कहा गया है। जो मनुष्य काशी में निवास करते हैं, वे परम धन्य हैं।'' इस प्रकार ब्राह्मणों ने काशी की अत्यन्त प्रशंसा की।

इतनी कथा सुना कर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! सच बात तो यह है कि शिवजी और काशी में कोई अन्तर नहीं है। काशी शिवजी का ही स्वरूप है। जो मनुष्य काशी में निवास करके शिवजी का भजन करता है, उसके जैसा भाग्यवान् अन्य कोई नहीं है। अस्तु, ब्राह्मणों के मुख से काशी की प्रशंसा सुन कर शिवजी ने इस प्रकार कहा—''हे ब्राह्मणो ! तुम सब परम धन्य हो, क्योंकि तुमने काशी-सेवन द्वारा हमें अपने वश में कर लिया है। काशी के प्रति भक्ति रखने के कारण तुम सब जीवन्मुक्त हो गये हो। जो लोग काशी के भक्त हैं, वे हमारे भी भक्त हैं और जो लोग दोनों के भक्त हैं, उनकी तो समानता कोई कर ही नहीं सकता है।

हे ब्राह्मणो ! तुम दोनों प्रकार से हमारे भक्त हो। हमारी कृपा से तुम सदैव निर्भय हो। काशी में हमारे अतिरिक्त यमराज की आज्ञा भी नहीं चल सकती। काशीवासियों से हम कभी दूर नहीं रहते हैं। जो लोग काशी में क्षेत्रसंन्यास लेते हैं, वे हमें अत्यन्त प्रिय हैं। अब तुम हम से जो भी वरदान चाहो, उसे माँग लो।'' भगवान् विश्वनाथ के मुख से ऐसे अमृतमय वचन सुन कर, वे सभी ब्राह्मण अत्यन्त प्रसन्न हुए और बारम्बार स्तुति करते हुए, अपने दोनों हाथ जोड़ कर इस प्रकार कहने लगे—''हे प्रभो ! यदि आप हम पर प्रसन्न हैं तो हम यही वरदान माँगते हैं कि आप काशी को छोड़ कर कहीं न जाएं। काशी में ब्राह्मणों का शाप किसी पर फलदायक न हो। यहाँ मरने वालों को सायुज्यमुक्ति प्राप्त हुआ करे तथा यहाँ के निवासियों का आपके चरणों में अत्यन्त प्रेम बना रहे। हे स्वामी ! हम लोगों ने यहाँ आपके जो लिंग स्थापित किये हैं, उनमें आप शक्ति सहित निवास किया करें।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:19 PM

ब्राह्मणों की यह प्रार्थना सुन कर, शिवजी ने 'एवमस्तु' कहा; तदुपरान्त अपनी दयादृष्टि द्वारा सब के दुःख को दूर कर, प्रेमपूर्वक विदा किया। तब सब ब्राह्मण शिवजी से विदा हो कर, अपने-अपने स्थान को लौट गये और भगवान् विश्वनाथ का ध्यान धरते हुए उन्हीं की पूजा में संलग्न हुए।

इक्कीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! काशी में स्थित होने के उपरान्त शिवजी ने विश्वकर्मा को बुला कर यह आज्ञा दी कि तुम पहले की ही भाँति शिवनगरी की रचना शीघ्र करो। तुम स्थान-स्थान पर उत्तमोत्तम शिवालय बनाओ और हमारे गणों के रहने के लिए अनेक मन्दिरों की रचना करो। गिरिजा तथा उनके पुत्रों के लिए अत्यन्त सुन्दर भवनों का निर्माण करो तथा देवताओं के लिये भी योग्य स्थानों की रचना करो। अन्त में, हमारे भवन को इस प्रकार सजाओ कि तीनों लोकों में उसके समान सुन्दर अन्य कोई भवन न हो।"

हे नारद ! शिवजी की यह आज्ञा पा कर विश्वकर्मा ने अनेक सुन्दर भवनों का निर्माण किया। जिस देवता का जहाँ निवास था, वहाँ उसने नूतन मन्दिरों की रचना की। उसने गणपति का मन्दिर इतना सुन्दर बनाया कि उसकी चित्रकारी तथा पच्चीकारी को देख कर अत्यन्त आश्चर्य होता था। श्री विश्वनाथ जी का मन्दिर असंख्य रत्नों, मणियों, बहुमूल्य वस्तुओं तथा अनेक प्रकार की प्रस्तर शिलाओं से सुशोभित था। तीनों लोकों की सम्पूर्ण निधियाँ उसमें विराजमान थीं। उस भवन की प्रशंसा करने में मैं भी असमर्थ हूँ।

इतनी कथा सुन कर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! आप श्री विश्वनाथ जी के मन्दिर का विस्तारपूर्वक वर्णन करने की कृपा करें।" ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! विश्वनाथ जी के मन्दिर की दीवारें स्वर्ण से बनी हुई थीं और उनमें अनेक प्रकार के बहुमूल्य रत्न जड़े हुए

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:19 PM

थे। उन्हें यदि स्पर्श किया जाता तो विचित्र प्रकार का मधुर-शब्द होता था। प्रज्वलित अग्नि तथा सूर्य के समान चमकदार थीं। उस मन्दिर में बारह सहस्त्र खम्भे थे और इक्यासी सहस्त्र भूधर थे। उसके सम्मुख चौदहों भुवनों की सुन्दरता लज्जित होती थी। खम्भों में पद्मराग तथा मरकत-मणि की अनेक पुतलियाँ बनी हुई थीं, जिनके हाथों में रत्नों के दीपक दिन-रात जला करते थे। उत्तम श्वेत पत्थरों पर रत्नों द्वारा बेल-बूटों की चित्रकारी की गई थी। समुद्र में जितने भी प्रकार के रत्न थे, उन सब को गणों ने एकत्र किया था और नागों के कोष में जितनी उत्तमोत्तम मणियाँ थीं, वे सब भी वहाँ से ला कर उस मन्दिर में लगाई गई थीं। शिवजी के परमभक्त रावण ने अपने यहाँ से बहुत-सा सोना उस मन्दिर को बनाने के लिए भेजा था। इसी प्रकार अन्य जितने भी शिव-भक्त दैत्य आदि थे, उन सबों ने भी रत्न आदि भेजे थे।

हे नारद ! हमने जो मन्दिर का यह वर्णन किया है, उसे केवल संसारी रीति के अनुसार ही समझना चाहिए, अन्यथा शिवजी को किसी वस्तु की क्या आवश्यकता पड़ी है? वे यदि चाहें तो रत्नों के अनेक वृक्ष उत्पन्न कर सकते हैं। अस्तु, भगवान् विश्वनाथ का वह मन्दिर अनुपम तथा परम मनोहर था।

यह कथा सुन कर नारद जी ने आश्चर्ययुक्त हो, ब्रह्मा जी से पूछा—"हे पिता ! आप मुझसे यह कथा विस्तारपूर्वक कहिये।" ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! जिन दिनों शिवजी काशी में अपने मन्दिर का निर्माण करा रहे थे, उन्हीं दिनों की बात है कि गिरिजा की माता मैना अपने घर में बैठी हुई सखियों से यह बातें कर रही थी कि बहुत समय से मुझे गिरिजा का कोई समाचार नहीं मिला है, इसलिए मैं अत्यन्त व्याकुल रहती हूँ। मैं यह निश्चयपूर्वक जानती हूँ कि गिरिजा को जो सुख यहाँ मिलता था, वह वहाँ हरगिज नहीं होगा, क्योंकि गिरिजा के पति के पास भस्म और बूढ़े बैल के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जब हिमाचल ने मैना की यह बात सुनी तो उन्होंने भी चिन्तित हो कर यह कहा—"हे प्रिये ! तुम्हारा कथन सत्य है। जब से गिरिजा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गई है, तब से मैं भी उसकी याद में अत्यन्त दुःखी रहता हूँ। हम लोगों को उचित है कि अब हम गिरिजा को देखने के लिये चलें। मैना को अपने पति की यह बात सुन कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। तदुपरान्त उन्हें देने के लिए अपने साथ दो करोड़ तुला मोती, सौ तुला हीरे, ग्यारह लाख तुला पन्ना, सोलह सहस्त्र तुला इन्द्रनीलमणि, नौ करोड़ तुला पद्मराग तथा विद्रुम आदि रत्न साथ लिये। इसके अतिरिक्त उत्तमोत्तम वस्त्र, आभूषण आदि थे।

हे नारद ! गिरिजा को देने के लिए यह सब सामग्री अपने साथ ले कर हिमाचल अत्यन्त अहंकार में भर कर मन्दराचल पर्वत पर जा पहुँचे। जब वहाँ उन्होंने यह सुना कि शिवजी काशी में चले गये हैं, तब वे काशी में भी जा पहुँचे। वहाँ जा कर उन्होंने यह देखा कि विश्वानाथ जी का मन्दिर असंख्य रत्नों से अलंकृत है। उसमें सोने के कलश तथा मणियों की पताकायें विद्यमान हैं। उस भवन को देख कर हिमाचल का सम्पूर्ण अहंकार नष्ट हो गया। तब उन्होंने मन ही मन यह विचार किया कि इससे बढ़ कर मूल्यवान् तथा सुन्दर भवन तीनों लोकों में अन्यत्र नहीं है।

हे नारद ! जिस समय हिमाचल उस मन्दिर के बारे में यह विचार कर रहे थे कि यह किसका है, उसी समय उन्हें एक मनुष्य समीप आता हुआ दिखाई दिया। शिवजी ने उस व्यक्ति को विदेशों से आने वाले अतिथियों की सेवा भार सौंपा था। अस्तु, हिमाचल ने उसे अपने पास बुला कर पूछा—"हे भाई ! यह नगर किसका है और इस मन्दिर में कौन रहता है?" तब उस शिवभक्त ने यह उत्तर दिया—"हे यात्री ! इस स्थान का नाम शिवपुरी है और यह मन्दिर भगवान् विश्वनाथ जी का है। भगवान् विश्वनाथ जी को मन्दराचल पर्वत से यहाँ आये हुए अभी केवल छः दिन ही बीते हैं। उन दिनों वे गिरिजा के साथ ज्येष्ठेश्वर में रह रहे हैं। सम्भवतः तुम कोई परदेशी यात्री हो, जो उन्हें नहीं जानते। तीनों लोकों के सम्पूर्ण प्राणी उन्हीं शिवजी के सेवक हैं।" इतना कह कर उसने हिमाचल को काशीपुरी का सम्पूर्ण वृत्तान्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:19 PM

कह सुनाया। जब हिमाचल ने शिवजी को इस प्रकार धन से परिपूर्ण देखा, तो उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उस समय उन्होंने उस मनुष्य को तो धन आदि देकर विदा कर दिया और स्वयं अपने मन में यह निश्चय किया कि अब मुझे यह उचित है कि जो धन मैं अपने साथ लेकर आया हूँ, उसके द्वारा यहाँ एक शिवालय का निर्माण कर दूँ। मेरे पास इतनी सामग्री नहीं है, जो शिवजी की भेंट के योग्य हो सके। अब तक मैं भूला हुआ था और शिवजी को दरिद्र समझता था। आज मुझे यह मालूम हुआ कि शिवजी तो कुबेर के भी कुबेर हैं।

हे नारद ! हिमाचल ने यह निश्चय करके अपने सेवकों को बुलाया और उन्हें यह आज्ञा दी कि तुम रात भर में ही एक शिवालय का निर्माण कराओ। जो लोग काशी में शिवालय बनाते हैं, उन्हें लोकों में आनन्द प्राप्त होता है और उनके सभी अपराधों को भगवान् सदाशिव क्षमा कर देते हैं। हिमाचल की यह आज्ञा सुन कर सेवकों ने रात भर में ही एक सुन्दर शिवालय का निर्माण करा दिया। तब हिमाचल ने चन्द्रकान्तमणि द्वारा एक शिवलिंग का निर्माण कराया और उस मन्दिर में उसकी स्थापना की। तदुपरान्त उन्होंने अपने नाम और गोत्र आदि से अंकित एक पट्टिका उस शिवालय में लगा दी। इतना करने के उपरान्त वे पंचनद में स्नान करके, कामराज शिवजी की पूजा में प्रवृत्त हुए। उनके पास जो कुछ धन शेष रह गया था, उसे उन्होंने इधर-उधर फेंक दिया। परन्तु वे सब रत्न भी स्वयं ही एकत्र हो कर एक शिवलिंग के रूप में परिवर्तित हो गये। इस प्रकार एक लिंग तो हिमाचल ने स्थापित किया और दूसरा रत्नों द्वारा अपने आप बन गया। वे दोनों शिवलिंग पचनहदह्रद तथा हरव्रता के तट पर प्रतिष्ठित हुए। हे नारद ! हिमाचल द्वारा स्थापित काम राज शिवलिंग का माहात्म्य संसार में विख्यात है। अस्तु, उस मन्दिर का निर्माण कराने के पश्चात् हिमाचल शिवजी से बिना मिले ही, अपने घर को लौट गये। इस कथा को जो कोई सुनता और पढ़ता है, उसे दोनों लोकों में आनन्द की प्राप्ति होती है।

❁❁❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:19 PM

बाईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! प्रातःकाल होने पर जब हण्डन तथा मुण्डन नामक शिवजी के दो गणों ने दो नये शिवलिंग देखे तो उन्होंने अत्यन्त प्रसन्न हो कर शिवजी के पास जा, उन्हें सब समाचार कह सुनाया। वे बोले—"हे प्रभो ! वरुणा नदी के तट पर किसी धनवान् व्यक्ति ने आपके दो शिवलिंग स्थापित किये हैं। कल सन्ध्या तक उस स्थान पर कोई मन्दिर नहीं था, परन्तु इस समय हम जब वहाँ गये तो हमने उसे देखा है।" यह सुन कर शिवजी गिरिजा सहित रथ पर चढ़ कर वरुणा नदी के तट पर जा पहुँचे और उन्होंने हिमाचल द्वारा बनवाये हुए उस सुन्दर शिवालय को देखा। यद्यपि वह मन्दिर एक ही रात्रि में बना था, किन्तु इतना सुन्दर था कि उसके समान शिवालय काशीपुरी में दूसरा न था। जब वे गिरिजा सहित उस शिवालय के भीतर पहुँचे तो वहाँ चन्द्रकान्तमणि द्वारा निर्मित शिवलिंग को देख कर उन्हें यह इच्छा उत्पन्न हुई कि हम इस मन्दिर के बनवाने वाले के नाम से परिचित हों। इतने ही में उनकी दृष्टि उस पट्टिका पर जा पड़ी, जो हिमाचल ने लगवाई थी। उसे पढ़ कर शिवजी गिरिजा से बोले—"हे प्रिये ! देखो यह शिवालय तुम्हारे पिता ने बनवाया है। वे तुम्हें देखने के लिये यहाँ पधारे होंगे, परन्तु भेंट का उत्तम अवसर न पा कर, बिना मिले ही इस शिवलिंग की स्थापना करके चले गये। तुम्हारे पिता परम धन्य हैं।

हे नारद ! शिवजी के मुख से यह वचन सुन कर गिरिजा ने अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा—"हे प्रभो ! मेरे पिता ने इस लिंग को वरुणा के तट पर स्थापित किया है, अतः मेरी यह अभिलाषा है कि आप इसमें रात-दिन पूर्णांश से स्थित रहें तथा यह लिंग गिरीश्वर के नाम से प्रसिद्ध हो। जो मनुष्य इस लिंग की पूजा करे, वे दोनों लोकों में आनन्द प्राप्त करे तथा उनकी सभी मनोभिलाषाएँ पूर्ण हों।" गिरिजा की यह प्रार्थना सुन कर शिवजी ने 'एवमस्तु' कहा। तदुपरान्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:19 PM

वे वहाँ से चल कर, इधर-उधर भ्रमण करते हुए कामराज के पास पहुँचे। वहाँ कामराज से उत्तर की ओर उन्होंने एक अन्य शिवलिंग को देखा। गिरिजा ने उसे देख कर शिवजी से कहा—"हे स्वामिन्! इस लिंग का प्रकाश आकाश तक फैला हुआ है और यह एकदम नवीन दिखाई देता है। आप कृपा करके इसकी उत्पत्ति एवं प्रभाव का मुझसे वर्णन करें।" यह सुन कर शिवजी ने उत्तर दिया—"हे गिरिजे! तुम्हारे पिता हिमाचल यहाँ अपने साथ बहुत से रत्न आदि ले कर आये थे। हमारा लिंग स्थापित करने के पश्चात् उनके पास जो धन बच रहा, उसे वे यहीं फेंक गये; परन्तु उनके पुण्य के प्रताप से वे फेंके हुए रत्न आदि एकत्र हो कर शिवलिंग के रूप में परिवर्तित हो गये हैं। इस शिवलिंग का नाम रत्नेश्वर होगा, क्योंकि यह रत्नों द्वारा निर्मित है। हे प्रिये! हमारे अथवा तुम्हारे लिये जो मनुष्य भक्तिपूर्वक किसी धन का संकल्प करता है, तो उसे उसका फल भी उसी प्रकार प्राप्त होता है। अब तुम्हें यह उचित है कि तुम्हारे पिता जिस स्वर्ण को यहाँ छोड़ गये हैं, वह अभी तक यहां इधर-उधर फैला हुआ है। उसी के द्वारा तुम इस लिंग का शिवालय बनवाओ, क्योंकि शिवालय बनवा देने से जो कर्म अपूर्ण रह जाते हैं, वे भी पूर्णता को प्राप्त होते हैं, लिंग की स्थापना से प्रत्येक वस्तु की प्राप्ति होती है और कलश चढ़ाने से भी वैसा ही फल मिलता है। ध्वजा स्थापित करने का यह फल होता है कि ध्वजा में जितने पर्व होते हैं, उतने कल्प-पर्यन्त ध्वजा स्थापित करने वाला मनुष्य कैलाश में निवास करता है तथा वायु के चलने पर जितनी बार उस ध्वजा का वस्त्र हिलता है, उतने वर्षों तक वह शिवलोक में वास करता है।"

हे नारद! शिवजी के मुख से यह वचन सुन कर गिरिजा ने गणों को बुला कर रत्नेश्वर शिवलिंग का मन्दिर बनवाने की आज्ञा दी। तब सोम एवं नन्दी आदि गणों ने हिमाचल द्वारा फेंके गये स्वर्ण से एक सुन्दर शिवालय बनवा दिया। उस शिवालय को देख कर शिवजी एवं गिरिजा को अत्यन्त प्रसन्नता हुई और उन्होंने गणों को अनेक वरदान दिये। तदुपरान्त गिरिजा के कहने पर शिवजी ने रत्नेश्वर शिवलिंग को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

यह वर दिया कि जो प्राणी इस लिंग की पूजा करेगा, उसे सम्पूर्ण शिवलिंगों के पूजन का फल प्राप्त हो जाएगा तथा यह लिंग अनादि रूप से प्रसिद्ध होगा। हे नारद ! उस रत्नेश्वर शिवलिंग के सम्मुख नृत्य करके एक नर्तकी ने मुक्ति प्राप्त की। भगवान् सदाशिव एवं भगवती गिरिजा के उन चरित्रों का स्मरण करने से आनन्द प्राप्त होता है।

तेईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! जब तक शिवजी का मुख्य भवन बन कर तैयार नहीं हो गया, तब तक शिवजी काशी में अनेक स्थानों पर भ्रमण करते रहे। विराजपीठ नामक प्रसिद्ध स्थान पर शिवजी ने अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक समय तक निवास किया। उन्होंने वहाँ पर स्थित त्रिलोचन नामक शिवलिंग की महिमा का बहुत वर्णन किया। एक दिन वे विष्णु जी से काशी की महिमा तथा काशी में स्थित शिवलिंगों की स्तुति का वर्णन कर रहे थे, उसी समय नन्दीश्वर ने उनके पास पहुँच कर यह प्रार्थना की कि हे प्रभो ! आपका मन्दिर बन कर तैयार हो चुका है और मैं रथ सजा कर ले आया हूँ; अस्तु, अब आप कृपा करके अपने भवन को चलिये। ब्रह्मा तथा इन्द्र आदि सब देवता द्वार पर खड़े हुए हैं और सब की यह इच्छा है कि आप वहाँ चल कर सुशोभित हों।

हे नारद ! नन्दीश्वर की बात सुन कर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हो, अपने भवन के लिये चल दिए। उस समय चारों दिशायें वेदधुनि से गूँज उठीं तथा सुन्दर बाजे बजने लगे। आकाश से पुष्प-वर्षा होने लगी। उस समय पृथ्वी पर कोई भी ऐसा प्राणी नहीं था, जो आनन्दमग्न न हो। जब शिवजी अपने भवन में पहुँच गये तब मैंने, विष्णु जी ने तथा अन्य देवताओं ने शिवजी का अभिषेक किया। उस समय सम्पूर्ण तीर्थों का जल छोड़ा गया और सब लोगों ने भेंट दे-देकर शिवजी तथा गिरिजा की आरती उतारी। विष्णु जी ने एक बार मुख की, चार बार चरणों की दो बार नाभि की तथा सात बार सर्वांग

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:19 PM

की आरती उतारी, क्योंकि शिवजी की आरती चौदह बार उतारी जाती है। उनके अनन्तर मैंने, विष्णु जी तथा अन्य सब देवताओं ने एक-एक स्तुति बना कर पढ़ी और शिवजी से यह प्रार्थना की कि आप हम लोगों पर प्रसन्न हो कर हमारा पालन करें।

चौबीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! हम देवताओं की स्तुति सुन कर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने सब लोगों को इच्छित वरदान दिये। तदुपरान्त उन्होंने मुझे तथा विष्णु जी को अपने समीप बैठा कर यह कहा कि तुम्हारे समान हमारा प्रिय अन्य कोई नहीं है। अब तुम्हारी जो इच्छा हो, वह वर हम से माँग लो। यह सुन कर विष्णु जी ने प्रणाम करते हुए कहा—"हे प्रभो ! हम यही चाहते हैं कि हमारे हृदय में आपकी भक्ति का सदैव निवास रहे।" शिवजी ने यह सुन कर 'एवमस्तु' कहा, तदुपरान्त उन्होंने काशी की महिमा वर्णन की। फिर मुक्तिमंडप की वह कथा सुनाई, जहाँ महानन्द नामक ब्राह्मण को मुक्ति प्राप्त हुई थी। उस स्थान का दूसरा नाम कुक्कुट मंडप भी है।"

सूत जी बोले—"हे ऋषियो ! यह वृत्तान्त सुन कर नारद जी ने ब्रह्मा जी से कहा—"हे पिता ! उस स्थान का नाम कुक्कुट मंडप किस प्रकार हुआ और महानन्द ने वहाँ किस प्रकार मुक्ति पाई, यह कथा आप मुझे सुनाने की कृपा करें।" यह सुन कर ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! जब शिवजी ने कुक्कुट मंडप का नाम लिया उस समय विष्णु जी ने उनकी प्रार्थना करते हुए यह कहा—"हे प्रभो ! मुझे बताइये कि कुक्कुट मंडप तीनों लोकों में सुखदायक किस प्रकार होगा?" उस समय शिवजी ने उत्तर दिया—"हे विष्णो ! आगे जब द्वापर युग आयेगा, उस समय यहाँ महानन्द नामक एक ब्राह्मण उत्पन्न होगा। वह ब्राह्मण ऋग्वेद का पंडित होगा और किसी से दान आदि न लेगा। कुछ समय पश्चात् जब वह तरुणावस्था को प्राप्त होगा और उसके पिता की मृत्यु हो जाएगी, तब वह कामदेव के वशीभूत हो,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

एक अन्य जाति की स्त्री को अपने घर में रख कर उसके साथ भोग-विलास करेगा और वेद के प्राचीन मार्ग को त्याग देगा। वह उस स्त्री के अधीन हो कर मद्य आदि का पान करेगा। वह विष्णु-भक्तों को धनवान् देख कर स्वयं भी वैष्णव बन जायेगा तथा शिव-भक्तों की निन्दा करेगा। फिर कुछ दिन बाद वह शिव-भक्त बन कर वैष्णवों की निन्दा करना आरम्भ करेगा।

हे विष्णो ! वह अपने मस्तक में तिलक लगायेगा, श्वेत-वस्त्रों को धारण करेगा तथा कण्ठ में माला पहन कर धूर्तता का प्रदर्शन करेगा। वह देखने में तो निर्मल और सज्जन होगा, परन्तु हृदय का अत्यन्त मलिन और दुर्जन रहेगा। कुछ दिन पश्चात् एक पर्वत निवासी तीर्थ-स्थान करने के लिये यहाँ आयेगा। उसके पास दान करने के लिए बहुत धन होगा। वह चक्रतीर्थ में स्नान करके यह बात कहेगा कि मैं जाति का चाण्डाल हूँ, परन्तु धनवान् हूँ। मैं अपने धन को दान में देना चाहता हूँ। यदि कोई मेरा दान लेने के लिये तैयार हो तो वह मेरे समीप आये। उसकी बात सुन कर सब लोग उस महानन्द नामक धूर्त ब्राह्मण की ओर उँगली उठा कर यह उत्तर देंगे कि तुम्हारा दान यह व्यक्ति ले सकता है। तब चाण्डाल महानन्द के पास जा कर दान ग्रहण करने के लिये प्रार्थना करेगा। उस समय महानन्द उसे यह उत्तर देगा कि तुम अपने साथ जितना धन लाये हो, यदि वह सब का सब मुझे देना स्वीकार करो तथा अन्य किसी को उस धन में से कुछ भी न दो, तो मैं तुम्हारा दान लेने को तैयार हूँ। यह सुन कर वह चाण्डाल उत्तर देगा कि मेरे पास जो भी धन है, वह शिवजी की प्रसन्नता के निमित्त है। उस काशी में रहने वाले नीच व्यक्ति भी शिवजी के अंश हैं; अस्तु, मैं तुम्हें शिवजी के समान जान कर अपना सम्पूर्ण धन देना स्वीकार करता हूँ।

हे विष्णो ! यह कह कर वह चाण्डाल महानन्द को दान देकर अपने घर को लौट आयेगा। उस समय से सब लोग महानन्द को चाण्डाल मानने लगेंगे। उस लज्जा के कारण महानन्द बहुत दिनों तक अपने घर में छिपा रहेगा, तदुपरान्त अपनी स्त्री को साथ लेकर काशी छोड़, कीलक देश को चल देगा। जिस समय वह मार्ग में जा रहा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:19 PM

होगा, उस समय जंगल में एक ठगों का झुण्ड उसे पकड़ लेगा और उसका सर्वस्व छीन कर यह कहेगा कि अब हम तुम्हें जान से मारने वाले हैं—अस्तु, तुम जिसका स्मरण करना चाहो, कर लो। ठगों के यह वचन सुन कर महानन्द को श्रेष्ठ-बुद्धि की प्राप्ति होगी। उस समय यह विचार करेगा कि मैंने इस धन को लेकर अपने धर्म को भी खो दिया और आज मृत्यु के समय काशीपुरी को भी खो बैठा हूँ। इस प्रकार चिन्ता करते हुए वह अपने वंश का स्मरण करेगा। तदुपरान्त ठग उसे मार डालेंगे। महानन्द को मारने के पश्चात् वे चारों ठग काशी का महात्म्य सुन कर यहाँ आयेंगे और मुक्ति-मण्डप के समीप स्थित हो कर, प्रतिदिन गंगा-स्नान तथा शिव-कथा श्रवण करने के कारण निर्मल हो जायेंगे। उस समय मेरी कृपा से उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होगी। तभी से इस स्थान का नाम कुक्कुट मण्डप पड़ जायेगा।

पच्चीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! शिवजी से यह कथा सुन कर विष्णु जी को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उसी समय बड़े ज़ोर से घण्टा बजने का शब्द सुनाई दिया। उस शब्द को सुन कर शिवजी ने नन्दीश्वर को यह आज्ञा दी कि तुम जा कर अभी यह पता लगाओ कि यह घण्टे का शब्द कहाँ से आ रहा है? जो लोग घण्टा बजाते हैं वे मुझे अत्यन्त प्रिय हैं और मैं उनकी सम्पूर्ण मनोकामनाओं को सिद्ध करता हूँ। यह सुन कर नन्दीश्वर उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ वह घंटा बज रहा था। तदुपरान्त उन्होंने लौट कर शिवजी से यह कहा कि हे प्रभो ! आपके श्रृंगार-मण्डप में उत्सव हो रहा है और वहाँ बैठे हुए आपके भक्त घण्टा बजा रहे हैं। यह सुन कर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हो, सम्पूर्ण सभासहित उस स्थान पर जा पहुँचे। वह स्थान रंगमंडप था जो संसार में श्रृंगारमंडप के नाम से विख्यात है। वहाँ जा कर शिवजी गिरिजा सहित पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठ गये।

हे नारद ! उस समय शिवजी ने अपना दाहिना हाथ उठा कर विष्णु

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:19 PM

जी के द्वारा सब लोगों को यह सूचित किया कि विश्वनाथ नामक हमारा यह लिंग परम ज्योतिस्वरूप तथा सम्पूर्ण आनन्द-मंगलों को प्रदान करने वाला है। इसे अविमुक्त तथा मुक्तिपद भी कहा जाता है। विश्वेश्वर के समान तीनों लोकों में अन्य कोई लिंग नहीं है। तीनों लोकों में विश्वेश्वर लिंग, मणिकार्णिका तथा काशीपुरी—ये तीन वस्तुएँ ही सार रूप हैं। इतना कह कर मणिकर्णिका तथा काशीपुरी—ये तीन वस्तुएँ ही सार रूप हैं। इतना कह कर शिवजी तथा गिरिजा ने स्वयं उस विश्वेश्वर लिंग का पूजन किया। तदुपरान्त वीरभद्र और गणपति ने उसकी पूजा की। इस प्रकार सब लोगों ने उस लिंग का पूजन किया। उस समय बड़ा आनन्द और उत्सव हुआ। आकाश से पुष्प-वर्षा होने लगी और ऋषि-मुनि वेद-मन्त्रों द्वारा स्तुति करने लगे। उस समय वेद और पुराण शरीर धारण कर वहाँ आये। उन्होंने शिव तथा गिरिजा की बहुत प्रकार से विनती की। तदुपरान्त विष्णु आदि सब देवताओं ने भी उनकी बहुत प्रार्थना की है। उस समय शिवजी और गिरिजा ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर सब लोगों की ओर अपनी कृपा दृष्टि से देखा, जिसके कारण सभी के मनोरथ पूर्ण हो गये। तदुपरान्त शिवजी गिरिजा तथा अपने पुत्रों सहित सब के देखते-देखते अन्तर्धान हो कर विश्वनाथ लिंग में प्रविष्ट हो गये।

हे नारद ! शिवजी के उस चरित्र को कोई भी प्राणी नहीं जान सका। इस प्रकार शिवजी लिंग रूप हो कर काशी में स्थित रहे और शरीर से कैलाश में जा कर निवास करने लगे। इस आश्चर्य को देख कर सब लोगों को बड़ा कौतूहल हुआ। तदुपरान्त अन्य सब देवता भी अपने-अपने अंश को काशी में स्थापित करके अपने-अपने लोक को चले गये। शिव और गिरिजा का यह चरित्र सम्पूर्ण मनोकामनाओं को सिद्ध करने वाला है। जो मनुष्य इसे पढ़ता, सुनता तथा दूसरों को सुनाता है, उसके हृदय में शिवजी की प्रीति उत्पन्न होती है और भगवान् सदाशिव गिरिजा सहित उसके ऊपर अत्यन्त कृपा रखते हैं।

इति श्री शिवपुराणे ब्रह्मानारदसम्वादे भाषायां षष्ठखण्डस्समाप्तः ॥ ६ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:19 PM

ॐ नमः शिवाय

श्री शिव महापुराण

(सरल भाषा)

सातवाँ खण्ड (उत्तरार्द्ध)

पहला अध्याय

नारद जी ने कहा—"हे पिता ! अब आप शिवजी के सभी अवतारों एवं उनके कार्यों का वर्णन कीजिये। जो लोग शिवजी के भक्त हैं, वे निश्चय ही धन्य हैं।" यह सुन कर ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! भगवान् सदाशिव परब्रह्म, निर्गुण, सगुण, सच्चिदानन्दरूप, सर्वव्यापक, अलख, निरंजन, ज्योतिस्वरूप तथा उपाधिरहित हैं। ऋषि-मुनि उनका स्मरण करके प्रणाम करते हैं तथा अपनी बुद्धि के अनुसार सब देवता उनकी स्तुति करते रहते हैं। जिन शिवजी के ऐसे अद्‌भुत कार्य हैं, उनका वर्णन किसी भी प्रकार नहीं किया जा सकता। वेद का कथन है कि ऐसे निगुर्णरूप शिवजी ने सगुणरूप धारण कर, संसार में अनेक चरित्र किये तथा परमशक्ति ने भी उनके साथ अवतार लेकर भक्तों के मनोरथों को पूर्ण किया।

हे नारद ! जिस समय विष्णु जी ने मुझे प्रकट किया, उस समय शिवजी उन्हें वरदान देने के लिए आये थे। तब विष्णु जी ने उनसे यह माँगा था कि आप भी कृपा करके अवतार ग्रहण करें। यह सुन कर शिवजी ने 'एवमस्तु' कहते हुए विष्णु जी से यह बात कही कि समयानुसार हम भी अवतार लेंगे। उस समय हमारा नाम 'रुद्र' होगा। हमारा वह रुद्रावतार देवताओं के सम्पूर्ण दु:खों को दूर करेगा तथा तुम्हें हर समय सहायता प्रदान किया करेगा। इतना कह कर शिवजी अन्तर्धान हो गये। तदुपरान्त रुद्र की उत्पत्ति मेरे द्वारा हुई। वे रुद्रनामधारी सदाशिव कैलाश पर्वत पर निवास करते हैं तथा अनेक प्रकार की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:20 PM 4G 87

लीलाएँ करके अपने भक्तों को आनन्द पहुँचाते हैं। वे अपनी शक्ति के साथ विहार किया करते हैं तथा सम्पूर्ण उपाधियों से रहित हैं। उन्होंने सन्तों की रक्षा की है तथा सती के साथ विवाह करके देवताओं के कष्ट को दूर किया है। उन्होंने हिमाचल के घर जा कर गिरिजा के साथ विवाह किया तथा अनेक प्रकार की लीलाएँ कीं। उन्होंने स्कन्द का अवतार लेकर तारकासुर का संहार किया तथा अन्धक, त्रिपुर एवं जलन्धर को नष्ट करके, अपने भक्तों को सुख पहुँचाया। उन्होंने अनेक प्रकार के ऐसे चरित्र किये, जिनसे देवताओं का अहंकार नष्ट हो गया। मैं, विष्णु जी, देवता, सिद्ध, मुनि आदि संसार के सभी प्राणी, उन्हीं के सेवक हैं। रुद्र शिव के प्रथम अवतार हैं। उनका स्वरूप, नाम, चरित्र आदि सब भगवान् सदाशिव जैसे ही हैं। अब मैं तुमसे शिवजी के अन्य अवतारों का वर्णन करता हूँ।

हे नारद ! सर्वप्रथम तुम शिवजी के पाँच अवतारों का वर्णन सुनो। जिस समय मेरी यह इच्छा हुई कि मैं सृष्टि उत्पन्न करूँ, उस समय मैंने सर्वप्रथम भगवान् सदाशिव का ध्यान किया। तब शिवजी ने प्रसन्न हो कर मुझे अपना दर्शन दिया। उस समय उनके शरीर का रंग श्वेत तथा लालिमा लिए हुए था। उनके साथ चार शिष्य भी थे। मैंने उन्हें प्रणाम करने के उपरान्त अनेक प्रकार से उनकी स्तुति की। उस समय शिवजी ने कृपा करके मुझे शक्ति प्रदान की और यह आज्ञा दी कि तुम सृष्टि को उत्पन्न करो। तदुपरान्त उन्होंने 'वामदेव' का अवतार लेकर अपने चार शिष्यों के साथ मुझे दर्शन दिया। उस समय उनके शरीर का रंग लाल था। तत्पश्चात् वे पीतवर्ण से 'तत्पुरुष' अवतार के रूप में अपने चार शिष्यों सहित प्रकट हुए और उन्होंने मुझे श्रेष्ठ ज्ञान का उपदेश दिया। इसके बाद उन्होंने 'श्याम रूप' अवतार लेकर मुझे दर्शन दिये। अन्त में उनका 'ईशान' नामक अवतार हुआ। उस समय उनके शरीर का वर्ण श्वेत था और वे अपने साथ चार शिष्यों को लिये थे। उन्होंने मुझे ब्रह्मज्ञान तथा पवित्र योग की शिक्षा दी। शिवजी के ये पाँचों अवतार अत्यन्त पवित्र हैं और मेरी इच्छानुसार ही इनका प्राकट्य हुआ था।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:20 PM

हे नारद ! इसके पश्चात् शिवजी ने आठ अवतार और लिये। उनके नाम शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान तथा महादेव हैं। वे जल, पृथ्वी, अग्नि, आकाश, यज्ञ, वायु, चन्द्रमा तथा सूर्य में निवास करते हैं। ये आठों अवतार भी भगवान् सदाशिव के ही रूप हैं। हे नारद ! वाराहकल्प में 'वैवस्वत' नामक सातवें मन्वन्तर में जो मनु का अवतार होता है, वह भी शिवजी का ही स्वरूप है। शिवजी का अर्धनारीश्वर रूप में वह अवतार मेरी रक्षा के निमित्त होता है।

हे नारद ! द्वापर तथा कलियुग में वेदव्यास नामक जो अवतार होता है, वह भी भगवान् सदाशिव का ही मुख्य स्वरूप है। उस समय श्री शिवजी व्यास जी के रूप में वेद के विभाग करते हैं तथा योगशास्त्र और वेदान्त का प्रचार कर पुराणों को बनाते हैं और उन्हें अपने शिष्यों को पढ़ाते हैं। उन व्यास जी के अट्ठाईस प्रकार के रूप होते हैं जिनके नाम ये हैं—श्वेत, सुताह, कंकण, शाख्य, युगाक्ष, जैगीषव्य, दधिवाहन, ऋषभ, भृङ्ग, तप, अत्रि, बाल, गौतम, वेदशिरा, धेनुकर्ण, गुहबाल, शिखण्डी, जटामाली, अट्ठहास, दाहक, लांगली, श्वेतत्रिशूल, दण्डी, मुण्डेश्वर, सोमसुरमा, लंककेश तथा सहिष्णु।

हे नारद ! शिवजी के नन्दीश्वर अवतार की कथा इस प्रकार है—जब शिलाद मुनि ने बहुत तपस्या की, उस समय शिवजी ने उन्हें दर्शन दे कर वरदान माँगने के लिये कहा। उस समय शिलाद ने उनसे यह कहा—''हे प्रभो ! आप मुझे एक ऐसा पुत्र दीजिये, जो कभी भी मृत्यु को प्राप्त न हो।'' तब शिवजी ने 'एवमस्तु' कह कर 'नन्दी' का अवतार धारण किया और शिलाद की मनोकामना पूर्ण की। इसके पश्चात् जब मुझ में तथा विष्णु जी में विवाद हुआ, उस समय भगवान् 'सदाशिव' भैरव का अवतार लेकर हमारे समीप आये और उन्होंने हमारा झगड़ा समाप्त कराया। उस समय भगवान् सदाशिव को अपना पुत्र विचार कर जब मैं उनकी निन्दा करने लगा, तब भैरव रूपधारी शिवजी ने अत्यन्त क्रुद्ध हो कर मेरे पाँचवें मस्तक को काट डाला। इसके उपरान्त उन्होंने 'वीरभद्र' नामक अवतार लेकर तीनों लोकों में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इस बात को प्रसिद्ध किया कि जो लोग शिवजी के विरोधी हैं, उन्हें स्वप्न में भी आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। वीरभद्र रूपधारी भगवान् सदाशिव ने अपनी एक सहस्त्र भुजाओं द्वारा दुष्टों को दण्ड दिया तथा संसार में अनेक प्रकार की लीलाएँ कीं। तत्पश्चात् जब विष्णु जी ने नृसिंह अवतार लेकर हिरण्यकशिपु को मारा और अत्यन्त क्रोध तथा अहंकार किया, उस समय देवताओं की प्रार्थना पर शिवजी ने 'शरभ' नामक अवतार लेकर नृसिंह के मद को नष्ट किया। उसी समय से शिवजी का नाम 'हर' भी हुआ, क्योंकि उन्होंने नृसिंह जी के मद को हर लिया था। तदुपरान्त जब देवासुर संग्राम हुआ और सब देवता विजयी हो कर बहुत अहंकार में भर गये, उस समय शिवजी ने 'यक्ष' रूप धारण करके, उनके अभिमान को नष्ट किया अर्थात् उन्होंने यक्ष बन कर देवताओं से एक तिनके को तोड़ देने को कहा, परन्तु देवता उसे तोड़ने में असमर्थ हुए।

हे नारद ! इसके अनन्तर शिवजी ने 'महाकाल' के दस रूप धारण किये तथा दस देवियों के स्वामी के रूप में प्रसिद्ध हुए। तदुपरान्त वे ग्यारह रुद्रों का स्वरूप रख कर कश्यप के घर में उत्पन्न हुए। वहाँ उन्होंने दिति के पुत्रों को मार कर देवताओं को सुख पहुँचाया। इसके बाद उन्होंने अत्रि का पुत्र हो कर अपने ब्रह्मतेज को प्रसिद्ध किया और संसार में मर्यादा की स्थापना की। फिर उन्होंने विश्वानर के तप से प्रसन्न हो कर उसके यहाँ जन्म लिया तथा कालविहार पर विजय प्राप्त की। इसके बाद भगवान् सदाशिव ने प्रह्लाद मुनि का अवतार लेकर विष्णु जी के अहंकार को नष्ट किया तथा अवधूत बन कर इन्द्र के अभिमान को तोड़ दिया। रामचन्द्र जी के मनोरथों को पूर्ण करने के लिए उन्होंने हनुमान् के रूप में अवतार लेकर अनेक लीलाएं कीं तथा बहुत-से राक्षसों को मार कर रामचन्द्र जी के सम्पूर्ण कार्य किये और लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा की।

हे नारद ! जिस समय भैरव ने गिरिजा को कुदृष्टि से देखा, उस समय गिरिजा ने उन्हें यह शाप दिया—"हे भैरव ! तुम मुझे साधारण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:20 PM

मनुष्यों की भाँति कुदृष्टि से देखते हो, अतः तुम मनुष्य हो जाओ।" यह सुनकर भैरव ने भी गिरिजा को यह शाप दिया कि तुम भी मेरी तरह मनुष्य बनो, तब मैं वहाँ तुम्हारे पुत्र के रूप में जन्म लूँगा। इस शाप के कारण शिवजी ने पृथ्वी पर अवतार लिया। उस समय गिरिजा का नाम शारदा हुआ और शिवजी महेश हो कर प्रकट हुए। हे नारद ! महानन्दा नामक वेश्या ने शिवजी की बड़ी भक्ति की थी। तब शिवजी ने वैश्य का रूप धारण कर उसके दुःख को दूर किया। भद्रायुष नामक एक राजा ऋषभ नामक मुनि का शिष्य तथा शिवजी का परमभक्त था। शिवजी उसके समीप ब्राह्मण बन कर पहुँचे और उसे सम्पूर्ण कष्टों से रहित बनाया। इसी प्रकार आहुक नामक एक भील था, जिसकी पत्नी का नाम आहुकी था। शिवजी ने उनके लिए भी अवतार लेकर उन्हें कृतार्थ किया। तब वे दोनों दूसरे जन्म में नल और दमयन्ती हुए। वहाँ शिवजी ने हंस बन कर उन दोनों में मेल कराया था।

हे नारद ! राजा मनु के छोटे पुत्र नाभाग ने जब अपने भाइयों से राज्य का भाग नहीं पाया, तब शिवजी ने कृष्णदर्शन नामक अवतार लेकर उसे उसका भाग दिलवा दिया। जिस समय राजा सत्यरथ लड़ाई में मारा गया और उसकी गर्भवती रानी वन में भाग कर वहाँ एक पुत्र को जन्म देने के पश्चात् स्वयं भी मृत्यु को प्राप्त हो गयी और वह बालक रोता हुआ वहीं पड़ा रहा, उस समय शिवजी ने दया करके एक भिक्षुक का स्वरूप धारण किया और एक स्त्री को यह उपदेश दिया कि वह उस बालक का पालन करे। जब वह बालक बड़ा हो गया, तब शिवजी ने उसे उसके पिता का राज्य वापस दिला दिया। इसी प्रकार शिवजी ने इन्द्र का अवतार लेकर उपमन्यु नामक ब्राह्मण की परीक्षा ली तथा उसे सब पापों से रहित देख कर, दोनों लोकों का सुख प्रदान किया।

हे नारद ! जिस समय गिरिजा ने वन में जा कर कठिन तप किया और सब देवता शिवजी की शरण में गये, उस समय शिवजी जटिल रूप धारण कर परीक्षा लेने के निमित्त गिरिजा के पास जा पहुँचे और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उन्हें यह वरदान दिया कि हम तुम्हारे साथ विवाह करेंगे। तदुपरान्त वे नट का रूप धारण कर पर्वत राज हिमाचल के घर गये और वहाँ अनेक प्रकार की लीलाएँ कीं। उन्होंने ब्राह्मण का रूप धारण कर हिमाचल की पत्नी मैना को भी बहुत भटकाया। द्रोणचार्य के पुत्र अश्वत्थामा के रूप में भी शिवजी ने ही अवतार लिया था। उन्होंने किरात बन कर अर्जुन का दुःख दूर किया तथा वरदान देकर कौरवों को नष्ट कराया। उन्हीं शिवजी ने गोरखनाथ रूप लेकर योगशास्त्र को प्रसिद्ध किया तथा योगियों के धर्म को संसार में स्थित किया। उन गोरखनाथ रूपी शिवजी के दो प्रधान शिष्य थे। इनमें से एक का नाम गोपीचन्द था।

हे नारद ! जिस समय अधर्मी लोगों ने सब प्रकार शौच को त्याग कर धर्म को भ्रष्ट कर देना चाहा तथा संसार में अनीश्वरवाद का प्रचार किया, उस समय शिवजी ने एक ब्राह्मण के यहाँ शंकराचार्य नाम से अवतार लिया। उन्होंने अधर्म का नाश किया तथा अद्वैत एवं संन्यास मत का प्रचार किया। सूर्य द्वारा जो ज्योतिर्लिंग स्थापित किये गये, वे सभी शिवजी के ही अवतार हैं। शिवजी के चरित्रों का वर्णन करने तथा सुनने से बहुत सुख प्राप्त होता है। हे नारद ! मैंने संक्षेप में तुम से शिवजी के सब अवतारों की यह कथा कही।"

दूसरा अध्याय

इतनी कथा सुन कर नारद जी बोले—"हे पिता ! आप संसार में शिवजी के सब से बड़े भक्त हैं। अस्तु, मेरी यह इच्छा है कि मैं आपके द्वारा शिवजी के अवतारों का वर्णन विस्तार सहित सुनूँ। आप मेरी इस अभिलाषा को पूर्ण कीजिए।" नारद के मुख से यह शब्द सुन कर ब्रह्मा जी प्रेम-मग्न हो कर कहने लगे—"हे नारद ! मैं शिवजी की अन्य लीलाएँ सुनाता हूँ, ध्यान से सुनो। मुझे तथा विष्णु जी को शिवजी ने ही उत्पन्न किया है। जिस समय उन्होंने मुझे तथा विष्णु जी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:20 PM

को उत्पन्न करके यह आज्ञा दी कि तुम दोनों संसार की उत्पत्ति तथा पालना करो, उस समय हम दोनों ने शिवजी से यह कहा—"हे प्रभो ! आप भी अवतार लेकर प्रलय का कार्य स्वयं करना स्वीकार करें।" यह सुन कर शिवजी ने मेरी भौंहों के बीच भाग से अपने अंश रूप में अवतार लिया। शिवजी के उस अवतार का नाम महेश हुआ और वे कैलाश पर्वत पर निवास करने लगे।

हे नारद ! शिवजी तथा महेश में किसी प्रकार का अन्तर नहीं। वे पापों से रहित तथा परम दयालु हैं। वे अपने भक्तों का मनोरथ पूर्ण करते हैं तथा उनके ऊपर सदैव कृपा बनाये रखते हैं। उन्होंने ही शबरी, शबर तथा मद्र को मुक्त किया है। उन्होंने राजा भद्राक्ष के कष्टों को दूर किया। उन्होंने अपने करोड़ों पापी भक्तों को मुक्ति प्रदान की तथा भक्तों के कल्याण के निमित्त करोड़ों अवतार धारण किये। उन्होंने नन्द वैश्य तथा किरात को मुक्ति देकर अपना द्वारपाल बनाया तथा भिक्षुक का स्वरूप धारण कर दारुकवन में अनेक प्रकार के चरित्र किये। उन्होंने मुनियों को क्रोधित कर स्वयं को शाप दिलाया। तभी से संसार में शिवलिंग की पूजा प्रचलित हुई है।

हे नारद ! काशी के राजा की सुन्दरी नामक एक पुत्री शिवालय में झाड़ू दिया करती थी, इसलिए वह मुक्ति को प्राप्त हुई। शिवजी ने एक बड़े भारी चोर को अपनी कृपा से तार दिया तथा रावण को तीनों लोकों का राज्य प्रदान किया। जिस समय रावण ने ब्राह्मणों को दुःख पहुँचाना आरम्भ किया, उस समय शिवजी ने रावण से अपने तेज को ले लिया और रामचन्द्र जी को अपना बाण देकर रावण को मरवा डाला। उन्हीं शिवजी ने राजा श्वेत के निमित्त काल का नाश किया तथा राजा दाशार्ह को उसकी पत्नी सहित मुक्ति प्रदान कर तीनों लोकों में पंचाक्षरी मन्त्र की महिमा प्रतिष्ठित की। शिवजी ने राजा मित्रशठ पर कृपा की। वह अपने राज्य को छोड़ बैठा था सो शिवजी की दया से वह अपनी स्त्री सहित मुक्त हुआ। चन्द्रसेन तथा श्रीगर्भ ने त्रयोदशी के दिन प्रदोष व्रत करके शिवजी की कृपा द्वारा मुक्ति प्राप्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:20 PM

की और इसी व्रत द्वारा धर्मगुप्त भी मुक्त हुआ।

हे नारद ! शिवजी ने राजा चन्द्रांगद को तक्षक के भय से मुक्त किया तथा उसकी पत्नी सीमन्तिनी को सोमवार का व्रत रखने के कारण मोक्ष प्रदान किया। शिवजी ने ही इन्द्र नामक ब्राह्मण को तारा तथा पिंगल को अपने समान बना लिया। सीमन्तिनी की पुत्री पद्मा तथा पुशपति को भी उन्होंने मुक्ति प्रदान की। दुर्जन नामक यवन देश का राजा अपने शरीर में मृतक भस्म लगाने पर ही मुक्ति को प्राप्त हो गया। भद्रसेन का पुत्र सुधर्मा तथा उसके मन्त्री का पुत्र तारक रुद्राक्ष धारण करने के प्रताप से मुक्त हो गये। शिवजी ने महानन्दा तथा उसके वंश को अग्नि में जलाने से बचाया। उन्होंने देवरथ ब्राह्मण की पुत्री शारदा पर कृपा की। विडम्ब तथा उसकी पत्नी वीचिका जो व्यभिचार के कारण भ्रष्ट हो गयी थी, उन्हें शिवजी ने अपना यश सुना कर धन्य कर दिया। उन्हीं शिवजी ने अनेक विचित्र चरित्र करके इन्द्र के मद को चूर्ण किया तथा बृहस्पति की बनायी हुई स्तुति को सुन कर इन्द्र को प्राणदान दिया। जिस समय चन्द्रमा अपने गुरु की पत्नी को भगा ले गया, उस समय शिवजी ने उसका अभिमान नष्ट करके बृहस्पति को उनकी पत्नी वापस दिलवा दी।

हे नारद ! कैलाश पर्वत पर जो महेश जी विराजमान् हैं, वे शिवजी के पहले अवतार हैं। वे अपने गणों के साथ लिये हुए, संसार के कल्याण के निमित्त अनेक प्रकार की कथाओं का वर्णन करते हैं। वे वट वृक्ष के नीचे बैठ कर कभी अपने ध्यान में मग्न हो जाते हैं और कभी समाधि द्वारा अपने ब्रह्मस्वरूप को प्रकट करते हैं। वे कभी राजाओं के समान आनन्द भवन में बैठ कर विहार करते हैं और कभी धर्म चर्चा करते हुए अपने बालकों को खिलाते हैं। वे कभी तपस्वी का रूप धारण कर दिगम्बर हो जाते हैं और कभी मुण्डों की माला पहन कर अपने शरीर में भस्म रमा लेते हैं। वे कभी संसार को त्याग कर भूत-प्रेतों की उत्पत्ति करते हैं और कभी परमहंसों के समान एकान्त में निश्चल बैठे रहते हैं। कभी प्रदोषकाल में भस्म धारण करते हैं और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:20 PM 87

कभी छोटे बालकों के समान विविध प्रकार के चरित्र करते हैं।

हे नारद ! वहाँ कैलाश पर्वत पर स्थित हो कर सनक, सनन्दन आदि शिवजी की अत्यन्त सेवा किया करते हैं। कभी मैं तथा विष्णु जी वहाँ पहुँच कर शिवजी की सेवा किया करते हैं। कभी-कभी शिवजी का ऐसा दरबार लगता है कि उसमें सब देवता एकत्र होते हैं। उस समय शिवजी गिरिजा सहित सिंहासन पर सुशोभित होते हैं। तब विष्णु जी मृदंग बजाते हैं, सरस्वती बीणा पर राग अलापती हैं, लक्ष्मी जी गीत गाती हैं, इन्द्र बाँसुरी बजाते हैं, मैं ताल देता हूँ तथा अन्य सब देवता उनकी आरती उतारते हैं। इस प्रकार सब लोग अपने-अपने भजनों को मीठे स्वरों में गा कर शिवजी को प्रसन्न करते हैं। शिवजी तथा गिरिजा का यह दूसरा रूप तीनों लोकों को अत्यन्त कल्याण करने वाला है।

हे नारद ! शिवजी अपने भक्तों की प्रसन्नता के निमित्त अनेक अवतार लेकर विभिन्न प्रकार की लीलाएँ किया करते हैं। शिवजी के करोड़ों नाम तथा करोड़ों चरित्र हैं। इसी प्रकार उनके रूपों की भी कोई गिनती नहीं है। तुमने, शारदा ने, शेष जी ने तथा अन्य सब देवताओं ने भी शिवजी के यश का बहुत वर्णन किया, परन्तु तुम में से कोई भी उसका पार नहीं पा सका। शिवजी के समान सुख देने वाला अन्य कोई नहीं है। उनकी ऐसी विचित्र लीला है कि वे स्वयं तो अपने शरीर में भस्म धारण करते हैं और अपने भक्तों को सब प्रकार के रास-रंग देते हैं। वे स्वयं हलाहल पीते हैं तथा भक्तों को पीने के लिए अमृत देते हैं। वे स्वयं मुण्डों की माला तथा साँपों की कंठी पहनते हैं, परन्तु अपने भक्तों को रत्नाभूषण देते हैं। इन सबसे भी बढ़ कर उनके सम्बन्ध में विचित्र बात यह है कि अन्य सब देवता तो सेवा करने से प्रसन्न होते हैं, परन्तु वे बिना सेवा किये ही प्रसन्न हो जाते हैं।

हे नारद ! ऐसे दयालु स्वामी को त्याग कर जो भी मूर्ख मनुष्य इधर-उधर भटकते हैं, उनसे अधिक हतभाग्य और कौन है? वेद में लिखा है कि कैलाशवासी महेश भगवान् सदाशिव के पूर्ण अवतार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:20 PM

हैं। वे अपने इस सगुण रूप द्वारा अनेक प्रकार की लीलाएँ करते हैं तथा अपने चरित्रों द्वारा भक्तों को आनन्द प्रदान करते हैं। मनुष्य को उचित है कि वह शिवशंकर के चरणों में अपने चित्त को लगाये रहें।''

❀❀❀

तीसरा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं तुमसे शिवजी के पाँच अवतारों की कथा का वर्णन करता हूँ। उन्होंने सर्वप्रथम मुझे सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति दी, तदुपरान्त ज्ञान दिया था। फिर प्रत्येक कल्प में वे मुझे उपदेश देते रहे, जिसके द्वारा मैंने सृष्टि को उत्पन्न किया। तुम उन अवतारों की कथा ध्यानपूर्वक सुनो।

हे नारद ! जब श्वेतलोहित नामक उन्नीसवाँ कल्प आया, उस समय मैंने यह विचार किया कि अब सृष्टि उत्पन्न करनी चाहिए। तब मैंने शिवजी का ध्यान किया। उस समय शिवजी बाल स्वरूप धारण कर श्वेतलोहित वर्ण से अपने चार शिष्यों के साथ प्रकट हुए। वे मुझे बड़ी कृपा दृष्टि से देख रहे थे। उस समय मैंने उन्हें देख कर अपने मन में यह विचार किया कि यह बालक कौन है। तभी भगवान् सदाशिव की कृपा से मुझे यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि यह बालक और कोई नहीं, अपितु परब्रह्म शिवजी ही हैं। उस समय मैंने उनकी स्तुति करते हुए हाथ जोड़ कर इस प्रकार कहा—''हे प्रभो ! आपके समान कृपालु और कौन है? अब आप मुझे ऐसी शक्ति दीजिये, जिससे मैं सृष्टि को उत्पन्न कर सकूँ। हे नाथ ! आप मुझे यह वरदान भी दीजिये कि मेरे हृदय से आपकी भक्ति एक क्षण के लिए भी दूर न हो तथा सृष्टि उत्पन्न करने में मुझे किसी प्रकार का दोष न लगे।'' मेरी इस प्रार्थना को सुन कर शिवजी ने 'एवमस्तु' कहा। तदुपरान्त वे इस प्रकार कहने लगे—''हे ब्रह्मा ! तुम्हें हमारे चरणों में सच्ची प्रीति है, इसीलिए हमने प्रकट हो कर तुम्हें अपना दर्शन दिया है। हमारा नाम सद्योजात है और हम योग का प्रचार करेंगे।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:20 PM

हे नारद ! इतना कह कर शिवजी ने अपने अंग से चार लड़कों को उत्पन्न किया। उन सब के शरीर का रंग श्वेत था। वे शिष्य नाम से प्रसिद्ध हो कर योगशास्त्र की पद्धति को प्रकट करने के हेतु शास्त्रपाठी हुए। उनके नाम इस प्रकार हैं—सनन्दन, नन्दन, विश्वनन्द तथा उपनन्द। अपने इन चार शिष्यों द्वारा शिवजी ने संसार में योगशास्त्र को प्रकट किया।

हे नारद ! भगवान् शिवजी के दूसरे अवतार की कथा इस प्रकार है—जब रक्तकल्प नामक बीसवाँ कल्प आया, उस समय मेरा वर्ण लाल रंग का था। उस समय मैं लाल वस्त्र तथा लाल ही माला पहने हुए था, अस्तु, जब मैंने सृष्टि उत्पन्न करने की इच्छा से भगवान् सदाशिव का ध्यान किया, तो वे लाल वस्त्र, लाल नेत्र तथा लाल रंग के ही आभूषण धारण किये हुए एक बालक के रूप में प्रकट हुए। उस समय मैंने उनका नाम वामदेव जान कर स्तुति तथा प्रणाम किया और यह प्रार्थना की कि "हे प्रभो ! आप मुझ पर ऐसी कृपा करें, जिससे मैं सृष्टि-रचना कार्य में समर्थ हो सकूँ।" यह सुन कर उन बाल रूपी धारी शिवजी ने 'एवमस्तु' कहा। तदुपरान्त उन्होंने अपने चार शिष्य उत्पन्न किये जिनका रूप, वर्ण तथा वस्त्र आदि सब लाल रंग के थे। उनके नाम—विरज, विवाह, विशोक तथा विश्वभावन हुए। तदुपरान्त शिवजी ने अपने उन चारों शिष्यों सहित योग की स्थापना की।

हे नारद ! तीसरे अवतार की कथा इस प्रकार है कि जब पीतवासा नामक इक्कीसवाँ कल्प आया, तब मैंने सृष्टि उत्पन्न करने की इच्छा से शिवजी का ध्यान किया। उस समय शिवजी पीतवस्त्र, पीत अलंकार तथा पीतवर्ण धारण किये हुए मेरे सम्मुख प्रकट हुए। जब मैंने ध्यान धर कर उन्हें पहचाना तब शिव-गायत्री का जप करके उनकी बहुत प्रकार से स्तुति की और उनसे यह प्रार्थना की आप मुझे सृष्टि उत्पन्न करने की सामर्थ्य प्रदान करें। तब उन तत्पुरुष नामक शिवजी ने 'एवमस्तु' कह कर अपने शरीर से चार शिष्य उत्पन्न किये,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:20 PM

जो पीले रंग के वस्त्र आभूषण आदि धारण किये हुए थे और जिनके शरीर का रंग भी पीला था। उनके द्वारा शिवजी ने सम्पूर्ण संसार में योगशास्त्र को उत्पन्न किया।

हे नारद ! चौथे अवतार की कथा इस प्रकार है कि जब पीतवासा कल्प को एक दिव्यसहस्त्र वर्ष व्यतीत हो गये तथा परिव्रत नामक कल्प आया, उस समय मैंने सृष्टि उत्पन्न करने की इच्छा से शिवजी का ध्यान किया। तब वे काले वस्त्र, काले यज्ञोपवीत, काले मुकुट तथां काले भस्म को धारण किये हुए बालक रूप में प्रकट हुए। जब मैंने ध्यान धर कर उन्हें पहचाना तो यह ज्ञात हुआ कि ये अघोर अवतार हैं। उस समय मैंने उनकी स्तुति करते हुएं दण्डवत् की और यह कहा—"हे प्रभो ! आप मुझे सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति प्रदान कीजिये।" उस समय उन अघोर अवतार शिवजी ने मुझसे 'तथास्तु' कह कर यह उत्तर दिया—"हे ब्रह्मा ! हमारा यह स्वरूप कष्टों को दूर करेगा तथा हमारा मन्त्र तुम्हारे सम्पूर्ण कार्यों को सिद्ध करेगा।" इतना कह कर उन्होंने अपनी भुजा से चार शिष्य उत्पन्न किये जो स्वरूप में उन्हीं के समान थे। तब उन्होंने अघोर योग को संसार में प्रसिद्ध किया, जिसमें सब जीवों को एक-जैसा कहा गया है।

हे नारद ! पाँचवें अवतार की कथा इस प्रकार है कि जब विश्वरूप नामक तेईसवाँ कल्प आया, तब मैंने सृष्टि उत्पन्न करने के हेतु शिवजी का ध्यान किया। अस्तु, मेरी प्रार्थना पर सर्वप्रथम विश्वरूपा भवानी प्रकट हुईं। उनके समस्त वस्त्राभूषण श्वेत थे तथा उनके शरीर का रंग भी श्वेत था। फिर उसी प्रकार के वस्त्र, आभूषण एवं वर्ण से युक्त हो कर भगवान् सदाशिव भी प्रकट हुए। उस समय मैंने ध्यान धर कर यह जाना कि इनका नाम ईशान है। अस्तु, मैंने उन्हें दण्डवत्-प्रणाम करने के उपरान्त यह प्रार्थना की कि आप कोई ऐसा उपाय कीजिए जिससे सम्पूर्ण सृष्टि की पुनः वृद्धि हो। यह सुन कर ईशान रूप शिवजी ने अपनी शक्ति विश्वरूपा सहित चार पुत्रों को उत्पन्न किया। उनके शरीर का रंग तथा वस्त्र आदि भी श्वेत ही थे। उन चारों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:20 PM

के नाम इस प्रकार हैं—जटी, मुण्डी, शिखण्डी तथा अर्द्धमुण्डी। ईशान रूप शिवजी ने अपने इन शिष्यों द्वारा योगशास्त्र को प्रकट किया। उस धर्म द्वारा मनुष्य आवागमन से छूट कर निर्भय हो जाते हैं। हे नारद ! इसी प्रकार पाँचों कल्पों में शिवजी ने पाँच अवतार धारण किये। ये सभी अवतार भक्तों को आनन्द देने वाले हैं तथा इनकी कथा सुनने से दोनों लोकों में सुख प्राप्त होता है।''

चौथा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं तुम से शिवजी के आठ अवतारों का वर्णन करता हूँ। जिस प्रकार सूत के डोरे में मणि और रत्न पिरोये रहते हैं, उसी प्रकार यह सम्पूर्ण संसार इन आठ अवतारों में स्थित है। उनके नाम इस प्रकार हैं—शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान तथा महादेव। ये आठों अवतार पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, यज्ञभूमि, सूर्य तथा चन्द्रमा में स्थित रहते हैं अर्थात् ये शर्वरूप हो कर पृथ्वी का भार अपने ऊपर लिए हुए हैं और सम्पूर्ण संसार को प्रसन्नता प्रदान करते हैं। भवरूप हो कर जल में रहते हैं और सम्पूर्ण प्राणियों के कष्टों को दूर करते हैं। रुद्र रूप हो कर अग्नि में निवास करते हैं और प्रकाश द्वारा सब लोगों को आनन्द प्रदान करते हैं। उग्र रूप हो कर वायु में निवास करते हैं, जिससे सब प्राणी जीवित रहते हैं। भीम रूप हो कर आकाश में जा कर निवास करते हैं और सम्पूर्ण संसार को अपने में समेटे रहते हैं। पशुपति रूप हो कर क्षेत्रज्ञ हैं, जिससे सब लोगों को सुख मिलता है। ईशान रूप हो कर वे सूर्य में स्थित रहते हैं, जिससे पृथ्वी तथा आकाश सब प्रकाशित बने हैं। महादेव हो कर उन्होंने चन्द्रमा में अपना निवास बनाया है और सम्पूर्ण जीवों का पालन करते हैं।

हे नारद ! शिवजी के यह आठ मुख्य रूप हैं। इस प्रकार शिवजी सब में प्रकट हैं। शिवजी का पूजा करने से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:20 PM

पालन-पोषण हो जाता है। जिस प्रकार माता-पिता को अपने बालक पर प्रीति होती है, उसी प्रकार मनुष्य को चाहिए कि संसार के समस्त प्राणियों पर प्रेम रखें। ऐसा आचरण करने वाले व्यक्ति के ऊपर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। अस्तु, सब जीवों में शिवजी का ही स्वरूप जान कर, सब पर स्नेह रखना चाहिए। जो मनुष्य अपनी भलाई चाहता हो उसे उचित है कि वह शिवजी के इन आठों स्वरूपों की सेवा किया करें। इन स्वरूपों के चरित्रों की कथा सुनने तथा सुनाने से भी आनन्द की वृद्धि होती है।''

इतनी कथा सुना कर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं अर्द्धनारीश्वर अवतार का वर्णन करता हूँ। जब मैंने सृष्टि को उत्पन्न करना आरम्भ किया, तो मैंने उसका पालन भी माता के समान किया, परन्तु वह किसी भी प्रकार वृद्धि को प्राप्त नहीं हुई। उस समय मैं अत्यन्त चिन्तित हो कर यह विचार करने लगा कि अब मैं कहाँ जाऊँ और किसकी सहायता लूँ? उस समय मुझे चिन्तित देख कर यह आकाशवाणी हुई कि 'हे ब्रह्मा ! तुम मैथुनी सृष्टि उत्पन्न करो, वह सृष्टि वृद्धि को प्राप्त होगी।' उस आकाशवाणी को सुनकर मेरे भी मन में ऐसी इच्छा हुई कि मैं ऐसी ही सृष्टि उत्पन्न करूँ। परन्तु उसमें मुझे सफलता नहीं मिली। तब मैंने यह विचार किया कि बिना शिवजी की सहायता से मेरा मनोरथ सफल न होगा। इसलिए मैंने तपस्या करनी आरम्भ की। मेरे उस तप से प्रसन्न हो कर शिवजी अर्द्धांगी स्वरूप धारण कर मेरे पास आये। उन्हें देख कर मैंने बड़ी स्तुति की तथा अपनी अभिलाषा कह सुनायी। उस समय शिवजी ने यह कहा— ''हे ब्रह्मा ! हम तुम्हें वरदान देते हैं कि तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा।'' इतना कह कर उन्होंने अपने शरीर को शक्ति से अलग कर लिया, तब शिव और शक्ति के दोनों अलग-अलग रूप दिखाई दिये। इस चरित्र को देख कर मुझे और भी अधिक प्रसन्नता हुई। तब मैंने आकाशवाणी का वृत्तान्त सुनाते हुए शक्ति से यह प्रार्थना की आप दक्ष के घर अवतार लें और शिवजी भी अवतार ले कर आपके साथ विवाह करें।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:21 PM

मेरी इस प्रार्थना को सुन कर शक्ति ने 'एवमस्तु' कहा; तदुपरान्त उन्होंने अपनी भौंहों के बीच से अन्य शक्तियाँ उत्पन्न कीं और शिवजी की ओर देखने लगीं। उस समय शिवजी ने हँस कर कहा कि ब्रह्मा ने हमारी प्रसन्नता के निमित्त बहुत तप किया है, अस्तु, तुम इनके मनोरथ पूर्ण करो। यह सुन कर शक्ति ने मेरी अभिलाषाओं को पूर्ण किया। तदुपरान्त वे मुझे वरदान दे कर अन्तर्धान हो गये। हे नारद ! इस प्रकार शिवजी से वरदान पा कर मैंने मैथुनी सृष्टि को उत्पन्न किया है। इस अवतार की कथा सब प्रकार की अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाली है।''

❁❁❁

पाँचवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! इस समय वाराह कल्प बीत रहा है। इसमें वैवस्वत नामक मनु का राज्य है। यह मेरा प्रपौत्र है। इसके कल्प के प्रत्येक द्वापर युग में वेदव्यास का अवतार होता है। व्यास जी संसारी जीवों की बुद्धि को मन्द देख कर पुराणों का निर्माण करते हैं, जिनसे उन्हें वेद का अर्थ भली-भांति समझ में आ जाए, परन्तु इतने पर भी संसारी मनुष्य मूर्ख बने रहते हैं। कलियुग की इस मूर्खता को देख कर ही शिवजी व्यास जी की प्रार्थना पर अवतार लेते हैं और उनके मत को प्रसिद्ध करते हैं। अब मैं तुम से व्यास जी के चरित्र का वर्णन करता हूँ, उसे ध्यानपूर्वक सुनो।

हे नारद ! पहले द्वापर के पहले मन्वन्तर में मैंने व्यास के रूप में अवतार लिया तथा वेद को ऋक्, यजुः, साम तथा अथर्व—इन चार विभागों में बाँटा और उनकी शाखाओं को बढ़ाया। तदुपरान्त मैंने पुराणों का निर्माण किया; क्योंकि कलियुग के कारण संसारी जीवों की बुद्धि नष्ट हो गयी थी। मैंने वेद की रीतियों को पुराणों में इस प्रकार कहा कि जिससे सब लोग उसे सुगमतापूर्वक समझ सकें और प्रसन्न हों। जिस प्रकार कोई वैद्य रोगी को कड़वी औषधि न देकर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:21 PM

मीठी औषधि द्वारा रोग को दूर करने का उपाय करता है, वही कार्य मैंने भी किया। यद्यपि मैंने अनेक प्रकार के प्रयत्न किये, परन्तु व्यासमत प्रसिद्ध नहीं हुआ और न किसी ने पुराणों को ही पढ़ा। तब मैंने अत्यन्त चिन्तित हो कर शिवजी का स्मरण करते हुए उनसे यह प्रार्थना की कि "हे प्रभो ! द्वापर व्यतीत हो कर कलियुग आ रहा है, परन्तु कोई भी आदमी पुराणों को नहीं छूता और मेरे मत को भी नहीं मानता, इसलिए आपको उचित है कि अब आप दया करके मेरी सहायता करें और मेरे मत को दृढ़ करें।"

हे नारद ! मेरी प्रार्थना सुन कर शिवजी ने प्रसन्न हो, कलियुग के प्रारम्भ में, एक ब्राह्मण के घर जन्म लिया। वह ब्राह्मण हिमालय पर्वत के एक भाग छागलागिरि में रहता था। उस समय शिवजी का नाम श्वेत रखा गया। जिस समय वे उत्पन्न हुए, उस समय सब लोग जय-जयकार करने लगे। आकाश से पुष्प-वर्षा होने लगी। सब लोगों ने प्रसन्न हो कर शिवजी की बड़ी स्तुति की। तब शिवजी ने संसार पर दया करने के हेतु अगमयोग को प्रकट किया। उस समय श्वेत, श्वेतशिष्य, श्वेताश्व तथा श्वेतलोहित नामक उनके चार बड़े प्रसिद्ध शिष्य हुए। वे सब आश्रम धर्म को जानने वाले, योगाभ्यासी तथा पाप-रहित थे। शिवजी ने उन्हें योग की क्रीड़ाएँ सिखायीं और उनके द्वारा संसार में योग को प्रकट किया। तदुपरान्त सभी संसारी जीवों ने प्रयत्नपूर्वक योग को अपनाया और वेद-पुराण के मत को स्वीकार किया। इस प्रकार शिवजी ने श्वेत रूप धारण कर व्यास रूप हो मुझको प्रसन्नता प्रदान की।

हे नारद ! दूसरे सत्य नामक द्वापर युग में प्रजापति ने व्यास जी का अवतार लिया और वेद के भाग किये। तदुपरान्त उन्होंने पुराणों की भी रचना की, परन्तु संसार में किसी ने भी उनके मत को स्वीकार न किया। उस समय उन्होंने दुःखी हो कर शिवजी का ध्यान किया तब शिवजी ने सुतार नाम से पृथ्वी पर अवतार लिया और व्यास जी के मत को प्रसिद्ध कर योगशास्त्र का प्रचार किया। उनके दुन्दुभि, सत्य रूप,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:21 PM

ऋचीक तथा केतुमान् नामक चार शिष्य थे। इस प्रकार उन्होंने अपने शिष्यों सहित व्यास जी के धर्म की स्थापना कर, सभी संसारी जीवों को आनन्द पहुँचाया।

हे नारद ! तीसरे द्वापर युग में शुक्र ने व्यास जी का अवतार लिया और वेदों के विभाग कर पुराणों का निर्माण किया। जब उन्हें भी सिद्धि प्राप्त न हुई, तब शिवजी ने उनकी प्रार्थना पर दमन नामक अवतार लिया और व्यास जी के मत को संसार में प्रसिद्ध किया। उनके विशोक, विकेश, व्यास तथा सुप्रकाश नामक चार शिष्य थे। उन शिव के दमन अवतार ने योगाभ्यास की रीतियों को अपने शिष्यों द्वारा संसार में प्रचलित कराया तथा पुराणों के मत को स्थिर करके लोगों को मुक्ति का मार्ग दिखाया।

हे नारद ! चौथे द्वापर युग में बृहस्पति ने व्यास जी का अवतार लेकर वेद के विभाग किए तथा पुराणों को प्रसिद्ध किया, परन्तु कलियुग के कारण उनकी अभिलाषा पूरी नहीं हुई। तब उन्होंने शिवजी का स्मरण एवं ध्यान किया जिससे प्रसन्न हो कर शिवजी ने सुहोत्र नाम से पृथ्वी पर अवतार लिया और व्यास जी के मनोरथों को पूरा किया। उस समय उनके सुमुख, दुर्मुख, दुर्मद तथा दुरतिक्रम नामक चार शिष्य हुए। उन्होंने अपने शिष्यों को योगाभ्यास की शिक्षा दी और उनके द्वारा व्यास जी के मत को संसार में प्रसिद्ध कराया।

हे नारद ! पाँचवें द्वापर युग में सविता देवता ने व्यास जी का अवतार लिया और वेद के विभाग करके, पुराणों का निर्माण किया। जब उनका मत प्रसिद्ध नहीं हुआ, तब शिवजी ने उनकी प्रार्थना पर कनक नाम से पृथ्वी पर अवतार लिया। उस समय सनक, सनन्दन, सनातन तथा सनत्कुमार नामक उनके चार शिष्य थे। इन शिष्यों को प्रभु, विभु, निर्मम तथा निरहंकृति भी कहा जाता है। अस्तु इन शिष्यों को योगाभ्यास का उपदेश करके शिवजी ने व्यास मत का प्रचार किया तथा संसार में पुराणों की प्रतिष्ठा बढ़ायी।

हे नारद ! छठे द्वापर युग में मनु ने व्यास का अवतार लिया तथा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:21 PM

उन्होंने अपना नाम महत् रखा। उन्होंने अन्य व्यासों की अपेक्षा और अधिक श्रेष्ठ पुराणों का निर्माण किया, परन्तु जब उनके मत को कलियुग के संसारी जीवों ने स्वीकार नहीं किया, तब उन्हें भी शिवजी की सहायता लेने के लिए बाध्य होना पड़ा। उस समय शिवजी ने लोकाक्ष नाम से पृथ्वी पर अवतार लिया। उनके शिष्यों के नाम सुधामा, विरुज, शंख तथा अम्बुज थे। उन्होंने योगशास्त्र को प्रसिद्ध कर, अपने शिष्यों द्वारा व्यास जी ने पौराणिक मत का प्रचार किया और लोगों को मुक्ति का सरल मार्ग दिखाया।

हे नारद ! सातवें द्वापर युग में शतक्रतु ने व्यास का अवतार लिया तथा वेद के विभाग करके पुराणों को बनाया, किन्तु किसी ने भी उनके मत को स्वीकार नहीं किया। यह देख कर व्यास जी ने भगवान् सदाशिवजी का स्मरण किया। तब शिवजी जैगीषव्य नाम धारण कर पृथ्वी पर अवतरित हुए। उनके शिष्यों के नाम सारस्वत, पराहन, मेघनाद तथा सुवाहन थे। अपने उन शिष्यों के साथ जैगीषव्य अवतार ने योगशास्त्र को प्रकट किया तथा संसार में पुराण का धर्म प्रतिष्ठित किया। जैगीषव्य के समान व्रत का पालन करने वाला कोई नहीं हुआ। जिस समय शिवजी काशीपुरी को त्याग कर मन्दराचल पर्वत पर चले गये थे, उस समय जैगीषव्य ने यह प्रण किया था कि जब तक शिवजी पुनः यहाँ लौट कर नहीं आ जायेंगे, तब तक मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा। अपने इस प्रण का निर्वाह भी उन्होंने पूरा किया। जैगीषव्य का चरित्र पढ़ने और सुनने में अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाला है।"

छठा तथा सातवाँ अध्याय

इतनी कथा सुन कर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! शिवजी के काशी छोड़ने का क्या कारण था?" यह सुन कर ब्रह्मा जी ने आदि से अन्त तक की सब कथा नारद जी को कह सुनायी। जिस प्रकार काशी में अकाल पड़ा तथा राजा दिवोदास ने वर प्राप्त किया, उसके पश्चात्

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:21 PM

गणपति की कथा तथा विष्णु जी का चरित्र सुनाया। जिस प्रकार विष्णु जी ने बौद्धमत का प्रचार कर सब को धर्म भ्रष्ट किया तथा राजा दिवोदास ने विष्णु जी की आज्ञा का पालन कर, काशी छोड़ गोमती तट पर निवास किया, वह सब कथा भी सुनायी।

इसके उपरान्त ब्रह्मा जी ने वह वृत्तान्त कहा, जिस प्रकार कि शिवजी के गण राजा दिवोदास को शिवलोक ले गये थे। विष्णु जी का गरुड़ जी द्वारा शिवजी के पास सन्देश भेजना तथा शिवजी के काशी-आगमन की कथा को कह कर, उस चरित्र का वर्णन किया जिस प्रकार कि शिवजी रथ पर आरूढ़ हुए थे तथा उन्होंने गुहा में जा कर जैगीषव्य को दर्शन दिया था। इसके उपरान्त ज्येष्ठेश्वर शिवलिंग की स्थापना, ज्येष्ठा देवी का प्रकट होना, हिमाचल का काशी में आ कर शिवालय का निर्माण कराना तथा शिवजी के काशी में निवास करने की कथा को आदि से अन्त तक कह सुनाया। ब्रह्मा जी द्वारा इस सब वृत्तान्त को सुन कर नारद जी को अत्यन्त प्रसन्नता हुई।''

❂ ❂ ❂

आठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! अब मैं शिवजी के अट्ठाईसों अवतारों का वर्णन करता हूँ। सात अवतारों के विषय में तो मैं तुम्हें बता ही चुका हूँ। आठवें अवतार की कथा इस प्रकार है कि जब आठवाँ द्वापर युग आया तब उसमें वशिष्ठ मुनि ने व्यास जी का अवतार लेकर, वेद के चार विभाग किये तथा पुराणों का निर्माण किया। जब उनका प्रचार नहीं हुआ तब उन्होंने शिवजी की प्रार्थना की। उस समय शिवजी ने दधि-वाहन नामक अवतार लेकर व्यास मत को प्रकट किया। दधि-वाहन के कपिल, आसुरि, पंचशिव तथा शाल्वल नामक चार शिष्य थे। उन्होंने अपने इन शिष्यों द्वारा व्यास मत को प्रसिद्ध किया तथा योगाभ्यास को फैलाया।

हे नारद ! नौवें द्वापर युग में सारस्वत मुनि ने व्यास जी का अवतार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:21 PM

लिया तथा वेद के विभाग कर, पुराणों को बनाया। जब उन्हें अपने मत का प्रचार करने में सफलता प्राप्त न हुई, तब उन्होंने शिवजी का ध्यान किया, जिससे प्रसन्न हो कर शिवजी ने ऋषभ नाम से पृथ्वी पर अवतार लिया। उस समय उनके पाराशर, गर्ग, भार्गव तथा आंगिरस नामक चार शिष्य थे। उन्होंने योगाभ्यास द्वारा व्यास जी के मत का प्रचार किया तथा निवृत्ति धर्म का उपदेश करके संसार का कल्याण किया। ऋषभ जी के चरित्र अत्यन्त पवित्र तथा प्रसिद्ध हैं। जो मनुष्य उन चरित्रों को पढ़ता एवं सुनता है, वह स्वयं भी शिवरूप हो जाता है। उन्होंने भद्रायुष को महान् सुख प्रदान किया था तथा केवल एक दिन की सेवा से प्रसन्न हो कर ही मुद्र नामक ब्राह्मण तथा कंकाली को मुक्त कर दिया था।

हे नारद ! दसवें द्वापर युग में त्रिधारा ने व्यास जी का अवतार लिया और वेद को चार विभागों में विभाजित कर, पुराणों का निर्माण किया। जब उनके मत का प्रचार नहीं हुआ, तब उन्होंने शिवजी की उपासना की। उस समय शिवजी ने हिमाचल पर्वत के भृगुशृंग नामक एक भाग में भृगु नाम से अवतार लिया। उनके निरमित्र, जगत्बोधन, गुप्तशृंग तथा तपोधन नामक चार शिष्य हुए। उन्होंने अपने शिष्यों की सहायता से व्यास जी के मत का प्रचार किया तथा संसार में पुराणों की प्रतिष्ठा को बढ़ाया।

हे नारद ! ग्यारहवें द्वापर युग में त्रिवृत्त ने व्यास जी का जन्म लिया और वेद के विभाग करके, पुराणों का निर्माण किया। तदुपरान्त उन्होंने शिवजी का ध्यान धर कर यह वरदान माँगा कि संसार में मेरे मत का प्रचार करने के लिए आप अवतार ग्रहण करें। उनकी प्रार्थना पर प्रसन्न हो कर शिवजी ने गंगाजी के द्वारा तप नामक अवतार लिया। उनके लम्बोदार, लम्बाक्ष, लम्बकेश तथा प्रलम्ब नामक चार शिष्य हुए। तब उन्होंने अपने शिष्यों के द्वारा व्यास जी के मत को स्थापित किया एवं संसार में योगाभ्यास का प्रचार किया।

हे नारद ! बारहवें द्वापर युग में भारद्वाज ने व्यास जी का अवतार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लिया और वेदों के विभाग करके पुराणों का निर्माण किया। जब उन्हें अपने मत को फैलाने में सफलता नहीं मिली, तो उन्होंने शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने प्रसन्न हो कर अत्रि नाम से पृथ्वी पर अवतार लिया और हेमकिंचक में विराजमान हुए। उनके सरोज, सम्बुद्धि, साधु तथा शर्व नामक चार शिष्य थे। उन्होंने व्यास जी के मत को प्रसिद्ध करके संसार में योगाभ्यास को फैलाया तथा पुराणों के मत का प्रचार किया।

हे नारद ! तेरहवें द्वापर युग में धर्म ने व्यास जी का अवतार लिया और वेद के विभाग करके पुराण बनाये। जब उनको अपना मत फैलाने में सफलता प्राप्त नहीं हुई तो उन्होंने शिवजी का ध्यान किया, जिससे प्रसन्न हो कर शिवजी ने गन्धमादन पर्वत पर बालखिल्य के आश्रम में बालि नाम से अवतार लिया। उनके सुधामा, कश्यप, वशिष्ठ तथा विरजी नामक चार शिष्य हुए। इन शिष्यों के द्वारा उन्होंने व्यास जी के मत का प्रचार किया।

हे नारद चौदहवें द्वापर युग में रक्ष ने जिन्हें बभ्रु भी कहा जाता है, व्यास जी का अवतार लिया और वेद के विभाग करके पुराणों को बनाया। जब उनके मत को किसी ने स्वीकार नहीं किया तो उन्होंने शिवजी की प्रार्थना करते हुए सहायता माँगी। उस समय शिवजी ने अंगिरस के कुल में गौतम नाम से जन्म लिया। उनके अत्रि, देवसत्व, अबल तथा सहिष्णु नामक चार शिष्य हुए। उनके द्वारा शिवजी ने व्यास मत का प्रचार किया और संसार में पुराणों का सम्मान बढ़ाया।

हे नारद ! पन्द्रहवें द्वापर युग में त्रव्यारुणि ने वेदव्यास का अवतार लिया और वेद के चार भाग करके पुराणों को प्रकट किया। जब उनके मत का प्रचार नहीं हुआ, तब उन्होंने शिवजी से सहायता माँगी। उस समय भगवान् शिवशंकर ने हिमालय पर्वत के पीछे तथा गंगा के तट पर वेदस्वर नाम से पृथ्वी पर अवतार लिया उनके गुण, गुणवाह, कुशरीर तथा कुनेत्र नामक चार शिष्य हुए। तब उन्होंने अपने शिष्यों की सहायता से व्यास जी के मत को स्थापित किया और योगाभ्यास

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:21 PM 4G 87

का उपदेश करके पुराणों के मत का प्रचार किया।

हे नारद ! सोलहवें द्वापर युग में धनंजय ने व्यास जी का जन्म लिया तथा वेद के विभाग करके पुराणों को बनाया। जब उनके मत की वृद्धि नहीं हुई, तब उन्होंने भी शिवजी का ध्यान धर कर सहायता माँगी। उस समय शिवजी ने गोकर्ण नामक वन में, जो बाद में अघहर क्षेत्र नाम से पुकारा जाने लगा, गोकर्ण नामक अवतार ग्रहण किया। उनकी सेवा करने से सम्पूर्ण कार्य सिद्ध होते हैं। उस समय उनके कश्यप, उशना, च्यवन तथा ब्रह्मपति नामक चार शिष्य थे। अस्तु, उन्होंने अपने शिष्यों को योगाभ्यास का उपदेश किया। तदुपरान्त उनके द्वारा संसार में व्यास के मत को फैलाया।

हे नारद ! सत्रहवें द्वापर युग में कृतंजय ने व्यास जी का जन्म लिया और वेद के चार विभाग करके पुराणों को प्रकट किया। जब उन्हें अपने मत के प्रचार में सफलता नहीं मिली, तब उन्होंने शिवजी की प्रार्थना करके यह कहा—"हे प्रभो ! आप अवतार लेकर मेरी सहायता कीजिए।" तब उनकी प्रार्थना को सुनकर शिवजी ने हिमालय पर्वत के शिखर पर महालय नामक अवतार लिया। उन्हें गुहावासी कह कर भी पुकारा जाता है। उनके, उतथ्य, वामदेव, महायोग तथा महाबल नामक चार शिष्य हुए। तब उन्होंने अपने शिष्यों को योगाभ्यास का उपदेश कर, उनके द्वारा संसार में व्यास जी के मत का प्रचार कराया।"

नौवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! अठारहवें द्वापर युग में ऋतंजय ने व्यास जी का जन्म लिया और वेद के विभाग कर पुराणों को प्रकट किया। उस समय शिवजी ने हिमालय के शिखंड नामक एक शिखर पर, जिसे सिद्ध क्षेत्र भी कहा जाता है, अवतार लिया। उस समय उनका नाम शिखण्डी था। उनके वाचश्रव, ऋचीक, शावास्य तथा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:21 PM 4G 87

रजनीश्वर नामक चार शिष्य हुए। तब उन्होंने अपने शिष्यों को योगाभ्यास का उपदेश करके व्यास जी के मत का प्रचार कराया तथा संसार में पुराणों की महिमा बढ़ायी।

हे नारद ! उन्नीसवें द्वापर युग में भरद्वाज ने व्यास जी का जन्म लिया और वेद के चार विभाग कर, पुराणों को प्रकट किया। उस समय शिवजी ने हिमालय पर्वत पर जटामाली नामक अवतार लिया तथा अपने चार शिष्यों के द्वारा व्यास जी के मनोरथ को पूर्ण किया। उस समय उनके शिष्यों के नाम—रण्य, कौशल्य, लोकाक्षी तथा युध्म थे। शिवजी ने उन्हें योगाभ्यास का उपदेश करके, संसार में पुराणों के मत को स्थापित किया।

हे नारद ! बीसवें द्वापर युग में गौतम ने व्यास जी का जन्म लिया तथा वेद के विभाग करके पुराणों को बनाया। उस समय शिवजी ने हिमालय पर्वत के पीछे अट्टहास नामक स्थान पर इसी अर्थात् अट्टहास नाम से ही अवतार ग्रहण किया। उनके शिष्यों के नाम श्रीमन्त, बर्बरी, बुद्धि, ऋग्बन्धु तथा किष्किन्धरा थे। उन्होंने अपने इन शिष्यों की सहायता से पौराणिक मत का प्रचार किया तथा व्यास जी की मनोकामना पूर्ण की।

हे नारद ! इक्कीसवें द्वापर युग में व्यास जी ने वेद के विभाग पर पुराणों को बनाया। तदुपरान्त शिवजी का स्मरण कर, उनसे अपने मत का प्रचार करने के लिए सहायता की माँग की। उस समय शिवजी ने दारुक नामक अवतार लेकर व्यास जी का मनोरथ सिद्ध किया। जिस वन में उनका जन्म हुआ था, वह वन संसार में दारुक वन के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। उनके प्लक्ष, दाल्म्यायन, केतुभानु तथा गौतम नामक चार शिष्य हुए। उनकी सहायता से शिवजी ने संसार में व्यास के मत का प्रचार किया।

हे नारद ! बाईसवें द्वापर युग में शुष्मालय मुनि ने व्यास जी का जन्म लिया और शिवजी का ध्यान धर कर, वेद के चार भाग किये तथा पुराणों की रचना की, परन्तु जब उन्हें अपने कार्य में सफलता नहीं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:22 PM

मिली व भगवान् आशुतोष से सहायता की याचना की, उस समय शिवजी ने लांगली नाम से काशी में अवतार लिया। उनके भल्लनि, मधुपुंग, श्वेत तथा गुप्तकान्त नामक चार शिष्य हुए तथा उन्होंने इन शिष्यों की सहायता से संसार में व्यास जी के मत को प्रसिद्ध किया।

हे नारद ! तेईसवें द्वापर युग में तृणविन्दु ने व्यास जी का जन्म लिया और उन्होंने वेद के विभाग करके पुराणों की रचना की। अपने मत को सिद्ध होते न देख कर, जब उन्होंने शिवजी से सहायता माँगी तो शिवजी ने कालिञ्ज नामक पर्वत पर महाकाय सुतश्वेत नामक अवतार लिया। उस समय उनके शिष्यों के नाम औषधि, वृहदक्ष, देवल तथा कव्य थे। शिवजी ने इन शिष्यों की सहायता से व्यास जी के मत को प्रसिद्ध किया।

हे नारद ! चौबीसवें द्वापर युग में कुक्षि, जिन्हें वाल्मीकि भी कहा जाता है, ने व्यास जी का जन्म लिया। उन्होंने वेद के विभाग करके पुराणों को प्रकट किया। जब उन्हें अपने मत को फैलाने में सफलता नहीं मिली तो उन्होंने शिवजी की स्तुति करते हुए उनसे सहायता की याचना की। उस समय शिवजी ने नैमिष नामक वन में शूली नामक अवतार ग्रहण किया और व्यास जी की मनोकामना को पूर्ण किया। उनके शिष्यों के नाम शालिहोत्र सहजहोत्र, युवनाश्व तथा अहिर्बुध्न थे। इन्हीं व्यास जी ने श्री रामचन्द्र जी के लीला-चरित्रों का भी वर्णन किया है।

हे नारद ! पच्चीसवें द्वापर युग में ब्रह्मसप्त ने व्यास जी का जन्म लिया और शिवजी का तप करके, उनसे अपने मत का प्रचार करने में सहायता करने की प्रार्थना की। उन्होंने वेद के विभाग करके पुराणों को बनाया था, परन्तु जब उनके मत को संसारी लोगों ने स्वीकार नहीं किया, तो वे अत्यन्त निराश हुए। उस समय शिवजी ने दण्डीमुण्डी नामक अवतार ग्रहण किया। उनके शिष्यों के नाम बहुल, कुण्डकर्ण, कुम्भाण्ड तथा प्रभात थे। इन्हीं की सहायता से उन्होंने संसार में पुराणों की प्रतिष्ठा करायी तथा संसारी मनुष्यों को योगमार्ग का उपदेश

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:22 PM

दिया। इन पच्चीसवें व्यास जी के पुत्र का ही नाम उपमन्यु था। उसने बाल्यावस्था से ही शिवजी की बड़ी भक्ति की थी।

हे नारद ! छब्बीसवें द्वापर युग में पाराशर ने व्यास जी का जन्म लिया। वे मेरे पौत्र तथा वैशम्पायन के पिता थे। उनके समान शिवजी का परमभक्त अन्य कोई नहीं हुआ। उन्होंने वेद के चार विभाग करके, अठारह पुराणों का निर्माण किया। जब उनके मत का प्रचार संसार में नहीं हुआ, तब उन्होंने भगवान् सदाशिव से सहायता की याचना की। उस समय शिवजी ने दयालु हो कर उनकी मनोकामना पूर्ण करने के हेतु सहिष्णु नाम से अवतार लिया और भद्रनाट नामक नगर में प्रतिष्ठित हुए। उनके शिष्यों के नाम उलूक, विद्युत, सम्बल तथा अश्वलायन थे। इन सब शिष्यों ने शिवजी की आज्ञा से व्यास जी की सहायता की और उनके मत को संसार में प्रचलित किया।

हे नारद ! सत्ताईसवें द्वापर युग में ज्ञानकर्ण ने व्यास जी का जन्म लिया तथा वेद के विभाग करके पुराणों की रचना की। फिर अपने मत को प्रचलित होते हुए न देख कर उन्होंने शिवजी की स्तुति की। उस समय शिवजी ने प्रभास क्षेत्र में सौम्यकर्म नाम से अवतार लिया। उनके शिष्यों के नाम अक्षपाद, सुमुनिकुमार, उलूक तथा वत्स थे। सौम्यकर्म रूपी शिवजी के अवतार ने योगशास्त्र को प्रकट कर, पुराण के मत को प्रचलित किया तथा अद्वैत धर्म को दृढ़ किया।

जब व्यास जी ने यह देखा कि अब कोई भी मनुष्य उसके मत का विरोधी नहीं है तो उन्होंने अत्यन्त प्रसन्न हो कर शिवजी की स्तुति की। तदुपरान्त संसार भर में व्यास जी और उनके शिष्यों का यश फैल गया। हे नारद ! इस प्रकार द्वापर युग में जो शिवजी के सत्ताईस अवतार हुए, उसका वर्णन मैंने तुमसे किया। अब तुम उस अवतार के बारे में सुनो, जिसे शिवजी ने कलियुग के प्रारम्भ में लिया था। हे पुत्र ! शिवजी के इन अवतारों की कथाओं को जो मनुष्य मन लगा कर सुनता अथवा दूसरों को सुनाता है, वह दोनों लोकों में सब प्रकार का आनन्द प्राप्त करता है।''

❀❀❀

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:22 PM

दसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! अट्ठाईसवें द्वापर युग में देवताओं द्वारा प्रार्थना किये जाने पर विष्णु जी ने व्यास का अवतार लिया तथा वेद के विभाग कर, पुराणों को प्रकट किया। परन्तु जब उनका मत प्रसिद्ध न हुआ, तब उन्होंने शिवजी की स्तुति करते हुए यह माँग की कि "हे प्रभो ! आप मुझे इस कार्य में सहायता प्रदान करें तथा मेरे मत का प्रचार करने में सहायक हों।" उस समय शिवजी ने व्यास जी की प्रार्थना पर अवतार लिया और उनके मत का प्रचार करने में सहायक बने।"

इस वृत्तान्त को सुन कर नारद जी बोले—"हे पिता ! मेरी यह इच्छा है कि आप इस कथा को विस्तारपूर्वक सुनायें।" ब्रह्मा जी बोले—"अच्छा, मैं इसे विस्तारपूर्वक कहता हूँ। इस वृत्तान्त में शिवजी एवं विष्णु जी के लीला चरित्रों का वर्णन है। हे नारद ! पूर्वकाल में जब देवासुर-संग्राम हुआ था, उस समय बहुत-से दैत्य मारे गये। अवसर पा कर वे सब दैत्य पुनः पृथ्वी पर उत्पन्न हुए और कुसंगति में पड़ कर कुमार्ग पर चलने लगे। वे विपरीत बातें करते हुए अपने अहंकार में भर कर अनेक प्रकार के कुकर्म करने लगे। वे इस प्रकार इन्द्रियों के वशीभूत हुए कि उनमें भी परस्पर शत्रुता फैल गयी। उस समय देवताओं ने संसार में अनाचार बढ़ता हुआ देख कर विष्णु जी की सेवा में पहुँच, अपने दुःख का वर्णन किया तथा उनसे वह कष्ट दूर करने की प्रार्थना की। उस समय भगवान् विष्णु जी ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए पाराशर के पुत्र के रूप में पृथ्वी पर जन्म लिया। संसार में वे कृष्णद्वैपायन के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनकी माता का नाम सत्यवती था।

हे नारद ! उन कृष्णद्वैपायन, व्यास रूप विष्णु जी ने वेद के चार विभाग करके उनकी शाखाओं को फैलाया तथा पुराणों का निर्माण किया; परन्तु संसार में उनका प्रचार किसी भी प्रकार न हो सका। यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:22 PM

देख कर व्यास जी सब देवताओं तथा ऋषि-मुनियों सहित कमलापति विष्णु जी की शरण में गये और उनसे प्रार्थना करते हुए कहने लगे— "हे प्रभो ! मेरे पुराणों का संसार में कुछ भी आदर नहीं हो रहा है, अस्तु, आप मेरे मत का प्रचार करने में सहायक हों।" उस समय विष्णु जी ने उन्हें सान्त्वना देते हुए इस प्रकार कहा—"हे व्यास जी तथा ऋषि-मुनियो ! तुम निश्चिन्त हो कर अपने घर जाओ। हम पृथ्वी पर कृष्ण रूप में अवतार लेकर, तुम्हारे दुःख को दूर करेंगे। भगवान् विष्णु जी के ऐसे वचन सुनकर सब लोग अपने-अपने घर लौट आये। तदुपरान्त विष्णु जी ने यदुवंशी वसुदेव के घर कृष्ण रूप में अवतार लिया। उनका स्मरण करने मात्र से ही मनुष्य के सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।

हे नारद ! वसुदेव की दूसरी पत्नी रोहिणी के गर्भ से शेष जी ने बलभद्र के रूप में अवतार लिया। सब देवता तथा मुनि आदि उन बलभद्र जी की सेवा करते हैं। अस्तु, श्रीकृष्ण जी ने बज्र में पहुँच कर जो चरित्र किये, तुम उन्हें सुनो। उन्होंने यशोदा तथा नन्द को अपनी बाल-लीलाओं द्वारा अत्यन्त प्रसन्नता प्रदान की तथा गोपियों को भी बहुत मोहित किया। पूतना आदि को, जिन्हें कंस ने भेजा था, श्रीकृष्ण जी ने मार डाला। बड़े-बड़े योगियों को अपनी तपस्या द्वारा जो फल प्राप्त नहीं होता, उसे ब्रज वासियों ने सहज ही पा लिया।

हे नारद ! जब श्रीकृष्ण जी बारह वर्ष के हुए, तब वे बलभद्र जी के साथ मथुरा चले आये। वहाँ उन्होंने कंस को, उसके सभी साथियों सहित मार कर नष्ट कर दिया तथा यदुवंशियों को बहुत सुख पहुँचाया। उन्होंने अनेक दैत्यों तथा शत्रुओं को मार कर, अपने भक्तों की प्राण-रक्षा की तथा जरासन्ध के बल एवं अहंकार का नाश किया। श्रीकृष्ण जी के वंश की संख्या का वर्णन नहीं किया जा सकता। उनकी सोलहसहस्र, एक सौ आठ रानियाँ थीं। उनसे दस-दस पुत्र उत्पन्न हुए थे। इस प्रकार श्रीकृष्ण जी ने गृहस्थाश्रम के महत्त्व का प्रतिपादन किया था। जब वे छोटे थे, तब उन्होंने अपनी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:22 PM

कनिष्ठिका उँगली पर गोवर्द्धन पर्वत को उठा लिया था।

हे नारद ! महाभारत के युद्ध में उन्होंने अनेक प्रकार से पृथ्वी का भार उतारा। जब उन्होंने यदुवंशियों में अभिमान बढ़ता हुआ देखा, तब ब्राह्मण से शाप दिलवा कर उन्हें भी नष्ट करा दिया। इस प्रकार अपने लोक में जाने से पूर्व वे अपने कुल का नाश करा गये। उन्होंने अपने मित्र उद्धव को अद्वैत ज्ञान का उपदेश किया तथा उन्हें बदरीवन में भेज कर मुक्त कर दिया। जिस व्याध ने उनके पाँव में बाण मारा था, उसको निर्वाण पद दिया तथा अपने सारथी दारुक को मुक्ति देकर वे अपने लोक चले गए। हे नारद ! श्रीकृष्ण जी का चरित्र हमने तुम्हें संक्षेप में सुनाया है। इसके सुनने तथा सुनाने से मुक्ति प्राप्त होती है।

हे नारद ! इस प्रकार श्रीकृष्ण जी ने पृथ्वी पर धर्म को फिर स्थित किया, परन्तु उससे व्यास जी को विशेष प्रसन्नता न हुई; क्योंकि संसार में उनका निवृत्ति मार्ग प्रसिद्ध नहीं हुआ था। अतः उन्हें दिन-रात यही सोच बना रहता था कि किसी प्रकार हमारा मत संसार में फैले। अपनी मनोभिलाषा की पूर्ति के हेतु एक दिन उन्होंने भगवान् सदाशिव का ध्यान किया तथा उनसे यह प्रार्थना की कि "हे कृपासिन्धो ! मैंने वेद के आशय को पुराणों में प्रकट किया है, परन्तु कलियुग के प्रभाव के कारण उन्हें कोई नहीं मानता। अस्तु, मेरी यह प्रार्थना है कि अब आप स्वयं अवतार लेकर, मेरे मत की वृद्धि करें तथा निवृत्ति मार्ग को दृढ़ बनायें।"

हे नारद ! व्यास जी की यह प्रार्थना सुन कर शिवजी ने ब्रह्मचारी का स्वरूप धारण किया। तदुपरान्त उन्होंने अपनी योगमाया द्वारा सम्पूर्ण संसार को मोहित कर लिया। फिर वे उसी शरीर से श्मशान में जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने यह देखा कि एक मुर्दा पड़ा हुआ है, तो वे योगमाया द्वारा उसके शव में प्रवेश कर गये और पर्वत की कन्दरा में जा कर स्थित हुए। जब मुझे तथा विष्णु जी को यह वृत्तान्त ज्ञात हुआ, तब हम दोनों उनकी सेवा में जा पहुँचे और उनकी कई प्रकार से उनकी स्तुति करने लगे। भगवान् सदाशिव के उस अवतार का नाम लाकुलीश

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

था। जिस स्थान पर शिवजी विराजमान हुए थे, उसे सिद्ध क्षेत्र अथवा कायाचत्वर कहते हैं। लाकुलीश शिव ने उशिक, गर्ग, मित्र तथा रुन्ध नामक अपने चार शिष्य बनाये और उनके द्वारा संसार में व्यास जी के मत को प्रकट किया। उस समय सब लोगों का दुःख नष्ट हो गया तथा तीनों लोकों में आनन्द की वृद्धि हुई।

हे नारद ! अब मैं तुम्हें इस सब वृत्तान्त का सार सुनाता हूँ, जिससे तुम्हें यह ज्ञात हो जाएगा कि व्यास जी का अवतार किस प्रकार होता है। प्रत्येक द्वापर के अन्त में विष्णु जी स्वयं अवतार लेकर, वेद के विभाग करते हैं तथा प्रत्येक कलियुग के आदि में शिवजी अवतार लेकर उनके मत की स्थापना करते हैं। विष्णु जी प्रत्येक युग में चार शिष्यों द्वारा वेद, योग तथा आश्रमों को प्रकट करते हैं और शिवलिंग का पूजन करके भस्म धारण करते हैं। हे पुत्र ! हमने यह कथा विष्णु जी से सुनी थी। दधिवाहन अवतार से लेकर लाकुलीश अवतार तक शिवजी के अट्ठाईस अवतार हैं तथा उनके कुल अवतारों की संख्या बयालीस है। जो प्राणी इस कथा को सुनता अथवा पढ़ता है, वह भी मुक्ति को प्राप्त हो जाता है।''

ग्यारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं तुम से नन्दिकेश्वर अवतार का वृत्तान्त कहता हूँ। शिलाद नामक मुनि शिवजी के परम भक्त थे। शिवजी की कृपा से वे महाधनी तथा ऐश्वर्यवान् हुए, परन्तु उनके कोई पुत्र नहीं था; इसलिए उन्होंने इन्द्र की अत्यन्त कठिन उपासना की। उनकी साधना से प्रसन्न हो कर इन्द्र ने उनके पास जा कर कहा—''हे शिलाद ! हम तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हैं, तुम वर माँगो।'' यह सुन कर शिलाद मुनि ने प्रणाम करने के उपरान्त हाथ जोड़ कर कहा—''हे देवराज ! आप मुझे एक ऐसा पुत्र दीजिए जो माता के गर्भ से उत्पन्न न हो तथा सदैव अमर बना रहे।'' उस समय इन्द्र ने कहा—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:22 PM

"हे शिलाद ! हम ऐसा पुत्र नहीं दे सकते; हम तो तुम्हें केवल ऐसा पुत्र दे सकते हैं जो माता के गर्भ से उत्पन्न हो और जिसकी समय पा कर मृत्यु हो जाए।"

हे नारद ! इन्द्र के इन वचनों को सुन कर अपने हठ पर दृढ़ रहते हुए मुनि ने उत्तर दिया कि मुझे तो ऐसे ही पुत्र की आवश्यकता है, यदि आप दे सकते हों तो दें अन्यथा रहने दें। तब इन्द्र उनसे यह कह कर अपने लोक को चले गये कि ऐसा पुत्र तुम्हें शिवजी द्वारा ही प्राप्त हो सकता है, क्योंकि उन्होंने काल को जीत लिया है और वे स्वयं मृत्यु के वश में नहीं हैं। इतना कह कर जब इन्द्र चले गये तब शिलाद मुनि शिवजी का ध्यान धर कर तपस्या करने लगे। वे निरन्तर एक दिव्य सहस्त्र वर्षों तक उग्र तपस्या करते रहे। उनकी तपस्या से प्रसन्न हो कर शिवजी अत्यन्त सुन्दर स्वरूप धारण कर, उनके पास पहुँचे। जैसे ही शिवजी ने उनके शरीर से अपने हाथ का स्पर्श कराया, वैसे ही वे पुनः पूर्व की भाँति हृष्ट-पुष्ट हो गये। तदुपरान्त शिवजी ने उनसे पूछा—"हे शिलाद ! तुम क्या चाहते हो? तुम जो माँगोगे हम वही देंगे।" यह सुन कर शिलाद ने बहुत स्तुति एवं प्रार्थना करते हुए कहा—"हे प्रभु ! मैं एक ऐसा पुत्र चाहता हूँ, जो माता के गर्भ के बिना उत्पन्न हो और कभी भी मृत्यु को प्राप्त न हो।"

हे नारद ! शिलाद के ऐसे वचन सुन कर शिवजी ने कहा—"हे शिलाद ! संसार में उत्पन्न होने वाला कोई भी जीव ऐसा नहीं है, जो मृत्यु के हाथ से बाकी बच रहे। केवल हम हीं मृत्युञ्जय तथा बिना माता के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं। इसलिए अब हम स्वयं ही तुम्हारे पुत्र होंगे। उस समय, हमारा नाम नन्दी होगा। ब्रह्मा ने भी हमारे पृथ्वी पर अवतार लेने के लिए पहले तपस्या की थी। तब हमने उन्हें यह वर दिया था कि समय पा कर हम पृथ्वी पर जन्म लेंगे। अस्तु, इस प्रकार हमारे अवतार लेने पर ब्रह्मा की इच्छा भी पूर्ण हो जाएगी और तुम्हारी अभिलाषा भी पूर्ण होगी। अब तक हम संसार के पिता थे, परन्तु अब तुम हमारे पिता होओगे।" इतना कह कर शिवजी अन्तर्धान हो गये।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:22 PM

उस समय शिलाद अत्यन्त प्रसन्न हो, अपने घर लौट आये। कुछ समय पश्चात् शिलाद ने सब सामग्री एकत्र कर, एक यज्ञ किया। उसी यज्ञकुण्ड के बीच से प्रलयकाल की अग्नि के समान देदीप्यमान् शिवजी की उत्पत्ति हुई। उनका स्वरूप ऐसा था कि उसे देखने से तीनों लोक मोहित हो जाते थे। उनके हाथों में शूल, शंख, गदा और असि तथा कानों में कुण्डल विराजमान थे। वे देखने में बालक के समान प्रतीत होते थे। उस समय आकाश में पुष्प वर्षा होने लगी। किन्नर आदि नृत्य गायन करने लगे, देवता स्तुति करने में संलग्न हुए। उस समय सब ने यह पहचाना कि भगवान् सदाशिव का अवतार हुआ है।''

बारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! उस बालक को देख कर शिलाद मुनि ने कहा—''हे बालक ! तुमने उत्पन्न हो कर मुझे अत्यन्त आनन्द प्रदान किया है, अतः तुम्हारा नाम नन्दी होगा। तुम साक्षात् शिव के स्वरूप हो, अस्तु, मैं तुमसे अपनी भक्ति माँगता हूँ।'' इतना कह कर शिलाद मुनि ने उनकी बहुत स्तुति की। तदुपरान्त जब सब देवता विदा हो कर अपने-अपने घर चले गए, तब शिलाद मुनि भी नन्दी को साथ ले यज्ञ स्थल से उठ कर अपने निवास स्थान को चल दिये। उसी बीच नन्दी ने यह चरित्र किया कि उन्होंने अपनी पहली देह को छोड़ कर मनुष्य का शरीर धारण कर लिया।

हे नारद ! शिलाद मुनि के घर आ कर नन्दी बालकों के समान क्रीड़ा करने लगे। जब उनकी अवस्था दस वर्ष की हुई, तब एक दिन शिवजी की आज्ञा से मित्रा तथा वरुण नामक दो मुनि शिलाद के समीप पहुँच कर यह कहने लगे—''हे शिलाद मुनि ! यह बालक सम्पूर्ण विद्याओं का निधान होगा, परन्तु इसकी आयु बहुत कम है।'' इतना कह कर जब वे दोनों मुनि चले गये, तब शिलाद अत्यन्त दुःखी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:22 PM

हो, नन्दी से लिपट कर रोने लगे तथा मूर्च्छित हो कर पृथ्वी पर गिर पड़े। उस समय नन्दी ने शिलाद मुनि को मनुष्यों की भाँति समझाते हुए यह कहा—"हे पिता ! आप इस प्रकार व्याकुल न हों। हम शिवजी की सेवा करके काल को जीत लेंगे और आपकी चिन्ता को दूर करेंगे।" इतना कह कर नन्दी रुद्र जप करने लगे। उस जप के प्रभाव से शिवजी गिरिजा सहित नन्दी के समीप आये और उन्हें सम्बोधित करते हुए इस प्रकार कहने लगे—"हे नन्दी ! तुम्हें मृत्यु का कोई भय नहीं है। तुम साक्षात् मृत्युञ्जय हो और तीनों लोकों में तुम्हें कुछ भी भय नहीं है।" इतना कह कर शिवजी ने नन्दी के शरीर से अपने शरीर का स्पर्श करा दिया। तदुपरान्त उन्होंने गिरिजा एवं सब गणों की ओर देखते हुए यह कहा—"हे प्रियजनो ! यह नन्दीश्वर मृत्यु से रहित हो कर मेरे समान ही बलवान् होगा तथा मेरे पास रह कर मुझे बहुत प्रिय होगा।" इतना कह कर शिवजी ने अपनी माला नन्दी के कण्ठ में पहना दी। तब नन्दी उसी समय तीन नेत्र तथा दस भुजाधारी शिवजी के समान स्वरूपवान् हो गये। उस समय शिवजी ने नन्दी का हाथ पकड़ कर अपनी जटा के ऊपर से थोड़ा-सा पानी छोड़ दिया। उस पानी से अनेक नदियाँ बहने लगीं।

हे नारद ! उन नदियों के नाम जटोदक, त्रिस्त्रोता, वृषध्वनि, स्वर्णोदक तथा जटक हुए। उस स्थान पर नन्दीश्वर ने जो शिवलिंग स्थापित किया था, वह भुवनेश्वर के नाम से विख्यात हुआ और वह स्थान भी सरमद नामक तीर्थ के रूप में अत्यन्त पूज्य हुआ। जो मनुष्य उन नदियों में स्नान करके भुवनेश्वर शिवलिंग का पूजन करता है, उसे मुक्ति प्राप्त होती है। इस चरित्र के उपरान्त शिवजी ने गिरिजा से यह कहा—"हे प्रिये ! अब हम नन्दीश्वर का अभिषेक करेंगे तथा इसे अपने सब गणों का स्वामी बनायेंगे।" गिरिजा ने शिवजी के इस कथन को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया। तदुपरान्त शिवजी ने अपने सब गणों को पास बुलाया। उन गणों ने हाथ जोड़ कर शिवजी की स्तुति करते हुए इस प्रकार कहा—"हे प्रभो ! आप हमें क्या आज्ञा देते

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हैं? यदि आप कहें तो हम समुद्र को सुखा दें अथवा मृत्यु को नष्ट कर दें। यदि आपकी इच्छा हो तो हम सभी दानवों तथा दैत्यों को जला कर भस्म कर डालें एवं अग्नि को ही पकड़ कर यहाँ ले आवे। हे नाथ ! यदि आप किसी के ऊपर प्रसन्न हों तो वैसा कहें? आपकी आज्ञा पा कर हम उसकी हर प्रकार की सेवा करने के लिए तैयार हैं।''

हे नारद ! गणों की यह बात सुन कर शिवजी ने उत्तर दिया—''हे गणो ! यह नन्दीश्वर हमारा प्रिय पुत्र तथा तुम सब का अधिपति है। तुम सब लोग मिल कर इसका अभिषेक करो तो हमें प्रसन्नता प्राप्त होगी।'' शिवजी की यह आज्ञा सुनते ही उन सब गणों ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर शिवजी तथा नन्दीश्वर का जय-जयकार किया। उसी समय मैं, विष्णु जी तथा अन्य सब देवता भी वहाँ जा पहुँचे और शिवजी की स्तुति करते हुए यह कहने लगे कि ''हे प्रभो ! आपने नन्दीश्वर के ऊपर जो कृपा की है, वह सर्वथा प्रशंसनीय है। यह नन्दीश्वर साक्षात् आपके ही स्वरूप हैं। अस्तु, हम सब इन्हें प्रणाम करते हैं।'' इतना कह कर हम लोगों ने नन्दीश्वर का अभिषेक किया। तदुपरान्त शिवजी की इच्छा जान कर मैंने मरुत की कन्या सुयशा के साथ नन्दी का विवाह करा दिया। उस विवाह में बड़ा उत्सव मनाया गया। तदुपरान्त नन्दीश्वर अपनी पत्नी सहित सिंहासन पर विराजमान हुए और सब लोग उन्हें भेंटे देने लगे। लक्ष्मी जी ने नन्दीश्वर को मुकुट आदि आभूषण दिये, गिरिजा ने अपने कण्ठ का हार दिया, विष्णु जी ने रथ की ध्वजा दी तथा मैंने स्वर्णहार पहनाया। इसी प्रकार जब अन्य सब लोग भी नन्दी को भेंट दे चुके, तब शिवजी उन्हें परिवार सहित अपनी पुरी को ले गये। तब से वे वहीं रह कर शिव-गिरिजा का ध्यान किया करते हैं और उन्हीं की सेवा में संलग्न रहते हैं। हे नारद ! इस तैंतालीसवें शिव-अवतार की कथा को जो व्यक्ति मन लगा कर पढ़ता, सुनता अथवा किसी दूसरे को सुनाता है, वह इस लोक में सुख पा कर, अन्त में शिवजी के समीप कैलाश पर्वत पर जा पहुँचता है।''

❂❂❂

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:22 PM

तेरहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—हे नारद ! अब हम भैरव अवतार की कथा कहते हैं। एक दिन कुम्भज मुनि ने स्कन्द जी के पास जा कर यह कहा—"हे स्कन्द जी ! आप मुझे भैरव का चरित्र सुनाने की कृपा करें। हे स्कन्द जी ! एक भैरव की गणना तो भूतों में है, जिनके अधीन समस्त योगिनीगण हैं, दूसरे जो संसार को भयानक दिखाई दे, उसे भी भैरव कहते हैं; अस्तु, आप मुझे यह बताइये कि वे भैरव कौन से हैं, जिन्हें शिवजी का अवतार कहा जाता है तथा यह भी बताइये कि उन्होंने किस कार्य के निमित्त जन्म लिया?"

हे नारद ! कुम्भज मुनि की प्रार्थना सुन कर स्कन्द जी ने उत्तर दिया—"हे मुनि ! भैरव भगवान् सदाशिव के पूर्ण रूप हैं। वे न तो भूत हैं और न भयानक ही। उनकी महिमा को ब्रह्मा तथा विष्णु भी नहीं जान पाते। अब तुम भैरव का वृत्तान्त सुनो। एक समय की बात है कि सब देवता तथा मुनि आदि एकत्र हो कर यह विचार करने लगे कि इस सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी कौन है? बहुत समय सोचने-विचारने के बाद भी जब कोई ठीक विचार न हो सका, तब उन्होंने यह निश्चित किया कि हम लोग सुमेरु पर्वत पर चल कर ब्रह्मा जी से यह बात पूछें तो वे सब का मूल कारण बता देंगे। अस्तु, यह निश्चय कर सब लोग ब्रह्मा जी के पास जा पहुँचे।"

इतनी कथा सुना कर ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! उन सब देवताओं ने मेरे पास आ कर यह कहा—"हे विधाता ! आप हमें यह बताने की कृपा करें कि सम्पूर्ण लोकों का स्वामी कौन है? जो दोषों से रहित, निर्गुण, सगुण, अविनाशी, सब के मन की जानने वाला विश्वम्भर तथा सब संसार को उत्पन्न करने वाला हो, उसका नाम आप हमें बतायें।" देवताओं की यह बात सुन कर मैंने उन्हें यह उत्तर दिया—"हे देवताओ ! तुम जिसे जानना चाहते हो, वह मैं ही हूँ। मेरे ब्रह्मा, स्वयम्भू, धाता, अज, परमेष्ठी आदि अनेक नाम हैं। अतः इन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:22 PM

नामों को सुन कर तुम स्वयं समझ सकते हो कि परब्रह्म मेरे अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है।''

इतनी कथा सुना कर स्कन्द जी ने कुम्भज मुनि से कहा—''हे कुम्भज ! शिवजी की माया ऐसी बलवान् है कि उसके वशीभूत हो कर ब्रह्मा स्वयं को परब्रह्म कहने लगे। अस्तु, जिस समय वह वार्तालाप हो रहा था, उसी समय विष्णु जी चतुर्भुज स्वरूप धारण किये हुए, पीताम्बर ओढ़े, उत्तमोत्तम वस्त्रालंकारों से सुसज्जित तथा क्रोध से लाल नेत्र किये वहाँ प्रकट हो गये। उन्होंने सब देवताओं को सम्बोधित करते हुए यह कहा—''हे देवताओ ! तुम इस ब्रह्मा की मूर्खता को देखो, यह ऐसी उल्टी बातें कर रहा है।'' देवताओं ने इतना कह कर विष्णु जी ब्रह्मा से बोले—''हे ब्रह्मा ! तुम वेद तथा पुराणों के विरुद्ध ऐसे मिथ्या वचन क्यों कह रहे हो? तुम्हारा जन्म हमारे नाभि-कमल से हुआ है और तुम्हारी महिमा हमारे अधीन है। पृथ्वी का भार उतारने के लिए हम हीं समय-समय पर अवतार लेते हैं। इसलिए हम हीं निर्गुण, परमज्योति, परमात्मा तथा परब्रह्म हैं। तुम अपने नाम पर मिथ्या गर्व मत करो तथा सब लोगों के सामने सच्ची बात कहो।'' हे कुम्भज ! इस प्रकार ब्रह्मा तथा विष्णु ने परस्पर बहुत विवाद किया तथा शिवजी को कुछ भी न जान कर स्वयं को ब्रह्म ठहराया।''

चौदहवाँ अध्याय

स्कन्द जी बोले—''हे कुम्भज ! अन्त में यह निश्चय हुआ कि वेद जिसे परब्रह्म कह दे, उसी को सब का स्वामी स्वीकार किया जाए। अस्तु, ब्रह्मा, विष्णु जी तथा सब देवताओं ने वेदों को बुला कर अत्यन्त नम्रतापूर्वक यह कहा—''हे वेद ! तुम्हारे वचनों पर सब को पूर्ण विश्वास है, अतः तुम हमें यह बताओ कि परब्रह्म कौन है?'' यह सुन कर वेदों ने उत्तर दिया—''हे देवताओ ! जब तुम हम हीं पर अपना निर्णय छोड़ रहे हो तो हम सत्य बात ही कहेंगे। उसे सुन कर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:22 PM

तुम्हारा संशय नष्ट हो जायेगा।" इस प्रकार सब देवताओं को सम्बोधित करने के उपरान्त सबसे पहले ऋग्वेद ने कहा—"हे देवताओ ! जहाँ तक सम्पूर्ण जीवधारी स्थित हैं और करोड़ों ब्रह्माण्ड दृष्टिगत होते हैं तथा जिन्हें हम वेद परम तत्त्व कहते हैं, वहाँ तक सन्तों के मत से भी यह निश्चित है कि भगवान् सदाशिव ही परब्रह्म हैं, क्योंकि वे महाप्रलय में भी नष्ट नहीं होते हैं।"

हे कुम्भज ! इतना कह कर जब ऋग्वेद चुप हो गया, तब यजुर्वेद ने इस प्रकार कहा—"हे देवताओ ! सृष्टि के सम्पूर्ण जीव यज्ञ द्वारा जिनका सेवन करते हैं तथा योगीजन जिनका ध्यान अपने हृदय में धरते हैं, परन्तु जिनकी इच्छा के बिना उनका दर्शन प्राप्त नहीं कर पाते, जो परमानन्द स्वरूप हैं और जिन्हें हम नेति-नेति कह कर पुकारते हैं, वे परब्रह्म सदाशिव ही हैं।"

हे कुम्भज ! वेदों के यह वचन सुन कर दोनों देवता बहुत हँसे, तदुपरान्त उन्होंने शिवजी की माया से मोहित हो कर इस प्रकार कहा—"शिव योगियों का स्वामी, जटाधारी, विष भक्षण करने वाला, नग्न शरीर, बैल पर चढ़ने वाला है। जिस शिव का संग करने से ही सब को ग्लानि होती है, भला वह परब्रह्म किस प्रकार हो सकता है?" इतना कह कर दोनों देवता हँसने लगे।

हे कुम्भज ! उस समय प्रणव ने दोनों देवताओं को सम्बोधित करके इस प्रकार कहा—"हे सृष्टि उत्पन्नकर्त्ता ब्रह्मा तथा हे पालनकर्त्ता विष्णु ! तुम हमारी बात मन लगा कर सुनो। तुम्हें अपने मुख से ऐसे उल्टे वचन नहीं कहना चाहिए। अस्तु, तुम्हें वेद के मत का खण्डन करना उचित नहीं है। वेदों ने यह सत्य ही कहा है कि परब्रह्म शिवजी की रूप-रेखा को नहीं जाना जा सकता। वे तीनों लोकों में अनेक प्रकार की लीलाएँ करते हैं। उन्होंने तुम्हारी प्रार्थना पर ही स्वरूप धारण किया है। वे तीनों लोकों के हृदय की बात को जानने वाले हैं। वे ब्रह्मा की प्रार्थना पर उनकी भौंहों के बीच में उत्पन्न हुए हैं। अब हम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:23 PM

तुम से शिवजी के मूल-चरित्रों का वर्णन करते हैं, जिससे तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट न हो और तुम्हें परब्रह्म शिवजी का श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त हो।

हे देवताओ ! जिस समय कोई भी जीव न था, यहाँ तक कि यह संसार, प्रकृति, पुरुष, ब्रह्मा तथा विष्णु आदि भी नहीं थे, उस समय एकमात्र अद्वितीय, परब्रह्म, माया रहित, निर्गुण भगवान् सदाशिव ही वर्तमान थे जिनको वेद नेति-नेति कह कर पुकारते हैं, फिर भी जिनके भेद को नहीं जान पाते। ऐसे निर्गुण स्वरूप शिवजी सृष्टि में सर्वत्र विराजमान हैं। हर शिवजी के पूर्णांश से उत्पन्न हुए हैं। तुम दोनों को उनकी सब प्रकार से सेवा करनी चाहिए। शिवलोक में जिन शिवजी का निवास रहता है, वे ही अन्यत्र हर तथा रुद्र नाम से प्रतिष्ठित हैं। वे शक्ति सहित अवतार ग्रहण करते हैं तथा कैलाश पर्वत पर स्थित रहते हैं। वे मृत्यु को अपने अधीन रखते हैं तथा अनेक प्रकार की लीलाएँ करके सदैव स्वाधीन रहते हैं। उनके चरित्र को आज तक कोई नहीं जान पाया है। उनकी जो इच्छा होती है, संसार में वही कार्य होता है। वेद, पुराण तथा शास्त्र भी उन्हें आज तक नहीं जान पाये। तुम सब उन्हीं की माया द्वारा भ्रमित हो कर पशुओं के समान इधर-उधर भटक रहे हो।

हे देवताओ ! वे लीलामय शिवजी अपनी इच्छानुसार अनेक स्वरूप धारण करते हैं। कभी वे योगी बन जाते हैं और कभी भोगी। वे कभी जटाएँ रख लेते हैं और कभी परमहंस गति का प्रदर्शन करते हुए, स्वयं में ही देख कर ध्यान मग्न हो जाते हैं, अनेक प्रकार के भोग भोगते हैं और कभी शक्ति सहित सिंहासन पर बैठ कर प्रजा का पालन करते हैं। सब देवता तथा दैत्य उन्हें प्रसन्न करके अपने मनोरथ को प्राप्त करते हैं। इस प्रकार अनेक बातें प्रणव ने सुनायीं, परन्तु उन दोनों के मन में मोह के कारण कुछ बोध न हुआ। उस समय शिवजी ने यह विचार किया कि अब मुझे इनका मोह नष्ट कर देना चाहिए।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:23 PM

पन्द्रहवाँ अध्याय

स्कन्द जी बोले—"हे कुम्भज ! इतने में दोनों देवताओं के मध्य एक ज्योति प्रकट हुई, जिसके प्रकाश से समस्त पृथ्वी तथा आकाश पूर्ण हो गया। उसमें से एक सुन्दर आकार उत्पन्न हुआ, जिसे देख कर ब्रह्मा ने अपने पाँचवें मुख से यह कहा—"हे विष्णु जी ! हमारे-तुम्हारे बीच में यह कैसी आश्चर्यजनक ज्योति प्रकट हुई है, जिसमें किसी मनुष्य का आकार दिखाई पड़ता है।" ब्रह्मा यह कह ही रहे थे कि उन्हें ब्रह्मस्वरूप इस प्रकार का प्रतीत हुआ कि एक मनुष्य नीललोहित वर्ण, चन्द्रभाल, त्रिशूल हाथ में लिये तथा सर्पों के भूषण धारण किये हुए खड़ा है। तब ब्रह्मा उससे इस प्रकार बोले कि तुम तो वही हो, जो हमारी भौंहों के बीच से उत्पन्न हुए थे। तुम्हारे रोने के कारण ही हमने तुम्हारा नाम रुद्र रखा था। अब तुमको उचित है कि तुम हमारी शरण में आओ। हम तुम्हारी हर प्रकार से रक्षा करेंगे। जब ब्रह्मा जी ने मोह के वशीभूत हो कर यह कहा, तब ब्रह्मा का ऐसा गर्व देख कर शिवजी ने महाक्रोध किया तथा ऐसे एक मनुष्य को उत्पन्न किया जो भक्तों को आनन्द करने वाला, शत्रुओं के लिए अत्यन्त भयंकर था। उसके मस्तक पर चन्द्रमा था, तीनों नेत्र लाल थे तथा शरीर में सर्प लिपटे हुए थे। इस प्रकार उन्होंने हर प्रकार अपने समान ही अपनी लीला के लिए उसे प्रकट किया। तब उस उत्पन्न हुए मनुष्य ने हाथ जोड़ कर शिवजी से यह निवेदन किया—"हे शिवजी ! अब आप मेरा नाम रख दीजिये तथा मुझे आज्ञा दीजिये कि अब मैं क्या करूँ?" यह सुन कर शिवजी बोले—"तुम काल के समान ही प्रतीत होते हो, इसलिए तुम्हारा नाम कालराज होगा तथा तुम विश्व के भरण की शक्ति रखते हो इसलिए तुम्हारा नाम भैरव भी होगा। तुमसे काल भी भयभीत होगा, इसलिए तुम्हारा नाम कालभैरव भी है। तुम गणों के दु:खों को दूर करने वाले हो, इसलिए लोग तुम्हें अमरादिक कह कर भी पुकारेंगे। तुम भक्तों के पापों का भक्षण करोगे, इसलिए तुम्हारा नाम पापभक्षण भी होगा।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:23 PM

तुम सब भक्तों के मनोरथ पूर्ण करोगे। अब तुम अपना काम सुनो, मैं तुम्हें बताता हूँ।''

हे कुम्भज ! इतना कह कर शिवजी ने भैरव को यह आज्ञा दी कि ''हे भैरव ! पद्मसुत जो ब्रह्मा है, यह हमारा महाशत्रु है, तुम इसको भली प्रकार शिक्षा दो। इसके अतिरिक्त और भी जो संसार में इस तरह मेरे विरोधी हैं, उनको उचित दंड दो। मुझे अपनी मुक्तिनगरी अर्थात् काशी प्राण के समान प्रिय है। मैं तुम्हें उसका स्वामी बनाता हूँ। काशी में तुम्हारी दुहाई फिरेगी और तुम वहाँ का राज्य करोगे। तुम्हारा कर्त्तव्य है कि काशी में जो मनुष्य पाप करे तुम उनको उपदेश करो। जो कोई काशी में शुभ या अशुभ कर्म करते हैं, उनको चित्रगुप्त नहीं लिखते और वहाँ यमराज की आज्ञा नहीं चलती।'' यह सुन कर कालभैरव प्रसन्न हुए तथा मन में सोचने लगे कि ब्रह्मा को क्या दंड देना चाहिए। फिर उन्होंने यह सोचा कि ब्रह्मा ने पाँचवें मुख से शिवजी की निन्दा कर उनको पुत्र बनाया है, इसलिए मेरे विचार से तो यही उचित है कि अब मैं उनका पाँचवाँ सिर काट डालूँ। यह सोच कर भैरव अत्यन्त क्रोधित हुए और उनका स्वरूप महाभयानक हो गया। फिर उन्होंने अपनी बायीं उँगली के नख से ब्रह्मा का पाँचवाँ मुख काट लिया। उस समय चारों ओर हाहाकार मच गया। देवता एवं मुनि आदि सब भयभीत हो कर काँपने लगे। विष्णु जी भी यह देख कर हाथ जोड़ कर स्तुति करने लगे। ब्रह्मा जी भी अपनी यह दशा देख कर महादुःखी हुए, वे शतरुद्री का जप करने लगे तथा शिवजी की शरण में गये। उस समय शिवजी ने कहा—''हे विष्णु एवं हे ब्रह्मा ! तुम लोग किसी प्रकार का भय मत करो, तुम दोनों ही सृष्टि को उत्पन्न करने वाले तथा उसके पालने वाले हो और हम प्रलय करने वाले हैं। हम तुम तीनों देवताओं में कोई भेद नहीं है, परन्तु ब्रह्मा ने अपने जिस मुख से हमारी निन्दा की, हमने केवल उसी को दंड दिया है। यह चरित्र कर हमने तुम्हारा मोह दूर कर दिया है।''

हे कुम्भज ! इसके पश्चात् शिवजी ने भैरव से कहा—''हे भैरव !

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:23 PM

तुम जो कुछ भी काम करो, वह सोच कर ही करना, क्योंकि ब्रह्मा चाहे कैसा भी भ्रष्ट हो गया हो, परन्तु उसका वध करना महापाप है। तुमको ब्रह्मा का पाँचवाँ सिर काट डालने के कारण दोष लग गया है। तुम उसको दूर करो। यद्यपि तुम को पाप-पुण्य कुछ नहीं है, फिर भी वेद के अनुसार सब कार्य करना चाहिए जिससे कि अन्य मनुष्य भी उसका अनुकरण करें। तुम ब्रह्मा के सिर को हाथ में लिये, भिक्षाटन करते हुए सब लोकों की परिक्रमा करो। शिवजी ने इतना कह कर एक स्त्री प्रकट की, जिसका आकार बहुत बड़ा था। उसका नाम उन्होंने ब्रह्महत्या रखा। वह महाभयंकर थी। उसका रूप भय प्रदान करने वाला था। उसका शरीर रक्तमय तथा वह रक्त ही वस्त्र पहने थी और सब शरीर में रुधिर लगाये हुए थी। वह आकाश तक सिरे उठाये हाथ में खप्पर लिये हुए थी, जिसमें से रक्तपान करती जाती थी। उस प्रलयकाल के मेघ के समान महाभयंकर ब्रह्महत्या को शिवजी ने प्रकट करके उससे कहा कि काशी हमारी नगरी है, वहाँ जब तक भैरव लौट कर न आवें तब तक इनको न छोड़ना। चाहे कोई करोड़ों उपाय करे, काशी के अतिरिक्त तुम्हारी तीनों लोकों में गति होगी। शिवजी यह कह कर अन्तर्धान हो गये तब भैरव भी शिवजी की आज्ञा स्वीकार कर, ब्रह्मा का सिर लिये हुए भिक्षाटन करते रहे। वह उच्च स्वर में सब को अपने पापों के विषय में बताते थे।''

सोलहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! शिवजी की आज्ञानुसार ब्रह्महत्या भैरव के पीछे-पीछे घनघोर शब्द करती हुई चली। भैरव समस्त संसार में भ्रमण करते फिरे। जो-जो तीर्थ सातों द्वीपों में थे, वे सब भैरव ने अकेले ही किये। उनके साथ में ब्रह्महत्या के अतिरिक्त और कोई नहीं था। जब वे पाताल लोक में गये तब भी उस स्त्री ब्रह्महत्या का साथ न छूटा। फिर उन्होंने ऊपर के लोकों में भी भ्रमण किया, परन्तु वह सदैव

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:23 PM

उनके साथ रही। इसी प्रकार भैरव समस्त ब्रह्माण्ड में घूमते रहे। जहाँ भैरव ब्रह्मा का सिर लेकर जाते थे, वहाँ के निवासी अन्न-धन से परिपूर्ण हो जाते थे। अन्त में भैरव अत्यन्त दुःखी हो कर, यह सोच कर नारायण लोक को चले कि वहाँ जाने से पाप मुक्त हो जायेंगे। उस समय विष्णु जी ने भैरव को आते देख लक्ष्मी से कहा—"हे लक्ष्मी देखो, परब्रह्म शिवजी यहाँ आ रहे हैं। धरती धन्य है। यह हम पर कृपा करके ही यहाँ आ रहे हैं।" थोड़ी देर में जब भैरव निकट आये तो विष्णु जी ने समस्त सभा सहित उठकर भैरव की स्तुति करते हुए कहा—"हे सदाशिव ! आप तो सब पापों को दूर करने वाले, भक्तों को आनन्द प्रदान करने वाले तथा अविनाशी हैं। आप यह क्या चरित्र तथा लीला कर रहे हैं? आप कृपा कर हमें यह बतायें कि आपके हाथ में जो सिर है, उसे लेकर भ्रमण करने का क्या कारण है? आप संसार के महाराजाधिराज हैं, फिर इस प्रकार आपका भिक्षा माँगना आश्चर्यजनक है।"

हे नारद ! विष्णु जी की यह बात सुन कर भैरव ने कहा—"हे विष्णो ! हम ब्रह्मा का सिर काट कर पापी हुए हैं। उस पाप से मुक्ति पाने के लिए ही हम संसार का भ्रमण कर रहे हैं।" यह सुन कर विष्णु जी बोले—"हे प्रभो ! मुझसे तीनों लोकों को मोहित करने वाली माया को आप दूर रखिये। आपको पुण्य तथा पाप से कोई मतलब नहीं। आपके नाम जपने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं। जब आप प्रलय में देवताओं, दैत्यों, मुनीश्वरों तथा वर्णाश्रम आदि को नष्ट करते हैं, तब आपको कोई पाप क्यों नहीं लगता? उस समय तो आप ब्रह्मा का अभाव ही कर देते हैं। तब केवल एक सिर के काटने से ही आपको पाप कैसे लग सकता है? आप के गले में अन्य कल्पों के ब्रह्माओं के सिरे पड़े हुए हैं। आपको उनकी ब्रह्महत्या क्यों नहीं लगती? फिर आप अपने को पापी क्यों ठहराते हैं? आपकी लीला विचित्र है, उसको देवता तथा मुनि कोई नहीं जानता। जो मनुष्य एक बार आपका ध्यान करता है, उसके दुःख तथा ब्रह्महत्या आदि पाप नष्ट हो जाते हैं। यदि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:23 PM

शत्रु भी आपके शिवशंकर शशिशेखर आदि नाम ले तो वह भी आवागमन से मुक्ति पा कर कैलाश में वास करता है, क्योंकि आपका नाम शुभ है। इस प्रकार हाथ में सिर लेकर आपका भ्रमण करना उचित नहीं। हमारे बड़े भाग्य हैं कि आज आप हमारे लोक में विराजमान हुए तथा आपकी दृष्टि अमृत के समान गुणवान् है, जिसको देखने मात्र से ही फिर आवागमन का भय नहीं रहता है।'' इस प्रकार विष्णु जी सदाशिवजी के गुणों का वर्णन कर रहे थे, तभी भैरव ने भिक्षा माँगी। लक्ष्मी ने उन्हें भिक्षा देकर प्रणाम किया। तदुपरान्त भैरव भिक्षा लेकर आगे बढ़े और उनके पीछे-पीछे ब्रह्महत्या भी चली।''

❁❁❁

सत्रहवाँ अध्याय

स्कन्द जी बोले—''हे कुम्भज ! विष्णु जी ने ब्रह्महत्या को इस प्रकार भैरव के पीछे जाते हुए देख कर कहा—''हे ब्रह्महत्या ! तू भैरव का पीछा छोड़ दे और तुझे जो वर चाहिए, वह हम से माँग ले।'' विष्णु जी के ऐसे वचन सुन कर ब्रह्महत्या ने हँस कर कहा कि मैं शिवजी की आज्ञानुसार ही भैरव के पीछे फिर कर अपने को शुद्ध करती फिरती हूँ। मैं भैरव को किसी प्रकार का दुःख नहीं देती। जो कोई भैरव का नाम लेता है, मैं तुरन्त उसका घर त्याग कर भाग जाती हूँ। ब्रह्महत्या यह कह उसी प्रकार भैरव के पीछे-पीछे चलने लगी। उस समय भैरव ने विष्णु जी के ऐसे स्नेह को देख कर कहा—''हे विष्णु ! तुम्हारी जो इच्छा हो, हम से वह वर माँग लो। हमको यह चाण्डाल हत्या कोई दुःख नहीं दे सकती। हम स्वयं ही यह चरित्र संसार के लिए कर रहे हैं।'' यह सुन कर विष्णु जी बोले—''हे प्रभो ! हम को तो यही सबसे बड़ा वर मिला है कि आप हमारे लोक को आये। हमारी इच्छा है कि हम प्रतिदिन आपके चरण-कमलों का ध्यान किया करें तथा हम को प्रतिदिन आपका दर्शन लाभ प्राप्त हो। विष्णु जी की ऐसी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:23 PM

इच्छा जान कर भैरव ने कहा—"हे विष्णु ! हम ने तुमको यही वर दिया। अब तुम भी देवताओं तथा मुनीश्वरों को वर दिया करो और आनन्दपूर्वक तीनों लोकों के स्वामी बन कर बैठे रहो।" भैरव ने विष्णु जी को यह वरदान देकर तीनों लोकों की परिक्रमा की तथा काशी की ओर चले। जब भैरव काशी के समीप पहुँचे तथा ब्रह्महत्या अत्यन्त भयभीत हो कर चिल्लाने लगी। जब भैरव वहाँ बैठे गये, तब वह हाहाकार करके पृथ्वी के नीचे चली गयी। उस समय भैरव के हाथ से ब्रह्मा का सिर धरती पर गिर पड़ा। यह देख कर भैरव अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा सब देवताओं एवं मुनीश्वरों ने जय-जयकार किया। तब भैरव प्रसन्न हो कर नाचने लगे।

हे कुम्भज ! काशी की महिमा परमश्रेष्ठ है। हम उसकी महिमा कहाँ तक वर्णन करें। सब सर्वश्रेष्ठ कपालमोचन तीर्थ है। हे कुम्भज ! भैरव का अवतार मार्गशीर्ष की कृष्णाष्टमी को हुआ था। जो कोई उस दिन व्रत करते हैं, उसके जन्म भर के पाप नष्ट हो जाते हैं। उस दिन जागरण का भी यही फल मिलता है। यदि कोई भैरव के निकट जा कर काशी व्रत को करे तो उसके समस्त पाप दूर हो जाते हैं, जो कोई अष्टमी, चतुर्दशी तथा रविवार को भैरव-तीर्थ की यात्रा करेगा, उसे सब पापों से मुक्ति मिलेगी। जो कोई भैरव की आठ परिक्रमा करे तो उसको तीनों प्रकार के पाप नहीं लगेंगे। भैरव का यह व्रत सब व्रतों का राजा तथा चारों फलों को प्रदान करने वाला है। इस व्रत के करने से भैरव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। भैरव चरित्र के सुनने से भी मुक्ति तथा आनन्द मिलता है।"

अठारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! इससे पूर्व हम वीरभद्र अवतार का विस्तारपूर्वक वर्णन कर चुके हैं। अब हम तुम्हें वही फिर संक्षेप में सुनाते हैं। हमारे पुत्र दक्ष प्रजापति ने अपनी बुद्धिहीनता के कारण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:23 PM

शिवजी के साथ बैर बढ़ा कर उनकी निन्दा की, परन्तु शिवजी ने उसके ऐसे अज्ञानपूर्ण वचनों का कोई विचार न किया। इतने में जब वह यज्ञ करने लगा, तब समस्त देवता तथा मैं भी, अपने परिवारों सहित उस यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए गया। यद्यपि वहाँ बड़ी धूमधाम थी, परन्तु शिवजी के बिना कोई शोभा न थी। उस समय दधीचि मुनि ने सब को समझा कर यह आग्रह किया कि तुम सब लोग जाकर शिवजी को यहाँ ले आओ, परन्तु उनकी बात किसी को भी उचित न लगी। यहाँ तक कि विष्णु जी तथा मैंने भी शिवजी को भुला दिया। अन्त में, दधीचि मुनि यह कह कर कि यह यज्ञ बिना शिवजी के किसी प्रकार भी पूर्ण न होगा, बाहर चले गये। इस बात को दक्ष प्रजापति उत्तम न समझ कर, हम सब की सहायता से यज्ञ करने लगे। संयोग से सती अपने पिता के घर में यज्ञ होने का समाचार सुन कर अत्यन्त प्रसन्न हुई तथा यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए शिवजी से हठ करके आज्ञा प्राप्त कर, दक्ष के घर गयीं। वहाँ पहुँच कर शिवजी की अत्यन्त अप्रतिष्ठा देख कर, उन्होंने क्रोधित हो कर यह कहा—"हे दक्ष ! ब्रह्मा, विष्णु, सब देवता तथा मुनि आदि ! क्या तुम सब की बुद्धि नष्ट हो गयी है, जो तुम सब ने शिवजी के बिना यज्ञ करना चाहा है? तुम सब को इसका फल अवश्य मिलेगा।" यह कह कर सती योग धारण कर वहीं जल गयी।

हे नारद ! इस प्रकार सती को जलती हुई देख कर चारों ओर हाहाकार मच गया तथा सब लोग व्यथित हो गये। शिवजी ने अत्यन्त क्रोधित हो, अपनी एक जटा उखाड़ कर शिला पर दे मारी। उस समय नदियाँ तथा पर्वतों सहित तीनों लोक काँप उठे। उस जटा के प्रथम भाग से एक चतुर्भुजस्वरूप, त्रिनेत्र, हाथ में अत्यन्त भयानक त्रिशूल लिये हुए वीरभद्र नामक गण उत्पन्न हुआ। वह शिवजी के सम्मुख आकर खड़ा हो गया। फिर उसने अपने रोमों से अपने सामान असंख्य गणों को उत्पन्न किया। वे सब अट्ठहास करते थे। जटा के दूसरे भाग से श्रीमहाकाली महाभयानक रूप धारण किये हुए, अपने साथ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:23 PM

करोड़ों योगिनियों को लिये हुए, भयंकर शब्द करती हुई प्रकट हुई। इसके पश्चात् वीरभद्र तथा काली ने हाथ जोड़ कर शिवजी से पूछा—''हे शिवजी ! अब हमें आज्ञा दीजिये कि हम क्या करें?'' तब शिवजी ने अत्यन्त कुपित हो कर उन्हें यह आज्ञा दी कि तुम दोनों दक्ष के यहाँ पहुँच कर उसके यज्ञ को विध्वंस कर, सब को प्राणदंड दो। शिवजी की ऐसी आज्ञा पा कर वीरभद्र तथा काली अपनी-अपनी सेनाओं सहित चले। उनके चलने से चारों ओर भीषण शब्द होता था।

हे नारद ! इस प्रकार वीरभद्र के सेना सहित आगमन का समाचार जब दक्ष की पत्नी वीरनी ने सुना, जिसने कि सती का अत्यन्त आदर किया था, तो उसने सब को समझा कर यह कहा कि अब शिवजी महाकुपित हुए हैं, इसलिए किसी की कुशल नहीं है। वीरनी यह बात सब से कह ही रही थी कि शिवजी की सेना वहाँ पहुँच गयी। राजा दक्ष उस स्थान पर यज्ञ कर रहे थे, जहाँ हिमालय पर्वत के स्वर्ण शिखर हैं तथा जहाँ मायापुरी के निकट गंगा प्रवाहित हो रही है। उस देश का नाम कनखल है। वीरभद्र ने वहाँ पहुँच कर प्रलय की अग्नि के समान प्रचण्ड हो कर सब लोगों को सुनाते हुए ऊँचे स्वरों में कहा—''हम शिवजी की आज्ञा से यहाँ आये हैं और तुम में से किसी को जीवित नहीं छोड़ेंगे।''

❁❁❁

उन्नीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! वीरभद्र ने यह कह कर यज्ञ स्थल को जला कर भस्म कर दिया तथा गणों को आज्ञा दी कि शीघ्र ही अकाल प्रलय करो। उस समय वीरभद्र की आज्ञा सुन कर गणों ने क्रोधित हो कर, यज्ञ में उपस्थित देवता तथा मनुष्यों के दाढ़ी-मूँछ तथा केश आदि सब उखाड़ डाले और सब को शस्त्रों से मारा। वीरभद्र का यह कृत्य देख कर दिग्पालों ने कुछ देर तक उनका सामना किया, परन्तु वे सब कुछ ही देर में परास्त हो गये। यह दशा देख कर सब देवता भाग

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:23 PM

खड़े हुए तथा उनका कोई भी उपाय सफल न हुआ। शिवजी के गण महाभयंकर अट्ठहास करके यज्ञ को नष्ट करने लगे। यह देख कर अत्रि मुनि भाग कर विष्णु जी के चरणों पर गिर पड़े और बोले—"हे विष्णु जी ! आप हमारी रक्षा करें, हम आपकी शरण में आये हैं। हम देवताओं तथा मुनि आदि के दुःखों का किस प्रकार वर्णन करें? आप इन शिव के गणों से उनकी रक्षा कीजिये।" दक्ष प्रजापति भी विष्णु जी से यही विनती कर उनके चरणों पर गिर पड़े और स्तुति करते हुए बोले—"हे विष्णु जी ! आप ऐसी कृपा करें कि जिससे यह गण नष्ट हो जाएं। इन गणों ने आ कर हमारा यज्ञ नष्ट कर डाला है।" ऐसा निवेदन कर दक्ष विष्णु जी के सम्मुख हाथ जोड़ कर खड़ा हुआ।

हे नारद ! इस प्रकार देवताओं तथा दक्ष की विनती सुन कर विष्णु जी गणों पर क्रोधित हो कर, उनसे लड़ने के लिए खड़े हुए। विष्णु जी द्वारा स्मरण करते ही सब शस्त्र चले आये। तब विष्णु जी रथ पर आरूढ़ हो कर रथ पर चले। उस समय विष्णु जी गणों के सम्मुख खड़े हो कर प्रज्वलित अग्नि के समान दिखाई पड़ रहे थे। उन्होंने गणों को अपने तीक्ष्ण बाणों से व्यथित करके, युद्ध भूमि से भगा दिया। यह देख कर श्रीमहाकाली महाकुपति हो कर भयंकर शब्द करती हुई विष्णु जी के समीप चलीं। काली की सेना भी विष्णु जी के ऊपर चढ़ आयी तथा विष्णु जी को चारों ओर से घेर लिया। क्षेत्रपाल भी अपनी समस्त सेना सहित विष्णु जी से लड़ने के लिए चले। भैरव भी विष्णु जी के समीप आ पहुँचे। इस प्रकार इन तीनों ने विष्णु जी से बड़ा युद्ध किया। उस युद्ध में विष्णु जी की बहुत-सी सेना मर गयी। अन्त में, विष्णु जी ने सब को परास्त कर, अपना तेज इतना बढ़ाया कि कोई उनसे युद्ध न कर सके। भैरव, काली तथा क्षेत्रपाल विष्णु जी की सेना के अन्दर इस प्रकार घुस गये, जिस प्रकार राहू चन्द्रमा को घेर लेता है। तब विष्णु जी ने अपना धनुष हाथ में लेकर तीखे बाण चलाये तथा इसके साथ ही अपना शंख बजा दिया। उस समय जो देवता वीरभद्र के भय से भाग गये थे, वे सब पुनः विष्णु जी के समीप आ गये। दोनों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:23 PM

ओर से पुनः घोर युद्ध हुआ। युद्ध में काली, भैरव तथा क्षेत्रपाल ने देवताओं तथा विष्णु जी की बहुत-सी सेना को नष्ट कर डाला। विष्णु जी ने भी योगमाया से समस्त बाणों को अभिमन्त्रित कर चलाया तथा योगमाया द्वारा शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किये हुए अपने समान अनेक पार्षद् प्रकट किये, जिन्होंने गणों को मार कर बहुत भय उत्पन्न किया।

हे नारद ! विष्णु जी की ऐसी योगमाया को देख कर, वीरभद्र ने अत्यन्त क्रोधित हो कर अपना त्रिशूल चलाया, जिससे विष्णु जी की सब योगमाया नष्ट हो गयी तथा वे स्वयं अकेले ही रह गये। तब वीरभद्र ने विष्णु जी के मस्तक पर अपनी गदा का प्रहार किया। विष्णु जी उस प्रहार को न सह कर पृथ्वी पर गिर पड़े। उस समय दोनों ओर की सेनाओं में हाहाकार मच गया। थोड़ी देर बाद विष्णु जी ने पुनः उठ कर अपना चक्र हाथ में लिया, जो प्रलय काल के असंख्य सूर्यों के समान प्रकाशयुक्त था। उसको देखकर सब गण आश्चर्यचकित हो, विष्णु जी के सम्मुख न ठहर सके। तब वीरभद्र ने शिवजी का ध्यान किया, जिससे उनके चक्र को रोक देने की शक्ति प्राप्ति हुई। उस बल से वीरभद्र ने उस शस्त्र को नहीं चलने दिया।''

बीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! विष्णु जी के हाथ से वह चक्र न चल सका, जिसके चलने से प्रलय हो जाती है। विष्णु जी भी पर्वत के समान खड़े रह गये। तब विष्णु जी ने मंत्र पढ़ा, जिसके पढ़ने से शरीर तो हिल सका, परन्तु चक्र को चलने की शक्ति फिर भी नहीं मिली। उस समय मैंने विष्णु जी को इस प्रकार समझाया—''हे विष्णु जी ! जो कुछ होना है, वही होगा। आप व्यर्थ ही हठ क्यों करते हैं? क्या दधीचि मुनि का वचन कभी टल सकता है? अब आप इस पक्ष को शिवजी की इच्छा समझ कर ही छोड़ दीजिए और अपने धाम को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:23 PM

चलिये। मेरे समझाने पर विष्णु जी अपने धाम को चले गये। तब वीरभद्र अनेक प्रकार के उपद्रव करते हुए यज्ञ के समीप पहुँचे। सर्वप्रथम उन्होंने यज्ञ का स्थान फूँक दिया। समस्त यज्ञ के पात्र गंगा जी में फेंक दिये तथा जल डाल कर सब यज्ञकुण्ड बुझा दिये। उस समय यज्ञ हिरण का रूप धारण कर वहाँ से भाग चला। इस बात को जान कर वीरभद्र तुरन्त उसे आकाश से पकड़ कर ले आया तथा उसका सिर काट डाला। उन्होंने धर्मराज, दक्ष प्रजापति तथा कश्यप के मस्तक पर लात मारी। इसी प्रकार अनेक उपद्रव कर सब को यथाशक्ति प्रतिफल दिया। तदुपरान्त वे उसी चिताभूमि में प्रलय करने वाले रुद्र के समान विराजमान हुए। उस समय मैंने तथा विष्णु जी आदि ने शिवजी के निकट जा कर यह विनय की कि हे प्रभो ! आपके गण वीरभद्र ने यज्ञ को विध्वंस कर, सब को व्याकुल कर दिया है। दक्ष प्रजापति ने वास्तव में ही बहुत निर्बुद्धिता का काम किया, जो आपको अवधूत समझ कर यज्ञ में नहीं बुलाया। आपने जो सब को दंड दिया सो सब इसी योग्य थे। परन्तु अब आप हमारे अपराधों पर ध्यान न करके, हमें क्षमा कीजिये। आप कृपा करके यज्ञ को पूरा करें तथा ऐसा उपाय करें कि जिससे दक्ष भी जीवित हो सके। हे शिवजी ! ऐसा करके आप सब को आनन्द प्रदान कीजिए। यदि आप इस प्रकार दण्ड न देते तो धर्म नष्ट हो कर पाप फैल जाता और आपकी महिमा को भूल जाने से मनुष्य वेद रहित हो जाते।

हे नारद ! शिवजी यह प्रार्थना सुन कर अत्यन्त प्रसन्न हुए। तब उन्होंने वीरभद्र के पास पहुँच कर दयादृष्टि से देखा। उस समय वीरभद्र शिवजी के चरणों पर गिर पड़े था यह विनती की कि आप जो मुझे आज्ञा देंगे, मैं उसी का पालन करूँगा। तब शिवजी बोले "हे वीरभद्र ! अब तुम सब गण क्रोध को शान्त करो, क्योंकि सब लोग अपना-अपना दंड प्राप्त कर चुके हैं।" यह कह कर शिवजी ने वहाँ से सब गणों को विदा किया तथा सब की ओर कृपा से दृष्टिपात किया, जिससे सब अंग पहले जैसे ही हो गये। जो उस युद्ध में मारे गये थे, वे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:23 PM

सभी सोते हुए मनुष्यों के समान उठ खड़े हुए। फिर शिवजी ने भृगु के बकरे की दाढ़ी जमायी तथा दक्ष के शरीर पर बकरे का सिर रख कर उसको जीवित किया। उस समय दक्ष ने बकरे के स्वर में शिवजी की स्तुति की। तदुपरान्त शिवजी ने प्रसन्न हो कर यज्ञ के पूर्ण करने के लिए आज्ञा दी। इस प्रकार शिवजी की आज्ञा द्वारा यज्ञ पूर्ण हुआ। सब को यज्ञ भाग देकर, शिवजी को भी पूर्ण भाग दिया गया। श्री शिवशंकर यज्ञ पूर्ण करके अपने समस्त गणों सहित कैलाश पर्वत को लौट गये। विष्णु जी, मैं तथा समस्त देवता भी अपने-अपने लोक को चले गये। हे नारद ! मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार वीरभद्र के अवतार की कथा तुम्हें कह सुनायी। यह चरित्र बहुत ही पवित्र है। जो इसको पढ़ेगा या सुनेगा वह इस लोक में प्रसन्न रह कर, अन्त में शिव पद को प्राप्त करेगा।''

इक्कीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! अब हम तुम्हें शरभ अवतार का वर्णन सुनाते हैं। पूर्व समय में दिति के दो पुत्र कनककशिपु तथा कनकाक्ष नामक उत्पन्न हुए, जो देवताओं के बड़े शत्रु थे। संसार में केवल उन्हीं की आज्ञा चलती थी। उन्होंने देवताओं को बड़ा दुःख पहुँचाया और अधिक पापों के कारण संसार में बड़े उपद्रव उठने लगे। उनमें से जो छोटा भाई कनकाक्ष था, उसको तो विष्णु जी ने वाराह अवतार लेकर मार डाला। कनककशिपु के चार पुत्र उत्पन्न हुए। उनमें सबसे छोटा पुत्र प्रह्लाद था। वह बड़ा सत्यवादी, तपस्वी, धर्मनिष्ठ, आत्मज्ञानी तथा विष्णु जी का परम भक्त हुआ। उसने उत्पन्न होते ही विष्णु जी की पूजा की। विष्णु जी के अतिरिक्त उसने संसार में अन्य किसी वस्तु को नहीं देखा। वह विष्णु जी के अष्टाक्षर मन्त्र का नित्य प्रति आनन्द से पाठ करता था। प्रह्लाद गुरु के यहाँ भी विष्णु जी का अष्टाक्षर मन्त्र जपा करता था। गुरु जो राजनीति आदि विषय पढ़ाते,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रह्लाद उसे न पढ़ता। एक दिन कनककशिपु ने परीक्षा लेने के लिए प्रह्लाद को अपने पास बुला कर अध्ययन का हाल पूछा और कहा—''हे पुत्र ! तुमने अब तक जो गुरु से पढ़ा हो, वह हमें सुनाओ।''

हे नारद ! पिता के ऐसे वचन सुन कर प्रह्लाद ने उत्तर दिया—''हे पिता मैंने उन विष्णु जी का नाम पढ़ा है, जिनकी सेवा से दोनों लोकों में आनन्द प्राप्त होता है। संसार में उन वैकुण्ठवासी विष्णु जी के समान और कोई नहीं है। कनककशिपु ने प्रह्लाद के ऐसे वचन सुन कर उसको अपनी गोद से फेंक दिया और यह कहा—''हे प्रह्लाद ! विष्णु कौन है, जिसके चरणों की प्रीति तुम्हें उत्पन्न हुई है? संसार में मुझ से बड़ा और कौन है?'' पिता के ऐसे वचन सुनकर प्रह्लाद बिलकुल भयभीत नहीं हुआ। उसने ऊँचे शब्दों में विष्णु जी का नाम लेते हुए कहा—''हे पिता ! मुझ पर उपकार करने वाले वही हैं।'' यह कह कर प्रह्लाद विष्णु जी के चरणों में और भी अपनी भक्ति का उपदेश देकर, उनके हृदय में भक्ति भावना उत्पन्न करने लगा। हे नारद ! वह धर्म बहुत बड़ा आनन्द प्रदान करने वाला है, जिसमें अपने स्वामी के चरणों की सेवा न छूटे। निदान, अपने पुत्र की ऐसी भगवत् भक्ति देख कर कनककशिपु ने दैत्यों को बुला कर प्रह्लाद को मार डालने की आज्ञा दी और उनसे कहा—''यह बालक हमारा पुत्र हो कर, हमारे विरोधियों की सेवा करता है, इसलिए इसका तुरन्त वध कर दिया जाए।'' दैत्यों ने कनककशिपु की यह आज्ञा सुन कर प्रह्लाद को अनेक प्रकार से मारने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु प्रह्लाद के शरीर में एक भी घाव न लगा। लगता भी कैसे, भगवान् विष्णु जी तो पहले से ही उसकी रक्षा करने के लिए तैयार थे। इस प्रकार विष्णु जी ने प्रह्लाद की रक्षा की। जब कनककशिपु ने प्रह्लाद के न मरने का समाचार सुना, तब वह बहुत क्रोधित हुआ। उसने प्रह्लाद को अपने पास बुलाया और बोला—''हे पुत्र ! तू मुझे बता कि तेरा स्वामी कौन है और वह कहाँ है? मैं तेरा वध करता हूँ। यदि वह वास्तव में तेरा स्वामी है तो मुझ से तेरी रक्षा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:24 PM

प्रह्लाद उसे न पढ़ता। एक दिन कनककशिपु ने परीक्षा लेने के लिए प्रह्लाद को अपने पास बुला कर अध्ययन का हाल पूछा और कहा— "हे पुत्र ! तुमने अब तक जो गुरु से पढ़ा हो, वह हमें सुनाओ।"

हे नारद ! पिता के ऐसे वचन सुन कर प्रह्लाद ने उत्तर दिया—"हे पिता मैंने उन विष्णु जी का नाम पढ़ा है, जिनकी सेवा से दोनों लोकों में आनन्द प्राप्त होता है। संसार में उन वैकुण्ठवासी विष्णु जी के समान और कोई नहीं है। कनककशिपु ने प्रह्लाद के ऐसे वचन सुन कर उसको अपनी गोद से फेंक दिया और यह कहा—"हे प्रह्लाद ! विष्णु कौन है, जिसके चरणों की प्रीति तुम्हें उत्पन्न हुई है? संसार में मुझ से बड़ा और कौन है?" पिता के ऐसे वचन सुनकर प्रह्लाद बिलकुल भयभीत नहीं हुआ। उसने ऊँचे शब्दों में विष्णु जी का नाम लेते हुए कहा—"हे पिता ! मुझ पर उपकार करने वाले वही हैं।" यह कह कर प्रह्लाद विष्णु जी के चरणों में और भी अपनी भक्ति का उपदेश देकर, उनके हृदय में भक्ति भावना उत्पन्न करने लगा। हे नारद ! वह धर्म बहुत बड़ा आनन्द प्रदान करने वाला है, जिसमें अपने स्वामी के चरणों की सेवा न छूटे। निदान, अपने पुत्र की ऐसी भगवत् भक्ति देख कर कनककशिपु ने दैत्यों को बुला कर प्रह्लाद को मार डालने की आज्ञा दी और उनसे कहा—"यह बालक हमारा पुत्र हो कर, हमारे विरोधियों की सेवा करता है, इसलिए इसका तुरन्त वध कर दिया जाए।" दैत्यों ने कनककशिपु की यह आज्ञा सुन कर प्रह्लाद को अनेक प्रकार से मारने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु प्रह्लाद के शरीर में एक भी घाव न लगा। लगता भी कैसे, भगवान् विष्णु जी तो पहले से ही उसकी रक्षा करने के लिए तैयार थे। इस प्रकार विष्णु जी ने प्रह्लाद की रक्षा की। जब कनककशिपु ने प्रह्लाद के न मरने का समाचार सुना, तब वह बहुत क्रोधित हुआ। उसने प्रह्लाद को अपने पास बुलाया और बोला— "हे पुत्र ! तू मुझे बता कि तेरा स्वामी कौन है और वह कहाँ है? मैं तेरा वध करता हूँ। यदि वह वास्तव में तेरा स्वामी है तो मुझ से तेरी रक्षा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:24 PM

करें।'' यह कह कर वह अपना खड्ग लेकर प्रह्लाद का सिर काटने को तैयार हो गया, परन्तु प्रह्लाद को किसी प्रकार का भय न हुआ। उसने दृढ़ता से यह उत्तर दिया कि मेरा स्वामी सब जगह वर्तमान है तथा सब में विद्यमान है। उसके सिवा मुझे कोई नहीं मार सकता। स्वामी अपने भक्तों की सदैव रक्षा करता है।

हे नारद ! प्रह्लाद के ऐसे वचन सुन कर कनककशिपु ने कहा— "हे पुत्र ! अगर यह बात सत्य है तो फिर वह इस खम्बे में क्यों नहीं दिखाई देता।'' इतना कह कर उसने खम्भे पर तलवार चलायी। तलवार के लगते ही खम्भे में से अत्यन्त भयंकर शब्द हुआ और भक्तों के पालक विष्णु जी नरहरि रूप हो कर उसी खम्भे से प्रकट हो गये। उन्होंने ब्रह्मा जी का वर स्थिर रख कर, कनककशिपु का उदर चीर डाला। इसके पश्चात् नरहरि ने बड़ा भयानक शब्द किया जो तीनों लोकों में गूँज गया। उससे तीनों लोक भयभीत हुए, पृथ्वी काँप उठी, पर्वत जलने लगे तथा दिग्गज अपने स्थान पर स्थित न रह सके।

हे नारद ! नरहरि का ऐसा भयंकर रूप देख कर देवता वहाँ न ठहर सके और कुछ दूर भाग गये। उस समय विष्णु जी, मैं तथा बड़े-बड़े देवता दूर से ही उनकी स्तुति करने लगे। फिर मैंने प्रह्लाद से कहा— "हे प्रह्लाद तुम नरहरि को शान्त करके सब लोगों के दुःख दूर करो।'' प्रह्लाद मेरी बात को मान कर नरहरि के पास गये, परन्तु तब भी उनका क्रोध शान्त न हुआ, वरन् वे और भी ज़ोर से चिल्लाने लगे। तब इन्द्र आदि समस्त देवता वहाँ से भाग कर शिवजी की शरण में गये। मैं, इन्द्र तथा दिग्पाल आदि देवताओं ने शिवजी की स्तुति करके उनसे यह निवेदन किया कि हम सब आपकी शरण में आये हैं। अस्तु, आप ऐसा उपाय कीजिये, जिससे नरहरि का क्रोध शान्त हो। हे प्रभो ! इसी प्रकार का क्रोध दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करने के लिए वीरभद्र ने किया था, उसको आप ही ने दूर किया था। हम को आप के अतिरिक्त कोई दूसरा इस क्रोधाग्नि को शान्त करने वाला दिखाई नहीं देता।''

❀❀❀

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:24 PM

बाईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! हम लोगों की ऐसी स्तुति सुन कर शिवजी ने प्रसन्न हो कर, नरहरि का क्रोध शान्त करने के लिए अपने गण वीरभद्र का स्मरण किया। तब वे शिवजी से हाथ जोड़ कर बोले—"हे सदाशिव ! मुझे क्या आज्ञा है?" तब शिवजी ने कहा— "हे वीरभद्र ! तुम जा कर नरहरि का क्रोध शान्त करो। तुम उनको नम्रता के साथ समझाने का प्रयत्न करना। यदि उनकी क्रोधाग्नि तुम्हारे समझाने से शान्त हो तो कुछ हमारी शक्ति का प्रदर्शन करके दिखा देना। यदि उनका तेज अधिक हो तो तुम भी उसे अपने प्रचण्ड तेज से दूर करना तथा उनके क्रोध का निवारण करना। फिर इसी प्रकार नरहरि के शरीर को अपने में मिला कर हमारे पास ले आना।" वीरभद्र शिवजी का यह उपदेश सुनकर शान्त रूप बन गये तथा नरहरि के पास जा कर पिता के समान उन्हें उपदेश के वचन कहने लगे। वे बोले—"हे विष्णु जी ! तुम ने नरहरि का अवतार संसार की रक्षा के हेतु लिया है, अस्तु, तुम प्रलय होने का उपाय मत करो। शिवजी की यही आज्ञा है। तुम्हें यही उचित है कि अब इस रूप को दूर कर दो।"

हे नारद ! वीरभद्र के ऐसे वचन सुनकर नरहरि ने अग्नि के समान प्रदीप्त हो, अत्यन्त क्रोध से उत्तर दिया—"हे वीरभद्र ! तुम यहाँ से तुरन्त अपने घर को चले जाओ। तुम मेरी इच्छा के विरुद्ध वचन कह कर मेरा क्रोध क्यों बढ़ाते हो? इस समय मैं नहीं जानता हूँ कि मुझ को निवृत्त करने वाला कौन है। मेरे अधीन तीनों लोक हैं। सब का स्वामी, स्वाधीन, सृष्टिकर्त्ता, पालनकर्त्ता तथा प्रलयकर्त्ता भी मैं ही हूँ। भला, वह कौन है जो मुझको उपदेश देता है?" यह सुनकर वीरभद्र ने कहा—"हे विष्णु जी ! आप उस प्रलय करने वाले को चलकर क्यों नहीं देखते, जिसके हाथ में पिनाक तथा त्रिशूल है। आपका यह वचन बहुत ही अनुचित है। इससे आपको निश्चय ही बहुत दुःख प्राप्त होगा। आप शिवजी की महिमा तथा प्रताप को नहीं जानते, जो उनको अन्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

देवताओं के समान समझकर ऐसा गर्व करते हैं। उन्हीं शिवजी ने मुझको आपका अहंकार दूर करने के लिए भेजा है। आप केवल एक दैत्य का वध करके इतना अहंकार करते हैं? अस्तु, आप व्यर्थ उपद्रव न करें। यह बात आपके लिए बुरी है। यदि आप शिवजी को अपना बनाया हुआ तथा अपने अधीन कहते हो तो मुझे यह निश्चय हुआ है कि आप संसार को उत्पन्न तथा पालन करने वाले नहीं हो। आप स्वाधीन तथा मुक्ति प्रदान करने वाले भी नहीं हैं, क्योंकि आप शिवजी की आज्ञा से ही अवतार लेते हैं। जिस समय आपने कमठ अवतार लियां था, उस समय की बात क्या आप नहीं जानते कि शिवजी ने आपके सिर को जला कर अपने हार में पिरो लिया था? जब आपने वाराह अवतार लिया, तब शिवजी ने आपके दाँतों को उखाड़ कर, अपने त्रिशूल का आपके ऊपर प्रहार किया तथा आपका अहंकार नष्ट कर दिया। शिवजी ने भैरव अवतार लेकर आपके पुत्र ब्रह्मा का सिर काटा, जिससे अब तक ब्रह्मा का पाँचवाँ सिर नहीं है। क्या आप यह सब बातें भूल गये? आप दक्ष प्रजापति के यज्ञ का स्मरण करें, जहाँ मैंने क्षणभर में उसका सिर काट डाला था। मैं तथा आप से लेकर तृण पर्यन्त सब शिवजी की शक्ति के अधीन हैं। आपका यह सब प्रताप तथा बल शिवजी की कृपा से ही है। वे शिवजी ही निष्पाप तथा तीनों लोकों के उत्पन्न करने वाले हैं। आप व्यर्थ ही इतना गर्व करते हैं। यदि शिवजी आप पर क्रोधित होंगे तो आपकी रक्षा करने वाला कोई भी उत्पन्न न होगा।''

हे नारद ! वीरभद्र के ऐसे वचन सुनकर नृसिंह ने क्रोधित हो कर कहना चाहा कि वीरभद्र को पकड़ लें, परन्तु वीरभद्र ने उनका आशय जान कर अपना शरीर आकाश में छिपा लिया। उस समय उनका तेज प्रज्वलित अग्नि के समान प्रतीत हुआ, जिसकी उपमा सूर्य, वह्नि तथा विद्युत् से भी नहीं दी जा सकती। इसे देखकर शिवजी ऐसे अद्‌भुत रूप में प्रकट हुए कि उनका आधा शरीर सिंह का, दो पंख तथा चोंच, सहस्र भुजाएँ, शीश में जटा, मस्तक में चन्द्रमा, महाभयंकर दाँत तथा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:24 PM

वज्र के समान नख थे। वे ही मानो उनके शस्त्र थे। वे दाँतों से ओठ काट रहे थे। उनका ऐसा स्वरूप देखकर विष्णु जी का अहंकार दूर हो गया तथा वे निस्तेज हो गए। शरभ ने बल करके अपना शरीर हिलाया तथा अपनी भुजाओं से नरहरि की दोनों भुजाएँ पकड़ लीं। फिर आकाश से पृथ्वी पर डालकर, पुनः पृथ्वी पर उतरकर पकड़ लिया। इसी प्रकार बार-बार उड़कर नरहरि को निर्बल कर दिया। उस समय समस्त देवता एवं मुनि स्तुति करने लगे। इस भाँति नरहरि का अहंकार दूर हो गया। तदुपरान्त उन्होंने शिवजी के एक सौ आठ नामों का वर्णन कर, उनकी स्तुति की और कहा—''हे शरभेश्वर ! जब मेरे अन्दर इस प्रकार क्रोध उत्पन्न हो, उस समय आप इसी प्रकार मेरा अहंकार दूर किया कीजिये।'' यह कह कर नरहरि अपना शरीर त्याग कर अन्तर्धान हो गये। उस समय मैंने देवताओं तथा मुनीश्वरों सहित शरभेश्वर शिवजी की बड़ी सेवा करके स्तुति की। तब शरभेश्वर शिवजी बोले—''हे देवताओ ! तुम यह बात भली प्रकार समझ लो कि मैं तथा विष्णु भिन्न नहीं हैं, वरन् एक ही स्वरूप हैं।''

हे नारद ! शिवजी ने यह कह कर नरहरि का सिर तथा चर्म उठा लिया। उन्होंने सिर को तो अपनी माला का सुमेरू बनाया तथा चर्म ओढ़ लिया। फिर वे सब के देखते-देखते अन्तर्धान हो गये। तदुपरान्त देवता आदि भी अपने-अपने मनोरथ प्राप्त कर, वहाँ से अपने-अपने घर चले गये। हे नारद ! जो इस चरित्र को सुनता तथा पाठ करता है, उसे दोनों लोकों में आनन्द प्राप्त होता है।''

तेईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! अब मैं तुम्हें यज्ञावतार के विषय में बताता हूँ, जिसने तुरन्त ही सब देवताओं का मद दूर कर दिया था। जब देवता तथा दैत्य समुद्र मन्थन के समय परस्पर लड़े और उसमें दैत्य देवताओं से पराजित हो गये, तब देवता अपने अहंकार में भर कर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:24 PM

शिवजी को भूल, स्वयं को पृथ्वी, आकाश तथा पाताल का स्वामी समझने लगे। वे सब एकत्र हो कर गर्व की बातें करने लगे। सब देवता अहंकार में भर कर अपनी-अपनी वीरता का बखान करने लगे। उस समय शिवजी ने देवताओं का ऐसा अहंकार देखकर, एक विचित्र चरित्र किया अर्थात् उन्होंने यज्ञ रूप से देवताओं के पास जा कर सब से कुशल पूछी। उन देवताओं में से कोई भी यह न जान सका कि ये शिवजी हैं। फिर शिवजी ने उनसे यह कहा तुम सब इस स्थान पर बैठे हुए क्या कर रहे हो? मालूम होता है, तुम सब अहंकार में भरे हुए हो। यह सुनकर देवताओं ने उत्तर दिया कि क्या तुमने नहीं सुना कि यहाँ देवासुर युद्ध हुआ था? हमने उसमें दैत्यों को मार कर विजय प्राप्त की है। यह सुनकर यज्ञ स्वरूप शिवजी बोले—"हे विष्णु आदि देवताओ ! आप ऐसी बात मत कहें। आप से बड़ा भी और कोई है। आप इस प्रकार अहंकार की बातें मत करें, क्योंकि आप से भी बड़ा जो पुरुष है, वह सब से बलवान् तथा तेजस्वी है। वह जो कुछ चाहता है, वही करता है। यदि आपको इस बात का विश्वास न हो तो आप सब मिल कर इस एक तिनके को काट कर दिखाएँ।" इतना कह कर यज्ञ रूप शिवजी ने एक तिनका देवताओं के ऊपर फेंक दिया। तब सब देवताओं ने अपने-अपने शस्त्र का प्रयोग उस तिनके पर किया, परन्तु वह तिनका हिला तक नहीं, अपने स्थान पर जैसा पड़ा था, वैसा ही पड़ा रहा। यह देखकर इन्द्र ने अत्यन्त क्रोधित हो कर अपना वज्र उस तिनके पर चलाया, परन्तु वह भी निष्फल रहा। तदुपरान्त विष्णु जी ने क्रोधित हो, अपना चक्र तिनके पर मारा, परन्तु वह भी असफल रहा। उस समय सब देवता अत्यन्त लज्जित हुए। इतने में यह आकाशवाणी हुई कि हे देवताओ ! आप अपने मन में किसी बात का संशय मत करो। आप सब ने अहंकार के वशीभूत हो कर अपने स्वामी को नहीं पहचाना। उन्होंने आपका अहंकार दूर कर दिया। फिर कभी ऐसा अहंकार मत करना। आपके सम्मुख यह जो खड़े हुए हैं, वे यज्ञरूपी सदाशिवजी ही हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे नारद ! इस प्रकार आकाशवाणी सुनकर सब देवता यज्ञेश्वर महादेव के चरणों पर गिर पड़े तथा अनेक प्रकार से प्रणाम कर, अहंकार से मुक्त हुए। तदुपरान्त उन सब ने यह निश्चय किया कि संसार में शिवजी के समान बलशाली और कोई नहीं है। फिर सब देवता आदि शिवजी की स्तुति करते हुए बोले—"हे सदाशिवजी ! हम सब आपकी शरण में हैं। अब हमारा अहंकार दूर हो गया।" यह सुनकर शिवजी ने प्रसन्न हो कर ॐकार का उच्चारण किया। इसके पश्चात् सब लोग अपने-अपने घर चले गये। हे नारद ! यह यक्षेश्वर शिवजी का चरित्र अत्यन्त पवित्र है। इसे पढ़ने तथा सुनने से अत्यन्त सुख प्राप्त होता है। अब मैं तुमको शिवजी के दस महाकाल अवतारों के विषय में बताऊँगा, ध्यानपूर्वक सुनो। हे नारद ! शिवजी का पहला रूप महाकाल है। महाकाली इस अवतार की शक्ति है। शिवजी का दूसरा अवतार तार नामक है, जिनकी शक्ति का नाम तारा है। तीसरा अवतार बलि है जिनकी शक्ति का नाम भुवनेश्वरी है। चौथा विघ्नेश अवतार है, जो सोलह क्लेश दूर करने वाले हैं। उनकी शक्ति का नाम विद्या है। पाँचवाँ भैरव अवतार है, जिनकी शक्ति को भैरवी कहते हैं। छठा छिन्नमस्तक अवतार है, जिनकी शक्ति का नाम छिन्नमस्ता है; जो अत्यन्त तेजस्विनी हैं। सातवाँ धूमावत् अवतार है, जिनकी शक्ति को धूमावती कहते हैं। आठवाँ बगलामुख अवतार है, जिनकी शक्ति का नाम बगलामुखी है। नौवाँ मातंग अवतार है, जिनकी शक्ति मातंगी कहलाती हैं। दसवाँ कमल अवतार है, जिनकी शक्ति को कमला कहते हैं। इन दसों अवतारों के पूजन तथा दसों शक्तियों की सेवा से सब मनोरथ सफल होते हैं। इस प्रकार शिवजी के सत्तावन अवतार पूर्ण हुए।"

चौबीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! अब मैं तुम्हें ग्यारह रुद्रों का, जो कि शिवजी के अवतार हैं, वृत्तान्त सुनाता हूँ। वे अवतार अत्यन्त शक्तिशाली

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:24 PM 4G 87

12:24 PM 4G 87

तथा सुख प्रदान करने वाले हैं। उनके चरित्र सुनने से वीरता तथा सुख में वृद्धि होती है। पूर्वकाल में दैत्यों ने अत्यन्त बलशाली हो कर देवताओं को महान् कष्ट पहुँचाया। तदुपरान्त देवताओं ने अपने पिता कश्यप के सम्मुख जा, हाथ जोड़ कर अपना दुःख कहा। कश्यप ने उसे सुनकर शिवजी का स्मरण करके सब देवताओं से यह कहा कि शिवजी की इच्छा शुभ है। अब तुम सब लोग अपने-अपने घरों में जा कर शिवजी का ध्यान करो, हम भी तुम्हारी भलाई के लिए अपनी पत्नी सहित शिवजी का तप करेंगे। इस प्रकार कश्यप ने देवताओं को समझाकर वहाँ से विदा किया और स्वयं अपनी पत्नी सहित शिवजी का तप करने लगे। तब शिवजी कश्यप के उस कठिन तप को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा उनके समीप जाकर प्रकट हो गये। कश्यप ने जब शिवजी को अपने सम्मुख देखा तो वे उनकी स्तुति करने लगे तथा अपनी स्त्री सहित उनके चरणों में गिर कर बोले—''हे शिवजी ! जो वर मैं आप से माँगना चाहता हूँ, वह अनुचित है, फिर भी मैं ढिठाई से माँगता हूँ। आप कृपा कर मेरे घर अवतरित हो कर मेरे पुत्र बनें तथा देवताओं के साथ मित्रता करके दैत्यों का विनाश करें।'' यह कह कर कश्यप जी चुप हो गये।

शिवजी ने कश्यप के ऐसे वचन सुनकर कहा—''अच्छा, यही होगा। तुम्हारी इच्छा पूरी होगी।'' तदुपरान्त वे वहाँ से अन्तर्धान हो गये। फिर उन्होंने कश्यप के हृदय में वास किया। कश्यप ने शिवजी की ऐसी कृपा देख कर, अपना तेज अपनी स्त्री सुरभी में स्थित कर दिया, जिससे सुरभी अत्यन्त प्रकाशित हुई। तब सब देवताओं ने कश्यप के स्थान पर पहुँच कर गर्भ स्थित शिवजी की स्तुति की, फिर वे अपने-अपने स्थानों को लौट गये। समय पा कर शिवजी अपने ग्यारह रूप धारण करके सुरभी के गर्भ से उत्पन्न हुए। सुरभी को उससे किसी प्रकार की पीड़ा नहीं हुई। उस समय सब देवताओं को महान् आनन्द प्राप्त हुआ। तब मैंने तथा देवताओं ने एक साथ आ कर ग्यारह रूपधारी रुद्र के दर्शन किए तथा प्रेमपूर्वक उनकी स्तुति की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:24 PM

हम सब ने कहा—"हे प्रभो ! आप सब दैत्यों को परास्त कर, हम सब को प्रसन्नता प्रदान करें।" तदुपरान्त हमने कश्यप से उनका जातकर्म कराया तथा उनके कपाली, पिंगल, भीम, नीललोहित, शस्त्रभृत, अभय, अजपाद, अहिर्बुध्न, शम्भु, भव तथा विरूपाक्ष से ग्यारह नाम रखे। उस समय बड़ा उत्सव मनाया गया। वे ग्यारह रूद्र उत्पन्न होते ही अत्यन्त बलवान् दिखाई दिये।

हे नारद ! यह कोई आश्चर्य की बात नहीं; क्योंकि वे सब शिवजी के ही रूप थे, तदुपरान्त वे माता-पिता की आज्ञा पा कर, देवताओं के साथ चले और देवताओं की सेना एकत्र करने के पश्चात् उन्होंने दैत्यों पर आक्रमण कर दिया। परन्तु देवता दैत्यों के सम्मुख फिर भी न ठहर सके और वे सब युद्ध स्थल से भाग कर रुद्र के सम्मुख आये तथा उनसे युद्ध का सब वृत्तान्त कहा। रुद्र ने उसे सुन कर कहा कि तुम किसी प्रकार का भय मत करो। हम पल भर में सब दैत्यों को नष्ट कर डालेंगे। यह कह कर रुद्र ने दैत्यों का सामना किया। दैत्य रुद्र के तेज के सम्मुख ठहर न सके। देवताओं को इस प्रकार विजय प्राप्त होने से बड़ी प्रसन्नता हुई। वे अपने पुराने लोक को पा कर अत्यन्त आनन्दित हुए। हे नारद ! ग्यारहों रुद्र इसी प्रकार सदैव देवताओं के साथ रह कर उनकी सहायता करते रहे। हमने तुम्हें यह रुद्र-चरित्र सुनाया है, जिसके सुनने मात्र से ही महापापी मनुष्य भी पाप मुक्त हो जाता है।"

पच्चीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! जिस प्रकार शिवजी ने अत्रि मुनि के पुत्र हो कर अवतार लिया, अब उस कथा का वर्णन मैं तुमसे करता हूँ। मेरे पुत्र अत्रि मेरी आज्ञा पा कर अपनी स्त्री सहित ऋष्यमूक पर्वत पर जा कर विन्ध्या के तट पर बैठे। वे शिव के समान पुत्र की इच्छा से तप करने लगे। इस प्रकार के कठिन तप से एक प्रज्वलित अग्नि उत्पन्न हो कर समस्त संसार को जलाने लगी। तब तीनों देवता मुनीश्वरों के साथ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:24 PM 87

अत्रि के पास पहुँचे। अत्रि ने उन सब को अपने सम्मुख अपने मुख्य वाहनों सहित मुस्कराते हुए खड़े देखा। तब उन्होंने दण्डवत् कर यह विनय की कि आप तीनों देवता आये, अब मैं आप में से किसकी सेवा करूँ? मैंने तो एक ही देवता की, जो सब का स्वामी है, पूजा की थी, फिर आप तीनों देवता एक ही साथ ही क्यों आये? मैं इससे अत्यन्त चिन्तित हूँ, अस्तु, आप मुझे इसका कारण बताइये। यह सुनकर तीनों देवता बोले—''हे अत्रि ! तुमने ईश्वर का बहुत तप किया है तथा यह स्पष्ट है कि हम तीनों देवता एक ही रूप हैं। इससे प्रकट है कि तुम्हारे तीन पुत्र हम तीनों के अंश से उत्पन्न होंगे।''

हे नारद ! इस प्रकार अत्रि को वर देकर वे तीनों देवता अपने-अपने स्थान को चले गये। अत्रि भी इच्छानुसार वर पा कर अत्यन्त प्रसन्न हो, अपने घर लौट गये। नियत समय पर तीनों देवताओं के अंस से अत्रि के तीन पुत्र उत्पन्न हुए। ब्रह्मा के अंश से चन्द्रमा, विष्णु जी के अंश के दत्त तथा शिवजी के अंश के अंश से दुर्वासा ने जन्म लिया। हे नारद ! यहाँ पर मैं तुम्हें दुर्वासा के विषय में बताता हूँ। शिवजी ने दुर्वासा का शरीर धारण कर, अनेक चरित्र किये। उन्होंने ब्रह्मतेज धारण कर, सबका आदर किया तथा अनेक के धर्म की परीक्षा ली। उनका प्रथम चरित्र यह है कि एक सूर्यवंशी राजा अम्बरीष विष्णु जी का परम भक्त तथा दृढ़व्रती था। एक दिन उसने एकादशी का व्रत करके द्वादशी में पारण करने की इच्छा की। उसी समय दुर्वासा उनके पास जा पहुँचे। दुर्वासा अम्बरीष की केवल परीक्षा लेने की ही इच्छा से वहाँ गये थे। अम्बरीष ने दुर्वासा को देखकर, उनका अत्यन्त आदर-सत्कार किया तथा भोजन करने का निमन्त्रण दिया। दुर्वासा अम्बरीष का यह निवेदन स्वीकार कर, अपने शिष्यों सहित नदी तट पर स्नान के लिए चले गये। वहाँ उन्होंने अम्बरीष की परीक्षा लेने के लिए जानबूझ कर विलम्ब किया। राजा अम्बरीष दुर्वासा की बाट देखते रहे। इतने में द्वादशी समाप्त होने लगी। उस समय राजा अम्बरीष ने पारण में विघ्न उपस्थित होते देख, अत्यन्त खेद के साथ ब्राह्मणों से पूछा तो ब्राह्मणों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:24 PM

ने वेद के अनुसार अम्बरीष को आज्ञा दी कि आप पारण करें। अम्बरीष ने ब्राह्मणों का आदेश पा कर व्रत का पारण कर लिया। दुर्वासा राजा अम्बरीष के व्रत पालन करने का हाल जान कर अत्यन्त क्रोधित हुए। उन्होंने राजा के पास आ कर यह चाहा कि राजा की भक्ति की परीक्षा लें। परन्तु वे सुदर्शन चक्र से भाग कर, एक वर्ष तक तीनों लोकों में फिरते रहे। अन्त में राजा की शरण में अपने पीछे चक्र को लगाये पहुँचे। उन्होंने सोचा था कि यदि राजा वास्तव में ब्रह्मभक्त होगा तो अपने मन में लज्जित हो कर मेरा दुःख दूर करेगा और यदि विष्णु जी की पूरी भक्ति नहीं रखता होगा तो अपना व्रत छोड़ देगा। ऐसा विचार कर दुर्वासा अत्यन्त क्रोधित हो कर राजा अम्बरीष को शाप देने लगे। विष्णु जी के चक्र ने दुर्वासा की यह इच्छा जान ली और वह अपना तेज बढ़ा कर दुर्वासा की ओर चला। यह देख कर दुर्वासा भागने लगे। वे सब देशों तथा सब देवताओं के लोकों में फिर कर राजा अम्बरीष के पास लौट आये और बोले—''हे राजन्! हम तुम्हारी शरण में आये हैं।'' हे नारद! मूर्ख यह नहीं जानते कि दुर्वासा तो स्वयं शिवजी का अवतार थे, उनको कोई दुःख-कष्ट कैसे हो सकता है? अस्तु, राजा ने दुर्वासा को ऐसी स्थिति में देखकर, लज्जापूर्वक चक्र से कहा कि अब तुम दूर हो जाओ और ब्राह्मण को छोड़ दो। यह सुनकर चक्र दुर्वासा के पीछे से हट गया। तब राजा ने दुर्वासा को भोजन करा कर, स्वयं भी भोजन किया।

हे नारद! उस समय दुर्वासा ने अत्यन्त तृप्त तथा प्रसन्न हो कर राजा को आशीर्वाद दिया और यह कहा—''हे राजन्! तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करना। हमने केवल तुम्हारी परीक्षा के लिए ही यह चरित्र किया है। इतना कह कर दुर्वासा अत्यन्त प्रसन्न हो, वहाँ से चले गये। जब विष्णु जी दशरथ के पुत्र रामचन्द्र रूप में अवतरित हुए, उस समय भी दुर्वासा ने ऐसा ही चरित्र किया था। इसी प्रकार श्रीकृष्ण जी की परीक्षा लेकर उनको अपने रथ को खींचने वाला बनाया तथा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उनकी ब्रह्मभक्ति को देखकर उन्हें वज्रांग कर दिया। फिर उन्होंने द्रौपदी की परीक्षा लेकर पांडवों को सन्तुष्ट किया।''

❁❁❁

छब्बीसवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! अब मेरी यह इच्छा है कि जिस प्रकार दुर्वासा ने श्रीरामचन्द्र तथा श्रीकृष्ण की परीक्षा लेकर उन्हें वरदान दिया, वह सब वृत्तान्त आप सुनावें।'' ब्रह्मा जी बोले—''हे पुत्र ! जब श्रीरामचन्द्र ने देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिए राजा दशरथ के घर में अवतार लिया, तब मैंने एक दिन काल के द्वारा उनके पास यह समाचार भेजा कि जब आप अपने लोक में आकर हम देवताओं को आनन्द प्रदान करने की कृपा करें।'' तब काल एक मुनि के स्वरूप में रामचन्द्र जी के पास जाकर बैठ गया और अवसर देखकर विनती की—''हे महाराज ! मुझे आपसे कुछ निवेदन करना है। उसको कोई दूसरा मनुष्य न जान सके। हमारे आपके इस वार्तालाप में यदि कोई आ जाए तो वह चाहे कोई भी क्यों न हो, आपको उसका परित्याग करना होगा। रामचन्द्र जी ने काल की इस बात को मान कर लक्ष्मण को द्वार पर खड़े होने का आदेश दिया, जिससे कि कोई वहाँ न आने पावे। फिर वे काल से बोले कि तुम कौन हो, कहाँ से आये हो तथा क्या कहना चाहते हो? उस समय काल ने उत्तर दिया—''हे प्रभो ! ब्रह्मा ने आपके लिए यह सन्देश भेजा है कि अब आप अपने लोक में जाएं।'' इन दोनों में यह वार्ता हो ही रही थी कि उसी समय दुर्वासा परीक्षा के लिए वहाँ द्वार पर आये और लक्ष्मण से बोले—''हे लक्ष्मण ! तुम रामचन्द्र जी को हमारे आने का तुरन्त समाचार दो।'' यह देख कर लक्ष्मण अत्यन्त चिन्तित हुए। वह सोचने लगे कि इस समय मैं यदि रामचन्द्र जी के पास जाता हूँ तो वे मेरा त्याग कर देंगे और यदि नहीं जानता हूँ तो मुझे दुर्वासा का कोपभाजन होना पड़ेगा। ऐसी दशा में उन्होंने यह निश्चय किया कि दुर्वासा को क्रुद्ध

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:24 PM

करना ठीक नहीं। श्रीरामचन्द्र जी का वियोग अत्यन्त दुःखदायी है, परन्तु दुर्वासा की आज्ञा का पालन करना परमोत्तम है। अपने मन में ऐसा विचार कर, लक्ष्मण ने रामचन्द्र जी के समीप जा कर दुर्वासा का सन्देश कहा। उस समय काल लक्ष्मण को देखते ही अन्तर्धान हो गया। तब रामचन्द्र जी ने अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण कर लक्ष्मण से कहा— ''हे भाई लक्ष्मण ! इस समय हमारे साथ बहुत बुरा धोखा हो गया। उसने मुझ से जो वचन लिया था, उसे तो तुम जानते ही हो, इसलिए अब उसे पूरा करो।''

हे नारद ! लक्ष्मण से यह कह कर रामचन्द्र जी विलाप करने लगे। लक्ष्मण जी उस समय मूर्छित हो गये। तब दुर्वासा ने अन्दर जाकर सब को समझाया और ऐसी लीला कर वहाँ से विदा हो, अपने स्थान को लौट गये। लक्ष्मण ने भी रामचन्द्र जी से विदा हो कर सरयू के तट पर योग मार्ग द्वारा अपना शरीर छोड़ दिया। हे नारद ! अब तुमसे श्रीकृष्ण जी का चरित्र वर्णन करते हैं, जिस प्रकार दुर्वासा ने उनकी परीक्षा ली थी। श्रीकृष्ण जी बड़े प्रसिद्ध ब्रह्मभक्त थे। ऐसे ब्रह्मभक्त कृष्णजी की परीक्षा लेने के लिए दुर्वासा एक दिन उनके घर आये। कृष्णजी ने अत्यन्त नम्रता, आदर, मान तथा शील से दुर्वासा का स्वागत किया तथा उत्तमोत्तम भोजन कराये। तब दुर्वासा ने परीक्षा लेने के लिए उनसे यह कहा—''हे श्रीकृष्ण जी ! हम रथ पर चढ़ना चाहते हैं तथा यह भी चाहते हैं कि तुम तथा तुम्हारी स्त्री रुक्मिणी उस रथ को खींच कर चलावें। ऐसा करने पर हम तुम्हें तुम्हारी इच्छानुसार वर देकर प्रसन्न करेंगे।'' श्रीकृष्ण जी ने दुर्वासा के इस आदेश को प्रसन्नता से स्वीकार कर लिया और उनकी इच्छानुसार उन्हें रथ पर बैठा कर, आज्ञा पालन किया। तब दुर्वासा ने प्रसन्न हो कर श्रीकृष्ण जी से कहा कि तुम हमारी आज्ञा से पायस लो और उसे सारे शरीर में लगा लो। तुम्हारा कोई अंग खुला न रहे। श्रीकृष्ण जी ने यही किया। तब दुर्वासा जी ने प्रसन्न हो कर, उन्हें यह वर दिया कि जहाँ-जहाँ तुम्हारे शरीर में पायस लगी है, वहाँ-वहाँ तुम्हारे कोई शस्त्र-वेध न कर सकेगा। इसके

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:25 PM

पश्चात् दुर्वासा वहाँ से अन्तर्धान हो गये तथा श्रीकृष्ण जी प्रसन्न एवं पापों से रहित हो कर जीवन व्यतीत करने लगे।

हे नारद ! एक दिन द्रौपदी अपनी सखियों सहित गंगा-स्नान करने गयीं और वहाँ स्नान करने लगीं। उनसे पहले कुछ दूरी पर पूर्व की ओर दुर्वासा भी स्नान कर रहे थे। उसी समय उनकी कोपीन नदी में छूट गयी। लज्जा से दुर्वासा जल से बाहर नहीं निकल सके। द्रौपदी ने यह दशा जानकर अपना आँचल फाड़ कर दुर्वासा की ओर बहा दिया। दुर्वासा उसको पहन कर पानी से बाहर आये तथा प्रसन्न हो कर द्रौपदी से बोले—"हे द्रौपदी ! तुमने इस समय हमारी लज्जा रखी है, अस्तु, तुमको इसका फल अवश्य मिलेगा। सब देवता इस बात के साक्षी हैं कि तुम्हारी लज्जा सदैव बनी रहेगी।" इतना कह कर दुर्वासा वहाँ से अन्तर्धान हो गये। हे नारद ! अब तुम दुर्वासा का एक और चरित्र सुनो। एक दिन दुर्वासा सरोवर में स्नान करने के लिए गये तथा अपना स्वरूप अत्यन्त मैला-कुचैला बनाया। संयोग से उस दिन गन्धर्वों की तीन पुत्रियाँ भी स्नान के लिए वहीं गयी थीं। उन तीनों के नाम क्रमशः रत्नाढ्या, रत्नचूड़ा तथा घृतपर्णी थे। उन्होंने दुर्वासा को इस दशा में देखकर अनेक दुर्वचन कहे और यह कहा कि ब्रह्मा ने प्रसन्न हो कर हमारे लिए यह सुन्दर पति भेजा है। दुर्वासा ने यह सुनकर उनको शाप दिया और सब को अपना ब्रह्मतेज दिखाते हुए कहा कि तुम चण्डाली हो कर बड़ा कष्ट पाओगी। परन्तु जब वे उनकी शरण में पहुँचीं तो कहा कि तुम मलमास व्रत करके पुनः पहले की तरह हो जाओगी। यह कह कर दुर्वासा वहाँ से अन्तर्धान हो गये। हे नारद ! इस प्रकार उनहत्तरवें अवतार की कथा पूर्ण हुई।"

सत्ताईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! अब मैं तुम को गृहपति अवतार के विषय में बताता हूँ। नर्मदा नदी के तट पर नर्मपुर नामक नगर में,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:25 PM

विश्वामित्र मुनि ब्रह्मचारी शिवजी के अनन्य भक्त रहते थे। उन्होंने गृहस्थाश्रम को ही सर्वश्रेष्ठ समझकर, चक्षुष्मति नामक कन्या के साथ अपना विवाह किया। वे अपनी पत्नी के साथ नित्य-प्रति शिवजी का पूजन करते थे, परन्तु बहुत समय बीत जाने पर भी उनके कोई पुत्र उत्पन्न न हुआ। तब एक दिन उसकी पत्नी ने हाथ जोड़ कर यह विनय की "हे स्वामी ! मैंने आपके साथ आठों प्रकार के भोग भोगकर, सदैव निश्‍िंचत विहार किया है, परन्तु मेरी एक इच्छा है, जिसकी कि अभिलाषा सभी गृहस्थ करते हैं।" अपनी पत्नी की ऐसी बातें सुनकर विश्वामित्र बोले—"हे देवि ! तुम्हारी जो इच्छा हो, हम से वह वर ले लो।" तब स्त्री ने प्रसन्न हो कहा—"हे नाथ ! यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे शिवजी के समान पुत्र दीजिए। यह सुनकर विश्वामित्र ने शिवजी का ध्यान करके कहा—"तेरी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी। यह कोई कठिन बात नहीं है।" इतना कह कर विश्वामित्र तपस्या के लिए काशी आये। उन्होंने मणिकर्णिका में स्नान कर विश्वनाथ की पूजा की तथा यथाविधि सब देवताओं का पूजन किया। फिर उन्होंने अपने मन में यह सोचा कि काशी में ऐसा कौन-सा शिव लिंग है, जो शीघ्र ही सिद्धि प्रदान करे? तदुपरान्त वे वीरेश्वर को सन्तान-दाता जानकर, चन्द्रकूप के जल में स्नान कर, ईश्वर का ध्यान करने लगे। बारह मास के पश्चात् एक मास में केवल एक तरकारी खा कर, एक मास में तिल चबा कर, एक मास में केवल पंचगव्य से कालक्षेप करते रहे तथा एक मास में चन्द्रायन किया। इस प्रकार उन्होंने बारह मास व्यतीत किये। जब तेहरवें महीने स्नान कर, प्रातःकाल वे वीरेश्वर के निकट पहुँचे तो वीरेश्वर के बीच में से एक आठ वर्ष का अत्यन्त सुन्दर बालक प्रकट हुआ। उसका अति सुन्दर गौर शरीर था। वह श्वेत भस्म लगाये, सुन्दर केश, जो जटा के समान लगते थे, धारण किये हुए था। यह सब अंगों सहित अत्यन्त उत्तम वेद पाठ करता विश्वामित्र की ओर देखता हुआ खड़ा हो गया।

हे नारद ! विश्वामित्र ने उस बालक को देख कर दोनों हाथ जोड़

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:25 PM

कर स्तुति की। तब उस बालक ने कहा—"हे मुनि ! तुम अपनी इच्छानुसार कोई वर माँगो।" यह सुन विश्वामित्र बोले—"हे शिवजी ! आप से कौन-सी बात छिपी हुई है? मेरी केवल यही विनती है कि आप मेरी इच्छा पूर्ण करें।" विश्वामित्र के यह वचन सुनकर शिवजी बोले—"हे विश्वामित्र ! तुम्हारी इच्छा शीघ्र ही पूरी होगी।" यह कह कर वह बालक वहाँ से अन्तर्धान हो गया। तब विश्वामित्र ने प्रसन्नतापूर्वक घर में आकर अपनी स्त्री से सब वृत्तान्त कह सुनाया। उन्होंने अपनी स्त्री को शिवजी द्वारा दिये गये वरदान का भी वर्णन किया। इस समाचार को सुनकर संसारी मनुष्य विश्वामित्र के पास गये तथा उनकी स्तुति करने लगे। तदुपरान्त सभी ने चक्षुष्मती के भाग्य की सराहना की। फिर वे वहाँ से अपने-अपने स्थान को लौट गये।"

अट्ठाईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवजी के वरदान से चक्षुष्मती को गर्भ रहा। विश्वामित्र ने गर्भ की रक्षा, आरोग्य तथा पालन के लिए पाँचवें तथा आठवें मास में बहुत दान किया। दसवें मास में, शुभ लग्न में, उनको एक पुत्र उत्पन्न हुआ। तब दोनों ने मिलकर प्रसन्न हो, बड़ा उत्सव मनाया। आकाश से फूलों की वर्षा हुई, सारा मन्दिर सुगन्ध से भर गया। मैं स्वयं देवताओं सहित वहाँ गया। विष्णु जी भी लक्ष्मी सहित वहाँ पधारे। शिवजी भी गौरी को अपने साथ ले, गणों सहित वहाँ उपस्थित हुए। उस समय शिवजी के आदेश के अनुसार मैंने उस बालक के जात-कर्म किये। ऋषि-मुनि वेद-पाठ करने लगे। मैंने बहुत सोच कर उस बालक का नाम गृहपति रखा। इसके पश्चात् सब अपने-अपने स्थान को लौट गये। विश्वामित्र ने चौथे मास निष्क्रमण की रीति की तथा छठे मास अन्नप्राशन किया। बारहवें मास उसका चूड़ाकर्म हुआ। उसके बाद कान छेदे गये। पाँचवें वर्ष दीक्षा हुई। फिर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:25 PM

वह बालक वेद पढ़ने लगा। फिर विश्वामित्र ने उसे गुरु से मन्त्र दिलवाकर सब विद्याएँ सिखायीं।

हे नारद ! नौवें वर्ष तुम वहाँ गये। विश्वामित्र ने प्रसन्न हो कर तुम्हारी बड़ी सेवा की। तुमने बालक का हाथ देखा और बोले—"हे विश्वामित्र ! तुम्हारे पुत्र के सब अंग अत्यन्त शुभ हैं, किन्तु एक लक्षण बुरा है। इसका बारहवाँ वर्ष अनिष्ट है। तुमको उसकी रक्षा का कोई उपाय करना चाहिए। हे नारद ! तुम तो उनसे यह कह कर वहाँ से चले गये, परन्तु गृहपति के माता-पिता अति दुःखी हो कर रोने लगे। माता-पिता की यह दशा देख कर गृहपति बोले—"आप इतने दुःखी क्यों होते हैं? एक तो आपके प्रभाव से मुझे मारने की शक्ति काल में भी नहीं है। दूसरे शिवजी जब तक मेरे रक्षक हैं, तब तक कोई अनिष्ट नहीं हो सकता।" माता-पिता गृहपति के ऐसे अमृतमय वचन सुनकर आनन्दित हुए। वे कहने लगे—"हे पुत्र ! तुम जाकर शिवजी की सेवा करो। शिवजी की सेवा करके तथा उन्हें प्रसन्न करके बहुत-से मनुष्यों ने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है। शिवजी भक्तों का भय दूर करने वाले हैं। उनके समान अपने भक्तों को आनन्द प्रदान करने वाला और कोई नहीं है। इसलिए तुम शिवजी की शरण में जाओ।" गृहपति माता-पिता की यह आज्ञा सुन कर काशी जा पहुँचा। वहाँ उसने मणिकर्णिका में स्नान किया तथा विश्वनाथ जी की पूजा कर, अपने को धन्य समझा। फिर वह शिवजी के लिंग की स्थापना कर, तप में प्रवृत्त हुआ। वह गंगा से आठ सौ घड़े पानी लाकर शिवजी को स्नान कराता तथा नित्यप्रति एक सौ आठ श्वेत कमलों की माला शिवजी को पहनाता था। एक दिन इन्द्र ने कहा—"हे गृहपति ! हम इन्द्र हैं। हम तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। हम से इच्छानुसार कोई वर माँगो।" तब गृहपति ने मधुर वाणी में उत्तर दिया कि मुझे आपसे कुछ माँगने की इच्छा नहीं है। मैं तो शिवजी को वर देने वाला जानता हूँ। बालक के यह वचन सुनकर इन्द्ररूपी शिवजी ने हँस कर कहा—"हे बालक ! शिवजी हम से भिन्न नहीं हैं।" तब गृहपति ने उत्तर दिया कि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तुम यहाँ से दूर हट जाओ। तुम किस योग्य हो? मुझे शिवजी के अतिरिक्त किसी देवता से वर माँगने की कोई इच्छा नहीं है।

हे नारद ! इन्द्र ने ऐसे वचन सुनकर, अपना वज्र उठाकर गृहपति को बहुत डराया। गृहपति उस वज्र की ज्वाला को देखकर मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ा तथा उसने शिवजी का स्मरण किया। तब शिवजी तुरन्त अपने वास्तविक रूप में प्रकट हुए और उसे अपने हाथ से उठाकर बैठाया। वे बोले—"हे गृहपति ! तुम्हारा कल्याण हो।" गृहपति ने यह शब्द सुन, उठकर देखा कि शिवजी सम्मुख खड़े हुए हैं जिनके बाएँ भाग में श्रीभवानी संपूर्ण सृष्टि की जननी विराजमान हैं तथा शिवजी महागौरस्वरूप, सम्पूर्ण शरीर में भस्म लगाये हुए हैं तत्पश्चात् शिवजी बोले—"हे गृहपति ! तुम इन्द्र से बहुत डर गये थे, परन्तु अब किसी प्रकार का भय मत करो। हमने स्वयं इन्द्र का स्वरूप धारण कर यह चरित्र किया था। अब तुम किसी बात की चिन्ता मत करो। हम तुमको वर देते हैं कि तुम देवताओं में पवित्र हो कर तीनों लोकों में भ्रमण किया करोगे तथा सब की मानसी गति जान कर तीनों रूप में संसार के कार्य करोगे। तुमने जो हमारे लिंग की स्थापना की है, उसकी सेवा करने वालों को कभी कोई दुःख न होगा।" शिवजी ने यह कह कर गृहपति के माता-पिता को बुला कर, उन सब को दिक्पति कर दिया। इसके पश्चात् शिवजी वहाँ से अन्तर्धान हो गये और गृहपति द्वारा स्थापित लिंग में समा गये। गृहपति की पुरी का नाम चक्षुष्मती हुआ, जो बहुत ही तेज पूर्ण है। वहाँ के सब निवासी नित्य बलि-वैश्वदेव यज्ञ करते हैं। गृहपति अपने गणों सहित चक्षुष्मती नामक अपनी पुरी में निवास करते हैं तथा अपने माता-पिता एवं सम्पूर्ण परिवार सहित उसी देश में भ्रमण करते हैं। वहाँ सब को हर प्रकार के सुख प्राप्त हैं, किसी को कोई दुःख नहीं है। जो जीव अग्नि में प्रवेश करते हैं तथा जो अग्नि की पूजा आदि करते हैं, वे उसी देश में जा कर विहार करते हैं। जो लकड़ी आदि देकर किसी का शीत दूर करते हैं, वे सब उसी लोक में जा कर आनन्द प्राप्त करते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:25 PM 4G 87

12:25 PM

हे नारद ! गृहपति की सेवा सब को करनी चाहिए। शिवजी का यह अवतार बहुत ही शीघ्र वर देने वाला है। अग्नि शिवजी का तेज है, जो विश्वामित्र के पुत्र रूप में प्रकट हुई। इस अन्धकारपूर्ण संसार में अग्नि के अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु चमकने वाली तथा प्रकाशवान् नहीं है। इसके बिना तीनों लोकों का निर्वाह नहीं हो सकता। अग्नि पर ही तीनों लोकों का आनन्द निर्भर है। जो कोई गृहपति के इस चरित्र को पढ़ेगा या सुनेगा, वह दोनों लोकों में अत्यन्त आनन्द प्राप्त करेगा।''

उन्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं तुम को शिवजी के वृषेश्वर अवतार के विषय में बताता हूँ। एक बार देवता तथा दैत्यों ने मिल कर समुद्र मन्थन किया तथा विष्णु जी की युक्ति के अनुसार सब रत्न समुद्र से निकाल लिये। विष्णु जी ने लक्ष्मी, कौस्तुभमणि तथा शार्ङ्गी नामक धनुष लिये। सूर्य ने उच्चैःश्रवा घोड़ा प्राप्त किया। इन्द्र ने कल्पवृक्ष तथा ऐरावत हाथी लिया। दैत्यों ने मद्य लिया। शिवजी ने कालकूट-विष तथा चन्द्रमा प्राप्त किया। इसके पश्चात् जब धन्वन्तरि अपने हाथ में अमृत लिये निकले, तो वह अमृत दैत्यों ने छीन लिया। उस समय सब देवताओं ने विष्णु जी से पुकार की, तब विष्णु जी ने स्त्री का रूप धारण कर अपनी माया से देवताओं को यह अमृत पिला दिया। धन्वन्तरि वैद्य आरोग्य की रक्षा करने वाला तथा वैद्यक-विद्या में बहुत प्रवीण हुए। जो स्त्री-रत्न थीं, उन्हें दैत्यों ने उनकी लड़कियों सहित ले जाकर पाताल में रखा। तदुपरान्त उन्होंने देवताओं से भली-भाँति युद्ध किया। परन्तु देवताओं से परास्त हो कर, वे सब उनके भय से पाताल में जा कर रहने लगे। फिर विष्णु जी उनका पीछा करते हुए उनके लोक में जा पहुँचे तथा वहाँ उन स्त्रियों को देख कर मोहित हो गये और उन्हीं के साथ विहार करके, वहीं रह गये। इस प्रकार वहाँ पर विष्णु जी के बहुत-से पुत्र उत्पन्न हुए। बड़े हो कर वे बालक पाताल से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:25 PM

निकल कर सब देवताओं आदि को दुःख पहुँचाने लगे। जब देवताओं के कहने से मैंने सब देवताओं को साथ लेकर, शिवजी के पास जा कर स्तुति की और उनसे यह प्रार्थना की कि हे प्रभो ! विष्णु जी ने पाताल में जा कर अनेक स्त्रियों से विहार कर, बहुत-से लड़के उत्पन्न किये हैं। वे वहीं रह भी गये हैं तथा अपने लोक को लौट कर नहीं आते हैं और विष्णु जी के वे सब लड़के अत्यन्त बलशाली हो कर चारों ओर उपद्रव मचाते फिरते हैं।

हे नारद ! शिवजी ने देवताओं की ऐसा करुण-पुकार सुन कर, अपना स्वरूप बैल का बनाया और घोर नाद किया। फिर वे तुरन्त ही वहाँ जा पहुँचे जहाँ विष्णु जी निवास कर रहे थे। वहाँ पहुँच कर उन्होंने ऐसा महाघोर शब्द किया कि उसे सुनकर वह पूरा नगर काँप उठा। यह देखकर विष्णु जी ने अत्यन्त क्रोधित हो कर अपने लड़कों को शिवजी से युद्ध करने की आज्ञा दी। अपने पिता की आज्ञा पा कर जब वे लड़के शिवजी के अवतार के सम्मुख आये, तो वृषेश्वर अवतार ने अपने तीक्ष्ण सींगों द्वारा उन सब को मार डाला। तब विष्णु जी ने अपने लड़कों की मृत्यु का समाचार सुनकर अत्यन्त क्रोधित हो, वृषेश्वर का सामना किया तथा उनके ऊपर उत्तमोत्तम शस्त्र चलाये। तब वृषेश्वर ने कुपित हो, भयानक शब्द कर, अपने नख तथा सींगों द्वारा विष्णु जी को भी विकल कर दिया। तब विष्णु जी ने अहंकार त्याग, वृष रूप शिवजी को पहचान, करुण स्वर में उनकी स्तुति करते हुए कहा—"हे शिवजी ! आप मेरा अपराध क्षमा करें।" शिवजी विष्णु के ऐसे वचन सुनकर बोले—"हे विष्णु ! अब तुम शीघ्र ही इन स्त्रियों को छोड़ कर अपने लोक को चले जाओ और भविष्य में फिर कभी ऐसा मत करना। यह सुनकर विष्णु जी ने अत्यन्त लज्जित हो कर कहा—"हे प्रभो ! हमारा चक्र तो यहाँ पर रखा हुआ है।" शिवजी ने उत्तर दिया। "इस चक्र को यहीं रखा रहने दो। हम तुम्हें ऐसा ही एक दूसरा चक्र देंगे।" अस्तु, शिवजी ने उसी समय एक चक्र बना कर विष्णु जी को दिया और कहा कि तुम इसी समय यहाँ से चले जाओ। तब विष्णु

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:25 PM

जी ने शिवजी की आज्ञा पा कर, देवताओं के पास अलग जा कर कहा—"हे देवताओ ! यहाँ जो स्त्रियाँ अमृत से उत्पन्न स्थित हैं, वे सब प्रकार से आनन्द प्रदान करने वाली हैं। जो इनसे भोग करता है, वही इनका स्वामी है। यह सुन कर देवताओं ने उन स्त्रियों के पास जाने की इच्छा की। परन्तु शिवजी ने उनकी वह इच्छा समझ कर तुरन्त ही शाप दिया कि जो कोई उस स्थान पर, शान्त मुनीश्वरों तथा मद्यप दैत्यों के अतिरिक्त आवेगा, वह तुरन्त मर जायेगा। शिवजी के ऐसे वचन सुनकर सब देवता भयभीत हो, अपने-अपने घरों को चले गये। फिर शिवजी, विष्णु जी तथा अन्य सब देवता भी अपने लोकों को गये। हे नारद ! जो इस चरित्र को सुनेगा अथवा पाठ करेगा, वह सदैव आनन्द प्राप्त करेगा।"

तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! अब मैं तुम्हें पिप्पलाद अवतार के विषय में बताता हूँ। एक बार तीनों लोकों में प्रसिद्ध मुनि दधीचि ने, जिन्होंने इन्द्र को युद्ध में परास्त किया था, विष्णु जी तथा अन्य सब देवताओं को शाप दिया तथा उनकी स्त्री सुवर्चा ने भी सब देवताओं को शापित करने में कोई संकोच नहीं किया। उन्हीं के पिप्पलाद नामक एक बालक उत्पन्न हुआ, जिसे शिवजी का अवतार कहते हैं।" इतनी कथा सुन कर नारद जी बोले—"हे पिता ! आप सब से पहले मुझे देवताओं को सुवर्चा द्वारा शापित करने का वृत्तान्त सुनाइये। इसके पश्चात् पिप्पलाद के अवतार का वर्णन कीजिये।" ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! जिस समय इन्द्र वृत्रासुर से परास्त हो कर देवताओं सहित हमारी शरण में आये, उस समय हमने देवताओं से यह कहा कि तुम सब लोग दधीचि के पास जा कर, उनसे उनकी अस्थि माँगो तथा उन हड्डियों द्वारा एक वज्र बना कर उसी वज्र से वृत्रासुर का वध करो, तुम्हारी सहायता शिवजी करेंगे। देवताओं ने यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:25 PM 87

सुन कर दधीचि के पास जा कर हड्डियाँ माँगी। दधीचि ने तुरन्त ही अपनी हड्डियाँ दे दीं तथा स्वयं शिवलोक को पधारे। तब देवताओं ने उन्हीं हड्डियों से विश्वकर्मा के द्वारा वज्र बनवाया तथा इन्द्र ने उसी वज्र से वृत्रासुर का वध किया। वृत्रासुर के वध से सब लोग प्रसन्न हुए। जब यह हाल दधीचि की स्त्री सुवर्चा को ज्ञात हुआ तो उसने अत्यन्त चिन्तित हो, अपने पातिव्रत धर्म का तेज दिखलाया और देवताओं को पुत्रहीन होने का शाप दिया। तदुपरान्त जब सुवर्चा ने सती होने की इच्छा की, उसी समय आकाशवाणी ने उन्हें रोक दिया। तब आकाशवाणी की आज्ञानुसार सुवर्चा ने पीपल की जड़ में बैठ कर अपने को स्थिर किया। इतने में ही उसी वृक्ष के नीचे एक बालक उत्पन्न हुआ। वह बालक शिवजी का अवतार था। उस बालक के चारों ओर कान्ति फैली हुई थी। उस बालक को देख कर सुवर्चा अपने सब दुःखों को भूल गयी। फिर वह उस बालक को शिवजी का अवतार समझ, स्तुति करती हुई बोली—"हे प्रभो ! आप मेरे शोक को दूर करें। आप पीपल के वृक्ष के नीचे निवास करें तथा सदैव प्रसन्न रहें। अब आप मुझे यह आज्ञा दें कि मैं भी अपने पति के पास उनके लोक को चली जाऊँ और वहीं पति के साथ रह कर, आपका ध्यान किया करूँ।"

हे नारद ! यह कह कर सुवर्चा प्रसन्नतापूर्वक सती हो गयी तथा शिवलोक में पहुँच कर दधीचि सहित सदा शिवजी की सेवा में तत्पर रही। शिवजी पीपल के वृक्ष के नीचे उत्पन्न हुए थे, इसलिए मैंने उनका पिप्पलाद नाम रख दिया। तब सब मिल कर पिप्पलाद की स्तुति करने लगे। फिर हम सब पिप्पलाद की आज्ञा पा कर अपने-अपने लोक को चले गये। पिप्पलाद उसी पीपल की जड़ में बैठ कर तपस्या करते रहे। एक दिन पिप्पलाद मुनि पुष्पभद्रा नदी के तट पर जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने एक स्त्री को देखा। तब उन्होंने यह इच्छा की कि हम इसके साथ अपना विवाह कर गृहस्थाश्रम ग्रहण करें। इसी इच्छा से उस स्त्री के माता-पिता के घर संसारी रीति से गये। वह लड़की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:25 PM

राजा अनरण्य की पुत्री थी। अनरण्य ने पिप्पलाद का बड़ा सम्मान किया। जब पिप्पलाद ने उनसे उस कन्या को माँगा, तब राजा अनरण्य पिप्पलाद को दुर्बल देखकर चुप हो रहे, उसने कोई उत्तर नहीं दिया। यह देखकर पिप्पलाद ने राजा से कहा—"हे राजन् ! यदि तुम अपनी कन्या मुझे नहीं देते, तो मैं तुम्हें भस्म किये देता हूँ।" तब राजा ने पिप्पलाद का ऐसा तेज देखा तब उसने रोते-पीटते हुए अपनी लड़की का विवाह पिप्पलाद के साथ कर दिया। पिप्पलाद वहाँ से स्त्री को साथ ले अपने स्थान को लौट आये। अनरण्य की पुत्री ने पतिव्रत धर्म का पूरी तरह पालन किया। शिवजी के अंश से पिप्पलाद तथा गिरजा के अंश से पद्मा अर्थात् राजा अनरण्य की पुत्री उत्पन्न हुई। एक दिन पिप्पलाद की स्त्री ने अपने को भली-भाँति शृंगारित किया तथा पिप्पलाद से आज्ञा लेने के पश्चात् गंगा स्नान के लिए चली। धर्मराज ने मार्ग में राजा का स्वरूप रख उसकी परीक्षा लेनी चाहिए। वे पद्मा से बोले—"हे सुन्दरी ! तुम्हारा पति जो वृद्ध, कुरूप एवं अशोभनीय है, तुम उसका त्याग कर हमारे पास आ कर विहार करो। मुनि की स्त्री हो कर भला क्या आनन्द पाओगी।" यह कह कर उन्होंने पद्मा का हाथ पकड़ना चाहा; परन्तु उसी समय पद्मा ने अत्यन्त क्रोधित हो कर यह कहा—"रे दुष्ट ! दूर हो, मुझे स्पर्श करने की धृष्टता मत करना। तूने मुझे कुदृष्टि से देखा है, इसलिए तेरा तेज नष्ट हो जाएगा।"

हे नारद ! पद्मा द्वारा यह शाप सुन कर धर्मराज का तेज उसी समय मलिन हो गया। तब वे राजा का शरीर त्याग, असली रूप रख कर, विनय करके बोले—"हे माता ! मैं धर्मराज हूँ, मैंने यह कृत्य आपकी परीक्षा लेने के लिए किया था। अब आप मुझ पर कृपा करें, क्योंकि आप जगत माता हैं।" उस समय पद्मा ने धर्मराज को पहचान कर कहा—"हे धर्मराज ! सत्ययुग में तुम पूर्ण रूप से रहोगे, तुमको किसी प्रकार का कष्ट न होगा, परन्तु त्रेता में तुम्हारा एक पैर, द्वापर में दो पैर तथा कलियुग में तीसरा पाँव कट जाएगा, क्योंकि मेरा वचन वृथा नहीं होता।" धर्मराज ने पद्मा का यह शाप सुन, प्रसन्न हो कर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:25 PM

कहा—"हे माता ! आपने मुझको नरकगामी होने से बचा लिया। अब मैं प्रसन्न हो कर आपको वर देता हूँ कि आपके पति युवा हो कर अत्यन्त सुन्दर हो जाएं। वे अत्यन्त कला-कुशल, विद्वान तथा बड़े अद्भुत चरित्र करने वाले होंगे। आपके दस पुत्र अत्यन्त बुद्धिमान् उत्पन्न होंगे।" धर्मराज यह कह कर वहाँ से अपने लोक को चले गये। पद्मा भी अपने स्थान को लौट आयी। इस प्रकार पिप्पलाद अवतार ने अनेक मनुष्यों को संसार-सागर से डूबते हुए बचाया तथा जब संसारी मनुष्यों को शनिश्चर की दशा तथा दृष्टि से दुःखी देखा तो उन्हें यह वर दिया कि आज से शिवजी के भक्तों को तथा जन्म से सोलह वर्ष तक के बालकों को शनिश्चर दुःखी नहीं कर सकेगा। शनिश्चर का अशुभ फल पिप्पलाद के नाम से स्मरण मात्र से ही नष्ट हो जाता है। पिप्पलाद तथा कौशिक मुनि के स्मरण से शनिश्चर का अशुभ फल नहीं होता। हे नारद ! पिप्पलाद संसार भर का आनन्द प्रदान करने वाले हैं तथा पद्मा भी गिरिजा का अवतार हैं। उनके स्मरण से सन्तान-वृद्धि होती है। पिप्पलाद का यह आख्यान अत्यन्त पवित्र है। इसके पढ़ने वाले तथा सुनने वाले को दोनों लोकों में सब कुछ मिलता है।"

इकतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! एक दिन शिवजी तथा गिरिजा दोनों संसारी जीवों के समान विहार करने की सम्मति कर, भैरव को द्वार पर बिठा, स्वयं अन्तःपुर में गये। एक दिन गिरिजा मतवाली के समान घर से बाहर निकलीं, तब भैरव ने गिरिजा को कुदृष्टि से देखा और बाहर जाने से रोक दिया। यह देख कर गिरिजा ने अत्यन्त क्रोधित हो कर शिवजी की इच्छानुसार भैरव को यह शाप दिया—"हे भैरव ! तू मेरा पुत्र हो कर मुझे कुदृष्टि से देखता है तथा माता-पुत्र का भाव छोड़, मनुष्य के समान कुमार्गी होना चाहता है, इसलिए तू मृत्युलोक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:25 PM

में जा कर मनुष्य का शरीर धारण करेगा तभी तू ऐसे पाप से छूटेगा।" यह सुनकर भैरव अत्यन्त दुःखी हुए। फिर उन्होंने भी अपनी लीला प्रदर्शित करने के लिए गिरिजा को यह शाप दिया कि जो दशा हमारी हो, वही दशा तुम्हारी भी होगी। शिवजी दोनों की बातें सुनकर बाहर निकल आये और हँसते हुए दोनों को समझाया। उस समय भैरव ने शिवजी से विनय की—"हे पिता ! पृथ्वी पर भी मैं आपका पुत्र हो कर उत्पन्न होऊँ।" इसीलिए शिवजी के साथ उनके सब पुत्रों को भी अवतार लेना पड़ा।"

बत्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! मैं तुम्हें अवधूतपति अवतार की कथा सुनाता हूँ। एक दिन इन्द्र ने सदाशिव के दर्शनों की इच्छा से सब देवताओं को एकत्र किया तथा यह विचार किया कि हम सब देशों के राजा-महाराजा हैं। अस्तु, हम को बहुत-सी सामग्री सहित शिवजी से भेंट करनी चाहिए। इस प्रकार निश्चय कर उन्होंने अनेक प्रकार की सामग्री एकत्र की। उस समय ग्यारहों रुद्र, बारहों सूर्य, आठों बसु, तेहर विश्वेदेव, समस्त मरुद्गण, सब दिक्पति, देवता तथा मुनीश्वर भली प्रकार सज कर, बड़ी धूमधाम से एकत्र हो कर, बृहस्पति को साथ लेकर शिवजी से मिलने के लिए चले। सभी प्रेम में मग्न थे। कोई गाता, कोई बजाता तथा कोई हँसता हुआ चला आ रहा था। जब वे सब कैलाश पर्वत के निकट पहुँचे, तो शिवजी ने इन्द्र का ऐसा गर्व देखकर लीला के निमित्त अपना भयंकर रूप धारण किया। इन्द्र ने उन अवधूत को देखकर प्रणाम किया और पूछा—"हे परमहंस ! आप कौन हैं तथा कहाँ से आये हैं? प्रतीत होता है कि आप इसी समय शिवजी के पास से आ रहे हैं। कृपा करके आप हमें बताइये कि शिवजी इस समय कहाँ हैं तथा क्या कर रहे हैं? वे कहीं चले तो नहीं गये?" अवधूत ने इन्द्र के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। तब इन्द्र ने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:26 PM 87

पुनः उनसे पूछा कि कृपा करके आप यह बतला दीजिए कि शिवजी कहाँ हैं? इसी प्रकार इन्द्र ने अवधूत से कई बार शिवजी के विषय में पूछा, परन्तु अवधूत ने इन्द्र को कोई उत्तर न दिया। तब इन्द्र ने क्रोधित हो कर अपना वज्र उठाते हुए कहा—"रे दुष्ट अवधूत ! तू हम को कोई उत्तर नहीं देता। मैं तुझ को अभी अपने वज्र से मार देता हूँ। देखूँगा तेरा कौन रक्षक है?" यह कह कर इन्द्र ने अवधूत पर वज्र चलाया। वह वज्र उनके कण्ठ में लगा जिससे श्याम रंग का चिह्न पड़ गया, परन्तु वज्र भी उसी समय जल कर भस्म हो गया। यह देख कर देवताओं की सेना में हाहाकार मच गया। तदुपरान्त शिवजी में क्रोध की ज्वाला इतनी बढ़ी कि सब देवता उस ज्वाला से जलने लगे। इन्द्र ऐसी लीला देखकर काँप उठे। उन्होंने तुरन्त ही अपने गुरु का स्मरण किया। जब बृहस्पति ने शिवजी का ध्यान किया तथा शिवजी को पहचाना तब उनकी स्तुति करके इन्द्र से यह कहा—"हे इन्द्र ! यह अवधूत नहीं, अपितु स्वयं सदाशिवजी हैं।" इतना कह कर बृहस्पति ने शिवजी का अत्यन्त आदर किया तथा कहा कि ये सब के स्वामी हैं। तब इन्द्र आदि सब देवताओं ने भी प्रेम के साथ शिवजी की स्तुति की। शिवजी यह स्तुति सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और बोले—"हे इन्द्र तथा अन्य देवताओ ! हम तुम्हारी यह स्तुति सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। अब तुम हमसे अपनी इच्छानुसार वर माँगो।" यह सुनकर बृहस्पति अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा उन्होंने शिवजी से यह वर माँगा कि हे शिवजी ! इन्द्र आपका सेवक है, आप इसकी रक्षा कीजिए।

हे नारद ! बृहस्पति के ऐसे वचन सुनकर शिवजी ने कहा—"बृहस्पति हम कृपा करके इस ज्वाला को यहाँ से इतनी दूर फेंक देंगे कि इसका प्रभाव इन्द्र पर कुछ न होगा। तुमने आज इन्द्र को जीवनदान दिया है, इससे तुम्हारा नाम जीवन होगा।" शिवजी ने यह कह कर; उस क्रोधाग्नि को गंगा में फेंक दिया, जिससे जालन्धर दैत्य उत्पन्न हुआ। हे नारद ! अवधूत शिवजी यह चरित्र कर, वहाँ से अन्तर्धान हो गये। उस समय देवताओं को बहुत आनन्द प्राप्त हुआ। फिर सब लोग

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:26 PM

प्रसन्न हो कर अपने-अपने स्थान को लौट गये। जो मनुष्य इस अवधूतेश्वर अवतार के चरित्र का पाठ करेगा या सुनेगा, वह दोनों लोकों में अत्यन्त आनन्द प्राप्त करेगा।"

तैंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! तुम्हें हनुमान नाम के शिवजी के अवतार की कथा सुनाता हूँ। उन्होंने वानर जाति में शरीर धारण कर, रामचन्द्र जी से बड़ा स्नेह किया। कपिदेव महावीर हनुमान जी शिवजी के ही अवतार हैं। एक बार शिवजी ने जब मोहिनी रूप को देखा तो केवल रामचन्द्र जी के कार्य के लिए यह लीला की कि वे मोहित हो कर उस मोहिनी रूप से लिपट गए। उस समय शिवजी का वीर्य पृथ्वी पर गिर पड़ा। उस वीर्य को नग नामक मुनि ने शिवजी के संकेत से इस इच्छा से रख लिया कि उसके द्वारा रामचन्द्र जी का कार्य सिद्ध होगा। तदुपरान्त अञ्जनी के गर्भ से हनुमान जी उत्पन्न हुए। उनके इस प्रकार कपि-अवतार लेने का कारण यह था कि चार मास तक रामचन्द्र जी ने वन में शिवजी का बड़ा तप किया था, तब शिवजी ने उनकी परीक्षा लेने के पश्चात्, अपने गणों सहित अवतार लिया। सब देवताओं ने भी शिवजी की आज्ञा पा कर बन्दर तथा रीछ का शरीर धारण किया। जब रामचन्द्र जी ने रावण को अत्यन्त बलशाली समझ कर शिवजी की बड़ी स्तुति की, तब शिवजी ने प्रसन्न हो कर अञ्जनी के गर्भ से अवतार लिया था। उन्होंने सूर्य को ही निगल लिया। इसे देख कर ही देवताओं ने यह अनुभव किया कि वे शिवजी के ही अवतार हैं। उन्होंने रामचन्द्र जी का सन्देश उनकी पत्नी सीता के पास लंका में पहुँचाया, रावण की अशोक-वाटिका को उजाड़ा, लंका को जला कर भस्म किया तथा समुद्र में सेतु बाँधा। जिस समय लक्ष्मण शक्ति के प्रहार से मूर्छित हुए तथा उनकी दशा देख कर रामचन्द्र जी को अत्यन्त दुःख हुआ। हनुमान ने औषधि ला कर लक्ष्मण को जीवित किया तथा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

रामचन्द्र जी का दुःख दूर किया। तब उन्होंने भक्ति भाव की रीति को अपना कर, भक्ति को संसार में प्रसिद्ध किया। इसलिए वे रामदूत के नाम से प्रसिद्ध हुए।

हे नारद ! शिवजी ने रामचन्द्र के कार्य पूर्ण करने के लिए ही हनुमान का अवतार लिया था। उन्होंने रावण की भुजा उखाड़ कर राम तथा लक्ष्मण को बहुत हर्षित किया। उनकी उपासना से असंख्य पापियों ने मुक्ति प्राप्त की है। यही दशा विष्णु जी की भी है। उन्होंने कृष्ण रूप धारण कर अर्जुन नामक पाण्डव का सारथी बन कर रथ हाँका। इतनी कथा सुना कर ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! सनकादिक हमारे चार पुत्र परम शैव हैं। वे तीनों लोकों में सदाशिव जी की मूर्ति हृदय में धारण कर, भ्रमण करते रहते हैं। एक दिन वे विष्णु लोक में पहुँचे तथा वैकुण्ठ को देखकर उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक यह इच्छा की कि हम विष्णु जी के दर्शन करें। ऐसा विचार कर वे छः ड्योढ़ियाँ पार कर, भीतर चले गये; परन्तु सातवीं ड्योढ़ी पर जय एवं विजय नाम के विष्णु जी के गणों ने उन्हें रोक दिया और किसी भी प्रकार भीतर नहीं जाने दिया। तब सनकादिक ने क्रोधित हो कर शिवजी की प्रेरणा से उन गणों को यह शाप दिया कि तुम दोनों अब यहाँ न रहोगे। तुमने हम को विष्णु जी के मन्दिर में जाने से रोका है। तुम्हारा यह कर्म राक्षसों के समान है, इसलिए तुम दोनों राक्षस होओगे। इतने में विष्णु जी भी भीतर से निकल आये। उन्होंने सनकादिक की बड़ी स्तुति की। तदुपरान्त वे विष्णु जी को प्रसन्न कर, आज्ञा पा कर हमारे लोक को चले आये। सनकादिक के शाप से वे दोनों गण दिति के पुत्र हो कर, कनककशिपु तथा कनकाक्ष के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे ऐसे बलशाली थे कि उन्होंने तुरन्त ही तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर ली। तब देवताओं की इच्छानुसार विष्णु जी ने वाराहरूप धारण कर कनकाक्ष को मारा तथा नृसिंह अवतार लेकर कनककशिपु का उदर चीर डाला। उन दोनों गणों को तीन जन्म तक राक्षस होने का शाप था, इसलिए फिर उन्होंने कुम्भकर्ण तथा रावण का जन्म लेकर शिवजी की बड़ी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:26 PM

भक्ति की। इसके पश्चात् उसने तुम्हारे उपदेश से मोहित हो कर, कैलाश को जड़ से उखाड़ लिया। यह देखकर शिवजी ने रावण को शाप देते हुए यह कहा कि हमारे समान ही कोई मनुष्य उत्पन्न हो कर तेरे अहंकार को दूर करेगा।

हे नारद ! शिवजी के शाप के कारण ही दोनों राक्षसों ने कुमार्ग पकड़ा तथा संसार में अनेक उपद्रव किये। तब देवता आदि दुःखी हो कर विष्णु जी के पास गये और रावण का सब वृत्तान्त उनसे कहा। तब विष्णु जी बोले—"हे देवताओ ! रावण शिवजी का परमभक्त है, उस पर कोई विजय प्राप्त नहीं कर सकता, परन्तु हम शिवजी की आज्ञा लेकर मनुष्य का शरीर धारण करेंगे और शिवजी की उपासना कर उन्हीं से बाण प्राप्त करके रावण का वध करेंगे।" यह कह कर देवताओं को विदा किया तथा स्वयं मनुष्य रूप धारण करने की इच्छा की। इस प्रकार उन्होंने अयोध्यापति दशरथ के यहाँ अवतार लिया। रामचन्द्र जी का विवाह जनक की पुत्री सीता के साथ हुआ था। फिर रामचन्द्र जी राजा दशरथ की आज्ञा से राज्य त्याग कर, देवताओं के कार्य के लिए वन में गए। वहाँ से सीता को रावण हर ले गया जिससे रामचन्द्र जी को बहुत दुःख हुआ। तब रामचन्द्र जी ने अगस्त्यमुनि से उपदेश ग्रहण कर, शिवजी की आराधना की। शिवजी ने प्रसन्न हो कर, रावण के वध की आज्ञा दी तथा रामचन्द्र जी को अपना धनुष-बाण दिया। उस धनुष बाण द्वारा रामचन्द्र जी ने रावण का वध करके सीता को पुनः प्राप्त किया।"

चौंतीसवाँ अध्याय

नारद जी ने कहा—"हे पिता ! रामचन्द्र जी के चरित्र का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।" ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! विष्णु जी ने देवताओं के कार्य के लिए पूर्णांश से यह अवतार धारण किया था। उन्होंने अनेक बाल-चरित्र किये, जिन्हें देखकर उनके माता-पिता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अत्यन्त आनन्दित हुए। उन्होंने फिर विश्वामित्र के साथ जा कर, उनके यज्ञ की रक्षा की तथा सुबाहु को सेना सहित मारा डाला। उन्होंने विश्वामित्र के साथ जनकपुर में जा कर राजा जनक की इच्छानुसार स्वयं तथा अपने तीनों भाइयों का विवाह किया। इसके पश्चात् जब राजा दशरथ अपने तथा पुत्र-वधु सहित अयोध्या को लौटे, उस समय के आनन्द का वर्णन नहीं किया जा सकता। निदान, देवताओं ने अपने कार्य की सिद्धि के लिए अनेक उपाय करके भरत की माता कैकेयी को रामचन्द्र जी के विरुद्ध भड़का दिया जिसके परिणाम स्वरूप कैकेयी ने रामचन्द्र जी को दशरथ से कह कर वनवास दिलवाया। आयोध्या से वन को जाते समय रामचन्द्र जी सर्वप्रथम चित्रकूट गये और वहाँ उन्होंने मत्तगयन्द शिवजी की पूजा की। उस मूर्ति को मैंने ही वहाँ स्थापित किया था। वही शिवजी चित्रकूट के रक्षक हैं। जो मनुष्य चित्रकूट में जा कर उनकी पूजा न करे, उसको वहाँ जाने का कोई फल नहीं मिलता। भरत अयोध्या वासियों सहित रामचन्द्र जी के पास पहुँचे। उन्होंने हाथ जोड़ कर बड़ी भक्ति के साथ रामचन्द्र जी से लौटने की विनती की, परन्तु रामचन्द्र जी ने उनकी बात न मान कर तथा अपनी पादुका देकर, उन्हें विदा कर दिया। कुछ दिनों के पश्चात् वहाँ से वे दण्डक वन को गये, जहाँ ऋषि-मुनि निवास करते हैं। मार्ग में उन्होंने विराध को, जो सीता को उठा कर उड़ा था, मार डाला। फिर वे कुम्भज मुनि के पास पहुँचे। वहाँ अगस्त्य मुनि से उपदेश पा कर सीता तथा लक्ष्मण सहित पंचवटी को गये। शूर्पणखा ने आ कर उनसे विवाह की इच्छा प्रकट की। जब रामचन्द्र जी और लक्ष्मण ने उसकी इच्छा पूरी न की, तब वह यह कह कर कि अब तुम अपने किये का फल पाओगे, सीता को डराने लगी। तब लक्ष्मण ने क्रोधित हो कर, उसके नाक-कान काट लिये। हे नारद ! शूर्पणखा वहाँ से रोती अपने भाई दूषण के पास गयी तथा उसे सब वृत्तान्त कह सुनाया। अपनी बहिन की यह दशा देखकर खर तथा दूषण, शूर्पणखा को आगे कर, रामचन्द्र जी से उसके अपमान का बदला लेने के लिये, युद्ध करने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:26 PM

गये। उस समय रामचन्द्र जी ने सीता जी को लक्ष्मण की सुरक्षा में रख कर अकेले ही शूर्पणखा के अतिरिक्त समस्त राक्षसों को मार डाला। शूर्पणखा यह दशा देखकर वहाँ से रोती हुई रावण के पास पहुँची और आदि से अन्त तक सब वृत्तान्त कह सुनाया। रावण ने शूर्पणखा के मुख से रामचन्द्र जी की वीरता का समाचार सुन, क्रोधित हो कर मारीच को सीता के हरण के लिए कहा। रावण का मामा मारीच, विचित्र मृग का स्वरूप धारण कर, सीता के सामने पहुँचा। उस समय रामचन्द्र सीता के हठ तथा मृग के छल में आ कर, मृग का वध करने के लिए, उसके पीछे-पीछे चल दिये। जब बहुत देर होने पर भी लक्ष्मण ने रामचन्द्र जी को लौटते न देखा तो वे सीता को वहीं अकेली छोड़ रामचन्द्र जी की खोज में चले। इस प्रकार रामचन्द्र जी और लक्ष्मण के चले जाने के पश्चात् रावण ने अवसर देखकर, सीता को उठा लिया और लंका को भागा। मार्ग में सीता को रोते देख जटायु ने रावण से युद्ध किया, परन्तु रावण ने जटायु के पंख काट डाले। इधर जब रामचन्द्र जी तथा लक्ष्मण लौटे, तो वहाँ सीता को न पा कर मूर्च्छित हो, पृथ्वी पर गिर पड़े तथा रोते हुए पूरे वन में सीता को ढूंढ़ने लगे। आगे चल कर उन्हें जटायु से सब हाल मालूम हुआ। जटायु ने रामचन्द्र जी को सब हाल बता कर, अपना शरीर त्याग दिया। तब रामचन्द्र जी ने स्वयं अपने हाथ से जटायु का दाह-संस्कार किया।''

पैंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! तत्पश्चात् राम-लक्ष्मण ने अगस्त्य मुनि को देख कर दोनों हाथ जोड़, सिर नवा कर प्रणाम किया। उस समय मुनि ने राम-लक्ष्मण को अत्यन्त दुःखी देखकर इस प्रकार कहा—''हे राम ! तुम स्त्री के लिए इतना दुःख क्यों करते हो? स्त्री किसी की नहीं होती। केवल जीव ही सब इन्द्रियों से परे है। उसका कोई आकार भी नहीं है, तो भी वह सब में विद्यमान है। बात को न

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

समझकर, बुद्धि के विरुद्ध सब कार्य कर रहे हो। केवल यही सोच कर संतोष करो कि यह शरीर नाशवान् है, आत्मा कभी नहीं मरता। ब्रह्म एक ही है, दो नहीं, फिर कौन स्त्री तथा कौन पुरुष है? इसलिए हे रामचन्द्र ! तुम सीता के वियोग का दुःख दूर करो। व्यर्थ ही मोह के वश में पड़ने से कोई लाभ न होगा। अस्तु, तुम शिवजी का स्मरण कर, अपने दुःख को दूर करो।''

हे नारद ! अगस्त्यमुनि के ऐसे वचन सुनकर रामचन्द्र जी बोले—''हे मुनीश्वर ! आपने अभी यह कहा है कि आत्मा शरीर से भिन्न है तथा शरीर जड़ है, उसको कोई दुःख नहीं हो सकता तब आप मुझे यह बता दीजिए कि दुःख किसको होता है? मुझे इस समय सीता के वियोग का दाह है, वही मेरे शरीर को जला रहा है। जो बात शरीर में हम प्रतिदिन देखते हैं, उसके लिए आप क्या कहते हैं? मैं आप से पूछता हूँ कि दुःख-सुख को भोगने वाला कोई है भी या नहीं?'' यह सुन कर अगस्त्य जी बोले—''हे रामचन्द्र ! शिवजी की माया अपार है। उसका नाम प्रकृति है। उसी से सम्पूर्ण संसार की उत्पत्ति हुई है। उस प्रकृति का स्वामी शिवजी को ही समझो। पुरानी वासना ही संसार का क्षेत्रज्ञ है। चार प्रकार का अन्तःकरण उससे प्रकाशित होता है। जीव अपने कर्मों का फल प्राप्त करता है तथा उन्हें भोगता है। सब दुःख-सुख अपने कर्मानुसार ही होते हैं। माया के बन्धन से दुःख-सुख हैं। जो माया से भिन्न है, वही संसार पर प्रबल है।'' यह सुनकर रामचन्द्र जी ने कहा—''हे मुनीश्वर ! आपने जो कुछ कहा, वह सब उचित है; फिर भी हमारा दुःख किसी भी प्रकार दूर नहीं होता। जिस प्रकार मद्य बड़े-बड़े बुद्धिमानों को मस्त कर देता है, उसी प्रकार भाग्य के भोग भी अत्यन्त दुःखदायी हैं। सब लोग उसी भाग्य के वश में हैं। उस पर किसी का वश नहीं चलता। सब दुःख-सुख भी उसी से होते हैं। हमने भाग्य को सर्वोपरि शिवजी के समान समझ लिया है, वही मुझे इस समय दुःख दे रहा है। अब मेरी इच्छा है कि जिसने मेरी स्त्री का हरण किया है, मैं उसका वध कर डालूँ। मैं सूर्यवंशी राजा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:26 PM

दशरथ का पुत्र हूँ। यदि शीघ्र ही उसका वध न करूँ तो मेरा जीवन निष्फल है। अस्तु, जब तक मैं सीताहरणकर्त्ता का वध नहीं करूँगा, तब तक यह अग्नि शान्त नहीं होगी।''

रामचन्द्र जी के इन अहंकारपूर्ण वचनों को सुनकर अगस्त्य मुनि ने यह जान लिया कि उनका उपदेश निष्फल गया है। तब उन्होंने अपने मन में कुछ क्रोध करके फिर इस प्रकार कहा—''हे राम ! तुम जो शब्द कह रहे हो, सो तुम्हारा कोई दोष नहीं है। यह शिवजी की माया के कारण ही है, क्योंकि सब देवता, मुनि आदि उसी माया में भटक कर सुख-दुःख प्राप्त करते हैं। तुम अपनी स्त्री को प्राप्त करने के हेतु रावण का वध करना चाहते हो, परन्तु रावण अत्यन्त बलवान् तथा शक्तिशाली दैत्यों का स्वामी है। भला, तुम उसकी लंका में पहुँच कर अपनी सीता को किस प्रकार प्राप्त कर सकोगे? शिवजी की कृपा से वह सम्पूर्ण संसार का राजा बना हुआ है। तुम अपनी और अपने शत्रु की शक्ति की तुलना नहीं करते हो। रावण का दुर्ग स्वर्ण से बना हुआ है। कोई भी देवता और दैत्य उसे नहीं जीत सकता। जिस रावण के पास करोड़ों चतुरंगिनी सेनाएँ विद्यमान हैं, तुम उसे जीतना चाहते हो।'' इतना कह कर अगस्त्य मुनि चुप रह गये।''

छत्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अगस्त्य जी के मुख से ऐसे वचन सुन रामचन्द्र जी अपने नेत्रों में आँसू भर कर, उनके चरणों पर गिर पड़े तथा ठंडी श्वासें लेते हुए विलाप करने लगे। तदुपरान्त उन्होंने हाथ जोड़ कर मुनि से इस प्रकार कहा—''हे मुने ! इस समय मैं दुःख-सागर में डूब रहा हूँ। उपदेश, ज्ञान तथा बुद्धि का इस समय मेरे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। अस्तु, आप सर्वप्रथम मुझे यह उपाय बताइये, जिसके द्वारा मैं सीता को प्राप्त कर सकूँ। तदुपरान्त आप मुझे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जो भी शिक्षा देंगे, मैं उसे स्वीकार करूँगा। हे नाथ ! आप मुझे अपना सेवक जान कर क्रोध न करें।''

हे नारद ! रामचन्द्र जी के ऐसे वचन सुनकर अगस्त्य मुनि ने शिवजी की माया को धन्य कहते हुए तथा भगवान् सदाशिव की स्तुति करते हुए यह उत्तर दिया—''हे रामचन्द्र जी ! यदि तुम अपनी मनोकामना पूर्ण करना चाहते हो, तो शिवजी की शरण में जाओ और उनकी प्रसन्नता के निमित्त कठिन तप करो। तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हो कर शिवजी रावण का पक्ष लेना छोड़ देंगे।'' अगस्त्य ऋषि के वचन सुनकर रामचन्द्र जी ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर कहा—''हे प्रभो ! आप संसार में समुद्र मथने वाले तथा इल्वल के शत्रु के नाम से प्रसिद्ध हैं। आप कृपा करके मुझे शिवजी के मन्त्र की दीक्षा दीजिए।''

हे नारद ! यह सुन कर अगस्त्य जी ने शिव-पूजन की युक्ति बताते हुए इस प्रकार कहा—''हे रामचन्द्र जी ! सर्वप्रथम मैं शिव-पूजा की तिथि एवं वार का वर्णन करता हूँ। अष्टमी अथवा चतुर्दशी शिवजी की तिथि के नाम से प्रसिद्ध हैं एवं एकादशी विष्णु जी की तिथि कहलाती है। अस्तु, शुक्लपक्ष में इनमें से किसी भी तिथि में शिवजी का पूजन आरम्भ करें। शिव-पूजन का संकल्प करके अपने शरीर को श्वेत वस्त्रों से भूषित करें तथा भस्म लगावें। हे रामचन्द्र ! भस्म लगाये बिना शिवजी प्रसन्न नहीं होते और सिद्धि की प्राप्ति नहीं होती है।

हे राम ! जब भस्म तथा रुद्राक्ष धारण कर चुके, तब व्रत रख कर सर्वप्रथम इस प्रकार ध्यान करें। शिवजी गौर शरीर, सम्पूर्ण अंगों में भस्म रमाये हैं, जिनके वामाङ्ग में गिरिजा विराजमान हैं, जो पाँच मुख, तीन नेत्र, चार भुजा तथा लाल रंग के जटा-जूट एवं सम्पूर्ण आभूषणों को धारण किये हुए हैं; जो जनेऊ के बदले सर्पों को लपेटे हैं तथा हाथ में डमरू एवं त्रिशूल को लिये हुए हैं; जो बाघम्बर ओढ़े हैं तथा निर्भयता को धारण किये हुए हैं, जो करोड़ों सूर्यों के समान परम प्रकाशवान् तथा करोड़ों चन्द्रमाओं के समान शीतल हैं, उन्हें मेरा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:26 PM

साष्टांग प्रणाम है। इस प्रकार ध्यान धर कर, शिवजी का पूजा करें तथा शिव-सहस्त्रनाम का पाठ करें।''

हे नारद ! इतना कह कर अगस्त्य जी ने रामचन्द्र जी को वेद में लिखित सहस्त्रनाम को बताया। फिर वे इस प्रकार बोले—''हे रामचन्द्र ! यदि कोई भय उत्पन्न हो तो तुम उससे डरना नहीं; क्योंकि शिवजी सदैव तुम्हारे रक्षक बने रहेंगे। तत्पश्चात् वे तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हो कर, तुम्हें अपना पाशुपत नामक अस्त्र देंगे। उसके द्वारा तुम अपने शत्रु को मार कर, सीता को प्राप्त कर सकोगे। जो प्राणी शिवजी की शरण में आता है, उसे सब प्रकार के आनन्द प्राप्त होते हैं।'' इस प्रकार अगस्त्य जी ने उन सब लोगों का वृत्तान्त संक्षेप में कह सुनाया, जिन्होंने शिवजी की सेवा करके अपने-अपने मनोरथ प्राप्त किये थे।

सैंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अगस्त्य जी से उपदेश प्राप्त करने के उपरान्त रामचन्द्र जी रामगिरि पर्वत पर आ कर गोमती नदी के तट पर बैठे। फिर वे शिवलिंग की स्थापना कर, भस्म रुद्राक्ष को धारण कर शिवजी का ध्यान करने लगे। उन्होंने भगवान् सदाशिवजी की मूर्ति को अपने हृदय-कमल में स्थापित किया। रामचन्द्र जी ने शिवजी के जिस स्वरूप का ध्यान किया था, उसका वर्णन इस प्रकार है—''जिनकी कान्ति करोड़ों सूर्य के समान सुन्दर है, जिनमें करोड़ों चन्द्रमाओं के समान शीतलता है, जिनके पाँच मुख तथा तीन नेत्र हैं, जिनकी चार भुजाएँ हैं तथा जिनके मस्तक पर चन्द्रमा विराजमान है, जो बाघम्बर ओढ़े तथा सर्पों का जनेऊ पहने हैं, जिनके कण्ठ में हलाहल की श्यामता है, जिनके दोनों चरण कमल के समान कोमल तथा सुन्दर हैं, जो अपने गौर शरीर पर भस्म रमाये हैं तथा अत्यन्त दयालु, अनादि, अप्रमेय, अविनाशी, अद्वितीय, विद्या, हर्ष, सत्य तथा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:26 PM

धर्म के साक्षात् स्वरूप हैं, वे शिवजी अपने भक्तों पर अत्यन्त दया करें।''

हे नारद ! शिवजी के ऐसे स्वरूप का ध्यान धर कर रामचन्द्र जी शिवसहस्रनाम का जाप करने लगे। उन्होंने वन के पुष्प तथा कन्द-मूल खा कर चार मास व्यतीत कर दिये। उस समय शिवजी ने रामचन्द्र जी की परीक्षा लेनी चाही तथा जिस प्रकार समुद्र प्रलय काल आने पर अपनी मर्यादा को त्याग देता है और उस समय जैसा भयानक शब्द होता है, उसी के समान एक घोर शब्द उस स्थान पर हुआ जहाँ रामचन्द्र जी बैठे हुए शिवजी का ध्यान कर रहे थे। उस शब्द को सुन कर रामचन्द्र जी ने चारों ओर देखा परन्तु उन्हें कोई भी दिखाई न दिया। ठीक उसी समय चारों ओर वन में अग्नि की ज़्वाला फैल गयी। रामचन्द्र जी ने उस दृश्य को देखकर अपने नेत्र बंद कर यह अनुमान किया कि संभवतः यह किसी दैत्य की माया है। तदुपरान्त वे अपने हाथों में धनुष-बाण लेकर अपने बाणों द्वारा उस ज्वाला को बुझाने का प्रयत्न करने लगे। उनके पास जितने भी अस्त्र-शस्त्र थे, वे सब उस अग्नि की भेंट हो गये, परन्तु अपना कोई भी प्रभाव नहीं दिखा सके। उसी समय रामचन्द्र जी का धनुष भी उनके हाथ से छूट कर पृथ्वी पर गिर पड़ा और देखते-देखते जल कर भस्म हो गया। यह दृश्य देखकर रामचन्द्र जी मूर्छित हो, पृथ्वी पर गिर पड़े।

हे नारद ! चैतन्य प्राप्त होने पर रामचन्द्र जी ने जब शिवजी का ध्यान किया तो उनके नेत्र खुल गये और वह अग्नि भी अदृश्य हो गयी। उस समय उन्होंने यह देखा कि अपने मुख्य लक्षणों से युक्त भगवान् सदाशिव परमतेजस्वी रूप में, नन्दी पर सवार हो, इनके सामने खड़े हुए हैं। उस स्वरूप को देखकर रामचन्द्र जी को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। तदुपरान्त उन्होंने विष्णु जी को लक्ष्मी सहित रुद्राध्यायी का पाठ करते हुए गरुड़ पर सवार हो, वहाँ आते हुए देखा। फिर उन्होंने ब्रह्माणी सहित मुझे भी रुद्रसूक्त का पाठ करते हुए, हंस पर आरूढ़ हो, वहाँ आते देखा। तदुपरान्त उन्होंने उसी ज्वाला से प्रकट हो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:26 PM

कर सम्पूर्ण मुनियों को शिवजी की स्तुति करते हुए देखा। इसके बाद उन्होंने यह देखा कि सम्पूर्ण दिक्पाल भी अपने मुख्य लक्षणों तथा पत्नियों सहित शिवश्रुति का पाठ करते हुए वहाँ चले आ रहे हैं। फिर उन्होंने गंगा आदि प्रसिद्ध नदियों सहित वेदमंत्र का पाठ करते हुए समुद्र को भी वहाँ आते देखा। इसी प्रकार सम्पूर्ण देवताओं तथा शेष आदि नागों को अपनी स्त्रियों सहित शिवजी की स्तुति का गायन करते हुए वहाँ आते हुए देखा।

हे नारद ! नन्दीगण तथा गणेश जी भी अपने वाहनों पर सवार हो कर वहाँ जा पहुँचे। उस देव-सभा को देख कर रामचन्द्र जी को आनन्द प्राप्त हुआ, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। रामचन्द्र जी ने शिवजी के ऐसे चरित्र को देखकर, सम्पूर्ण सभासहित स्तुति की।"

अड़तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! तब रामचन्द्र जी ने शिवजी को अनेक बार प्रणाम करने के उपरान्त इस प्रकार कहा—"हे भगवान् सदाशिव जी ! आपके चरण-कमलों में मेरा प्रणाम है। अब मुझे यह आशा है कि आपकी कृपा से मेरे सम्पूर्ण कार्य संपन्न होंगे।" इस प्रकार कह कर वे भगवान् सदाशिवजी के नाम का जप करने लगे। उस समय शिवजी ने अपनी लीला द्वारा एक सोने के रथ को प्रकट किया। शिवजी बैल से उतर कर, उस रथ पर आरूढ़ हुए। उस समय सब लोग जय जयकार करने लगे। विष्णु जी तथा मैं भी शिवजी की स्तुति करने में प्रवृत्त हुए। उस समय शिवजी ने रामचन्द्र जी को मस्तक झुकाए देखकर, उन्हें अत्यन्त प्रेमपूर्वक अपने रथ पर बैठा लिया तथा जिस धनुष द्वारा वे प्रलय करते हैं, उसे रामचन्द्र जी को प्रदान कर दिया। इसके उपरान्त उन्होंने यह कहा—"हे रामचन्द्र जी ! यह बाण प्रलय करने वाला है। तुम इसका प्रयोग तभी करना, जब तुम्हें अपने प्राणों पर किसी प्रकार का सन्देह हो। यदि तुमने किसी अन्य समय पाशुपत-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:26 PM

अस्त्र प्रयोग कर दिया तो यह निश्चय रखना कि संसार में प्रलय हो जाएगी।''

हे नारद ! रामचन्द्र जी से इस प्रकार कह कर, शिवजी ने देवताओं को सम्बोधित करते हुए कहा—''हे देवताओ ! रामचन्द्र जी मेरे अनन्य सेवक हैं। इनका शत्रु रावण अत्यन्त बलवान् है, अतः हमारी आज्ञा स्वीकार कर तुम बानर तथा रीछ आदि बन कर, इनकी सहायता करना। शिवजी की इस आज्ञा को सब देवताओं ने स्वीकार किया। तदुपरान्त विष्णु जी ने नारायणास्त्र, मैंने ब्रह्मदंड तथा इन्द्र ने अग्निबाण रामचन्द्र जी को दिये। उस समय रामचन्द्र जी ने शिवजी की प्रार्थना करते हुए कहा—''हे प्रभो ! समुद्र का विस्तार सौ योजन का है, अस्तु मनुष्य द्वारा उसे पार करना अत्यन्त कठिन है। यदि किसी प्रकार उसे पार करके लंका में पहुँचा भी जाए, तो उसमें प्रवेश करना अत्यन्त कठिन है। इसके अतिरिक्त लंका के रक्षक बड़े बलवान् दैत्य हैं, उन्हें जीतना अत्यन्त दुष्कर कार्य प्रतीत होता है। क्योंकि वे सब आपके सेवक हैं। इधर हम संख्या में केवल दो हैं तथा सब प्रकार से साधनहीन हैं। ऐसी स्थिति में हम उन पर किस प्रकार विजय प्राप्त कर सकेंगे?''

हे नारद ! रामचन्द्र जी की यह विनय सुनकर शिवजी ने उत्तर दिया—''हे रामचन्द्र जी ! तुम कुछ चिन्ता मत करो; क्योंकि हम तुम्हारी सदैव सहायता करते रहेंगे। लंका के राक्षस धर्म के विरुद्ध हो गये हैं, अतः उनके मरने का समय समीप आ पहुँचा है। अस्तु, तुम्हारी विजय निश्चित है। इस सम्बन्ध में हम तुम्हें एक बात और भी बतला दें कि किष्किंधा नगरी में सब देवताओं ने बन्दर का रूप धर कर, जन्म ग्रहण किया है। उनकी सहायता द्वारा तुम समुद्र पर सेतु बाँध कर, लंकापुरी में आसानी से जा पहुँचोगे तथा रावण का वध करके, सीता को प्राप्त कर लोगे।'' शिवजी के श्रीमुख से ऐसे वचन सुनकर रामचन्द्र जी ने कहा—''हे प्रभो ! आपकी कृपा से यह सब कार्य तो हो जायेंगे, परन्तु मेरी यह इच्छा है कि आप अपने अंश द्वारा किसी को उत्पन्न करके, मेरे साथ अवश्य भेजें; जिससे मेरे सभी कार्य सम्पन्न हो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:26 PM

जाएं तथा मुझे अपनी सिद्धि में पूरा भरोसा बना रहे।'' यह सुनकर शिवजी बोले—''हे रामचन्द्र जी ! रुद्र के अंश द्वारा हनुमान का अवतार हो चुका है। हनुमान तुम्हारे साथ रहकर सभी कार्यों में सहयोग प्रदान करेंगे। उनके साथ रहने से तुम्हें कुछ भी श्रम नहीं उठाना पड़ेगा।''

उन्तालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! इतना कह कर शिवजी ने रामचन्द्र जी को तत्त्वज्ञान का उपदेश किया, तदुपरान्त वे अन्तर्धान हो गये। तब रामचन्द्र जी ने अगस्त्य मुनि के समीप पहुँच कर, उनसे सब हाल कहा। अगस्त्य जी उस वृत्तान्त को सुनकर, प्रसन्न हो, रामचन्द्र जी से इस प्रकार बोले—''हे रामचन्द्र ! अब तुम्हारे सभी कार्य सिद्ध हो जायेंगे, क्योंकि जिस पर शिवजी प्रसन्न होते हैं, उसका दुःख अवश्य नष्ट हो जाता है। अगस्त्य जी की इस बात को स्वीकार कर, रामचन्द्र जी लक्ष्मण के साथ ऋष्यमूक पर्वत की ओर चले। वहाँ शिवजी के कथनानुसार उनकी हनुमान जी से भेंट हुई। हनुमान जी ने रामचन्द्र जी के सभी कार्यों में सहायता प्रदान की, जिसके परिणामस्वरूप रावण का संहार हुआ तथा रामचन्द्र जी ने सीता को पुनः प्राप्त किया।

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! मेरी यह अभिलाषा है कि मैं हनुमान् जी का सम्पूर्ण वृत्तान्त विस्तारपूर्वक सुनूँ।'' ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! सात द्वीपों में पहले द्वीप का नाम जम्बूद्वीप है। जम्बूद्वीप के नौ खण्ड हैं। उन नौ खण्डों में से जिस खण्ड का नाम किम्पुरूष है, वहाँ केसरी नामक एक बानरों के राजा निवास करते थे। वे शिवजी के परम भक्त, सत्यवादी तथा निष्पाप थे। उनकी षोडशवर्षीया पत्नी का नाम अंजनी था। वह बड़ी पतिव्रता थी। एक दिन की बात है कि वह सोलह श्रृंगार किये तथा उत्तमोत्तम वस्त्राभूषणों को धारण किये हुए, पर्वत के एक शिखर पर खड़ी हुई थी। उसी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:27 PM

समय उनचास पवनों में से समीर नामक एक वायु, जिसका नाम प्रभंजन भी था; वहाँ आ पहुँचा। अञ्जनी के स्वरूप को देखते ही वह मोहित हो गया। तब वह काम से पीड़ित हो, सूक्ष्मरूप धारण कर, उसके शरीर में प्रवेश कर गया। अञ्जनी को जब अपना शरीर कुछ भारी मालूम हुआ तो उसने यह विचार किया मेरे पति के अतिरिक्त यह कौन सा अन्य मनुष्य है जो मेरे शरीर को स्पर्श कर रहा है। जब उसे कुछ ज्ञात न हुआ तो वह उस अज्ञात व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए इस प्रकार बोली—"हे देवता ! तुम कौन हो, जो मेरे शरीर का इस प्रकार स्पर्श कर रहे हो? तुम निष्पाप हो कर मेरे सम्मुख प्रकट होओ तथा मुझे अपना शरीर दिखाओ।"

हे नारद ! अञ्जनी के इस कथन को सुनकर प्रभंजन अत्यन्त भयभीत हो, अपना वास्तविक स्वरूप धारण कर उसके सम्मुख आ खड़ा हुआ और इस प्रकार कहने लगा—"हे अञ्जनी ! मैं काम के वशीभूत हो, तुम्हारे शरीर में प्रवेश कर गया। मैं इन्द्र का भाई प्रभंजन नामक देवता हूँ। मेरे स्पर्श से किसी को कुछ भी पाप नहीं लगता। मैंने सच्चिदानंद ब्रह्म के समान तुम्हें यहाँ आ कर अपना दर्शन दिया है। तुम किसी प्रकार का सन्देह मत करो। भगवान् सदाशिवजी की इच्छा अत्यन्त बलवान् है। मैं तुमसे यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम मेरे अपराध पर ध्यान न दो; क्योंकि मेरे स्पर्श के कारण तुम्हें किसी प्रकार का पाप नहीं लगेगा। हे देवि ! यह भी स्पष्ट है कि देवताओं की इच्छा फल दिये बिना नहीं रहती। अस्तु, तुम्हारे गर्भ से शिवजी के अंश द्वारा एक अत्यन्त बलवान् पुत्र जन्म लेगा। वह शिवजी के ही समान तेजस्वी वेगशाली तथा शत्रुओं का संहार करने वाला होगा। वह रामचन्द्र जी और सीता का सेवक बनकर तुम्हें अत्यन्त आनन्द प्रदान करेगा।"

हे नारद ! इतना कह कर पवन देवता अन्तर्धान हो गये। इस घटना के कुछ समय पश्चात् अञ्जनी के गर्भ से तथा पवन देवता के आशीर्वाद से शिवजी अपने सम्पूर्ण अंश सहित स्थित हुए। दस महीने बाद अञ्जनी के गर्भ से एक पुत्र ने जन्म लिया। वह बालक परम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:27 PM

तेजस्वी तथा स्वरूपवान् था। उस समय देवता आकाश में आ कर दुन्दुभी बजाने लगे।''

चालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! जिस समय उस बालक ने जन्म लिया तो एक अघटित घटना घटी। वह यह थी कि जब अञ्जनी ने यह देखा कि पवन देवता के कथानानुसार उस बालक में शिवजी का मुख्य कोई लक्षण नहीं है और उसका स्वरूप भी बानर के समान है, तो उसने अत्यन्त दुःखी हो कर उस बालक को पर्वत के एक शिखर से नीचे फेंक दिया, परन्तु ज्यों ही वह बालक उस पर्वत पर गिरा, त्यों ही पर्वत खण्ड-खण्ड हो कर, पाताल में धँस गया। अस्तु, वह बालक जिस समय पृथ्वी पर गिरा तो उसके कुछ देर बाद उसके नेत्र आकाश की ओर जा टिके। जब उसकी दृष्टि उगते हुए सूर्य पर पड़ी तो उसने समझा कि कोई पका हुआ फल है, मुझे इसे खा लेना चाहिए। इस विचार के आते ही वह बालक सूर्य को निगलने के लिए आकाश की ओर बड़े वेग से चला। ठीक उसी समय, जब वह बालक सूर्य को निगलने के लिए आगे बढ़ रहा था, राहू देवता भी सूर्य को निगलने के लिए उसी ओर जा रहे थे। राहू को देखते ही उस बालक ने समझा कि यह व्यक्ति मेरा प्रतिद्वन्द्वी है और इस फल को स्वयं खा जाना चाहता है। तब वह सूर्य के रथ को रोक कर, राहू की ओर अपना मुख फैला कर दौड़ पड़ा। राहू उसे देखते ही तुरन्त भाग गया।

हे नारद ! उस शब्द के कारण देव लोक में हलचल मच गयी तथा सब देवता अत्यन्त आश्चर्यचकित हो, थर-थर काँपने लगे। इन्द्र ऐरावत हाथी पर चढ़ वज्र को हाथ में लेकर उसकी ओर चल पड़े। वह बालक सूर्य को निगलने के लिए अपना मुँह फैला ही रहा था कि उसी समय इन्द्र को वहाँ आते हुए देखकर उसे अत्यन्त क्रोध आया। तब वह अपना मुख फैलाकर पहले इन्द्र को ही निगल जाने के लिए बढ़ा। यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:27 PM

देखकर, इन्द्र ने क्रुद्ध हो अपने वज्र द्वारा उस बालक को घायल कर दिया, जिसके कारण वह बालक पृथ्वी पर गिरा पड़ा।

हे नारद ! शिवजी ने यह चरित्र केवल इसीलिए किया था, जिससे लोक में वज्र की प्रतिष्ठा नष्ट न हो। अस्तु, जब प्रभंजन ने अपने पुत्र को इस प्रकार पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखा, तो वह उसे मरा हुआ जान कर, अत्यन्त विलाप करने लगा। उस समय भगवान् सदाशिव ने आकाशवाणी द्वारा उसे सान्त्वना देते हुए कहा—"हे प्रभंजन ! तुम इतने व्याकुल मत होओ। हम तुम्हें एक उपाय बतलाते हैं, जिसे करने से तुम देवताओं से अपना बदला ले सकोगे और वे तुम्हारी शरण में स्वयं आ पहुँचेंगे। वह उपाय यह है कि तुम सब ओर से अपने अंश को खींच लो अर्थात् वायु का बहना बन्द कर दो।"

हे नारद ! इस आकाशवाणी को सुनकर प्रभंजन ने तीनों लोकों से अपने अंश को खींच लिया और स्वयं शिवजी के समीप जा कर आनन्द से बैठ गया। उस समय वायु के स्थिर हो जाने से सब देवताओं के उदर फूल गये तथा सभी प्राणी श्वास के अभाव में व्याकुल होने लगे। तब मैं उन सब को साथ लेकर विष्णु जी के समीप क्षीर समुद्र में जा पहुँचा और उनसे कहा—"हे प्रभो ! शिवजी से प्रेरणा पा कर वायु ने ऐसा उपद्रव मचाया है कि उससे सम्पूर्ण संसार व्याकुल हो गया है। अब हम सब लोगों को शिवजी की शरण में पहुँच कर उनसे रक्षा करने की प्रार्थना करनी चाहिए।"

हे नारद ! विष्णु जी हमारी इस बात से सहमत हुए। तब हम सब देवता उन्हें साथ लेकर शिवजी के समीप जा पहुँचे और उन्हें सब हाल सुनाकर, नतमस्तक हो, खड़े हो गए। शिवजी ने हम लोगों की प्रार्थना सुनकर यह कहा—"हे देवताओ ! यह बालक मेरे अंश से उत्पन्न हुआ है और पवन का पुत्र है। इन्द्र ने अपनी मूर्खता में भर उसके ऊपर अपने वज्र का प्रहार किया, यह उचित नहीं है। अब तुम्हें यह चाहिए कि सर्वप्रथम वायु देवता की प्रसन्नता के हेतु कोई उपाय करो। जब तक वायु प्रसन्न नहीं होंगे, तब तक तुम्हारा मनोरथ सिद्ध नहीं होगा।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:27 PM

शिवजी की इस आज्ञा को सुनकर सब देवताओं ने वायु से क्षमा मांगी तथा उसे प्रसन्न किया। तदुपरान्त सब लोग शिवजी को साथ लेकर उस बालक के समीप जा पहुँचे। शिवजी की कृपा दृष्टि पड़ते ही वह बालक चैतन्य हो कर उठ खड़ा हुआ। प्रभंजन का दुःख भी दूर हो गया।''

❁❁❁

इकतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! सर्वप्रथम विष्णु जी ने पवन की ओर देखते हुए यह वर दिया कि तुम्हारा पुत्र अत्यन्त शक्तिशाली हो कर, इन्द्र आदि सम्पूर्ण देवताओं का कार्य करेगा तथा सब के दुःखों को दूर करेगा। तदुपरान्त मैंने कहा—''हे प्रभंजन ! यह तीनों लोकों में निर्भय होगा तथा सब के दण्ड से बचा रहेगा।'' फिर सूर्य ने कहा—''हे वायु ! तुम्हारे इस पुत्र के शरीर पर भविष्य में वज्र भी अपना कोई प्रभाव नहीं दिखा सकेगा। हमारा वज्र लगने के कारण इसकी हनु अर्थात् ठुड्डी पर चोट लगी है, अस्तु इसका नाम हनुमान होगा।'' सभी देवताओं ने कहा—''इसे हमारे शस्त्रों से कोई भय नहीं होगा।''

हे नारद ! इस प्रकार सब देवताओं ने उसे वरदान दिया, उस समय ऋषि-मुनि ने आशीर्वाद देते हुए कहा—''हे पवन ! तुम्हारा यह पुत्र ऊर्ध्वरता होगा। रामदूत के नाम से प्रसिद्ध हो कर, सब के दुःख को दूर करेगा।'' मुनियों के ऐसे वचन सुनकर विष्णु जी ने, मैंने तथा अन्य सब लोगों ने हनुमान को अपने हृदय से लगा लिया। सभी ने पवन-पुत्र की अत्यन्त प्रशंसा की तथा स्तुति करते हुए जय जयकार किया। उस समय शिवजी ने सब लोगों को सम्बोधित करते हुए यह कहा—''हे देवताओ तथा ऋषियो ! रामचन्द्र जी का कार्य करने के लिए हमने यह बानर का अवतार लिया है। शिवजी पवन से बोले—''हे वायु ! हम तुम्हारे पुत्र की हर समय रक्षा करेंगे।'' इतना कह कर शिवजी तथा अन्य सब देवता अन्तर्धान हो गये।''

❁❁❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:27 PM

बयालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! सब देवताओं के अन्तर्धान हो जाने पर वायु हनुमान को गोद में उठा कर अन्जनी के पास ले गया तथा उन्हें अन्जनी की गोद में देकर, सब वृत्तान्त कह सुनाया। उस समय अञ्जनी ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर हनुमान को अपने स्तनों से दूध पिलाया तथा केशरी ने भी अत्यन्त आनन्द मनाया। उनकी बाल-लीलाओं को देखकर अंजनी तथा केसरी अत्यन्त प्रसन्न रहा करते थे। कुछ दिनों में ही हनुमान इतने बलिष्ठ हुए कि वे कभी पृथ्वी से उड़कर आकाश में चले जाते और कभी वायु तथा सूर्य के पास जा कर खेला करते थे। कभी वे आकाश गंगा में स्नान कर, उसमें अपनी पूँछ को इस प्रकार फटकारते थे कि वह पृथ्वी पर आ जाती थी। उनके ऐसे चरित्रों को देखकर देवता तथा मुनि अत्यन्त आश्चर्य किया करते थे।

हे नारद ! एक दिन हनुमान मुनियों के आश्रम में गये, परन्तु उन्हें कोई पहचान न सका। उस समय सब ऋषि-मुनि उनके पराक्रम को देखकर यह विचार करने लगे कि भला यह अपार बलशाली बालक किसका पुत्र है? जब इसकी अभी से यह दशा है तो आगे चलकर यह न जाने क्या करेगा? अस्तु, उन ऋषि-मुनियों ने परस्पर यह निश्चय किया कि हम इसे ऐसा शाप दें जिसके कारण यह अपना बल भूल जाये और हमें किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचा सके। अतः मुनियों ने हनुमान को यह शाप दिया—"हे मूर्ख बानर-पुत्र ! तुझे अपनी शक्ति पर इतना अहंकार है कि तू उचित-अनुचित का कोई विचार नहीं करता। हम तुझे यह शाप देते हैं कि तू अपने बल को भूल जाएगा और जब तक कोई तुझे याद नहीं दिलायेगा, तब तक तेरी सामर्थ्य प्रकट न हुआ करेगी।"

हे नारद ! मुनियों के इस शाप पर हनुमान ने कोई विचार नहीं किया, परन्तु तभी यह आकाशवाणी हुई—"हे मुनियो ! तुमने हनुमान को ऐसा शाप देकर अच्छा नहीं किया। यह साक्षात् शिवजी के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:27 PM

अवतार हैं और रामचन्द्र जी का कार्य करने के निमित्त प्रकट हुए हैं। अब बताओ कि विष्णु जी के कार्य को कौन कर सकेगा? तुम्हें उचित है कि अपने इस शाप का शीघ्र खण्डन करो, अन्यथा तीनों लोक दु:खी हो जायेंगे।'' हे नारद ! इस आकाशवाणी को सुनकर मुनियों ने हनुमान जी के वास्तविक रूप को पहचाना। तब उन्होंने उनकी बहुत प्रार्थना करते हुए यह कहा—''हे शिवजी के अवतार हनुमान जी ! आप हमारे अपराध को क्षमा करें। अब हम अपने शाप को इस प्रकार खण्डन करते हैं कि जब तक आपकी भेंट रामचन्द्र जी से न होगी, तब तक आप अपने बल को भूले रहेंगे। अब आप सूर्य के पास जा कर विद्या सीखें। इससे आपका तथा आपके द्वारा सम्पूर्ण संसार का कल्याण होगा।''

हे नारद ! मुनियों की यह बात सुनकर हनुमान अपने माता-पिता के समीप लौट आये और उन्हें सब हाल कह सुनाया। तदुपरान्त वे उनसे आज्ञा प्राप्त कर, सूर्य के समीप जा, विद्या पढ़ने लगे। कुछ दिनों में जब वे सम्पूर्ण विद्याओं में पारंगत हो गये। तब उन्होंने सूर्य से गुरु दक्षिणा माँगने के लिए कहा। उस समय सूर्य ने उन्हें शिवजी का अवतार जानकर स्तुति करते हुए इस प्रकार कहा—''हे हनुमान ! मैं आपके मुख्य स्वरूप को जानता हूँ। मैं यह चाहता हूँ कि आप पम्पापुर में जा कर रहें। वहाँ बालि तथा सुग्रीव नामक दो भाई रहते हैं। उनमें सुग्रीव मेरा पुत्र है। आपको उचित है कि आप पम्पापुर में रह कर सुग्रीव का पक्ष लें। वहीं आपकी भेंट रामचन्द्र जी से हो जायेगी। मुझे यही गुरु दक्षिणा चाहिए और यही आप मुझे देने की कृपा करें।'' सूर्य के मुख से यह वचन सुनकर हनुमान 'एवमस्तु' कह कर अपने माता-पिता के पास लौट आये और उन्हें सब वृत्तान्त कर सुनाया। अंजनी एवं केशरी ने कहा—''अब तुम अपने गुरु की आज्ञा पालन करने के निमित्त पम्पापुर में जा कर रहो; क्योंकि जिस कार्य के लिए तुम्हारा अवतार हुआ है, वही कार्य करना तुम्हें सब प्रकार से उचित है। माता-पिता के ऐसे वचन सुनकर हनुमान को अत्यन्त प्रसन्नता हुई।''

ॐ ॐ ॐ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:27 PM

तैंतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! माता-पिता की आज्ञा पा, उन्हें प्रणाम करने के उपरान्त हनुमान पम्पापुर को चल दिये। कुछ देर बाद वे पम्पापुर में पहुँचे। वहाँ जा कर जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि सुग्रीव अपने घरेलू-विवाद के कारण ऋष्यमूक पर्वत पर जा कर रहने लगे हैं, तो वे वहीं चले गये तथा सुग्रीव के साथ रहने लगे। जिस समय सीता के वियोग से दुःखी रामचन्द्र और लक्ष्मण उस पर्वत के समीप पहुँचे, तब वे अगवानी करके उन दोनों को सुग्रीव के पास ले आये और उनमें मित्रता स्थापित करायी। तदुपरान्त उन्होंने रामचन्द्र जी के हाथों से बालि का वध कराया। फिर सीता को ढूँढने के लिए समुद्र को लाँघ कर लंका में पहुँचे। सब दैत्यों को मार कर, अक्षय कुमार का संहार किया तथा लंकापुरी को इस प्रकार जलाया कि उसमें विष्णु भक्तों के घर तो जलने से बच गये, परन्तु राक्षसों के सब घर भस्म हो गये। तदुपरान्त रावण के अहंकार को नष्ट करके, वे अपने साथी वानरों के समीप आ पहुँचे और उन्हें सब हाल कह सुनाया।

हे नारद ! हनुमान के ऐसे पराक्रम को देखकर रामचन्द्र जी ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा—"हे हनुमान ! तुम शिवजी के अवतार तथा हमारे परमहितैषी हो। सुग्रीव आदि सभी वानरों ने उन्हें शिवजी का अवतार जान कर प्रणाम किया। जब हनुमान जी ने यह देखा कि रामचन्द्र जी हमें शिवजी का अवतार समझकर आज्ञा देने में संकोच करेंगे तो उन्होंने ऐसी माया की कि सब लोग यह बात भूल गये कि हनुमान शिवजी के अवतार हैं। केवल इतना ही ध्यान रहा कि ये अत्यन्त बलवान् हैं। तदुपरान्त रामचन्द्र जी ने हनुमान को अपने हृदय से लगा लिया और उनकी अत्यन्त प्रशंसा करते हुए कहा—"हे कपि ! हमें तुम्हारा बड़ा भरोसा है। इसके पश्चात् रामचन्द्र जी ने लंका जाने की तैयारी की और अपनी सेना सहित समुद्र तट पर जा पहुँचे। जिस समय सब लोग समुद्र के विस्तार को देख कर अत्यन्त आश्चर्यचकित

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:27 PM

हो कर यह विचार करने लगे कि इसे किस प्रकार पार किया जा सकेगा, उस समय हनुमान जी ने सब के देखते-देखते ही समुद्र पर सेतु बाँध कर तैयार कर दिया। तब रामचन्द्र जी ने उस स्थान पर शिवलिंग की स्थापना की, जिसका नाम रामेश्वर रखा। उसी सेतु-मार्ग द्वारा रामचन्द्र जी अपनी सम्पूर्ण सेना सहित समुद्र को पार कर रावण की लंका में जा पहुँचे।

हे नारद ! राम और रावण में घोर युद्ध हुआ। उसमें हनुमान जी ने अकेले ही बहुत-सी दैत्य-सेना को मार गिराया तथा रामचन्द्र जी की सेना की रक्षा की। जिस समय मेघनाद द्वारा शक्ति का प्रहार किये जाने पर लक्ष्मण घायल हुए, उस समय सुषेण नामक वैद्य ने यह बताया था कि यदि रात भर में ही औषधि नहीं आयी तो लक्ष्मण के प्राण नहीं बचेंगे। उस समय हनुमान सब दैत्यों को जीत कर औषधि के पर्वत को रात ही रात में उठा लाये और लक्ष्मण को जीवित कर दिया। उन्होंने रामचन्द्र जी की इस प्रकार सहायता की कि रावण का सम्पूर्ण तेज नष्ट हो गया। जिस समय अहिरावण राम तथा लक्ष्मण को पकड़ कर पातालपुरी में ले गया। उस समय रामचन्द्र जी द्वारा स्मरण किये जाने पर हनुमान ने पातालपुरी में पहुँच कर, अहिरावण की भुजा उखाड़ी और रामचन्द्र तथा लक्ष्मण की प्राण-रक्षा की। रावण को जीत कर रामचन्द्र जी जब सीता को लेकर अयोध्या लौटे तो उस समय हनुमान जी उनके साथ अयोध्या जा पहुँचे और जब तक रामचन्द्र जी इस लोक में रहे, तब तक उनकी सेवा में संलग्न रहे। इस प्रकार हनुमान जी ने अनेक चरित्र करके दैत्यों का वध किया तथा भक्तों को आनन्द पहुँचाया। इस चरित्र को जो कोई सुनता है, उसे दोनों लोकों में अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है।''

❀❀❀

चौवालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब तुम वेश्यानाथ अवतार का वृत्तान्त सुनो। प्रसिद्ध नन्दीग्राम में महानन्दा नामक एक वेश्या रहती

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:27 PM

थी। वह शिवजी की भक्ति में अत्यन्त चतुर थी। प्रतिदिन भस्म लगाती, आभूषणों के स्थान पर रुद्राक्ष पहनती तथा शिवजी के यश का वर्णन किया करती थी। उसके घर में एक बन्दर तथा एक कुत्ता पले हुए थे। वह उन दोनों को भी रुद्राक्ष पहनाती थी।

हे नारद ! कुछ समय बीतने पर शिवजी उस वेश्या की सेवा से अत्यन्त प्रसन्न हुए। तब वे उसकी परीक्षा लेने के निमित्त वेश्यानाथ का स्वरूप धारण कर, मस्तक पर त्रिपुण्ड लगा कर, आभूषणों के बदले रुद्राक्ष पहन, जयशिव-जयशिव उच्चारण करते हुए, उस महानन्दा नामक वेश्या के घर जा पहुँचे। महानन्दा ने उन वेश्यानाथरूपी शिवजी को अत्यन्त सम्मानपूर्वक अपने घर में ठहराया। तदुपरान्त उसने शिवजी के हाथ में जड़ाऊ कंकण देखकर, उन्हें प्राप्त करने की इच्छा से यह कहा—"तुम्हारे हाथ के कंकण स्त्रियों के पहनने योग्य हैं; अस्तु तुम इन्हें मुझे दो।" यह सुनकर वेश्यानाथ ने उत्तर दिया—"तुम हमें इन कंकणों का क्या मूल्य दोगी?" महानन्दा बोली—"हमारे कुल में व्यभिचार को पाप नहीं माना जाता, अपितु उसे कुल-धर्म कहा गया है। यदि तुम यह कंकण मुझे दे दोगे तो मैं तीन रात तक तुम्हारी स्त्री बन कर, तुम्हारे साथ विहार करूँगी।" महानन्दा की बात सुनकर वेश्यनाथ ने हँसते हुए कहा—"हे महानन्दा ! हमें तुम्हारी यह बात स्वीकार है, तुम इस कंकण को ले लो।"

हे नारद ! महानन्दा ने यह बात स्वीकार कर ली। तब वेश्यानाथ ने उसे अपना कंकण दे दिया। तदुपरान्त उन्होंने एक रत्नजटित स्वर्णलिंग महानन्दा को और देते हुए कहा—"हे महानन्दा ! अब तुम तीन दिन के लिए हमारी स्त्री हो चुकी, अस्तु-हम तुम्हें यह स्वर्णलिंग देते हैं। तुम उनकी भली-भाँति रक्षा करना। यह स्वर्णलिंग हमें प्राणों से अधिक प्रिय है। यदि किसी प्रकार खो गया अथवा नष्ट हो गया तो हमारे प्राण शरीर को छोड़ देंगे।" महानन्दा ने इस बात को स्वीकार कर, उस स्वर्णलिंग को ले लिया और अपने शिवालय में यत्नपूर्वक स्थापित कर दिया। तदुपरान्त वह शृंगार करके आधी रात तक शिवजी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:27 PM

के साथ वार्तालाप करती रही। उस समय शिवजी ने यह चरित्र किया कि अचानक ही अग्नि उत्पन्न हो कर उस शिवमन्दिर को जलाने लगी। वायु ने भी अत्यन्त वेग से चल कर उस अग्नि को बढ़ाने में सहयोग दिया। परिणामस्वरूप वह शिवलिंग, जो वेश्यानाथ ने महानन्दा को सौंपा था, जल कर भस्म हो गया। यद्यपि यह आश्चर्य रहा कि कुत्ता और बन्दर, जो कि शिवालय में बैठे थे, उस अग्नि की लपटों से किसी प्रकार जीवित बच गये।

हे नारद ! यह दृश्य देखकर वेश्यानाथ तथा महानन्दा अत्यन्त दु:खी हुए। उस समय वेश्यानाथ ने अपने नेत्रों में जल भर कर इस प्रकार कहा—"हे महानन्दा ! हमने पहले ही तुमसे कहा था कि यदि यह मूर्ति किसी प्रकार खो गयी अथवा नष्ट हो गयी तो हमारे प्राण बचने कठिन हैं। अब जब हमारे स्वामी ही अग्नि में जल कर भस्म हो गये तो हमारा जीवित रहना भी व्यर्थ है। इस समय यदि ब्रह्मा और विष्णु भी हमें मना करेंगे तो हम अपने प्राण त्यागे बिना न रहेंगे।" वेश्यानाथ के इस हठ को देखकर महानन्दा अत्यन्त लज्जित तथा व्याकुल हुई। तब उसने रोते-पीटते हुए एक चिता तैयार करायी। वेश्यनाथ बस चिता में अग्नि जला कर सब के देखते-देखते बैठ गये। उस समय महानन्दा ने सब लोगों को बुला कर इस प्रकार कहा—"हे महानुभावो ! मैं तीन दिन के लिए इस व्यक्ति की स्त्री बनी थी और मैंने इससे कंकण लेकर यह प्रतिज्ञा की थी कि तीन दिन तक मैं तुम्हें अपना पति समझूँगी, परन्तु आज दूसरे ही दिन मेरा पति अग्नि में जला जा रहा है, इसलिए मैं भी अपने धर्म को स्थिर रखने के लिए, इसके साथ सती हो कर अपने प्राण त्याग दूँगी। आप लोग किसी प्रकार की चिन्ता न करें।"

हे नारद ! महानन्दा की बात सुनकर उसके भाई-बन्धुओं ने बहुत मना किया, परन्तु वह किसी प्रकार नहीं मानी। तदुपरान्त अपने सब धन ब्राह्मणों को दान कर दिया और शिवजी का स्मरण करके उस चिता की तीन परिक्रमा कीं। फिर जैसे ही उसने यह चाहा कि मैं चिता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:27 PM

में प्रवेश करूँ उसी समय शिवजी अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट हो कर, उसके सम्मुख खड़े हो गये। इस चमत्कार को देख कर महानन्दा को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उस समय शिवजी ने उसका हाथ पकड़ कर हँसते हुए यह कहा—"हे महानन्दा ! तुम्हारे ऐसे भक्ति भाव तथा धार्मिकता को देखकर हम अत्यन्त प्रसन्न हैं। अब तुम्हारी जो इच्छा हो, वह वर हमसे माँग लो।" यह सुनकर महानन्दा ने उत्तर दिया—"हे प्रभो ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो कृपा करके मुझे अपने चरणों की भक्ति प्रदान कीजिये तथा मुझे कुल-परिवार सहित मोक्ष प्रदान कर, अपने लोक में स्थान दीजिये। महानन्दा के ऐसे भक्तिपूर्ण वचनों को सुनकर शिवजी ने अपने गणों का स्मरण किया। वे उसी समय विमान लेकर आ पहुँचे। तब शिवजी ने महानन्दा को उसके सम्पूर्ण परिवार सहित विमान पर बैठाया और बड़ी धूमधाम से उसे अपने लोक में भेज दिया। यह पवित्र कथा सम्पूर्ण पापों को दूर करने वाली तथा दोनों लोकों में आनन्द प्रदान करने वाली है। यह सब प्रकार की चिन्ताओं को दूर कर, पाठक की सम्पूर्ण मनोभिलाषाओं को पूर्ण करती है।"

पैंतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! अब मैं द्विजेश अवतार की कथा का वर्णन करता हूँ। जिस प्रकार शिवजी ने राजा भद्रायुष की रक्षा के हेतु ऋषभ अवतार धारण किया था। उसी राजा भद्रायुष की परीक्षा लेने के हेतु शिवजी ने दूसरी बार द्विजेश अवतार ग्रहण किया था। शिवजी अहंकार को नष्ट करने वाले तथा अपने भक्तों को मुक्ति प्रदान करने वाले हैं। वे अनेक प्रकार के स्वरूप धारण कर भक्तों का पालन करते हैं तथा शत्रुओं का संहार करते हैं। तीनों लोकों में शिवजी के समान श्रेष्ठ अन्य कोई नहीं है। सभी वेद तथा पुराण शिवजी को सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी कह कर पुकारते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:27 PM

हे नारद ! राजा भद्रायुष शिवजी का अनन्य भक्त था। ऋषभ अवतार की कृपा से उसने स्वयं को वन्दी से छुड़ाया तथा शत्रुओं को जीत कर पुनः अपना राज्य प्राप्त किया। उसका विवाह राजा चन्द्रांगद की पुत्री कीर्त्तिमालिनी के साथ हुआ था। एक दिन वह अपनी पत्नी सहित शिकार खेलने के हेतु वन में गया। वहाँ वह वसंत ऋतु पर्यन्त ठहर कर, रुचिपूर्वक विहार करता रहा। उस समय शिवजी ने उसकी परीक्षा लेनी चाही। तब शिवजी ने यह चरित्र किया कि वे स्वयं एक ब्राह्मण बन गये तथा गिरजा को ब्राह्मणी बना लिया। तदुपरान्त वे उसी वन में जा कर स्थित हो गये, जहाँ राजा भद्रायुष अपनी पत्नी सहित ठहरा हुआ था। फिर उन्होंने एक माया का सिंह उत्पन्न किया, जो घोर गर्जना करके उन दोनों को खाने के लिए दौड़ा। उस समय वे ब्राह्मण तथा ब्राह्मणी रूपी शिव-गिरिजा उस सिंह के भय से भागते हुए राजा भद्रायुष के समीप जा पहुँचे और प्रार्थना करते हुए इस प्रकार कहने लगे—"हे राजन् ! देखो, यह सिंह हम दोनों को खाना चाहता है। तुम इससे हमारी रक्षा करो।" उनकी प्रार्थना सुनकर राजा भद्रायुष ने अपना धनुष उठाया। वह अपना धनुष ठीक चढ़ाने भी न पाया था कि उसी समय सिंह ने आकर ब्राह्मणी को पकड़ लिया और उसे सब के देखते-देखते ही खा गया। यद्यपि राजा ने उसके ऊपर अपने बहुत-से बाण चलाये, परन्तु सिंह को उनसे किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचा।

हे नारद ! उस समय ब्राह्मण रूपी शिवजी ने संसारी रीति के अनुसार अपनी पत्नी की मृत्यु का शोक मनाते हुए राजा भद्रायुष से इस प्रकार कहा—"हे राजन् ! तुझे सहस्त्रों बार धिक्कार है। तेरा तेज आज कुछ भी प्रभाव नहीं दिखा सका। जब तू अपने कुल-धर्म का पालन नहीं कर सकता, तो तेरा मनुष्य जन्म लेना व्यर्थ है। इस प्रकार की अनेक बातें ब्राह्मणरूपधारी शिवजी ने राजा भद्रायुष से कहीं, जिन्हें सुनकर वह अत्यन्त लज्जित तथा व्याकुल हुआ। तब वह अपने मन में यह सोचने लगा कि वास्तव में मुझसे यह बहुत बड़ा अधर्म हुआ, जो मैं इस ब्राह्मण की स्त्री की रक्षा करने में असमर्थ रहा हूँ। इस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:27 PM 4G 86

पाप से मुक्ति पाने के हेतु अब यदि मुझे अपने प्राण भी दे देने पड़ें तो भी उचित है। मुझे इस ब्राह्मण की प्रसन्नता के हेतु कोई-न-कोई उपाय अवश्य करना चाहिए।

हे नारद ! इस प्रकार अपने मन में सोचकर राजा भद्रायुष ने ब्राह्मण वेषधारी शिवजी के चरणों पर गिरकर यह प्रार्थना की—"हे प्रभो ! अब आप मुझ पर कृपा करके जो चाहें, वह ले लीजिए। मैं अपना सम्पूर्ण राज्य तथा स्त्री आपको अर्पण करता हूँ और स्वयं भी आपकी सेवा करने के हेतु प्रस्तुत हूँ।" यह सुनकर शिवजी ने उत्तर दिया—हे राजन् ! जब मेरी स्त्री ही नहीं रही, तो मैं तुम्हारा राज्य लेकर क्या करूँगा? अब मैं यह चाहता हूँ कि तुम मुझे अपनी स्त्री दे दो, जिससे मेरे हृदय का दुःख दूर हो। ब्राह्मण के ऐसे वचन सुनकर राजा ने कहा—"हे ब्राह्मण ! क्या तुम्हारे गुरु ने यही उपदेश दिया है? क्या तुमने परायी स्त्रियों के साथ भोग करने वालों की दुरदशा को अपनी आँखों से नहीं देखा है? यह सुनकर ब्राह्मण ने उत्तर दिया—"हे राजन् ! हम में इतनी सामर्थ्य है कि ब्राह्मण का वध करने से जो पाप लगता है, उसे भी हम दूर कर सकते हैं, फिर परायी-स्त्री के साथ भोग करना तो इतना बड़ा पाप भी नहीं है।

हे नारद ! यह सुनकर राजा ने अपने मन में अत्यन्त भयभीत हो, यह विचार किया कि संसार में ब्राह्मण की रक्षा न करने के समान बड़ा पाप अन्य कोई नहीं है, स्त्री का दान कर देने के उपरान्त मैं स्वयं भी अग्नि में जल कर भस्म हो जाऊँगा; क्योंकि उसके बिना मेरा जीना व्यर्थ है। इस प्रकार निश्चय करके राजा भद्रायुष ने अपनी पत्नी ब्राह्मणरूपी शिवजी को दान कर दी। उसने अग्नि प्रज्वलित कर, प्रदक्षिणा करने के उपरान्त, जैसे ही यह चाहा कि मैं अग्नि में जल कर भस्म हो जाऊँ, वैसे ही शिवजी अपने मुख्य लक्षणों सहित उसके सम्मुख प्रकट हो गये। उन्हें देखकर राजा भद्रायुष को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उस समय आकाश से पुष्प वर्षा होने लगी। राजा भद्रायुष ने प्रसन्न हो कर शिवजी की बड़ी स्तुति की। शिवजी ने राजा से इस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:28 PM

प्रकार कहा—"हे राजन्! हमने तुम्हारी परीक्षा के निमित्त ही ब्राह्मण का स्वरूप धारण किया था। जिस स्त्री को सिंह ने खाया है, वे गिरिजा हैं। अब तुम्हें कोई सन्देह नहीं करना चाहिए। तुम हमारे परम भक्त हो, अस्तु तुम्हारी जो इच्छा हो, वह वर हमसे माँग लो।"

हे नारद! राजा भद्रायुष ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर कहा—"हे प्रभो! यदि आप मुझ पर प्रसन्न ही हैं तो मैं यह वर माँगता हूँ कि आप मुझे सम्पूर्ण कुल सहित अपना गण बना लें; जिससे मैं सदैव आपकी सेवा में प्रवृत्त रहूँ। इसके साथ ही आप यह भी कृपा करें कि मैं इसी शरीर से आपके लोक में पहुँच जाऊँ। जब राजा भद्रायुष इस प्रकार कह चुका, तब रानी ने यह प्रार्थना की—"हे प्रभो! मैं यह चाहती हूँ कि मेरे माता-पिता भी आपकी सेवा में अवश्य पहुँचें। यह सुनकर शिवजी उन दोनों को इच्छित वरदान देकर अन्तर्धान हो गये। तब राजा भद्रायुष अपनी राजधानी लौट आया। वहाँ बहुत दिनों तक आनन्दपूर्वक राज्य करने के उपरान्त वह अपनी पत्नी, माता-पिता, पुत्र तथा सास-श्वसुर सहित शिवलोक में चला गया। इस चरित्र को जो कोई पढ़ता अथवा सुनता है, उसे भी शिवलोक प्राप्त होता है।"

छियालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद! अब मैं तुम्हें जितनाथ अवतार का वृत्तान्त सुनाता हूँ। अर्बुदाचल पर्वत पर एक भील अपनी पत्नी सहित निवास करता था। वह शिवजी का परमभक्त था। एक दिन वह भील अपनी स्त्री को घर में छोड़ कर आजीविका के निमित्त कहीं बाहर चला गया। उसी दिन संध्या को शिवजी भी परीक्षा लेने के हेतु एक यती का स्वरूप धारण कर, उसके घर जा पहुँचे। भील भी कुछ देर बाद घर लौट आया और यती को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने प्रणाम आदि करने के उपरान्त यती का पूजन किया और यह कहा कि आप मुझे कोई सेवा बताने की कृपा करें। उस समय यतीरूप शिवजी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:28 PM

बोले—"हे भील ! हम यहाँ रात भर रहना चाहते हैं। प्रातःकाल अपने घर चले जायेंगे।" यह सुनकर भील ने उत्तर दिया—"हे यती ! हमारा घर बहुत छोटा है, उसमें दो मनुष्यों के अतिरिक्त तीसरा नहीं रह सकता। ऐसी स्थिति में, मैं आपको किस प्रकार आश्रय दूँ?" भील का यह उत्तर सुन यती लौट कर जाने लगे। तब भील की स्त्री ने भील से यह कहा—"हे पति ! तुम यती के ठहरने के लिए स्थान दो, अन्यथा हमें बहुत पाप लगेगा। मैं यह उचित समझती हूँ कि तुम दोनों घर में भीतर रहो और मैं बाहर बनी रहूँगी।" यह सुनकर भील बोला—"हे प्रिये ! तुम ठीक कहती हो। साथ ही स्त्री का घर से बाहर रहना भी ठीक नहीं है। इसलिए मैं यह चाहता हूँ कि तुम और यती घर के भीतर रहो।"

हे नारद ! यह निश्चय कर भील ने अपनी स्त्री तथा यती को घर के भीतर ठहरा दिया और स्वयं शस्त्र बाँध कर रात भर, घर के बाहर चारों ओर पहरा देता रहा। उस समय शिवजी ने यह लीला की कि एक महाभयानक सिंह अपने साथ अन्य कई सिंहों को लेकर भील के पास आ पहुँचा। भील ने उनमें से बहुत से सिंहों को अपने बाणों द्वारा मार डाला, परन्तु अन्त में, अन्य सिंहों ने उसे मार कर खा लिया। केवल इसकी हड्डियाँ ही वहाँ पड़ी रहीं। प्रातःकाल होने पर यती तथा भीलनी ने जब भील की यह दशा देखी। उस समय भीलनी ने यती को सान्त्वना देते हुए कहा—"हे यती ! तुम अपने मन में कुछ खेद मत करो। मेरे पति परम धन्य हैं, जिन्होंने ऐसी मृत्यु प्राप्त की है। अब मैं अपने पतिव्रत धर्म का पालन करके, इनके साथ सति हो जाऊँगी।"

हे नारद ! इस प्रकार कह कर भीलनी ने चिता बनायी। तदुपरान्त वह अपने पति की हड्डियों को लेकर उस चिता की अग्नि में बैठ गयी। उस समय शिवजी भीलनी से इस प्रकार कहने लगे—"हे भीलनी ! अब तेरी जो इच्छा हो, वह वर हम से माँग ले।" शिवजी के दर्शन प्राप्त कर तथा उनके मुख से यह वचन सुनकर, भीलनी आनन्दमग्न हो, मूर्च्छित-सी हो गयी। उस समय उसके मुख से कोई

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:28 PM

शब्द नहीं निकला। तब शिवजी दुबारा इस प्रकार बोले—"हे भीलनी ! हमारा यती का यह स्वरूप हंस रूप धारण कर, तुम दोनों की पुनः भेंट करायेगा। तुम दोनों पति-पत्नी दूसरा शरीर धारण कर, अत्यन्त आनन्द प्राप्त करोगे। तुम्हारा पति मगध देश में जन्म लेकर, राजा वीरसेन के पुत्र नल के नाम से प्रसिद्ध होगा और सम्पूर्ण पृथ्वी का स्वामी बनेगा। तुम भी विदर्भ देश के राजा भीम की पुत्री दमयन्ती के रूप में जन्म लोगी।"

हे नारद ! इतना कहकर शिवजी सब देवताओं सहित अन्तर्धान हो गये। तदुपरान्त भील ने राजा नल का जन्म लिया और भीलनी दमयन्ती बन कर प्रकट हुई। यतीरूप शिवजी ने हंस का स्वरूप धारण कर, उन दोनों का परस्पर विवाह करा दिया। नल और दमयन्ती दोनों ही बड़े शिव भक्त थे। इन दोनों द्वारा राजा इन्द्रसेन की उत्पत्ति हुई। राजा इन्द्रसेन का पुत्र चन्द्रांगद शिवजी का परमभक्त हुआ। चन्द्रांगद की पत्नी का नाम सीमन्तिनी था। वह अपने पति से भी अधिक शिवजी की भक्त थी। शिवजी का यह यती अवतार परम पवित्र है। हंस अवतार की कथा भी आनन्द प्रदान करने वाली है।

सैंतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! अब मैं कृष्णदर्शन अवतार का वर्णन करता हूँ। सूर्य के पुत्र मनु के इक्ष्वाकु आदि दस पुत्र उत्पन्न हुए। मनु के नौवें पुत्र का नाम वाह्लीक था। जब वह अपने गुरु के घर विद्या पढ़ने के लिये गया, उस बीच में इक्ष्वाकु आदि उसके अन्य नौ भाइयों ने पिता से अलग हो कर, उनके धन को आपस में बाँट लिया। उन्होंने वाह्लीक का कोई भी हिस्सा उस धन में नहीं रखा। जब वाह्लीक विद्या पढ़कर घर लौटा और उसने सब भाइयों को अपना-अपना भाग लिये हुए देखा तो यह पूछा कि मेरे हिस्से में क्या आया है? उस समय भाइयों ने उसे यह उत्तर दिया—"हे वाह्लीक ! जिस समय हम सब लोग भाग

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:28 PM

कर रहे थे, उस समय तुम्हारा ध्यान हमें नहीं रहा था; इसलिए अब तुम्हें पिता के धन में से कोई भाग नहीं मिल सकता। यदि तुम चाहो तो पिता को अपने भाग में ले लो।'' यह सुनकर वाह्लीक अत्यन्त आश्चर्यचकित हो, अपने पिता के पास पहुँचा और यह कहने लगा—''हे पिता ! भाइयों ने मुझे कोई भाग नहीं दिया है तथा कहा है कि मैं अपने भाग में आपको ले लूँ।''

हे नारद ! वाह्लीक की बात सुनकर मनु ने आश्चर्य में भर कर कहा—''हे पुत्र ! तुम्हारे भाइयों के वचन उचित नहीं हैं। मैं कोई ऐसी वस्तु नहीं हूँ, जो तुम्हारे खाने-पीने के काम आ सके। तुम्हारे भाइयों ने तुम्हारे साथ छल किया है। परन्तु जब तुम मुझे स्वीकार कर ही रहे हो, तो भगवान् सदाशिव का ध्यान धरकर मैं तुम्हें एक उपाय बताता हूँ। वह उपाय यह है कि अंगिरस नामक मुनि एक भारी यज्ञ कर रहे हैं। उन्हें छः दिन से यज्ञ की युक्ति भूल गयी है, जिसके कारण उनका यज्ञ पूरा नहीं हो पा रहा है। अस्तु तुम वहाँ जा कर उन्हें उपदेश करो। तुम्हारे उपदेश से उनका यज्ञ पूरा हो जाएगा। तब जो धन यज्ञ करने से शेष बचेगा, उसे वे तुम्हें दे देंगे।''

हे नारद ! मनु के ऐसे वचन सुनकर वाह्लीक ने उसी प्रकार आचरण किया तथा अंगिरस मुनि के यज्ञ को दो सूक्त पढ़कर पूर्ण करा दिया। तब अंगिरस मुनि यज्ञ का बचा हुआ सब धन वाह्लीक को देकर, स्वयं वैकुण्ठ लोक को चले गये। जब वाह्लीक उस धन को उठाने लगा, उस समय शिवजी ने यह चरित्र किया कि वे अत्यन्त सुन्दर स्वरूप धारण कर कृष्ण-दर्शन के नाम से प्रसिद्ध हो, वाह्लीक की परीक्षा लेने के लिए उसके समीप आ पहुँचे और इस प्रकार कहने लगे—''अरे तुम कौन बुद्धिहीन मनुष्य हो, जो हमारे धन को इस प्रकार ले रहे हो? हमारे विरुद्ध आचरण करने पर तुम्हारा कल्याण न होगा।'' शिवजी के ऐसे वचन सुनकर वाह्लीक ने कहा—''हे महानुभाव ! मैं अपने पिता की आज्ञा से यहाँ आया हूँ। अंगिरस मुनि ने वैकुण्ठ जाते समय यज्ञ से बचे हुए इस धन को मुझे दिया है।'' वाह्लीक के ऐसे वचन सुनकर कृष्ण-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दर्शन-रूप शिवजी ने उत्तर दिया—"वाह्लीक ! तुम्हारे पिता अत्यन्त धर्मवान् हैं, अस्तु, तुम उनके पास जा कर पूछो कि वह धन किसे लेना चाहिए। वे जो बात कहेंगे, उसे हम भी स्वीकार कर लेंगे।"

हे नारद ! यह सुनकर वाह्लीक मनु के पास आया और उनसे इस प्रकार बोला—"हे पिता ! अंगिरस मुनि तो मुझे धन देकर वैकुण्ठ लोक को चले गये, परन्तु उत्तर दिशा से आया हुआ एक मनुष्य मुझे वह धन नहीं लेने देता। उसका कहना है कि यह मेरा धन है। अस्तु, तुम इसे नहीं ले सकते। जब उसके पूछने पर मैंने अपना नाम बताया तो उसने यह कहा कि तुम अपने पिता के पास जा कर पूछो। इस सम्बन्ध में वे जो कहेंगे, मैं उसे स्वीकार कर लूँगा। अस्तु, मैं आप से यह पूछने आया हूँ कि अब मुझे क्या करना चाहिए?" यह सुनकर मनु ने आश्चर्य में भर कर शिवजी का ध्यान किया तो उन्हें यह जान पड़ा कि कृष्ण-दर्शन रूप में शिवजी हैं। तब उन्होंने वाह्लीक से कहा, "हे पुत्र ! जो व्यक्ति तुम्हें धन लेने से रोक रहा है, वह अन्य कोई नहीं; अपितु साक्षात् सदाशिव हैं। यज्ञ की जो सामग्री शेष बच जाती है, उस पर भगवान् सदाशिव का ही अधिकार होता है। इस समय वे तुम्हारे ऊपर कृपा करके, तुम्हें दर्शन देने के लिए पधारे हैं। तुम्हें उचित है कि तुम उनके पास जाओ और अपनी सेवा द्वारा उन्हें प्रसन्न करो। मैं भी तुम्हारे साथ चलकर उन परमप्रभु के दर्शन करूँगा।"

हे नारद ! इस प्रकार वाह्लीक को समझाकर, मनु उसे साथ लेकर शिवजी के समीप जा पहुँचे। उस समय वाह्लीक ने हाथ जोड़ कर विनय करते हुए कृष्ण-दर्शन से इस प्रकार कहा—"हे प्रभो ! मेरे पिता ने आपको पहचान लिया है। आप साक्षात् भगवान् सदाशिव हैं।" इसी प्रकार वाह्लीक के पिता श्राद्धदेव मनु ने भी हाथ जोड़ कर कृष्ण-दर्शन रूप शिवजी की बहुत प्रार्थना की। उसी समय मैं तथा विष्णु जी सब देवताओं सहित उस स्थान पर जा पहुँचे तथा भगवान् सदाशिव के उस स्वरूप को देख कर अत्यन्त प्रसन्न हो, स्तुति करने लगे। तब कृष्ण-दर्शन रूपी शिवजी ने वाह्लीक से इस प्रकार कहा—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:28 PM

"हे वाह्लीक ! तुम्हारी सत्यता को देखकर हम अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। अब हम तुम्हें सम्पूर्ण धन अपनी ओर से देते हैं। तुम इसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करो। हम तुम्हें यह भी वरदान देते हैं कि तुम अपने पिता सहित मुक्ति को प्राप्त करोगे।" इतना कह कर शिवजी अन्तर्धान हो गये। तदुपरान्त सब देवता भी वाह्लीक को आशीर्वाद देकर अपने-अपने लोक को चले गये। शिवजी के आशीर्वाद से वाह्लीक चक्रवती राजा हुआ। अन्त में, वह अपने पिता सहित शिवपुरी को गया और वहाँ उसकी गणना शिवजी के गणों में हुई। इस चरित्र को जो कोई सुनता अथवा सुनाता है, उसे भी दोनों लोकों में आनन्द की प्राप्ति होती है।

अड़तालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! अब मैं भिक्षुनाथ अवतार का वृत्तान्त सुनाता हूँ। पूर्व काल में सत्यरथ नामक एक राजा शिवजी का परम भक्त हुआ। वह विदर्भ देश में राज्य करता था। एक दिन शाल्व नामक राजा ने सत्यरथ पर चढ़ाई करके उसके नगर को घेर लिया। उस समय दोनों राजाओं में घोर युद्ध हुआ, जिसमें सत्यरथ पराजित हो कर मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसकी रानी रात्रि के समय किसी प्रकार घर से बाहर निकल भागी। मार्ग में चलते-चलते जब वह थक गयी, तब एक तालाब के समीप वृक्ष के नीचे बैठ गयी। उसी दिन शुभ लग्न में उसने एक पुत्र को जन्म दिया। कुछ देर बाद जब उसे बड़ी ज़ोर से प्यास लगी, तो वह उस तालाब के तट पर पानी पीने के लिए जा पहुँची। वहाँ उसने एक घूँट भी पानी नहीं पीया था कि तभी एक ग्राह ने उसे पकड़ कर, जल के भीतर खींच लिया।

हे नारद ! उस समय शिवजी को उस नवजात-शिशु पर बड़ी दया आयी। तभी उन्होंने ऐसी लीला की कि एक ब्राह्मण की स्त्री घूमती उस बालक के समीप आ पहुँची। उस स्त्री के साथ एक वर्ष की आयु का एक और भी बालक था। जब उसने उस स्थान पर उस बालक को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:28 PM

पड़ा हुआ देखा तो अत्यन्त आश्चर्य में भर कर अपने मन में यह विचार किया कि भला यह किसका बालक है? इस प्रकार विचार करने के उपरान्त जब उसने इधर-उधर बहुत दृष्टि दौड़ायी पर कोई भी स्त्री-पुरुष दिखाई नहीं दिया, तब उसने निश्चय किया कि मुझे इस बालक का अपने पुत्र के समान पालन करना चाहिए, परन्तु जब तक इसके कुल का हाल ज्ञात न हो जाए, तब तक इसे हाथ लगाना उचित नहीं है।

हे नारद ! ब्राह्मणी को ऐसी चिन्ता में पड़े देखकर शिवजी एक भिक्षुक का रूप बनाकर वहाँ प्रकट हो गये और उस ब्राह्मणी से बोले—"हे ब्राह्मणी ! तुम अपने मन में किसी प्रकार का सन्देह मत करो। इसका पालन करने से तुम्हें सब प्रकार का आनन्द प्राप्त होगा।" यह सुनकर उस स्त्री ने प्रसन्न हो कर कहा—"हे महानुभाव ! मैं यह चाहती हूँ कि आप मुझे इसके जन्म तथा कर्म का वृत्तान्त विस्तारपूर्वक सुना देने की कृपा करें।"

हे नारद ! ब्राह्मणी के ऐसे वचन सुनकर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए और इस प्रकार बोले—"हे ब्राह्मणी ! यह विदर्भ देश के राजा सत्यरथ का पुत्र है। इसके पिता को राजा शाल्व ने युद्ध में मार डाला। तब इसकी माता वन में भाग कर चली आयी। इस बालक को जन्म देने के उपरान्त जब वह पानी पीने के लिए तालाब पर गयी, तब एक ग्राह ने उसे पकड़ कर पानी में खींच लिया और खा गया। अपने पूर्व जन्मों के कर्मों के कारण ही इसे ऐसा दु:ख भोगना पड़ा है। अब तुम इसका प्रसन्नतापूर्वक पालन करो।" शिवजी के मुख से ऐसे वचन सुनकर उस ब्राह्मणी ने अत्यन्त आश्चर्य में भर कर कहा—"हे प्रभो ! आप मुझे इस बालक के पूर्व जन्म का वृत्तान्त सुनाने की कृपा करें। मैं तथा मेरा यह बालक भी अत्यन्त दरिद्र हैं, इसका कारण क्या है? कृपा करके यह भी बताइये।"

हे नारद ! ब्राह्मणी की बात सुनकर शिवजी ने उत्तर दिया—"हे ब्राह्मणी ! पूर्व जन्म में इस बालक का पिता माण्डव्य देश का राजा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

था, जो कि दक्षिण दिशा में बसा हुआ है। वह हमारा परम भक्त तथा सदैव प्रदोष-व्रत धारण किया करता था। एक दिन वह राजा प्रदोष-व्रत किये हुए शिवजी का पूजन कर रहा था। उसी समय उसे नगर के बीच में बड़ा कोलहाल सुनायी दिया। राजा उस शब्द को सुनकर हमारा पूजन त्याग, बीच में ही उठकर चल दिया। उधर से मन्त्री उस शत्रु को पकड़ कर अपने साथ ला रहा था, जिसने नगर में आ कर उपद्रव मचा दिया था। राजा के समीप आ कर मन्त्री ने सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा तथा शत्रु को उसके सामने उपस्थित कर दिया। उस समय राजा ने अत्यन्त क्रोध में भर कर उस मनुष्य का सिर अपने हाथ से काट डाला। तदुपरान्त वह उसी अवस्था में लौट कर हमारा पूजन त्याग, भोजन करने बैठ गये। उसके पुत्र ने भी धर्म का पालन नहीं किया। इसीलिए इस जन्म में वह राजा विदर्भ देश का राजा बन कर शाल्व के हाथों से मारा गया है। तुम्हारे सामने जो बालक पृथ्वी पर पड़ा हुआ है, यह उसी का पुत्र है। इसकी माता का, जिसे कि ग्राह ने खा लिया है, वृत्तान्त यह है कि पूर्व जन्म में वह सत्यरथ की रानी थी। वहाँ उसने अपनी सौत को धोखा देकर मार डाला था। तुम्हारे पुत्र का यह वृत्तान्त है कि यह अपने पिछले जन्म में ब्राह्मण था। वहाँ इसने अपना सम्पूर्ण जीवन दान लेते ही बिताया, परन्तु किसी को अपनी ओर से कुछ नहीं दिया। इस कारण यह इस जन्म में दरिद्र हुआ है। अब शिवजी के पूजन से कल्याण होगा।''

हे नारद ! इतना कह कर शिवजी ने उसी ब्राह्मणी को अपने मुख्य स्वरूप से दर्शन दिया, जिससे वह अत्यन्त प्रसन्न हो कर स्तुति करने लगी। तदुपरान्त जब शिवजी अन्तर्धान हो गये, तब वह बालक को उठा कर तथा अपने बालक को साथ लेकर चक्र नामक एक गाँव में आयी और वहीं रह कर उन दोनों बालकों का पालन-पोषण करने लगी। जब वे दोनों बालक कुछ बड़े हुए तो शाण्डिल्य मुनि से शिक्षा प्राप्त कर, शिवजी की भक्ति करने लगे। एक दिन जब वे दोनों महानदी में स्नान करके, शिवजी का बाना धारण किए हुए अपने घर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:28 PM

को लौट रहे थे, उसी समय शिवजी ने उन दोनों को अपना भक्त जान कर कृपापूर्वक यह लीला की कि उन्हें मार्ग में धन से भरा हुआ एक घड़ा प्राप्त हुआ। उस घड़े को उठा कर वे दोनों अपनी माता के पास ले आये और उसे सब हाल कह सुनाया।

हे नारद ! जब उन दोनों को शिवजी का व्रत करते हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया, तब शिवजी ने यह लीला की कि एक दिन उन दोनों ने वन में एक गन्धर्व की कन्या को देखा। राजा के पुत्र ने उसके समीप पहुँच कर वार्तालाप करने के उपरान्त उसके साथ अपना विवाह कर लिया। तत्पश्चात् जब वे दोनों बालक बड़े हुए तो शिवजी की कृपा से राजपुत्र ने अपने राज्य को पुनः प्राप्त कर लिया। उस समय उनका नाम संसार में धर्मगुप्त प्रसिद्ध हुआ। वह ब्राह्मणी भी राजमाता बन कर आनन्दपूर्वक अपना समय व्यतीत करने लगी। ब्राह्मण के पुत्र का नाम शुचिव्रत हुआ। उसे धर्मगुप्त ने अपना मंत्री बना लिया। शिवजी के अवतार की यह कथा अत्यन्त पवित्र तथा दोनों लोकों में आनन्द प्रदान करने वाली है। भिक्षुनाथ नामक शिवजी के अवतार का स्मरण करने से मनुष्यों के सब प्रकार के कष्ट दूर हो जाते हैं।''

उन्चासवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं निर्जरेश्वर अवतार का वृत्तान्त कहता हूँ। प्रसिद्ध तपस्वी व्याघ्रपाद मुनि के घर एक बालक उत्पन्न हुआ। उसका नाम उपमन्यु रखा गया। भाग्यवश मुनि को दरिद्रता ने आ घेरा, जिसके कारण वह बालक अपनी माता के घर जा कर रहने लगा। एक दिन संयोग से उसे थोड़ा-सा दूध पीने के लिए मिला। उसे पी कर उपमन्यु की यह इच्छा हुई कि हम कुछ और दूध पीयें। अस्तु, वह हठ करके अपनी माता से बार-बार दूध माँगने लगा। उसने जौ कूट कर उन्हें पानी में घोल लिया और उपमन्यु को यह कह, वह पानी पीने के लिए दिया कि वह दूध है। उपमन्यु ने उस जौ के पानी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

को पी कर अपनी माता से कहा—"यह तो दूध नहीं है। तू मेरे पीने के लिए दूध ला दे।" इस प्रकार रो-रो कर अनेक बार अपनी माता से दूध माँगा। तब उसकी माता ने पिछले जन्म में शिवजी के नाम पर कुछ दान नहीं दिया, इसलिए मुझे इस जन्म में धन नहीं मिला है। तू इतने से ही अनुमान कर ले कि हम लोग वन में रहते हैं और दोनों समय खाने के लिए भोजन भी कठिनाई से प्राप्त कर पाते हैं।"

हे नारद ! माता के यह वचन सुन कर उपमन्यु को अपने पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण श्रेष्ठ बुद्धि प्राप्त हुई। तब उसने अपनी माता से यह कहा—"हे माता ! मैं शिवजी की तपस्या करके उन्हें अपने ऊपर प्रसन्न करूँगा और वरदान में क्षीर समुद्र को माँग लूँगा।" इतना कह कर उपमन्यु अपनी माता से आज्ञा ले कर हिमालय पर्वत पर जा पहुँचा। वहाँ वह पंचाक्षर मन्त्र का जप करते हुए, वन के फल-फूलों द्वारा शिवजी का पूजन, ध्यान एवं तप करने लगे। उस समय तीनों लोक इसकी तपस्यी की अग्नि से जलने लगे। तब मैं देवताओं की विनती सुनकर शिवजी के पास गया और प्रार्थना करने के उपरान्त उन्हें सब वृत्तान्त कह सुनाया। उस समय शिवजी ने हँस कर यह उत्तर दिया—"हे ब्रह्मन् ! उपमन्यु दूध के लिए ऐसा उग्र तप कर रहा है, अतः हम उसे वर देने के लिए अवश्य जायेंगे।"

हे नारद ! शिवजी की आज्ञा सुनकर जब मैं अपने लोक को लौट आया, तब शिवजी उपमन्यु की परीक्षा लेने के लिए इन्द्र का स्वरूप धारण कर उसके समीप जा पहुँचे। उन्होंने गिरिजा का स्वरूप शची जैसी बनाया, नन्दी को ऐरावत् हाथी का स्वरूप प्रदान किया तथा गणों को देवताओं के रूप में परिवर्तित कर अपने साथ ले लिया। इस प्रकार वे उपमन्यु के पास जा कर कहने लगे—"हे उपमन्यु ! तुम्हारी जो इच्छा हो, वह वर हम से माँग लो।" यह सुनकर जब उपमन्यु ने अपने नेत्र खोल कर उन्हें देखा तो यह समझा कि मेरे सामने इन्द्र खड़े हुए हैं। अस्तु, उसने हाथ जोड़ कर यह कहा—"हे देवराज इन्द्र ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ। आप कृपा करके मुझे शिवजी का तप करने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:28 PM

की शक्ति प्रदान करें। मैं शिवजी के अतिरिक्त अन्य किसी से वर नहीं मागूँगा। उपमन्यु के मुख से यह वचन सुनकर इन्द्र रूप शिवजी ने उत्तर दिया—"हे मुनि पुत्र ! हम सब देवताओं के राजा इन्द्र हैं। तू हमारी पूजा कर और जो जी चाहे, वह वरदान माँग ले। शिवजी दक्ष प्रजापति के शाप के कारण भूत-स्वरूप हैं तथा परम अशुभ वेषधारी हैं। इसीलिए अब उनका कोई वचन सत्य नहीं होता। भला, ऐसे देवता की पूजा करने से तुझे क्या लाभ हो सकेगा?"

हे नारद ! इन्द्ररूपी शिवजी के मुख से ऐसे वचन सुनकर उपमन्यु ने अत्यन्त क्रोध में भर कर इस प्रकार कहा—"हे इन्द्र ! क्या तुम्हारी बुद्धि कुण्ठित हो गयी है, जो तुम शिवजी को नहीं पहचान पाते? शिवजी तीनों गुणों से परे शुद्ध, पवित्र, निर्गुण, सगुण, परब्रह्म तथा सब के स्वामी हैं। मैंने तुम्हारे द्वारा शिवजी की निन्दा सुनी है, इसीलिए मुझे भी अत्यन्त पाप लगेगा। अब मुझे उचित है कि मैं तुम्हें भी नष्ट कर डालूँ और स्वयं भी मर जाऊँ।" इतना कहकर उपमन्यु ने भस्म लेकर मन्त्र पढ़ा और स्वयं सब प्रकार से पवित्र हो, उस भस्म को इन्द्ररूपी शिवजी पर छोड़ दिया, तदुपरान्त यह इच्छा प्रकट की उसी भस्म के द्वारा मैं स्वयं भी जल कर भस्म हो जाऊँ। उपमन्यु की ऐसी निष्ठा देखकर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए। उसी समय शिवजी के संकेत को समझ कर नन्दी ने उस भस्मास्त्र को अपने हाथ में पकड़ लिया जिससे प्रकट होने वाली प्रज्वलित अग्नि शान्त हो गयी।

हे नारद ! इस चरित्र को करने के उपरान्त शिवजी अपने मुख्य रूप से उपमन्यु के सम्मुख प्रकट हो गये। उस समय सब देवता भी उस स्थान पर जा पहुँचे तथा शिवजी की स्तुति करने लगे। उपमन्यु ने जब शिवजी को सम्मुख खड़ा देखा, तो चरणों पर गिर उन्हें प्रणाम किया तथा बहुत प्रकार से स्तुति करते हुए अपने अपराध की क्षमा मांगी। उस समय शिवजी ने उपमन्यु को अपने समीप बुलाकर, उसके सम्पूर्ण शरीर पर हाथ फेरा। फिर अपने पास बैठा कर कृपा दृष्टि से देखते हुए इस प्रकार कहा—"हे उपमन्यु ! हम तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हैं। आज से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गिरिजा तुम्हारी माता और हम तुम्हारे पिता होंगे। तुम सदैव युवा बने रहोगे तथा किसी प्रकार का पाप तुम्हें कभी नहीं लगेगा। तुम्हारे ऊपर मृत्यु का कोई वश नहीं चलेगा। तुम्हें दूध, दही, घृत तथा शहद के अनेक समुद्र प्राप्त होंगे। हमारे भक्तों में तुम्हारा स्थान अत्यन्त ऊँचा होगा।'' इतना कहकर शिवजी अन्तर्धान हो गये। तब उपमन्यु भी अपने आश्रम को लौट आये। हे नारद ! इस चरित्र को जो कोई पढ़ता तथा सुनाता है, वह भी सदैव आनन्दित रहता है।''

पचासवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं तुमसे जटाधारी अवतार का वर्णन करता हूँ। जब गिरिजा माता-पिता से आज्ञा लेकर भगवान् सदाशिव को पतिरूप में प्राप्त करने की अभिलाषा से तपस्या करने के लिए वन में पहुँची, उस समय शिवजी ने सप्तऋषियों को गिरिजा की परीक्षा लेने के निमित्त उनके समीप भेजा। परन्तु गिरिजा उनके धोखे में किसी प्रकार नहीं आयी तथा दृढ़तापूर्वक तपस्या में संलग्न बनी रही। उस समय शिवजी स्वयं गिरिजा को देखने की इच्छा से जटाधारी ब्राह्मण का स्वरूप बनाकर उनके पास पहुँचे। वहाँ बहुत वार्तालाप एवं विवाद के उपरान्त भी जब वे गिरिजा को अपने दृढ़ निश्चय से नहीं डिगा सके, तो उन्होंने प्रसन्न हो कर गिरिजा को अपने मुख्य स्वरूप का दर्शन कराया तथा कहा—''हे गिरिजे ! तुम मुझे अत्यन्त प्रिय हो। मैंने तुम्हारी परीक्षा लेने के निमित्त ही यह सब चरित्र किया था। तुम मेरे साथ कैलाश पर्वत पर चलो और मुझे प्रसन्नता प्रदान करो।'' यह सुनकर गिरिजा ने यह उत्तर दिया—''हे प्रभो ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं, तो आप मेरे पति बनकर मेरे साथ विवाह करना स्वीकार करें।'' गिरिजा की यह अभिलाषा जानकर शिवजी एवमस्तु कहकर अन्तर्धान हो गये। हे नारद ! जटाधारी अवतार का यह चरित्र भी आनन्द-मंगल को बढ़ाने वाले तथा कीर्ति बढ़ाने वाला है।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:29 PM

इक्यावनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! अब मैं तुम्हें नर्तकनट अवतार का वृत्तान्त सुनाता हूँ। गिरिजा को वर देने के पश्चात् शिवजी एक दिन नर्तकनट का स्वरूप धारण कर हिमाचल के घर गये। वहाँ हिमाचल तथा मैना को प्रसन्न कर, उन्होंने भिक्षा के बदले गिरिजा को माँगा। पहले तो हिमाचल ने उनके ऊपर क्रोध किया, परन्तु जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि यह शिवजी हैं तो उन्होंने गिरिजा का विवाह उनके साथ करना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार शिवजी ने बड़ी लीलाएं करके गिरिजा के साथ विवाह किया। नर्तकनट अवतार का चरित्र भी भक्तों को आनन्द प्रदान करने वाला है।

हे नारद ! जब मैना ने यह जान लिया कि शिवजी सब से श्रेष्ठ तथा सब के स्वामी हैं, तब उन्होंने शिवजी के साथ अपनी कन्या का विवाह कर देना उचित समझा। उस समय देवताओं ने परस्पर यह सम्मति की कि मैना तथा हिमाचल की श्रेष्ठ बुद्धि को किसी प्रकार नष्ट कर देना चाहिए। इस प्रकार का निश्चय करके सब देवता पहले तो मेरे पास आये, तदुपरान्त मेरी आज्ञा से शिवजी के पास जा कर यह कहने लगे—"हे प्रभो ! यदि हिमाचल आपको सदाशिव समझकर गिरिजा का विवाह करेगा, तो वह इसी शरीर से आपके लोक को प्राप्त हो जायेगा। उस समय रत्न आदि अद्‌भुत वस्तुएँ कहाँ से प्राप्त होंगी? ऐसी स्थिति में आप कोई ऐसा उपाय कीजिए, जिससे उसका यह दिव्यज्ञान नष्ट हो जाए।" देवताओं की यह प्रार्थना सुनकर शिवजी वैष्णव ब्राह्मण का स्वरूप धारण कर हिमाचल के पास गये और उनसे इस प्रकार कहने लगे—"हे राजन् ! तुम राजा हो कर शिव जैसे अवधूत के साथ अपनी पुत्री का विवाह करने के लिए क्यों आतुर हो रहे हो? तुम्हें ऐसा करना कदापि उचित नहीं है। शिवजी अशुभ वेषधारी तथा अमंगलों के घर हैं।" तब उन्होंने उनकी बात मानकर, शिवजी के साथ अपनी पुत्री का विवाह न करना ही उचित समझा। इस चरित्र को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:29 PM

करने के उपरान्त शिवजी कैलाश पर्वत पर लौट आये। फिर वहाँ से उन्होंने सप्तर्षियों को हिमाचल के पास समझाने-बुझाने के लिए भेजा। तब सप्तर्षियों ने आकर हिमाचल तथा मैना को बहुत समझाया-बुझाया और गिरिजा का विवाह शिवजी के साथ करा दिया। द्विजावतार की यह कथा सुनने तथा सुनाने से दोनों लोकों में आनन्द प्रदान करने वाली है।''

बावनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! अब तुम अश्वत्त्थामा अवतार की कथा सुनो। ब्राह्मणों में परमश्रेष्ठ द्रोणाचार्य को कौरवों ने अपना गुरु मान कर, उनसे धनुर्विद्या प्राप्त की थी। उन्हीं द्रोणाचार्य ने कठिन तपस्या द्वारा शिवजी को प्रसन्न किया। तब शिवजी ने द्रोणाचार्य के समीप पहुँच कर यह कहा—''हे द्रोणाचार्य ! हम तुम्हारे तप से अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं, अस्तु तुम जो चाहो, वर वरदान हम से माँग लो।'' यह सुनकर द्रोणाचार्य ने शिवजी की स्तुति करते हुए कहा—''हे प्रभो ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो यह वरदान दीजिये कि मुझे आपके अंश से एक पुत्र की प्राप्ति हो। वह बालक मुझ सहित कौरवों को आनन्द प्रदान करने वाला, अत्यन्त बलवान् तथा मृत्यु को जीतने वाला हो।'' द्रोणाचार्य की प्रार्थना सुनकर शिवजी उन्हें इच्छित वरदान देकर अन्तर्धान हो गये। तब उन्होंने अत्यन्त प्रसन्न हो, अपनी स्त्री के समीप जाकर सब समाचार कह सुनाया। कुछ समय पश्चात् शिवजी की कृपा और उन्हीं के अंश द्वारा, द्रोणाचार्य की पत्नी के गर्भ से एक बालक ने जन्म लिया। उसका नाम अश्वत्त्थामा रखा गया।

हे नारद ! अश्वत्त्थामा ने द्रोणाचार्य की आज्ञा पा कर कौरवों का पक्ष लिया था। विष्णु जी की प्रेरणा से अर्जुन ने शिवजी का तप किया और शिवजी द्वारा पाशुपत-अस्त्र प्राप्त किया। इतने पर भी अश्वत्त्थामा ने अपना तेज ऐसा प्रदर्शित किया कि कोई भी उसका कुछ न बिगाड़

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सका। जब उसने पाण्डवों के पुत्रों का वध कर डाला, उस समय अर्जुन ने जब रथ पर चढ़ कर अश्वत्त्थामा का पीछा किया था, तब अश्वत्त्थामा अपने मन में कुछ भी भयभीत न हो कर, युद्ध करने के लिए सामने खड़ा हो गया। उसने अर्जुन के ऊपर अपने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर दिया। उस समय अर्जुन ने अत्यन्त दुःखी हो कर श्रीकृष्ण जी से यह कहा—''हे श्रीकृष्ण जी अश्वत्त्थामा द्वारा छोड़े गये ब्रह्मास्त्र की ज्वाला हम सब को भस्म करती हुई सामने चली आ रही है। आप इससे हमारी रक्षा करने का उपाय करें।''

हे नारद ! अर्जुन की प्रार्थना सुनकर श्रीकृष्ण जी अर्जुन से इस प्रकार बोले—''हे अर्जुन ! तुम इस अस्त्र का प्रभाव समाप्त करने के लिए शिवजी द्वारा दिये गये पाशुपत अस्त्र का प्रयोग करो। उसके बिना इस अस्त्र की ज्वाला किसी प्रकार शान्त नहीं होगी।'' यह सुनकर अर्जुन ने पाशुपत अस्त्र का प्रयोग करके ब्रह्मास्त्र को निष्फल कर दिया। इस दृश्य को देखकर अश्वत्त्थामा ने यह विचार करके कि संसार में पाण्डवों का वंश ही न रहे, अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भ में जो बालक स्थित था, उसका वध करने के निमित्त पुनः अपने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। उस समय उत्तरा अत्यन्त व्याकुल हो कर श्रीकृष्ण जी की शरण में गयी। श्रीकृष्ण जी ने अपने चक्र द्वारा उत्तरा के गर्भ की रक्षा की। हे नारद ! अश्वत्त्थामा अवतार का यह चरित्र अत्यन्त पवित्र है और सम्पूर्ण संसार को आनन्द प्रदान करने वाला है। अश्वत्त्थामा अजर-अमर है। वे इस समय भी गंगा के तट पर वास करते हैं तथा सब की दृष्टि से छिपे रहते हैं। उनकी कथा सुनने तथा सुनाने से अत्यन्त पुण्य होता है तथा सम्पूर्ण मनोकामनाओं की प्राप्ति होती है।''

तिरपनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! अब तुम किरातेश्वर अवतार का वृत्तान्त सुनो। पूर्वकाल में चन्द्रवंश में ययाति नामक एक राजा हुए।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:29 PM

उनके पाँच पुत्र उत्पन्न हुए। उनमें पुरु नामक सब से छोटा पुत्र शर्मिष्ठा नामक रानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। पुरु ने राज्य पा कर धर्मपूर्वक अपनी प्रजा का पालन किया। उसी के कुल में शान्तनु नामक राजा उत्पन्न हुआ। उस राजा की गंगा तथा सरस्वती नामक दो स्त्रियाँ थीं। गंगा से जिस पुत्र की उत्पति हुई, उसका नाम भीष्म था। भीष्म बड़ा, तपस्वी, जितेन्द्रिय तथा सत्यवादी था। शान्तनु की दूसरी रानी सत्यवती के गर्भ से चित्रांगद तथा विचित्रवीर्य नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। उनमें से चित्रांगद को चित्रांगद नाम के ही एक गन्धर्व ने मार डाला, जिसके कारण विचित्रवीर्य राज्य का स्वामी हुआ।

हे नारद ! विचित्रवीर्य की दो रानियाँ थीं। वह उन्हीं के साथ भोग-विलास किया करता था, जिसके कारण उसे राजयक्ष्मा रोग हो गया। अनेक उपाय करने पर भी राजा का वह रोग दूर न हो सका और एक दिन उसकी निःसन्तान अवस्था में ही मृत्यु हो गयी। इस प्रकार राजा शान्तनु का वंश नष्ट हो गया। व्यास जी ने विचित्रवीर्य की दोनों रानियों के गर्भ से सन्तान की उत्पत्ति की। इनमें बड़ी रानी के गर्भ से धृतराष्ट्र उत्पन्न हुए, जो जन्म से ही अन्धे थे। छोटी रानी के गर्भ से पाण्डू का जन्म हुआ, तीसरी बार राजा की दासी जब व्यास जी के समीप पहुँची तो उसके गर्भ से विदुर नामक विष्णुभक्त का जन्म हुआ। इन तीनों बालकों को देखकर सत्यवती अत्यन्त प्रसन्न हुई। व्यास जी द्वारा उत्पन्न तीनों बालक अत्यन्त प्रतापी तथा धर्मात्मा हुए। धृतराष्ट्र का विवाह सुवल की कन्या गान्धारी के साथ हुआ था, तथा राजा शूरसेन की पुत्री वसुदेव की बहन कुन्ती के साथ पाण्डु का विवाह हुआ। पाण्डु की दूसरी रानी का नाम माद्री था। वह मद्रदेश के राजा की पुत्री थी।"

हे नारद ! धृतराष्ट्र के दुर्योधन आदि सौ पुत्र उत्पन्न हुए तथा पाण्डु के युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव—ये पाँच पुत्र उत्पन्न हुए, इनमें से पहले तीन पुत्र कुन्ती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे तथा नकुल और सहदेव ने माद्री के गर्भ से जन्म लिया था। राजा देवक की पुत्री

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:29 PM

पारशवी का विवाह विदुर के साथ हुआ था। उसने भी अनेक धर्मात्मा पुत्रों को जन्म दिया। इन सब राजपुत्रों में भीम अत्यन्त बलवान् था और वह अपने बल के कारण अनेक प्रकार के उपद्रव मचाया करता था। दुर्योधन को भीम का स्वभाव अच्छा नहीं लगता था और वह सदा इस घात में लगा रहता था कि किसी उपाय से भीम को मार डाला जाए। इस प्रकार आरम्भ से ही धृतराष्ट्र के पुत्र कौरवों तथा पाण्डु के पुत्र पाण्डवों में शत्रुता हो गयी। तदुपरान्त एक दिन मन्त्री के उपदेश से धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को वारणावत में लाक्षाभवन के भीतर जलाने के लिए भेजा, परन्तु शिवजी की कृपा एवं विदुर की सम्मति से वे जीवित बच गये। वहाँ से पाण्डव दक्षिण देश की ओर चले। मार्ग में भीम ने हिडंब नामक दैत्य को मारा। फिर व्यास जी का उपदेश पा कर सब पाण्डव चक्रपुर में रहने लगे। द्रौपदी के स्वयंवर का समाचार सुनकर वे अपनी माता कुन्ती सहित राजा द्रुपद के यहाँ गये। वहाँ अर्जुन ने मत्स्य वेधने के उपरान्त द्रौपदी को जीता और सभी पाण्डवों के साथ द्रौपदी का विवाह हुआ।

हे नारद ! पाण्डवों की वीरता का समाचार सुनकर, राजा धृतराष्ट्र ने उन्हें अपने पास बुला लिया और आधा राज्य देकर खाण्डवप्रस्थ में रहने की आज्ञा प्रदान की। तदुपरान्त अर्जुन तीर्थाटन करते हुए द्वारका में पहुँचे। वहाँ उन्होंने श्रीकृष्ण जी की सम्मति से सुभद्रा का हरण किया तथा उसके साथ अपना विवाह कर लिया। इसी सुभद्रा के गर्भ से अभिमन्यु का जन्म हुआ था।

हे नारद ! अब मैं दूसरे प्रकार से अर्जुन के बल का वर्णन करता हूँ, पूर्व समय में श्वेतकी नामक एक राजा शिवजी का परमभक्त था। शिवजी ने उसकी सेवा से प्रसन्न हो कर दुर्वासा ऋषि को यह आज्ञा दी कि तुम जा कर राजा श्वेतकी का यज्ञ करा दो। शिवजी की आज्ञानुसार दुर्वासा ने उस राजा का यज्ञ कराया। वह यज्ञ ऐसा था कि बारह वर्षों तक निरन्तर घृत की धार यज्ञ की अग्नि में गिरती रही। उसके कारण अग्नि अत्यन्त तृप्त हो, अजीर्ण के कारण निस्तेज हो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गई। उस समय अग्नि ने मेरे पास आ कर यह प्रार्थना की कि मैं अत्यन्त व्याकुल हूँ। अस्तु, आप मेरे अजीर्ण को दूर करने का कोई उपाय कीजिए। तब मेरी आज्ञा से अर्जुन तथा कृष्ण ने अग्नि को अपनी शरण में लेकर उसे खाण्डव वन जलाने की आज्ञा दी। उस वन में मय नामक एक दानव रहता था। उस दानव को अर्जुन ने श्रीकृष्ण की आज्ञा मान कर, वन से भाग जाने दिया। उस उपकार के कारण मयदानव ने पाण्डवों के लिए एक ऐसी सभा का निर्माण किया, जिसमें जल तथा थल का कोई भी भेद ज्ञात नहीं होता था। जब दुर्योधन उस सभा को देखने के लिए आया तो उसकी बुद्धि भ्रम में पड़ गयी, जिसके कारण दुर्योधन अत्यन्त लज्जित हो गया और उसके हृदय में पाण्डवों का पुराना द्वेष फिर उभर आया।

हे नारद ! उस शत्रुता के कारण दुर्योधन ने जुआ खेल कर पाण्डवों के सम्पूर्ण राज्य तथा धन को जीत लिया। यहाँ तक कि उनकी पत्नी द्रौपदी तक को जुए में जीत लिया। तदुपरान्त दुर्योधन ने पाण्डवों को राजच्युत करके, बारह वर्ष के लिए अपने राज्य से बाहर निकाल दिया। उस स्थिति में सूर्य ने द्रौपदी को एक ऐसा बर्तन दिया जिसके द्वारा प्राप्त होने वाले भोजन से पाण्डव अपना कालक्षेप करते रहे।''

❁❁❁

चौवनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! द्वैतवन में जा कर पाण्डवों ने अनेक प्रकार की विपत्तियाँ उठायीं। उनके पास भोजन के निमित्त सूर्य का दिया हुआ वही पात्र था। उस पात्र में यह गुण था कि जब तक द्रौपदी भोजन नहीं कर लेती थी, तब तक उसके भीतर की भोजन-सामग्री समाप्त नहीं होती थी। दुर्योधन को किसी प्रकार इस बात का पता चल गया। तब उसने यह चाहा कि पाण्डवों को किसी मुनि द्वारा शाप दिला देना चाहिए। अस्तु, वह दुर्वासा के पास पहुँच कर उनकी बड़ी सेवा की और वरदान माँगने की आज्ञा प्राप्त की। दुर्योधन ने उनसे यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:29 PM

कहा—"हे प्रभो ! मैं पाण्डवों का नाश चाहता हूँ।" यह सुनकर दुर्वासा ऋषि ने दुर्योधन को बहुत धिक्कार देते हुए इस प्रकार कहा—"हे दुर्योधन ! ऐसा कभी नहीं हो सकता। फिर भी, तुमने हमारी सेवा की है, इसलिए हम तुम्हारी प्रसन्नता के निमित्त कुछ उपाय करेंगे।"

हे नारद ! दुर्योधन से इस प्रकार कहकर दुर्वासा ऋषि अपने साथ दस सहस्त्र शिष्यों को लिये हुए, पाण्डवों के पास उस समय पहुँचे, जिस समय द्रौपदी भोजन कर चुकी थी। पाण्डवों ने मुनि की यथाविधि पूजा की। उस समय दुर्वासा ने उनसे कहा—"हे पाण्डवो ! हम तुमसे भोजन प्राप्त करना चाहते हैं।" मुनि के यह वचन सुन कर यद्यपि पाण्डव अपने मन में बड़े हताश हुए, फिर भी उन्होंने स्वीकार कर लिया। तब मुनि अपने शिष्यों सहित स्नान करने के लिए नदी तट पर चले गये। इधर पाण्डवों ने सोचा कि मुनि के लौटने तक भोजन तैयार हो सकना कठिन है, इससे अच्छा है कि हम सब लोग मुनि के आने से पूर्व ही मर जाएँ, अन्यथा मुनि हमें शाप देकर नष्ट कर डालेंगे। जिस समय पाण्डव इस प्रकार विचार कर रहे थे, उसी समय यह आकाशवाणी हुई कि "हे पाण्डवो ! तुम किसी प्रकार की चिन्ता न करके, श्रीकृष्ण जी का स्मरण करो। तुम्हारा संकट दूर हो जायेगा।"

हे नारद ! इस आकाशवाणी को सुनकर द्रौपदी सहित सभी पाण्डवों ने श्रीकृष्णचन्द्र जी का स्मरण किया। तब श्रीकृष्ण जी शीघ्र ही उनके पास आ पहुँचे। उन्होंने सूर्य के दिये हुए पात्र को द्रौपदी से माँगा और उस पात्र में साग की एक पत्ती चिपकी हुई देखकर, उसे खा लिया। श्रीकृष्ण जी द्वारा उस पत्ती के खाते ही उधर दुर्वासा ऋषि अपने शिष्यों सहित ही तृप्त हो गये। तदुपरान्त वे पाण्डवों के पास न आकर, नदी-तट से ही अपने आश्रम को चले गये। इस समाचार को सुनकर पाण्डवों को अत्यन्त प्रसन्नता हुई और वे सब श्रीकृष्ण जी की स्तुति करने लगे। उस समय श्रीकृष्ण जी ने उन्हें धैर्य बँधाते हुए कहा—"हे पाण्डवो ! अब हम मथुरा को छोड़, द्वारिकापुरी बसा कर उसमें रह रहे हैं। हम तुमसे यह कहते हैं कि तुम भगवान् सदाशिव की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सेवा किया करो। शिवजी की सेवा किये बिना संकट दूर नहीं होगा।''

हे नारद ! पाण्डवों से इस प्रकार कह कर, श्रीकृष्ण जी अन्तर्धान हो गये। तदुपरान्त पाण्डवों ने एक भील को दुर्योधन के आचरणों की देखरेख के लिए इन्द्रप्रस्थ भेजा। उस भील के वहाँ का सब हाल पाण्डवों को आ सुनाया। तब दुर्योधन के प्रताप तथा वैभव का समाचार पा कर पाण्डवों को अत्यन्त दुःख हुआ। उसी समय पाण्डवों के सम्मुख श्री व्यास जी आ पहुँचे। वे अपने मुख से शिव-नाम का उच्चारण कर रहे थे। व्यास जी को देखकर पाण्डवों ने उनका अत्यन्त सम्मान किया और पूजन आदि करके उन्हें श्रेष्ठ आसन पर बैठाया। फिर इस प्रकार कहा—''हे प्रभो ! वन में आकर हम लोगों ने बहुत दुःख उठाया है। आज आपकी बड़ी कृपा हुई जो यहाँ पधार कर हमें दर्शन दिये। हे नाथ ! आप हमारा उद्धार करें तथा ऐसा उपदेश दें, जिससे हम अपने राज्य को पुनः प्राप्त कर लें।''

हे नारद ! पाण्डवों की प्रार्थना सुनकर व्यास जी ने कहा—''हे पाण्डवो ! तुम परम धन्य हो। तुम्हारे ऊपर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न होंगे और वे तुम्हारे सभी कष्टों को दूर कर देंगे। भगवान् सदाशिव सबके स्वामी हैं तथा देवता, मुनि उनकी सेवा किये करते हैं। अस्तु, हम तुम्हें यह उपदेश देते हैं कि तुम विश्वास एवं प्रेमपूर्वक भगवान् सदाशिव की पूजा करो।''

हे नारद ! व्यास जी के वचन सुनकर पाण्डवों ने पूछा—''हे प्रभो ! हम सब लोग मिलकर शिवजी का पूजन करें अथवा हम में से कोई एक व्यक्ति करें।'' उस समय व्यास जी ने शिवजी का ध्यान धर कर यह उत्तर दिया—''तुम में से केवल अर्जुन को ही पूजा करनी चाहिए। केवल उसी की सेवा से शिवजी तुम सब के ऊपर प्रसन्न होंगे।'' इतना कह कर व्यास जी ने शिव-पूजन की सम्पूर्ण विधि अर्जुन को बतला दी तथा यह कहा—''क्षत्रिय को सर्वप्रथम इन्द्र की सेवा करनी चाहिए। तदुपरान्त शिवजी के मंत्र का जप करो। तुम गंगा तट पर इन्द्रलोक नामक स्थान में पहुँच कर, शिवजी का ध्यान करो।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:29 PM

यह कह कर व्यास जी ने अर्जुन को इन्द्र का मंत्र दिया तथा शिवपूजन की विधि एवं दृष्टि बन्ध होने की विद्या प्रदान की। इतना करके व्यास जी अन्तर्धान हो गये।''

❁❁❁

पचपनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! व्यास जी के चले जाने के उपरान्त सभी भाइयों ने अर्जुन को अत्यन्त तेजस्वी रूप में देखा। तदुपरान्त उन्होंने आशीर्वाद देते हुए अर्जुन को तपस्या करने के हेतु विदा किया। वे सब को प्रणाम आदि करके शुभ-मुहूर्त्त में शिवजी का तप करने के लिए चल दिये और गंगा जी के तट पर इन्द्रकील नामक स्थान के निकट पहुँच कर अशोक-वन में स्थित हुए। वहाँ सर्वप्रथम वेदी बनाकर, उन्होंने गुरु की अराधना की। तदुपरान्त आसन पर बैठकर पंचसूत्र पार्थिव का विधिपूर्वक निर्माण किया। फिर वे पार्थिव-पूजन के मंत्र का जप करने लगे।

हे नारद ! तपस्या के प्रभाव से जब अर्जुन के मस्तक से प्रकाश निकलने लगा, उस समय उस वन में रहने वाले इन्द्र के सेवकों ने इन्द्र के पास जा कर यह प्रार्थना की कि हे प्रभो ! अशोक-वन में न जाने ऐसा कौन-सा तपस्वी तप कर रहा है, जिसके मस्तक से उत्पन्न हुई अग्नि के कारण हम सब जलने से कुछ ही बच गये हैं। सेवकों की बात सुनकर जब इन्द्र ने ध्यान धर कर विचार किया तो उन्हें ज्ञात हुआ कि यह कार्य हमारे पुत्र अर्जुन का है। उस समय अर्जुन को दुःखी देखकर इन्द्र को भी बहुत शोक हुआ। तदुपरान्त वे वृद्ध ब्राह्मण का स्वरूप धारण कर, हाथ में लाठी लिये हुए, अर्जुन के समीप जा कर खड़े हो गये। जब अर्जुन ने उन ब्राह्मणरूपी इन्द्र को अपने सामने खड़ा हुआ देखा, तो उनका हर प्रकार से स्वागत-सम्मान किया। उस समय इन्द्र ने अर्जुन से पूछा—''हे क्षत्रिय-पुत्र ! तुम ऐसा कठोर तप किस लिए कर रहे हो?''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे नारद ! ब्राह्मणरूपी इन्द्र के वचन सुनकर अर्जुन ने उन्हें सब हाल सुनाया। तब इन्द्र ने यह उत्तर दिया—"हे अर्जुन ! तुम्हारा तप करना व्यर्थ है। सांसारिक सुख तो थोड़े दिन तक रहते हैं। अस्तु मनुष्य को इन सुखों के मोह में न पड़कर, मुक्ति का विचार करना चाहिए। मुक्ति देना इन्द्र के वश की बात नहीं है। जो देवता मुक्ति प्रदान कर सके, तुम्हें तो उसी की आराधना करनी उचित है।" यह सुनकर अर्जुन ने उत्तर दिया—"हे ब्राह्मण ! आपको इन बातों से क्या प्रयोजन? हम व्यास जी की आज्ञानुसार अपना कार्य कर रहे हैं। अस्तु आप हमें उसके विपरीत उपदेश करने की कृपा न करें।" इन्द्र ने जब अर्जुन की ऐसी दृढ़ता देखी तो उन्हें अर्जुन के ऊपर बहुत प्रेम हुआ। उस समय उन्होंने अपने वास्तविक-रूप में दर्शन दिये तथा यह कहा—"हे पुत्र ! हमने ब्राह्मण बनकर तुम्हारी परीक्षा ली थी। शिवजी मुक्ति-भुक्ति को प्रदान करने वाले हैं। उन्हीं की कृपा से हमने, ब्रह्मा जी ने तथा विष्णु जी ने उच्च पद को प्राप्त किया है। अस्तु, तुम आज से हमारे मन्त्र को त्याग कर, शिवजी के मंत्र का जप करो तथा पार्थिव-पूजन करके उन्हीं का ध्यान धरो। तुम्हारी पूजा में किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित नहीं होगा तथा शिवजी प्रसन्न हो कर तुम्हें वर प्रदान करेंगे।"

हे नारद ! इतना कहकर तथा आशीर्वाद देकर इन्द्र अपने लोक को चले गये। तब अर्जुन ने स्नान एवं अगंन्यास करके शिवजी का ध्यान किया। तत्पश्चात् वे पार्थिव-पूजन करके एक पाँव से सूर्य के सम्मुख खड़े हो गये और शिव-मंत्र का जाप करने लगे। उनके तप को देखकर ऋषि-मुनि भी आश्चर्यचकित हो उठे। जब अर्जुन को कुछ समय इसी प्रकार तपस्या करते व्यतीत हो गया, तब ऋषि-मुनियों ने कैलाश पर्वत पर जाकर भगवान् सदाशिव से यह प्रार्थना की—"हे प्रभो ! अर्जुन आपकी कठोर अराधना कर रहा है। अस्तु, हमारी यह इच्छा है कि आप उसके पास पहुँच कर, वर प्रदान करने की कृपा करें।" शिवजी ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर यह उत्तर दिया—"हे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:29 PM

ऋषियो ! आप लोग अपने-अपने स्थान को जाएं, हम अर्जुन के कार्य को पूरा करेंगे।''

छप्पनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! ऋषि-मुनियों को विदा करने के उपरान्त शिवजी ने यह इच्छा की कि हम अर्जुन के समीप पहुँच कर, उसे वर प्रदान करें। उस समय एक घटना घटी कि दुर्योधन ने जब यह सुना कि अर्जुन राज्य प्राप्ति के हेतु तपस्या कर रहे हैं, तो उसने मुर नामक एक दैत्य को अर्जुन का संहार करने के लिए भेजा। यह दैत्य भैंसे का स्वरूप धारण कर, अर्जुन के समीप जा पहुँचा। अर्जुन ने जब उसे दूर से ही अपनी ओर आते देखा, तो मन में यह जान लिया कि निश्चय ही मेरा कोई शत्रु है और इसे दुर्योधन ने यहाँ भेजा होगा। अस्तु, यह निश्चय कर अर्जुन ने उसे मारने के लिए अपना धनुष-बाण उठा लिया।

हे नारद ! जिस समय अर्जुन उस भैंसे को मारने की तैयारी कर रहे थे, उसी समय शिवजी भीलपति का स्वरूप धारण कर, अपने गणों सहित अर्जुन की परीक्षा लेने तथा वरदान देने के लिए वहाँ आ पहुँचे। वे हाथ में धनुष बाण लिये हुए थे। अस्तु, जिस समय उस भैंसे रूपी दैत्य ने यह इच्छा की कि मैं अर्जुन को अपने सींगों पर उठा कर मार डालूँ, उसी समय भीलपतिरूपी शिवजी ने उसकी पूँछ पर अपने बाण का ऐसा प्रहार किया कि वह बाण शरीर में होता हुआ, उसके मुख-मार्ग से बाहर निकल गया, जिसके कारण उस दैत्य की तत्काल की मृत्यु हो गयी। जिस समय भीलपति ने उस दैत्य के ऊपर अपने बाण का प्रहार किया था, उसी समय अर्जुन ने भी उसके ऊपर अपना बाण चलाया था। अतः जब उन्होंने दैत्य को पृथ्वी पर गिरते हुए देखा तो अपने मन में यह विचार किया कि यह दैत्य मेरे ही बाण से मरा है। अस्तु, वे अपने बाण को लेने के लिए शिव का नाम उच्चारण करते

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:29 PM

हुए, उस दैत्य के समीप जा पहुँचे। उसी समय शिवजी का एक गण भी अपने स्वामी का बाण लेने के लिए वहाँ पहुँच गया।

हे नारद ! उस गण को देखकर अर्जुन ने कहा—"यह दैत्य हमारे बाण से मरा है। अस्तु इसको, मारने वाला बाण हमारा है और उसे प्राप्त करने का अधिकार भी हम हीं को है।" तब गण ने यह उत्तर दिया—"इस राक्षस को हमारे स्वामी भीलपति ने मारा है।" इस प्रकार कुछ देर तक दोनों में बहुत विवाद हुआ, परन्तु अर्जुन ने बाण स्वयं उठा लिया। उस समय शिवजी के गण ने इस प्रकार कहा—"तुम तपस्वियों का रूप धर कर ऐसा छल किस लिए करते हो? एक बाण के लिए तुम्हारा इस प्रकार लोभ करना उचित नहीं है।" यह सुनकर अर्जुन बोले—"अरे मूर्ख ! तू यह क्या कह रहा है? यह बाण मेरे मुख्य चिह्नों ये युक्त है। तू इसे देख ले और व्यर्थ ही विवाद मत कर।" तब गण ने यह उत्तर दिया—"अरे मूर्ख ! तू सच्चा तपस्वी नहीं है, क्योंकि तप करने वाला कभी झूठ नहीं बोलता। मेरा स्वामी परम-तेजस्वी है और उसी का यह बाण है। यह तेरे पास कभी नहीं रह सकता। मेरे स्वामी ने तेरे प्राण बचाने के हेतु अपने इस बाण द्वारा तेरे शत्रु का संहार किया है और तू उनके उपकार को भूल कर ऐसी बातें कर रहा है।"

हे नारद ! उस गण के मुख से ऐसे कठोर वचन सुनकर अर्जुन ने अत्यन्त क्रुद्ध हो कर कहा—"अरे नीच ! तू बड़ा अहंकारी प्रतीत होता है, जो हम से ऐसे कठोर वचन कह रहा है। हमें क्या आवश्यकता पड़ी है कि जो तेरे स्वामी के पास जाकर बाण माँगें? यदि उसे चाहिए तो वह हम से बाण माँग ले अन्यथा तू और तेरे स्वामी में से कोई भी हमारे साथ युद्ध कर ले। उस स्थिति में जो जीतेगा, उसी को वह बाण मिल जायेगा। तू शीघ्र ही अपने स्वामी को हमारे पास बुला ला।" अर्जुन के ऐसे वचन सुनकर वह गण आश्चर्यचकित हो, शिवजी के समीप जा पहुँचा और उन्हें सब समाचार कह सुनाया। उस समय शिवजी ने यह विचार किया कि हमें अर्जुन के तेज तथा शक्ति की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

परीक्षा लेनी चाहिए। अस्तु, वे अपने गणों सहित अर्जुन के समीप जा पहुँचे।''

❁❁❁

सत्तावनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! शिवजी की असंख्य सेना को देखकर भी अर्जुन अपने मन में तनिक भी भयभीत नहीं हुए। वे अपने धनुष बाण लेकर उनके सामने युद्ध करने के लिए जा खड़े हुए। उस समय किरातरूपधारी शिवजी ने सर्वप्रथम संसारी-रीति के अनुसार अर्जुन के पास अपना दूत भेजा और यह कहलवाया कि हे तपस्वी ! तुम हमारी सेना को अपनी आँखों से देखकर परिणाम का विचार कर लो और हमारा बाण हमें लौटा दो। जब दूत ने यह समाचार अर्जुन को दिया तो अर्जुन ने निर्भय हो कर यह उत्तर दिया—''हे दूत ! तू अपने स्वामी से जा कर यह कह दे कि यदि हम भयभीत हो कर तुम्हें बाण लौटा देंगे तो हमारे कुल में दाग लग जायेगा। तू अपने स्वामी से जा कर कह दो कि हम युद्ध करने के लिए तैयार हैं। वह भी मैदान में आ कर हमारी शक्ति को देख लें।''

हे नारद ! अर्जुन की बात सुनकर दूत ने शिवजी के पास पहुँच कर, सब समाचार कह सुनाया। तब भीलपति शिवजी अपनी सेना सहित अर्जुन के साथ युद्ध करने को तैयार हुए। जिस समय उन्होंने युद्ध आरम्भ करने के लिए अपना शंख बजाया, उस समय अर्जुन भी शिवजी का ध्यान धरकर, युद्ध करने के लिए सामने आ पहुँचा। तब शिवजी के गणों ने अपने स्वामी की आज्ञानुसार ऐसी बाण-वर्षा की कि अर्जुन पहले तो कुछ व्याकुल हुए परन्तु फिर शिवजी का ध्यान धरकर उन सब बाणों को काट डाला। तदुपरान्त उन्होंने अपनी बाण-वर्षा द्वारा किरातरूपी शिवजी की सम्पूर्ण सेना के पाँव उखाड़ दिये। केवल शिवजी ही जहाँ के तहाँ खड़े रहे। तब उन दोनों में घोर युद्ध होने लगा। उस युद्ध को देखकर सम्पूर्ण सृष्टि में हाहाकार मच गया।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:30 PM

पृथ्वी काँपने लगी तथा सभी देवता दुःखी हो गये। उस युद्ध में किरातरूपधारी शिवजी अर्जुन को पकड़ कर आकाश की ओर ले गये। वहाँ उन्होंने अर्जुन को दोनों पाँव पकड़ कर चारों ओर घुमाया, परन्तु तो भी अर्जुन ने किसी प्रकार अपनी हार नहीं मानी। अन्त में, शिवजी ने भक्ति के वशीभूत हो, अर्जुन के ऊपर कृपा करके अपने मुख्य रूप को प्रकट कर दिया।

हे नारद ! जिस समय अर्जुन ने यह देखा कि वे जिस स्वरूप का ध्यान किया करते थे, वही स्वरूप नेत्रों के सम्मुख खड़ा है, तो अपने मन में लज्जित हो कर पश्चात्ताप करने लगे। तत्पश्चात् उन्होंने शिवजी को प्रणाम करके यह स्तुति की—"हे प्रभो ! मुझ से अज्ञानावस्था में जो अपराध बन पड़ा है, उसे आप क्षमा करने की कृपा करें।" इतना कह कर जब अर्जुन शिवजी के चरणों पर गिर पड़े, उस समय शिवजी ने उन्हें कृपापूर्वक उठाकर, अपने हृदय से लगा लिया और इसी प्रकार कहा—"हे अर्जुन ! तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। तुम हमारे परमभक्त हो। हमने यह चरित्र तुम्हारी परीक्षा लेने के निमित्त किया था। अब तुम्हारी जो इच्छा हो, वह वर हम से माँग लो।" यह सुनकर अर्जुन ने शिवजी की अत्यन्त प्रार्थना करते हुए कहा—"हे प्रभो ! आप अन्तर्यामी तथा सम्पूर्ण मनोकामनाओं को पूरा करने वाले हैं। अब यदि आप पूछ ही रहे हैं तो आपसे यह माँगता हूँ कि आप मुझे दोनों लोकों की ऋद्धि-सिद्धि प्रदान करने की कृपा करें।" इतना कहकर अर्जुन हाथ जोड़ कर खड़े हो गये।

हे नारद ! अर्जुन की यह प्रार्थना सुनकर शिवजी ने उन्हें अपना पाशुपत अस्त्र देते हुए कहा—"हे अर्जुन ! अब तुम्हारे सभी दुःख दूर हो जायेंगे। हमने तुम्हें अपना भक्त जान कर, यह अस्त्र प्रदान किया है। इसके कारण तुम किसी से भी नहीं हारोगे और सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करोगे। अपने भाइयों सहित पुनः राज्य को प्राप्त करोगे और तुम्हारे सभी संकटों को हम नष्ट करते रहेंगे।" इतना कहकर शिवजी ने अर्जुन के शरीर पर अपना हाथ फिराया तदुपरान्त अनेक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:30 PM 4G 86

आशीर्वाद देकर अन्तर्धान हो गये। उस समय अर्जुन भी अत्यन्त प्रसन्न हो, पाशुपत-अस्त्र को लेकर, वहाँ से अपने स्थान को लौट आये तथा अपने भाइयों को सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। जब बारह वर्ष की अवधि समाप्त हो गयी, तब पाण्डवों ने नगर में पहुँच कर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की। शिवजी की कृपा से उन्होंने, सम्पूर्ण कौरवों का संहार किया तथा युधिष्ठिर ने राज्य सिंहासन को प्राप्त किया। हे नारद ! किरातेश्वर शिव अवतार के इस चरित्र को जो मनुष्य पढ़ता अथवा सुनता है, वह भी अपने सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त कर, शिव लोक में स्थान पाता है।''

ॐॐॐ

अट्ठावनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का वर्णन करता हूँ। जो लोग प्रातःकाल उनका नाम लेते हैं, उन्हें सम्पूर्ण सुख प्राप्त होते हैं। शिवजी के ये बारह अवतार भक्तों के कल्याण के निमित्त पृथ्वी पर हुए थे। फिर ये ज्योतिर्लिङ्ग के नाम से प्रसिद्ध हुए। इन ज्योतिर्लिङ्गों के नाम इस प्रकार हैं— 1. सोमनाथ, 2. मल्लिकार्जुन, 3. महाकाल, 4. ॐ कारनाथ, 5. केदारनाथ, 6. भीमशंकर, 7. विश्वेश्वर, 8. त्र्यम्बक, 9. बैजनाथ अथवा वैद्यनाथ, 10. नागेश, 11. रामेश्वर तथा 12. घुश्मेश्वर।

हे नारद ! इन बारहों अवतारों की अपार महिमा है। अब तुम इन ज्योतिर्लिङ्गों का वृत्तान्त सुनो—पहले सोमनाथ सौराष्ट्र नगर में रहते हैं। दक्षप्रजापति के शाप के कारण जब चन्द्रमा का प्रकाश क्षीण हो गया, तब उसने सोमनाथ शिवलिंग की स्थापना की थी। उसने स्मरण, ध्यान एवं पूजन से सब प्रकार के दुःख तथा शोक नष्ट हो जाते हैं। वहीं पर चन्द्रकुण्ड नामक एक कुण्ड है, जो स्नान करने से सम्पूर्ण पापों को नष्ट कर देता है।

हे नारद ! दूसरे मल्लिकार्जुन श्रीनगर में प्रतिष्ठित हैं। शिवजी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अपने पुत्र स्कन्द को लेने के लिए उस स्थान पर पहुँचे थे और वहीं ज्योर्तिर्लिङ्ग हो कर स्थित हो गये थे। उस ज्योतिर्लिङ्ग के पूजन, दर्शन तथा सेवन से अनेक प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

हे नारद ! तीसरे महाकाल उज्जयिनी में विराजमान हैं। उन्होंने दूषण नामक दैत्य को भस्म करके अपने भक्तों की रक्षा की थी और उसी स्थान पर ज्योतिर्लिङ्ग बनकर प्रतिष्ठित हो गये। उनका दर्शन, सेवन तथा पूजन भी दोनों लोकों में आनन्द प्रदान करने वाला है।

हे नारद ! चौथे ॐकारनाथ विन्ध्याचल पर्वत पर प्रतिष्ठित हैं। वे भुक्ति तथा मुक्ति को प्रदान करने वाले हैं। उनके दर्शन से बड़े-बड़े पाप भी नष्ट हो जाते हैं।

हे नारद ! पाँचवें केदारेश्वर नर नारायण रूप से हिमालय पर्वत के केदार नामक स्थान में विराजमान हैं। वे भरतखण्ड के स्वामी हैं। उनकी सेवा करने पर सभी सांसारिक सुखों की प्राप्ति होती है तथा अपवित्र से अपवित्र प्राणी भी उनके दर्शन पा कर पवित्र हो जाता है।

हे नारद ! छठे भीमशंकर भीमाद्रि पर्वत पर विराजमान हैं। उन्होंने अपने भक्तों की रक्षा के निमिन्त्त भीम नामक दैत्य का संहार किया था। उनका सेवन, पूजन तथा दर्शन सम्पूर्ण आनन्द-मंगलों को देने वाला है।

हे नारद ! सातवें विश्वेश्वर काशी में विराजमान हैं। वे भुक्ति-मुक्ति आदि सम्पूर्ण वस्तुओं को प्रदान करते हैं। उनका दर्शन एवं पूजन करने से परमपद प्राप्त होता है। उनकी पुरी काशी में निवास करने वाला कोई भी प्राणी नरकगामी नहीं होता। वे अपने भक्तों की सम्पूर्ण मनोकामनाओं को पूरी करते हैं।

हे नारद ! आठवें त्र्यम्बक गौतमी नदी के तट पर विराजमान हैं। उन्होंने गौतम के पाप को नष्ट करने के निमित्त अवतार लिया था। उनके दर्शनों से सब प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं।

हे नारद ! नौवें वैद्यनाथ चिताभूमि में विराजमान हैं। उन्होंने रावण के निमित्त अवतार ग्रहण किया था। उनके दर्शन एवं पूजन से सम्पूर्ण

CC-0. Late Pandit Dinanath Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:30 PM

पाप नष्ट हो जाते हैं तथा तीनों लोकों का ऐश्वर्य प्राप्त होता है। उनकी महिमा अनन्त है।

हे नारद ! दसवें नागेश जी दारुकवन में विराजमान हैं। वे अपने भक्तों का पालन करके दुष्टों को दण्ड प्रदान करते हैं।

हे नारद ! ग्यारहवें रामेश्वर सेतुबन्ध में विराजमान है। उन्होंने रामचन्द्र जी को सुख प्रदान किया था तथा उनकी प्रीति के कारण वहीं स्थिति हुए। जो कोई रामेश्वर शिवलिङ्ग को गंगा जल से स्नान कराता है, उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।

हे नारद ! बारहवें घुश्मेश्वर ज्योर्तिलिङ्ग की कथा इस प्रकार है— "दक्षिण दिशा में देवगिरि के समीप एक ग्राम में सुधमा नामक एक ब्राह्मण रहता था। उस ब्राह्मण की दो पत्नियाँ थीं। उनमें दूसरी स्त्री का नाम घुश्मा था। शिवजी की सेवा करने के कारण उसे एक पुत्र की प्राप्ति हुई, परन्तु पहली स्त्री ने सौतियाडाह के कारण उस बालक को मार डाला। यह देखकर शिवजी उस स्थान पर प्रकट हुए और उन्होंने मरे हुए बालक को जीवित कर दिया। इस प्रकार उन्होंने अपनी सेविका घुश्मा को आनन्द प्रदान किया। जो व्यक्ति घुश्मेश्वर शिवलिङ्ग का दर्शन अथवा पूजन करता है, उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।

हे नारद ! शिवजी के ज्योतिर्लिङ्गों की सेवा करके मनुष्य सब प्रकार के मनोरथों को प्राप्त कर सकता है। इनका दर्शन, सेवन तथा पूजन दोनों लोकों में आनन्द प्रदान करने वाला है। जो इस चरित्र को सुनता, पढ़ता अथवा दूसरों को सुनाता है, उसे भी सब प्रकार का सुख प्राप्त होता है तथा उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।"

इति श्री शिवपुराणे ब्रह्मानारदसम्वादे भाषायां शतरुद्रखण्डनाम सप्तमखण्डस्समाप्तः ॥ ७ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:30 PM

ॐ नमः शिवाय

श्री शिव महापुराण
(सरल भाषा)

आठवां खण्ड

पहला अध्याय

सूत जी ने कहा—"हे शौनकादि ऋषियो ! नारद जी इतनी कथा सुनकर ब्रह्मा जी से बोले—"हे पिता ! यद्यपि आपने शिवजी के अनेक चरित्रों का वर्णन किया है, तो भी मुझे तृप्ति नहीं होती है। अस्तु, मैं यह चाहता हूँ कि आप अन्य शिवलिंगों की महिमा का वर्णन करने की कृपा करें।" यह सुनकर ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! शिवलिंगों की कोई संख्या नहीं है। लिंग से भिन्न अन्य कोई वस्तु नहीं है, तो भी, मैंने जहाँ तक अपनी बुद्धि के अनुसार समझा है और कुछ मुझे विष्णु जी के द्वारा ज्ञात हुआ है, वह मैं तुम्हें बताता हूँ।"

हे नारद ! आकाश, अन्तरिक्ष, पृथ्वी तथा पाताल में शिवजी ने जहाँ कहीं किसी देवता, मनुष्य अथवा दैत्य को अपना दर्शन दिया है, वहीं वे लिंग रूप होकर स्थित हो गये हैं। उन शिवलिंगों का पूजन करने से अत्यन्त आनन्द की प्राप्ति होती है। इस पृथ्वी पर शिवजी के असंख्य लिंग स्थापित हैं। उनमें जो अत्यन्त प्रसिद्ध तथा वर्णन करने योग्य हैं, उन्हीं का वृत्तान्त मैं तुमसे कहता हूँ। उन लिंगों में भी जो बड़े तथा अधिक श्रेष्ठ हैं, उन्हें ज्योतिर्लिङ्ग कहा जाता है। ज्योतिर्लिङ्गों में शिवजी पूर्णांश से विराजमान रहते हैं। उन ज्योतिर्लिङ्गों का वृत्तान्त इस प्रकार है—"पहले सोमनाथ सौराष्ट्र में गिरिजा सहित विराजमान हैं। दूसरे मल्लिकार्जुन श्रीशैल पर स्थित हैं। तीसरे महाकाल उज्जयिनी में सुशोभित हैं। चौथे अमरनाथ हिमालय पर्वत पर स्थित हैं। पाँचवें केदारेश्वर केदार स्थान में सुशोभित हैं। छठे भीमशंकर डाकिनी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तीर्थस्थल पर स्थित हैं। सातवें विश्वनाथ काशी में विराजमान हैं। आठवें त्र्यम्बक गौतमी नदी के तट पर स्थित हैं। नौवें वैद्यनाथ चिताभूमि में निवास करते हैं। दसवें नागेश दारुक वन में सुशोभित हैं। ग्यारहवें रामेश्वर सेतु के ऊपर निवास करते हैं तथा बारहवें द्युतिमान् शिवगृह में विराजमान हैं।

जो व्यक्ति प्रभात के समय पवित्र होकर उन बाहरों ज्योतिर्लिङ्गों के नाम लेता है, उसके सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण होते हैं। हे नारद ! इन ज्योतिर्लिङ्गों का प्रभाव तथा महिमा अप्रमेय है। मोक्ष केवल चार प्रकार के व्यक्तियों को ही मिलता है। वे यह हैं—शिवजी के भक्त, वेदपाठी, ज्ञानी तथा ध्यानी। ज्योतिर्लिङ्गों के दर्शन करने से नपुंसक तथा पापी मनुष्य भी ब्राह्मण का जन्म पाकर मुक्त हो जाते हैं। अस्तु, ज्योतिर्लिङ्गों का दर्शन, सेवन, स्मरण तथा पूजन अवश्य करना चाहिए। अब मैं तुमसे उपलिङ्गों का अलग-अलग वर्णन करता हूँ। पहले अन्तकेश अथवा सोमेश्वर उस स्थान पर विराजमान हैं, जहाँ महासागर नामक समुद्र स्थित है। दूसरा रुद्र नामक उपलिङ्ग भृगुकक्ष में है। तीसरे उपलिङ्ग का नाम दुग्धेश, चौथे का कदम्बेश, पाँचवें का भूमीश, छठे का भीमेश्वर, सातवें का लोकनाथ, आठवें का त्र्यम्बक तथा त्रिनयन, नौवें का बैजनाथ, दसवें का भूतेश्वर, ग्यारहवें का गुप्तेश्वर तथा बारहवें का व्याघ्रेश प्रसिद्ध है। इन उपलिङ्गों के दर्शन से मनुष्य को अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है।

हे नारद ! अब तुम उन शिविलिङ्गों का वर्णन सुनो, जो पूर्व दिशा में स्थित हैं—तीर्थराज प्रयाग में ब्रह्मा जी द्वारा स्थापित ब्रह्मेश्वर लिङ्ग विराजमान हैं। सोमश्वर नामक शिवलिङ्ग दशाश्वमेध तीर्थ पर स्थित हैं। भारद्वाजेश्वर तथा माधवेश नामक शिवलिङ्ग शिवटंक में स्थित हैं। नागेश्वर नामक शिवलिङ्ग संकटेश्वर नगर में हैं। काशी में अविमुक्तेश्वर के अतिरिक्त वृद्धबाल, कृतबालेश्वर, तिलभाण्डेश्वर, दशाश्वमेधेश्वर, मणिकृतेश्वर, तारेश्वर, गोधूमेश्वर, महाभूतेश्वर, केदारेश्वर, रामेश्वर, बटुकेश्वर, पूरेश्वेर तथा सिद्ध नागेश्वर नामक शिवलिङ्ग भी विराजमान हैं। पत्तनदेश में दूरेश्वर तथा मृगेश्वर नामक शिवलिङ्ग भी विराजमान

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हैं। वेदों ने जिसकी महिमा का वर्णन किया है, उस बैजनाथ धाम में नागेश्वर, सिद्धेश्वर, विमलेश्वर, कामेश्वर, व्यासेश्वर, भाण्डेश्वर, ओंकारेश्वर, कुमारेश्वर, शुक्रेश्वर, वटेश्वर, सूर्येश्वर, भीमेश्वर, भूतेश्वर, ज्ञानेश्वर, पूरेश्वर, कोटेश्वर, स्वप्नेश्वर, कद्रमेश्वर तथा अचलेश्वर नामक शिवलिङ्ग विराजमान हैं। पुरुषोत्तमपुरी में भुवनेश्वर नामक शिवलिङ्ग हैं। वे अपने दर्शन करने वालों के सम्पूर्ण कष्टों का निवारण करते हैं। वहाँ शिवजी अपने गुरु जगन्नाथ जी के बदले स्थित होकर सब लोगों की मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं, यह सब लिङ्ग पूर्व दिशा में स्थित है।''

दूसरा अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! अब मैं मत्तगयन्द लिंग का वर्णन करता हूँ। एक बार कलियुग के प्रारम्भ में मैंने इच्छा की कि मुझे एक ऐसा यज्ञ करना चाहिए, जिससे धर्म की वृद्धि हो तथा सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाएँ। अस्तु, ऐसा निश्चय करके मैं विष्णु जी के समीप गया और उन्हें अपना मनोरथ कह सुनाया। तदुपरान्त मैंने उनसे यह प्रार्थना की कि आप मुझे कोई ऐसा स्थान बता दीजिए, जो अत्यन्त पवित्र तथा सुन्दर हो और जहाँ जाकर मैं अपने यज्ञ को निर्विघ्न कर सकूँ। उस समय विष्णु जी ने मुझे यह उत्तर दिया—''हे ब्रह्मन् ! चित्रकूट नामक जो सिद्ध पर्वत है, उसे देखने मात्र से ही मनुष्य पाप रहित हो जाता है। वहाँ मन्दाकिनी नदी बहती है, जिसमें स्नान करने से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। वह नदी पर्वत के बीच बहती हुई धनुष के समान प्रतीत होती है। वह स्थान मुझे अत्यन्त प्रिय है। तुम वहाँ जाकर एक पुरी बसाओ और शिवलिंग की स्थापना करो। हम भी बारह अंगुल की प्रतिमा मूर्ति से प्रकट होकर तुम्हारे यज्ञ की वेदी में स्थित रहेंगे।

हे ब्रह्मन् त्रेता तथा द्वापर युग में हम संसार में अवतार लेकर संसार को आनन्द प्रदान किया करते हैं। अस्तु, आगामी त्रेता युग में हम अपने

CC-0. Late R. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:31 PM

चार अंशों द्वारा चार रूप होकर राजा दशरथ के घर में अवतार लेंगे। दंडकवन में जाकर रामेश्वरलिंग की स्थापना करेंगे तथा उनकी सेवा करके वरदान प्राप्त करेंगे। तदुपरान्त हम परिवार सहित रावण का वध करेंगे। शिवजी की सेवा किये बिना कोई कार्य पूरा नहीं होता, यह बात हम तुमसे बिल्कुल सत्य कहते हैं। अतः तुम्हें भी उचित है कि तुम सर्वप्रथम शिवलिंग की स्थापना करो, तत्पश्चात् यज्ञ करना।''

हे नारद ! विष्णु जी की आज्ञानुसार मैंने चित्रकूट पर्वत पर पहुँचकर शिवलिंग की स्थापना की तथा अपने सभी पुत्रों एवं देवताओं सहित उस लिंग की बहुत प्रकार से पूजा तथा स्तुति की। उस समय हमारी सेवा से प्रसन्न होकर शिवजी ने वहाँ प्रकट होकर दर्शन दिये और यह कहा—''हे ब्रह्मन् ! तुम जो चाहो, वह वर हमसे माँग लो।'' यह सुनकर मैंने निवेदन किया—''हे प्रभो ! आप मेरे ऊपर कृपा करके अपने पूर्णांश सहित उस लिंग में स्थित रहें। मैं यहाँ यज्ञ करना चाहता हूँ तथा एक पुरी बसाना चाहता हूँ। मेरी इच्छा है कि उस पुरी के आप राजा हों और आपका यह लिंग मत्तगयन्द के नाम से प्रसिद्ध हो।'' हे नारद ! मेरी इस प्रार्थना को शिवजी ने स्वीकार कर लिया, तदुपरान्त शिवजी उस लिंग के भीतर प्रवेश कर गये। तब मैंने उस स्थान पर यज्ञ करके, विष्णु जी के निमित्त एक पुरी बसायी। उस पुरी को देखने से ही सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। मत्तगयन्द शिवजी उस पुरी के राजा हुए और वह स्थान कैलाश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मन्दाकिनी का घाट शिवगंगा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वहाँ स्नान करने से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य प्रातःकाल मन्दाकिनी में स्नान करके मत्तगयन्द शिवजी का पूजन करता है, वह सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त करता है तथा मृत्यु के उपरान्त शिवलोक में जाता है।

हे नारद ! शंकर्षण पर्वत के पूर्व दिशा की ओर जहाँ कोट नामक परम पवित्र तीर्थ है, वहीं कोटेश्वर नामक शिवलिंग स्थापित है। उस तीर्थ में स्नान करने से तथा कोटेश्वर लिंग के दर्शन, सेवन एवं पूजन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:31 PM

करने से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।

हे नारद ! चित्रकूट के दक्षिण ओर से कुछ आगे चलकर पश्चिम की ओर तुगारण्य नामक पर्वत है, जहाँ गोदावरी नदी बहती रहती है। उस स्थान पर पशुपति नामक शिवलिंग स्थित है। जो मनुष्य गोदावरी में स्नान करने के उपरान्त उस लिंग का पूजन करता है, वह संसार में सदैव प्रसन्न बना रहता है। रामचन्द्र जी ने भी गोदावरी में स्नान करने के उपरान्त पशुपति लिंग का पूजन किया था।

हे नारद ! उक्त स्थान से दक्षिण की ओर कालंजर नामक पर्वत है वह तीनों लोकों में प्रसिद्ध है और वहाँ बहुत से लोगों ने तपस्या करके सिद्धि प्राप्त की है। वहाँ मुक्त क्षेत्र नामक स्थान है, जो सम्पूर्ण पापों को नष्ट करके, अत्यन्त आनन्द प्रदान करता है। उस स्थान पर नीलकंठ नामक शिवजी का लिंग है, जिसे देखने से ही सम्पूर्ण मनोकामनाएँ सिद्ध होती हैं। वहाँ शिवजी गिरिजा सहित विराजमान रहते हैं। उस लिंग की पूजा करके देवता, मुनि तथा सिद्ध आदि ने परम पद प्राप्त किया है।"

तीसरा अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! मैंने नीलकंठ शिवलिंग का जहाँ वर्णन किया है, उसके दक्षिण की ओर अत्रीश्वर नामक शिवजी का लिंग विराजमान है। वह लिंग मधुवन में स्थित है। हमारे पुत्र अत्रि ने जिसकी पत्नी का नाम अनुसूया है, चित्रकूट पर्वत पर अपनी पत्नी सहित शिवजी का ध्यान धरकर, घोर तपस्या की थी। उन्हीं दिनों ऐसा अकाल पड़ा कि सौ वर्षों तक संसार में पानी नहीं बरसा। इसलिए सब ऋषि-मुनि तथा संसारी प्राणी दुःखी हो गये। उस अवस्था में दिनों दिन अशुभ कार्य घटने लगे तथा अकर्मों की वृद्धि होने लगी। संसार की ऐसी दशा को देखकर अनुसूया ने अत्रि से यह कहा—"हे पति ! आप कोई ऐसा उपाय कीजिए, जिससे जल की वर्षा हो और संसार का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:31 PM

आनन्द प्राप्त हो।'' परन्तु अत्रि मुनि उस समय शिवजी के ध्यान में म
थे। अस्तु उन्हें अनुसूया के शब्द सुनाई नहीं पड़े। उस समय अनुसू
दृढ़तापूर्वक पार्थिव पूजन करने लगी।

हे नारद ! अनुसूया के तप से प्रसन्न होकर शिवजी उसके सम्मु
प्रकट हुए। उस समय शिवजी का दर्शन प्राप्त करने के हेतु सभी देवत
तथा ऋषि-मुनि उसी स्थान पर आ पहुँचे। अत्रि और अनुसूया की उ
तपस्या तथा सौभाग्य देखकर, सब लोगों को अत्यन्त आश्चर्य हुअ
और विष्णु जी आदि सब देवताओं ने एक स्वर से यह घोषणा की वि
तप एवं उपासना के निमित्त शिवजी से अधिक श्रेष्ठ अन्य कोई नह
है। वेद ने भी यही बात कही। तत्पश्चात् सब देवता आदि तो अपने-
अपने स्थान को चले गये, परन्तु शिवजी वहीं स्थित रहे। शिवजी वे
कारण गंगा भी वहीं रह गयीं। इस प्रकार अत्रि मुनि को तपस्या करत
हुए चौवन वर्ष का समय और व्यतीत हो गया। एक दिन अत्रि मुनि ने
अपने ध्यान को छोड़कर अनुसूया से जल माँगा। तब अनुसूया
कमण्डलु हाथ में लेकर जल प्राप्त करने के लिए वन में इधर-उधर
भ्रमण करने लगी। उस समय अनुसूया को चिन्तित देखकर, गंगा ने
उनके समीप पहुँचकर यह कहा—''हे अनुसूया ! भला यह तो
बताओ कि तुम कहाँ जा रही हो?''

हे नारद ! गंगा के मुख से ऐसे वचन सुनकर अनुसूया ने प्रसन्न
होकर पूछा—''हे बहन ! तुम कौन हो और किस लिए खड़ी हो? तुम्हे
देखने से मेरे हृदय में अत्यन्त प्रीति उत्पन्न हुई है, इसलिए तुम मुझे
अपना सब वृत्तान्त बताओ।'' उस समय गंगा ने उत्तर दिया—''हे
अनुसूया ! मेरा नाम गंगा है और मैं तुम्हारे आधीन हूँ। अब तुम्हें जो
चाहिए, वह वर मुझसे माँग लो।'' यह सुनकर अनुसूया ने कहा—''हे
गंगे ! यदि ऐसी बात है तो तुम यहीं रहो और मुझे अपने पति के लिए
जल प्रदान करो।''

हे नारद ! यह सुनकर गंगा वहीं स्थित हो गयीं। तदुपरान्त उन्होंने
अनुसूया के कमण्डलु को जल से भर दिया। अनुसूया उस जल को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लेकर अत्रि के पास जा पहुँची। तब अत्रि ने जल पीकर अनुसूया से पूछा—"हे प्रिये ! तुम यह जल कहाँ से लायी हो?" अनुसूया ने उन्हें सब हाल कह सनाया। उस वृत्तान्त को सुनकर अत्रि मुनि अपने आसन से उठकर गंगा के समीप जा पहुँचे और वहाँ स्नान करके स्तुति करने लगे। अनुसूया ने भी अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक गंगा में स्नान किया। उस समय गंगा ने अत्रि तथा अनुसूया से इस प्रकार कहा—"तुम्हारी तपस्या पूर्ण हो चुकी है। अस्तु, अब मैं यहां से जाती हूँ। गंगा के ऐसे वचन सुनकर अत्रि और अनुसूया ने उनसे वहीं रहने की प्रार्थना की। तब गंगा ने यह कहा कि यदि तुम मुझे एक वर्ष के शिवपूजन का फल प्रदान करो तो मैं यहाँ रह सकती हूँ। अनुसूया ने इस बात को स्वीकार कर लिया तथा गंगा वहीं स्थित हो गयीं। उसी समय शिवजी भी अपने मुख्य चिह्नों सहित उस स्थान पर प्रकट हो गये।

हे नारद ! शिवजी के दर्शन पाकर अत्रि तथा अनुसूया अत्यन्त प्रसन्न हुए और प्रार्थना करते हुए यह कहने लगे—"हे प्रभो ! आप यहीं पर स्थित रहिये।" अत्रि की प्रार्थना स्वीकार कर, शिवजी गंगा सहित उस लिंग में स्थित हो गये, जिसकी स्थापना अत्रि तथा अनुसूया ने की थी। अत्रि ने जो लिंग स्थापित किया था, वह अत्रीश्वर शिवलिंग के नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा गंगा मन्दाकिनी नाम से विख्यात हुई। तब अनेक ऋषि-मुनि अपने परिवार सहित उसी स्थान पर आ कर रहने लगे। शिवजी की कृपा से उसी समय संसार में बड़े ज़ोर की वर्षा हुई, जिससे सब प्राणियों को आनन्द प्राप्त हुआ। जो मनुष्य अत्रीश्वर शिवलिंग के दर्शन करता है, उसके सब मनोरथ पूर्ण होते हैं।"

चौथा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! नर्मदा नदी के तट पर असंख्य शिवलिङ्ग हैं। उनकी गणना किसी प्रकार नहीं हो सकती। उस नदी में जितने भी पत्थर पड़े हुए हैं, वे सब शिव रूप हैं। उनकी महिमा अपार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:31 PM 4G 86

है। मैं उनमें से प्रसिद्ध-प्रसिद्ध लिङ्गों का वर्णन करता हूँ। उन शिवलिङ्गों के नाम इस प्रकार हैं—अवतारेश्वर, परमेश्वर, सुखेश्वर, ब्रह्मेश्वर, रमेश्वर, विमलेश्वर, मदनेश्वर, कुमारेश्वर, पुण्डरीकपति, मण्डपेश्वर, तीक्ष्णेश्वर, धनुर्धरेश्वर, शूलेश्वर, कुम्भेश्वर, कुबेरेश्वर, भीमेश्वर, सूर्येश्वर, नागेश्वर, रामेश्वर, नन्देश्वर, कंटकेश्वर तथा चन्द्रेश्वर। जिस स्थान पर नदी समुद्र में मिलती है, वहाँ धृत केश नामक शिवजी का लिङ्ग स्थापित है। रेवा नदी के तट पर नन्दिकेश्वर शिवलिङ्ग स्थित है। वहीं ब्रह्महत्याहर नामक तीर्थ भी है।''

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! आप ब्रह्महत्याहर तीर्थ तथा नन्दिकेश्वर शिवलिङ्ग की महिमा का वर्णन विस्तारपूर्वक करने की कृपा करें।'' ब्रह्मा जी बोले—''हे पुत्र ! एक समय कौरवों और पाण्डवों में महाभयानक युद्ध हुआ, जो महाभारत के नाम से प्रसिद्ध है। युधिष्ठिर आन्तरिक रूप से लज्जित तथा दुःखी बने रहे। एक दिन उन्होंने व्याकुल होकर श्रीकृष्ण जी से यह कहा—''हे प्रभो ! मैंने अपने कुल को नष्ट किया है, जिसके कारण मुझे अनेक प्रकार की हत्याओं का पाप लगा है। अस्तु, आप मुझे कोई ऐसा उपाय बताइये, जिसके द्वारा मैं उन हत्याओं के पाप से मुक्त हो सकूँ।''

हे नारद ! राजा युधिष्ठिर के यह वचन सुनकर श्रीकृष्ण जी ने कहा—''हे धर्मराज ! नन्दिकेश्वर नामक शिवलिंग का दर्शन करने से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। नन्दिकेश्वर लिंग के समीप जो रेवा नदी बहती है, वहीं ब्रह्महत्याहर नामक तीर्थ स्थित है। उस तीर्थ की महिमा तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। वहाँ किसी प्रकार के क्लेश का लेश भी नहीं पाया जाता। तुम्हें उस स्थान की महिमा के सम्बन्ध में एक कथा सुनाता हूँ।

हे राजन् ! उस स्थान पर उतथ्य वंश में उत्पन्न एक ब्राह्मण रहा करता था। अवस्थानुसार वह काशी में जाकर मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसके सात पुत्र थे। पिता की मृत्यु के बाद उन पुत्रों ने पिता के सब धन को आपस में बाँट लिया। कुछ दिनों बाद जब उन लड़कों की माता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:31 PM

की मृत्यु का समय समीप आया, उस समय उसने अपने पुत्रों से यह कहा कि मेरी इच्छा काशी में मरने की थी, परन्तु अब वहाँ मेरा पहुँचना अत्यन्त कठिन है, इसलिए मैं यह चाहती हूँ कि जब मेरी मृत्यु हो जाए, तो तुम मेरी हड्डियों को काशी जी में पहुँचा देना। माता की इस बात को बड़े पुत्र ने स्वीकार कर लिया। तदुपरान्त जब उस वृद्धा की मृत्यु हो गयी तो क्रिया-कर्म करने के पश्चात् सुबाहु नामक बड़ा पुत्र उसकी अस्थियों को लेकर, अपने एक सेवक के साथ काशी जी को चल दिया। पहले दिन वह अपने घर से चलकर बीस योजन की दूरी पर एक गाँव में पहुँचा और वहाँ एक ब्राह्मण के घर ठहरा।

हे नारद ! उस समय यह चरित्र हुआ कि जब चार घड़ी रात्रि व्यतीत हुई, तब घर का स्वामी घर के भीतर पहुँचा और उसने यह चाहा कि गौ को घर में बाँधकर, उसका दूध दुहें। उसी समय गाय के बछड़े ने क्रुद्ध होकर उस ब्राह्मण को एक लात ऐसी जोर की मारी कि वह मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। जब उसे चेतना प्राप्त हुई तो उसने उस बछड़े को इतना मारा कि वह भी मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। इस बीच में ब्राह्मण ने गौ दुह ली। तदुपरान्त वह बछड़े को रस्सी से बाँधकर चला गया। अपने पुत्र की यह दशा देखकर गौ अत्यन्त व्याकुल होकर रोने लगी। गाय ने कहा—"प्रातःकाल जब ब्राह्मण का पुत्र मुझे दुहने के लिए आवेगा, तब मैं अपने सींगों से छेदकर उसे मार डालूँगी।" यह सुनकर बछड़े ने अपनी माता से कहा—"हे माता ! ब्राह्मण को मारना उचित नहीं है, क्योंकि उसके वध से ब्रह्महत्या का पाप लगता है।" यह सुनकर गौ ने उत्तर दिया—"पुत्र ! मुझे वह स्थान ज्ञात है, जहाँ जाने से ब्रह्म हत्या नष्ट हो जाती है।"

हे धर्मराज ! गौ तथा बछड़े की इस बात को सुबाहु ने जब सुना तो उसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ। तदुपरान्त उसने अपने मन में यह निश्चय किया कि मुझे अपना जाना स्थगित करके पहले इस तमाशे को देखना चाहिए। निदान, जब सवेरा हुआ तो घर का स्वामी ब्राह्मण तो बाहर चला गया और उसका पुत्र गाय को दुहने के लिए जैसे ही उसके

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:31 PM

समीप पहुँचा, वैसे ही गौ ने उस ब्राह्मण पुत्र को अपने सींग पर उठाकर मार डाला। ब्रह्म हत्या के कारण उस गौ के शरीर का रङ्ग श्वेत के स्थान पर काला हो गया। उस समय सब लोगों ने उस गौ के बन्धन खोल दिये। तब वह अपनी पूँछ उठाकर एक ओर को भाग चली। सुबाहु इस दृश्य को देखकर ब्रह्म हत्याहर तीर्थ का पता जानने के लिए अपने सेवक सहित उस गौ के पीछे-पीछे चल दिया। तब वह गौ नन्दिकेश्वर शिवलिङ्ग वाले स्थान पर पहुँचकर, रेवा नदी में स्नान करके, पहले की ही भाँति श्वेत हो गयी।

हे नारद ! शिवजी का वह लिंग नन्दिकेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वही लिंग अंशरूप होकर वितल लोक में हाटकेश्वर के नाम से प्रकट हुआ। उस समय ब्राह्मणी ने गंगा जी से जो शिवजी के साथ आयी थी, यह प्रार्थना की—"हे गंगे ! मुझे आपके दर्शनों से अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ है, मेरी यह इच्छा है कि आप भी इसी स्थान पर स्थित रहें।" यह सुनकर गंगा ने उत्तर दिया—"हे ब्राह्मणी ! तुम्हारे समान धन्य तथा सौभाग्यशालिनी स्त्री संसार में अन्य कोई नहीं है; क्योंकि तुम्हारी प्रसन्नता के हेतु शिवजी प्रकट हुए हैं। मैं भी तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ और यह वर देती हूँ कि मैं आज के दिन अर्थात् वैशाख शुक्ल सप्तमी को सदैव यहाँ आया करूँगी।" इतना कहकर गंगा जी भी अंतर्धान हो गयी। उसी दिन से वह स्थान तीर्थरूप में प्रसिद्ध हो गया। हे नारद ! जो मनुष्य उस तीर्थ में जाकर स्नान करता है, उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं तथा उसे दोनों लोकों में आनन्द मिलता है। यह चरित्र अत्यन्त पवित्र तथा मनोभिलाषा पूर्ण करने वाला है।"

पाँचवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे पुत्र ! रेवा नदी शिवजी को गिरिजा के समान अत्यन्त प्रिय है। इस नदी के सभी पत्थर शिवलिंग के समान

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पूजा करने योग्य हैं। रेवा के दोनों तटों पर शिवजी के असंख्य मन्दिर हैं। इसी नदी के उत्तर की ओर हनुमान द्वारा स्थापित कपीश्वर नामक शिवलिंग है।''

इस कथा को सुनकर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! आप इस चरित्र का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए तथा बताइये कि हनुमान को ब्रह्म हत्या का पाप किस प्रकार लगा?'' ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! रामचन्द्र जी की मनोकामना पूर्ण करने के हेतु शिवजी ने हनुमान नामक वानर का अवतार लिया था। उन्होंने हर प्रकार से रामचन्द्र जी की सहायता की तथा संसार में रामदूत के नाम से प्रसिद्ध हुए। रावण का कुल सहित नाश करके, वे रामचन्द्र जी, लक्ष्मण तथा सीता को लेकर अयोध्या जा पहुँचे।''

''हे नारद ! रावण ब्राह्मण था, अस्तु, उसका वध करने के कारण रामचन्द्र जी ने बहुत दिनों तक पश्चात्ताप किया। तदुपरान्त एक दिन वे अपने भाई लक्ष्मण सहित नैमिषारण्य में स्थित हत्याहरण तीर्थ पर जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने लक्ष्मण सहित स्नान करके एक शिवलिंग की स्थापना की। ऐसा करने से उनका सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गया। एक दिन की बात है कि हनुमान अत्यन्त अहंकार में भरकर कैलाश पर्वत पर जा पहुंचे और शिवजी के दर्शन करने के हेतु आगे बढ़े। उस समय नन्दीश्वर ने उन्हें रोकते हुए यह कहा—''हे हनुमान ! तुम शिवजी के दर्शन करने के योग्य नहीं हो, क्योंकि तुमने रावण जैसे ब्राह्मण का वध किया है। उसकी हत्या के कारण तुम्हें पाप लगा है। अस्तु, जब तक तुम इस पाप से मुक्ति नहीं पावोगे, तब तक शिवजी तुम्हें दर्शन नहीं देंगे। अब तुम्हें उचित है कि अहंकार को त्याग कर, रेवा नदी के तट पर जाओ और वहाँ शिवलिंग की स्थापना करो। ऐसा करने से तुम्हारा पाप नष्ट हो जाएगा। तब तुम शिवजी का दर्शन करने के लिए यहाँ आना।'' नन्दीश्वर की यह बात सुनकर हनुमान रेवा नदी के तट पर जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने शिवलिंग की स्थापना करके उसका भली-भाँति पूजन किया तथा बारम्बार स्तुति की। उस समय शिवजी ने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:31 PM

हनुमान के सम्मुख प्रकट होकर यह कहा—"हे हनुमान ! हम तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हैं। यद्यपि तुम हमारे ही स्वरूप हो, तो भी हमने तुमसे यह तप इसलिए कराया है, ताकि संसार में ब्राह्मण की महिमा स्थिर बनी रहे।" इतना कहकर शिवजी अन्तर्धान हो गये और हनुमान के हृदय का क्षोभ भी नष्ट हो गया।"

❁❁❁

छठा अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! एक दिन मैं तथा विष्णु जी रेवा नदी में स्नान करने के उपरान्त दक्षिण तट की ओर जा बैठे। सब देवता तथा ऋषि-मुनि भी वहाँ आकर इकट्ठे हो गये। उस समय सबने मुझसे तथा विष्णु जी से पूछा कि आप हमें यह बताने की कृपा करें कि संसार में श्रेष्ठ देवता कौन है, जो नाश-रहित, ब्रह्म, निर्दोष, सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी, निर्गुण, अलख, अजन्मा, ईश्वर का भी ईश्वर, विश्वम्भर तथा प्रलय करने वाला हो।"

हे नारद ! देवताओं तथा ऋषियों के ऐसे वचन सुनकर सर्वप्रथम मैंने शिवजी की माया में मोहित होकर यह उत्तर दिया—"हे देवताओ तथा मुनियो ! मैं तीनों लोकों का स्वामी हूँ।" मेरे मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर विष्णु जी ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर कहा—"हे ब्रह्मन् ! अरे, तुम तो हमारे नाभिकमल द्वारा उत्पन्न हुए हो, फिर भला परब्रह्म कैसे हो सकते हो? हम तुम्हारे स्वामी हैं और तुम हमारे आधीन हो।"

हे नारद ! इस प्रकार शिवजी की माया में मोहित होकर विष्णु जी ने भी अपने को परब्रह्म ठहराया। तब हम दोनों परम तत्त्व को भूलकर, अपने को ब्रह्म ठहराते हुए परस्पर विवाद करने लगे। उस समय सब लोगों ने यह निश्चय किया कि वेद जिसे परब्रह्म कह दें, उसी को सबसे बड़ा और सबका स्वामी माना जाये। सब सभासदों की इस बात को सुनकर मैंने वेदों का स्मरण किया। जब वे आये और उनसे यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:31 PM

पूछा गया कि तुम हमें यह बताओ कि परब्रह्म कौन है, तब उन्होंने इस प्रकार उत्तर दिया—"हे देवताओ ! जो तीनों गुणों से भिन्न तथा स्वयं प्रकाशित है, जिनके शरीर में करोड़ों ब्रह्माण्ड वर्तमान हैं और योगीजन जिनका प्रयत्नपूर्वक ध्यान करते हैं, वे सबके स्वामी भगवान् सदाशिव ही परब्रह्म हैं। भगवान् सदाशिव सदैव एक रस रहते हैं तथा संसार का प्रलय भी वही करते हैं। ब्रह्मा एवं विष्णु जी उन्हीं की आज्ञा का पालन करते हुए सृष्टि की रचना तथा भरण-पोषण का कार्य करते हैं।"

हे नारद ! इस प्रकार वेदों ने शिवजी की प्रशंसा की। उस समय मैंने तथा विष्णु जी ने अपनी मूर्खता में भरकर उनसे इस प्रकार कहा—"हे वेदो ! तुम्हारा कथन सत्य नहीं है। शिवजी परब्रह्म कभी नहीं हो सकते।" यह कहकर हमने वेदों को चुप कर दिया। उस समय प्रणव ने हमारी दशा देखकर इस प्रकार कहा—"हे ब्रह्मा तथा हे विष्णो ! तुम दोनों संसार को उत्पन्न करने वाले तथा उसका पालन करने वाले हो। अस्तु, तुम्हें ऐसी मूर्खता करनी उचित नहीं है। यद्यपि वे निर्गुण हैं, तथापि उन्होंने तुम्हारे हित के लिए अनेक शरीर धारण किये हैं।" हे नारद ! इस प्रकार प्रणव ने बहुत-सी बातें कहीं, परन्तु हम दोनों के ऊपर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।"

सातवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! उस समय शिवजी ने यह चरित्र किया कि मेरे तथा विष्णु जी के बीच में एक परम प्रकाशवान् ज्वाला दिव्य स्वरूप से, अपना अपार विस्तार लिये हुए प्रकट हुई। उसका प्रकाश पृथ्वी से आकाश तक व्याप्त था और उसके आदि अथवा अन्त को किसी भी प्रकार नहीं जाना जा सकता था। तदुपरान्त शिवजी लिङ्ग स्वरूप धारणकर, रेवा नदी के तट पर जहाँ हम सब लोग बैठे थे, प्रकट हुए। उस शिवलिंग के प्रकट होते ही सब लोगों का अहंकार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:31 PM

नष्ट हो गया तथा सम्पूर्ण पृथ्वी प्रकाश से भर गयी। उस समय वहाँ जितने सभासद् उपस्थित थे, वे सब जय-जयकार करने लगे। शिवजी का वह लिंग आठ अंगुल का था, जो चार अंगुल पृथ्वी के ऊपर दिखाई पड़ता था और चार अंगुल छिपा हुआ था। उस लिंग के प्रकट होते ही शिवजी के गण शिवलोक से चलकर उस स्थान पर आ पहुँचे और उसकी पूजा करने लगे। तदुपरान्त ऋषि-मुनियों एवं देवताओं ने भी उस लिंग की पूजा की। उस समय सब ओर आनन्दमंगल होने लगे तथा सबका शोक नष्ट हो गया।

हे नारद ! उस समय विष्णु जी ने मुझे सम्बोधित करते हुए इस प्रकार कहा—"हे ब्रह्मन् ! हम दोनों के बीच में यह तीसरा व्यक्ति कहाँ से आ पहुँचा?" विष्णु जी की बात सुनकर मैंने उत्तर दिया—"हे विष्णु जी ! अब मुझ में और आप में इस बात का निर्णय भली-भाँति हो जाएगा कि हम में सबका स्वामी कौन है। यह लिंग चार अंगुल नीचे तथा चार अंगुल ऊपर है। अस्तु, मैं यह कहता हूँ कि हम दोनों में से जो कोई इसे स्पर्श कर ले, वही परब्रह्म माना जाए।" यह सुनकर विष्णु जी ने उत्तर दिया—"हे ब्रह्मन् ! हमें तुम्हारी बात स्वीकार है। हम इस लिंग के नीचे के भाग को छूयेंगे और तुम ऊपर का भाग छूओ।" तदुपरान्त विष्णु जी शूकर का रूप धारण कर, उस लिंग के निचले भाग को छूने के लिए चले और मैं हंस का रूप धारण कर, उस लिंग के ऊपरी भाग को छूने के लिए उड़ा उस समय शिवजी ने ऐसी लीला की कि लिंग का निचला भाग बढ़ता हुआ अतल लोक तक चला गया।

हे नारद ! जिस समय शिवजी का लिंग अतल लोक में पहुँचा, उस समय वहाँ के सभी निवासी कृतकृत्य हो गये। उसी समय विष्णु जी भी उस लिंग को स्पर्श करने के लिए अतल लोक में जा पहुँचे। यह देखकर शिवजी ने अपने लिंग को बढ़ाकर वितल लोक में पहुँचा दिया। वहाँ के निवासियों ने उस शिवलिङ्ग की बहुत पूजा की। फिर जब विष्णु जी वहाँ भी जा पहुँचे, तब वह लिङ्ग बढ़कर सुतल लोक में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:32 PM

जा पहुँचा। वहाँ राजा बलि ने उस लिङ्ग की बहुत पूजा की। तदुपरान्त जब विष्णु जी वहाँ भी गये तो वह लिङ्ग बढ़कर तलातल लोक में चला गया। वहाँ त्रिपुरासुर ने उस लिङ्ग का पूजन किया। कुछ समय बाद जब विष्णु जी वहाँ भी पहुँच गये तो वह लिङ्ग बढ़कर महातल लोक में पहुँच गया। वहाँ तक्षक नाग आदि ने उस लिङ्ग की पूजा की। कुछ देर बाद विष्णु जी वहाँ जा पहुँचे तो वह लिंग बढ़कर रसातल लोक में चला गया। वहाँ मयदानव के पुत्र दत्त ने उस लिंग की पूजा की। तदुपरान्त जब विष्णु जी वहाँ भी पहुँच गये तो वह लिंग और अधिक बढ़कर पाताल लोक में चला गया। वहाँ वासुकि नाग आदि ने उसका पूजन किया।

हे नारद ! इसी प्रकार विष्णु जी चौदहों भुवनों में गये, परन्तु उस लिंग को स्पर्श न कर सके। उस समय विष्णु जी निराश होकर उसी स्थान पर लौट आये, जहाँ से उस लिंग को स्पर्श करने को चले थे। इस प्रकार विष्णु जी का सम्पूर्ण अहंकार नष्ट हो गया और वे शिवजी को सबसे बड़ा स्वीकार करने लगे। हे नारद ! शिवजी के चरित्र ऐसे ही हैं कि उनकी महिमा को किसी प्रकार नहीं जाना जा सकता है।''

आठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे पुत्र ! जब मैंने शिवलिंग के ऊपरी भाग पर हाथ रखना चाहा, तो वह अचानक ही बढ़कर भुवर्लोक में जा पहुँचा। जब मैं भुवर्लोक में पहुँचा तो वह लिंग बढ़कर सूर्यलोक में जा पहुँचा जिस समय मैं सूर्य लोक में पहुँचा तो वह लिंग स्वर्ग लोक में जा पहुँचा। हे नारद ! अस्तु, जब मैं वहाँ भी पीछा करता हुआ पहुँचा, तो वह लिंग बढ़कर चन्द्र लोक में जा पहुँचा। इसी प्रकार वह लिङ्ग उडु लोक, शुक्र लोक, भौम लोक, बृहस्पति लोक, सप्तर्षि लोक, महर्लोक, जन लोक, विष्णु लोक, स्कन्द लोक, शिव लोक तथा गौ लोक आदि में गया। मैं जहाँ भी पहुँचता, वहीं से बढ़कर वह लिंग

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:32 PM

आगे को चला जाता था। इस प्रकार मैं अत्यन्त दुःखी हो गया।

हे नारद ! उस समय केतकी के पुष्प ने मुझे दुःखी देखकर इस प्रकार पूछा—"हे ब्रह्मन् ! इतने घबराये हुए कहाँ चले जा रहे हो?" मैंने उसे सब वृत्तान्त कह सुनाया। तब केतकी पुष्प ने यह सुझाव दिया—"हे ब्रह्मन् ! अब तुम इस लिंग का पीछा छोड़कर अपने स्थान को लौट चलो। मैं सब लोगों के सामने यह बात कह दूँगा कि तुमने शिवलिंग के ऊपरी भाग को स्पर्श कर लिया है।" केतकी पुष्प की यह बात मैंने स्वीकार कर ली। तदुपरान्त मैं उसे साथ लेकर रेवा तट की ओर चल दिया। मार्ग में मुझे सुरभि अर्थात् गौ मिली। उसने भी केतकी पुष्प के समान मुझसे सब हाल पूछा और मेरे बताने पर यह विश्वास दिलाया कि मैं भी तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण कर दूँगी तथा सबके सामने यह कह दूँगी कि तुमने इस मूर्ति को छू लिया है। तब मैं केतकी पुष्प तथा सुरभि को ले, अत्यन्त अहंकार में भरकर विष्णु जी के पास जा पहुँचा।"

नौवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! केतकी पुष्प तथा सुरभि को साथ लिये हुए, मैंने विष्णु जी के समीप जाकर कहा कि मैंने लिंग के ऊपरी भाग को वास्तव में छू लिया है। यदि आपको विश्वास न हो, तो इन दोनों साक्षियों से पूछ लीजिये।" यह सुनकर जब विष्णु जी ने केतकी तथा सुरभि से पूछा, तो उन्होंने यह उत्तर दिया—"हे विष्णु जी ! हम पक्षपात रहित होकर यह बात कहते हैं कि ब्रह्मा ने शिवलिंग के ऊपरी भाग को अवश्य छू लिया है।"

हे नारद ! केतकी तथा सुरभि के ऐसे मिथ्या वचन सुनकर, शिवजी अत्यन्त क्रुद्ध हुए। उसी समय उच्च स्वर में यह आकाशवाणी हुई—"अरे मूर्खो ! तुम धर्म के विरुद्ध झूठ क्यों बोल रहे हो? ब्रह्मा हमारे लिंग का स्पर्श कब कर पाये हैं? हे केतकी ! मिथ्या भाषण के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कारण हम तुम्हें शाप देते हैं कि आज से तू हमारे ऊपर नहीं चढ़ायी जायेगी तथा हे सुरभि ! तुम्हें भी हम यह शाप देते हैं कि जिस मुख से तुमने यह बात कही है तथा अपने को नीच बनाया है, उसी मुख से तुम कलियुग में विष्ठा भक्षण करोगी।'' हे नारद ! इस आकाशवाणी को सुनकर मैं अत्यन्त भयभीत हो गया तथा मेरा सम्पूर्ण अहंकार पलभर में नष्ट हो गया। उस समय मैंने यह स्वीकार किया कि शिवजी ही परब्रह्म तथा और सबके स्वामी हैं। हम दोनों ने भयभीत होकर अपनी आँखें बन्द कर लीं। कुछ देर बाद हम दोनों ने आँखें खोलीं तो शिवजी का केवल एक ही स्वरूप दिखाई देने लगा। उस समय हम दोनों ने शिवजी को अपना स्वामी स्वीकार किया।

हे नारद ! तदुपरान्त मैंने तथा विष्णु जी ने हाथ जोड़कर शिवजी की बड़ी स्तुति की और यह कहा—''हे परम प्रभु ! आप हमें अपना सेवक जानकर, यहीं प्रकट होकर दर्शन दें।'' हमारी इस प्रार्थना को सुनकर शिवजी वहाँ तुरन्त प्रकट हो गये। उस समय उनका जो स्वरूप था, उसका किसी भी प्रकार वर्णन नहीं किया जा सकता। उसी समय सुरभि ने भी शिवजी की प्रार्थना करते हुए यह कहा—''हे प्रभो ! यद्यपि मैंने बहुत बड़ा पाप किया है, तो भी मैं यह प्रार्थना करती हूँ कि आप कृपा करके मेरे अपराध को क्षमा करें और मेरे मस्तक पर हाथ रखें। इसके अतिरिक्त मेरी यह भी इच्छा है कि मैं अपने दूध की धार से आपका अभिषेक करूँ।'' शिवजी ने हम लोगों की यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। तदुपरान्त वहाँ एक बड़ी सभा का आयोजन हुआ और सब लोगों ने शिवजी का पूजन करते हुए, उनका बारम्बार जय-जयकार किया।

हे नारद ! उस समय शिवजी ने हम सबकी स्तुति सुनकर प्रसन्न हो, इस प्रकार कहा—''हे ब्रह्मा तथा हे विष्णो ! हमने तुम्हारा गर्व नष्ट करने के लिए ही अपने स्वरूप को लिंग रूप में प्रकट किया था। अब भविष्य में तुम कभी भी इस प्रकार का अभिमान मत करना। जो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

व्यक्ति हमारे लिंग की पूजा करेगा, उसके घर में सब प्रकार ऋद्धि-सिद्धियाँ भरी रहेंगी।'' इस प्रकार सबको वरदान देने के उपरान्त शिवजी अन्तर्धान हो गये। तब अन्य सब लोग भी शिवजी की जय-जयकार करते हुए अपने-अपने स्थान को चले गये। हे नारद ! इस चरित्र को जो व्यक्ति पढ़ता, सुनता अथवा दूसरों को सुनाता है, वह इस लोक में अत्यन्त प्रसन्न रहता है तथा परलोक में मोक्ष पद प्राप्त करता है।''

दसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं पश्चिम दिशा के शिवलिंगों का वर्णन करता हूँ। उसका पूजन, दर्शन तथा स्मरण करने से सुख, सम्पत्ति, यज्ञ, कीर्ति, सन्तान आदि की प्राप्ति होती है। अब तुम उन लिंगों का वृत्तान्त सुनो।

हे नारद ! द्रुपदपुरी में रामेश्वर नामक शिवलिंग विराजमान है। वहीं कालेश्वर नामक दूसरा शिवलिंग भी है। यह दोनों लिंग अपने भक्तों को आनन्द प्रदान करते हैं। मधुपुरी अर्थात् मथुरा में गोपेश्वर नामक शिवलिंग है, जिसकी पूजा करके गोपों ने अत्यन्त सुख प्राप्त किया था। श्री कृष्ण जी ने भी गोपेश्वर शिवलिंग का पूजन करके तीनों लोकों का राज्य पाया था। वहीं रंगेश्वर नामक दूसरा शिवलिंग है। यह दोनों लिंग अपने भक्तों का कल्याण करने वाले हैं। कान्यकुब्जपुर अर्थात् कन्नौज के समीप मदारेश्वर नामक शिवलिंग है। उसके दर्शन मात्र से ही सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते है। द्वारकापुरी में द्वारकेश्वर नामक शिवलिंग है।

हे नारद ! अब मैं उन लिंगों का वर्णन करता हूँ, जिनकी महिमा तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। पश्चिम समुद्र के तट पर गोकर्ण नामक एक तीर्थ है। उसका स्मरण करने मात्र से ही तीनों प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। संसार में पापों को नष्ट करने वाला गोकर्ण तीर्थ के समान

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:32 PM

अन्य कोई तीर्थ नहीं है। अन्य स्थानों में करोड़ों वर्षों तक तपस्या करने से जो फल प्राप्त होता है, वही फल गोकर्ण तीर्थ में एक दिन तपस्या करने से ही प्राप्त हो जाता है।

हे नारद ! ऐसे परम पुनीत गोकर्ण क्षेत्र में महाबल नामक शिवजी का लिंग स्थापित है। उस लिंग का स्पर्श रावण भी नहीं कर पाया था। उस लिंग की स्थापना गणपति ने की है। महाबल शिवजी का मन्दिर स्वर्ण तथा रत्नों से अलंकृत है।

हे नारद ! सब देवता शिवजी को अपनी पूजा, सेवा तथा उत्सव द्वारा प्रसन्न किया करते हैं। चित्रसेन तथा विश्वावसु आदि सभी गन्धर्व महाबल लिंग का प्रतिदिन गुणगान करते हैं। पुर्वचित्ती, मेनका, घृताची तथा रम्भा आदि अप्सराएँ अपने नृत्य द्वारा महाबल शिवजी को प्रसन्न करती हैं। महाबल लिंग सर्वोपरि है। सब देवता एवं ऋषि-मुनि उसकी सेवा करते हैं, प्रणाम करते हैं तथा अपने नृत्य-गायन द्वारा प्रसन्नता प्रदान करते हैं।

हे नारद ! महाबल सब देवताओं के स्वामी हैं। उनके अतिरिक्त और भी करोड़ों शिवलिंग तथा तीर्थ उस क्षेत्र में हैं, जिनकी सेवा द्वारा बड़े-बड़े पाप तथा कष्ट दूर हो जाते हैं। महाबल लिंग के दर्शन से ब्रह्म हत्या जैसे पाप भी नष्ट हो जाते हैं तथा दोनों लोकों में सिद्धि प्राप्त होती है। उस गोकर्ण क्षेत्र में अगस्त्य जी ने तप किया था। सनकादिक ने भी वहाँ बहुत दिनों तक तपस्या की थी। निर्ऋति के पुत्रों ने भी उस शिवलिंग का पूजन करके राज्य पद प्राप्त किया। उस स्थान पर तपस्या करके वह्नि दिग्पाल हुए तथा कामदेव ने उस क्षेत्र में तप करके संसार को अपने वश में कर लिया। इसी प्रकार महाबल लिंग की पूजा करके शिशुभार, भद्रकालिका, दुर्मुख, नाग, इलावर्त, गरुड़, रावण, कुम्भकर्ण तथा विभीषण आदि सैंकड़ों व्यक्तियों ने अपने मनोरथ को प्राप्त किया है। हम उस लिंग की महिमा का वर्णन कहाँ तक करें?''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:32 PM

ग्यारहवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! आप मित्रसह का सम्पूर्ण वृत्तान्त मुझे सुनाने की कृपा करें।" ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! पूर्व समय में इक्ष्वाकु वंश में मित्रसह नामक एक अत्यन्त धर्मात्मा राजा हुआ। वह राजा अत्यन्त बलवान्, धैर्यवान्, धर्मवान्, वेद-पुराणों का जानने वाला, सत्यवादी, पवित्र मार्ग पर चलने वाला, इन्द्रियजित, राजाओं का शिरोमणि तथा केवल अपनी ही स्त्री से प्रेम रखने वाला था। एक दिन वह शिकार खेलने के लिए वन में गया। वहाँ उसने अनेक सिंह आदि हिंसक जीवों का शिकार किया। उस हत्या के कारण कुछ समय के लिए राजा की श्रेष्ठ बुद्धि नष्ट हो गयी। उसी वन में एक राक्षस रहता था। जब राजा ने उसे देखा तो अपने अस्त्र द्वारा उसे तुरन्त ही मार डाला। उस राक्षस का एक भाई भी वहीं रहता था। जब उसने भाई की मृत्यु देखी, तो मन में इस प्रकार विचार किया कि यह राजा देवता तथा दैत्य दोनों का स्वामी है। मैं इससे अपने भाई की मृत्यु का बदला किस प्रकार लूँ।"

हे नारद ! ऐसा विचार करके वह राक्षस मनुष्य का रूप धारण कर राजा के समीप पहुँचा और हाथ जोड़कर इस प्रकार कहने लगा—"हे प्रभो ! आप सूर्यवंश में शिरोमणि हैं। इस समय मैं आपकी शरण में आया हूँ। हे राजन् ! इन दिनों मेरी आजीविका का कोई साधन नहीं है, अतः आप मुझे अपने यहाँ सेवक रख लें।" राजा मित्रसह को राक्षस की बातों में कुछ छल दिखाई नहीं दिया। तब उन्होंने उसे अत्यन्त प्रेम पूर्वक अपना रसोई बनाने वाला नियुक्त कर लिया। तदुपरान्त राजा शिकार खेलने के पश्चात् उस ब्राह्मण रूपधारी राक्षस को लिये हुए, अपनी राजधानी को लौट आया।

हे नारद ! राजा के लौटने की प्रसन्नता में उसकी रानी मदयन्ती ने, जो दमयन्ती के समान ही पतिव्रता थी, अपने सभी सगे-सम्बन्धियों तथा हितैषियों की ज्यौनार की। उस ज्यौनार के लिए जो भोजन बनाया

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:32 PM

गया था, उसे ब्राह्मण रूपधारी उसी राक्षस ने तैयार किया था। उस राक्षस ने भोजन में नरमांस मिला दिया था, जिसे राजा नहीं जान सके थे। अस्तु, जब गुरु वशिष्ठ भोजन करने के लिए बैठे और उन्हें अपने तपो बल द्वारा यह ज्ञात हुआ कि इस भोजन में नरमांस मिला हुआ है, तो उन्होंने अत्यन्त क्रोध में भरकर राजा मित्रसह से इस प्रकार कहा— "हे राजन् ! तुझे धिक्कार है, जो तूने हमारे सामने मनुष्य का मांस पकाकर रख दिया है। अब हम तुझे यह शाप देते हैं कि तू राक्षस बनकर, अपने कर्म का फल प्राप्त करे।" वशिष्ठ जी के मुख से यह शाप सुनकर जब राजा मित्रसह ने विचार किया तो उसे भी यह ज्ञात हो गया कि रसोई बनाने वाले ने उस भोजन में नरमांस मिला दिया है। उस राक्षस का यह छल देखकर राजा ने अपने मन में सोचा कि वशिष्ठ जी ने मेरा कोई अपराध न होते हुए भी मुझे ऐसा शाप दे डाला है, अतः मैं भी इन्हें शाप दूँगा।

हे नारद ! यह विचार कर राजा ने वशिष्ठ जी को शाप देने की इच्छा से अपने हाथ में पानी लिया। उस समय रानी ने उसे समझाते हुए यह कहा—"हे स्वामी ! वेद का कथन है कि गुरु चाहे जितना क्रोध करे, परन्तु शिष्य को उसका प्रतिकार नहीं करना चाहिए।" यह सुनकर राजा ने वशिष्ठ जी को शाप नहीं दिया, परन्तु वशिष्ठ जी के शाप के कारण वह स्वयं महाभयानक राक्षस होकर वन में चला गया और कल्माषपाद के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ। वह धर्म-कर्म को त्यागकर, वन में जो भी जीव दिखाई देता, उसी को पकड़कर खा जाता था। उसी दशा में उसने एक मुनि को देखा। कल्माषपाद ने बिना कोई विचार किये, मुनि के समीप पहुँचकर उन्हें इस प्रकार पकड़ लिया, जिस प्रकार शेर खरगोश को पकड़ लेता है। उस समय मुनि की स्त्री अपने पति को राक्षस रूपी राजा के पञ्जे में देखकर अत्यन्त दुःखी हुई।

हे नारद ! तब मुनि की स्त्री ने राजा की प्रार्थना करते हुए यह कहा—"हे राजन् ! तुम ऐसा कुकर्म क्यों कर रहे हो? तुम अन्यायी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:32 PM

बनकर ब्रह्म हत्या मत करो। यदि तुम मेरे पति को नहीं छोड़ोगे तो मेरा जीवन कठिन हो जायेगा, क्योंकि बिना पुरुष के स्त्री की जीना महान् कष्टप्रद है। यदि तुम मेरे पति को छोड़ दोगे तो तुम्हें बड़ा पुण्य होगा।"

हे नारद ! इस प्रकार मुनि-पत्नी ने राजा की बहुत अनुनय-विनय की ; परन्तु राक्षस रूपी राजा को कुछ भी दया नहीं आयी। वह उसके सामने ही ब्राह्मण का सिर तोड़कर उसे खा गया। यह देखकर उसकी स्त्री ने सती होने की तैयारी की। तदुपरान्त चिता बनाकर जब वह उसमें बैठी तो राजा को शाप देती हुई इस प्रकार कहने लगी—"हे राजन् ! जब तुम अपनी स्त्री के साथ भोग करना चाहोगे, उस समय तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी।" इतना कहकर वह मुनि-पत्नी अपने पति के साथ ही देवलोक को चली गयी और वहाँ अनेक प्रकार के सुन्दर भोग भोगने लगी। इधर शाप की अवधि समाप्त होने पर राजा भी अपने पूर्वरूप को प्राप्त हो, घर लौट आया। राजा की रानी मदयन्ती को मुनि की स्त्री के शाप का वृत्तान्त ज्ञात हो चुका था। अस्तु, एक दिन जब राजा ने उसके साथ मैथुन करना चाहा, उस समय रानी ने विधवा होने के भय से उसे वह कार्य करने से रोक दिया। परिणामस्वरूप राजा मैथुन के बिना अन्य भोगों को व्यर्थ समझकर, राजपाट त्याग, वन को चला गया। उस समय राजा के मन्त्रियों ने वशिष्ठ जी के पास जाकर उन्हें सब वृत्तान्त सुनाया और यह कहा—"हे प्रभो ! इस समय सूर्यवंश का अस्त हुआ जाता है, अस्तु, आप कोई अनुग्रह करने की कृपा करें। मन्त्री की बात सुनकर वशिष्ठ जी ने सूर्यवंश के स्थिर रहने के निमित्त रानी मदयन्ती द्वारा एक बालक को उत्पन्न किया। उस बालक का नाम अंशुमान अथवा अंशुक हुआ। उसके जन्म लेने पर सम्पूर्ण संसार के मनोरथ सिद्ध हुए।

हे नारद ! उधर कल्माषपाद जब वन में पहुँचा, तो उसने एक महाभयानक स्त्री को देखा, जो उसके पीछे-पीछे अत्यंत क्रोधपूर्वक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:32 PM

चल रही थी। वह स्त्री ब्रह्म हत्या थी, जो ब्राह्मण का वध करने के कारण राजा के पीछे लगी हुई थी। राजा ने उससे मुक्ति पाने के हेतु बड़े-बड़े तीर्थों की परिक्रमा की तथा अनेक मंत्रों का जप किया, परन्तु उनसे कोई लाभ नहीं हुआ। उस समय राजा ने मिथिलापुरी में पहुँचकर गौतम-ऋषि से भेंट की और उन्हें प्रणाम करने के उपरान्त सब हाल कह सुनाया ! तब गौतम जी ने राजा कल्माषपाद को महाबल शिवलिंग का पूजन करने के लिए कहा। गौतम जी की आज्ञानुसार राजा ने गोकर्ण तीर्थ में पहुँचकर स्नान किया तथा महाबल शिवलिंग का पूजन किया। उससे राजा का पाप नष्ट हो गया और ब्रह्म हत्या दूर हो गयी।''

बारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे पुत्र ! जब राजा कल्माषपाद सभी तीर्थों एवं मन्दिरों का भ्रमण कर आये, परन्तु ब्रह्म हत्या ने उनका पीछा न छोड़ा, उस समय वे मिथिलापुरी गये। उसी समय राजा ने देखा कि गौतम मुनि अपने शिष्यों सहित परम तेजस्वी रूप धारण किये चले आ रहे हैं। जब वे ऋषि राजा कल्माषपाद के समीप पहुँचे तो राजा ने उन्हें अत्यन्त श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया। उस समय गौतम मुनि ने राजा की अत्यन्त प्रशंसा करते हुए इस प्रकार कहा—''हे राजन् ! तुम्हारी प्रजा तो सकुशल है? तुम यहाँ किस लिए आये हो?''

हे नारद ! गौतम जी के मुख से यह वचन सुनकर राजा ने उत्तर दिया—''हे प्रभो ! आपकी कृपा से सब कुशल है, परन्तु जब मैं राक्षस रूप में था, उस समय मैंने एक ब्राह्मण को मार डाला था। उस पाप के कारण ब्रह्म हत्या पिशाची रूप धारण कर मेरे पीछे लगी है और मुझे हर समय दुःख पहुँचाया करती है। हे नाथ ! आप इस समय कहाँ से चले आ रहे हैं? आपके मुख को देखकर यह प्रतीत होता है कि आप कहीं विदेश से लौटकर आ रहे हैं। अस्तु, अब आप कृपा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:32 PM

करके मुझे ऐसा कोई उपाय बताइये, जिससे मेरा यह पाप दूर हो जाए।"

हे नारद ! राजा कल्माषपाद के मुख से यह वृत्तान्त सुनकर गौतम जी ने कहा—"हे राजन् ! तुम परम धन्य हो, जो तुमने हमारे सामने अपने पाप का वर्णन किया है। भगवान् सदाशिव अपने भक्तों की सब प्रकार से रक्षा करते हैं। इस समय वे महाबल शिवलिंग के रूप में गोकर्ण क्षेत्र में विराजमान हैं। उनके समान पापों को नष्ट करने वाल अन्य कोई नहीं है। गोकर्ण तीर्थ सम्पूर्ण पापों को नष्ट करता है। अस्तु, तुम उस क्षेत्र में जाकर पहले गोकर्ण तीर्थ में स्नान करो, तदुपरान्त महाबल लिंग का पूजन करो। इस समय हम भी वहीं से चले आ रहे हैं। वेद का कथन है कि शिवजी को, शिवरात्रि का व्रत सब व्रतों से अधिक प्रिय है, उसके समान फलदायक व्रत अन्य कोई नहीं होता। शिवरात्रि का व्रत फाल्गुन की चतुर्दशी को होता है, अस्तु जो मनुष्य इस दिन व्रत करके रात्रि भर जागरण करता है तथा शिवजी के लिंग का पूजन करता है, उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।

हे राजन् ! शिवजी का यह व्रत शिवजी की अत्यन्त कृपा होने पर ही प्राप्त होता है। वहाँ सभी देवता, ऋषि-मुनि, स्त्री-पुरुष, वृद्ध-बालक, युवा आदि देश-देश से आये थे। हमने भी अपने शिष्यों सहित वहाँ पहुँचकर महाबललिंग का पूजन करके आनन्द प्राप्त किया तथा गोकर्ण में स्नान करके यथाशक्ति दान दिया। महाबल लिंग का पूजन तथा जागरण करने के उपरान्त सब लोग अपने-अपने घर को लौट गये। राजा जनक भी शिवलिंग का पूजन करने के लिए गये थे। वहाँ उन्होंने हमसे मिथिलापुरी में आने की प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना को स्वीकार करके ही हम यहाँ आये हैं। यहाँ हम राजा जनक का यज्ञ करायेंगे। हे राजन् ! जिस समय हम मार्ग में आ रहे थे, उस समय हमने एक ऐसे अद्भुत चरित्र को देखा, जिसका ध्यान अभी तक नहीं भूलता है।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:32 PM

तेरहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! गौतम मुनि के मुख से यह वचन सुनकर राजा ने कहा—"हे प्रभो ! आपने मार्ग में जिस आश्चर्यजनक दृश्य को देखा, उसे आप मुझे भी सुनाने की कृपा करें।" गौतम जी बोले—"हे राजन् ! सुनो, जिस समय हम गोकर्ण तीर्थ से लौटे, उस समय मार्ग में एक तालाब देखकर, वहाँ कुछ समय के लिए ठहर गये। जब हम स्नान आदि नित्यकर्म से निवृत्त होकर वहाँ बैठे तो उसी समय हमने वहाँ आती हुई एक ऐसी स्त्री को देखा, जो चाण्डाली के समान थी। उसे कुष्ठ-रोग हो रहा था तथा उसके सम्पूर्ण शरीर में रक्त और चर्बी भरी हुई थी जिसे कीड़े खा रहे थे। उसे देखकर हमने यह समझा कि यह स्त्री थोड़ी ही देर में मर जाएगी, परन्तु तभी यह आश्चर्यजनक घटना घटी कि सूर्य के समान प्रकाशवान् एक विमान आकाश से उतरकर वहाँ आ पहुँचा। जब वह विमान पृथ्वी पर उतरकर खड़ा हो गया और उसमें से शिवजी के गण उतरे तो हमने प्रणाम करके यह पूछा—"हे शिवगणो ! आप यहाँ किसलिए आये हैं?"

हे राजन् ! हमारी बात सुनकर गणों ने उत्तर दिया—"हे मुनि ! हम इस स्त्री को लेने के लिए आये हैं जो अभी-अभी यहाँ आ पहुँची है।" गणों की बात सुनकर मैंने आश्चर्य से भरकर कहा—"अरे ! यह स्त्री तो अत्यन्त पापिनी प्रतीत होती है। इसकी दशा देखकर तो यह ज्ञात नहीं होता कि इसने शिवपुर प्राप्त करने योग्य कोई भी शुभ-कर्म किया होगा।"

हे राजन् ! मेरी यह बात सुनकर शिवगणों ने कहा—"हे गौतम ! पूर्व-जन्म में यह एक ब्राह्मण की स्त्री थी। इसके पति का नाम सुमुनि था। जब इसका पति मर गया तो यह धर्म-त्यागकर अनेक प्रकार से पाप करने लगी। उस अकर्म के कारण लोगों ने इसे जाति से बहिष्कृत कर दिया। उस समय यह संस्कारणवश एक शूद्र के यहाँ जा बैठी। एक दिन जब वह शूद्र, जिसकी यह रखैल थी, कहीं बाहर गया हुआ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:32 PM

था, तब इसने मद्य पीकर मांस खाने की इच्छा की और बकरे के भ्रम में एक गौ के बछड़े को काट डाला। जब इसे कुछ देर बाद यह ज्ञात हुआ कि यह बकरी का बच्चा नहीं, अपितु बछड़ा है, तो भी यह जान-बूझकर शिव-शिव कहती हुई, उस बछड़े का आधा मांस खा गयी। जो आधा मांस शेष बचा, उसे इसने इधर-उधर फेंककर यह प्रसिद्ध कर दिया कि बछड़े को सिंह खा गया है। मृत्यु के पश्चात् यह डोम के यहाँ जन्म की अन्धी तथा कोढ़िन बनकर उत्पन्न हुई। इस कारण सभी भाई-बन्धुओं ने इसका साथ छोड़ दिया और किसी ने भी इसके साथ विवाह करना स्वीकार नहीं किया। संयोगवश एक बार जब कुछ मनुष्य गोकर्ण तीर्थ को जा रहे थे, उस समय यह स्त्री भी उनके साथ यह विचार कर के चल दी। जिस दिन शिवरात्रि थी, उसी दिन यह गोकर्ण तीर्थ में जा पहुँची।

हे मुनि ! वहाँ यह सब लोगों से भोजन-वस्त्र की याचना करती थी, परन्तु इसके घृणित स्वरूप को देखकर कोई कुछ नहीं देता था। तब एक मनुष्य ने इसके हाथ पर बिल्वपत्र रख दिया। इस स्त्री ने बिल्वपत्र को खाने की वस्तु न जानकर, पृथ्वी पर फेंक दिया। संयोगवश वह बिल्वपत्र अचानक ही शिवलिंग पर जा गिरा। प्रातःकाल होने पर जब सब लोग महाबल शिवलिंग की पूजा करके अपने-अपने घरों को चले गये, तब यह स्त्री निराश हो, वहाँ से उठती-बैठती, रोती-पीटती, चलती हुई यहाँ आ पहुँची और आज मूर्च्छित होकर गिर पड़ी है। इस समय भगवान् सदाशिव ने इसे लेने के लिए विमान भेजा है। अब यह शिवलोक को जायेगी क्योंकि, इसने चाहे अज्ञानावस्था में ही सही, परन्तु शिवरात्रि का व्रत किया है एवं शिवजी का पूजन करके जागरण भी किया है। भगवान् शिव का नाम बड़े-बड़े पापों को जलाकर भस्म कर देता है। शिवरात्रि का व्रत भी सम्पूर्ण मनोरथों को प्रदान करने वाला है।''

हे राजन् ! इतना कहकर उन शिवगणों ने उस स्त्री को तेज से परिपूर्ण कर दिया, जिसके कारण वह परम सुन्दरी प्रतीत होने लगी।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:32 PM

इसके उपरान्त वे चारों शिवगण उस स्त्री को विमान पर बैठाकर, कैलाश ले गये। वहाँ जाकर वह स्त्री गिरिजा की सखी हुई। गोकर्ण क्षेत्र तथा महाबल लिंग की ऐसी महिमा है। अस्तु, तुम भी उसी क्षेत्र में जाओ और महाबललिंग का पूजन करो तो तुम्हारा यह पाप दूर हो जाएगा।'' इतना कहकर जब गौतम मुनि चले गये, तब राजा कल्माषपाद अर्थात् मित्रसह उनकी आज्ञानुसार गोकर्णक्षेत्र में जा पहुँचा। वहाँ उसने सब तीर्थों में स्नान कर, महाबल लिंग का पूजन किया। उसने शिवरात्रि का व्रत करके, जागरण किया तथा उत्सव मनाया। इन शुभ कर्मों के कारण राजा की ब्रह्म हत्या छूट गयी, जिससे उसे अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त हुई। अन्त में, वह शिवपद को प्राप्त हुआ। राजा मित्रसह तथा महाबललिंग की यह कथा सम्पूर्ण रोगों को नष्ट करने वाली है। जो लोग इस चरित्र को पढ़ते अथवा सुनते हैं, वे सदैव प्रसन्न रहते हैं।''

चौदहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! अब मैं उत्तर दिशा के शिवलिंगों का वर्णन करता हूँ। नैमिष नामक प्रसिद्ध क्षेत्र में ललितेश्वर शिवलिंग स्थापित है, उसकी पूजा सभी देवता, मुनि आदि करते हैं। उस लिंग को भगवती ललिता जी ने स्थापित किया तथा उसी स्थान पर अत्यन्त कठिन तप करके अपना मनोरथ पाया था। ललितेश्वर शिवलिंग की पूजा से असंख्य मनुष्यों को मुक्ति प्राप्त हुई है। उसी स्थान पर दधीचीश्वर नामक एक अन्य शिवलिंग भी है। उसे दधीचि मुनि ने स्थापित किया था। जो मनुष्य दधीचीश्वर शिवलिंग का पूजन करता है, वह युद्ध में कभी किसी से नहीं हारता और उसके शरीर में किसी भी शस्त्र का घाव नहीं होता है।

हे नारद ! अब मैं एक अन्य शिवलिंग का वर्णन करता हूँ, जिसकी पूजा करने से मनुष्यों को प्रसन्नता प्राप्त होती है। मैं जिस गोकर्ण क्षेत्र

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:33 PM

का वर्णन कर चुका हूँ, वहीं पर चन्द्रभाल नामक एक शिवजी का अन्य लिंग स्थित है। उस लिंग को रावण कैलाश से लाया था और अपने घर लिये जा रहा था, परन्तु शिवजी उसके साथ न जाकर वहीं रह गये। उसी लिंग के साथ वैद्यनाथ भी आये, जो चिता भूमि में स्थित हो गये।

हे नारद ! एक समय रावण ने हिमाचल पर्वत पर पहुँचकर, अत्यन्त कठिन तप किया। वहाँ उसने शिवजी के एक लिंग की स्थापना कर, बहुत होम किया, परन्तु शिवजी उस पर किसी भी प्रकार प्रसन्न न हुए। तब रावण ने अपनी नौ मस्तक काटकर शिवलिंग पर चढ़ा दिये। जब उसने दसवाँ मस्तक भी काट डालना चाहा, उस समय शिवजी उसकी सेवा तथा लगन से प्रसन्न होकर, तत्काल प्रकट हुए और रावण का हाथ पकड़कर कहने लगे कि तुम जो वर चाहो, वह हमसे माँग लो। रावण ने कहा—"हे प्रभो ! मैं आपको यहाँ से ले जाकर अपने नगर में स्थापित कर सकूँ।" यह सुनकर शिवजी ने उत्तर दिया—"हे रावण ! तुम हमारे लिंग को ले जाकर अपने नगर में स्थापित कर सकते हो, परन्तु यदि तुमने मार्ग में किसी स्थान पर हमें बीच में रख दिया तो हम वहीं स्थित हो जायेंगे।" यह सुनकर रावण चतुराई में भरकर बोला—"हे प्रभो ! आप दो स्वरूप धारण करें।"

हे नारद ! रावण की बात सुनकर शिवजी दो लिंगों के रूप में विभाजित हो गये। तदुपरान्त रावण उन दोनों लिंगों को मंजूषा में रखकर, अपने नगर को चल दिया। उसी समय शिवजी ने यह माया की कि मार्ग में एक स्थान पर रावण को बड़े जोर से लघुशंका लगी। रावण उस लघुशंका को किसी भी प्रकार रोकने में असमर्थ हो उठा। तब उसने यह विचार किया कि यदि यहाँ कोई व्यक्ति मिल जाए तो मैं उसे कुछ देर के लिए यह मंजूषा देकर लघुशंका कर लूँ, तदुपरान्त आगे बढ़ूँ। इस विचार से जब रावण ने इधर-उधर दृष्टि दौड़ायी तो उसे एक ग्वाला दिखाई दिया जो पशुओं को चरा रहा था। रावण ने उसके पास पहुँचकर कहा—"हे बन्धु ! तुम इस मंजूषा को कुछ देर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:33 PM

तक उठाये रहो, तब तक मैं लघुशंका कर लेता हूँ।" रावण की बात सुनकर गोप ने उत्तर दिया—"हे दशानन ! मैं एक घड़ी तक इस मंजूषा को अपने हाथ में लिये रहूँगा, तदुपरान्त इसे पृथ्वी पर रख दूँगा।" गोप की यह बात रावण ने स्वीकार कर ली।

हे नारद ! एक घड़ी के स्थान पर रावण दो घड़ी तक लघुशंका करता रहा, परन्तु उसका मूत्र किसी प्रकार भी न रुका। तब उस गोप ने रावण को सम्बोधत करते हुए कहा—"हे रावण ! तुम्हें दूना समय व्यतीत हो गया है, अस्तु मैं इस मंजूषा को पृथ्वी पर रखे देता हूँ।" इस प्रकार गोप ने उस मंजूषा को पृथ्वी पर रख दिया, जिससे दोनों लिंग उसी स्थान पर स्थिर हो गये। जब रावण लघुशंका करके उठा और दोनों लिंगों को उठाने का प्रयत्न करने लगा तो लिंग अपने स्थान से तनिक भी विचलित न हुए। तब से वे दोनों लिंग वहीं स्थित हैं। जो लिंग पीठ की ओर था, वह वैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसकी गणना बारह ज्योतिर्लिङ्गों में की जाती है। जो लिङ्ग सामने की ओर था, वह चन्द्रभाल के नाम से प्रसिद्ध होकर गोकर्ण क्षेत्र में स्थित हुआ।

हे नारद ! शिवरात्रि के दिन इन शिवलिङ्गों का पूजन करने के हेतु देवता, मुनि, सिद्ध, मनुष्य आदि सब लोग चारों दिशाओं से आते हैं। वे सब इन लिङ्गों का पूजन करके निष्पाप हो जाते हैं। माघ मास की कृष्ण चतुर्दशी के दिन उस स्थान से चार कोस की दूरी तक सिंह, हाथी आदि सभी दुःखदायी जीव वन के भीतर भाग जाते हैं। उस स्थान की यह विचित्रता संसार में प्रसिद्ध है। इन विचित्र चरित्रों को देखकर सब लोग जय-जयकार शब्द का उच्चारण करते हैं तथा भगवान् सदाशिव का गुणगान करते हैं। चतुर्दशी तक शिवजी अपने पूर्ण अंश सहित वहाँ निवास करते हैं। हे नारद ! शिवरात्रि का जागरण सम्पूर्ण मनोरथों को प्रदान करने वाला है। इस कथा को जो व्यक्ति पढ़ता, सुनता अथवा दूसरों को सुनाता है, वह संसार में प्रसन्न रहकर अन्त में शिवपद को प्राप्त होता है।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:33 PM

पन्द्रहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! अब मैं उत्तर दिशा के प्रसिद्ध शिवलिंगों तथा तीर्थों का वर्णन करता हूँ, जिनके दर्शन मात्र से ही सम्पूर्ण पाप नष्ट होकर, मनोरथ प्राप्त होते हैं। उनका पूजन करने से कोई भी दुःख शेष नहीं रहता। उनमें से एक तीर्थ पंचप्रयाग के नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ स्नान करने से सब प्रकार के कष्ट तत्काल नष्ट हो जाते हैं। देव प्रयाग में ललितेश्वर तथा देनेश्वर नामक दो शिवलिंग हैं। उनके उत्तर की ओर रुद्रप्रयाग में रुद्रेश्वर नामक शिवलिंग स्थित है, जिसका पूजन करने से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। वही कनखल क्षेत्र में दक्षेश्वर नामक शिवलिंग स्थित है। उस लिंग की स्थापना दक्ष प्रजापति ने की थी। दक्षेश्वर शिवलिंग की महिमा बहुत बड़ी है। उनकी पूजा करने से किसी प्रकार का दोष और पाप नहीं रहता।

हे नारद ! दक्षेश्वर के समीप ही सतीकुण्ड नामक प्रसिद्ध तीर्थ है, जिसके ऊपर बिल्वेश्वर नामक शिवलिंग स्थित है। उसका पूजन करने से धर्म की वृद्धि होती है। उनके दर्शन मात्र से ही मनुष्य शिवजी के समान हो जाता है। दक्षेश्वर के समीप ही नीलशैल के ऊपर नीलेश्वर नामक शिवलिंग है। वह लिंग गंगा जी के तट पर स्थित है। अस्तु वहाँ स्नान करने का बड़ा माहात्म्य है। वहीं भीम चण्डिका देवी का निवास है। उनके निकट भी एक उत्तम कुण्ड है, जिसमें स्नान करने से अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है। वहाँ आज तक शंख ध्वनि सुनाई पड़ती है, परन्तु पापी लोग उसको नहीं सुन सकते।

हे नारद ! पूर्व समय में असमचिन्त नामक एक ब्राह्मण बड़ा पापी था, परन्तु उसने किसी शिवभक्त से उपदेश पाकर शिवजी के नाम का जप किया। तब शिवजी ने प्रसन्न होकर उसे अपना गण बना लिया और उसका नाम नील रखकर उसके द्वारा स्थापित शिवलिंग में विराजमान हुए। वह लिंग दोनों लोकों में हर्ष प्रदान करता है। बिल्वेश्वर शिवलिंग के समीप ही त्रिमूर्तीश्वर नामक शिवलिंग है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:33 PM

वहाँ रक्तजल नामक एक पवित्र तीर्थ भी है। उसके समीप ही नन्दीश्वर नामक शिवलिंग है। वहीं शिवतीर्थ स्थित है जो मनुष्य शिवतीर्थ में स्नान करके, नन्दीश्वर लिंग का पूजन करता है, उसे दोनों लोकों में आनन्द मिलता है। नन्दीश्वर लिंग के समीप ही भद्रेश्वर नामक शिवलिंग है। उसका पूजन करने से मनुष्य शिवजी का गण हो जाता है।

हे नारद ! भद्रेश्वर शिवलिंग के समीप ही भैरवेश्वर शिवलिंग विराजमान है। वहीं शालिहोत्रेश्वर नामक शिवलिंग है, जिसकी सेवा करके शालिहोत्र ने सम्पूर्ण विद्याओं को प्राप्त किया था। कौमुदी तीर्थ के तट पर चन्द्रेश्वर शिवजी का लिंग प्रतिष्ठित है। वहाँ चन्द्रमा ने शिवजी का तप किया था और उनके मस्तक पर निवास पाया था। गंगा जी के बीच में कुब्जाम्र तीर्थ तथा पूर्ण तीर्थ विद्यमान हैं। वहीं सोमेश्वर नामक शिवजी का लिंग है। उस लिंग की पूजा करने से मनुष्य दोनों लोकों में प्रसन्नता प्राप्त करता है। अग्नि तीर्थ में अग्नीश्वर नामक शिवजी का लिंग विराजमान है। वायु तीर्थ में पवनेश्वर नामक शिवजी का लिंग स्थित है, जो सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने वाला है।

हे नारद ! गंगा के पश्चिमी तट पर तपोवन है। वहाँ लक्ष्मण ने बड़ी तपस्या की थी और शिवजी की कृपा से निष्पाप हुए थे। जब रामचन्द्र जी लंका जीतकर सीता तथा लक्ष्मण सहित अयोध्या में आए तो उन्हें क्षय रोग हो गया ; क्योंकि उन्होंने मेघनाद ब्राह्मण का वध किया था। अस्तु, वशिष्ठ मुनि के उपदेशानुसार वे तपस्या करने के हेतु उस तपोवन में जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने बारह वर्ष तक बिना भोजन किये तपस्या की। फिर सौ वर्ष तक वे केवल वायु का भक्षण करके, षडाक्षर-मन्त्र का जप करते हुए एक पाँव से पृथ्वी पर खड़े हो, शिवजी का ध्यान धरते रहे। उस समय शिवजी प्रसन्न होकर उनके पास पहुँचे और यह बोले—''हे लक्ष्मण ! अब तुम शुद्ध हो गये हो। अस्तु तुम्हारा रोग दूर हो जायेगा। इतना कहकर शिवजी अन्तर्धान हो गये तथा कुछ अंश से लक्ष्मण द्वारा स्थापित शिवलिंग में प्रविष्ट होकर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:33 PM

वहाँ स्थित रहे। वह शिवलिंग लक्ष्मणनाथ नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसका दर्शन करने से कोई रोग नहीं रहता।''

हे नारद ! मायाक्षेत्र में जो शिवलिङ्ग विराजमान हैं, उनमें से कुछ का वर्णन मैंने तुमसे किया। नेपाल में पशुपतिनाथ नामक जो शिवलिङ्ग है, वह महिषभाग अर्थात् भैंसे के शरीर का एक भाग है। पशुपतिनाथ महादेव अपने भक्तों को अत्यन्त आनन्द प्राप्त करने वाले हैं। नेपाल में मुक्तिनाथ नामक दूसरा शिवलिङ्ग भी है। उसका पूजन करने से भी दोनों लोकों में आनन्द मिलता है।'' इतनी कथा सुनाकर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! चारों दिशाओं के शिवलिंगों का वर्णन मैंने तुमसे किया। अब तुम और क्या सुनना चाहते हो, वह कहो?''

❁❁❁

सोलहवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी बोले—''हे पिता ! शिवलिङ्ग की पूजा किस समय से प्रारम्भ हुई, यह आप मुझे सुनाने की कृपा करें।'' ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! लिङ्ग की पूजा सनातन से चली आयी है। उसका प्रारम्भ नहीं बताया जा सकता, फिर भी हमने कल्पभेद के अनुसार जो कुछ सुना है, वह तुम्हें सुनाता हूँ। सुप्रसिद्ध दारुक वन में शिवजी के बहुत-से भक्त रहा करते थे। वहाँ रहने वाले ऋषि-मुनि तीनों समय शिवजी का पूजन करते, उनके नाम का स्मरण करते एवं हवन आदि शुभ कर्म किया करते थे। इस प्रकार उन्हें बहुत समय व्यतीत हो गया, तब शिवजी ने अपने मन में उन्हें दर्शन देने की इच्छा की।

हे नारद ! एक दिन वे ऋषि-मुनि भोजन की खोज में अपने घरों से बाहर गये हुए थे। उसी समय भगवान् सदाशिव सती के वियोग में व्याकुल हो, उस वन में जा पहुँचे। उसी समय ऋषि-मुनियों की स्त्रियों ने उन्हें देखा तो पहले तो वे इधर-उधर भागीं, परन्तु फिर शिवजी की माया के वशीभूत हो, अपने घरों से बाहर निकल कर, उनके समीप जा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:33 PM

पहुँचीं और काम-पीड़िता हो मैथुन की इच्छा से उनके समीप खड़ी हो गयीं। तदुपरान्त काम का अधिक वेग बढ़ने पर, वे लज्जा को त्यागकर शिवजी के शरीर से लिपट गयीं। उस समय ऋषि-मुनि भी लौटकर आ गये। जब उन्होंने अपनी स्त्रियों की ऐसी दशा देखी तो वे शिवजी को साधारण मनुष्य जानकर, अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उन्हें यह शाप दिया कि तुम्हारा लिङ्ग इसी समय कटकर गिर पड़े।

हे नारद ! उनके शाप के कारण शिवजी का लिंग कटकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। तदुपरान्त शिवजी की माया से वह लिंग तीनों लोकों में भ्रमण करता हुआ, सबको जलाने लगा। उस समय तीनों लोकों के प्राणी उन ऋषि-मुनियों सहित मेरे पास आये और इस प्रकार कहने लगे—"हे प्रभो ! यह कैसा चरित्र है, जिसके कारण सम्पूर्ण सृष्टि भस्म हुई जाती है?" उनकी प्रार्थना सुनकर मैंने ध्यान धरकर सब हाल जाना, तदुपरान्त उन ऋषि-मुनियों से यह कहा—"हे मुनियो ! तुमने अपनी मूर्खता के वशीभूत होकर जो अकर्म किया है, उसी का फल सब लोगों को भोगना पड़ रहा है। भगवान् सदाशिव तुम्हारी परीक्षा लेने के निमित्त तुम लोगों के घर गये थे, परन्तु तुमने अपने अज्ञान के कारण उन्हें नहीं पहचाना और शाप दे दिया। अब शिवजी का लिंग तीनों लोकों को भस्म कर रहा है। मैं तथा विष्णु जी शिवजी के सेवक हैं। अब, जब तक वह शिवलिंग अपने स्थान पर स्थित नहीं हो जाता, तब तक सृष्टि में आनन्द नहीं होगा। इसलिए उचित है कि तुम सब लोग शिवजी की शरण में जाओ और उन्हें प्रसन्न करो।

हे नारद ! इतना कहकर मैं, विष्णु जी को साथ ले, उन ऋषि-मुनियों सहित शिवजी की शरण में गया। हम सब लोगों ने शिवजी की बहुत स्तुति की, तब शिवजी ने प्रसन्न होकर हमसे वरदान माँगने के लिए कहा। उस समय हमने उनसे यह प्रार्थना की—"हे प्रभो ! आप अपने लिंग को रोक कर, सृष्टि को भस्म होने से बचाइये।" यह सुनकर शिवजी ने उत्तर दिया—"हे देवताओ ! यदि गिरिजा योनि रूप होकर हमारे लिंग को धारण करें तो हम शान्त हो जायेंगे।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शिवजी के मुख से यह वचन सुनकर हम सब देवताओं ने निराकार स्वरूप, आदिशक्ति गिरिजा की प्रार्थना की। तब उन्होंने योनि रूप होकर शिवजी का लिंग धारण कर लिया। उस समय तीनों लोकों को अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ और सब लोग शिव-गिरिजा की स्तुति करने लगे।

हे नारद ! शिवजी ने सब लोगों को यह आज्ञा दी कि तुम लोग हमारे लिंग का पूजन करो, अन्यथा ठीक न होगा। तब शिवजी की आज्ञा पाकर सब लोगों ने उसी दशा में शिवजी का पूजन किया। तभी से संसार में लिंग पूजा प्रचलित हुई है।''

सत्रहवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! अब आप मुझे अन्धकेश्वर शिवलिंग की कथा सुनाने की कृपा करें और यह बतायें कि शिवजी अपने शत्रु अन्धक के नाम से क्यों प्रसिद्ध हुए?'' ब्रह्मा जी बोले—

''हे नारद ! अन्धक की उत्पत्ति कक्ष द्वारा हुई थी। उसने मेरा बड़ा तप करके यह वरदान प्राप्त किया था कि उसे तीनों लोकों में कोई भी न मार सके। अस्तु, मुझसे वरदान पाकर उसने तीनों लोकों को अपने अधीन कर लिया तथा सब देवताओं को अपने स्थान से पदच्युत कर, वह स्वयं तीनों भुवनों का राज्य करने लगा। नैर्ऋत्य कोण के समुद्र में एक बहुत बड़ा गड्ढा था। उसी गड्ढे में वह अपनी सेना सहित रहा करता था। अस्तु, जब देवता बहुत दुःखी हुए, तो वे एक दिन शिवजी की शरण में जाकर उनकी स्तुति करने लगे। उस समय शिवजी ने प्रसन्न होकर उन्हें यह आश्वासन दिया—''हे देवताओ ! तुम चिन्ता मत करो, अब हम अन्धक का संहार कर देंगे।''

हे नारद ! शिवजी की आज्ञा सुनकर सब देवता अन्धक से युद्ध करने के लिए उसके समीप जा पहुँचे। उस समय देवताओं तथा दैत्यों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:33 PM

में महाभयानक युद्ध हुआ। उस युद्ध में दैत्य परास्त हो गये। उस समय जब अन्धक ने अपने गर्त्त में घुसकर प्राण बचाने की इच्छा की, तभी शिवजी ने वहाँ पहुँचकर उसे अपने त्रिशूल से छेदकर ऊपर उठा लिया। त्रिशूल का स्पर्श होते ही अन्धक से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गये। तब वह ज्ञान प्राप्त करके भगवान् सदाशिव की स्तुति करता हुआ इस प्रकार कहने लगा—"हे प्रभो ! जो व्यक्ति आपको अपनी मृत्यु के समय देखता है वह शिवरूप हो जाता है। मैं बड़ा सौभाग्यशाली हूँ कि आपने मुझे स्वयं अपने हाथ से मारा है।" अन्धक के ऐसे वचन सुनकर शिवजी प्रसन्न होकर बोले—"हे अन्धक ! हम तेरी भावना देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। अब तू जो चाहे, वह वर हमसे माँग ले।" यह सुनकर अन्धक ने कहा—"हे प्रभो ! आप मुझे अपनी भक्ति देकर अपना गण बना लीजिए तथा लिंग रूप होकर इस स्थान पर सदैव निवास कीजिए।" शिवजी ने अन्धक की यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। तदुपरान्त अन्धक शिवजी के गणों में सम्मिलित हो गया और शिवजी अन्धकेश्वर लिंग के रूप में वहीं स्थित रहे। जो मनुष्य उस लिंग की छः महीने तक पूजा करता है, उनकी सम्पूर्ण मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

अट्ठारहवाँ अध्याय

इस कथा को सुनकर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! आप मुझे देवल का वृत्तान्त विस्तारपूर्वक सुनाने की कृपा कीजिये।" ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवजी के परम भक्त दधीचि का वर्णन हम पहले कर चुके हैं। उनके पुत्र का नाम शिवदर्शन था। शिवदर्शन की पत्नी का नाम दुकूला था। शिवदर्शन अपनी स्त्री के अधीन रहकर, सदैव भोग विलास में लिप्त रहता था। उसके द्वारा चार पुत्रों का जन्म हुआ ; परन्तु यह सब होने पर भी वह दधीचि के भय के कारण शिवजी का पूजन प्रतिदिन किया करता था। एक दिन दधीचि किसी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:33 PM 86

दूसरे ग्राम में गये तथा शिवदर्शन से शिवजी का पूजन करने के लिए कह गये। संयोगवश दधीचि बहुत दिनों तक उस ग्राम से न लौट सके। यहाँ तक कि शिवरात्रि आ गयी। उस दिन सब लोगों ने व्रत रखा, परन्तु शिवदर्शन ने काम के वशीभूत होकर अपनी स्त्री के साथ भोग किया और बिना स्नान किये ही शिवजी का पूजन कर डाला।

हे नारद ! शिवदर्शन के इस कृत्य को देखकर शिवजी अत्यन्त क्रोधित हुए। तब उन्होंने प्रकट होकर शिवदर्शन से यह कहा—"अरे मूर्ख ! तूने प्रथम तो हमारे व्रत के समय अपनी स्त्री के साथ भोग किया, दूसरे बिना स्नान किये ही हमारा पूजन भी कर डाला। यह कुकर्म तूने जान-बुझकर किया है। अस्तु हम तुझे शाप देते हैं कि तू जड़ हो जायेगा और किसी को स्पर्श नहीं कर सकेगा।" शिवजी द्वारा इस प्रकार शाप देते ही शिवदर्शन जड़ हो गया। कुछ समय बाद जब दधीचि ऋषि लौटकर घर आये और उन्होंने अपने पुत्र की दशा को देखकर सब वृत्तान्त सुना, तो वे अत्यन्त चिन्तित होकर विलाप करने तथा पुत्र को मुक्ति प्रदान करने के हेतु शिव-गिरिजा की तपस्या करने लगे। दधीचि तथा शिवदर्शन दोनों ने ही ऐसा तप किया कि भगवती गिरिजा तथा शिवजी ने प्रसन्न होकर, उन्हें अपना दर्शन प्रदान किया।

हे नारद ! उस समय गिरिजा जी ने शिवदर्शन को अपनी गोद में उठा लिया और शिवजी के हाथों में सौंपते हुए यह प्रार्थना की कि आप इसे मुक्त कर देने की कृपा करें। गिरिजा की बात मानकर शिवजी ने शिवदर्शन को घृत में स्नान कराया और एक गाँठ देकर जनेऊ पहना दिया। तदुपरान्त उसका नाम बटुक रखकर, शिव गायत्री का उपदेश दिया। जब उसने अपने मुख से शिवनाम का उच्चारण किया, उस समय शिव-गिरिजा ने प्रसन्न होकर यह आशीर्वाद दिया—"हे शिवदर्शन ! हमारे ऊपर जो धन तथा द्रव्य चढ़ा करे, उसे तुम ग्रहण किया करो। इसी प्रकार का अधिकार तुम्हें चण्डिका-पूजन में भी प्राप्त होगा। घृत, तेल आदि वस्तुएँ लेने पर भी तुम्हें कोई दोष नहीं लगेगा। अब हम तुम्हारे अपराध को क्षमा किये देते हैं। तुम ब्राह्मण की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:33 PM

सन्तान हो, अस्तु हम दोनों की सेवा करना तुम्हारा धर्म है। हम तुम्हें यह भी वरदान देते हैं कि सब लोग तुम्हारी पूजा भी किया करेंगे। तुम्हारी पूजा किये बिना हम किसी की सहायता नहीं करेंगे। युद्ध में तुम जिसकी ओर रहोगे, उसे ही विजय प्राप्त होगी।"

हे नारद ! इस प्रकार शिवजी तथा गिरिजा ने बटुक को अनेक वरदान दिये, तदुपरान्त उसे चारों दिशाओं में स्थापित कर, सबकी पूजा के योग्य प्रसिद्ध किया। ब्रह्म भोज में बटुक को जो प्रशंसा प्राप्त हुई, उसका वर्णन इस प्रकार है—जिस नगर में बटुक रहता था, उसी नगर का राजा भद्रक प्रतिदिन ब्रह्मभोज किया करता था। शिवजी ने उस राजा को एक ध्वजा दी और यह कहा था कि जब ब्रह्मभोज पूर्ण हो चुकेगा, तो यह ध्वजा अपने आप गिर पड़ेगी। शिवजी की इस कृपा को शिरोधार्य कर राजा प्रतिदिन ब्रह्मभोज किया करता था। एक दिन वह ध्वजा बिना ब्रह्मभोज के ही अपने आप गिर पड़ी। उस समय राजा ने अत्यन्त आश्चर्य में भरकर ब्राह्मणों से उसका कारण पूछा तो ब्राह्मणों ने उसे यह उत्तर दिया—"हे राजन् ! शिवजी के पुत्र बटुक भोजन प्राप्त कर चुके हैं। अस्तु तुम्हारा भोज पूर्णता को प्राप्त हो चुका है। तुम्हें किसी प्रकार का सन्देह करने की आवश्यकता नहीं है। अब तुम अन्य ब्राह्मणों को भोजन कराओ।" यह सुनकर राजा भद्रक को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। "हे नारद ! शिवदर्शन को ही देवल कहा जाता है। देवल की यह कथा अत्यन्त पवित्र है। जो मनुष्य इसे पढ़ता अथवा सुनता है, उसे शिवजी-गिरिजा के पूजन का फल प्राप्त होता है।"

उन्नीसवाँ अध्याय

नारद जी ने कहा—"हे पिता ! अब आप बारहों ज्योतिर्लिङ्गों की कथा का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए तथा यह बताइये कि वे संसार में किसलिए प्रकट हुए?" यह सुनकर ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! पहला ज्योतिर्लिङ्ग सोमेश्वर नामक है। उसका पूजन करने से सम्पूर्ण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:33 PM

मनोरथों की प्राप्ति होती है। वह सन्तान, सम्पत्ति, यश तथा कीर्ति को देने वाला है और सम्पूर्ण कष्टों को दूर करने वाला है।''

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! सुनो, मेरे अँगूठे से दक्ष प्रजापति की उत्पत्ति हुई थी। उसने मेरी आज्ञा से सृष्टि की वृद्धि करनी चाही। तब उसने वीर प्रजापति की कन्या वीरनी के साथ अपना विवाह किया और उसके द्वारा दस सहस्त्र पुत्र उत्पन्न किये। तुम्हारे ही उपदेश से दक्ष के वे सब बालक त्यागी होकर, वन चले गये। तब दक्ष ने दस सहस्त्र बालक और उत्पन्न किये। वे भी तुम्हारा उपदेश पाकर संसार से विरक्त हो गये। उस समय दक्ष प्रजापति ने क्रुद्ध होकर तुम्हें यह शाप दिया कि तुम संसार में किसी एक स्थान पर अधिक देर तक नहीं ठहर सकोगे।

हे नारद ! इसके उपरान्त दक्ष ने साठ कन्याएँ उत्पन्न कीं। उनमें से दस का विवाह धर्मराज के साथ, तेरह का कश्यप के साथ, सत्ताईस का चन्द्रमा के साथ तथा अंगिरस एवं कृशाश्व के साथ दो-दो का हुआ था। चन्द्रमा ने अपनी पत्नियों में सबसे अधिक प्रेम रोहिणी के साथ किया। जो मनुष्य बहुत-सी स्त्रियों के साथ विवाह करके सबसे समान प्रीति नहीं रखता, उस पर अनेक विपत्तियाँ आती हैं और उसे कभी भी आनन्द प्राप्त नहीं होता। वह व्यक्ति सदैव रोगी रहकर अन्त में नरकवास प्राप्त करता है। दक्ष की कन्याओं के साथ समान प्रेम न रखने के कारण से ही चन्द्रमा को भी बहुत दुःख उठाना पड़ा। पहले का वृत्तान्त यह है कि जब अन्य कन्याओं ने यह देखा कि चन्द्रमा रोहिणी के समान उनके ऊपर प्रीति नहीं रखता है तो वे सब रोती-पीटती अपने पिता दक्ष के समीप गयीं और उन्हें सब वृत्तान्त कह सुनाया। उस समय दक्ष ने चन्द्रमा को बुलाकर समझाते हुए कहा—''हे चन्द्रमा ! सब स्त्रियों पर एक-जैसा प्यार रखना चाहिए।''

हे नारद ! चन्द्रमा उस समय तो दक्ष प्रजापति की बात मानकर चला आया और कुछ दिनों तक सभी स्त्रियों पर एक-जैसा प्रेम भी रखा, परन्तु थोड़े दिनों बाद ही वह रोहिणी से और अधिक प्रेम करने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लगा। तब दक्ष की अन्य कन्याएँ फिर अपने पिता के पास आकर रोने लगीं। यह देखकर दक्ष ने चन्द्रमा को दुबारा अपने पास बुलाकर कहा—"हम तुम्हें शाप देते हैं कि तुझे क्षयरोग हो जाए। उस रोग के कारण तू भोग-विलास के मतलब का ही नहीं रहेगा। इस शाप के लगते ही चन्द्रमा को क्षयरोग हो गया तथा उसका तेज नष्ट हो गया। उस समय चन्द्रमा की सभी स्त्रियाँ और अधिक दुःखी हुईं। तब सब देवता चन्द्रमा को लेकर मेरे पास आये और यह कहने लगे—"हे ब्रह्मन् ! आप चन्द्रमा के रोग को दूर करने का कोई उपाय करें।" देवताओं की बात सुनकर मैंने चन्द्रमा को बहुत धिक्कारते हुए इस प्रकार कहा—"हे देवताओ ! जब से इसने राजसूय यज्ञ किया है, तब से इसे धर्म-अधर्म का विचार नहीं रहा है। इसने अपने गुरु की पत्नी तारा के साथ व्यभिचार किया, उस समय मैंने इसकी रक्षा की थी।" मेरी यह बात सुनकर चन्द्रमा दुःखी होकर, मेरे चरणों पर गिर पड़ा और बारम्बार स्तुति करने के उपरान्त इस प्रकार कहने लगा—"हे ब्रह्मन् ! मैंने वास्तव में बड़े पाप किये हैं और हर बार आपने मेरी रक्षा की है। अब मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूँ कि भविष्य में कभी भी कोई अधर्म नहीं करूँगा।"

❁ ❁ ❁

बीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! चन्द्रमा की विनती सुनकर तथा उसकी दीनता देखकर मुझे दया आ गयी। तब मैंने उससे यह कहा—"हे चन्द्रमा ! तीनों लोकों में प्रसिद्ध जो सौराष्ट्र देश है, वहाँ प्रभास क्षेत्र में शिवजी अपने पूर्ण अंश से विराजमान रहते हैं। वह स्थान शिवजी को अत्यन्त प्रिय है। वहाँ तपस्या करने से सम्पूर्ण पाप तथा दोष नष्ट हो जाते हैं। अस्तु, तुम वहीं जाकर शिवलिंग की स्थापना करो तथा उत्तमोत्तम सामग्रियों द्वारा उसका पूजन करो। सब प्रकार के छल-कपट त्याग, योग धारण कर, शिवजी का ध्यान धरना और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:33 PM 4G 86 230/474

12:33 PM

अपने मनोरथ पूर्ण होने का निश्चय करके, उनके प्रेम में लगे रहना। उस समय तुम्हारा यह रोग नष्ट हो जायेगा। शिवजी की भक्ति द्वारा बहुत से लोगों ने मृत्यु को जीत लिया है तथा बड़े-बड़े पापियों ने मुक्ति प्राप्त की है। अस्तु, तुम्हारा कष्ट भी अवश्य दूर होगा।''

हे नारद ! मेरे वचन सुनकर चन्द्रमा तुरन्त ही प्रभास क्षेत्र में जा पहुँचा वहाँ उसने शिवलिङ्ग की स्थापना कर, छः मास तक कठिन तप किया। तब उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर शिवजी प्रकट हुए और वरदान माँगने की आज्ञा दी। उस समय चन्द्रमा ने उन्हें प्रणाम करके स्तुति करते हुए यह कहा—''हे प्रभो ! आप मेरे क्षय रोग को दूर कर दें तथा यह वर दें कि मुझे आपकी भक्ति सदैव प्राप्त हो।'' चन्द्रमा की प्रार्थना सुनकर शिवजी ने उत्तर दिया—''हे चन्द्रमा ! दक्ष का शाप पूर्णरूप से तो नष्ट नहीं हो सकता, पर हम तुम्हें वर देते हैं कि तुम प्रतिमास क्रमानुसार घटा-बढ़ा करोगे और संसार में सुयश प्राप्त करोगे।'' शिवजी की इस आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए चन्द्रमा ने फिर कहा—''हे प्रभो ! अब आप लिङ्गरूप होकर इसी स्थान पर स्थित हो जाइये और अपनी शक्ति को भी यही प्रतिष्ठित करने की कृपा कीजिए।'' जिस समय चन्द्रमा शिवजी से यह प्रार्थना कर रहा था, उसी समय मैं तथा विष्णु जी भी वहाँ जा पहुँचे और चन्द्रमा की इच्छानुसार यह कहने लगे कि हे शिवजी ! आप चन्द्रमा की प्रार्थना स्वीकारकर, उस स्थान पर शक्ति सहित लिङ्ग रूप से अवश्य प्रतिष्ठित हों।

हे नारद ! तब हम लोगों की प्रार्थना स्वीकार कर, शिवजी अपने पूर्ण अंश से गिरिजा सहित उसी स्थान पर प्रतिष्ठित हो गये। उस समय हम सब लोगों ने उस सोमेश्वर शिवलिंग का पूजन करके, अत्यन्त उत्सव मनाया। हे नारद ! उस सोमेश्वर लिंग की महिमा महान् है। सोमेश्वर शिवलिंग जहाँ स्थापित है, उसी के समीप ही चन्द्रमा का बनाया हुआ एक कुण्ड है। उस कुण्ड में जो मनुष्य स्नान करता है, उसके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। सोमेश्वर शिवलिंग का यह चरित्र

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:34 PM

अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाला है। देवता, ऋषि, मुनि, वेद तथा पुराण इस बात को एक स्वर से कहते हैं कि सोमेश्वर शिवलिंग का पूजन करने से आवागमन का भय नहीं रहता। जो मनुष्य इस चरित्र को सुनता है अथवा सुनाता है, उस पर भी शिवजी अत्यन्त कृपा रखते हैं।

इक्कीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! अब तुम मल्लिकार्जुन शिवलिंग का वृत्तान्त सुनो। जिस समय शिवजी के पुत्र स्कन्द जी संसार की परिक्रमा करके कैलाश पर्वत पर आये, उस समय तुमने उन्हें गणपति के अधिकार का सभी वृत्तान्त कह सुनाया। तब स्कन्द अत्यन्त दुःखी हो, अपने माता-पिता को प्रणाम करने के उपरान्त अप्रसन्न हो, क्रौंचगिरि को चले गये। यद्यपि शिव-गिरिजा ने उन्हें बहुत समझाया, परन्तु उन्होंने किसी भी प्रकार कैलाश पर रहना स्वीकार नहीं किया।

हे नारद ! उस समय गिरिजा ने पुत्र वियोग में बहुत विलाप किया। तब शिवजी ने गिरिजा को धैर्य बंधाते हुए यह कहा—"हे गिरिजा ! तुम चिन्ता मत करो, तुम्हारा पुत्र शीघ्र ही तुम्हारे पास लौट आवेगा।" यह सुनकर गिरिजा बोलीं—"हे प्रभो ! आप देवताओं आदि को मेरे पुत्र को मनाने के लिए भेजिये। यदि वह यहाँ नहीं आया तो हम और आप स्वयं ही उसके पास चलकर रहेंगे। गिरिजा को इस प्रकार दुःखी देखकर, शिवजी ने देवताओं तथा मुनियों को स्कन्द जी के पास भेजा, परन्तु स्कन्द जी किसी भी प्रकार लौटकर नहीं आये। जब यह समाचार शिव-गिरिजा को मिला, तो वे पुत्र-वियोग से व्याकुल हो, स्वयं ही उनके पास चल दिये। जिस समय स्कन्द जी ने अपने माता-पिता के आगमन का समाचार सुना तो वे अपने स्थान से तीन योजन दूर हटकर चले गये, ताकि उनसे भेंट न हो सके। स्कन्द जी के ऐसे हठ को देखकर शिव-गिरिजा भी उनके पास नहीं गये और ज्योति रूप होकर उसी स्थान पर स्थित हो गये।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:34 PM

हे नारद ! वही ज्योतिर्लिंग मल्लिकार्जुन के नाम से संसार में प्रसिद्ध है। प्रत्येक पर्व में शिव-गिरिजा अपने पुत्र से भेंट करने के हेतु उस स्थान पर जाया करते हैं। प्रत्येक पन्द्रहवें दिन शिवजी तथा प्रत्येक पूर्णमासी को गिरिजा वहाँ आती हैं, परन्तु उन दोनों में से कोई वहाँ सदैव के लिए नहीं ठहरता। मल्लिकार्जुन शिवलिंग बारह ज्योतिर्लिंगों में से दूसरा है। उसके दर्शन करने से सब प्रकार के आनन्द प्राप्त होते हैं। उसकी महिमा तीनों लोकों में प्रकट है। इस कथा को पढ़ने-सुनने से भी सब प्रकार का आनन्द प्राप्त होता है।''

बाईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे पुत्र ! उज्जयिनी नगरी में एक शिव भक्त ब्राह्मण रहा करता था। वह सदैव भस्म धारण करता, रुद्राक्ष पहनता, शिवजी के नाम का स्मरण करता तथा उन्हीं की निष्काम-भक्ति में संलग्न रहता था। उस ब्राह्मण के चार पुत्र थे जिनके नाम इस प्रकार हैं—देवप्रिय, प्रियमेधा, सुकृत तथा धर्मवादी। ये चारों लड़के भी शिवजी के परम भक्त थे।

हे नारद ! उन्हीं दिनों दूषण नामक एक असुर अत्यन्त बलवान् तथा तीनों लोकों को दुःख देने वाला उत्पन्न हुआ। वह अपनी पत्नी सहित रत्नमाल गिरि पर निवास करता था। उसने मेरी तपस्या करके अपार बलशाली होने का वरदान प्राप्त किया। तदुपरान्त उसने अत्यन्त अहंकार में भरकर सभी देवताओं को जीत लिया और उसी पर्वत पर रहकर तीनों लोकों का राज्य करने लगा। उसने सब धर्म मिटाकर, अनेक प्रकार के पाप फैलाये तथा देवता, ऋषि, मुनि, ब्राह्मण आदि को बहुत कष्ट पहुँचाया। उस समय सब देवता और ऋषि-मुनि मेरे पास आकर इस प्रकार कहने लगे—''हे ब्रह्मन् ! आप इस दैत्य से हमारी रक्षा करने का उपाय करें।'' तब मैंने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा—''हे देवताओ ! मैंने उस दैत्य को वर दिया है। अस्तु, मैं तो उसका अपकार नहीं करूँगा।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे नारद ! इतना कहकर मैं सब देवता तथा मुनियों को साथ ले, शिवजी के समीप जा पहुँचा तथा उन्हें दण्डवत् स्तुति करने के उपरान्त बोला—"हे प्रभो ! दूषण नामक दैत्य संसार में बहुत उपद्रव मचा रहा है। आप दैत्यों का नाश करने में प्रसिद्ध हैं, अस्तु हम लोगों पर कृपा करके अब आप उसका शीघ्र संहार कीजिए।" हमारी प्रार्थना को सुनकर शिवजी ने कहा—"हे देवताओ ! तुम लोग अपने-अपने स्थान को लौट जाओ। हम उस दैत्य का नाश कर देंगे। जब वह दैत्य हमारे उज्जयिनी निवासी भक्त ब्राह्मण तथा उसके पुत्रों को कष्ट पहुँचायेगा, तब हम उसे मार डालेंगे।" शिवजी की यह आज्ञा सुनकर सब लोग अपने-अपने स्थान को लौट गये।

हे नारद ! कुछ समय बाद शिवजी की माया से दूषण के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि मुझे शिवभक्तों तथा देवताओं को दुःख पहुँचाना चाहिये। तब वह स्वयं एक विशाल सेना लेकर शिवभक्तों का वध करने के निमित्त उज्जयिनी में जा पहुँचा ; क्योंकि उसने यह सुना था कि उज्जयिनी पुरी में बहुत से शिवभक्त निवास करते हैं। वहाँ पहुँचकर उसने पुरी को चारों ओर से घेर लिया तथा सब लोगों को दुःख पहुँचाना आरम्भ कर दिया। उसके उपद्रवों को देखकर जब लोग व्याकुल हो, अपना घर छोड़कर बाहर को भागे, तो दैत्यों ने उन्हें पकड़कर मार डाला।

हे नारद ! उस दैत्य के उपद्रवों को देखकर भी शिवजी के भक्त अपने स्थान से हटकर बाहर नहीं निकले ; क्योंकि उन्हें यह विश्वास था कि शिवजी हमारी सहायता एवं रक्षा करेंगे। यह देखकर वह दैत्य शिव भक्तों के स्थान पर पहुँचकर, उन्हें मार डालने के लिए अपने दैत्यों को आज्ञा देने लगा। शिवजी के भक्तों को उस समय भी कोई चिन्ता नहीं हुई। तब शिवजी ने यह चरित्र किया कि जिस स्थान पर शिव भक्त ब्राह्मण बैठे हुए पार्थिव-पूजन कर रहे थे, उसके चारों ओर की पृथ्वी अचानक ही फट गयी और वहाँ एक भारी गड्ढा हो गया। उस समय पृथ्वी फटने से ऐसा महाभयानक शब्द हुआ, जिसको

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:34 PM

सुनकर तीनों लोक काँपने लगे। उस दृश्य को देखकर भी दूषण को कोई चिन्ता नहीं हुई और वह गड्ढे के भीतर घुस कर ब्राह्मणों के पास जा पहुँचा। उस समय शिवजी वहाँ प्रकट हो गये और अत्यन्त क्रोध में भरकर, दूषण से इस प्रकार कहने लगे—"अरे मूर्ख ! हम अपने भक्तों के रक्षक हैं। हम महाकाल हैं। इसलिए उचित है कि अब तू अपने पाँव आगे मत बढ़ा।" शिवजी के मुख से यह वचन सुनकर भी जब वह दैत्य नहीं माना और कुछ आगे को बढ़ा तो उस समय शिवजी ने एक जोर की हुँकार भरी, जिससे महाभयानक अग्नि प्रकट हुए। दूषण अपने साथियों सहित उस अग्नि में जलकर भस्म हो गया।

हे नारद ! उस समय शिवजी के दर्शन पाकर वह ब्राह्मण अपने चारों पुत्रों सहित अत्यन्त प्रसन्न हो, स्तुति करने लगा। देवताओं ने दुन्दुभी बजायी तथा आकाश से पुष्प-वर्षा हुई। सब लोग उच्च स्वर से शिवजी की स्तुति करने लगे। तदुपरान्त उस ब्राह्मण ने शिवजी की प्रार्थना करते हुए कहा—"हे प्रभो ! आपने यहाँ प्रकट होकर अपने भक्तों को कृतार्थ कर दिया है। अब मेरी यह अभिलाषा है कि आप इसी गर्त में गिरिजा जी तथा अपने गणों सहित स्थित हों। यह दूषण नामक दैत्य संसार के लिए काल स्वरूप था, अतः आप उसको नष्ट करने वाले महाकाल हैं। आप इसी महाकाल के नाम से संसार में प्रसिद्ध हों और आपकी पूजा करने वाले अपने सभी मनोरथों को प्राप्त किया करें।" हे नारद ! ब्राह्मण की इस प्रार्थना को शिवजी ने स्वीकार कर लिया। तब वे ब्राह्मण द्वारा स्थापित लिंग मूर्ति में अपने पूर्णांश द्वारा महाकाल नाम से स्थित हुए। उस समय उस ब्राह्मण तथा उसके पुत्रों ने, मैंने, विष्णु जी ने तथा अन्य सब देवताओं एवं ऋषि-मुनियों ने महाकाल ज्योतिर्लिंग का पूजन किया। तदुपरान्त सब लोग अपने-अपने लोक को चले गये। इस कथा को जो कोई सुनता अथवा सुनाता है, उसे भी अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:34 PM

तेईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! महाकाल का पूजन करने पर संसार में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं रहती। महाकाल के सेवकों को धन, स्त्री, पुत्र, यश, कीर्ति आदि की प्राप्ति होती है तथा सभी रोग नष्ट होकर आयु बढ़ती है। राजा चन्द्रसेन तथा श्रीकर की विपत्ति भी महाकाल की सेवा से दूर हो गयी थी। यह सुनकर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! आप मुझे श्रीकर का वृत्तान्त सुनाने की कृपा करें।"

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! पुरातन काल में उज्जयिनी पुरी में एक चन्द्रसेन नामक राजा राज्य करता था। वह राजा शिवजी का परमभक्त था तथा महाकाल की अत्यन्त सेवा किया करता था। शिवजी के गण मणिभद्र से उस राजा की मित्रता हो गयी। तब मणिभद्र ने प्रसन्न होकर उसे एक चिन्तामणि दी, जिसके दर्शन, स्पर्श, श्रवण तथा ध्यान मात्र से ही सम्पूर्ण दुःख दूर हो जाया करते थे। उस मणि का प्रकाश सूर्य के समान फैलता था। जिस समय राजा चन्द्रसेन उस मणि को पहन लेता, उस समय वह सूर्य के समान दिखाई देता था।

हे नारद ! जब अन्य राजाओं ने उस मणि की ऐसी प्रशंसा सुनी, तो उन्होंने अपने मन में यह इच्छा की कि हम उस मणि को स्वयं प्राप्त कर लें। इस प्रकार सब राजा उसके शत्रु बन गये। तब एक दिन पृथ्वी भर के राजाओं ने सम्मिलित होकर राजा चन्द्रसेन के ऊपर चढ़ाई कर दी और उसकी नगरी को चारों ओर से घेर लिया। उस दशा में भी राजा चन्द्रसेन अत्यन्त दृढ़ता पूर्वक महाकाल की सेवा में लगा रहा। उस समय महाकाल शिवजी ने यह चरित्र किया कि एक गोपी अपने पाँच वर्ष के बालक को साथ लेकर राजा चन्द्रसेन के पास पहुँची और उसकी पूजा को देखने लगी।

हे नारद ! उस समय गोपी के पुत्र के हृदय में भी शिवलिंग की पूजा करने की अभिलाषा हुई। तब वह एक पत्थर को एक स्थान पर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:34 PM

स्थापित कर, अपनी बुद्धि के अनुसार उसका पूजन करने लगा। वह बालक शिवजी को प्रणाम करता हुआ आनन्द विभोर हो नृत्य करने लगा। जब उसकी माता ने उसे भोजन करने के लिए बुलाया, तो वह उसके पास न जाकर शिवजी की पूजा करता रहा। यह देखकर गोपी ने उसे बहुत मारा और हाथ पकड़कर अपने निकट खींचा, परन्तु वह बालक शिवजी के प्रेम में डूबकर अपने स्थान से टस-से-मस न हुआ। यह देखकर उसकी माता ने उसके शिवलिंग को उठाकर बहुत दूर फेंक दिया और क्रोध में भरकर उसे बहुत ताड़ना दी। उस समय वह बालक मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

हे नारद ! जब उस बालक की मूर्च्छा टूटी तो उसने तन्द्रिल अवस्था में एक अपूर्व दृश्य देखा। उसने यह देखा कि एक अति सुन्दर शिवालय बना है, जिसमें अनेक प्रकार के रत्न एवं मणियाँ जड़ी हुई हैं। सिंहासन के ऊपर भगवान् सदाशिव विराजमान् हैं। इस दृश्य को देखकर वह बालक अत्यन्त प्रसन्न हुआ और शिवजी को प्रणाम करके उनकी स्तुति करने लगा। फिर वह अपनी माता के अपराध की क्षमा माँगते हुए इस प्रकार कहने लगा—"हे प्रभो ! मेरी माता मूर्ख तथा अनपढ़ है। आप उस पर क्रोध न करें। मुझे आपकी पूजा द्वारा जो फल प्राप्त हुआ हो, उसके बदले में केवल यह चाहता हूँ कि आप मेरी माता का अपराध क्षमा कर दें।"

हे नारद ! इस दृश्य को देखने के उपरान्त वह बालक सन्ध्या होने पर जब अपने घर को चला, तो यह देखा कि मार्ग में इन्द्रलोक के समान एक अत्यन्त सुन्दर नगर बसा हुआ है। उस नगर में सभी भवन स्वर्ण-निर्मित हैं तथा उनमें चारों ओर मणि, मुक्ता आदि रत्न जड़े हुए हैं। उन सब भवनों में उसकी माता का भवन अत्यन्त सुन्दर है। उस भवन के बीच में एक रत्न जटिल शैय्या रखी हुई है, जिसके ऊपर श्वेत वस्त्र बिछे हुए हैं तथा उस शैय्या के ऊपर उत्तमोत्तम वस्त्राभूषणों से अलंकृत उसकी माता गोपी शयन कर रही है। उस समय उस गोपी का शरीर अत्यन्त सुन्दर और प्रकाशवान् था। तब उस बालक ने अपनी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:34 PM

माता के पास पहुँचकर उसे नींद से जगाया। जब गोपी ने उठकर उस अद्भुत चरित्र को देखा तो पहले तो उसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ, तदुपरान्त उसने अपने पुत्र को प्रेम पूर्वक हृदय से लगा लिया। फिर उस सभी वैभव को शिवजी की कृपा समझकर, उसने राजा चन्द्रसेन के पास सब वृत्तान्त कहला भेजा। राजा चन्द्रसेन यह समाचार सुनकर, अपने मित्रों सहित उस नगर को देखने के लिए पहुँचा। वहाँ अत्यन्त प्रेम मग्न होकर, उसने बहुत उत्सव मनाया।''

चौबीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! इस प्रकार रात्रि भर शिवजी के चरित्रों का वर्णन करते हुए तथा उनकी महिमा का गुणगान करते हुए, राजा का पूरा समय एक पल के समान व्यतीत हो गया। उसे अपने मन में शत्रुओं का कुछ भी भय न रहा। प्रातःकाल होने पर अन्य राजाओं ने अपने दूतों द्वारा शिवजी का यह चरित्र सुना। अस्तु, वे सब शस्त्रों को त्यागकर, राजा चन्द्रसेन की शरण में गये। राजा चन्द्रसेन ने उनका अत्यन्त स्वागत-सत्कार किया। तब वे सब लोग महाकाल के दर्शन करने के उपरान्त, गोपी के भवन में गये और उसकी अत्यन्त प्रशंसा करने लगे। जब उन्होंने गोपी-पुत्र द्वारा स्थापित शिवलिंग को देखा, तो सब के हृदय में शिव-भक्ति का संचार हुआ।

हे नारद ! उस समय वहाँ एक बड़ी भारी सभा का आयोजन कर सम्पूर्ण पृथ्वी पर जितने भी गोप थे उस बालक को उन सब का राजा बनाया गया। उसी समय हनुमान ज़ी भी वहाँ प्रकट हुए। हनुमान जी को देखकर सब राजा उठकर खड़े हो गये तथा अत्यन्त प्रसन्नता से भर कर, उनकी स्तुति करते हुए बोले—''हे प्रभो ! हमारे बड़े भाग्य हैं, जो आपने यहाँ आकर हमें दर्शन दिये।'' राजाओं की यह प्रार्थना सुनकर हनुमान जी ने सबको आशीर्वाद दिया, तदुपरान्त उन्होंने गोपी-पुत्र को अपनी गोद में उठाकर, सब राजाओं को सम्बोधित

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:34 PM 86

करते हुए यह कहा—"हे राजाओ ! शिवजी का यह महाकाल नामक लिङ्ग अत्यन्त प्रतापवान्, सबको सुख पहुँचाने वाला, सब प्रकार के दुःखों को नष्ट करने वाला, भक्तों को आनन्द प्रदान करने वाला तथा शत्रुओं का नाश करने वाला है। कल तेरस तिथि शनिश्चर का दिन था। उसमें प्रदोष के समय इस गोपी-पुत्र ने शिवजी का पूजन किया। उसी सेवा से प्रसन्न होकर महाकाल ने इसे राजा चन्द्रसेन सहित कृतार्थ कर दिया है। कृष्ण पक्ष के शनिवार में जो प्रदोष व्रत होता है, उनकी महिमा अपार होती है। ऐसे शुभ योग को पाकर जो मनुष्य महाकाल की पूजा नहीं करता, उससे अधिक भाग्यहीन और कौन है?

हे राजाओ ! इस बालक ने कल के दिन ऐसे ही शुभ योग में महाकाल का पूजन किया था। इस बालक की आठवीं पीढ़ी में नन्द नामक एक गोप उत्पन्न होगा। वह गोप शिवजी का परम भक्त होगा तथा इस बालक के द्वारा स्थापित गोपेश्वर शिवलिंग का पूजन करेगा। उस समय शिवजी की आज्ञा से विष्णु जी नन्द गोप के घर, उसके पुत्र रूप में अवतार लेंगे। वे कृष्ण नाम से संसार में प्रसिद्ध होंगे। आज से इस बालक का नाम श्रीकर होगा।" इतना कहकर हनुमान जी ने श्रीकर को शिवजी के पूजन की विधि बतायी। तदुपरान्त वे राजा चन्द्रसेन एवं श्रीकर पर अनुग्रह करके अन्तर्धान हो गये। अन्य सब राजा भी चन्द्रसेन से आज्ञा प्राप्त कर, अपने-अपने राज्य को लौट गये। हनुमान जी की आज्ञानुसार श्रीकर शिवजी की यथाविधि पूजा करने लगा और अन्त में राजा चन्द्रसेन सहित परम पद को प्राप्त हुआ। हे नारद ! इस महाकाल ज्योतिर्लिंग की ऐसी ही अपार महिमा है। जो प्राणी इस परम पुनीत चरित्र को पढ़ता, सुनता अथवा दूसरों को सुनाता है, उसे भी दोनों लोकों में आनन्द प्राप्त होता है।"

पच्चीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! एक समय तुम गोकर्ण-क्षेत्र में गये थे। वहाँ तुमने तीर्थ स्नान कर, महाबल शिवलिंग का पूजन किया।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:34 PM

तदुपरान्त तुम अन्य शिव लिङ्गों के दर्शन करते हुए रेवा नदी, जिसे नर्मदा कहकर भी पुकारा जाता है और जो शिवजी की पुत्री के रूप में प्रसिद्ध है, तट पर जा पहुँचे। रेवा का दर्शन करने मात्र से ही सम्पूर्ण पाप तथा दुःख नष्ट हो जाते हैं। तीनों लोकों में गंगा नदी को सर्वोपरि कहा गया है, क्योंकि उसमें स्नान करने से महान् सुख प्राप्त होता है। परन्तु वेद और पुराणों का यह कथन है कि रेवा नदी गंगा से भी अधिक श्रेष्ठ है। यमुना नदी में चौदह दिन स्नान करने से, सरस्वती नदी में तीन दिन स्नान करने से तथा गंगा नदी में एक दिन स्नान करने से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं, परन्तु रेवा नदी का केवल दूर से दर्शन करने मात्र से ही सब पापों से मुक्ति मिलती है। उस स्थान पर यदि शिवनिर्माल्य को ग्रहण कर लिया जाए तो कोई दोष नहीं लगता। वहाँ तारयन्त्र नामक जो तीर्थ है, वह सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने वाला है।

हे नारद ! ऐसी अपार महिमाशाली रेवा नदी में तुमने स्नान किया तथा प्रणवेश्वर शिवलिंग का पूजन किया। फिर तुमने विन्ध्याचल पर्वत को देखा, जहाँ सम्पूर्ण संसार का आनन्द एकत्रित-सा प्रतीत होता है। वह तुम्हारी आगवानी करने के लिए आगे बढ़ आया और प्रणाम-स्तुति करने के उपरान्त अपने घर ले गया। वहाँ उसने तुम्हें अत्यन्त विनयपूर्वक शुभ आसन पर बैठाकर पूजन किया। फिर हाथ जोड़कर इस प्रकार कहने लगा—"हे महर्षि ! आज आपके आगमन से मैं कृतार्थ हो गया हूँ। अब मैं अपने कुल में सबसे श्रेष्ठ कहलाऊँगा।" हे नारद ! विन्ध्याचल के ऐसे वचन सुनकर तुमने एक ठंडी श्वाँस ली।

हे नारद ! उस समय विन्ध्याचाल ने तुमसे हाथ जोड़कर इस प्रकार पूछा—"हे प्रभो ! आपके ठण्डी श्वाँस लेने का क्या कारण है, वह मुझे बताइये। यह ठीक है कि पृथ्वी को धारण करने की शक्ति सुमेरु पर्वत में है तथा शिवजी का सम्बन्धी होने के कारण हिमाचल पर्वत भी श्रेष्ठ माना जाता है। निषध, नील, मन्दराचल, रैवत, क्रौच, किष्किन्धा, श्रीगिरि तथा सह्यादि पर्वत श्री श्रेष्ठ कहे गये हैं, परन्तु यह सब पर्वत पृथ्वी को धारण करने में मेरी बराबरी नहीं कर सकते, इस बात को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:34 PM

आप सत्य समझें।'' विन्ध्याचाल के ऐसे अभिमानपूर्ण वचन सुनकर, तुमने अपने मन में विचार किया कि इस पर्वत को अहंकार हो गया है। भला, श्रीगिरि पर्वत से अधिक उत्तम और कौन-सा पर्वत है, जिसके शिखर को देखने मात्र से ही परम पद की प्राप्ति होती है ; परन्तु जब यह विन्ध्याचल स्वयं अपनी प्रशंसा इस प्रकार कर रहा है तो मैं इससे क्या कहूँ? मन में इस प्रकार विचार करके, तुमने विन्ध्याचल से कहा—''हे विन्ध्याचल ! तुम्हारा कथन सत्य है, परन्तु सुमेरू पर्वत तुम्हें अपने सम्मुख कुछ भी नहीं गिनता।''

हे नारद ! उस समय विन्ध्याचल पर्वत अपने मन में चिन्तित होकर यह विचार करने लगा कि मैं सुमेरु पर्वत से किस प्रकार बदला लेकर अपनी महिमा को सबसे महान् सिद्ध करूँ। बहुत कुछ सोचने के उपरान्त उसने यह निश्चय किया कि यदि मैं शिवजी की शरण में जाकर उनके उपदेशानुसार आचरण करूँ तो मेरी विजय हो सकती है। यह विचार करके विन्ध्याचल पर्वत रेवा नदी के तट पर पहुँचा, जिस स्थान पर ओंकारेश्वर शिवलिङ्ग विराजमान है तथा जहाँ से रेवा नदी निकली है, वहाँ विन्ध्याचल ने अमरेश्वर नामक शिवलिङ्ग की स्थापना की। छः महीने तक विन्ध्याचल शिवजी के ध्यान एवं पूजन में निरन्तर लगा रहा। तब शिवजी प्रसन्न होकर उसके सम्मुख अपने मुख्य लक्षणों सहित प्रकट हुए तथा वरदान माँगने के लिए कहने लगे।''

छब्बीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! भगवान् सदाशिव के उस शुद्ध स्वरूप को देखकर विन्ध्याचल ने प्रणाम करने के उपरान्त कहा—''हे प्रभो ! मैं आपकी शरण में आया हूँ। सुमेरु मुझसे व्यर्थ ही वैर-भाव रखता है, अस्तु, आप मुझे यह वर देने की कृपा कीजिए, जिससे उस पर मैं विजय प्राप्त कर सकूँ।'' विन्ध्याचल की प्रार्थना सुनकर शिवजी ने एवमस्तु कहा। उस समय वहाँ सब देवता तथा मुनि भी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:34 PM

आकर एकत्र हो गये और शिवजी से प्रार्थना करने लगे कि आप कृपा करके लिङ्ग रूप से यहीं पर स्थित होइये। शिवजी इस प्रार्थना को स्वीकार कर, उस लिङ्ग में प्रविष्ट हो गये जिसे विन्ध्याचल ने स्थित किया था। शिवजी ने पूर्णांश से जिस लिङ्ग में वास करना स्वीकार किया, उसका नाम तारेश्वर प्रसिद्ध हुआ। तभी वहाँ शिवजी के अंश से एक अन्य लिङ्ग की उत्पत्ति भी हुई जो प्रणवेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उस समय वहाँ बड़ा भारी उत्सव मनाया गया। तदुपरान्त शिवजी सहित सब देवता तथा मुनि अपने-अपने स्थान को चले गये।

हे नारद ! इस प्रकार शिवजी से वरदान पाकर विन्ध्याचल अपने घर आया और अपने मन में विचार करता हुआ यह कहने लगा कि सुमेरु पर्वत के अहंकार का कारण केवल यही है कि सूर्य तथा चन्द्रमा अन्य नक्षत्रों सहित उसकी परिक्रमा करते हैं। अस्तु, मैं उसका अहंकार दूर करने के लिए आज इतना अधिक बढ़ूँगा कि सूर्य को चलने से ही रोक दूँगा। इस प्रकार निश्चय करके विन्ध्याचल पर्वत ने बढ़ना शुरू कर दिया और इतना बढ़ा कि उसने सूर्य की गति को रोक दिया।

हे नारद ! सूर्य की गति रुक जाने से इन्द्र लोक तथा कुबेर लोक में उष्णता बढ़ गयी। इन दोनों लोकों में सूर्य की किरणें एकत्रित होकर गिरने लगीं। तब वहाँ के सब लोग उन किरणों की अग्नि में जलने लगे। एक ओर तो यह दशा थी और दूसरी ओर वरुण लोक तथा यम लोक में घोर अंधेरा छा गया, जिसके कारण वहाँ के सभी निवासी अत्यन्त व्याकुल हुए। इस प्रकार सूर्य की गति रुक जाने से तीनों लोक अत्यन्त दुःखी हुए। तब सभी देवता, ऋषि, मुनि आदि मिलकर मेरे पास आये और इस प्रकार कहने लगे कि हे पिता ! आप किसी उपाय से हम लोगों की रक्षा करने की कृपा करें। तब मैंने उन्हें उत्तर देते हुए यह कहा—"हे देवताओ तथा मुनियो ! विन्ध्याचल पर्वत ने सुमेरु पर्वत पर विजय प्राप्त करने के हेतु रेवा नदी पर स्थित प्रणवेश्वर लिंग की अत्यन्त पूजा की है और स्वयं भी एक लिंग की स्थापना की है। अस्तु, अब तुम सब लोग मिलकर रेवा नदी के तट पर जाओ और प्रणवेश्वर शिवलिंग का पूजन करो।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे नारद ! मेरी यह बात सुनकर सब देवता, मुनि आदि प्रणवेश्वर शिवलिंग का पूजन करने गये। उस समय शिवजी ने उनकी सेवा से प्रसन्न होकर दर्शन दिया और यह कहा—"हे देवताओ ! हम तुम्हारी सेवा से अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। अब हम तुम्हें यह उपाय बताते हैं कि तुम काशीपुरी में जाकर अगस्त्य मुनि से यह सब वृत्तान्त कहो। वे तुम्हारे कार्य को अवश्य कर देंगे।" भगवान् सदाशिव इतना कहकर अन्तर्धान हो गये। तब देवताओं ने अगस्त्य जी के समीप पहुँचकर, उन्हें प्रणाम किया। अगस्त्य ऋषि ने जब उनसे आने का कारण पूछा, उस समय बृहस्पति ने उन्हें उत्तर देते हुए बताया—"हे मुनिश्रेष्ठ ! विन्ध्याचल ने ऊँचा बढ़कर सूर्य की गति को भी रोक दिया है। अस्तु, आप ऐसा उपाय करने की कृपा करें, जिससे तीनों लोकों का दुःख दूर हो।" देवताओं की यह प्रार्थना सुनकर अगस्त्य जी विन्ध्याचल के पास जा पहुँचे। अगस्त्य मुनि के दर्शन पाते ही विन्ध्याचल ने अपने मन में अत्यन्त भयभीत हो, हाथ जोड़कर इस प्रकार कहा—"हे प्रभो ! आप मुझे अपना सेवक जानकर कोई आज्ञा दीजिए, मैं उसका अवश्य पालन करूँगा।" यह सुनकर अगस्त्य जी ने उनसे कहा—"हे विन्ध्याचल ! हम दक्षिण दिशा की ओर जा रहे हैं। अस्तु, जब तक लौटकर न आवें, तब तक तुम और अधिक ऊपर न बढ़कर, नीचे बने रहो।" विन्ध्याचल ने इस बात को स्वीकार कर लिया। तब अगस्त्य जी दक्षिण दिशा की ओर चल दिये और वहाँ से फिर कभी भी लौटकर नहीं आये। इस प्रकार तीनों लोकों का दुःख दूर हो गया। जो मनुष्य इस चरित्र को पढ़ता, सुनता अथवा सुनाता है, उसे दोनों लोकों में आनन्द मिलता है।"

❁❁❁

सत्ताईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! मेरा पुत्र स्वायंभुव मनु अत्यन्त प्रतापी हुआ। उसने मनुस्मृति बनाकर, धर्म नीति सम्बन्धी सम्पूर्ण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विवादों को दूर कर दिया। उसने तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म दिया, जिनके द्वारा बहुत-सी सन्तानें हुईं। उसके एक पुत्र का नाम उत्तानपाद तथा दूसरे का प्रियवृत था। प्रियवृत ने अपने रथ पर चढ़कर, सूर्य के समान समस्त संसार का भ्रमण किया तथा सब द्वीपों एवं समुद्र का विभाजन किया। उसके घर में सात पुत्र उत्पन्न हुए। तब उसने मेरी आज्ञानुसार अपने सातों पुत्रों को एक-एक द्वीप का स्वामी बना दिया और स्वयं शिवजी की सेवा में संलग्न होकर परमपद को प्राप्त किया। उसका सबसे बड़ा लड़का अग्नीज नामक था। वह जम्बूद्वीप का स्वामी बना। अग्नीज से नाभि नामक पुत्र की उत्पत्ति हुई। नाभि ने ऋषभदेव को जन्म दिया। ऋषभदेव के सौ पुत्र उत्पन्न हुए, जिनमें सबसे बड़े पुत्र का नाम भरत था। भरत चक्रवर्ती राजा हुआ। नाभि के अन्य पुत्रों में से नौ बालक तुम्हारी सम्मति मानकर योगी हो गये तथा इक्यासी बालक सिद्ध हुए।

हे नारद ! भरत तीनों लोकों में अत्यन्त यशस्वी हुआ। उसके जितने बालक थे, वे जिस-जिस खण्ड के राजा हुए, वह-वह खण्ड उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हुआ। स्वायंभुव मनु की आकूति नामक बड़ी पुत्री का विवाह रुचि नामक मुनि के साथ हुआ था। रुचि ने सन्तान प्राप्ति के हेतु विष्णु जी का बड़ा तप किया। जब विष्णु जी ने दर्शन देकर उनसे वरदान माँगने के लिए कहा, तब रुचि ने उनसे यह प्रार्थना की कि हे प्रभो ! मैं आपके समान पुत्र चाहता हूँ। विष्णु जी उसकी प्रार्थना स्वीकार कर अन्तर्धान हो गये। तदुपरान्त विष्णु जी ने स्वयं ही आकूति के उदर से दो रूपों में जन्म लिया। उन दोनों बालकों का नाम नर और नारायण रखा गया। रुचि तथा आकूति ने उन दोनों का विष्णु का अवतार जानकर दीक्षा दी। तदुपरान्त वे दोनों नर और नारायण तपस्या करने के हेतु हिमाचल पर्वत पर पहुँचे। हिमाचल की जो शाखा केदार नाम से प्रसिद्ध है, वहाँ दोनों ने अत्यन्त कठिन तप किया। वे शिवजी का पार्थिव पूजन तथा अखण्ड ध्यान धरते रहते थे। तब शिवजी ने प्रसन्न होकर उन्हें अपना दर्शन दिया।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:34 PM 4G 86

हे नारद ! नर-नारायण ने उनकी बहुत स्तुति की तथा यह कहा— "हे प्रभो ! आप हमें अपनी भक्ति प्रदान करने की कृपा करें।" नर-नारायण की स्तुति से प्रसन्न होकर शिवजी बोले— "हे नर-नारायण ! अब तुम्हारी जो इच्छा हो, वह वर हम से माँग लो।" यह सुनकर नर-नारायण ने कहा— "हे प्रभो ! आप इसी स्थान पर अपने पूर्ण अंश से स्थित रहें तथा हमें अपने चरणों की भक्ति प्रदान करने की कृपा करें।" इस प्रार्थना को स्वीकार कर, शिवजी उस स्थान पर ज्योतिर्लिंग होकर अपने पूर्णअंश से स्थित हो गये तथा केदारेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुए।

हे नारद ! जिस स्थान पर नर-नारायण केदारेश्वर शिवलिङ्ग का पूजन करते हुए स्थित हैं, उस स्थान को बदरीवन भी कहा जाता है। वहाँ देवता तथा ऋषि-मुनि आदि समय-समय पर पहुँचकर, शिवजी का पूजन करते हैं। केदारेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग भरतखण्ड के निवासियों के सम्पूर्ण पापों को दूर करने वाला है। उसके दर्शन करने मात्र से ही सम्पूर्ण मनोकामना सिद्ध हो जाती है। यदि कोई व्यक्ति, जो केदारेश्वर का दर्शन करने जा रहा हो, मार्ग में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाय, तो उसे भी मुक्ति मिलती है। केदारेश्वर शिवलिङ्ग की महिमा अपार है।

हे नारद ! विष्णु जी के अवतार श्री कृष्णचन्द्र जी जब जरासंध से परास्त हो गये थे, तब उन्होंने बदरीवन में जाकर केदारेश्वर शिवलिङ्ग का बड़ा पूजन तथा तप किया था। वे सात महीने तक योग धारण कर केवल एक पाँव से खड़े हो, शिवजी का ध्यान धरते रहे थे। उस समय शिवजी ने प्रसन्न होकर उन्हें वरदान माँगने के लिए कहा। तब श्री कृष्णचन्द्र जी ने उनसे अप्रमेय बल की याचना की, जिसे शिवजी ने प्रसन्नता पूर्वक प्रदान किया। जिस समय राजा पाण्डु के पुत्र पाण्डव अपने पापों से मुक्ति पाने के हेतु केदारेश्वर शिवलिङ्ग का दर्शन करने पहुँचे थे, उस समय शिवजी भैंसा का रूप धारणकर वहाँ से भाग चले थे, क्योंकि वे यह नहीं चाहते थे कि ऐसे महापापियों को मुक्त किया

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:34 PM

जाए। परन्तु जब पाण्डवों ने उनकी अत्यन्त विनय की और यह कहा कि आप हमारे पाप को दूर करके कृपापूर्वक यहीं स्थिर रहें तब शिवजी अपने पिछले धड़ से उसी स्थान पर स्थित रह गये, जिसकी सेवा द्वारा पाण्डवों के सम्पूर्ण दुःख नष्ट हो गये। शिवजी अगले धड़ से नेपाल में जा पहुँचे और हरिहर रूप धारण कर वहीं स्थित हो गये। जो मनुष्य हरिहर शिव का दर्शन करता है, उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। हे नारद ! अब भीम शंकर ज्योतिर्लिंग का वृत्तान्त सुनो।''

अट्ठाईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! पूर्व काल में भीम नामक एक अत्यन्त बलशाली दैत्य हुआ उसकी उत्पत्ति कुम्भकर्ण के वीर्य द्वारा हुई थी। भीम की माता का नाम कर्कटी था। वह अपनी माता सहित सह्यादि नामक पर्वत पर निवास कर, तीनों लोकों को तिनके के समान तुच्छ समझ, अनेक प्रकार के उपद्रव करने लगा। एक दिन उस दैत्य ने अपनी माता से यह पूछा—''हे माता ! मेरे पिता का क्या नाम है और तुम यहाँ अकेली क्यों रहती हो? मेरे पिता कहाँ चले गये हैं? जो भी सत्य बात हो, उसे मुझे बताओ।''

हे नारद ! अपने पुत्र की बात सुनकर कर्कटी ने उत्तर दिया—''हे पुत्र ! तुम्हारे पिता का नाम कुम्भकर्ण था। वे रावण के छोटे भाई थे। उन्हें दशरथ के पुत्र रामचन्द्र ने मार डाला।'' यह सुनकर भीम ने पूछा—''हे माता ! तुम मुझे यह बताओ कि कुम्भकर्ण तथा रावण कौन थे, राम कौन हैं और राम ने उन्हें क्यों मार डाला?'' यह सुनकर कर्कटी ने उसे सीता हरण विस्तारपूर्वक कह सुनाया। फिर यह कहा—''हे पुत्र ! जब मैं विधवा हो गयी तो माता-पिता के घर आकर रहने लगी।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:35 PM

उन्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! अपने पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर भीम अपने मन में अत्यन्त क्रुद्ध हुआ तथा यह विचार करने लगा कि देवताओं ने मेरे साथ बहुत बुरा किया है जो उन्होंने विष्णु की सहायता लेकर मेरे कुल को नष्ट करा दिया। इसके अतिरिक्त यह नियम भी है कि जो पुत्र अपने पिता का बदला न ले सके, उसे अत्यन्त नीच समझना चाहिए। अस्तु, अब मैं देवताओं से अपने पिता की मृत्यु का बदला चुकाऊँगा।

हे नारद ! यह विचार कर भीम ने वन में पहुँचकर अत्यन्त कठिन तप करना आरम्भ कर दिया। भीम के कठिन तप के कारण तीनों लोक जलने लगे तब सब देवता तथा ऋषि-मुनि आदि मेरी शरण में आये और प्रार्थना करते हुए यह कहने लगे—"हे ब्रह्मन् ! वह दैत्य कुम्भकर्ण के वीर्य से उत्पन्न हुआ है और अपने पिता का बदला लेने की इच्छा से उग्र तप कर रहा है। अस्तु, आप उसे वरदान देने की कृपा करें, जिससे तीनों लोकों की रक्षा हो जाए। यद्यपि वर प्राप्त हो जाने पर वह हमें दुःख ही देगा, परन्तु तो भी यह बात हम इसलिए कह रहे हैं कि यदि आपने उसे वर नहीं दिया तो उसके उपद्रव करने से पूर्व ही हम सब इस अग्नि में जलकर भस्म हो जायेंगे।"

हे नारद ! देवताओं की प्रार्थना सुनकर मैं उस दैत्य के पास जा पहुँचा और उसे वर माँगने के लिए कहने लगा। उस समय भीम ने मेरी प्रार्थना करते हुए यह कहा—"हे ब्रह्मन् ! आप मुझे ऐसा अप्रमेय बल देने की कृपा करें, जिसके द्वारा मैं अपने पिता के शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकूँ।" यह सुनकर मैं उसे इच्छित वरदान देकर, अपने लोक को लौट आया। तब भीम अत्यन्त प्रसन्न हो, अपनी माता के पास जाकर कहने लगा—"हे माता ! अब मैं सब देवताओं तथा मुनियों का वध कर डालूँगा।" यह कहने के उपरान्त उस दैत्य ने एक भयानक शब्द किया, जिसे सुनकर तीनों लोक काँपने लगे। अस्तु,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:35 PM 4G 86

सब दैत्यों ने उसके पास पहुँचकर, उसे अपना राजा बना दिया। तदुपरान्त वह दैत्यों की सेना लेकर इन्द्र पर चढ़ाई करने के लिए चल दिया।

हे नारद ! जिस समय वह दैत्य इन्द्रलोक में पहुँचा, उस समय सब देवता उसके भय से भयभीत हो, विष्णु जी की शरण में गये और उनसे अपनी रक्षा करने की प्रार्थना करने लगे। तब विष्णु जी उन्हें साथ लेकर उस दैत्य से युद्ध करने के लिए गये। विष्णु ने अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग किया, परन्तु वह किसी भी प्रकार विचलित नहीं हुआ। यह देखकर विष्णु जी ने अत्यन्त क्रुद्ध हो, अपने हाथ में ब्रह्मास्त्र उठाया। उस समय यह आकाशवाणी हुई—"हे विष्णु ! तुम इस दैत्य पर विजय प्राप्त नहीं कर सकोगे। अस्तु अपने लोक को लौट जाओ। इस दैत्य का संहार भगवान् सदाशिव द्वारा होगा।" इस आकाशवाणी को सुनकर विष्णु जी तुरन्त अन्तर्धान हो गये। तब भीम देवताओं पर विजय प्राप्त कर, अपनी सेना सहित घर लौट आया। उसने देवताओं के स्थान पर दैत्यों को प्रतिष्ठित किया और उनके सब रत्न छीन लिये।"

❁❁❁

तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! मैंने तथा विष्णु जी ने तथा सब देवताओं ने उस समय शिवजी की शरण में पहुँचकर दण्ड-प्रणाम करने के पश्चात् स्तुति करते हुए भीम का सब वृत्तान्त कह सुनाया तथा यह प्रार्थना की—"हे प्रभो ! आपके अतिरिक्त उस दैत्य को अन्य कोई नहीं मार सकता।" यह सुनकर शिवजी ने उत्तर दिया—"हे देवताओ ! जब वह भीम नामक दैत्य कामरूप देश के राजा प्रियधर्म को दुःख पहुँचायेगा, तब हम उसका संहार करेंगे।" यह सुनकर हम सब लोग अपने घर लौट आये।

हे नारद ! उधर एक दिन भीम ने अपने मन में यह विचार किया कि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:35 PM

यदि शिवजी रामचन्द्र को अपना बाण न देते तो वे मेरे पिता को नहीं मार सकते थे। शिवजी के कारण ही सब देवता, ऋषि-मुनि निर्भय रहते हैं। अस्तु, अब मुझे शिवजी को नष्ट करने का उपाय करना चाहिए। शिवजी कहीं दिखाई नहीं देते, इसलिए यदि मैं उनके भक्तों को दुःख पहुँचाना आरम्भ कर दूँ तो वे उन्हें बचाने के हेतु किसी दिन अवश्य प्रकट होंगे। यह निश्चय करके वह दैत्य अपनी सेना सहित शिव भक्तों को ढूँढ-ढूँढकर मारने लगा। एक दिन वह कामरूप के राजा प्रियधर्म को शिवजी का परम भक्त समझकर, उसके राज्य में जा पहुँचा उस समय सब प्रजा अत्यन्त दुःखी होकर राजा के पास पुकार करने के लिए पहुँची। तब तक भीम भी अपनी सेना को साथ लिये उसके किले में जा पहुँचा। उसने राजा को पकड़कर बाँध लिया तथा बन्दी बना लिया।

हे नारद ! उस अवस्था में भी राजा प्रियधर्म ने शिवजी का ध्यान करना न छोड़ा। वह गंगा का स्मरण कर, मानसी-स्नान कर लेता और बन्दीगृह में भी पार्थिव-पूजन किया करता था। उसकी दक्षा नामक रानी उसी के पास रहकर, शिवजी का पूजन किया करती थी। उनकी सेवा से प्रसन्न होकर शिवजी गुप्त रूप से उस मूर्ति में स्थित हो गये। जो राक्षस राजा के बन्दीगृह की रक्षा के हेतु नियुक्त थे जब उन्होंने यह देखा कि राजा अब भी पार्थिव-पूजन करना नहीं छोड़ता है, तब एक दिन उनमें से एक राक्षस ने भीम के पास जाकर यह समाचार दिया और कहा कि राजा प्रियधर्म अभी तक शिवजी की पूजा करता रहता है। इस समाचार को पाकर भीम अपने हाथ में खड्ग ले, अत्यन्त क्रोधित हो, राजा को मार डालने के लिए उसके पास जा पहुँचा। अस्तु, इस प्रकार जब राजा के पास जाकर उसने यह देखा कि उसके सेवक का कहना सत्य है तो अत्यन्त क्रुद्ध होकर राजा से इस प्रकार पूछने लगा—"हे राजन् ! तू क्या कर रहा है?"

हे नारद ! भीम के वचन सुनकर राजा ने उत्तर दिया—"हे दैत्यराज ! मैं सम्पूर्ण विपत्तियों को नष्ट करने वाले शिवजी का पूजन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:35 PM

कर रहा हूँ। तुम्हारे जो मन में आवे, वह करो ; परन्तु मैं शिवजी की पूजा किसी प्रकार नहीं छोड़ूँगा।" यह सुनकर भीम ने हँसते हुए कहा—"हे मूर्ख राजन् ! हम तेरे स्वामी को अच्छी तरह जानते हैं। वह हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। जब तक वह शिव मेरे सामने नहीं आता, तभी तक तू उसे अपना स्वामी समझकर, ढोंग रच रहा है। तुझे चाहिए कि तू इस मूर्ति को उठाकर फेंक दो और मेरी आज्ञानुसार शिव का नाम लेना छोड़ दो। यदि तूने मेरी बात नहीं मानी तो मैं तुझे अपनी तलवार से मार डालूँगा।

हे नारद ! इस प्रकार उस राक्षस ने राजा प्रियधर्म से बहुत-सी बातें कहीं, परन्तु राजा उन सबको अनसुनी करके दृढ़तापूर्वक शिवजी के ध्यान में मग्न बना रहा। राजा ने यह विचार करके कि शिवजी अपने भक्तों की अवश्य सहायता करते हैं, भीम को उत्तर दिया—"अरे राक्षस ! मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि अब तेरा अन्तिम समय निकट आ पहुँचा है। इसीलिए तू शिवजी के प्रति ऐसे अपमानजनक शब्दों का प्रयोग कर रहा है। हे मूढ़ ! यदि तू मेरे साथ कोई बुराई करेगा तो शिवजी तुझे जलाकर भस्म कर डालेंगे।" राजा की यह बात सुनकर भीम फिर बोला—"हे मूर्ख राजा ! हम तेरे शिव को बहुत अच्छी तरह जानते हैं। यदि तू इसी समय शिव की पूजा करना नहीं छोड़ता, तो यह निश्चय रख कि हमारे हाथ से अभी मार डाला जायेगा।" इस पर राजा ने उत्तर दिया—"हे दैत्य ! तेरे मन में जो आवे, वह कर, परन्तु मैं शिवजी का पूजन कभी नहीं छोड़ूँगा।" इन कटु वचनों को सुनकर भीम ने तलवार उठाते हुए कहा—"अरे मूर्ख राजा ! हमने तुझे विचार करने के लिए बहुत समय दिया, परन्तु तू अब भी अपनी हठ पर अड़ा हुआ है। अब हम अपने खड्ग द्वारा तेरा मस्तक काटते हैं। तू अपने शिव का स्मरण कर ले। देखें, वह किस प्रकार तेरी रक्षा करता है?" इतना कहकर भीम ने जैसे ही अपना खड्ग चलाया, उसी समय शिवजी राजा प्रियधर्म द्वारा स्थापित पार्थिव मूर्ति से प्रकट होकर, उसके सामने आ खड़े हुए।"

❀❀❀

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:35 PM

इकतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! जिस समय भीम ने शिवजी के महाभयानक स्वरूप को देखा, उस समय वह अत्यन्त भयभीत हो गया। तब शिवजी ने उसे सम्बोधित करते हुए उच्च स्वर में इस प्रकार कहा—"हे दैत्यराज ! अब तू अपना बल हमें दिखा और हमारी शक्ति को स्वयं देख।" शिवजी के मुख से ऐसे वचन सुनकर भीम उनसे युद्ध करने के हेतु तैयार हो गया। तब शिवजी तो भीम के साथ युद्ध करने लगे और उनके गण दैत्यों के साथ युद्ध करने में प्रवृत्त हुए। वह युद्ध ऐसा भयानक था कि मैं तथा विष्णु आदि देवता भी उसे देखकर आश्चर्य में पड़ गये। भीम ने शिवजी के ऊपर जितने भी अस्त्र-शस्त्र छोड़े, उन सबको भगवान् शंकर ने अपने बाणों द्वारा काट डाला। तदुपरान्त उन्होंने अपने त्रिशूल का ऐसा प्रहार किया कि उसके लगते ही भीम मूर्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ा।"

इतनी कथा सुनाकर ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! उस युद्ध को देखकर मैंने तुम्हें शिवजी के पास यह कहने के लिए भेजा कि अब आप और अधिक विलम्ब न करके भीम को मार डालिये। मेरे इस सन्देश को लेकर जब तुम शिवजी के पास पहुँचे, उस समय शिवजी ने तुम्हें यह उत्तर दिया—"हे नारद ! तुम देवताओं से जाकर यह कह दो कि हम थोड़ी ही देर में इस शत्रु को मार डालेंगे।" जिस समय तुम शिवजी की आज्ञा सुनकर हमारे पास लौटे, तभी दैत्यों ने मिलकर शिवजी के ऊपर एक साथ चढ़ाई कर दी। उस समय देवताओं में हाहाकार मच गया।"

हे नारद ! उस समय शिवजी ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर एक ज़ोर की हुँकार भरी, जिससे ऐसी ज्वाला उत्पन्न हुई कि उसमें पड़कर सभी दैत्य भस्म हो गये। भीम भी उसी अग्नि में जलकर नष्ट हो गया। तदुपरान्त उन दैत्यों के शरीर की भस्म नासिका की वायु का आश्रय पाकर भगवान् सदाशिव एवं अन्य देवताओं को स्पर्श करती हुई पृथ्वी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:35 PM

पर गिर पड़ी जिसके द्वारा सहस्त्रों गुणकारक औषधियों की उत्पत्ति हुई। सिद्ध लोग उन औषधियों की सहायता से अनेक प्रकार के रूप धारण कर लेते हैं। भगवान् सदाशिव की उस लीला को देखकर सभी देवता अत्यन्त आनन्दित हुए। तब उन्होंने हाथ जोड़कर स्तुति करते हुए, शिवजी से यह प्रार्थना की—"हे प्रभो ! आप उस स्थान पर अपने पूर्ण अंश में विराजमान् होने की कृपा करें।" देवताओं की प्रार्थना पर शिवजी अपने पूर्ण अंश से उस स्थान पर स्थित हुए, जहाँ उन्होंने भीम को जलाकर भस्म कर डाला था। वह लिंङ्ग भीमशंकर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जो भीमशंकर ज्योतिर्लिङ्ग के इस चरित्र को पढ़ता सुनता अथवा दूसरों को सुनाता है, उसकी सम्पूर्ण मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।"

बत्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! अब मैं पापों को नष्ट करने वाले तथा मोक्ष प्रदान करने वाले काशीपति विश्वनाथ ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करता हूँ। भगवान् सदाशिव ब्रह्म हत्या का पाप भी दूर कर देते हैं।

हे नारद ! भगवान् सदाशिव का यह वचन है कि निर्गुण-सगुण ब्रह्म में कोई अन्तर नहीं है। अस्तु, दोनों को एक ही रूप समझना चाहिए। जब ब्रह्म ने सगुण रूप धारण किया तो उन्होंने अपने शरीर द्वारा शक्ति को भी प्रकट किया। इस प्रकार वह एक रूप दो रूपों में विभाजित हो गया। उन्होंने अपने प्रकृति रूपा शक्ति द्वारा लीला करने के हेतु पाँच कोस के विस्तार वाले एक क्षेत्र का निर्माण किया, उसे आनन्दवन, काशी, वाराणसी, अविमुक्त, रुद्रक्षेत्र तथा महाश्मशान आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है। वह स्थान शिवजी तथा उनकी शक्ति का अत्यन्त प्रिय है। शिव तथा शक्ति ने उस स्थान में बहुत समय तक विहार किया, तदुपरान्त उनकी यह इच्छा हुई कि हम किसी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:35 PM

बलवान् पुरुष को उत्पन्न करें। अस्तु, उन्होंने अपनी बायीं भुजा द्वारा एक अत्यन्त सुन्दर मनुष्य को, जो चार भुजाएँ धारण किये हुए था उत्पन्न किया। उसने जन्म लेते ही शिवजी को प्रणाम करते हुए पूछा—"हे प्रभो ! मेरा क्या नाम है और आप मुझे किस कार्य को करने की आज्ञा देते हैं?"

हे नारद ! उस पुरुष की बात सुनकर शिवजी ने कहा—"हे पुत्र ! तुम तीनों लोकों के स्वामी होने के कारण संसार में विष्णु नाम से प्रसिद्ध होंगे। अब तुम कठिन तपस्या करो, जिससे तुम्हारे तेज की और अधिक वृद्धि हो।" इतना कहकर शिवजी ने विष्णु जी को श्वास मार्ग द्वारा सम्पूर्ण वेदों का ज्ञान प्राप्त करा दिया और स्वयं अन्तर्धान हो गये। तब शिवजी की आज्ञा मानकर विष्णु जी ने तपस्या करने के हेतु, सर्वप्रथम एक पुष्करिणी को अपने हाथों से खोद फिर उसे अपने पसीने के जल से भरने के उपरान्त, पचास सहस्त्र वर्षों तक ध्यान में मग्न हो गये। जब उस तपस्या का कोई फल नहीं मिला, तब वे अत्यन्त चिन्तित हुए। उसी समय उन्हें यह आकाशवाणी सुनाई दी कि हे विष्णु ! तुम फिर तपस्या करो, तब तुम्हें वर प्राप्त होगा। आकाशवाणी को सुनकर विष्णु जी ने पुनः तप करना आरम्भ किया। उससे प्रसन्न होकर शिवजी ने शक्ति सहित प्रकट होकर विष्णु को अपना दर्शन दिया। उस समय शिवजी के कान से एक मणिकर्णिका निकल कर उस स्थान पर गिर पड़ी ; जिससे वह स्थल संसार में मणिकर्णिका के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तदुपरान्त जब शिवजी ने विष्णु जी से वर माँगने के लिए कहा तो विष्णु जी ने उनकी स्तुति करते हुए यह प्रार्थना की—"हे प्रभो ! आप मुझे अपनी अप्रमेय भक्ति का वर दीजिये तथा ऐसी कृपा कीजिये, जिससे यह स्थान सर्वश्रेष्ठ पद को प्राप्त हो।" शिवजी ने विष्णु की यह प्रार्थना स्वीकार करने के उपरान्त कहा—"हे विष्णु ! तुम सृष्टि को उत्पन्न करने के हेतु पुनः तपस्या करो।"

हे नारद ! विष्णु जी द्वारा बहुत समय तक दुबारा तपस्या करने पर भी, शिवजी प्रसन्न नहीं हुए, क्योंकि वे कुछ और लीला करना चाहते

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:35 PM

थे। उधर तपस्या करते-करते विष्णु जी के शरीर से इतना पसीना निकला कि सम्पूर्ण पृथ्वी जल से भर गयी। उस जल को देखकर विष्णु जी अत्यन्त चिन्तित हुए, परन्तु शिवजी की माया के कारण वास्तविक भेद को नहीं जान सके। जिस समय काशी उस जल में डूबने लगी, तब शिवजी ने उसे अपने त्रिशूल पर धारण कर, ऊपर उठा लिया। उस समय शिवजी ने यह चरित्र किया कि विष्णु जी की नाभि से, जो कि तालाब के समान गहरी तथा चौड़ी थी, एक कमल उत्पन्न हुआ। वह कमल करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशवान् था। तदुपरान्त शिवजी ने अपनी दाहिनी भुजा से मुझे उत्पन्न करके, उस कमल के ऊपर बैठा दिया। परन्तु शिवजी की माया में मोहित होने के कारण मुझे यह ज्ञान न हो सका कि मैं किस प्रकार उत्पन्न हुआ हूँ। उस कमल पर बैठे हुए जब मैं अपने जन्म के विषय में सोच रहा था तभी अचानक ही मुझे यह ध्यान आया कि जहाँ से यह कमल उत्पन्न हुआ होगा, वह स्थान ही मेरी उत्पत्ति का मूल होगा। अस्तु, मैं उस कमल की जड़ का पता पाने के लिए कमल-नाल के मार्ग द्वारा नीचे की ओर चल दिया, परन्तु सौ वर्षों तक निरन्तर चलने पर भी उस कमल की जड़ का मूल नहीं मिला।

हे नारद ! उसी समय यह आकाशवाणी हुई कि तुम तपस्या करो, तब तुम्हें वास्तविक भेद का ज्ञान प्राप्त होगा। उस आकाशवाणी को सुनकर मैं तप करने में लीन हो गया। तदुपरान्त शिवजी ने अपनी लीला द्वारा विष्णु जी को सचेत करके मेरे पास भेजा। जब उन्होंने मेरे समीप आकर वर माँगने के लिए कहा, तब मैंने उनसे पूछा कि आप कौन हैं? उस समय विष्णु जी ने यह उत्तर दिया कि हम तुम्हारे पिता हैं और सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी हैं। यह सुनकर मैं उनसे विवाद करने लगा। उसी समय शिवजी एक ज्वाला के रूप में प्रकट हुए। वह ज्वाला पृथ्वी से लेकर आकाश तक फैली हुई दिखाई दी। हम दोनों उस ज्वाला के प्रारम्भिक तथा अन्तिम छोर को जानने के लिए बहुत समय तक भटकते रहे, परन्तु जब सफलता न मिली तो उसी कमल

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पुष्प पर आकर खड़े हो गये। उस समय शिवजी ने प्रसन्न होकर हमें अपना दर्शन दिया और यह कहा—"हे ब्रह्मा जी तथा हे विष्णो ! अब ब्रह्मा जी सृष्टि को उत्पन्न करने का कार्य करें तथा विष्णु जी उसका पालन करें।" इतना कहकर शिवजी अन्तर्धान हो गये।

हे नारद ! शिवजी के अदृश्य हो जाने पर विष्णु जी भी अन्तर्धान हो गये। उन्होंने वैकुण्ठ लोक का निर्माण किया और उसी में निवास करने लगे। तदुपरान्त मैंने सम्पूर्ण ब्रह्मांड को उत्पन्न किया। इस सृष्टि में जो पचास कोटि योजन विस्तार के चौदह लोक तथा पृथ्वी के ऊपर-नीचे चौदह भुवन दिखाई देते हैं, वे सब मेरे ही द्वारा उत्पन्न किये हुए हैं। भगवान् सदाशिव स्वयं निर्गुण रूप से सर्वत्र व्याप्त हैं तथा मैं विष्णु और हर उनके सगुण रूप में प्रकट होकर, सांसारिक कार्यों को किया करते हैं।

हे नारद ! शिवजी के स्वरूप दो प्रकार के कहे गये हैं—पहला क्षर दूसरा अक्षर। भगवान् सदाशिव निर्गुण तथा सगुण रूप से सब जगह विद्यमान् हैं। उनकी महिमा को कोई भी नहीं जान पाता। सभी प्राणियों को यह उचित है कि जब तक निर्गुण रूप का पूरा हाल न जान ले, तब तक सगुण रूप के जानने में लगा रहे। जो भक्त निर्गुण रूप को जान लेता है, उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।"

तैंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे पुत्र ! जब निर्गुण रूप का ज्ञान प्राप्त हो जाता है, तब जीव के सभी कार्य छूट जाते हैं और उसे सम्पूर्ण लोक ब्रह्मरूप दिखाई देने लगते हैं। यह ज्ञान अत्यन्त कठिन तथा दुर्लभ है। इसे कोई-कोई सत्पुरुष ही जान पाते हैं। अनेक जन्मों के अभ्यास द्वारा योगियों को यह ज्ञान बहुत अल्प मात्रा में होता है।

एक दिन जब शिवजी ने संसार के कल्याण के निमित्त यह विचार किया कि ब्रह्मा ने हमारी आज्ञा द्वारा सृष्टि को तो उत्पन्न किया, परन्तु

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:35 PM

ब्रह्माण्ड के जीव अपने कर्मों में बंधे रहकर हमारे स्वरूप को किस प्रकार जान सकेंगे, तब उन्होंने यह लीला की कि जिस काशी को उन्होंने अपने त्रिशूल पर उठा रक्खा था, उसे पुनः पृथ्वी पर स्थापित कर दिया। तदुपरान्त उन्होंने अपने लिंग अविमुक्त अर्थात् विश्वनाथ को काशी में स्थापित करके यह कहा—"काशी हमारा क्षेत्र है। अस्तु यह कभी प्रलयकाल में भी नष्ट नहीं होगा। इसकी उत्पत्ति हमारे अंश से हुई है, इसलिए यह हमें अत्यन्त प्रिय है। जो मनुष्य इस काशी के दर्शन करेंगे व आवागमन से छूट जाएंगे और जो यहाँ की यात्रा करेंगे, उस समय इस काशी को अपने त्रिशूल पर उठाकर, बचा लिया करेंगे। तदुपरान्त जब ब्रह्मा पुनः सृष्टि को उत्पन्न करेंगे, तब हम इसे फिर उसी स्थान पर स्थित कर दिया करेंगे। अब तुम इस काशी में निवास करके यहाँ की रक्षा करो।"

हे नारद ! भगवान् सदाशिव ने विश्वनाथ लिंग से यह कह कर उन्हें काशी सहित मृत्यु लोक में लाकर स्थापित कर दिया। तभी से काशी पापों को नष्ट करने वाली प्रसिद्ध है। विश्वनाथ ज्योतिर्लिङ्ग समस्त प्राणियों को भवसागर से पार उतारा करता है। उस स्थान पर मुक्ति दासी के समान निवास किया करती है। जो मनुष्य किसी भी प्रकार मोक्ष प्राप्त करने योग्य नहीं है, उन्हें भी काशी मुक्ति प्रदान करती है। भगवान् सदाशिव की आज्ञानुसार काशी सम्पूर्ण दुःखों को नष्ट करने में कुल्हाड़ी के समान है। उस काशी को पाकर विश्वनाथ जी भी अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा सम्पूर्ण संसार सनाथ हो गया।

हे नारद ! जब विश्वनाथ जी काशी सहित लिंग रूप में प्रकट हुए तब मैं तथा विष्णु जी अपने गणों सहित शिव नाम का उच्चारण करते हुए, उस स्थान पर जा पहुँचे। सब देवता, दिग्पाल, सनकादिक तथा ऋद्धि-सिद्धियों सहित इन्द्र भी वहाँ जा पहुँचे। तब हम सब लोगों ने बड़ा उत्सव करके, सुख प्राप्त किया और उस विश्वनाथ लिंग की पूजा की। तदुपरान्त जब सब लोगों ने मिलकर स्तुति की। उस समय शिवजी ने अत्यन्त प्रसन्न होकर, हमें अपना दर्शन दिया। शिवजी का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:35 PM

वह स्वरूप अत्यन्त सुन्दर तथा चतुर्भुजी था। उनके सम्पूर्ण गौर शरी पर श्वेत भस्म लगी हुई थी और प्रत्येक अंग सुडौल थे।

हे नारद ! भगवान् सदाशिव के उस स्वरूप को देखकर हम स लोग कृतार्थ हो गये। तदुपरान्त हमने उन्हें प्रणाम करते हुए यह स्तुि की—"हे प्रभो ! आप इस काशीपुरी में सदैव स्थित रहें तथा यह क्षे अविमुक्त के नाम से प्रसिद्ध हो। आपका यह विश्वनाथ नामक लिं सबसे श्रेष्ठ तथा पूर्ण अंश संयुक्त है। अस्तु यह यहाँ पर सदैव स्थि रहे।" हम लोगों की इस प्रार्थना को सुनकर शिवजी ने 'एवमस्तु कहा। भक्ति तथा नन्दी ने भी हमारी इस प्रार्थना को स्वीकार किया वह ज्योतिर्लिङ्ग विश्वेश्वर, विश्वनाथ तथा अविमुक्त नाम से संसार मे प्रसिद्ध है। उसका दर्शन, पूजन एवं स्मरण करने से सम्पूर्ण मनोकामनाए सिद्ध होती हैं। तीनों लोकों में काशीपुरी के समान न तो कोई दूसर पुरी है और न विश्वनाथ लिङ्ग के समान अन्य कोई लिङ्ग है।"

❁❁❁

चौंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! विश्वनाथ तथा काशी का चरित्र भक्तों को मुक्ति देने वाला है। उस पवित्र काशीपुरी में मणिकर्णिक तीर्थ ऐसा है जो सब प्राणियों की मनोकामनाएँ पूरी करता है। जब नश्वर संसार में अनश्वर काशी का आगमन हुआ, उस समय सब लोगों को अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

हे नारद ! तदुपरान्त सब मनुष्य काशी-विश्वनाथ का दर्शन करने के हेतु स्त्री-पुरुषों को साथ ले, बड़ी धूमधाम से चले। वह समाज जब काशीपुरी में इकट्ठा हुआ तो ऐसा आनन्द दिखाई देने लगा, जिसक वर्णन नहीं किया जा सकता। वे लोग गाते-बजाते हुए विश्वनाथ मन्दिर के समीप पहुँचे और उनका दर्शन तथा पूजन करके जय-जयकार करने लगे। जब एक स्त्री ने लोगों के मुख से विश्वनाथ लिं की महिमा सुनी तो उसने अपने कृपण पति से यह कहा—"हे पति

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आप भी भगवान् विश्वनाथ के दर्शन करने के लिए मुझे ले चलें, क्योंकि सम्पूर्ण संसार उनके गुणों का वर्णन कर रहा है।''

पैंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अपनी स्त्री की बात सुनकर यह कृपण मनुष्य बहुत दुःखी हुआ, क्योंकि उसने यह सोचा था कि यदि मैं इसे लेकर काशी को गया तो कुछ द्रव्य खर्च करना पड़ेगा। अस्तु, वह अपनी पत्नी से बोला—''अरी बावली ! तू यह क्या विचित्र बात कहने बैठ गयी है? तू यह अच्छी तरह जानती है कि मैंने बड़े परिश्रमपूर्वक धन एकत्र किया है। मैं इस कमाई को व्यर्थ के कार्यों में खर्च नहीं कर सकता। इसे परिश्रमपूर्वक संचय करके रखना चाहिए।''

हे नारद ! अपने पति के मुख से यह वचन सुनकर उस शिव भक्तिनी स्त्री ने हाथ जोड़कर कहा—''हे स्वामी ! आपका कथन सत्य है। धन का संग्रह करना सर्वथा उचित है, परन्तु उसे शिवजी के निमित्त व्यय करना भी आवश्यक है। शिवजी की भक्ति से और भी अधिक धन की प्राप्ति होती है। शिवजी के गुणों का श्रवण करने वाले कान ही श्रेष्ठ हैं तथा जो नाक शिवजी के चरणों की सुगन्धि ग्रहण करती है, वही प्रशंसा के योग्य है। जो पाँव शिव क्षेत्र की यात्रा करें, उन्हें उत्तम समझना चाहिए। मनुष्य को उचित है कि उसे जो वस्तु प्रिय हो, उसे शिवजी के हित में अर्पित कर दें। भगवान् विश्वनाथ का पूजन बड़े-बड़े पापों को भी नष्ट कर देता है। अस्तु, मैं यह कहती हूँ कि इस समय सब लोग शिवजी के दर्शन करने जा रहे हैं सो आप भी चलने की तैयारी करें। विद्वानों का कहना है कि संसार में धर्म से बढ़कर अन्य कोई कर्म नहीं है तथा धन कर्म के अधीन रहता है।''

हे नारद ! पत्नी के मुख से यह बात सुनकर कृपण ने उत्तर दिया—''हे प्रिये ! भाग्य में जो लिखा होता है, वही मिलता है। तब हमें क्या आवश्यकता है कि हम अपने धन को व्यर्थ ही व्यय कर दें? भला तुम सोचो कि जिन हाथों द्वारा धन को पैदा किया जाता है, उन्हीं हाथों द्वारा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:36 PM

उसको व्यय कर देना, किस प्रकार मंगलदायक हो सकता है?'' यह सुनकर जब उस स्त्री ने फिर हठ किया, तब वह कृपण अत्यन्त क्रुद्ध होकर इस प्रकार कहने लगा—''अरी मूर्खा ! स्त्री को उचित है कि वह अपने पति की आज्ञा का पालन करे। इस प्रकार पति के ऊपर अपनी आज्ञा चलाना शोभनीय नहीं है। यदि तूने मेरी बात नहीं मानी तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगा। अच्छा, अब मैं इस घर को छोड़कर चला जाता हूँ, फिर तू यहाँ रह कर जो मन में आवे, वह करती रहना। इस प्रकार वह कृपण अपने घर से चला गया और उसकी स्त्री शिवजी के प्रेम में मग्न हो, घर में बैठी विलाप करती रही।''

छत्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे पुत्र ! वह कृपण वन में जाकर बहुत विलाप करने लगा। उसी समय एक शिव भक्त उसके पास जा पहुँचा। जब उसने कृपण से रोने का कारण पूछा और कृपण ने उसे सब हाल कह सुनाया, तब उसने समझाते हुए इस प्रकार कहा—''हे कृपण ! तुम्हारी स्त्री ने तुम्हें श्रेष्ठ धर्म की शिक्षा दी थी, परन्तु शिवजी की माया में मोहित होने के कारण तुमने उस पर ध्यान नहीं दिया। तुमने जिस धन को अत्यन्त परिश्रमपूर्वक एकत्र किया है, वह तुम्हारे साथ कभी नहीं जायेगा। अस्तु, तुम्हें भी उचित है कि तुम इस मनुष्य के शरीर को पाकर भगवान् विश्वनाथ का दर्शन अवश्य करो। जो प्राणी मनुष्य शरीर पाकर माया-मोह में भूला रहता है, उसे पश्चात्ताप के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता।'' इस प्रकार शिव भक्त ने उसे सदुपदेश दिया तब वह कृपण भी अपनी भूल को स्वीकार कर, शिवजी के प्रेम में मग्न हो गया और इस प्रकार कहने लगा—''हे बन्धु ! मैं अब तक वास्तव में अज्ञानावस्था में था। आपके वचन सुनकर मुझे श्रेष्ठ बुद्धि की प्राप्ति हुई है।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:36 PM

सैंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! यह सुनकर शिवजी के भक्त ने कहा—"हे बन्धु ! संसार में उत्तम, मध्यम तथा अधम—इन तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं। उत्तम उन्हें समझना चाहिए, जो इस संसार को नाशवान् समझकर अहंकार को त्याग देते हैं तथा भगवान् सदाशिव के ध्यान में सदैव मग्न बने रहते हैं। ऐसे लोग आवागमन से छूट जाते हैं तथा सांसारिक बन्धनों को निःसार समझकर, उनसे वैराग्य ले लेते हैं।

हे बन्धु ! मध्यम पुरुष वे हैं, जो कभी हाथी पर चढ़ते हैं और कभी मस्तक पर बोझ लादकर भ्रमण करते हैं। वे कभी धनवान् हो जाते हैं कभी निर्धन, परन्तु इस श्रेणी के लोग भी अपने धर्म का त्याग नहीं करते। वे संसार में लिप्त रहते हुए भी, उससे मुक्ति पाने का उपाय ढूँढने में संलग्न रहते हैं।

हे बन्धु ! अधम लोग वे हैं जो अन्य जीवों पर दया न करके, दूसरों का अहित करने तथा पाप कर्म करने में दिन-रात लगे रहते हैं। वे दूसरों को प्रसन्न देखकर स्वयं ईर्ष्या से जला करते हैं तथा दूसरों की बुराई करना ही उन्हें संतोष देने वाला होता है। ऐसे लोग धर्म-कर्म से विमुख रहते हैं तथा कभी भी आनन्द प्राप्त नहीं कर पाते। तब यदि कहीं कोई शुभ-कर्म बन जाता है तो सत्संग द्वारा श्रेष्ठ पद को प्राप्त करते हैं।

हे बन्धु ! विश्वामित्र, रावण तथा कुम्भकर्ण आदि के वृत्तान्त से यह बात भली प्रकार जानी जाती है कि श्रेष्ठ संगति तथा बुरी संगति का प्रभाव कैसा फलदायक होता है। अस्तु, तुम अपने मन को अधर्म से हटा कर, शिवजी के चरणों में लगाओ और भगवान् शिवनाथ जी के दर्शन के हेतु, काशीपुरी को प्रस्थान करो।" शिव-भक्त के मुख से इस उपदेश को सुनकर जब कृपण के हृदय में ज्ञान उत्पन्न हुआ तो वह उससे विदा होकर, अपने घर को लौट आया और अपनी स्त्री को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:36 PM

इस प्रकार कहने लगा—"हे प्रिये ! वे स्त्रियाँ परम धन्य हैं, जि
शिवजी की पूजा का व्रत लिया है। जो सदैव अपने धर्म पर स्थित र
हैं।" अपने पति के मुख से यह वचन सुनकर स्त्री ने जब यह पूछा
आपने ऐसी श्रेष्ठ बुद्धि कहाँ से प्राप्त की है तो उस कृपण ने शि
भक्त के मिलने का सब वृत्तान्त कह सुनाया। तदुपरान्त दोनों प
पत्नी अपनी सन्तान सहित भगवान् विश्वनाथ का दर्शन करने के
काशी जी गये। वहाँ उन्होंने सुगन्धित पुष्प एवं अखण्डित विल्व
द्वारा भगवान् विश्वेवरनाथ का पूजन किया तथा शिवजी के नाम
बहुत-सा दान भी दिया। इस प्रकार अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक शिव-पू
करने के पश्चात् वे अपने घर को लौट आये।"

❁❁❁

अड़तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे पुत्र ! विश्वेश्वरनाथ जी एवं काशी जं
बढ़कर अधिक श्रेष्ठ अन्य कोई नहीं है। काशी में मुक्ति दासी
समान रहकर, शिव भक्तों की सेवा किया करती है। उस काशी
पाँच कोस के विस्तार में ऐसा कोई स्थान नहीं है, जहाँ मरने से मु
प्राप्त न हो। शिवजी काशी को एक पल के लिए भी नहीं त्यागते।
करोड़ों ब्रह्म हत्या एवं सहस्त्रों पापों को नष्ट करने वाली है। विष्णु
भी वहाँ अपनी मृत्यु चाहते हैं।

हे नारद ! मेरी भौंहों के बीच में भगवान् सदाशिव ने कृपा क
अवतार लिया था और कैलाश में जाकर रहने लगे थे। फिर उन्होंने
प्रजापति की पुत्री के साथ अपना विवाह किया। वे ही सती दूसरे ज
में हिमाचल की पुत्री के रूप में प्रकट हुईं और शिवजी के स
विवाही गयीं। शिव-गिरिजा ने अनेक प्रकार की लीलाएँ कीं।
शिवजी अपने गणों सहित काशी जी पधारे। उस समय विष्णु अ
सब देवता भी उनके साथ काशी जी पहुँचे। कैलाशपति शिवजी
काशीपति विश्वनाथ की पूजा की। इसी प्रकार विष्णु आदि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:36 PM

देवताओं ने भी उनका पूजन किया। तदुपरान्त विश्वनाथ जी ने साक्षा
प्रकट होकर कैलाशपति शिवजी से भेंट करने के उपरान्त य
कहा—"हे कैलाशेश्वर ! आप में और मुझ में कोई भेद नहीं है।" य
सुनकर कैलाशपति शिवजी बोले—"हे विश्वेश्वर ! आप यहीं का
में रहकर अपने भक्तों को मुक्ति प्रदान किया करें, यही मेरी काम
है।" तब विश्वनाथ जी ने यह कहा—"आप भी गिरिजा एवं ग
सहित कृपा करके यहीं स्थित रहें। जिस प्रकार काशी आपको अत्य
प्रिय है, उसी प्रकार मैं भी इसे बहुत स्नेह करता हूँ।"

हे नारद ! इतना कहकर विश्वनाथ जी अन्तर्धान हो गये त
पूर्णांश से वहीं स्थित हुए। मैं, विष्णु जी तथा अन्य सब देवता, ऋ
मुनि आदि भी वहाँ रहकर दोनों मूर्त्तियों का पूजन एवं ध्यान कि
करते हैं। विश्वनाथ जी के समान दूसरा लिंग पृथ्वी पर अन्य कोई न
है। जो अन्य लिंग हैं, उन्हें विश्वनाथ जी लिंग की सन्तान एवं परि
के समान समझना चाहिए। विश्वनाथ जी सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी
हरेश्वर उनके मन्त्री हैं, ब्रह्मेश्वर वेद पाठ करने वाले हैं, वीरेश
भण्डारी हैं, भैरव कोतवाल हैं, तारकेश्वर धनाध्यक्ष हैं, दण्डपा
चोबदार हैं तथा ढुण्ढिराज अधिकारी हैं। उसी काशी में भगव
अन्नपूर्णा देवी भी विराजमान् हैं, जो काशी-निवासियों का भर
पोषण करती हैं।

हे नारद ! अब तुम काशी के प्रसिद्ध लिंगों का वर्णन सुनो—

१. विष्णु, २. केशवमुख, ३. लोलार्क, ४. मिि
५. कृत्तवासुकेश्वर, ६. वृद्धकालकेश्वर, ७. कालेश्वर, ८. कलशेश्
९. प्रवृत्तेश्वर, १०. केदारेश्वर, ११. पशुपति, १२. कामेश
१३. शम्भुत्रिलोचन, १४. चण्डेश्वर, १५. गरुड़ेश्वर, १६. गोकर्णेश
१७. नन्दिकेश्वर, १८. प्रतीकेश्वर, १९. भारभूतप
२०. मणिकर्णेश्वर, २१. रत्नेश्वर, २२. नर्मदेश्वर, २३. लांगलेश
२४. वरुणेश्वर, २५. शनीश्वर, २६. सोमेश्वर, २७. जीवेश
२८. रवीश्वर, २९. संगमेश्वर, ३०. हरीश्वर, ३१. हरिकेश
३२. शैलपर्वतेश्वर, ३३. कुण्डकेश्वर, ३४. यज्ञेश्वर, ३५. सुरेश

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:36 PM

३६. शक्रेश्वर, ३७. ओक्षेश्वर, ३८. रमेश्वर, ३९. तिलभाण
४०. गुप्तेश्वर, ४१. मध्यमेश्वर, ४२. भूमीश्वर, ४३. बु
४४. शुक्रेश्वर, ४५. वटकेश्वर, ४६. धन्वेश्वर, ४७. ऋ
४८. ध्रुवेश्वर, ४९. हादेवेश्वर, ५०. त्रिसन्ध्येश्वर, ५१. कप
५२. नीलेश्वर, ५३. सरेश्वर, ५४. ललितेश्वर, ५५. त्रिप
५६. हरेश्वर, ५७. वाणेश्वर, ५८. श्रीश्वर तथा ५९. रामेश्व
उनसठ लिंग अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

हे नारद ! जो मनुष्य भगवान् विश्वनाथ का नाम लेकर यात्रा करता है, उसे अत्यन्त आनन्द मिलता है। भगवान् विश्वन सेवा द्वारा ही हरिकेश दंडपणि के नाम से प्रसिद्ध होकर शिवगणों के अधिपति हुए। ब्रह्मदत्त का पुत्र गुणनिधि भी विश्वनाथ की सेवा द्वारा कुबेर पद को प्राप्त हुआ। जो मनुष्य वास त्याग दे, उसकी गणना पशुओं में करनी उचित है। का चाण्डाल भी अन्य राजाओं से श्रेष्ठ है। जिस गति को ऋषि-मुनि बड़ी तपस्या द्वारा प्राप्त करते हैं, वही गति काशी में निवास क भगवान् सदाशिव की कृपा से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। मुनि उन विश्वनाथ जी के पूर्ण उपासक हैं तथा विश्वामित्र उनकी सेवा द्वारा ब्रह्मर्षिपद को प्राप्त किया है। उन्हीं की पूजा वशिष्ठ मुनि तीनों लोकों में पूजित हुए। हे पुत्र ! भगवान् विश्व का यह आख्यान भी अत्यन्त पवित्र है। जो व्यक्ति इसे पढ़ता सुनता है, उसे दोनों लोकों में आनन्द की प्राप्ति होती है।"

उन्तालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे पुत्र ! अब मैं त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिलि वर्णन करता हूँ। जिस प्रकार मैंने विष्णु जी से उसका वृत्तान्त उसी प्रकार तुम्हें भी सुनाता हूँ; मन लगाकर सुनो। गौतम ऋषि के परम भक्त थे। वे अपने मस्तक पर भस्म लगाते, सब

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:36 PM

रुद्राक्ष धारण करते तथा हर समय शिवजी के नाम का जाप किया करते थे। वे राजा जनक के पुरोहित थे। उनकी अहल्या नामक पत्नी परम पतिव्रता थी। जब उनके पुत्र उत्पन्न हुए, तब वे अपने शिष्यों तथा परिवार सहित ब्रह्मशैल की दक्षिण दिशा की ओर जाकर, एक स्थान पर तपस्या करने में संलग्न हुए। दैव के प्रकोप से एक सौ वर्ष तक पानी की एक बूँद भी नहीं बरसी। इससे संसार के सभी प्राणी व्याकुल हो गये। कोई भी वृक्ष हरा न रहा। गर्मी बढ़ जाने के कारण अधिकांश जीव जलकर भस्म हो गये। ऋषि-मुनि भी योग धारण करके, अपनी स्त्रियों सहित किसी प्रकार समय व्यतीत करने लगे।

हे नारद ! उस समय संसार को व्याकुल देखकर, गौतम ऋषि ने वर्षा होने के हेतु वरुण देवता का तप करना आरम्भ किया। हे पुत्र ! परोपकार से बढ़कर संसार में अन्य कोई धर्म नहीं है। सज्जन पुरुषों का यह स्वभाव होता है कि वे दूसरों की भलाई के लिए अनेक प्रयत्न करते हैं तथा दूसरों को सुख पहुँचाने के लिए स्वयं कष्ट सहते हैं। अस्तु जब गौतम ऋषि ने अहल्या सहित अत्यन्त उग्र तप किया, तब वरुण ने प्रसन्न होकर उन्हें दर्शन दिया और वरदान माँगने के लिए कहा। उस समय गौतम ने उनसे यह प्रार्थना की कि आप मेरे मनोरथ को पूर्ण करने के हेतु, संसार में वर्षा कीजिये। यह सुनकर वरुण ने उत्तर दिया—"हे मुनि ! इसे तो केवल परमेश्वर ही पूरा कर सकते हैं। हानि-लाभ, जीवन-मरण, वर्षा-अकाल, यश-निन्दा, पाप-पुण्य, जय-पराजय, उत्पत्ति-प्रलय तथा नरक-स्वर्ग आदि बातें भगवान् सदाशिव के आधीन हैं। वे परब्रह्म तथा सबके स्वामी हैं। वर्षा होने या न होना उन्हीं की इच्छा पर निर्भर करता है। इसलिए हम तुम्हें ऐसा वरदान नहीं दे सकते, परन्तु हे गौतम ! एक बात यह भी आ पड़ी है कि यदि हम तुम्हें वर नहीं देते तो यह कार्य धर्म के विरुद्ध होता है। अतः अब तुम कृपा करके कोई ऐसा वर माँगो, जिसे हम प्रसन्नतापूर्वक दे सकें।"

हे नारद ! वरुण देवता की बात सुनकर गौतम ऋषि ने कहा—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:36 PM

"अच्छा, आप मुझे एक अक्षय-जल का कुण्ड दे दीजिये। इससे मेरी बात भी रह जायेगी और आपका आगमन भी सार्थक रहेगा।" यह सुनकर वरुण देवता ने अत्यन्त प्रसन्न होकर गौतम की प्रशंसा की और एक अक्षय-कमल देते हुए कहा—"हे ऋषि ! तुम पृथ्वी में एक गड्ढा बनाओ और उस गड्ढे में इस अक्षय-कमल को डाल दो। हमारी कृपा से वह गड्ढा जल से सदैव भरा रहेगा।" तब वरुण की आज्ञानुसार गौतम ने पृथ्वी में एक गड्ढा खोदा, उसे जल से परिपूर्ण कर देने के उपरान्त वरुण ने यह कहा—"हे ऋषि ! यह गड्ढा, जिसका विस्तार एक हाथ है, परम पवित्र तीर्थ होकर तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा और सदैव जल से परिपूर्ण बना रहेगा। जो लोग इस तीर्थ की सेवा करेंगे, उन्हें सम्पूर्ण मनोरथों की प्राप्ति होगी।" इतना कहकर वरुण देवता अन्तर्धान हो गये। उस समय गौतम ऋषि भी उस कुण्ड का जल पीकर, अपनी पत्नी सहित अत्यन्त आनन्दित हुए।"

चालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! गौतम ऋषि ने उस कुण्ड के समीप अपने शिष्यों द्वारा खेती करायी। यह समाचार सम्पूर्ण संसार में फैल गया। तब सभी ऋषि-मुनि अपनी-अपनी पत्नियों एवं शिष्यों सहित चारों ओर से आ-आकर, उसी स्थान के समीप कुटी बना, रहने लगे। इस प्रकार उस कुण्ड के आसपास एक बहुत बड़ा तथा श्रेष्ठ नगर बस गया। भूख-प्यास से व्याकुल मनुष्यों ने वहाँ आकर प्रसन्नता प्राप्त की। वरुण देवता के वरदान के कारण उस गौतम कुण्ड का यह प्रभाव था कि उसमें से चाहे जितना जल भरा जाए, परन्तु वह कभी भी कम नहीं होता था।

हे नारद ! एक दिन शिवजी की माया के वशीभूत होकर गौतम ऋषि ने अत्यन्त अहंकार में भरकर, अपने शिष्यों को उस कुण्ड से शीघ्रतापूर्वक जल लाने के लिए भेजा। जिस समय गौतम के शिष्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:36 PM

उस कुण्ड के तट पर पहुँचे, उसी समय मुनियों की अन्य स्त्रियाँ भी अपने मस्तक पर घड़े रखे हुए, वहाँ पर आ पहुँची। उन्होंने गौतम के शिष्यों से यह कहा कि पहले हम पानी भर लें, तब तुम बाद में भर लेना। यह सुनकर गौतम के शिष्य बिना पानी भरे ही अहल्या के पास लौट आये और उनसे यह कहने लगे कि मुनियों की स्त्रियों ने हमें पानी नहीं भरने दिया है। तब अहल्या उन शिष्यों को साथ लिये कुण्ड पर जा पहुँची और खड़े होकर अपने सामने शिष्यों से जल भरवाकर, घर को लौट आयी। यह दशा देखकर मुनियों की पत्नियाँ अत्यन्त क्रुद्ध हो, बिना पानी लिये ही अपने घर लौट गयीं और अपने पतियों को रो-रोकर झूठी-सच्ची बातें मिलाकर, सब हाल सुनाने लगीं।''

इतनी कथा सुनाकर ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! स्त्रियों का तो स्वभाव ही झूठ बोलने का होता है। स्त्री को विष से भी अधिक भयानक समझना चाहिए। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि शिवजी हलाहल विष पीकर भी सदैव जागते रहते हैं, परन्तु विष्णु स्त्री के मोह में पड़कर सो जाया करते हैं। राजा दशरथ को ही देखो, उन्होंने स्त्री के अधीन होकर रामचन्द्र जैसे अपने पुत्र को घर से निकाल दिया। कहावत है कि ऐसी कौन-सी वस्तु है, जो समुद्र में नहीं समा सकती ; ऐसी कौन-सी वस्तु है, जिसे अग्नि नहीं जला सकती ; ऐसा कौन-सा मनुष्य है, जिसे मृत्यु नहीं मार सकती और ऐसा कौन-सा कर्म है, जिसे स्त्री नहीं कर सकती?

हे नारद ! तब उन स्त्रियों की बात सुनकर ऋषि-मुनियों ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर गौतम को कष्ट पहुँचाने का निश्चय किया। फिर वे इसी उद्देश्य से गणपति का पूजन करने लगे। कुछ समय बाद उनकी सेवा से सन्तुष्ट होकर गणपति ने दर्शन दिया तथा यह कहा—''हे मुनियो ! तुम्हारी अभिलाषा शुभ नहीं है। तुम्हें अपने हाथों अपना ही विनाश करना उचित नहीं।'' यह सुनकर उन मुनियों ने एकमत होकर कहा—''हे गणेश जी ! हम सबने गौतम को दुःख पहुँचाने का निश्चय कर लिया है। हमारी यही प्रार्थना है कि आप गौतम को कष्ट अवश्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:36 PM

पहुँचावें।'' तब गणेश जी उन्हें समझाते हुए बोले—''हे मुनियो ! जिसने गौतम ऋषि पर ऐसी कृपा की है, वही उनकी रक्षा भी करेगा शिवजी की प्रसन्नता के कारण गौतम को कोई अनिष्ट न होगा, परन्तु शिवजी की इच्छा के विरुद्ध होने के कारण तुम सब लोग अत्यन्त दुःख उठाओगे।''

हे नारद ! इतना कहकर गणेश जी अन्तर्धान हो गये। फिर वे एक अत्यन्त दुर्बल गौ का स्वरूप धारणकर, गौतम के खेत को चरने लगे। संयोगवश उसी समय गौतम भी अपने खेत के समीप जा पहुँचे। जब उन्होंने गौ को खेत चरते हुए देखा, तो उसे एक तिनके द्वारा बाहर निकालने का प्रयत्न करने लगे। परन्तु उस तिनके का स्पर्श पाते ही, वह गौ इस प्रकार पृथ्वी पर गिर पड़ी, जैसे किसी ने उसके ऊपर वज्र का प्रहार कर दिया हो। गौतम ने यह समाचार अपने शिष्यों को सुनाया उस समय सब ऋषि-मुनि गौतम जी के पास आ पहुँचे और उन्हें धिक्कार देते हुए इस प्रकार कहने लगे—''हे गौतम ! तुम्हें, तुम्हारी स्त्री को तथा तुम्हारे तीन प्रकार के तप, हवन, धर्म, विद्या, चातुर्य्य, जागरण,कला आदि को सबको धिक्कार है। तुमने गौ की हत्या की है। यदि तुम यहाँ रहोगे तो कोई देवता और पितर अपना भाग लेने नहीं आएँगे।'' इसी प्रकार उन मुनियों की पत्नियों ने भी अहल्या से बहुत दुर्वचन कहे। तदुपरान्त उन सबों ने मिलकर यह निश्चय किया कि आज से कोई भी गौतम का मुख न देखे। फिर उन्होंने गौतम, अहल्या तथा गौतम के शिष्यों को कंकड़-पत्थर मारना आरम्भ कर दिया और उन्हें अपने स्थान से निकाल दिया।

हे नारद ! उस समय गौतम ने बहुत प्रकार से विनती करते हुए उन ऋषि-मुनियों से कहा—''हे महानुभावो ! हम यहाँ से चले जाते हैं।'' फिर गौतम और अहल्या अपने शिष्यों सहित वहाँ से हटकर, एक कोस की दूरी पर जाकर रहने लगे। उस समय गौतम ने यह विचार किया कि जब तक गौ-हत्या का पाप नहीं छूट जायेगा, तब तक न तो किसी को हम छूएँगे और न देवता-पितर आदि का ही कुछ कर्म

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:36 PM

करेंगे। यदि कोई मनुष्य धोखे से इधर आ निकलता तो वह अपने मुख को कपड़े से ढाँक कर उन्हें कंकड़-पत्थर मारता था। उस समय वे अत्यन्त व्याकुल होकर रुदन करने लगते थे। इस प्रकार जब पन्द्रह दिन व्यतीत हो गये तब गौतम उन्हीं ऋषि-मुनियों की शरण में गये और दूर खड़े होकर, प्रणाम-स्तुति करने के उपरान्त, हाथ-जोड़ इस प्रकार कहने लगे—''हे ऋषि-मुनियो ! अब आप मुझ पर दया करके वह उपाय बताइये, जिससे मेरा यह पाप नष्ट हो जाये।''

हे नारद ! गौतम के इन करुण-वचनों को सुनकर उन ऋषियों के हृदय में दया का संचार हुआ। तब वे इस प्रकार कहने लगे—''हे गौतम ! तुम्हारे शिष्यों ने हमारी स्त्रियों का अत्यन्त अनादर किया था, फिर तुम्हारी पत्नी अहल्या ने भी बहुत उपद्रव मचाया था ; उसी कर्म का फल तुम्हें इस प्रकार भोगना पड़ा है। हम तुम्हें यह बताते हैं कि शिवजी सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने वाले हैं। तुम सर्वप्रथम तीन दिन तक पृथ्वी पर भ्रमण करते हुए, अपने पाप को उच्च स्वर से कहते फिरो। तदुपरान्त एक मास तक व्रत करके सौ बार ब्राह्मणों की परिक्रमा करो, तब इस पाप से मुक्त हो सकोगे। दूसरा उपाय यह है कि तुम इसी स्थान पर गंगा जी को प्रकट करके, उसमें स्नान करो तथा एक करोड़ पार्थिव-पूजन करो तो तुम्हारी शुद्धि हो जायेगी।''

हे नारद ! यह सुनकर गौतम ने उन मुनियों की एक सौ बार परिक्रमा की। तदुपरान्त वे एक करोड़ पार्थिव पूजन करके, शिवजी के ध्यान में संलग्न हो गये। अस्तु, गौतम के उस तप को देखकर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए और गिरिजा, अपने पुत्र तथा गणों सहित प्रकट होकर उनसे इस प्रकार कहने लगे—''हे गौतम ! तुम हमें अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय हो। अब तुम्हारी जो भी इच्छा हो, वह वर माँग लो।'' यह सुनकर गौतम ने प्रणाम-स्तुति करने के उपरान्त यह प्रार्थना की—''हे प्रभो ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं,तो मेरे पाप को दूर कर दीजिये।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:36 PM

इकतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! शिवजी एवमस्तु कहते हुए इस प्रकार बोले—"हे गौतम ! तुम्हारे साथ मुनियों ने बड़ा छल किया है तथा निरपराध होते हुए भी तुम्हें इस प्रकार दुःख पहुँचाया है। अब उन्हें ऐसी हत्या लगेगी कि फिर वे कभी आनन्द प्राप्त न कर सकेंगे। यह सब ब्राह्मण मिथ्याशास्त्र को धारण करने वाले होंगे, क्योंकि जो प्राणी हमारे भक्तों को दुःख पहुँचाता अथवा निन्दा करता है, उसे कभी भी आनन्द प्राप्त नहीं होता।" यह सुनकर गौतम ऋषि ने हाथ जोड़कर कहा—"हे प्रभो ! इन मुनियों ने मेरे साथ कोई बुराई नहीं की। सच पूछा जाये तो इन्हीं की युक्ति पर चलने से मुझे आपके दर्शन प्राप्त हुए हैं।"

हे नारद ! गौतम के इन विनम्र वचनों को सुनकर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न होकर बोले—"अब तुम्हें जिस वर की इच्छा हो, वह और माँग लो।" यह सुनकर गौतम ने कहा—"हे प्रभो ! आप मुझे गंगा जी प्रदान करने की कृपा करें।" यह सुनकर शिवजी ने अपने मस्तक से गंगा जी को उतारकर, गौतम ऋषि को दे दिया। गंगा जी को देखकर गौतम ऋषि अत्यन्त प्रसन्न हुए। फिर उन्होंने स्त्री स्वरूपा गंगा जी को प्रणाम करते हुए यह कहा—"हे मातेश्वरी ! आप मेरे ऊपर कृपा करके, मुझे शुद्धता प्रदान करें।" तभी शिवजी ने भी गंगा जी से इस प्रकार कहा—"हे गंगे ! तुम गौतम को अपना सेवक समझ कर, इसके पापों को दूर कर दो।"

हे नारद ! शिवजी की आज्ञा सुनकर गंगा जी ने उत्तर दिया—"हे प्रभो ! आप मुझे जो आज्ञा दे रहे हैं, उसका तो मैं पालन करूँगी, परन्तु मैं गौतम को कुल सहित पवित्र करने के उपरान्त फिर अपने स्थान को लौट जाऊँगी।" शिवजी बोले—"हे गंगे ! हमारी यह अभिलाषा है कि जब तक वैवस्वत मन्वन्तर का प्रारम्भ न हो उस समय तक तुम यहीं स्थित रहो। इस प्रकार शिवजी ने जब गंगा जी से बहुत कुछ कहा तथा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:36 PM

गौतम ने भी उनकी बहुत स्तुति की, उस समय गंगा जी ने यह उत्तर दिया—"हे कैलाशपति ! यदि मेरी महिमा यहाँ बहुत हो और आप गिरिजा तथा अपने गणों सहित मेरे तट पर निवास करना स्वीकार करें, तो मैं वैवस्वत मन्वन्तर के प्रारम्भ तक यहीं बनी रहूँगी ; परन्तु जिन ब्राह्मणों ने गौतम को दुःख पहुँचाया है, उन्हें मैं पवित्र नहीं करूँगी।" गंगा जी की इस बात को शिवजी ने मान लिया। उसी समय मैं, विष्णु जी तथा अन्य सब देवता शिवजी को वहां विराजमान् जानकर, उस स्थान पर जा पहुँचे। सम्पूर्ण तीर्थ तथा क्षेत्र भी अपने-अपने स्वरूप धारणकर, वहाँ आ गये। तब हम सबने शिवजी एवं गंगा जी की बहुत प्रकार से सेवा तथा प्रशंसा की।

हे नारद ! उस समय हम सबकी स्तुति सुनकर, शिवजी ने प्रसन्न होकर वरदान माँगने के लिए कहा। तब हमने उनसे यह प्रार्थना की कि आप अर्द्धाङ्गी रूप से गंगा जी सहित यहीं विराजमान रहें।" उस समय गंगा जी ने हम सब को सम्बोधित करते हुए कहा—"हे देवताओ ! यदि तुम हमें सर्वोपरि समझो तो हम शिवजी सहित यहीं निवास करेंगी।" इस बात को सभी लोगों ने स्वीकार किया और बोले—"हे गङ्गे ! जिस समय सिंह राशि के बृहस्पति होंगे, वह समय आपकी महिमा के लिये तीनों में प्रसिद्ध होगा। बारह वर्षों के बाद वह समय आने पर, हम सब लोग यहाँ आकर स्नान करेंगे तथा शिवजी के दर्शन करके, अपने पापों को नष्ट करेंगे।" उस दिन से जब सिंह राशि पर बृहस्पति आते हैं, तब सब देवता और ऋषि-मुनियों सहित मैं तथा विष्णु जी वहां जाकर गंगा में स्नान कर शिवजी का पूजन करते हैं।"

बयालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! सभी क्षेत्रों में गौतमी गंगा अत्यन्त पवित्र हैं। इसी प्रकार त्र्यम्बक ज्योतिर्लिङ्ग भी सम्पूर्ण मनोरथों को प्रदान करने वाला है।" यह सुनकर नारद जी बोले—"हे पिता ! गंग

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:36 PM

जी जल रूप होकर कहाँ से प्रकट हुईं तथा शिवजी का लिङ्ग किस प्रकार प्रकट हुआ, उनकी कैसी महिमा हुई तथा ब्राह्मणों का अहंकार किस प्रकार दूर हुआ, यह सब वृत्तान्त आप मुझे सुनाने की और कृपा करें।''

ब्रह्मा जी बोले—''हे पुत्र ! हम सबकी प्रार्थना सुनकर गंगा जल रूप हो ब्रह्मशैल के भीतर उदुम्बर शाखा से निकलती हुई, नदी रूप में बड़े वेग से बहने लगीं तथा गौतमी के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुईं। जहाँ से गंगा निकलीं, उस स्थान का नाम गंगा द्वार हुआ। वहीं शिवजी भी लिङ्ग स्वरूप हो, त्र्यम्बक के नाम से स्थित हुए। तदुपरान्त गौतम ने अपनी पत्नी अहल्या तथा शिष्यों सहित गौतमी नदी में स्नान करके, त्र्यम्बक शिवलिङ्ग का पूजन किया और शिव-गंगा की बहुत स्तुति की, परन्तु जिस समय गौतम के शत्रु ऋषि-मुनि उस स्थान पर आये तो गंगा तथा शिव दोनों ही अन्तर्धान हो गये। उस समय गौतम जी ने अत्यन्त विनय करते हुए गंगा जी से यह प्रार्थना की कि आप इन लोगों के पापों को क्षमा कर दें, परन्तु तभी यह आकाशवाणी हुई—''हे गौतम ! मूर्ख, कामी, छली, धूर्त्त, अशुद्ध तथा नास्तिक व्यक्ति भले ही पवित्र हो जाएँ, परन्तु जो व्यक्ति शिव-भक्तों का शत्रु होता है, उसके पाप कभी भी दूर नहीं होते।'' यह सुनकर गौतम ने फिर बारम्बार स्तुति की और कहा—''हे माता-पिता ! आप इन लोगों के पाप को भी अवश्य दूर कर दीजिये।''

हे नारद ! जब गौतम ने इस प्रकार पुनः प्रार्थना की उस समय यह आकाशवाणी हुई—''हे गौतम ! तुम हमारे परम भक्त हो। अस्तु हम तुम्हारे अधीन हैं। तुम जो कह रहे हो, उसे भी हम स्वीकार करेंगे। अब इन ब्राह्मणों को अपने पापों की शान्ति का उपाय करना चाहिए। जब ये एक सौ ब्रह्मगिरि की परिक्रमा करेंगे, तभी अपने पाप से मुक्ति पा सकेंगे।'' इस आकाशवाणी को सुनकर सभी ऋषि-मुनि तथा गौतम प्रसन्न हुए। तब उन मुनियों ने अहंकार एवं दोषों से रहित होकर गौतम की बड़ी स्तुति की और ब्रह्मगिरि की परिक्रमा करके अपने पाप का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रायश्चित्त किया। उस समय शिवजी तथा गंगा भी अपने स्थान पर पुनः प्रकट हो गयीं। तदुपरान्त सब ऋषि-मुनियों ने गंगा जी में स्नान करके, शिवजी का पूजन किया तथा गौतम के चरणों पर गिरकर क्षमा-याचना की। उस समय गौतम ने अत्यन्त प्रसन्न होकर सबको अपने हृदय में लगा लिया तथा बहुत प्रकार से समझाते हुए, उनकी लज्जा दूर की। उस समय विष्णु जी, मैंने तथा अन्य देवताओं ने भी उस स्थान पर पहुँचकर, गंगा में स्नान किया और शिवजी का पूजन किया।

हे नारद ! उस स्थान पर कुशावर्त्त, गंगाद्वार तथा कोट तीर्थ नामक तीर्थ अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाले हैं। रामचन्द्र भी जब पंचवटी में पहुँचे थे, तो वहाँ गंगा जी को देखकर उसी स्थान पर कुछ दिनों तक रहे थे। उन्हें देखने तथा स्मरण करने मात्र से ही प्रत्येक प्राणी पवित्र हो जाता है। जो व्यक्ति गंगा में स्नान करता है, वह मानो सब धर्मों को कर चुकाता है तथा जो त्र्यम्बक ज्योतिर्लिङ्ग का पूजन करता है, उसे दोनों लोकों में अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है। शिवजी का त्र्यम्बक ज्योतिर्लिङ्ग सम्पूर्ण पापों को दूर करने वाला है। जो मनुष्य इस कथा को पढ़ता, सुनता तथा दूसरों को सुनाता है, उसे भी सब प्रकार के आनन्द प्राप्त होते हैं।

❁❁❁

तैंतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! अब मैं वैद्यनाथ नामक नौवें ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करता हूँ। उनका दर्शन, स्पर्श एवं पूजन करने से अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है। वे संसार में धन, स्त्री, पुत्र आदि की प्रसन्नता एवं परलोक में मोक्ष प्रदान करने वाले हैं। मेरे पुत्र पुलस्त्य द्वारा विश्रवा नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसके तीन विवाह हुए। विश्रवा की पहली पत्नी के गर्भ से शिवजी के मित्र धनपति कुबेर का जन्म हुआ, दूसरी पत्नी द्वारा रावण तथा कुम्भकर्ण नामक दो लड़कों का जन्म

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:37 PM

हुआ तथा तीसरी पत्नी द्वारा विभीषण नामक हरिभक्त का जन्म हु
इन चारों बालकों में रावण अत्यन्त बलवान् तथा स्वतंत्र था। उ
बल तथा यश तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। एक बार रावण ने कै
पर्वत पर पहुँचकर, शिवजी की तपस्या की, परन्तु तप करते हुए ब
समय व्यतीत हो जाने पर शिवजी उस पर प्रसन्न न हुए।

हे नारद ! तब रावण उस स्थान से हटकर, तपस्या करने के
हिमालय पर्वत पर गया। वहाँ वह पर्वत की दाहिनी ओर एक स्थान
बैठकर, पुनः उग्र तप करने में प्रवृत्त हुआ, परन्तु तब भी शिवजी ने
दर्शन देने की कृपा नहीं की।

हे नारद ! यह देखकर रावण अत्यन्त चिन्तित हो, मन ही मन अ
को धिक्कारता हुआ इस प्रकार कहने लगा—"मेरे इस अपार त
तथा शरीर को धिक्कार है, यों बहुत देर तक अपने को धिक्कारने
उपरान्त उसने हवन करना आरम्भ किया। जब उससे भी शिव
प्रसन्न न हुए, तब रावण ने यह निश्चय किया कि अब मुझे अप
शरीर अग्नि की भेंट कर देना चाहिए। वह अपने दस मस्तकों में
एक-एक मस्तक को काटकर, अग्नि में हवन करने लगा। जब वह
मस्तक काट चुका और दसवाँ मस्तक काटने के लिए उद्यत हुआ, उ
समय शिवजी प्रसन्न होकर, उसके सम्मुख प्रकट हो गये और ह
पकड़कर, वर माँगने के लिए कहने लगे।

हे नारद ! शिवजी ने रावण के सभी मस्तकों को पुनः कटे
स्थान पर स्थित कर दिया तथा प्रसन्न होकर वर माँगने के लिए कह
उस समय रावण ने अत्यन्त आनन्द मग्न हो, हाथ जोड़कर प्रार्थ
करते हुए यह कहा—"हे प्रभो ! मैं अत्यन्त पराक्रमी होना चाहता
तथा यह चाहता हूँ कि आप मेरे नगर में चलकर निवास करें।"
सुनकर शिवजी ने उत्तर दिया—"हे रावण ! तुम हमारे लिंग
उठाकर ले जाओ तथा इसका सदैव पूजन किया करो। परन्तु य
तुमने इस लिंग को मार्ग में कहीं रख दिया, तो वह वहीं पर स्थित
जायेगा और तुम्हारे साथ नहीं जायेगा।" रावण इस बात को स्वीक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:37 PM

97

करते हुए बोला—"हे प्रभो ! आप दो रूपों में विभाजित हो जाइये, तब मैं आपको काँवर में उठाकर, अपने नगर में ले जाऊँगा।" यह सुनकर शिवजी ने अपने दो लिंग स्वरूप धारण किये। रावण उन दोनों शिवलिंगों को काँवर में दोनों ओर रखकर ले चला। जब वह कुछ दूर आगे निकल आया, तब शिवजी ने यह चरित्र किया कि रावण को लघुशंका करने की इच्छा हुई। उस समय रावण अत्यन्त व्याकुल हुआ और यह सोचने लगा कि यदि कोई व्यक्ति यहाँ मिल जाए और कुछ देर के लिए इस काँवर को उठाये रहे तो मैं लघुशंका निवारण कर लूँ। उसी समय वहाँ उसे एक गौ चराने वाला दिखाई दिया। रावण ने उससे यह प्रार्थना की कि तुम कुछ देर के लिए इस काँवर को अपने कन्धे पर उठाये रहो, जिससे मैं लघुशंका कर लूँ। यह सुनकर चरवाहे ने उत्तर दिया—"हे रावण ! मैं दो घड़ी तक इस काँवर को लिये रहूँगा, परन्तु इस समय के भीतर ही यदि तुमने कांवर को न ले लिया तो मैं इसे पृथ्वी पर रख दूँगा।" रावण ने अहीर की यह बात स्वीकार कर ली। तदुपरान्त वह उसे काँवर देकर स्वयं लघुशंका करने बैठ गया।"

चौवालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! उस समय शिवजी ने अहंकार को नष्ट करने वाली अपनी माया को प्रकट करके, रावण का मूत्र इतना अधिक बढ़ाया कि उससे एक तालाब भर गया। उधर वह काँवर भी इतनी अधिक भारी हुई कि चरवाहा उसे अधिक देर तक उठाये न रह सका तथा उसे पृथ्वी पर रखकर चला गया। पृथ्वी पर रखे जाते ही दोनों लिंग अपने-अपने स्थान पर दृढ़तापूर्वक जम गये। तदुपरान्त जब रावण लघुशंका करके उठा और उनके समीप आकर काँवर को उठाने का प्रयत्न करने लगा, तो वे बल लगाने पर भी अपने स्थान से नहीं हटे। यह देखकर रावण निराश हो, अपने अँगूठे से उन दोनों लिंगों को पृथ्वी में दबाकर घर को लौट गया। उसी समय से वे दो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:37 PM

लिंग अपने-अपने स्थान पर स्थित हैं। जो लिंग काँवर के अगले भाग
में था, वह गोकर्ण क्षेत्र में स्थित होकर चन्द्रभाल के नाम से प्रसिद्ध
हुआ। उसकी महिमा का वर्णन पहले किया जा चुका है। जो लिंग
काँवर के पिछले भाग में था, वह वैद्यनाथ के नाम से संसार में प्रसिद्ध
हुआ, जो चिताभूमि में स्थित है। वह वैद्यनाथ नामक ज्योतिर्लिङ्ग
अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाला है।

हे नारद ! जब रावण उन लिंगों को छोड़कर चला गया, तब विष्णु
जी, मैं तथा अन्य सब देवताओं ने उन स्थानों पर पहुँचकर, शिवलिंग
की पूजा की। तदुपरान्त हमने वैद्यनाथ जी की स्तुति करते हुए इस
प्रकार कहा—"हे प्रभो ! आप हम सब के ऊपर प्रसन्न हों तथा हमें
अपना दर्शन देकर कृतार्थ करने की कृपा करें।" हमारी उस प्रार्थना
को स्वीकार कर, शिवजी उस लिंग द्वारा उसी समय प्रकट हुए तथा
वर माँगने के लिए कहने लगे। उस समय हमने उनकी अत्यन्त प्रार्थना
करते हुए कहा—"हे स्वामी ! आप हम लोगों को अपनी भक्ति प्रदान
करें तथा कृपापूर्वक सदैव यहीं स्थित रहें। आप मनुष्यों को वैद्य के
समान आनन्द प्रदान करने वाले हैं, अस्तु आपका नाम वैद्यनाथ है।

हे नारद ! अब तुम उस चरवाहे का वृत्तान्त सुनो ; जिसने रावण के
कहने पर काँवर उठा रखी थी। जब उसने इस अद्भुत चरित्र को देखा
तो वह आश्चर्य में भर गया। उस चरवाहे का नाम बैजू था। अस्तु, हम
सब लोगों को शिवलिंग का पूजन करते हुए देखकर, उसने भी उस
लिङ्ग की पूजा की तथा अपने कपोलों से गलगल शब्द का उच्चारण
किया। उसने प्रतिदिन का यह नियम बना लिया था कि जब तक वह
उस लिङ्ग की पूजा नहीं कर लेता, तब तक भोजन नहीं किया करता
था।

हे नारद ! एक दिन बैजू के घर कोई बड़ा उत्सव था। उसमें उसके
सभी भाई-बन्धु उपस्थित थे। उस दिन उन लोगों की सेवा में लगे रहने
के कारण बैजू को वैद्यनाथ लिङ्ग का पूजन करने का अवकाश न
मिला। अस्तु, जिस समय घर आये हुए लोग भोजन करने के लि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:37 PM

बैठे, तब उन्होंने बैजू को भी अपने साथ बैठा लिया। ज्योंही बैजू ने ग्रास उठाकर अपने कंठ में डालना चाहा, त्योंही उसे यह ध्यान आया कि अरे, मुझसे बड़ा अपराध हुआ जो मैं अपने स्वामी की पूजा किये बिना ही भोजन करने के लिए बैठ गया हूँ। इस ध्यान के आते ही वह तुरन्त उठ बैठा।

हे नारद ! वेद का कथन है कि साधुओं का स्वभाव इस प्रकार का होता है कि वे अपने नियम को कभी नहीं छोड़ते हैं। अस्तु, बैजू ने वैद्यनाथ जी के पास पहुँचकर उनका पूजन किया और ध्यान धरते हुए पृथ्वी पर गिरकर दंडवत् की। उसकी ऐसी दृढ़ भक्ति को देखकर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हो कर प्रकट हो गये। उनके वामांग में भगवती गिरिजा भी सुशोभित थीं। बैजू ने उनके दर्शन करके अत्यन्त स्तुति की तथा प्रेम की अधिकता में भरकर, नृत्य करना आरम्भ कर दिया। बैजू की ऐसी भक्ति को देखकर शिवजी ने अत्यन्त प्रसन्न होकर वर माँगने के लिए कहा—उस समय बैजू ने यह कहा—"हे प्रभो ! मैं यही चाहती हूँ कि आपके चरणों में मेरा प्रेम दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहे तथा मैं आपके भक्तों की सदैव सेवा किया करूँ और आप मेरे नाम से प्रसिद्ध हों।" यह सुनकर शिवजी 'एवमस्तु' कहकर उसी लिङ्ग में प्रवेश कर गये। तब से वह—वैद्यनाथ, शिवलिङ्ग संसार में वैद्यनाथ के नाम से भी प्रसिद्ध हुआ है।"

❁❁❁

पैंतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! अब तुम रावण का वृत्तान्त सुनो। जिस समय रावाण शिवलिङ्ग को उठाने में असमर्थ रहा, तब वह अपने अहंकार को भुलाकर, अत्यन्त प्रेमपूर्वक शिवजी की स्तुति करने लगा। उस समय यह आकाशवाणी हुई—"हे रावण ! तुम अपने नगर में जाकर निष्कंटक राज्य करो। जब तुम्हारे हृदय में गर्व उत्पन्न होगा, तभी तुम दुःखी हो जाओगे।" इस वरदान को पाकर रावण अत्यन्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:37 PM

प्रसन्न हो, घर लौट आया। उस समय सब दैत्यों ने उसे अपना र
स्वीकार किया। वह अपनी मन्दोदरी नामक रानी के साथ बहुत प्र
होकर, शिवजी की भक्ति में संलग्न बना रहा। उसकी पत्नी मन्दो
पञ्चकन्याओं में एक, परम सुन्दरी तथा पतिव्रता थी। उसके मेघ
के समान यशस्वी पुत्र उत्पन्न हुए थे।

हे नारद ! उसके अत्याचारों से दुःखी होकर एक बार सब दे
मिलकर विष्णु जी के समीप पहुँचे। उन्हें देखकर विष्णु जी ने पूछा
"हे देवताओ ! तुम्हारे मुख पर चिन्ता की रेखाएँ खिच रही हैं। इ
प्रतीत होता है कि तुम लोग बहुत दुःखी हो। यह सुनकर देवताओं
रावण के अत्याचारों का वर्णन करते हुए कहा—"हे प्रभो ! उ
देव-पत्नियों को अपने घर में डाल रखा है तथा अनेक प्रकार
अत्याचारों द्वारा संसार को दुःख पहुँचा रहा है। अब आप कृपा क
उस अन्यायी का शीघ्र वध कर डालिये।" यह सुनकर विष्णु
अत्यन्त क्रुद्ध हो, देवताओं को साथ ले, रावण से युद्ध करने के लि
चल दिये।

हे नारद ! जब रावण ने यह देखा कि विष्णु जी देवताओं को स
लेकर उससे युद्ध करने के लिए आये हैं, तो वह भी अत्यन्त क्रुद्ध
युद्ध क्षेत्र में जा पहुँचा तथा शिवजी की कृपा का बल प्राप्त करके यु
करने में प्रवृत्त हुआ। उस समय दोनों ओर से अस्त्र-शस्त्र तथा बा
की वर्षा होने लगी। विष्णु जी ने अपनी नन्दक नामक तल
चलायी, जो रावण के शरीर का स्पर्श पाते ही कुण्ठित हो गयी।
देखकर विष्णु जी ने अपने चक्र को रावण के कंठ पर चलाया।
समय तीनों लोकों में हाहाकार मच गया, परन्तु रावण शिवजी
ध्यान धरने के कारण उस समय भी सुरक्षित बना रहा। इस प्र
विष्णु जी ने रावण के ऊपर अनेक तीक्ष्ण अस्त्र-शस्त्र चलाये, प
शिवजी की कृपा से उसका कुछ भी अहित न हुआ। यह देख
विष्णु जी को अत्यन्त चिन्ता हुई।

हे नारद ! उस समय विष्णु जी को चिन्तित देखकर यह आकाशवा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हुई—"हे विष्णु ! तुम कुछ चिन्ता मत करो। रावण के ऊपर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हैं। अस्तु, उसे भी अपने से कम मत समझो। यह वरदान के कारण देवताओं द्वारा नहीं मारा जायेगा, तुम्हें उचित है कि तुम मनुष्य शरीर धारण करके शिवजी की तपस्या करो और उनसे वरदान पाकर, युक्तिपूर्वक रावण का संहार करो। इस आकाशवाणी को सुनकर विष्णु जी अन्तर्धान हो गये। तब रावण सब देवताओं को पकड़कर नगर में लौट आया और निर्भय होकर तीनों लोकों का राज्य करता हुआ, प्रसन्न रहने लगा। जो देवता भाग निकले थे, वे फिर विष्णु जी की शरण में जा पहुँचे।

हे नारद ! इसके बाद विष्णु जी ने तुम्हें अपने पास बुलाया और यह कहा कि तुम कोई ऐसा उपाय करो, जिससे शिवजी क्रुद्ध होकर रावण को शाप दे डालें। इस युक्ति के हो जाने पर, हम पृथ्वी पर मनुष्य का अवतार लेंगे और शिवजी को प्रसन्न करके, उनके धनुष-बाण द्वारा रावण का वध करेंगे। इतना कहकर विष्णु जी ने तुम्हें विदा किया तथा सब देवता भी अपने-अपने लोक को चले गये। तब विष्णु जी की आज्ञानुसार तुम रावण के समीप जा पहुँचे। रावण ने तुम्हारा अत्यन्त आदर सत्कार किया। तब तुमने रावण से यह कहा—"हे दशानन ! हम तुम्हारे राज्य, तेज तथा न्याय को देखने के लिए यहाँ आये हैं। तुम्हारे ऊपर शिवजी की जैसी कृपा है, वैसी उन्होंने अन्य किसी पर नहीं की है। तुम हमें यह तो बताओ कि शिवजी की ऐसी प्रसन्नता का कारण क्या है?" यह सुनकर रावण ने तुम्हें उत्तर दिया—"हे देवर्षि ! मैं आपसे सम्पूर्ण वृत्तान्त कहता हूँ, सुनिए।"

छियालीसवाँ अध्याय

रावण बोला—"हे नारद जी ! सर्वप्रथम मैं कैलाश पर्वत पर तपस्या करने के निमित्त गया। मैं वहाँ अग्नि प्रज्वलित कर, अपने मस्तकों को काट-काटकर उसमें हवन करने लगा। जिस समय मैं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:37 PM 85

अपने नौ मस्तक काट चुका और दसवाँ मस्तक भी काटने को हुअ
उसी समय शिवजी ने मुझे अपना दर्शन देकर कृतार्थ किया। तब
उसने यह वरदान माँगा कि कोई भी देवता मुझ पर विजयी न हो सके
शिवजी ने मुझे इच्छित वरदान दिया तथा मेरे मस्तकों को भी फिर
उत्पन्न करके और अनेक वरदान दिये। उस समय से मैं निर्भय हो
तीनों लोकों का राज्य करता हूँ।''

इतनी कथा सुनाकर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! रावण के मु
से यह वचन सुनकर तुम इस प्रकार बोले—''हे रावण ! सच पू
जाये तो शिवजी ने तुम्हारे ऊपर विशेष कृपा नहीं की क्योंकि वे तुम
घर नहीं आये। उन्होंने प्रथम तो अपना लिङ्ग रूप भी दिखाया, दूसरे
मार्ग में ही रह गये। अस्तु, हम तुम्हें एक उपाय बताते हैं उसे करने
तुम सदैव निर्भय तथा प्रसन्न रहोगे।'' यह सुनकर रावण ने पूछा
''वह उपाय क्या है?'' तुमने उत्तर दिया—''हे रावण ! तुम कैल
पर्वत को ही उखाड़कर यहाँ ले आओ शिवजी को कुबेर के सम
रहते हुए बहुत दिन हो गये हैं, अब उन्हें तुम्हारे पास आकर र
चाहिए। शिवजी को भी यह उचित है कि वे तुम्हारे पास आकर र
उनके यहाँ आ जाने पर तुम सदैव निर्भय तथा प्रसन्न बने रहोगे औ
हर समय तुम्हारी सहायता करते रहेंगे।''

हे नारद ! इतना कहकर तुम रावण के पास से चले आये
देवताओं को यह समाचार कह सुनाया। इस प्रकार रावण तुम्ह
माया से छला गया। तब वह अत्यन्त अहंकार में भरकर, कैलाश प
के समीप जा पहुँचा। फिर उसने कैलाश पर्वत को जड़ से उख
दिया, जिसके कारण उस पर्वत की सभी वस्तुएँ हिलकर नष्ट
गयीं। यह देखकर शिवजी ने अत्यन्त आश्चर्य में भरकर पार्वती जी
पूछा—''हे प्रिये ! यह क्या हो रहा है?'' तब पार्वती जी ने उ
दिया—''हे प्रभो ! आपके किसी सेवक ने ही यह कार्य किया
अब आप अपने किये को अपनी आँखों से देख लीजिये।'' गिरिज
ऐसे वचन सुनकर शिवजी ने जब विचार करके देखा तो उन्हें

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:37 PM

हुआ कि यह कार्य रावण का है। तब वे गिरिजा से बोले—"हे प्रिये! अब मैं किसी को ऐसा वरदान नहीं दूँगा।"

हे नारद ! गिरिजा से इस प्रकार कहकर शिवजी ने रावण को शाप देते हुए कहा—"हे रावण ! तूने जिन हाथों से हमारे कैलाश पर्वत को उखाड़ा है, उन हाथों को काटने वाला अब शीघ्र ही उत्पन्न होगा।" शिवजी यदि चाहते तो स्वयं भी रावाण को नष्ट कर सकते थे, परन्तु यह नियम है कि स्वामी अपने सेवक का कभी अहित नहीं कर सकता। जब रावण ने इस शाप को सुना तो उसने कैलाश पर्वत को उसी स्थान पुनः पर रख दिया। तदुपरान्त वह अहंकार में भर अपने घर लौट आया और दृढ़तापूर्वक राज्य करता हुआ अनेक प्रकार के अन्याय करने लगा। इस प्रकार शुभ आचरण के विपरीत चलकर उसने शिवजी की भक्ति को भी त्याग दिया।

हे नारद ! यह समाचार जब तुमने देवताओं को सुनाया, तब विष्णु जी ने अत्यन्त प्रसन्न हो, समय पाकर राजा दशरथ के घर में मनुष्य अवतार लिया। उस समय वे रामचन्द्र नाम से संसार में प्रसिद्ध हुए। बाल्यावस्था में रामचन्द्र जी लक्ष्मण सहित विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करने के लिए गए। वहाँ उन्होंने ताड़का नामक राक्षसी का वध किया। तदुपरान्त उन्होंने जनकपुर में पहुँचकर धनुष तोड़ा तथा सीता के साथ विवाह किया। जब राजा दशरथ ने उन्हें अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाना चाहा, उस समय देवताओं ने अनेक चरित्र करके भरत की माता कैकेयी की बुद्धि को नष्ट कर दिया जिसके कारण रामचन्द्र लक्ष्मण तथा सीता सहित वनवास को चले गये। उन्होंने चित्रकूट तथा दण्डक वन में भ्रमण करते हुए, अनेक दैत्यों का संहार किया। तदुपरान्त जब रावण सीता को हर ले गया तो रामचन्द्र जी अत्यन्त दुःखी होकर अगस्त्य ऋषि की सेवा में पहुँचे और उनकी आज्ञानुसार शिवजी का तप करने लगे। तब शिवजी ने प्रसन्न होकर उन्हें अपना धनुष दिया और हनुमान के रूप में उनकी रक्षा करने का आश्वासन दिया। इस प्रकार शिवजी की कृपा से रामचन्द्र जी समुद्र पर पुल बांध

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:37 PM

कर, लंकापुरी में जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने रावण का कुल सहित संहा
किया और सीता को साथ ले अयोध्यापुरी में लौट आये। वैद्यना
ज्योतिर्लिङ्ग का यह चरित्र मैंने तुम्हें संक्षेप में सुनाया है। यह आख्या
दोनों लोकों में सुख प्रदान करने वाला है। इसके पढ़ने तथा सुनने
मुक्ति प्राप्त होती है।"

सैंतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! अब मैं नागेश ज्योतिर्लिङ्ग व
वर्णन करता हूँ। प्राचीन काल में दारुका नामक एक राक्षसी
भगवती गिरिजा की बड़ी सेवा की। तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर उ
अपना दर्शन दिया, तथा वरदान माँगने के लिए कहा। उस सम
दारुका यह बोली—"हे भगवती ! आप मुझे एक ऐसा नगर दीजि
जिससे मैं अपने पति सहित निवास किया करूँ। मैं जहाँ कहीं
जाऊँ, वह नगर भी मेरे साथ वहीं जाये तथा आप मेरी सदैव रक्षा कि
करें।" यह सुनकर गिरिजा जी 'एवमस्तु' कहकर अन्तर्धान हो गय
तदुपरान्त उनकी कृपा से पश्चिमी समुद्र के निकट एक ऐसा न
बसा, जो सोलह योजन लम्बा था, तथा जिसमें सुख की सम्पूर्ण वस्
उपस्थित थीं। दारुका वहाँ जाकर अपने अन्य साथी राक्षसों के स
रहने लगी। दारुका के पति का नाम दारुक था। वह अत्यन्त तेजस
तथा बलवान् था। वह पूजन, यज्ञ, जप, तप, ज्ञान, धर्म आदि से र
हो, कुकर्म करने में संलग्न हुआ। दारुक जहाँ-जहाँ जाती, वहीं-व
वह नगर भी साथ-साथ चलता था।

हे नारद ! उस दैत्य के उपद्रवों के कारण तीनों लोकों के स
देवता तथा मनुष्य अत्यन्त चिन्तित हो, और्व मुनि के समीप गये त
उन्हें प्रणाम करके, स्तुति करते हुए कहने लगे—"हे मुनि ! इन दि
दारुक राक्षस अनेक प्रकार के उपद्रव मचा रहा है। इसलिए अ
हमारी रक्षा करने की कृपा करें। हे स्वामिन् ! आप शिवजी के प

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भक्त हैं। अस्तु, आपके तेज को देखकर वे सब राक्षस भाग जायेंगे
इस समाचार को सुनकर और्व मुनि ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर, राक्षसों
यह शाप दिया कि यदि तुम पृथ्वी के जीवों को मारोगे और यज्ञ,
आदि धर्म-कार्यों में विघ्न डालोगे तो नष्ट हो जाओगे। इस प्रकार श
देकर और्व मुनि तो अपने ध्यान में फिर स्थित हो गये तथा सब दे
राक्षसों से युद्ध करने की तैयारी करने लगे। जिस समय राक्षसों ने अ
मुनि के इस शाप का समाचार सुना तो वे अत्यन्त चिन्तित हुए।
समय दारुका राक्षसी ने उन् सब को धैर्य बँधाते हुए यह कहा
गिरिजा जी के वरदान के कारण मैं जहाँ जाऊँगी, वहीं यह नगर भी
साथ जाएगा। अस्तु, हम लोग ऐसे स्थान पर चलें, जहाँ मुनि के श
का कोई प्रभाव न हो सके।

हे नारद ! इस बात को सुनकर वे सब राक्षस समुद्र में जाकर
लगे। वहाँ वे यह करते कि यदि कोई मनुष्य नाव पर बैठा हुआ,
पहुँच जाता तो उसे पकड़ कर बन्दीगृह में डाल दिया करते थे।
दिन वे बहुत-सी नावों को पकड़कर अपने नगर में ले गये। उन न
का एक यात्री शिवजी का परमभक्त था। वह शिवजी का पूजन कि
बिना जल भी ग्रहण नहीं करता था। अस्तु, जब राक्षसों द्वारा उसे
बन्दी बना लिया गया, वह बन्दीगृह में पहुँचकर अन्य सब लोगों से
पार्थिव-पूजन कराने लगा। उसने सब को मानसी पूजन का उप
कर, पंचाक्षरी मन्त्र की दीक्षा दी। उसकी सम्मति के अनुसार सब
भगवान् सदाशिव का ध्यान धरते हुए, पार्थिव पूजन करने लगे
प्रकार जब उन्हें छः महीने व्यतीत हो गये तो एक दिन शिवजी ने
पर दयालु होकर, एक चरित्र किया।

हे नारद ! वह चरित्र यह था कि एक दिन राक्षस ने उन बन्दियों
शिवलिंग का पूजन करते हुए देखा। तब उसने दारुका के
पहुँचकर यह समाचार कह सुनाया। दारुक इस वृत्तान्त को सुन
बन्दियों के पास आया और शिवजी के भक्त को भय दिखाते हु
कहने लगा कि मुझे सत्य बता तू यहाँ बैठकर कौन-सा कर्म क

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:37 PM 4G 85

है? यदि तूने मुझे नहीं बताया तो मैं तुझे जान से मार डालूँगा।
सुनकर जब उस शिवभक्त ने कुछ भी बताने से मना किया तब दा
ने अपने राक्षसों को यह आज्ञा दी कि तुम इस मूर्ख को मार डा
जिस समय वे राक्षस उस शिवभक्त को मारने के लिए आगे बढ़े,
समय वह अत्यन्त चिन्तित होकर शिवजी का स्मरण करने लगा।
शिवजी गिरिजा सहित उसी समय लिंग मूर्ति से प्रकट हो गये। शि
के दर्शन पाते ही उस शिवभक्त ने, जो कि वैश्यपति के नाम से प्र
था, अत्यन्त प्रसन्न होकर स्तुति की। फिर शिवजी ने अपनी हुंकार
सब राक्षसों को दूर कर दिया और वैश्यपति को अपना पाशुपत
देते हुए यह कहा था कि तुम इसके द्वारा सम्पूर्ण राक्षसों का
करके स्वयं ब्राह्मणों सहित इस वन में निवास करो। अब यहाँ को
राक्षस नहीं रह पायेगा। हम यहाँ अपना एक ज्योतिर्लिङ्ग स्थापित
जाते हैं।

हे नारद ! जिस समय दारुका राक्षसी ने यह दृश्य देखा तो
गिरिजा की बहुत स्तुति की। जब गिरिजा ने प्रसन्न होकर उससे
माँगने के लिए कहा तो वह इस प्रकार बोली—"हे भगवती !
आदिशक्ति हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवजी आप के सेवक है
किसी भी प्रकार न मारी जाऊँ।" यह सुनकर गिरिजा ने 'एवम
कहते हुए शिवजी से यह कहा—"हे प्रभो ! यह दारुका ना
राक्षसी मेरी भक्तिनी है। अस्तु, आप कृपा करके इसका तथा इ
स्वामी का नाश मत कीजिए और इसे यह भी वरदान दीजिए कि
दारुका वन नष्ट नहीं होगा।" गिरिजा के यह वचन सुनकर शि
हँस कर बोले—"हे प्रिये ! जब तुम यह कह रही हो जो उचित सम
उसे करो।" तब गिरिजा जी ने उस नगर को यह वरदान दिया कि
के अन्त तक यह नगर अपने वन सहित बसा रहेगा और इसमें रा
निवास करेंगे। दारुका की गणना हमारी शक्ति में होगी और वह
पति सहित यहाँ का राज्य करेगी। शिवजी ने कहा—"जो मनुष्य
वर्णाश्रम धर्म में दृढ़ होगा तथा यहाँ आकर हमारे लिङ्ग का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

करेगा, वह पृथ्वी का राजा होकर, इन्द्र के समान सुख भोगेगा।''

हे नारद ! इतना कहकर शिवजी ने गिरिजा जी से कहा—' प्रिये ! अब हम तुमसे भविष्य का वृत्तान्त कहते हैं कि बभ्रुसेन नाम एक राजा यहाँ आकर हमारा दर्शन करेगा तथा वही इन राक्षसों संहार करेगा।'' इस प्रकार बहुत-सी बातें कहकर शिवजी अ नागेश नामक ज्योतिर्लिंग को वहाँ स्थापित कर, गिरिजा जी स अन्तर्धान हो गये।'' इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—' पिता ! राजा बभ्रुसेन उस वन में किस प्रकार गया, यह आप बताने की कृपा कीजिए।'' ब्रह्मा जी बोले—''हे पुत्र ! निषध देश बभ्रुसेन नामक एक राजा उत्पन्न हुआ। उसने बारह वर्षों तक शिव का तप किया। तब शिवजी ने प्रसन्न होकर उसे यह आज्ञा दी कि पश्चिम समुद्र में जाकर दारुका वन के राक्षसों का संहार करो। इत कहकर शिवजी उसे एक काठ की नाव देकर अन्तर्धान हो गये। राजा बभ्रुसेन उस नाव पर चढ़कर दारुका वन में जा पहुँचा। व उसने शिवलिंग तथा गिरिजा के दर्शन करने के उपरान्त उस पाशु अस्त्र को उठाया, जो बहुत समय से वहाँ रखा हुआ था। तत्पश्च सब राक्षसों का संहार करके अपने नगर को लौट आया। इस प्रव जब गिरिजा जी के वरदान की अवधि समाप्त हो गयी, तो दारु नामक राक्षस का संहार हो गया। हे नारद ! नागेश ज्योतिर्लिंग का चरित्र अत्यन्त पवित्र है। इसे जो कोई सुनता है अथवा सुनाता है, आनन्द प्राप्त होता है।

❀❀❀

अड़तालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! अब तुम रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग वृत्तान्त सुनो। एक समय हमारे सनकादिक चारों पुत्र कृष्ण लोक पहुँचे। जिस समय वे विष्णु जी के मन्दिर में भीतर जाने लगे, समय जय तथा विजय नामक पार्षदों ने उन्हें रोक दिया, तब सनक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:38 PM

के शाप के कारण उन्हें तीन जन्म तक दैत्य बनकर पृथ्वी पर जन्म
पड़ा। वे पहले जन्म में हिरण्याक्ष तथा हिरण्यकशिपु के नाम से उ
हुए और विष्णु जी के हाथ से मारे गये। तदुपरान्त दूसरे जन्म
रावण तथा कुम्भकर्ण बनकर उत्पन्न हुए। रावण ने शिवजी की
करके तीनों लोकों को जीत लिया। परन्तु जब तुमने उसे मोहि
दिया, तब वह कैलाश पर्वत को उखाड़ने के लिए जा पहुँचा
समय शिवजी ने उसे यह शाप दिया कि हमारे ही समान एक
मनुष्य तेरे इस अहंकार का नाश करेगा। उस शाप के कारण
धर्म के विरुद्ध आचरण करने लगा। तब देवताओं एवं ऋषिय
प्रार्थना पर विष्णु जी ने राचमन्द्र का अवतार लिया।

उन्चासवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! अगस्त मुनि के उपदेशानुसार रा
जी ने अपने सम्पूर्ण शरीर में भस्म मली तथा रुद्राक्ष धारण किये
वे लक्ष्मण को रक्षा के निमित्त द्वार पर बैठाकर, वेद में वर्णित
सहस्त्र नाम का जप करने लगे। रामचन्द्र के उस तप से प्रस
शिवजी ने दर्शन दिया तथा उन्हें अपनी गोद में बैठाकर यह क
"हे रामचन्द्र ! हम तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हैं। तुम जो चाहो, वह व
माँग लो।" शिवजी के श्रीमुख से ऐसे वचन सुनकर रामचन्द्र बो
"हे प्रभो ! मैं रावण का वध करके सीता को प्राप्त करना चाहत
उस समय शिवजी ने प्रसन्न होकर रामचन्द्र को धनुष-बाण
अपना तेज प्रदान किया। तदुपरान्त रामचन्द्र ऋष्यमूक पर्व
पहुँचकर, सुग्रीव तथा हनुमान से मिले और हनुमान को सीता क
लगाने के लिए भेजा। जब हनुमान सीता का पता लगाकर लं
लौट आये, तब रामचन्द्र अपनी सेना को साथ ले रावण से युद्ध
के लिए चले। समुद्र तट पर पहुँचने पर जब उन्होंने यह देखा कि
किसी प्रकार नहीं बढ़ा जा सकता है, तब उन्होंने अत्यन्त च

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

होकर वहाँ एक शिवलिङ्ग की स्थापना की।

रामचन्द्र की प्रार्थना पर शिवजी उसी लिङ्ग से प्रकट हुए त विराट् स्वरूप धारण कर, वर माँगने के लिए कहने लगे। उस सम रामचन्द्र ने उस ज्योतिस्वरूप शिवजी को देखकर यह प्रार्थना की- "हे प्रभो ! मेरी यह इच्छा है कि मैं सेना सहित समुद्र के पार उतरक रावण पर विजय प्राप्त करूँ तथा मेरी अभिलाषा है कि आप मेरे द्व स्थापित इस लिङ्ग में सदैव निवासकर संसार को सुख पहुँचाया करें शिवजी ने इस प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार कर लिया। तदुपरान्त 'एवमस्तु' कहते हुए रामचन्द्र द्वारा स्थापित लिङ्ग में प्रवेश कर गये

हे नारद ! रामचन्द्र ने जो लिङ्ग स्थापित किया था, वह रामेश्वर नाम से तीनों लोकों में प्रसिद्ध हुआ। रामचन्द्र, लक्ष्मण, सुग्री जाम्बवान्, हनुमान तथा अंगद आदि ने उस लिङ्ग का पूजन क अत्यन्त आनन्द प्राप्त किया। तदुपरान्त रामचन्द्र समुद्र पर पुल बाँधक लंकापुरी में जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने रावण को कुल सहित मार डा और विभीषण को वहाँ का राज्य दे, स्वयं सीता सहित अप अयोध्यापुरी को लौट आये।

हे नारद ! जो मनुष्य रामेश्वर शिवलिङ्ग पर गंगा जल चढ़ाता वह दोनों लोकों में सुख प्राप्त करता है। यह पूर्ण सत्य है कि रामेश शिवलिङ्ग की पूजा करने से सब प्रकार के मनोरथ पूर्ण होते हैं।'

पचासवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! अब हम घुष्मेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग वर्णन करते हैं। वह बारहवाँ ज्योतिर्लिङ्ग है। दक्षिण दिशा में त्रि नामक जो शिवजी का धाम है वहाँ एक बहुत बड़ा नगर स्थित उस नगर में सुधर्मा नामक एक विद्वान् ब्राह्मण निवास करता था। दिन-रात शिवजी का पूजन करता तथा सदैव भस्म एवं रुद्राक्ष धारण करता था। उसकी सुदेहा नामक पत्नी परम पतिव्रता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शिवजी की महान् भक्त थी। बहुत दिन व्यतीत होने पर भी जब
ब्राह्मणी के कोई पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ तो एक दिन वह अत्यन्त चि
होने लगी। उस समय ब्राह्मण ने उसे बहुत कुछ समझाते हु
कहा—"हे प्रिये ! यद्यपि पुत्र के होने पर दोनों लोकों में सुख मि
है, परन्तु वेद का कथन यह है कि कर्म सब में प्रधान है। तुम
रहित होकर भगवान् शिवजी की आराधना करती रहो। जो
शिवजी की भक्ति में लीन हो जाते हैं, उन्हें संसार का सुख
दिखाई देता है।"

हे नारद ! ब्राह्मण द्वारा इस उपदेश को सुनकर वह स्त्री अ
प्रसन्न हुई तदुपरान्त एक दिन वह अपनी किसी पड़ोसन के यहाँ
वहाँ किसी विषय पर विवाद छिड़ गया। तब एक स्त्री ने ताना
हुए यह कहा—"अरी तू पुत्रहीन होने पर भी इतना अहंकार
करती है? संतान के बिना न तो मुक्ति मिलती है और न ज्ञ
फलदायक हो सकता है।"

हे नारद ! उन स्त्रियों की बात सुनकर ब्राह्मणी अत्यन्त लज्जि
अपने घर लौट आयी और पति के चरणों में गिरकर, सब वृ
सुनाती हुई यह कहने लगी—"हे स्वामी ! या तो मुझे पुत्र दं
अन्यथा मैं जीवित नहीं रहूँगी।" इस बात को सुनकर ब्राह्मण ने
बहुत समझाया कि तुम पुत्र के लिए इस प्रकार चिन्ता मत करो
शिवजी की भक्ति त्याग कर, संसारी सुख में संलग्न होने का प्रय
करो ; परन्तु वह किसी भी प्रकार संतुष्ट न हुई। निरन्तर पुत्र की हं
करती रही। तब उसके हठ को देखकर ब्राह्मण ने दुःखी होकर शि
का ध्यान किया। फिर उसने अपनी स्त्री के सामने दो फूल रखे।
एक फूल पुत्र होने का और दूसरा फूल पुत्र न होने का था। उन
को सामने रखने के उपरान्त ब्राह्मण ने सुदेहा से कहा—"हे
तुम इन दोनों फूलों में से कोई एक फूल उठा लो।" यह सु
ब्राह्मणी ने उस फूल को उठाया, जो पुत्र न होने का था। तब ब्राह
अत्यन्त दुःखी होकर स्त्री से यह कहा—"तुम्हारे भाग्य में पुत्र न

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:38 PM

अस्तु, वह किसी भी प्रकार प्राप्त नहीं हो सकता।'' यह सुनकर
बोली—''हे पति ! आप पुत्र की प्राप्ति के लिए दूसरा विवाह
लीजिये। मैं उसकी सेविका बनकर घर में रहूँगी। यद्यपि ब्राह्मण
दूसरा विवाह करने का बहुत विरोध किया, परन्तु ब्राह्मणी ने
विवश करके दूसरा विवाह करा दिया। दूसरी स्त्री जो आयी, उस
नाम घुष्मा था। वह अपने पति की आज्ञानुसार प्रतिदिन एक स
पार्थिव बनाकर उनका पूजन करने लगी। इस प्रकार जब कुछ स
व्यतीत हुआ तो शिवजी की कृपा से उसने एक पुत्र को जन्म दि
उस बालक के होने पर ब्राह्मण तथा उसकी दोनों पत्नियों को अत
आनन्द हुआ। यथाविधि जात कर्म आदि करने के उपरान्त बहुत उ
मनाये गये।''

इक्यावनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! जब घुष्मा ने पुत्र को जन्म दिय
सब लोग उसकी प्रशंसा करने लगे। उसके विपरीत ब्राह्मण की प
पत्नी सुदेहा की सर्वत्र निन्दा होने लगी। तब वह अपनी सौत के पुत्र
स्नेह करने के स्थान पर घृणा करने लगी और उसे देख-देख
जलने लगी। वह उसे खूब मारने तथा अनेक प्रकार के कष्ट पहुँ
लगी। यद्यपि ब्राह्मण अपनी दोनों पत्नियों को एक दृष्टि से देखत
और घुष्मा भी यह कहती थी कि यह पुत्र मेरा नहीं, अपितु तुम्हा
है; परन्तु तो भी, सुदेहा का दुःख दूर नहीं होता था।

हे नारद ! सौतिया डाह महाभयानक कहा गया है। इस
बुद्धिमान् पुरुष को चाहिए कि दूसरा विवाह कभी न करे। विशे
उस स्थिति में, जब उसकी पहली पत्नी जीवित हो तथा उसके स
भी न हो। अस्तु, जब वह लड़का बड़ा हो गया और उसका विवा
हो गया, तब सुदेहा की ईर्ष्या और अधिक बढ़ गयी। यद्यपि उस ल
की पत्नी सुदेहा की अधिक सेवा किया करती थी, तो भी वह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:38 PM

प्रति निरन्तर कठोर वचनों का ही प्रयोग किया करती थी। अन्त में
दिन सुदेहा ने यह विचार किया कि जब तक मैं इस लड़के को
नहीं डालूँगी तब तक मेरा दुःख दूर नहीं होगा।

हे नारद ! संसार में ऐसा कोई कर्म नहीं है, जिसे स्त्री न कर स
अस्तु, एक दिन अवसर पाकर सुदेहा ने अपनी सौत के लड़के को
डाला तथा उसका सिर काटकर वहाँ डाल दिया, जहाँ घुष्मा शि
के पार्थिव लिङ्गों को पूजन के उपरान्त डाल दिया करती
प्रातःकाल होने पर जब लोगों ने उस लड़के के अंगों को छिन्न-
देखा तो सम्पूर्ण नगर में इस बात की चर्चा होने लगी कि सुदे
अपने सौतेले लड़के को मार डाला है। यह सब होते हुए भी
ब्राह्मण तथा घुष्मा शिवजी के पूजन में संलग्न रहे। वे अपने स्थ
तनिक भी नहीं हटे। जब पूजन समाप्त हो चुका तब उन्होंने
लड़के की ऐसी अवस्था देखी, तब भी केवल यही कहा कि शि
ही हमारे रक्षक हैं। अस्तु, उनकी जो इच्छा होती है, वही कार्य
करते हैं। इस सम्बन्ध में हम लोगों को चिन्ता करने की
आवश्यकता नहीं है। अस्तु, घुष्मा ने प्रतिदिन के नियमानुसार पा
को उसी स्थान पर डाल दिया जहाँ उसके लड़के का मस्तक
हुआ पड़ा था। इस प्रकार वह शिवजी की भक्ति में पूर्णतः दृढ़
तथा किसी भी प्रकार अपने मन में खेद नहीं किया। उसकी ऐसी
को देखकर शिवजी तुरन्त प्रकट हो गये और घुष्मा से इस प्र
बोले—"हे घुष्मा ! हम तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हैं। तुम इच्छानुसा
माँग लो। तुम्हारे लड़के का जिसने वध किया है, उसे हम अपने त्रि
से मार डालेंगे।" यह सुनकर घुष्मा ने उन्हें प्रणाम करते हुए
दिया—"हे प्रभो ! जिसने यह पाप किया है, वह स्वयं अपने पा
फल पायेगा, आप किसी का वध न करें। दूसरी मेरी यह इच्छा
आप गिरिजा सहित उसी स्थान पर स्थित हों तथा अपने भक्त
सम्पूर्ण मनोरथ प्रदान किया करें।"

घुष्मा की यह प्रार्थना सुनकर, शिवजी प्रसन्न होकर बोले—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

घुष्मा ! हम तुम्हारी प्रार्थना को स्वीकार करते हैं। तुम्हारे द्वारा स्था
यह शिवलिंग घुष्मेश्वर के नाम से प्रसिद्ध होगा और तालाब का
शिवालय होगा। तुम्हारे गर्भ से एक सौ पुत्र जन्म लेंगे और तुम जी
भर अत्यन्त सुख भोगकर, अन्त में मुक्ति पद को प्राप्त करोगी।''
ब्राह्मण ने अपनी दोनों स्त्रियों सहित उस लिङ्ग की परिक्रमा की।
वह अपनी पहली स्त्री से शत्रुता त्यागकर, आनन्दपूर्वक शिव भवि
संलग्न रहने लगा।

हे नारद ! घुष्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के इस चरित्र को जो सुनता, सु
अथवा पढ़ता है, वह संसार में अनेक प्रकार के सुख भोगकर, अ
शिवपद को प्राप्त करता है। उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं
किसी भी प्रकार का रोग नहीं रहता। मैंने तुम्हें द्वादश ज्योतिर्लिंगो
वृत्तान्त विस्तारपूर्वक सुनाया। यह बारहों ज्योतिर्लिंग; मुक्ति को प्र
करने वाले हैं। संसार में शिवलिंगों की महिमा प्रधान है।''

इति श्रीशिवपुराणे ब्रह्मानारदसम्वादे भाषायां शतरुद्रखण्डनाम अष्टमखण्डस्समाप्तः ।। ८ ।।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:38 PM

ॐ नमः शिवाय

श्री शिव महापुराण

(सरल भाषा)

नौवाँ खण्ड

पहला अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! अब मैं नवम खण्ड की क
सुनाता हूँ। यह नवम खण्ड प्रयाग के समान अत्यन्त पवित्र है। प्रया
गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है, इसलिए उसकी महिमा व
गयी है। इस नवम खण्ड में नाम, भस्म एवं रुद्राक्ष की महिमा
वर्णन किया गया है, इसलिए यह भी त्रिवेणी रूप है। जो लोग
तीनों आभूषणों को धारण किए रहते हैं, उन्हें भगवान् सदाशिव
समान समझना चाहिए।

हे नारद ! शिवजी की महिमा अपार है। भक्त तथा संतजन शि
के नाम को प्राणों से भी अधिक प्रिय समझते हैं। मुनि तथा सिद्ध
उनके नाम का जप करके सम्पूर्ण पापों से रहित हो जाते हैं। स
सहित श्री रामचन्द्र जी तथा राधा सहित श्री कृष्ण जी भी शिवजी
नाम जपते हुए सुखी रहते हैं। जो लोग शिवजी के नाम का जाप क
हैं, उन्हें परम धन्य समझना चाहिए। जिसके मुख से एक बार
शिवजी का नाम निकलता है, उसके सभी कार्य पूरे हो जाते
शिवजी का नाम जपने से ब्रह्महत्या आदि बड़े-बड़े पाप दूर हो
हैं। शिवजी के नाम रूपी नौका को संसार रूपी समुद्र से पार जा
लिए सुगम उपाय समझना चाहिए। शिवजी का नाम अमृत के स
दुःखों को दूर करने वाला है। हे नारद ! जो लोग मन, वचन तथा
द्वारा शिवजी का नाम जपते हैं, वे अत्यन्त धन्य हैं।

हे नारद ! यद्यपि शिवजी के अनन्त नाम हैं तथा वे सब स

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:38 PM

मनोकामनाओं को सिद्ध करने में एक-से हैं, परन्तु शिव नाम समान अन्य कोई नाम नहीं है। जो मनुष्य किसी भी प्रकार शिवजी नाम लेता है, वह अवश्य ही मुक्ति को प्राप्त होता है। इन्द्रद्युम्न न एक राजा महापापी था। जब उसे एक सिंह ने मार डाला तो उसे के लिए यमराज के दूत गए, परन्तु तभी शिवजी की आज्ञा शिवगण भी उसे लेने के लिए जा पहुँचे, क्योंकि मरते समय शिव नाम का उच्चारण किया था। यद्यपि उसने अनजाने में शि का नाम लिया था, तो भी वह शिव स्वरूप धारणकर, शिव पु प्रतिष्ठित हुआ। इसी प्रकार बहुत-से अन्य मनुष्य भी शिवजी का लेकर बराबर मुक्ति को प्राप्त होते रहे हैं।

हे नारद ! वेद तथा पुराण इस बात को कहते हैं कि शिवजी के से माहात्म्य का पूर्ण रूप से वर्णन नहीं किया जा सकता। पहले तथा बाद में शिवाय करने पर नमः शिवाय—यह पंचाक्षर म जाता है। यह मंत्र सब मंत्रों का राजा है। और इसकी महिमा श्रेष्ठ है। इस पंचाक्षर मंत्र का जप करके ही मैं, विष्णु जी तथा देवता एवं ऋषि मुनि सदैव निर्भय रहते हैं और अनेक प्रकार के भोगते हैं। जो प्राणी इस मन्त्र का जप करता है, उसके सभी पाप दोष नष्ट हो जाते हैं तथा शिवजी किसी भी अवस्था में उ अप्रसन्न नहीं होते।''

दूसरा अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—''हे संसार को करने वाले ब्रह्मा जी ! मेरी यह अभिलाषा है, मुझे सुमति नामक तथा इन्द्रद्युम्न नामक राजा की कथा विस्तारपूर्वक सुनावें। सुनकर ब्रह्मा जी बोले—''हे पुत्र ! सुनो, सुमति एक ब्राह्मणी क था। उसे कैकेयी भी कहते थे। उसके पिता ने एक श्रेष्ठ ब्राह्म साथ उसका विवाह किया था। वह अपने पति के साथ रहकर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:38 PM

प्रकार के विहार करती रही। कुछ समय पश्चात् उसके पति की मृ
हो गयी। थोड़े दिनों तक तो वह सांसारिक रीति के अनुसार शो
मनाती रही, परन्तु जब उसे कामदेव सताने लगा, तब वह व्यभिचारि
बन गयी।

हे नारद ! तब वह व्यभिचारणी घूमती-घामती एक वन में
पहुँची। वहाँ उसकी भेंट एक शूद्र से हुई। शूद्र उसे अपने घर ले ग
और अपनी स्त्री के समान रखने लगा। वह अपने पुरातन धर्म को भु
बैठी। एक दिन वह शूद्र किसी काम से घर से बाहर चला गया,
स्वतंत्र होकर अनेक प्रकार के दुष्कर्म करने लगी। एक समय की ब
है कि उसने मद्यपान करके माँस खाने की इच्छा की और गौशाल
पहुँचकर एक बछड़े को तलवार से मार डाला। यद्यपि उस स
अंधेरा होने के कारण वह यह नहीं जान सकी थी कि मैं बछड़े को
रही हूँ। परन्तु जब उसे यह पता चल गया कि मैंने बछड़े को मारा है
वह चिन्तित होकर शिव-शिव कहने लगी। इसके बाद वह उस ब
के माँस को खा गयी और सबके समक्ष यह बात प्रसिद्ध कर दी
उसे सिंह ने मार डाला है। अस्तु, जब उसकी मृत्यु का समय आया
यमराज के गण उसे बाँध कर यमराज के समीप ले गये। यम ने
नरक में न भेजकर, एक चाण्डाल के घर जन्म दे दिया। वहाँ
माता-पिता से हीन, अन्धी तथा कुष्ठ रोग से ग्रस्त होने के का
अत्यन्त दुःख को प्राप्त हुई। उसके घृणास्पद रूप को देखकर किस
भी उसके साथ विवाह करना स्वीकार नहीं किया।

हे नारद ! वह चाण्डालों की जूठन खाकर अपना पेट भरा क
थी। इस प्रकार उसकी बाल्यावस्था तथा युवावस्था दोनों ही दुःख
बीता। वृद्धावस्था आने पर भी उसे सुख प्राप्त नहीं हुआ। एक दिन
अपनी दशा पर विचार करके इतना अधिक रोई कि उसकी आँखें
आँसुओं की नदी जैसी बह निकली। तब भगवान् सदाशिव ने
चरित्र किया कि वह चाण्डाली अन्य लोगों के साथ माँगती-खाती
किसी प्रकार गोकर्ण क्षेत्र में जा पहुँची। उस दिन वहाँ माघ कृ
चतुर्दशी का मेला लगा था और सभी लोगों ने व्रत धारण किया हु

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:38 PM

था। वहाँ उस चाण्डालिनी ने भोजन के लिए बहुत याचना की, किसी ने भी उसे खाने को नहीं दिया। तदुपरान्त एक मनुष्य ने उ हाथ पर थोड़े से बिल्वपत्र रख दिये। जब उसने यह देखा कि इस में कोई खाने-पीने की वस्तु नहीं है, तो उन्हें पृथ्वी पर फेंक दि संयोगवश वे बिल्वपत्र एक शिवलिंग के ऊपर जा पड़े। इस अज्ञाना के पुण्य के कारण उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गये। उस दिन खाने-पीने के लिए कुछ नहीं मिला था। अस्तु उसका निर्जल व्र हो गया। इसी दुःख के कारण उसे रात भर नींद भी नहीं आयी, वि वह जागरण का फल प्राप्त करने की भी अधिकारिणी प्रातःकाल होने पर भी जब उसे कोई खाने-पीने की वस्तु न मिल वह व्याकुल होकर अपने घर को लौट चली, परन्तु मार्ग में ही उ मृत्यु हो गयी।

हे नारद ! इस अज्ञानावस्था की भक्ति से शिवजी उसके अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने गणों को यह आज्ञा दी कि लोग उस चाण्डालिनी को विमान पर बैठाकर, हमारे लोक व आओ। तब शिवजी की आज्ञानुसार, शिवगण उसे विमान पर बै शिवलोक में पहुँचे। शिवजी तथा गिरिजा जी ने उस पर अत्यन्त की। तदुपरान्त पार्वती जी ने उसे अपनी दासी बना लिया। हे न इस प्रकार केवल दो बार शिव नाम का उच्चारण करने से ही को मुक्ति पद प्राप्त हुआ।"

तीसरा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! पिछले कलियुग में इन्द्रद्युम्न न एक राजा अत्यन्त बलवान हुआ था। वह बुद्धिहीन, ब्राह्मण विरोधी, जीव हिंसक पापी, सबका शत्रु तथा बुरे स्वभाव का उसने वेद के विरुद्ध आचरण कर देवताओं का पूजन, जप, तप आदि सबको त्याग दिया। प्रजा भी उसके आचरण से अत्यन्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:39 PM

थी। वह शिकार खेलने के लिए जाता और अनेक निरीह पशुओं का वध किया करता था।

हे नारद ! एक दिन राजा अपने मंत्री सहित वन में शिकार खेलने के लिए गया। वहाँ उसने सैनिकों ने वन में रहने वाले ऋषि-मुनियों को वन से बाहर निकाल देने का प्रयत्न किया। उसी समय शिवजी की माया से एक महाभयानक सिंह ने कहीं से आकर उस राजा को एक ही चपेट में मार डाला और कोई भी उसकी रक्षा न कर सका। जब यमदूत उस राजा को लेने के लिए पहुँचे, तभी शिवजी की आज्ञानुसार शिवगण भी उसे लेने जा पहुँचे वे राजा को यमदूतों से छुड़ाकर शिवलोक में ले गये। वहाँ जाते ही राजा शिवरूप हो गया। तथा शिवजी ने उसे प्रसन्नतापूर्वक अपने आधे आसन पर बैठाकर इस प्रकार कहा—"हे राजन् ! तुम हमारे भक्त हो, इसलिए तुम्हारी जो इच्छा हो, वह वरदान हमसे माँग लो।" शिवजी के मुख से ऐसे वचन सुनकर राजा की आँखों से प्रेमाश्रुओं की वर्षा होने लगी। वह मुख से कुछ नहीं बोला। तब शिवजी ने उसे स्वयं ही वरदान देकर, अपना गण बना लिया। तब से उसका नाम चण्ड हुआ। मुण्ड नामक गण से उसकी अत्यन्त मित्रता हुई। उसी समय से चण्ड और मुण्ड ने शिवजी के गणों में प्रमुख स्थान प्राप्त किया।

हे नारद ! शिवजी के भक्तों को उचित है कि जब वे शिवजी की पूजा अथवा जप करें तो आग्नेय दिशा में चण्ड-मूण्ड का पूजन अवश्य कर लिया करें, क्योंकि इन गणों की पूजा से शिवजी अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने भक्तों के मनोरथों को पूर्ण करते हैं। राजा इन्द्रद्युम्न को ऐसा शुभपद केवल एक बार शिवजी का नाम लेने के कारण ही मिल गया, यद्यपि उसने जान बूझकर भी वह नाम नहीं लिया था। केवल एक बार ही उसके मुख से 'आहरपरिहर' शब्द निकला था। जिस समय उसने उस शब्द का उच्चारण किया था, उसी समय सिंह ने उसका वध किया था। 'आहरपरिहर' शब्द का उच्चारण करने से ही उसे इस पद की प्राप्ति हुई, क्योंकि यह शब्द भी शिवजी का एक नाम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:39 PM

है। अस्तु, यमदूतों को जब वह वृत्तान्त ज्ञात हुआ तो उन्होंने चित्रगुप्त से इसका भेद पूछा। उस समय चित्रगुप्त ने उन्हें यह बताया कि आहरपरिहर शब्द का उच्चारण करने से ही राजा को ऐसे श्रेष्ठ पद की प्राप्ति हुई है। जो इस कथा को सुनता एवं पढ़ता है, उसे भी दोनों लोकों में आनन्द प्राप्त होता है।''

चौथा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! शिव नाम का उच्चारण करने से करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। ऐसा कोई भी दोष नहीं हैं, जो शिव नाम का जप करने से नष्ट न हो जाए। मैं इस सम्बन्ध में तुमसे एक इतिहास कहता हूँ। उज्जयिनी पुरी में एक महापापी ब्राह्मण रहता था। उसका नाम असमचित्त था। जब उसने जन्म लिया तो उसके पिता की मृत्यु हो गयी और जब वह पाँच वर्ष का हुआ तो उसकी माता भी मर गयी। इस प्रकार माता-पिता से हीन हो जाने पर वह अत्यन्त दुःखी तथा निर्धन हुआ। वह किसी प्रकार की विद्या भी नहीं पढ़ सका। जब वह युवा हुआ तो चोरी करना सीख कर परदेश चला गया और वहाँ अनेक प्रकार के पाप-कर्म करने लगा।

हे नारद ! एक समय वह कुछ अन्य चोरों के साथ माया-क्षेत्र में चोरी करने के विचार से जा पहुँचा। जिस समय वह अपने साथियों सहित इधर-उधर घूम रहा था, उसी समय उसने यह देखा कि एक स्थान पर कुछ ब्राह्मण बैठे हुए शिवजी का पूजन तथा स्तुति करते हुए उनकी कथा के पठन-पाठन में संलग्न हैं। असमचित्त ने उन्हें देखकर अपने साथी चोरों से यह कहा—''हे भाइयो ! ऐसा मालूम होता है कि ये लोग बहुत धनवान् हैं। ये लोग परस्पर धीरे-धीरे वार्तालाप कर रहे हैं, इससे भी यही प्रतीत होता है, मानो अपने धन के सम्बन्ध में कोई मन्त्रणा कर रहे हैं, अतः तुम इन लोगों की बातचीत को ध्यानपूर्वक सुनो। तदुपरान्त हम इनका धन लूटकर, इन्हें मार डालेंगे।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे नारद ! यह विचारकर, असमचित्त अपने साथियों सहित शिवभक्तों का स्वरूप धारणकर, वस्त्र आदि बदल, उन शिव पूजकों के समीप जा पहुँचा और प्रणाम करके उनके समीप बैठ गया। वहाँ उसने शिवजी का माहात्म्य भली-भाँति श्रवण किया। उस संगति एवं श्रवण के प्रभाव से, उसके सभी पाप नष्ट हो गये। तब उसने अत्यन्त व्याकुल होकर उन ब्राह्मणों से हाथ जोड़कर यह कहा—"हे प्रभो ! मैं महापापी हूँ। आप लोग मुझे अपना सेवक जानकर भवसागर से पार लगा दीजिये। मैंने करोड़ों पाप किये हैं तथा सहस्त्रों ब्राह्मणों को कष्ट पहुँचाया है। अब आपसे मेरी यही प्रार्थना है कि आप मुझे कोई ऐसा उपाय बताने की कृपा करें जिससे मेरे सम्पूर्ण दोष नष्ट हो जाएं।" इस प्रकार कहकर वह उन भक्तों के चरणों पर गिर पड़ा। यह देखकर उन ब्राह्मणों ने 'धन्य-धन्य' कहते हुए उत्तर दिया—"हे असमचित्त ! तुम्हारा परम सौभाग्य है, जो तुम यहाँ आ पहुँचे हो। तुम्हें उचित है कि तुम गंगा के तट पर, महागिरि पर स्थित शिवजी के मन्दिर में जाओ और वहाँ भगवान् सदाशिव का पूजन एवं जप करो। ऐसा करने से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाएंगे।"

हे नारद ! ब्राह्मणों के मुख से यह वचन सुनकर असमचित्त उस मन्दिर में जा पहुँचा तथा भगवान् सदाशिव का पूजन करके, उनके नाम का जप करने लगा। इस प्रकार सात दिन-रात तक वह शिवजी का जप करता रहा। तब भगवान् भूतभावन ने अत्यन्त प्रसन्न होकर उसे अपना दर्शन देते हुए यह कहा—"हे असमचित्त ! तुम्हारा कल्याण हो। अब तुम्हारी जो इच्छा हो, वह वर हमसे माँग लो।" शिवजी के मुख से यह वचन सुनकर असमचित्त ने उनके चरणों पर गिरते हुए दण्डवत् प्रणाम की तथा बहुत प्रकार की स्तुति की। तब शिवजी ने उसकी अभिलाषा को समझकर उसे सम्पूर्ण विद्याएँ प्रदान कीं, जिससे असमचित्त परम विद्वान् होकर शिवजी के तत्त्व तथा स्वरूप को पहचानकर, उनकी स्तुति करने लगा। उस समय शिवजी प्रसन्न होकर बोले—"हे असमचित्त ! तुम हमारा गण बनकर, विमान

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:39 PM

पर चढ़ो और कैलाश पर्वत पर निवास करो। आज से तुम्हारा नाम नील होगा तथा हम नीलेश्वर होकर इस स्थान पर विराजमान रहेंगे। यह पर्वत भी नील पर्वत के नाम से संसार में प्रसिद्ध होगा तथा इसका स्मरण करने मात्र से ही सबको सुख मिलेगा। गंगा के तट पर जो कुण्ड है, उसमें स्नान करने से मनुष्य को हमारे स्वरूप की प्राप्ति होगी। यह नील पर्वत तथा नीलेश्वर लिङ्ग सब प्राणियों को अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाले तथा सब प्रकार के दुःखों को दूर करने वाले होंगे।''

तभी से वह स्थान अत्यन्त प्रसिद्ध है। उसे देखने मात्र से ही महापापी मनुष्य भी सम्पूर्ण पापों से रहित होकर, पवित्र हो जाता है। जिस प्रकार असमचित्त नामक पतित ब्राह्मण नील का स्वरूप धारण कर, शिवपुर को प्राप्त हुआ और शिवजी का गण बना ; उसी प्रकार अन्य बहुत-से लोगों ने भी शिवजी का नाम जपकर, परम पद को प्राप्त किया है।''

पाँचवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! पंचाक्षर मंत्र परम श्रेष्ठ है तथा इसकी महिमा अनन्त है। इस मंत्र का जप करने से सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं तथा सहस्त्रों पाप नष्ट हो जाते हैं। वेदों ने भी इस मंत्र द्वारा सिद्धि प्राप्त की है। सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान् सदाशिव इस मंत्र में सदैव स्थित रहते हैं। जो मनुष्य संसारी सुखों में लिप्त होकर अपने जीवन को नष्ट कर रहे हैं, उनके कल्याण के हेतु भगवान् सदाशिव ने इस मंत्र को प्रकट किया है।

हे नारद ! यह पंचाक्षरी मंत्र पापों के समुद्र को बड़वाग्नि के समान तथा दोषों को नष्ट करने में अग्नि के समान है। सभी मनुष्य इसके अधिकारी हैं।

हे नारद ! ब्राह्मण से बढ़कर सद्गुरु अन्य कोई नहीं है ; क्योंकि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:39 PM

अन्य सभी वर्ण ब्राह्मण के शिष्य कहलाते हैं। गृहस्थ मनुष्य को उचित है कि अपने से नीच वर्ण वाले को अपना गुरु कभी न बनावे, अन्यथा उसे बड़ा पाप लगता है। मंत्र की महिमा के सम्बन्ध में हम तुम्हें एक इतिहास सुनाते हैं, जो अत्यन्त पवित्र तथा पापों को नष्ट करने वाला है।

हे नारद ! यदुवंश में दाशार्ह नामक एक अत्यन्त प्रतापी राजा हुआ। वह सब शास्त्रों में पंडित, महान् योद्धा, परमवीर, धर्मात्मा, संतोषी, शत्रु-विजय, सुन्दर, शीलवान्, युद्ध में चतुर तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला था। उसने काशी के राजा की पुत्री कलावती के साथ अपना विवाह किया। वह स्त्री भी परम सुन्दरी तथा पतिव्रता थी। एक दिन राजा दाशार्ह ने अन्तःपुर में पहुँचकर अनेक प्रकार के वस्त्राभूषणों से अलंकृत अपनी पत्नी के साथ मैथुन करना चाहा। परन्तु कलावती ने उसे ऐसा करने से मना किया। यह देखकर राजा ने उससे बलपूर्वक भोग करने की इच्छा प्रकट की। तब कलावती ने हाथ जोड़कर विनय करते हुए कहा—"हे राजन् ! आप मुझे स्पर्श न करें; क्योंकि आप धर्म तथा अधर्म को जानने वाले हैं। इसके अतिरिक्त यह बात भी है कि यदि शीघ्रता में कोई कार्य किया जाता है तो उसका परिणाम अच्छा नहीं होता। मैं इस समय व्रत धारण किये हुए हूँ। हे राजन् ! वेद का कथन है कि छः प्रकार की स्त्रियों से भोग करना उचित नहीं है। पहली उस स्त्री से, जो अपने पति से प्रेम न करती हो। दूसरी उससे, जो रोगिणी हो। तीसरी वह, जो गर्भवती हो। चौथी वह, जो किसी व्रत अथवा नियम-संयम को धारण किये हुए हो। पाँचवी वह, जो कामदेव से रहित हो अर्थात् नपुंसिका हो। छठी वह जो मासिक धर्म में हो। अस्तु, मैं इस समय व्रत में हूँ, सो आप मेरा व्रत भंग करने वाला कार्य न करें।"

हे नारद ! इस प्रकार कलावती ने राजा को बहुत कुछ समझाया, परन्तु काम के वशीभूत होने के कारण राजा ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया तथा उसके साथ बलपूर्वक भोग किया। भला, संसार में ऐसा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:39 PM

कौन-सा प्राणी है, जो कामदेव पर विजय प्राप्त कर सके? अस्तु, भोग करने के उपरान्त राजा का हृदय अकस्मात् जलने लगा। तब वह घबरा कर अपनी रानी से इस प्रकार बोला—"हे प्रिये ! मुझे भोग करने की और अधिक इच्छा थी, परन्तु यह देखकर आश्चर्य हो रहा है कि तुम ऐसा कोमलांगी होते हुए भी कठोर क्यों कर हो? तुम्हारा सम्पूर्ण शरीर अग्नि के समान प्रज्वलित हो रहा है। जिस समय मैं तुम्हें अपने हृदय से लगाता हूँ, उस समय मेरा सम्पूर्ण शरीर जलने लगता है।"

हे नारद ! राजा के ऐसे वचन सुनकर रानी ने हँसते हुए उत्तर दिया—"हे स्वामिन् ! मैं आपको इसका कारण बताती हूँ। एक बार दुर्वासा ऋषि मेरे पिता के घर पधारे थे। मैं उन दिनों छोटी थी। उस समय दुर्वासा ने शुभ घड़ी में मुझे शिवजी के पंचाक्षर मंत्र का उपदेश दिया तथा अन्य अनेक मंत्र भी दिये। उनके कारण मेरा शरीर निष्पाप हो गया है। आपने राज्य के मद में व्यभिचारिणी स्त्रियों तथा मद्यपान करने वाली स्त्रियों के साथ भोग किया है। आप न तो प्रतिदिन स्नान करते हैं और न कभी शिव-भक्तों का स्वरूप धारण कर पंचाक्षरी मंत्र का जप करते हुए शिवजी का पूजन ही करते हैं। यही कारण है कि मुझे स्पर्श करके आपका शरीर जलने लगा है।"

हे नारद ! रानी के मुख से यह वचन सुनकर, राजा ने अत्यन्त आश्चर्य में भरकर कहा—"हे प्रिये ! तुम मुझे भी वह मंत्र बता दो, जिसका तप करने से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। यथेच्छित भोग किये बिना मुझे प्रसन्नता नहीं मिल सकेगी। अस्तु मुझे यह सुख प्रदान करने के अतिरिक्त, उचित है कि तुम मुझे भी निष्पाप बना देने का प्रयत्न करो।" यह सुनकर रानी ने उत्तर दिया—"हे राजन् ! मैं आपकी पत्नी तथा स्त्री हूँ। अतः आपको चाहिए कि आप अपने पुरोहित गर्ग मुनि से मंत्र दीक्षा लें।" यह सुनकर राजा अपनी रानी को साथ ले गर्ग मुनि की सेवा में जा पहुँचा और उन्हें दण्डवत् करने के उपरान्त इस प्रकार प्रार्थना करने लगा—"हे प्रभो ! आप मुझे मंत्र का उपदेश कर कृतार्थ कीजिये।" राजा की प्रार्थना सुनकर गर्ग मुनि उन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:39 PM

दोनों को साथ लेकर यमुना जी के तट पर जा पहुँचे। वहाँ सब उचित क्रियाओं को सम्पन्न कराने के उपरान्त उन्होंने राजा को पंचाक्षरी मंत्र का उपदेश दिया।

हे नारद ! उस मंत्र का उपदेश प्राप्त करते ही राजा के मुख से सम्पूर्ण पाप अपने-आप निकलने लगे, जब राजा ने गर्ग जी से प्रार्थना करते हुए यह, पूछा—"हे प्रभो ! आप मुझे इस चरित्र का कारण बताइये कि मेरे मुख से अग्नि क्यों निकली है?" गर्ग जी ने उत्तर दिया—"हे राजन् ! तुम्हें बड़े-बड़े पाप करते हुए सैंकड़ों वर्ष व्यतीत हो गये। जब तुम्हारे पुण्य और पाप बराबर हुए, तब तुमने इस जन्म में मनुष्य शरीर को प्राप्त किया है। अब शिवजी का मंत्र ग्रहण करने के कारण तुम्हारे पापी हृदय से सभी छोटे-बड़े पाप जलते हुए पत्थरों के समान मुख से बाहर निकल पड़े हैं। अस्तु, अब तुम निष्पाप हो गये हो।"

हे नारद ! राजा को यह बताने के उपरान्त गर्ग जी ने पंचाक्षरी मंत्र की महिमा का वर्णन करते हुए पुनः इस प्रकार कहा—"हे राजन् ! यह मंत्र अन्य सभी मंत्रों का सम्राट् है तथा शिवजी का परम प्रिय है। यह सम्पूर्ण मनोरथों को सिद्ध करने वाला तथा दोनों लोकों में पापों को नष्ट करने वाला है। शिवजी इस मंत्र में अक्षर रूप से विराजमान हैं। यह मंत्र उनके मुख्य वचन के समान है। अस्तु, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इस पंचाक्षरी मंत्र का जप करने से शिवजी की प्राप्ति अवश्य होती है।"

इतनी कथा सुनाकर ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! पंचाक्षरी मंत्र की महिमा का वर्णन कर, गर्ग मुनि प्रेम में मग्न हो गये। राजा तथा रानी भी इस महिमा को सुनकर आनन्द रूपी समुद्र में डूबने लगे। जब गर्ग जी की चैतन्यता प्राप्त हुई तो वे राजा दाशार्ह से बोले—"हे राजन् ! अब तुम पापों से रहित हो चुके। अस्तु, अपनी राजधानी को लौट जाओ। वहाँ पर अपनी पत्नी के साथ यथेच्छ आनन्द लाभ करना।" इस आज्ञा को पाकर राजा दाशार्ह अपने घर लौट आया।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तदुपरान्त जब उसने अपनी रानी के साथ मैथुन किया तो रानी का शरीर चन्दन के समान शीतल प्रतीत हुआ। इस कथा को जो मनुष्य सुनता, पढ़ता अथवा दूसरों को सुनाता है, उसका भी अत्यन्त कल्याण होता है।''

छठा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे पुत्र ! अब मैं भस्म के माहात्म्य का वर्णन करता हूँ। भस्म दो प्रकार की होती है—१. महाभस्म, २. स्वल्पभस्म। महाभस्म शिवजी का मुख्य स्वरूप है एवं स्वल्पभस्म की अनेक शाखाएं हैं। उनमें १. श्रौत, २. स्मार्त, ३. लौकिक—ये तीन अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। जो भस्म वेद की रीति से धारण की जाती है, उसे श्रौत कहा जाता है। जो भस्म स्मृति अथवा पुराणों की रीति से धारण की जाती है उसे स्मार्त कहते हैं तथा जो भस्म संसारी अग्नि से उत्पन्न होती है और धारण की जाती है, उसे लौकिक कहा जाता है। पहले तथा दूसरे प्रकार की भस्म केवल ब्राह्मणों को ही धारण करनी चाहिए तथा तीसरे प्रकार की भस्म को सब वर्णों को अपने शरीर पर लगाना चाहिए। ब्राह्मणों को उचित है कि वे वेद-मंत्र का उच्चारण करते हुए भस्म धारण करें, परन्तु और वर्णों को शिवजी का नाम लेकर ही भस्म धारण करनी चाहिएं।

हे नारद ! मैं, विष्णु तथा अन्य सभी देवता, उपदेवता आदि भस्म लगाते हैं। योगी, सिद्ध, नाग आदि में ऐसा कोई भी नहीं है, जो भस्म न लगाता हो। वेद का कथन है कि बिना भस्म धारण किये सब प्रकार के आचार तथा पूजन निष्फल होते हैं। भस्म लगाये बिना वेद के मंत्र का जप करना अत्यन्त अनुचित है ; क्योंकि ऐसे मनुष्यों पर न तो शिवजी कृपा करते हैं और न उनका कोई कार्य ही सिद्ध होता है। भस्म का माहात्म्य अनादि तथा अनन्त है। उसका किसी भी प्रकार वर्णन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:39 PM

नहीं किया जा सकता है। सब लोग अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार ही उसका वर्णन करते रहते हैं।

हे नारद ! भस्म को धारण करने में कुछ और वर्ण का विचार नहीं होता। भस्म धारण करने वाले मनुष्य को तीर्थ के समान समझना चाहिए। जिस स्थान पर भस्म धारण करने वाले बहुत-से मनुष्य रहते हैं, वहाँ यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिकता से होते हैं। ऐसे पुरुष, जप, तप तथा व्रतों के शुभ फलों को प्राप्त करते हैं। भस्म धारण करने वालों को सम्पूर्ण विद्याओं का निधान समझना चाहिए, मानो उन्होंने सभी पुण्य-कर्म कर लिये हों। जो मनुष्य भस्म धारण करने वाले की निन्दा करता है अथवा उसे डराता-धमकाता है, वह अपने जन्म को निष्फल कर लेता है।

हे नारद ! पुरुष, स्त्री, वृद्ध, तरुण, बालक आदि सभी लोग भस्म को धारण कर सकते हैं। भस्म धारण करने वाले को अधिक पवित्रता की आवश्यकता नहीं है। जो मनुष्य त्रिपुण्ड एवं भस्म के सम्मान की रक्षा करते हैं, उन्हें शिवजी का भक्त समझना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य को उचित है कि जब तक वह भस्म को धारण न कर ले, तब तक न तो पानी पिये और न भोजन करें, क्योंकि भस्म का त्याग करने वाला मनुष्य नरक में पड़ता है। जिस ललाट पर भस्म न लगी हो, उसे धिक्कार है। जिस गाँव में कोई शिव मन्दिर न हो, उसे भी धिक्कार है। उस जन्म को भी धिक्कार है। जिसे पाकर शिवजी का पूजन न किया जाए तथा उस विद्या को भी धिक्कार है, जिसके द्वारा किसी को लाभ न हो।

हे नारद ! सभी देवता भस्म तथा त्रिपुण्ड के उपासक हैं। जो मनुष्य वेद की शिक्षा देने वाला हो अथवा यज्ञ कराने वाला हो, उसे उचित है कि प्रतिदिन भस्म तथा त्रिपुण्ड धारण करे। जो मनुष्य चाण्डाल हो, परन्तु भस्म धारण करता हो, तो वह भी शुद्ध हो जाता है। जो मनुष्य प्रतिदिन भस्म लगाता है, वह अत्यन्त पवित्र है। गंगा आदि सभी तीर्थ उसके शरीर में सदैव निवास करते हैं और उसके दोनों ओर के कुल

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मोक्ष को प्राप्त होते हैं। भस्म धारण करने वाला मनुष्य संसारी सुखों को पाकर, अन्त में मोक्ष को पाता है। सर्वप्रथम वह सब लोकों में भ्रमण कर, मेरे लोक में आता है और एक सहस्त्र वर्ष तक मेरे ब्रह्म लोक में निवास करने के उपरान्त विष्णु लोक को जाता है।

हे नारद ! वेद, पुराण तथा उपनिषद् सबका यही सार है जो मैंने तुम्हें बताया है। सम्पूर्ण देवता, मुनि, सिद्ध आदि भी यही कहते हैं। जो लोग भस्म की निन्दा करते हैं, वे करोड़ों पापों से युक्त होकर, बहुत समय तक नरक में निवास करते हैं। गंगा आदि नदियों में स्नान करने का फल भी भस्म से अधिक श्रेष्ठ नहीं है। भस्म तीनों लोकों को पवित्र करने वाली है। भस्म को शिवजी का ही स्वरूप समझना चाहिए। भस्म धारण किये बिना यज्ञ, तीर्थ, व्रत, दान, ध्यान, सभी निष्फल हैं। जिसने भस्म को धारण नहीं किया, वह संसार में व्यर्थ ही उत्पन्न हुआ है।

हे नारद ! भस्म लगाने वाले को तार स्वरूप शिवजी का ध्यान करना उचित है। वह तार स्वरूप दो प्रकार का है—१. सूक्ष्म तथा २. स्थूल। इसका तात्पर्य एक अक्षर तथा पाँच अक्षर है। भस्म तीन प्रकार की होती है, जिसे पहले कहा जा चुका है। कुछ लोग उसका १. वेद, २. शिवानल ३. भव, इन तीन प्रकारों से भी वर्णन करते हैं। इन प्रकारों में अघोर मंत्र मुख्य है। अस्तु, अघोर मंत्र द्वारा भस्म धारण करने पर यह उचित है कि शुद्ध लकड़ी को जला कर जो भस्म बने, उसे धारण करना चाहिए। भस्म बनाने का श्रेष्ठ नियम यह है कि बेल, पलाश, शमी, वट तथा पीपल की लकड़ी को भस्म के निमित्त जलाये। इसके अतिरिक्त दारू, लोहा, मिट्टी, काँसा, चाँदी आदि धातुओं की बनाई हुई तथा जो अन्न हवन के कार्य में लगाया जाता है, उसके द्वारा बनाई हुई भस्म भी अत्यन्त पवित्र होती है।

हे नारद ! भस्म धारण करने की विधि बताता हूँ। त्रिपुण्ड शब्द से तीन रेखाओं का बोध होता है। उन रेखाओं में एक-एक देवता विराजमान रहते हैं। भृकुटि से दोनों भौंहों के अन्त तक त्रिपुण्ड लगाना उचित है। पहली रेखा मध्यमा से, दूसरी अनामिका से और तीसरी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:39 PM

कनिष्ठिका से खींचे। बीच में अँगूठे से भस्म लगाये। इस प्रकार सत्ताईस स्थानों पर रेखा लगावें। उनमें एक-एक देवता निवास करते हैं। प्रणवाक्ष, शुचि, आत्म, लोक, श्रुतिगण, शुक्ति, सवन तथा देवौक, इतने प्रकार के सब देवता हैं। मनुष्य को उचित है कि प्रत्येक रेखा को जिससे जो देवता सम्बन्धित हो, दण्डवत् करता हुआ त्रिपुण्ड लगावें। ऐसा करने से मुक्ति प्राप्त होती है।

हे नारद ! सिर, ललाट, कर्ण, नेत्र, नासिका, मुख, कंठ, भुजा, उदर, हाथ, छाती, पंजर, नाभि, मुश्क, त्रिबली, दोनों जाँघों के मध्य का भाग तथा चरण यह सब बत्तीस स्थान हैं। आठ वसु, सात दिग्घेश, आठ दिक्पाल तथा आठों इन्द्र के नाम लेकर इन स्थानों पर त्रिपुण्ड लगावें। सिर, ललाट, कण्ठ, अंश, भुजा, उदर, हाथ, स्तन, नाभि, पंजर तथा पीठ—ये सोलह स्थान हैं। इनके देवताओं के नाम इस प्रकार हैं—"शिवभक्त, नाद, ईशान, वेदसूत्र तथा नवदश्र अर्थात् इन्द्र—इनके नाम लेकर उपर्युक्त स्थानों में त्रिपुण्ड धारण करना चाहिए। इसके अतिरिक्त ब्रह्मरंध्र, सिर, भुजा, ललाट, कंठ, स्तन, नाभि, त्रिबली, हाथ, पीठ तथा उदर—ये सोलह स्थान हैं। इनमें परमशिव, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, अग्नि, गुरु, रुद्र, सूर्य, द्विजेश, वाम, मरुत्, वसु, हर तथा हरदेव को दंडवत् करके त्रिपुण्ड लगाना चाहिए। सिर, ललाट, दोनों कान, दोनों कन्धे, हृदय तथा नाभि—ये आठ स्थान हैं। इनमें ब्रह्मा तथा सप्तर्षियों को दण्डवत् करके त्रिपुण्ड लगाना चाहिए। इसके अतिरिक्त सिर, भुजा, नाभि तथा हृदय ये पाँच स्थान हैं—इनमें पाँच देवताओं को दण्डवत् करके त्रिपुण्ड लगाना उचित है।

सातवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! आपने भस्म धारण करने की विधि तो बतलायी। अब कृपा करके कोई ऐसा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इतिहास बताइये जिसमें भस्म के प्रभाव से किसी पापी के मुक्त होने का वृत्तान्त हो।'' ब्रह्मा जी ने कहा—''हे पुत्र ! वामदेव नामक एक शिव भक्त काम, क्रोध, मोह, लोभ, आदि से रहित थे। वे सबको सम दृष्टि से देखते, किसी से कोई वस्तु नहीं लेते तथा सदैव मौन धारण कर, शिवजी का स्मरण करते हुए संसार में भ्रमण किया करते थे। वे भस्म धारण करते तथा प्रत्येक अवस्था में प्रसन्न रहते थे। उनकी परमहंस गति को देखकर सब लोग उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम करते थे।

हे नारद ! एक दिन वे क्रौंचारण्य नामक वन में पहुँचे। उस वन में केवल भूत-प्रेत रहते थे। वहीं एक अत्यन्त भयानक ब्रह्म राक्षस भी रहता था। कोई भी मनुष्य भय के कारण वहाँ नहीं जाता था। वह ब्रह्मराक्षस अपने पापों के कारण बहुत दिनों का भूखा-प्यास था। अस्तु, जब उसने वामदेव को वहाँ आते हुए देखा, तो उन्हें खाने के लिए दौड़ पड़ा, परन्तु मुनि को कोई भय नहीं हुआ। वे चुपचाप अपने स्थान पर खड़े रहे। यह देखकर ब्रह्मराक्षस उनके शरीर से लिपट गया और यह अभिलाषा करने लगा कि मैं उन्हें अपनी दोनों भुजाओं से उठाकर एक ही ग्रास में खा जाऊँ। परन्तु जिस प्रकार चिन्तामणि का स्पर्श करने से लोहा सोना बन जाता है उसी प्रकार शिव भक्त वामदेव के शरीर का स्पर्श करते ही उस राक्षस के सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गये और वह शुद्ध हो गया। शिवजी की महिमा को देखो, जो राक्षस वामदेव को भक्षण करने के लिए आया था, वही आनन्दित हो, उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। वामदेव के शरीर में जो भस्म लगी हुई थी, वह उस ब्रह्मराक्षस के भी लग गयी, इसीलिए ऐसा परिवर्तन हुआ।

हे नारद ! तब वह ब्रह्मराक्षस वामदेव के चरणों पर गिरकर हाथ जोड़, प्रणाम करता हुआ बोला—''हे प्रभो ! आपका स्पर्श करने से मुझे अत्यन्त सुख प्राप्त हुआ है। अब आप कृपा करके मेरा उद्धार कीजिये। हे स्वामिन् ! यदि आप मुझ पर अनुग्रह करेंगे तो मैं इस अधम शरीर से भी मुक्ति प्राप्त करूँगा।'' यह सुनकर वामदेव बोला—''हे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:40 PM

राक्षस ! तुम किस पाप के कारण ब्रह्मराक्षस हुए, वह वृत्तान्त मुझे सुनाओ। इस भयानक शरीर को पाकर भूख-प्यास से तुम अत्यन्त व्याकुल रहते हो, यह मैं देख रहा हूँ।

हे नारद ! वामदेव के यह वचन सुनकर वह ब्रह्मराक्षस दंडवत् करता हुआ बोला—"हे प्रभो ! मैं इस जन्म से पूर्व पच्चीसवें जन्म में यवन देश का राजा था। उस समय मेरा नाम दुर्जन था। मैं अत्यन्त पापी, अहंकारी, क्रोधी तथा बुद्धिहीन था। मैंने वेद-शास्त्रों का निरादर करते हुए गर्भवती स्त्रियों के साथ भोग किया। इसके अतिरिक्त जो स्त्रियाँ भोग करने योग्य थीं, उन्हें मैंने अपने बन्दीगृह में डाले रखा।

हे स्वामिन् ! मैं पर-स्त्रियों से भोग-विलास में मग्न रहा, परन्तु अपनी स्त्री के साथ कभी मैथुन नहीं किया। एक बार मेरे शत्रुओं ने मुझे दुर्बल, जानकर चढ़ाई कर दी और मुझे राज्य से च्युत कर दिया। बुद्धिमान् मंत्री भी घृणापूर्वक मेरा साथ छोड़कर चले गये। उसी शोक में मेरी मृत्यु भी हो गयी। जब यमराज के गण मुझे पकड़कर यमपुरी में ले गये, तब यम की आज्ञानुसार उन्होंने मुझे रुधिर के कुएँ में डाल दिया। तदुपरान्त मुझे पिशाच का जन्म प्राप्त हुआ। एक महाभयानक वन में, जहाँ कोई भी प्राणी न था, यमराज ने मुझे जन्म दिया। वहाँ मैं एक सौ वर्षों तथा भूख-प्यास से व्याकुल रहकर मृत्यु को प्राप्त हुआ। फिर मुझे तीसरे जन्म में सिंह, चौथे में अजगर, पाँचवें में बिच्छू, छठे में सूअर, सातवें में गर्ग, आठवें में श्वान, नवें में फेरू, दसवें में बैल, ग्यारहवें में हिरण, बारहवें में बन्दर, तेहरवें में भैंसा, चौदहवें में नेवला, पन्द्रहवें में कौआ, सोलहवें में खच्चर, सत्रहवें में गदहा, अठाहरवें में बिल्ली, उन्नीसवें में बकरी, बीसवें में मछली, इक्कीसवें में चूहा, बाईसवें में मेढ़क, तीसवें में घुग्घू तथा चौबीसवें जन्म में हाथी का शरीर प्राप्त हुआ।

हे ब्रह्मन् ! यह जो आप मेरा ब्रह्मराक्षस का शरीर देख रहे हैं, सो मेरा पच्चीसवाँ जन्म है। इस शरीर को पाकर मैं अत्यन्त दुःखी हूँ। मुझे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:40 PM

खाने के लिए कुछ नहीं मिलता और मैं अपने पापों का स्मरण करता हुआ, दिन-रात रोता रहता हूँ। न जाने मैंने ऐसा कौन-सा जप, तप, योग्य, तीर्थ अथवा व्रत किया था, जिससे मैं इस शुभ गति को प्राप्त हुआ और आपने यहाँ आकर मुझ सरीखे पापी को दर्शन दिये हैं? हे नाथ ! मैं समझता हूँ कि अब मेरे अच्छे दिन आ गए हैं। अस्तु, आप मेरे ऊपर विशेष अनुग्रह कर मेरा दुःख दूर कर दें।'' इतना कहकर वह ब्रह्मराक्षस हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

आठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! ब्रह्मराक्षस की बात सुनकर वामदेव ने उत्तर दिया—''हे राक्षस ! यह सब भस्म की महिमा है। मेरे शरीर में जो भस्म लगी हुई है, उसका स्पर्श तुमने पाया है, इसलिए तुम्हें यह ज्ञान प्राप्त हुआ है और तुम्हारे पूर्व जन्म के सभी पाप नष्ट हो गए हैं। जिस प्रकार शिवजी के इन चरित्रों का वर्णन नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार भस्म की महिमा भी अवर्णनीय है। इस सम्बन्ध में हम तुम्हें एक इतिहास सुनाते हैं।

हे ब्रह्मराक्षस ! प्राचीन समय में एक ब्राह्मण गौड़ देश में रहता था। वह महापापी, अधर्मी, चोर, मिथ्यावादी तथा पर स्त्री गामी था। एक दिन वह ब्राह्मण एक शूद्र के घर उसकी स्त्री से भोग करने के लिए गया। उस समय शूद्र ने उसे कुकर्म करते हुए देख लिया और क्रोध में भरकर मार डाला। तदुपरान्त उसने उसके शरीर को अपने घर से बाहर फेंक दिया। प्रातःकाल होने पर उसके मृत-शरीर में किसी प्रकार भस्म उड़कर लग गयी, जिससे उसके मस्तक, भुजा तथा हृदय पर रेखाएँ पड़ गयीं। अस्तु, जब उसे लेने के लिए यमराज के गण पहुँचे तो उसी समय शिवजी के गणों ने भी वहाँ पहुँचकर यमदूतों को भगा दिया और स्वयं उस पापी ब्राह्मण को विमान पर चढ़ाकर, शिवजी के पास ले चले। तब यमराज स्वयं शिवगणों के समीप पहुँचकर यह पूछने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लगे—"हे शिवगणो ! तुम इस महापापी ब्राह्मण को हमारे दूतों के हाथ से छुड़ाकर क्यों ले जा रहे हो? हमें अत्यन्त आश्चर्य है कि जिस ब्राह्मण ने चोरी तथा व्यभिचार जैसे कुकर्म किये और अन्त में ऐसी बुरी मृत्यु को प्राप्त हुआ, वह शिवलोक को किस प्रकार जा रहा है?" यमराज की बात सुनकर शिवगणों ने उत्तर दिया—"हे यमराज ! अब यह ब्राह्मण निष्पाप हो चुका है ; क्योंकि इसके मस्तक, भुजा तथा हृदय में भस्म लग गयी है। भस्म लगने के कारण ही हम इसे भगवान् सदाशिव की आज्ञानुसार शिवपुरी में ले जा रहे हैं।" इस प्रकार यमराज से कहकर शिवजी के गण उस पापी ब्राह्मण को शिवजी के समीप ले पहुँचे। वहाँ वह शिवजी की सेवा में संलग्न रहकर सुख पूर्वक निवास करने लगा।"

यह वृत्तान्त सुनाकर वामदेव ने कहा—"हे ब्रह्मराक्षस ! भस्म को शिवजी के वस्त्र तथा आभूषण के समान समझना चाहिए। सभी देवता तथा ऋषि-मुनि सदैव भस्म धारण किये रहते हैं। अस्तु, तुम्हारी पाप मुक्ति का कारण इस भस्म का प्रभाव ही है।"

इतनी कथा सुनाकर ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! भस्म के माहात्म्य को सुनकर जब ब्रह्मराक्षस के सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गये, तब उसने वामदेव के चरणों पर गिरते हुए, हाथ जोड़कर इस प्रकार कहा—"हे प्रभो ! मेरे धन्य भाग्य हैं—जो मुझे आज आपके दर्शन मिले। अब आप कृपापूर्वक मुझे इस जन्म से मुक्त कर दीजिये। एक बात आप और भी सुनिये, जो अब मुझे याद आयी है। वह बात यह है कि मैं जिस जन्म में राजा था, उस समय मैंने एक ब्राह्मण को थोड़ी-सी पृथ्वी दान में दी थी। अस्तु, मृत्यु के उपरान्त जब मैं यमलोक में पहुँचा, तब यमराज ने मुझसे यह कहा था कि यद्यपि तूने महान् पाप किये हैं, फिर भी तूने ब्राह्मण को पृथ्वी दान देकर जो एक पुण्य किया है, उसके प्रभाव से पच्चीसवें जन्म में तेरी भेंट एक योगी से होगी। उनकी कृपा से तेरे सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जावेंगे और तू मुक्ति प्राप्त करेगा। हे प्रभो ! मैं समझता हूँ कि यमराज ने जो समय बतलाया था,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:40 PM

वह अब आ पहुँचा है। हे नाथ ! मैंने पहले जन्म में महान् पाप करने के कारण पिछले अनेक जन्मों में अनेक प्रकार के दुःख उठाये हैं। आप जैसे परोपकारी मनुष्यों को कल्पवृक्ष के समान कहा जाता है, क्योंकि वे स्वयं तो निष्पाप होते ही हैं, दूसरों के पापों को भी अपनी दया से नष्ट करते रहते हैं।'' इतना कहकर वह ब्रह्मराक्षस अपना मस्तक नीचा किये हुए हाथ जोड़कर वामदेव के समीप खड़ा हो गया।

हे नारद ! उसकी बात सुनकर वामदेव ने अत्यन्त प्रसन्न हो, शिव-गिरिजा का स्मरण किया। तदुपरान्त उन्होंने अपनी झोली में से थोड़ी-सी भस्म निकालकर, उसके मस्तक पर त्रिपुण्ड लगाया तथा अन्य अंगों में भी भस्म लगायी। उस भस्म के लगते ही ब्रह्मराक्षस के सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गये और वह अत्यन्त पवित्र हो गया। उसका शरीर भी पहले जन्म के समान अत्यन्त सुन्दर एवं तेजस्वी हो गया। उसी समय आकाश में एक विमान आया। जिसमें बैठे हुए शिवगण उस राक्षस रूपी राजा को अपने साथ बैठाकर, शिवपुरी को ले गये। वहाँ पहुँचकर वह शिवगणों में सम्मिलित हो गया। हे नारद ! भस्म की ऐसी महान् महिमा है। जो मनुष्य भस्म के इस माहात्म्य को पढ़ता, सुनता अथवा दूसरों को सुनाता है, उसे दोनों लोकों में सुख प्राप्त होता है।''

❁ ❁ ❁

नौवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी बोले—''हे पिता ! आपने मुझे अत्यन्त श्रेष्ठ आख्यान सुनाया। अब मैं आपसे एक अन्य बात पूछता हूँ। जो मनुष्य वेद के जानने वाले तथा परम ज्ञानी हैं, उन्हीं को गुरु बनाने से और उन्हीं से उपदेश लेने पर भगवान् सदाशिव प्रसन्न होते हैं तथा सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि होती है अथवा अन्य लोगों से उपदेश लेकर भी सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

इतनी कथा सुनकर श्री सूत जी ने कहा—''हे शौनकादि ऋषियो !

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:40 PM

नारद जी के इस प्रश्न को सुनकर ब्रह्मा जी ने उनकी अत्यन्त प्रशंसा की तदुपरान्त उत्तर दिया—"हे पुत्र ! श्रद्धा ही सम्पूर्ण मनोरथों को पूरा करने वाली तथा सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने वाली है। श्रद्धालु होने पर नीच लोगों पर भी देवता कृपा किया करते हैं। बिना श्रद्धा के सभी कार्य निष्फल हो जाते हैं। जप, तप, यज्ञ, हवन, मंत्र, तंत्र, पूजन, स्मरण, ध्यान आदि सभी कार्य श्रद्धा के बिना व्यर्थ हैं। भगवान् सदाशिव ने स्वयं अपने श्रीमुख से कहा है कि सुख-दुःख और पाप-पुण्य की प्राप्ति भावना के ही कारण होती है। बिना श्रद्धा के किये हुए सभी कर्म निष्फल हो जाते हैं। इस विषय में एक आख्यान मैं तुम्हें सुनाता हूँ।

हे नारद ! प्राचीन समय में सिंहकेतु नामक एक राजा पांचाल देश में राज्य करता था। वह सम्पूर्ण विद्याओं से युक्त शिवजी का परम भक्त था। एक दिन वह श्रेष्ठ सैनिकों को साथ लेकर, शिकार खेलने के लिए वन में गया। उसके साथ ही एक शबर जाति का शंकर नामक मनुष्य भी था। वन में जाकर उसने एक शिवालय देखा, जिसमें एक टूटी-फूटी शिला अर्घे से बाहर पड़ी हुई थी। शंकर ने उस शिवलिंग को अत्यन्त प्रेमपूर्वक अपने हाथों से उठा लिया तथा राजा के समीप पहुँचकर उसे दिखाते हुए इस प्रकार बोला—"हे प्रभो ! मैं इस शिवलिंग का पूजन करना चाहता हूँ। अस्तु आप मुझे पूजन की विधि बता देने की कृपा करें। हे नाथ ! यद्यपि मैं नीच जाति का हूँ, परन्तु मैंने यह सुना है कि नीचों को भी भगवान् सदाशिव के पूजन एवं ध्यान का अधिकार प्राप्त है। इसलिए आप मेरी कामना को भी पूर्ण करने की कृपा करें।"

हे नारद ! यह सुनकर राजा ने उत्तर दिया—"हे निषाद ! मैं तुम्हें शिवपूजन की वह सरल रीति बताता हूँ, जिससे शिवजी शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं। शिवलिंग का पूजन करने वाले मनुष्य को सर्वप्रथम स्नान करके, पवित्र वस्त्र धारण करने चाहिएं। तदुपरान्त पवित्र स्थान पर बैठकर, भस्म धारण करके, शिवजी को स्नान कराना चाहिए।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

फिर चन्दन, अक्षत, पुष्प, बेलपत्र, धूप, दीप, नैवेद्य अर्घ्य, आदि से शिवजी का पूजन करने के उपरान्त उनके सम्मुख नृत्य, गायन, स्तुति, प्रणाम करके गाल बजाना चाहिए तथा विधिपूर्वक प्रदक्षिणा करनी चाहिए। शिवजी को चिता की भस्म अत्यन्त प्रिय है। अतः उसे शरीर में धारण करने से अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है। शिवजी के पूजन की यह अत्यन्त सरल तथा सुगम रीति है सो तुम भी इसी प्रकार आचरण करो।''

इतनी कथा सुनाकर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! यद्यपि राजा ने यह विधि हँसी में सुनायी थी, परन्तु शबर ने उसे अत्यन्त श्रद्धापूर्वक सुना। तत्पश्चात् वह अपने घर लौट आया और उस शिवलिङ्ग का पूजन करने लगा। उसे जो वस्तु अच्छी लगती, उसका भोग सबसे पहले शिवजी को लगाता, तदुपरान्त स्वयं खाता था। वह अपनी स्त्री सहित शिवजी का पूजन करता और मूर्ति के सम्मुख नृत्य-गायन करता था। इस प्रकार जब उसे कुछ समय व्यतीत हो गया, तो शिवजी ने प्रसन्न होकर उसकी परीक्षा लेने का निश्चय किया। एक दिन जब वह पूजन करने के लिए बैठा था, तो चिताभस्म, जो उसके समीप ही रखी थी, अचानक अदृश्य हो गयी। जब ढूँढने पर भी उसे वह भस्म कहीं दिखाई न दी तो उसने अत्यन्त आश्चर्य में भरकर अपनी स्त्री से कहा—''हे प्रिये ! मैंने भस्म को बहुत ढूँढा, परन्तु वह कहीं नहीं मिल रही है। इस प्रकार पूजा में विघ्न उपस्थित होने से मैं अत्यन्त दुःखी हूँ और यह अनुभव करता हूँ कि अब मेरा जीना भी व्यर्थ है।''

हे नारद ! अपने पति की ऐसी दशा देखकर उस स्त्री ने उत्तर दिया—''हे स्वामी ! आप अपने मन में इस प्रकार चिन्तित न हो। मैं उसी समय चिता जलाकर, अपने शरीर को भस्म किये देती हूँ। तब आप उस भस्म से अपना पूजन कीजिएगा।'' यह सुनकर शबर बोला—''हे प्रिये ! तुम्हारा शरीर मेरे विहार के लिए तथा चारों पदार्थों को प्राप्त करने के निमित्त है।'' यह सुनकर स्त्री बोली—''हे स्वामी ! मैंने सत्पुरुषों से यह सुना है कि यदि कोई मनुष्य पराये उपकार के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:40 PM

लिए अपना शरीर त्याग करे तो उसका जन्म सफल हो जाता है। अस्तु, शिवजी के कार्य में यदि मेरे शरीर का नाश हो तो इससे अधिक उत्तम और क्या होगा? सो आप मुझे ऐसा शुभ कर्म करने से न रोकें और अपने पूजन को विधिपूर्वक पूर्ण करें।''

हे नारद ! शबर ने अपनी स्त्री की इस बात को स्वीकार कर लिया। तब वह पवित्र हो, शिवजी का ध्यान धरती हुई, चिता में बैठ गयी और कुछ ही देर में जलकर भस्म हो गयी। तदुपरान्त शबर ने उसी भस्म को अपने शरीर में मलकर, शिवजी का पूजन किया। जब पूजन करते समय उसने प्रतिदिन के नियमानुसार अपने हाथ में प्रसाद लेकर पीठ की ओर बढ़ाया, तो एक अत्यन्त आश्चर्यजनक घटना घटी। वह घटना यह था कि शबर प्रतिदिन पूजन करके अपनी स्त्री को प्रसाद दिया करता था। अस्तु, नित्य के नियमानुसार उस दिन भी उसने अपने प्रसाद वाले हाथ को पीछे की ओर बढ़ाया ; क्योंकि उसे यह ध्यान नहीं रहा था कि उसकी पत्नी जलकर भस्म हो गयी है। परन्तु जिस समय उसका हाथ पीछे की ओर गया, उसी समय उसने देखा कि उसकी स्त्री, जो जलकर भस्म हो गयी थी, फिर से जीवित हो, पहले के समान ही वस्त्रादि से सुसज्जित होकर अपने मुख से शिव का नाम उच्चारण करती हुई उसके सामने चली आ रही है। जब वह स्त्री हाथ जोड़कर उसके सम्मुख आ बैठी, तब शबर ने आश्चर्यचकित होकर उससे पूछा—''अरी, तू तो भस्म हो गयी थी, तब जीवित किस प्रकार हो गयी?'' यह सुनकर पत्नी ने उत्तर दिया—''हे पति ! मैंने जिस समय अग्नि में प्रवेश किया तो मुझे कोई दुःख नहीं हुआ। ऐसा लगा, मानो मैं अमृत के कुण्ड में बैठ गयी होऊँ। तदुपरान्त जब मैं उसमें भस्म हो गयी तो किसी ने मुझे फिर जीवित कर दिया।''

इतनी कथा सुनाकर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! जिस समय वे दोनों यह वार्तालाप कर रहे थे, उसी समय शिवजी ने अत्यन्त प्रसन्न होकर, चार गणों सहित अपना विमान उनके पास भेज दिया। शिवजी के गणों ने वहाँ आकर शबर तथा शबरी को अत्यन्त स्नेहपूर्वक उस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विमान में बैठा लिया। ... ने उन दोनों को शिवलोक में ले गये, जहाँ वे शिव स्वरूप को प्राप्त हो, आनन्दपूर्वक ... करने लगे। हे नारद ! भस्म की ऐसी ही महिमा है। जो मनुष्य पवित्रतापूर्वक भस्म को धारण करता है तथा शिवजी के गणों का वर्णन करता है, उसे दोनों लोकों में आनन्द मिलता है।''

दसवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! मैंने आपसे यह सुना कि शिवजी को भस्म अत्यन्त प्रिय है। इससे बढ़कर श्रेष्ठ अन्य कोई भी वस्त्र तथा आभूषण नहीं है। अब मेरी इच्छा है कि आप मुझे भस्म का माहात्म्य सुनाने की कृपा करें तथा इस सम्बन्ध में कोई आख्यान भी कहें।''

यह सुनकर ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! भस्म चारों पदार्थों को देने वाला है। जो मनुष्य इसे अपने शरीर में लगाता है, उसके सम्पूर्ण दुःख तथा शोक नष्ट हो जाते हैं। भस्म शारीरिक तथा हाद्रिक बल को बढ़ाकर, मृत्यु के समय भी अत्यन्त आनन्द प्राप्त करता है। इसके सम्बन्ध में, मैं तुम्हें एक आख्यान और सुनाता हूँ।''

हे नारद ! दशारण्य नामक देश में वज्रबाहु नामक एक राजा राज्य करता था। उसके असंख्य स्त्रियाँ थीं। भाग्यवश जब बड़ी रानी के गर्भ ठहरा तो अन्य स्त्रियों ने ईर्ष्या के वशीभूत हो, उसे विष पिला दिया। यद्यपि उसे बहुत कष्ट उठाने पड़े, परन्तु उपचार होने पर वह ठीक हो गयी। उस विष ने भी उसके उदर में पहुँचकर कोई हानि नहीं पहुँचायी। नियत समय पर उसने एक अत्यन्त सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। यह देखकर उसकी सौतों को और अधिक ईर्ष्या होने लगी। परन्तु विष के प्रभाव से नवजात शिशु हर समय रोता रहता था तथा रानी भी पुत्र के जन्म के उपरान्त अत्यन्त व्याकुल होने लगी। उस राजा ने बड़े-बड़े

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:40 PM

श्रेष्ठ वैद्यों को बुलाकर अनेक उपचार कराये, परन्तु उससे कोई लाभ नहीं हुआ।

हे नारद ! कुछ समय तक इसी प्रकार क्रम चलता रहा। एक दिन राजा ने अत्यन्त दु:खी होकर अपने मन में यह विचार किया कि ये माता तथा पुत्र दोनों पूर्वजन्म के महापापी प्रतीत होते हैं, इसलिए उन्हें इस प्रकार दु:ख भोगना पड़ रहा है। किसी शुभ कर्म के कारण ही ये मेरे यहाँ आये हैं, परन्तु अन्य पाप कर्मों के कारण दु:ख भोग रहे हैं। इन्होंने अपने रोने-पीटने से मेरे आहार-विहार में भी विघ्न डाल रखा है। अस्तु, अब मुझे इन्हें अपने घर से निकाल देना चाहिए। यह विचारकर राजा ने अपने एक सेवक को यह आज्ञा दी कि तुम रानी को उसके पुत्र सहित रथ पर चढ़ाकर, वन में छोड़ आओ। तब वह राजा की आज्ञा से उन दोनों को वन में ले जाकर छोड़ आया। वहाँ रानी अपने पुत्र के साथ भूखी-प्यासी अत्यन्त व्याकुल हो, भ्रमण करने लगी। वन में उसे एक पगडंडी दिखाई दी। उसी पर चलती हुई वह एक अन्य नगर में जा पहुँची। उस नगर में पद्माकर नामक एक वैश्य राज्य करता था। उस राजा की दासी ने जब उस रानी को देखा तो वह अपने हृदय में अत्यन्त चिन्तित हुई। तदुपरान्त वह उस पर कृपा कर के राजा पद्माकर के पास ले पहुँची। पद्माकर ने जब रानी को दु:खी देखा और उसके मुख से सम्पूर्ण वृत्तान्त सुना, तो दया करके उसे अपने मुख्य मन्दिर में ठहरा दिया और माता के समान समझकर, उसकी अत्यन्त सेवा करने लगा।

हे नारद ! पद्माकर उसे श्रेष्ठ भोजन से सदैव प्रसन्न रखता था। उपचार के हेतु उसने श्रेष्ठ वैद्यों का भी प्रबन्ध कर दिया। परन्तु इतना सब होने पर भी उस रानी के बालक को कोई लाभ नहीं पहुँचा तथा कुछ दिन जीवित रहने के पश्चात् वह विष के प्रभाव से मृत्यु को प्राप्त हुआ। उस समय रानी ने अत्यन्त विलाप किया। यद्यपि अन्य स्त्रियों ने उसे बहुत कुछ सान्त्वना दी, परन्तु वह किसी भी प्रकार धैर्य धारण न कर सकी। अपने पुत्र की याद में वह अत्यन्त शोक करने लगी। उसी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

समय भाग्यवश ऋष्य नामक शिवजी का [illegible] वहाँ आ पहुँचा। उसने भी रानी को बहुत प्रकार से समझाते हुए धीरज बँधाया। तब रानी ने हाथ जोड़कर उससे यह कहा—"हे महानुभाव ! मैं पति तथा बन्धु-बान्धवों से रहित पुत्रहीना हूँ। अब आप जो उपदेश करें, उसके अनुसार आचरण करने के लिए मैं प्रस्तुत हूँ।"

हे नारद ! यह सुनकर ऋष्य ने उस मृतक लड़के के समीप पहुँचकर, जिसे कि रानी ने अब तक फेंकने नहीं दिया था, शिवजी के मंत्र का पाठ किया। तदुपरान्त उसने मृत बालक के मुख में भस्म डाल दी, जिससे वह तुरन्त ही जीवित हो, उठ बैठा। इस आश्चर्य को देखकर सब लोग चकित रह गये। उस समय पद्माकर, रानी तथा अन्य राजकुलीन व्यक्तियों को जो प्रसन्नता हुई, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। रानी ने अत्यन्त आनन्द में भर कर बालक को गोद में उठाया और उस योगी के चरणों पर अपना मस्तक रख दिया। उस समय ऋष्य ने अत्यन्त कृपा करके उस बालक के सम्पूर्ण शरीर में भस्म लगा दी। तदुपरान्त योगी ने प्रसन्न होकर, रानी को आशीर्वाद देते हुए कहा—"हे रानी ! तुम जरा-मृत्यु से रहित होकर प्रलयकाल तक जीवित रहोगी और यह बालक भी अपने पिता के राज्य को प्राप्त कर, अपनी रानियों सहित आनन्द का उपभोग करेगा। जब तक यह बालक विद्या पढ़कर बड़ा न हो जाये, तब तक तुम यहीं रहो।"

हे नारद ! इतना कहकर ऋष्य तो अपने स्थान को चले गये और रानी अपने पुत्र भद्रायुष सहित वहीं रहने लगी। पद्माकरने भद्रायुष के पढ़ने का उचित प्रबन्ध कर दिया, जिससे कुछ ही समय में वह सम्पूर्ण विद्याओं में पारंगत हो गया। जब वह बालक सोलह वर्ष का हुआ, तो उन्हीं योगी ने एक दिन पुनः आकर, उसे शिवजी के पूजन की विधि बतायी तथा सहस्त्राक्षर मन्त्र का उपदेश किया।

फिर उसके सम्पूर्ण शरीर में भस्म लगा दी जिससे भद्रायुष को बारह सहस्त्र हाथियों का बल प्राप्त हो गया। फिर वे उसे एक खड्ग तथा एक शंख देकर विदा हो गये। तत्पश्चात् भद्रायुष अपने पिता की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

राजधानी में [illegible] और वहाँ के राज्य सिंहासन पर अपना अधिकार कर लिया। फिर वह विवाह आदि करने के उपरान्त, आनन्दपूर्वक प्रजा पालन एवं विहार करने लगा। वह पद्माकर को अपने भाई के समान समझकर, अत्यन्त आनन्द प्रदान करता रहा। भद्रायुष शिवजी का ऐसा परम भक्त था कि उसकी प्रशंसा तीनों लोकों में फैल गयी। हे नारद ! भस्म का ऐसा माहात्म्य और प्रभाव है। जो व्यक्ति इस चरित्र का श्रवण अथवा पाठ करता है, उसे भी अत्यन्त आनन्द मिलता है।"

ग्यारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे पुत्र ! अब मैं रुद्राक्ष का माहात्म्य कहता हूँ। रुद्राक्ष शिवजी को अत्यन्त प्रिय है। उसका दर्शन करने मात्र से ही सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं तथा पूजन करने से दोनों लोकों में आनन्द प्राप्त होता है। शिवजी की तपस्या से उनके आँसू वृक्ष बन गये। वे वृक्ष 'रुद्राक्ष' के नाम से प्रसिद्ध हुए। शिवजी की कृपा से वे सभी शिवभक्तों को प्राप्त होने लगे तथा धीरे-धीरे प्रत्येक देश में रुद्राक्ष के वृक्ष की उत्पत्ति होने लगी। अयोध्या, मथुरा, काशी, गौड़देश तथा सह्य गिरि में रुद्राक्ष अधिकता से उत्पन्न होने लगे। रुद्राक्ष पापों को नष्ट करने वाला तथा दर्शन मात्र से ही अप्रेमय सुख प्रदान करने वाला है।

हे नारद ! रुद्राक्ष का रंग चार प्रकार का होता है—१. श्वेत, २. रक्त, ३. पीत, ४ श्याम। चारों वर्णों को उन्हें क्रमानुसार धारण करना चाहिए अर्थात् ब्राह्मण को श्वेत, क्षत्रिय को रक्त, वैश्य को पीत एवं शूद्र को श्याम वर्ण का रुद्राक्ष धारण करना चाहिए। सब देवता, ऋषि-मुनियों एवं मनुष्य आदि को मद्य-माँस का त्याग करने के उपरान्त ही रुद्राक्ष धारण करने की आज्ञा दी गयी है। रुद्राक्ष धारण करने वालों को अप्रमेय सुख की प्राप्ति होती है। रुद्राक्ष असंख्य दुःखों को दूर करने वाला है। रुद्राक्ष की माला को सब मालाओं से श्रेष्ठ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

समझना चाहिए। इसे धारण करने से मनुष्य को काल का भय भी नहीं रहता।

हे नारद ! रुद्राक्ष सभी देवताओं को अत्यन्त प्रिय है। विशेष कर पाँचों देवता इससे अधिक स्नेह करते हैं। शिवजी इसको सबसे अधिक प्रिय मानते हैं।

हे नारद ! जो रुद्राक्ष आँवले के फल के समान बड़ा हो, सर्वोत्तम है। जो बेर के फल के समान हो, वह मध्यम है और जो उससे भी छोटा हो, वह अधम गिना जाता है। आँवले के समान रुद्राक्ष सभी कष्टों को दूर करने वाला तथा सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करने वाला है ; परन्तु कोई भी रुद्राक्ष दुःखदायी नहीं होता। जो रुद्राक्ष घुँघची के समान छोटा हो, उसे सम्पूर्ण मनोरथों को प्रदान करने वाला समझना चाहिए। छोटे रुद्राक्ष की महिमा तथा उसके धारण करने का फल अधिक होता है। जो रुद्राक्ष, दृढ़, चिकना काँटों से युक्त तथा मोटा होता है, वह सम्पूर्ण मनोरथों को प्रदान करता है तथा भक्तों के सम्पूर्ण पापों को नष्ट कर देता है। निम्नलिखित प्रकार के रुद्राक्ष को धारण नहीं करना चाहिए—जो कीड़ों द्वारा खाये गये हों, जो काँटों से रहित हों, जो कटे हों, जो छिद्र करने के समय फट गये हो, जो रुद्राक्ष का स्वरूप न रखते हों तथा जो कृत्रिम हों अर्थात् वास्तविक न हों।

हे नारद ! जिस रुद्राक्ष को शिवभक्त स्वयं किसी वृक्ष से लाता है, वह सर्वोत्तम है तथा जो किसी अन्य मनुष्य के द्वारा लाया जाता है, वह मध्यम है। मैंने जिस रुद्राक्ष को सर्वोत्तम कहा है, उसे धारण करने वाले मनुष्य को भगवान् सदाशिव का रूप ही समझना चाहिए। जो लोग जानते-बूझते हुए भी मंत्र के बिना रुद्राक्ष धारण करते हैं, वे नरकगामी होते हैं और किसी भी स्थान पर सुख प्राप्त नहीं करते। परन्तु जो मनुष्य अज्ञानी होते हैं, उन्हें मंत्र के बिना रुद्राक्ष धारण कर लेने पर भी कोई पाप नहीं लगता क्योंकि भगवान् सदाशिव ने अपने मुख से स्वयं यह कहा कि जो लोग मंत्र को जानने वाले न हों, वे यदि बिना मंत्र पढ़े ही रुद्राक्ष को धारण करें, तो उन्हें कोई पाप नहीं होता।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे नारद ! रुद्राक्ष धारण करने वाले को भूत-प्रेत आदि कुछ भी कष्ट नहीं पहुँचा सकते। वे तो रुद्राक्षधारी को देखते ही भाग जाते हैं। जो मनुष्य रुद्राक्ष को धारण करता है, उसे देखकर शिवजी तथा अन्य सब देवता अत्यन्त प्रसन्न होते हैं यदि कोई मनुष्य अज्ञानी, दुराचारी अथवा कुकर्मी भी हो, परन्तु रुद्राक्ष को प्रेमपूर्वक धारण करता हो, तो वह समस्त पापों से छूटकर परम पद को प्राप्त करता है। जो मनुष्य रुद्राक्ष की माला पहनकर, हाथ पर मंत्र को जपता है, उसे दस गुना अधिक फल मिलता है। जो मनुष्य रुद्राक्ष को अपने शरीर पर धारण करता है, उसे न तो अकाल मृत्यु का भय रहता है और न कोई कष्ट ही प्राप्त हो पाता है।

हे नारद ! रुद्राक्ष को सभी वर्ण तथा सभी आश्रमों के मनुष्यों को धारण करना चाहिए। शूद्र को भी रुद्राक्ष धारण करने का अधिकार है। रुद्राक्ष धारण करने के हेतु श्रद्धा एवं विश्वास को भी आवश्यक कहा गया है। जो मनुष्य दिन के समय रुद्राक्ष धारण करता है, उसकी पिछली रात्रि के सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं और जो रात्रि के समय रुद्राक्ष धारण करता है, उसके दिन के सभी पाप नष्ट हो जाते है। अतः उचित तो यह है कि रुद्राक्ष हर समय धारण किये रहना चाहिए। जो लोग भस्म का त्रिपुण्ड लगाते हैं, रुद्राक्ष धारण करते हैं तथा जटा रखते हैं, वे नरकगामी नहीं होते और संसार में उन्हें कुछ भी पाप नहीं लगता। जिनके ललाट पर त्रिपुण्ड, मस्तक पर रुद्राक्ष और मुख में पंचाक्षर मंत्र है, वे सभी लोगों से पूजित होने के योग्य हैं।

हे नारद ! रुद्राक्ष अनेक प्रकार के होते हैं, उनका मैं विस्तारपूर्वक वर्णन करता हूँ। एक मुखी रुद्राक्ष भगवान् सदाशिव का स्वरूप है, उसके दर्शन मात्र से ही ब्रह्म हत्या आदि पाप नष्ट हो जाते हैं तथा भुक्ति-मुक्ति की प्राप्ति होती है। जिसने ऐसे रुद्राक्ष को पा लिये, उसे परम सौभाग्यशाली समझना चाहिए। ऐसे रुद्राक्ष को धारण करने वाला मनुष्य हर समय पवित्र तथा पापों से रहित रहता है। द्विमुखी रुद्राक्ष धारण करने से गोवध का पाप नष्ट हो जाता है। उसको धारण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection, Jammu. Digitized by eGangotri

12:41 PM

करने वालों के सभी मनोरथ पूरे होते हैं और उसके घर में सुख की सभी सामग्रियाँ उपस्थित रहती हैं। त्रिमुखी रुद्राक्ष को धारण करने से धन तथा आयु की वृद्धि होती है एवं स्त्री हत्या का पाप नष्ट हो जाता है। उसे धारण करने वाले को तीसरे दिन आने वाला ज्वर कभी नहीं सताता।

हे नारद ! चतुर्मुखी रुद्राक्ष मेरा स्वरूप है। ऐसे रुद्राक्ष का दर्शन एवं स्पर्श करने से चारों पदार्थ सदैव प्राप्त होते रहते हैं। पंचमुखी रुद्राक्ष को शिवजी का स्वरूप समझना चाहिए। उसे धारण करने से भुक्ति-मुक्ति की प्राप्ति होती है तथा भक्ष्याभक्ष के दोष एवं स्त्री-गमन आदि के पाप नष्ट होते हैं। जो लोग पंचमुखी रुद्राक्ष को धारण करते हैं, उन्हें दुःख नहीं रहता। षड्मुखी रुद्राक्ष को स्कन्द के समान जानना चाहिए। वह ब्रह्महत्या आदि पापों को नष्ट कर, सम्पूर्ण सुखों को प्रदान करने वाला है और सदैव दाहिनी भुजा में धारण करने योग्य है। सप्तमुखी रुद्राक्ष को महासेन तथा आनन्द कह कर पुकारते हैं। उसे धारण करने पर दरिद्री भी राज्यपद को प्राप्त होता है और उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। अष्टमुखी रुद्राक्ष को बटुक भैरव का रूप जानना चाहिए। उसे धारण करने से आयु की वृद्धि होती है तथा शिवजी की कृपा से अन्त में मोक्ष प्राप्त होती है। नवमुखी रूद्राक्ष को दुर्गा का स्वरूप समझना चाहिए। वह दायें हाथ में धारण करने योग्य है। उसे धारण करने वाला मनुष्य मेरे समान सब का स्वामी होकर, पापों से रहित हो जाता है।

हे नारद ! दशमुखी रुद्राक्ष को विष्णु जी का स्वरूप समझकर, धारण करना चाहिए। वह युद्ध क्षेत्र में विजय प्राप्त कराने वाला तथा सम्पूर्ण कार्यों को सिद्ध करने वाला है। एकादश मुखी रुद्राक्ष को रुद्र का स्वरूप समझकर धारण करना चाहिए। वह सर्वत्र विजय प्राप्त कराने वाला है। द्वादशमुखी रुद्राक्ष सूर्य का स्वरूप है। उसे शिखा में धारण करने से सम्पूर्ण रोग नष्ट हो जाते हैं तथा दोनों लोकों में सुख प्राप्त होता है। त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष को विश्वेदेवता का स्वरूप कहा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:41 PM

गया है। उसे धारण करने पर समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष को ललाट पर बाँधने से कभी कोई नष्ट नहीं होता तथा सम्पूर्ण पाप अति शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

हे नारद ! मनुष्य को उचित है कि वह इन सब प्रकार के रुद्राक्षों की माला बनाकर प्रेमपूर्वक धारण करें। सौ दानों की माला मोक्ष प्रदान करने वाली होती है। एक सौ चालीस दानों की माला आरोग्य एवं बल प्रदान करती है। बत्तीस दानों की माला धन देती है। एक सौ आठ दानों की माला सम्पूर्ण कार्यों को सिद्ध करने वाली है।

हे नारद ! पुत्र जीवा वृक्ष की काठ की माला पुत्र देने वाली होती है, मणिमाला धन की वृद्धि करती है, मोतियों की माला सौभाग्य प्रदान करती है, कुश माला पापों को नष्ट करती है, सोने तथा चाँदी के दानों की माला सभी मनोरथों को पूरा करती है, स्फटिक की माला श्रेष्ठ गति देती है, कमल की माला आरोग्य तथा धैर्य प्रदान करती है, परन्तु रुद्राक्ष की माला धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष इन चारों फलों को देने वाली है। अस्तु, रुद्राक्ष के समान अन्य कोई माला नहीं है। हे नारद ! मैंने तुम्हें संक्षेप में रुद्राक्ष का यह माहात्म्य सुनाया, अब तुम क्या सुनना चाहते हो?''

बारहवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनाकर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! अब आप मुझे रुद्राक्ष धारण करने की विधि बताने की कृपा करें।'' ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! ग्यारह सौ रुद्राक्ष एक ही विधि से धारण करने के लिए कहा गया है। कोई तत्त्वज्ञानी एक सहस्त्र रुद्राक्ष तथा कोई चार सौ रुद्राक्ष धारण करने के लिए भी कहते हैं। मैं तुमसे सर्वप्रथम पहले प्रकार का वर्णन करता हूँ। इस वर्णन को सुनने से ही सब प्रकार के कष्ट दूर हो जाते हैं। रुद्राक्ष धारण करने से बड़े-बड़े पाप भी नष्ट हो जाते हैं। यह बात मैं पहले बता चुका हूँ। ग्यारह सौ रुद्राक्ष धारण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:41 PM

करना अत्यन्त आनन्ददायक होता है। अब मैं तुम्हें यह बताता हूँ कि किन-किन अंगों में कितने-कितने रुद्राक्ष धारण करने चाहिएँ।

हे नारद ! पाँच सौ पचास रुद्राक्षों का मुकुट बनाकर धारण करें, तीन सौ रुद्राक्षों का यज्ञोपवीत बनावें और उसकी तीन लड़ियाँ बनाकर पहने। एक सौ एक रुद्राक्ष कंठ में तथा तीन रुद्राक्ष शिखा में धारण करें। तीन रुद्राक्ष यज्ञोपवीत में, पाँच रुद्राक्ष दाहिने कान में तथा छः रुद्राक्ष कान में पहनने चाहिएँ। इसी प्रकार हाथों में भी रुद्राक्षों को धारण करें। जो रुद्राक्ष शेष बचें, उन्हें कमर में बाँध लें। यह विधि ग्यारह सौ रुद्राक्ष धारण करने की है।

हे नारद ! अब एक सहस्त्र रुद्राक्ष, धारण करने की विधि सुनो। तीन सौ रुद्राक्षों का मुकुट बनावें, पैंतीस रुद्राक्षों को माला बनाकर कंठ में पहनें, पाँच सौ रुद्राक्ष कन्धे में पहनें। एक सौ आठ रुद्राक्षों का उपवीत बनावें, दोनों भुजाओं में बत्तीस रुद्राक्ष धारण करें। दोनों हाथों में सोलह रुद्राक्ष धारण करें तथा शेष रुद्राक्षों को कमर में धारण करें। इस प्रकार जो सहस्त्र रुद्राक्षों को धारण करता है, उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं तथा उसे दोनों लोकों में अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है। एक सहस्त्र रुद्राक्ष धारण करने वाला अपने कुल सहित परमपद को प्राप्त होता है। उसे देवता भी प्रणाम करते हैं।

हे नारद ! इसके अतिरिक्त अन्य प्रकारों से भी रुद्राक्ष धारण करने की आज्ञा कही गयी है। जो मनुष्य मस्तक में एक, ललाट में चालीस, छाती पर एक सौ आठ, कंठ में बत्तीस, दोनों कानों में छः-छः, दोनों भुजाओं में बत्तीस तथा दोनों हाथों में चौबीस इस प्रकार दो सौ उन्चास रुद्राक्ष धारण करता है, उसके ऊपर शिवजी सदैव प्रसन्न रहते हैं और उसे कभी भी कष्ट नहीं होता। जो मनुष्य मस्तक पर एक रुद्राक्ष धारण करके सिर से स्नान करता है, उसे गंगा-स्नान का फल प्राप्त होता है। जो मनुष्य बिना जल के भी रुद्राक्ष का पूजन करता है, वह शिव-गिरिजा के पूजन का फल प्राप्त होता है। जो मनुष्य प्रतिदिन रुद्राक्ष को धारण किये हुए मृत्यु को प्राप्त होता है, वह शिवपद को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्राप्त करता है। रुद्राक्ष की महिमा के सम्बन्ध में मैं तुम्हें एक आख्यान सुनाता हूँ, उसे ध्यानपूर्वक सुनो।

हे नारद ! गंगा के पश्चिम दिशा में देवीदन्त नामक एक क्षत्रिय राजा राज्य करता था। उसने किसी से भी शिव-पूजन का उपदेश नहीं लिया था, तो भी वह एक झाड़ी के वृक्ष के नीचे कुएँ के तट पर स्थित, किसी देवता का पूजन किया करता था। उसके नगर का एक तेली मरकर बैताल हो गया था। एक दिन उस बैताल ने झाड़ी के समीप आकर राजा को अपना स्वरूप दिखाया। राजा उसे अपनी प्रजा का ही आदमी पहचान कर तथा मरे हुए को जीवित देखकर, अत्यन्त आश्चर्यचकित हो, यह विचार करने लगा कि अरे, यह मरा हुआ मनुष्य किस प्रकार जीवित हो गया है। अस्तु, उसने बैताल से पूछा— "तुम तो मर गये थे, फिर यहाँ कैसे जा पहुँचे हो?" बैताल ने उत्तर दिया—"हे राजन् ! अब मैं बैताल होकर एक यमदूत का गण बना हुआ हूँ। मैं यहाँ जिस कार्य से आया हूँ, उसे तुमसे कहता हूँ। कुछ देर में ही यहाँ एक वैश्य आयेगा, वह बैल के मारने से मर जाएगा। वह वैश्य महापापी है। अस्तु, उसकी मृत्यु होते ही, मैं उसे बाँधकर यम के समीप ले जाऊँगा।" यह सुनकर राजा ने कहा—"तुम मेरे समीप आओ, मैं तुमसे कुछ और बातें करना चाहता हूँ।" बैताल ने यह बात स्वीकार कर ली और वह राजा के समीप जा पहुँचा।

हे नारद ! अभी राजा बैताल से कुछ और बात नहीं कह पाया था कि तब तक वहाँ एक वैश्य आ पहुँचा। उसके साथ एक बैल भी था। वैश्य ने बैल को कुएँ के समीप बाँधकर स्वयं स्नान करने की इच्छा की, परन्तु जिस समय वह पगड़ी बाँधे हुए बैल के समीप पहुँचा, उसी समय बैल ने उस वैश्य को अपने सींगों से घायल करके मार डाला। वैश्य के मरते ही बैताल ने उसे बाँध कर यमराज के पास ले जाने की इच्छा की। परन्तु उसी समय शिवजी के गण वहाँ आ पहुँचे और बैताल से यह कहने—"हे बैताल ! तुम इस वैश्य को छोड़ दो।" शिवगणों की बात सुनकर बैताल ने उत्तर दिया—"हे शिवगणो !

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इसने अपने जीवन में कोई भी एक शुभ-कर्म नहीं किया है। अस्तु, मैं इसे बाँधकर यमराज के पास ले जाता हूँ।''

यह सुनकर शिवगणों ने उत्तर दिया—''हे बैताल ! इस वैश्य के मस्तक में रुद्राक्ष बँधा हुआ है। इसलिए इसके सब दोष भस्म हो गये हैं। यह पापी नहीं रहा। तुम इसे शीघ्र ही छोड़ दो।'' इतने पर भी जब बैताल ने उसे नहीं छोड़ा। तब शिवजी के गणों ने उसे त्रिशूल से मारकर घायल कर दिया और वैश्य को उसके हाथ से छुड़ा, विमान पर चढ़ाकर शिवपुरी में ले गये। वहाँ जाकर शिवजी की आज्ञा से वह शिवजी का गण हो गया। उधर बैताल ने राजा से सब वृत्तान्त कहकर, अपने मन में अत्यन्त दुःख किया। तदुपरान्त वह यमराज के पास चला गया। इस चरित्र को देखकर राजा को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। फिर अब वह स्वयं रुद्राक्ष लेने के लिए बाजार में गया।''

तेरहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं तुमसे एक और इतिहास कहता हूँ, जिसमें रुद्राक्ष की महिमा प्रकट है। इस आख्यान को सुनने से शिवजी के चरणों में अधिक प्रीति उत्पन्न होती है। प्राचीन काल में कश्मीर में मद्रसेन नामक राजा राज्य करता था। उसका सुधर्म नामक पुत्र अत्यन्त बलवान्, बुद्धिमान् तथा शिवजी का परम भक्त था। राजा के मंत्री के पुत्र का नाम तारक था। वह भी अत्यन्त शीलवान् तथा विद्वान् था। राजा के पुत्र तथा मंत्री के पुत्र में अत्यन्त मित्रता थी। वे दोनों परम सुन्दर थे तथा साथ-ही-साथ विद्याध्ययन करते थे। उन्होंने बिना उपदेश के ही रुद्राक्ष की महिमा को जान लिया था।

हे नारद ! एक दिन पाराशर मुनि राजा के यहाँ जा पहुँचे। राजा ने उन्हें सर्वज्ञ जानकर अत्यन्त आदर-सत्कार किया तथा ऐसी सेवा की, जिससे वे अत्यन्त प्रसन्न हुए। तदुपरान्त राजा ने हाथ जोड़, दंडवत् करते हुए मुनि से यह प्रार्थना की—''हे प्रभो ! मेरा पुत्र तथा मंत्री का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पुत्र दोनों ही रुद्राक्ष को इस प्रकार धारण करते हैं कि एक पल के लिए भी उन्हें नहीं त्यागते। यद्यपि मैंने उन्हें बहुत उपदेश दिया है, परन्तु वे किसी प्रकार नहीं मानते। वे बिना किसी से विधि पूछे हुए ही अपनी बुद्धि के अनुसार रुद्राक्ष धारण करते हैं। अस्तु, आप मुझे यह बताने की कृपा कीजिये कि इसका वास्तविक कारण क्या है?''

हे नारद ! राजा की यह प्रार्थना सुनकर पाराशर ने कहा—''हे राजन् ! तुम अपने पुत्र तथा मंत्री के पुत्र के पूर्व जन्म का वृत्तान्त सुनो। पुरातन समय में महानन्दा नामक एक वेश्या नन्दिग्राम में रहती थी। वह परमसुन्दरी तथा अत्यन्त धनवान् थी। उसने एक बन्दर तथा एक कुत्ते को पालकर, उन्हें नृत्य करना सिखाया था। वह अन्य बहुत-सी स्त्रियों सहित शिवजी की स्तुति गाती तथा अपने बन्दर एवं कुत्ते को रुद्राक्ष पहनाकर नाचती थी। वे दोनों इस प्रकार नाचते थे कि उनका नृत्य दर्शकों को अत्यन्त प्रिय लगता था। इसी प्रकार वह वेश्या नामक शिवभक्ति में संलग्न रहती थी। संयोगवश एक दिन उस वेश्या के घर में आग लग गयी। वेश्या ने उन दोनों को शीघ्रतापूर्वक बाहर निकाल लिया, परन्तु उस दिन से वे दोनों फिर घर में लौट कर नहीं गये तथा दुःखी होकर वन में भ्रमण करते रहे। समय आने पर रुद्राक्ष धारण किये हुए ही उनकी मृत्यु हो गयी, जिसके कारण उन्हें शिवलोक प्राप्त हुआ।

हे राजन् ! वही बन्दर तुम्हारे घर में पुत्र बनकर उत्पन्न हुआ है और उसी कुत्ते ने मंत्री के घर में पुत्र बनकर जन्म लिया है। ये दोनों पूर्व जन्म के मित्र हैं तथा उसी रुद्राक्ष की महिमा का स्मरण कर, इस जन्म में भी रुद्राक्ष धारण करते हैं। ये दोनों रुद्राक्ष धारण करने तथा शिव पूजन करने के कारण पुनः शिवलोक को प्राप्त होंगे।'' यह वृत्तान्त सुनकर राजा ने पाराशर मुनि से कहा—''हे प्रभो ! आप कृपा करके मेरे पुत्र के भविष्य का हाल भी बताने की कृपा करें।'' तब पाराशर जी ने उस राजपुत्र को अपने निकट बुलाकर सिर से पाँव तक देखने के उपरान्त इस प्रकार कहा—''हे राजन् ! इस बालक की अवस्था केवल बारह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:41 PM

वर्ष की है। आज से सातवें दिन यह अवश्य मर जायेगा। परन्तु हम तुम्हें एक उपाय बताते हैं, उसे करने पर इसका जीवन बच सकता है। भगवान् सदाशिव काल के भी काल हैं। मृत्यु शिवजी से हर समय भयभीत बनी रहती है। यदि शिवजी कृपा करें तो तुम्हारा पुत्र मृत्यु के मुख से बच सकता है। इसलिए तुम्हें सर्वप्रथम यह उचित है कि तुम इसके द्वारा शिवजी का पूजन कराओ तथा उन्हें अनेक प्रकार से प्रसन्न करने का उपाय करो।''

हे राजन् ! आयु बढ़ाने की अनेक युक्तियाँ हैं, परन्तु उन सब में सरल शिवजी का पूजन है। मृत्यु से रक्षा करने में रुद्राध्याय अत्यन्त प्रसिद्ध है। अनेक प्रकार से शिवजी का पूजन करे तथा निश्चयपूर्वक शिवबाना धारण करे तो मनुष्य के सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं और वह बहुत समय तक जीवित रहता है। ऐसे व्यक्ति पर शिवजी सदैव प्रसन्न रहते हैं। तुम जितनी बार शतरुद्री का अभिषेक कराओगे, उतने ही वर्षों तक तुम्हारा पुत्र जीवित बना रहेगा। अस्तु, तुम्हें यह उचित है कि तुम इस सहस्त्र शतरूद्री का पाठ कराके, अपने पुत्र को स्नान कराओ। इस समय से तुम्हारा पुत्र दस सहस्त्र वर्षों तक जीवित रहेगा तथा इतने ही समय तक निर्भय हो, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता हुआ, सुखपूर्वक राज्य करेगा।''

हे नारद ! पाराशर मुनि के ऐसे वचन सुनकर राजा ने बहुत-से ब्राह्मणों को बुलाकर सात दिन में दस सहस्त्र शतरुद्री का जप कराना आरम्भ कर दिया तथा स्वयं भी उस जप में संलग्न रहा। उसी जल से उसने अपने पुत्र को स्नान कराया। सातवाँ दिन आने पर वह बालक कुछ देर के लिए मूर्च्छित हो गया, परन्तु थोड़ी देर बाद चैतन्यावस्था को प्राप्त कर उठ बैठा। उस समय पाराशर मुनि ने उससे पूछा—''हे राजनपुत्र ! मूर्च्छावस्था में तुम्हारी क्या दशा हुई?'' तब राजपुत्र ने यह उत्तर दिया—''हे मुनिराज ! मैंने यह देखा कि एक भयानक रूपधारी मनुष्य हाथ में डंडा लेकर मेरा वध करने के लिए आ रहा है, परन्तु उसी समय एक महावीर ने आकर उस मनुष्य को अपने वरुणपाश से बाँध लिया तथा वे उसे मारते-पीटते हुए एक ओर चले गये।'' यह सुनकर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:41 PM

पाराशर मुनि ने अत्यन्त प्रसन्न हो उस बालक को अनेक आशीर्वाद दिये। राजा ने भी उस समय आनन्दित होकर पाराशर मुनि तथा सभी ब्राह्मणों की बहुत सेवा की।

हे नारद ! जिस समय राजा पाराशर मुनि की प्रशंसा कर रहा था, उसी समय तुम भी वहाँ जा पहुँचे। तब राजा ने तुम्हारा अत्यन्त सम्मान करते हुए यह कहा—''हे प्रभो ! यदि आपने कोई आश्चर्य की बात देखी हो तो मुझे सुनाने की कृपा करें।'' तब तुमने उत्तर दिया—''हे राजन् ! हमने उसी समय एक बहुत बड़ा आश्चर्य देखा है। वह आश्चर्य यह है कि तुम्हारे पुत्र को मारने के लिए मृत्यु आयी थी, परन्तु शिवजी ने उसकी रक्षा करने के लिए वीरभद्र को भेजा और उन्हें यह आज्ञा दी कि वे तुम्हारे पुत्र पर मृत्यु का कोई वश न चलने दें। तब वीरभद्र मृत्यु को पकड़कर कैलाश पर्वत की ओर ले गये और तुम्हारे पुत्र को अमृत-पान करने का फल प्राप्त हुआ। अब तुम्हारा पुत्र दस सहस्त्रों वर्षों तक जीवित रहकर निष्कंटक राज्य करेगा। मंत्री का पुत्र भी तुम्हारे पुत्र का सेवक बनकर, बहुत सुख भोगेगा। वे दोनों शिवजी के बड़े भक्त होंगे तथा अन्त में शिवलोक को प्राप्त होकर, शिवजी के गण बन जायेंगे।'' इतना कहकर तुम अपने स्थान को लौट आये। जो लोग इस कथा को कहते अथवा सुनते हैं, उन्हें दोनों लोकों में सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।''

चौदहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! मैंने मुक्ति प्राप्त करने के लिए तुम्हें यह युक्ति बतायी है। अब एक अन्य उपाय सुनो, जिसके अनुसार आचरण करने पर शिवजी की भक्ति दृढ़ होती है। जिस उपाय के करने से पाराशर के पुत्र वेदव्यास सिद्ध हुए, मैं उसका वर्णन करता हूँ। शिवजी का कीर्तन तथा शिवजी के गुण चरित्रों का मनन, शिवजी को प्राप्त कराने में अत्यन्त सहायक होता है। सर्वप्रथम गुरु के मुख से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:41 PM

शिवजी का यश सुने तथा स्वयं उनका पूजन तथा मनन करे। ऐसा करने से शिवजी का सामीप्य लाभ होता है और सभी व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं। शिवजी के यश के सम्बन्ध में जो गीत हों, वे चाहे वेद के पद हों अथवा देवताओं द्वारा बनाये गये हों अथवा मनुष्य के बनाये हुए हों, सभी प्रकार के पदों के गायन से दुःख दूर होकर, आनन्द की प्राप्ति होती है। इस प्रकार शिवजी का श्रवण करने तथा वर्णन करने के उपरान्त उनका युक्तिपूर्वक शुद्ध हृदय से मनन करना चाहिए।

हे नारद ! सत्संगति में बैठने से शिवजी के गुण चरित्रों का फल प्राप्त होता है, तदुपरान्त कीर्तन और अन्त में मनन की प्राप्ति समझनी चाहिए। अस्तु, शिवजी की प्रसन्नता के हेतु ही सब कार्य करने चाहिएँ। यह युक्ति से शिवजी का पद प्राप्त करना अत्यन्त सुगम होता है। वेद तथा पुराण भी मनन की महिमा का वर्णन करते हैं। जिस मनुष्य पर भगवान् सदाशिव प्रसन्न होते हैं, उसी को यह श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त भगवान् सदाशिव को प्राप्त करने का कोई उपाय नहीं है। अब मैं व्यास जी की कथा कहता हूँ, उसे तुम ध्यानपूर्वक सुनो।

हे नारद ! व्यास जी ने वेद को चार भागों में बाँटकर दिन-रात परिश्रम करके अठारह पुराणों का निर्माण किया, परन्तु, तब भी उनके हृदय को सन्तोष नहीं हुआ। इसलिए वे मन को शुद्ध करने के हेतु, ब्रह्मनदी के तट पर बैठकर, तपस्या करने लगे। उन्होंने शिवजी का ध्यान धरकर, सम्पूर्ण इन्द्रियों को जीत लिया। जब शिवजी ने व्यास जी को ऐसा कठिन तप करते हुए देखा, जो उन्होंने प्रसन्न होकर सनत्कुमार को व्यास जी के निकट जाने की आज्ञा दी। उस समय सनत्कुमार ने व्यास जी के पास पहुँच कर उन्हें अपना दर्शन दिया। व्यास जी ने सनत्कुमार का पूजन करते हुए, उनकी बहुत प्रकार से स्तुति की। उस समय मेरे पुत्र सनत्कुमार ने अत्यन्त प्रसन्न होकर व्यास जी से इस प्रकार कहा—"हे व्यास जी ! आप शुकदेव जी के पिता तथ ऋषि-मुनियों के स्वामी हैं। आपने जब जीवों पर दया करके वेद के चार विभाग किये हैं तथा सबका उपचार करने के हेतु अठारह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:41 PM

पुराणों का निर्माण किया है। परन्तु हम आपसे यह पूछते हैं कि आप एक बड़े परिवार के संरक्षक होते हुए भी इस प्रकार कठिन तप क्यों कर रहे हैं? हमें ऐसा प्रतीत होता है कि आपका हृदय कुछ उचट-सा हो गया है।

हे नारद ! सनत्कुमार जी के मुख से यह वचन सुनकर व्यास जी ने उत्तर दिया—"हे सनत्कुमार जी ! आपका कथन वास्तव में सत्य है। मैंने वेदों को विभाजित करके सब पुराणों को बनाया है तथा परोपकार के लिए अत्यन्त परिश्रम भी किया है। मैं संसार में सबका गुरु बनकर प्रसिद्ध हुआ हूँ। परन्तु इतने पर भी मुझे मुक्ति धर्म का लाभ नहीं हुआ है। इसीलिए मैं यह तपस्या कर रहा हूँ। इस तप के प्रभाव से यदि आप यहाँ मुझे सेवक समझकर आये हैं तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि आप सर्वज्ञ तथा दूसरों की भलाई करने वाले हैं। आशा है, अब आप मुझे कृपा करके कोई ऐसा उपाय बतावेंगे, जिससे मेरा मन शुद्ध हो और मैं मुक्ति को प्राप्त करूँ।"

हे नारद ! यह सुनकर सनत्कुमार ने उत्तर दिया—"हे व्यास जी ! शिवजी की माया को कोई नहीं जान सकता। वह सम्पूर्ण संसार को मोहित करने वाली है। शिव भक्ति के बिना वह सब लोगों को अनेक प्रकार के कष्ट भी देती है। यद्यपि आपने वेदों के विभाग किये तथा पुराणों को बनाया है, परन्तु इतने पर भी आपने न तो धर्म को जाना है और न शिवजी के तत्त्व को ही जाना है।

हे व्यास जी ! पुरातन काल में, मैं अज्ञानी होकर संशय रूपी समुद्र में व्यर्थ ही भ्रमण करता रहा। मैंने तीनों लोकों में भ्रमण किया, परन्तु मुक्ति प्राप्त करने के उपाय मुझे ज्ञात नहीं हो सका। तब मैं शिवजी की माया से मोहित हो, मन्दराचल पर्वत पर जा पहुँचा। वहाँ मैंने एक स्थान पर निश्चल भाव से बैठ कर बहुत समय तक एकाग्रचित हो तपस्या की। मैंने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करके शिवजी का स्मरण किया। उस समय शिवजी ने प्रसन्न होकर मेरा सन्देह दूर करने के लिए नन्दीश्वर को आज्ञा दी। जब नंदीश्वर मेरे पास आये, तब मैंने उन्हें प्रणाम करते हुए उनके आगमन का कारण पूछा। उस समय शिवजी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:41 PM

के अंश तथा सभी गणों के स्वामी नन्दीश्वर ने मुझ पर अत्यन्त अनुग्रह करके इस प्रकार कहा—"हे सनत्कुमार ! भगवान् सदाशिव के यश का कीर्तन, श्रवण तथा मनन मुक्ति को देने वाला है। अस्तु तुम्हें भी यह उचित है कि तुम श्रवण, कीर्तन तथा मनन—इन तीनों कर्मों को दृढ़तापूर्वक धारण करो।" इस प्रकार मुझे उपदेश देकर नन्दीश्वर शिवजी के समीप चले गये। उस समय मुझे अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ। अस्तु, "हे व्यास जी ! आपको भी यह उचित है कि आप भी इन तीनों उपायों का आश्रय लेकर, मुक्ति को प्राप्त करें।" इस प्रकार व्यास जी को शिक्षा देकर सनत्कुमार विमान पर आरूढ़ हो, अपने लोक को लौट गये।"

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! यदि कोई मनुष्य इन तीनों उपायों को न कर सके तो इसके लिए अन्य सुगम साधन और क्या हो सकता है, यह आप मुझे बताने की कृपा करें।" ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! यदि कोई मनुष्य इन तीनों का साधन न कर सके तो उसे चाहिए कि वह भक्तिपूर्वक केवल शिवलिंग का ही पूजन करे। इस प्रकार केवल पूजन करने मात्र से ही बहुत-से लोग अपने मनोरथों को प्राप्त कर चुके हैं। यदि हृदय में भक्ति हो तो श्रवण आदि तीनों उपायों के बिना भी मुक्ति मिल जाती है।"

पन्द्रहवाँ अध्याय

नारद जी बोले—"हे पिता ! मैं यही जानना चाहता हूँ कि सभी देवता वीर रूप में पूजे जाते हैं अथवा केवल शिवजी को ही वीर रूप में पूजा जाता है। आप मुझे यह भी बताइए कि क्या केवल शिवजी के ही लिंग की पूजा करनी चाहिए, अन्य देवताओं की नहीं?" यह सुनकर ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया—"हे नारद ! तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर भगवान् सदाशिव के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं दे सकता। इस सम्बन्ध में उन्होंने मुझसे जो कुछ कहा था, वह मैं तुम्हें सुनाता हूँ। इस वृत्तान्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

को सुनने से दोनों लोकों में अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है। भगवान् सदाशिव ब्रह्मस्वरूप, निर्गुण, सगुण, लिंगरूप तथा निराकार हैं। शिवजी के वीर स्वरूप का वर्णन साकार रूप में किया जाता है। अस्तु, लिंग तथा वीर—इन तीनों रूपों में भगवान् सदाशिव सब लोगों द्वारा पूजा किये जाने योग्य हैं। ब्रह्म का नाम किसी अन्य देवता के लिए नहीं दिया जा सकता। यह तीनों लोक भगवान् सदाशिव के सेवक हैं, क्योंकि उनके अतिरिक्त अन्य कोई देवता निष्कलंक नहीं है। यही कारण है कि अन्य किसी देवता को अपने लिंग की पूजा नहीं करानी चाहिए। अन्य सभी देवताओं में ब्रह्म तत्त्व अधिक मात्रा में नहीं पाया जाता। इसलिए शिवजी का वीर लिंग सब देवताओं द्वारा पूजा किया जाने योग्य है। यह बात अत्यन्त प्राचीन तथा प्रसिद्ध भी है। जो मनुष्य इस वृत्तान्त को पढ़ते हैं, उन्हें भी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

हे नारद ! इसी सम्बन्ध में नन्दीश्वर ने सनत्कुमार से बहुत-कुछ कहा था। सनत्कुमार ने एक बार उनसे यह कहा—"हे नन्दीश्वर ! आपने शिवजी के अत्यन्त पवित्र चरित्रों का वर्णन किया है, परन्तु आपने शिवजी के लिंग की पूजा का जो प्रतिपादन किया है, उससे मेरे मन में सन्देह की उत्पत्ति हुई है। मैं यह चाहता हूँ कि आप मुझे शिवजी के लिंग का वर्णन सुनाने की कृपा करें।" यह सुनकर नन्दीश्वर ने उत्तर दिया—"हे सनत्कुमार ! पिछले कल्प में जब प्रलय हो गया, उस समय ब्रह्मा तथा विष्णु एक दूसरे से विवाद करते हुए परस्पर युद्ध करने लगे। तब भगवान् सदाशिव उन दोनों का अहंकार दूर करने के हेतु एक आदि-अन्त से रहित ज्योतिर्मय खम्भे के रूप में प्रकट हुए। वह खम्भा लिंग के समान लक्षणों वाला था। उस समय शिवजी ने उन दोनों के अहंकार को नष्ट कर, परमधर्म की शिक्षा दी। तभी से तीनों लोकों में लिंग वीर की पूजा प्रचलित हुई। इस सम्बन्ध में मैं तुम्हें पूर्वकाल की एक कथा सुनाता हूँ।

हे सनत्कुमार ! पूर्व समय में सब देवताओं के स्वामी विष्णु अपनी शैय्या पर आनन्दपूर्वक शयन कर रहे थे। उस अवसर पर ब्रह्मा कहीं से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:42 PM

उनके समीप जा पहुँचे और उन्हें लेटे हुए देख, अत्यन्त क्रुद्ध हो, अहंकार में भर, इस प्रकार कहने लगे—"हे अभिमानी ! तुम कौन हो, जो हमारे आने पर भी इस प्रकार लेटे हुए हो? हम तुम्हारे स्वामी हैं तथा अत्यन्त कृपा करके तुम्हारे पास आये हैं।" यह सुनकर विष्णु ने उन्हें उत्तर दिया—"हे ब्रह्मन् ! तुम हमारे पुत्र हो। अस्तु तुम्हें ऐसे कटु-वचन कहना उचित नहीं है। तुम यहाँ आनन्दपूर्वक बैठो और अपने अहंकार को त्याग दो।" यह सुनकर ब्रह्मा बोले—"हे विष्णु ! तुम हमें अपना पुत्र किस प्रकार कहते हो? इस प्रकार की दुर्बुद्धि द्वारा अपने हृदय से धर्म को त्याग देना श्रेष्ठ नहीं है। क्या तुम्हें यह नहीं ज्ञात है कि हमारे नाम स्वयम्भू, अज, परमेष्ठी, विधाता तथा ब्रह्मा आदि हैं? हम तुम्हारे पिता हैं और तीनों लोकों को धारण करने वाले हैं। हम को उत्पन्न करने वाला तीनों लोकों में कोई नहीं है। तुम्हारी बुद्धि नष्ट हो गयी है जो तुम स्वयं को हमारा स्वामी कहते हो।" यह सुनकर विष्णु ने उत्तर दिया—"हे पुत्र ! तुम हमारी नाभि से उत्पन्न हुए हो और माया में भूलकर अपने को सबका स्वामी समझ बैठे हो।"

हे सनत्कुमार ! इस प्रकार ब्रह्मा तथा विष्णु बहुत समय तक विवाद करते रहे। तदुपरान्त उन दोनों में घोर युद्ध होने लगा। उस समय दोनों ओर के सम्बन्धी सहायक तथा गण आदि भी अपना-अपना पक्ष लेकर एक-दूसरे के विरुद्ध युद्ध करने में प्रवृत्त हो गये। दोनों ओर से अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र चलने लगे। उस युद्ध को देखकर सभी देवताओं को अत्यन्त आश्चर्य हुआ, परन्तु शिवजी की माया के वशीभूत होने के कारण वास्तविक भेद को कोई नहीं जान सका। युद्ध करते समय विष्णु ने ब्रह्मा के ऊपर माहेश्वर नामक बाण छोड़ा। तब ब्रह्मा ने भी क्रूद्ध हो पाशुपत अस्त्र का प्रहार किया। वे दोनों बाण एक दूसरे से मिलकर प्रलय करने लगे तथा सम्पूर्ण सृष्टि में अग्निवर्षा कर उठे। उस समय सब देवताओं ने अत्यन्त भयभीत होकर यह विचार किया कि हमें शिवजी की शरण में जाकर रक्षा करने हेतु प्रार्थना करनी चाहिए।

❁❁❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:42 PM

सोलहवाँ अध्याय

नन्दीश्वर बोले—"हे सनत्कुमार ! देवताओं की स्तुति सुनकर भगवान् सदाशिव ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा—"हे पुत्रो ! तुम्हारे मुख अत्यन्त चिन्तित दिखलाई देते हैं। अस्तु, तुम हमें अपने दुःख का कारण सुनाओ।" यह सुनकर सब देवताओं ने प्रार्थना करते हुए कहा—"हे प्रभो ! इस समय ब्रह्मा तथा विष्णु में महाभयानक युद्ध हो रहा है। ऐसा प्रतीत होता है मानो थोड़ी ही देर में प्रलय हो जायेगा। उन दोनों के बाणों द्वारा निकली हुई अग्नि तीनों लोकों को भस्म किये देती है। हम भी उस ज्वाला से भयभीत होकर आपकी शरण में आये हैं।"

हे सनत्कुमार ! यह सुनकर भगवान् सदाशिव ने देवताओं से कहा—"हे देवताओ ! अब तुम निःशंक रहो। हम वहाँ जाकर युद्ध बन्द कराये देते हैं।" इतना कहकर शिवजी ने अपने गणों को भी चलने की आज्ञा दी। उस समय अनेक प्रकार के बाजे बजने लगे तथा जय-जयकार होने लगा। तदुपरान्त शिवजी गिरिजा तथा अपने पुत्रों सहित मद्र नामक रथ में बैठकर, देवताओं सहित युद्ध स्थल में जा पहुँचे। वहाँ शिवजी ने उन दोनों देवताओं को अपनी माया के वशीभूत हो, युद्ध करते देखकर, अपने ज्योति स्वरूप को प्रकट किया। उस ज्योति स्वरूप की गति को कोई नहीं जान सका तथा उस महाज्योति के प्रकट होते ही ब्रह्मा तथा विष्णु के बाण एक-दूसरे से अलग हट कर शान्त हो गये। इस आश्चर्य को देखकर ब्रह्मा तथा विष्णु ने युद्ध करना बंद कर दिया और यह निश्चय किया कि हम दोनों में जो व्यक्ति इस ज्योतिस्वरूप खम्भे के आदि और अन्त का पता लगा लावेगा, वही सबका स्वामी स्वीकार किया जायेगा। इस निश्चयानुसार विष्णु शूकर का रूप धारण कर पृथ्वी के नीचे की ओर चले तथा ब्रह्मा हंस का स्वरूप धारणकर आकाश की ओर उड़े, परन्तु उन दोनों में से किसी ने भी उस ज्योतिरूप खम्भे का आदि-अन्त नहीं पाया। तब ब्रह्मा केतकी फूल को अपने साक्षी के रूप में साथ लेकर लौटे और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:42 PM

केतकी ने विष्णु जी से यह झूठ बात कही कि ब्रह्मा ने उस ज्वाला के आदि को देख लिया है, परन्तु विष्णु ने इसी सत्य को स्वीकार किया कि वे इस ज्वाला के अन्त को नहीं पा सके हैं।"

सत्रहवाँ अध्याय

नन्दीश्वर ने कहा—"हे सनत्कुमार ! विष्णु के सत्य को देखकर भगवान् सदाशिव अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा ब्रह्मा के मिथ्या वचन को सुनकर अत्यन्त कुपित हुए। तदुपरान्त उन्होंने अपना मुख्य रूप उन दोनों देवताओं के बीच प्रकट कर दिया। उस स्वरूप को देखकर विष्णु जी स्तुति करने लगे। तब शिवजी ने अत्यन्त प्रसन्न होकर उसने यह कहा—"हे विष्णु ! हम तुम्हारे सत्य को देखकर बहुत आनन्दित हुए हैं। हम तुम्हें वर देते हैं कि तुम हमारे समान हो जाओगे तथा सब लोग तुम्हारी पूजा भी हमारी ही पूजा की भाँति किया करेंगे।" इस प्रकार विष्णु को वरदान देकर भगवान् सदाशिव ब्रह्मा जी से बोले—"हे ब्रह्मन् ! तुमने सांसारिक आनन्द तथा प्रशंसा प्राप्त करने के हेतु अपने धर्म को त्यागा है और तुम तीनों लोकों में अपना पूजन कराने के लिए झूठ भी बोले हो। इतना ही नहीं, तुमने मिथ्या साक्षी को भी उपस्थित किया। अस्तु, हम तुम्हें यह शाप देते हैं कि तीनों लोकों में कोई भी तुम्हारी पूजा नहीं करेगा तथा कोई भी देवता अथवा मुनि तुम्हें अपना स्वामी स्वीकार नहीं करेगा।"

हे सनत्कुमार ! शिवजी के मुख से यह वचन सुनकर ब्रह्मा ने अत्यन्त लज्जित होकर बहुत प्रकार से विनय करते हुए कहा—"हे प्रभो ! अब मैं आपकी शरण में आया हूँ।" ब्रह्मा के इन विनम्र वचनों को सुनकर शिवजी प्रसन्न हो गये। तब वे इस प्रकार कहने लगे—"हे ब्रह्मन् ! अब हम तुम्हें युक्तिपूर्वक यह वर देते हैं कि तुम वैधानिक मुखकर्म आदि में गुरु हुआ करोगे और अपना पूरा भाग प्राप्त करोगे।" ब्रह्मा से इस प्रकार कह कर शिवजी केतकी पुष्प से बोले—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

"हे केतकी ! तूने धर्म के विरुद्ध आचरण करते हुए मिथ्या साक्षी दिया है। अस्तु, तू आज से हमारी पूजा के काम नहीं आयेगी।" यह सुनकर केतकी ने अत्यन्त दुःखी हो, शिवजी की प्रार्थना करते हुए कहा—"हे प्रभो ! आप मेरे अपराध को क्षमा कर देने की कृपा करें। वेद इस बात को कहते हैं कि आप शरणागत पालक हैं तथा आपके स्मरण मात्र से ही सब पाप नष्ट हो जाते हैं। फिर मैं तो आप को सशरीर देख रही हूँ। ऐसी अवस्था में मेरे पाप नष्ट क्यों न होंगे? यह सुनकर शिवजी ने प्रसन्नतापूर्वक कहा—"हे केतकी ! हम तुम्हारी विनय से अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। अस्तु, अब यह वरदान देते हैं कि तुम मुझ पर वितान के द्वारा चढ़ोगी।" इस प्रकार शिवजी ने सब लोगों पर अत्यन्त अनुग्रह किया।

हे सनत्कुमार ! उस समय ब्रह्मा तथा विष्णु ने दायें-बायें खड़े होकर परिवार सहित भगवान् सदाशिव का पूजन किया। तब शिवजी ने अत्यन्त प्रसन्न होकर यह कहा—"हे ब्रह्मा तथा विष्णु ! तुम दोनों हमें प्राणों के समान प्रिय हो। आज का दिन परम पवित्र तथा मुक्ति को देने वाला है। यह संसार में शिवरात्रि के नाम से प्रसिद्ध होगा। शिवरात्रि का व्रत सब लोगों को अत्यन्त आनन्द प्रदान करेगा। तुम लोग इस दिन व्रत करके हमारे लिंग की पूजा किया करना। इससे तुम्हारे सभी पाप तथा दोष नष्ट हो जायेंगे। हम यहाँ लिंग रूप होकर प्रकट हुए हैं। अस्तु, इस स्थान का नाम लिंगालय प्रसिद्ध होगा। सब लोगों की पूजा के निमित्त हम इस लिंग में पूर्ण अंश में विराजमान रहेंगे। इस स्थान का नाम अरुणाचल होगा। जो लोग यहाँ आकर हमारी पूजा करेंगे, वे परमपद को प्राप्त होंगे।"

हे सनत्कुमार ! इतना कहकर शिवजी ने सम्पूर्ण मरी हुई सेना को जीवित कर दिया। फिर उन्होंने यह इच्छा करके कि हम ब्रह्मा तथा विष्णु के अहंकार को सदैव के लिए नष्ट कर दें, इस प्रकार कहना आरम्भ किया—"हे ब्रह्मा तथा हे विष्णो ! हम तुम से वेदों का सार कहते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं—१. निष्फल तथा २. सकल। हम ब्रह्म, अलख तथा सम्पूर्ण सृष्टि के प्राण हैं। सर्वप्रथम हम खम्भे के रूप में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रकट हुए, तदुपरान्त सब अंगों सहित प्रकट हुए हैं। तुम दोनों ने अपने को संसार का स्वामी समझकर व्यर्थ ही इतना युद्ध किया। इसीलिए हमें यहाँ निराकार रूप में आना पड़ा। अब तुम्हें कभी ऐसे भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए। तुम्हें इस बात को निश्चय रखना चाहिए कि परब्रह्म परमात्मा हम हीं हैं। तुम्हें हमारे लिंग का पूजन करना चाहिए। इससे तुम सभी मनोरथों को प्राप्त होओगे।

"हे ब्रह्मा तथा हे विष्णो ! यह सम्पूर्ण सृष्टि पाँच प्रकार की है। तुम इसे हमारी लीला ही समझो। संसार की उत्पत्ति, भरण-पोषण तथा प्रलय एवं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन पाँच कर्मों में पाँच देवता निवास करते हैं। वे ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, महेश तथा हम हैं। इन पाँच देवताओं में से चार देवता तो सशरीर दिखाई देते हैं, परन्तु पाँचवां दृष्टिगोचर नहीं होता। तुम दोनों ब्रह्मा तथा विष्णु भी हमारी शक्ति द्वारा उत्पन्न हुए हो तथा रुद्र और महेश भी हमारी ही देह हैं। रुद्र तथा महेश अविकारी हैं तथा तुम दोनों विकारी हो। इस बात को भली-भाँति जान लेने पर, तुम्हारे मन में कोई सन्देह नहीं रह जायेगा।" इतना कहकर शिवजी अन्तर्धान हो गये। उस समय ब्रह्मा तथा विष्णु आदि को भी अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ। फिर सब लोग अपने-अपने लोक को चले गये।"

इतनी कथा सुनाकर ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! नन्दीश्वर के मुख से इस पवित्र चरित्र को सुनकर सनत्कुमार भी अत्यन्त आनन्दित हो, अपने स्थान चले गये। शिवजी के इस परम पवित्र आख्यान का हमने तुमसे वर्णन किया है। तुम्हें यह निश्चयपूर्वक जान लेना चाहिए कि जो लोग शिवजी की भक्ति करते हैं, वह सदैव प्रसन्न बने रहते हैं। जो लोग शिवजी के चरित्रों को पढ़ते, सुनते अथवा दूसरों को सुनाते हैं, वे इस लोक में अत्यन्त आनन्द भोगकर, अन्त में शिवपुरी को जाते हैं।"

इतिश्रीशिवपुराणे ब्रह्मानारदसम्वादे भाषायां नवमखण्डस्समाप्तः ॥१॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:42 PM

ॐ नमः शिवाय

श्री शिव महापुराण
(सरल भाषा)

दसवाँ खण्ड

पहला अध्याय

सूत जी ने कहा—"हे शौनकादि ऋषियो ! शिवरात्रि व्रत का वृत्तान्त सुनने के उपरान्त नारद जी ने ब्रह्मा जी से कहा—"हे पिता ! भगवान् सदाशिव के जितने भी व्रत हों, उन्हें आप मुझे बताने की कृपा करें।" यह सुनकर ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया—"हे पुत्र ! शिवजी के असंख्य व्रत हैं। उन सब व्रतों में निम्नलिखित बारह व्रत अत्यन्त आवश्यक तथा प्रमुख हैं। इन्हें याज्ञवल्क्य स्मृति में वर्णन किया गया है। मनुष्यों को चाहिए कि वे इन व्रतों को अवश्य धारण करें, क्योंकि इन्हें किये बिना किसी कार्य की सिद्धि नहीं होती।

हे नारद ! व्रत इस प्रकार हैं—दोनों अष्टमी, दोनों एकादशी, दोनों त्रयोदशी, दोनों चतुर्दशी तथा महीने में जितने चन्द्रवार पड़ें, ये सब मिलाकर एक महीने में बारह व्रत होते हैं। भगवान् सदाशिव की आज्ञा है कि अष्टमी के व्रत में केवल फलाहार करना चाहिए, परन्तु शुक्लपक्ष की एकादशी को निर्जल व्रत रखना चाहिए। कृष्ण पक्ष की एकादशी को भोजन किया जा सकता है। इसी प्रकार दोनों त्रयोदशी तथा कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में भी एक बार भोजन करने की आज्ञा है, परन्तु शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी में निर्जल व्रत धारण करना चाहिए। सोमवार के व्रत में भी एक समय भोजन कर लेने की आज्ञा है। इन सभी व्रतों में शक्ति सहित भगवान् सदाशिव का पूजन करना चाहिए। इन व्रतों में अपनी सामर्थ्यानुसार शिव भक्तों को भोजन कराना चाहिए तथा शक्ति के अनुसार दान देना चाहिए।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:42 PM

हे नारद ! जो मनुष्य इन बारहों व्रत में से एक व्रत भी नहीं करता, उसे महापतित समझना चाहिए। जो मनुष्य शिवजी के सभी व्रतों को करता है, उसे परम पवित्र समझना चाहिए। यदि कोई मनुष्य बारहों व्रत रखने में असमर्थ होने के कारण केवल एक ही व्रत धारण करता है तो वह भी शुभ है। इन दोनों प्रकार के व्रत रखने वालों पर भगवान् सदाशिव सदैव अपनी कृपा बनाये रहते हैं। हे नारद ! चार वस्तु मुक्ति प्रदान करने वाली हैं। उन्हें इस प्रकार जानना चाहिए—१. शिवजी का पूजन, २. शिवजी का तप, ३. शिवजी का व्रत तथा ४. काशी में मृत्यु। ये चारों बातें शिवजी को अत्यन्त प्रिय तथा संसार में अत्यन्त सुख प्रदान करने वाली हैं। इन सब व्रतों में शिवजी का व्रत अत्यन्त श्रेष्ठ कहा गया है। शिवरात्रि के व्रत को सभी वर्ण, सभी आश्रम तथा सभी आयु के स्त्री-पुरुष धारण कर सकते हैं। जो लोग शिवरात्रि के व्रत को रखते हैं, उन्हें शिव लोक की प्राप्ति होती है।

हे नारद ! भगवान् सदाशिव की महिमा के समान ही शिवरात्रि व्रत की महिमा भी अनन्त है। कोई मनुष्य कैसा भी पापी क्यों न हो, यदि वह शिवरात्रि का व्रत कर लेता है, तो उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। संसार में जितने भी धर्म, तप, योग आदि हैं, उनमें कोई भी इस व्रत के समान नहीं है। शिवरात्रि का व्रत शिवजी को अपने प्राणों के समान अत्यन्त प्रिय हैं। शिवरात्रि व्रत के द्वारा यज्ञदत्त नामक ब्राह्मण के पुत्र गुणनिधि ने, सुमति नामक स्त्री ने तथा व्याध आदि ने श्रेष्ठ गति को प्राप्त किया है। सभी देवता एवं मुनि आदि इस व्रत को धारण करते हैं तथा अभिलाषित फल प्राप्त करते हैं।

हे नारद ! शिवरात्रि के व्रत को सर्वोपरि जानना चाहिए। यद्यपि प्रत्येक महीने की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को यह व्रत होता है, परन्तु माघ-मास में इस व्रत को विशेष रूप से आवश्यक कहा गया है। इसी प्रकार फाल्गुन मास की चतुर्दशी को भी यह व्रत अत्यन्त आवश्यक कहा गया है। अर्द्धरात्रि तक जो चतुर्दशी की तिथि रहे, उसी को शिवव्रत के लिए उपयुक्त कहा गया है। यदि इस शिव व्रत को धारण करके उसी दिन पारण करें तो उससे अधिक शुभ अन्य कुछ नहीं है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:42 PM

यदि चन्द्रमा अस्त हो जाए तो पारण नहीं होता। शिवरात्रि व्रत का पारण बहुत सोच-विचार करने के उपरान्त करना चाहिए। जिस रात्रि को व्रत किया जाए, उसके चारों प्रहरों में भगवान् सदाशिव का चार बार पूजन किया जाना, रात्रि के समय पारण न करना तथा चन्द्रास्त के संगम को भी त्याग देना उचित है। चन्द्रमा के सहयोग बिना यदि दिन में पारण हो सके तो ऐसा सुयोग बड़े भाग्य से ही प्राप्त होता है। यदि चतुर्दशी तिथि पारण के लिए प्राप्त न हो सके तो अमावस्या में ही पारण करना चाहिए।

हे नारद ! इस प्रकार शिवरात्रि का व्रत प्रत्येक वर्ष में एक बार प्रमुख रूप से होता है। इस व्रत को करने से ब्रह्म हत्या आदि के पाप दूर हो जाते हैं। अन्य कोई भी व्रत इस व्रत के समान नहीं है। जो मनुष्य इस व्रत को नहीं करता उसे अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं। ऐसे मनुष्य का कोई भी कार्य पूरा नहीं होता। वह संसार में रहकर रोगों में ग्रस्त रहता है तथा मृत्यु के उपरान्त भी मुक्ति प्राप्त नहीं करता। यदि यह व्रत कभी अनजान में भी हो जाये तो भी व्रत करने वाले को श्रेष्ठ गति प्राप्त होती है। यदि कोई पापी मनुष्य इस व्रत को धारण करता है तो उसे दोनों लोकों में प्रसन्नता प्राप्त होती है। जो मनुष्य निश्चयपूर्वक इस व्रत को धारण करता है, उसे देखकर यमराज भी भयभीत होने लगते हैं। ऐसे मनुष्य पर शिवजी सदैव प्रसन्न रहते हैं तथा उस पर अत्यन्त कृपा करके लोक में सभी पदार्थ तथा परलोक में मुक्ति प्रदान करते हैं। शिवरात्रि व्रतधारी का सम्पूर्ण कुल भी मुक्त हो जाता है तथा देवता, मुनि आदि सभी लोग उसकी प्रशंसा करते हैं। हे नारद ! इस प्रकार मैंने तुमसे शिवरात्रि व्रत की महिमा का वर्णन किया। अब चारों प्रहर की पूजा-विधि का वर्णन सुनो।"

दूसरा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! प्रातःकाल उठकर नित्यकर्म करने के उपरान्त सर्व प्रथम प्रसन्नतापूर्वक शिव-मन्दिर में जाकर भगवान्

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सदाशिव की स्तुति करनी चाहिए। तदुपरान्त व्रत धारण करने वाले को पवित्रतापूर्वक अपने हाथ में पानी लेकर यह संकल्प करना चाहिए कि हे भगवान् सदाशिव ! मैं आपका व्रत कर रहा हूँ; इसमें किसी प्रकार का विघ्न न पड़े। इस प्रकार संकल्प करने के उपरान्त व्रतधारी को चाहिए कि वह पूजन की सम्पूर्ण सामग्री को एकत्रित कर, उस स्थान पर दक्षिण तथा पश्चिम की ओर आसन बिछाकर पूजन की सामग्री को वहाँ रखे, जहाँ कोई प्रसिद्ध शिवलिंग स्थापित हो। इसके उपरान्त व्रतधारी को उचित है कि वह सामर्थ्यानुसार श्रेष्ठ वस्त्र को पहनकर आसन पर बैठे और तीन बार आचमन करने के उपरान्त शिवजी का पूजन प्रारम्भ करे। नृत्य-गायन सहित स्तुति में प्रवृत्त होकर शिवजी के मंत्रों सहित पार्थिव पूजन करना श्रेष्ठ कहा गया है।

हे नारद ! व्रतधारी को उचित है कि शिवरात्रि के माहात्म्य को या तो स्वयं पढ़े अथवा किसी अन्य के द्वारा श्रवण करे। कथा कहने वाले की अनेक प्रकार की सेवा-पूजा करना आवश्यक है। शिवजी को श्रेष्ठ वस्तुओं का भोग लगाने के उपरान्त, चारों प्रहरों में संकल्प करके शिवलिंग का पूजन करना श्रेष्ठ कहा गया है। शिवरात्रि को रात भर जागरण करके बड़ा उत्सव मनाना चाहिए। प्रातःकाल होने पर पुनः स्नान करके शिवजी का पूजन करना श्रेष्ठ कहा गया है। प्रातःकाल स्तुति करने के उपरान्त व्रतधारी को भगवान् सदाशिव के प्रति यह विनय करनी चाहिए कि हे प्रभो ! मैंने श्रद्धापूर्वक आपके व्रत में अपना मन लगाया है। अस्तु आप मुझे अपना सेवक जानकर प्रसन्न हों तथा मेरे सम्पूर्ण मनोरथों को पूरा करें। इतना कहकर शिवजी के ऊपर पुष्पांजलि छोड़नी चाहिए। इस प्रकार व्रत की क्रियाएँ समाप्त हो जाने के पश्चात् प्रसन्नतापूर्वक ब्राह्मणों को दान देना चाहिए तथा अपनी शक्ति के अनुसार शिवभक्तों, ब्राह्मणों तथा यतियों को श्रेष्ठ भोजन, दान आदि द्वारा प्रसन्न करना चाहिए।

हे नारद ! अब मैं चारों प्रहरों में पूजन की विधि का विस्तारपूर्वक वर्णन करता हूँ। सन्ध्या के समय सर्वप्रथम सन्ध्या आदि सम्पूर्ण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नित्यकर्मों से निश्चिंत होकर पहले प्रहर में इस प्रकार पूजन करें— ''सर्वप्रथम सम्पूर्ण सामग्री एकत्र कर शिवजी के दोनों लिंगों अर्थात् पार्थिव तथा शिवलिङ्ग में से जो भी उस स्थान पर हो, का पंचामृत द्वारा अलग-अलग मंत्र पढ़ते हुए पूजन करें। इसके उपरान्त एक सौ आठ मंत्र पढ़कर शिवजी को जलधारा से स्नान करावें। फिर मंत्र पढ़ता हुआ सम्पूर्ण सामग्रियों द्वारा शिवजी का पूजन करें। अपने गुरु द्वारा दिये गये मंत्र से शिवजी का पूजन किया जाए या पंचाक्षरी मंत्र से शिवजी का पूजन किया जाए अथवा केवल शिवजी का नाम लेकर ही पूजन करना उचित है। चन्दन, अक्षत, काले तिल, कमल पुष्प, कनेर के पुष्प आदि सभी पूजन की श्रेष्ठ वस्तुओं को शिवजी के आठ-आठ नाम लेकर चढ़ाना चाहिए। उत्तम सुगन्धित धूप देने के उपरान्त आरती करनी चाहिए तथा श्रेष्ठ पकवान चढ़ाकर बेल का अर्घ्य देना चाहिए। इस प्रकार पूजन करने के उपरान्त दंडवत् करते हुए शिवजी का ध्यान करना चाहिए। यदि पूजन करने वाला किसी अन्य देवता का भक्त हो तो उसे उचित है कि वह पंचाक्षरी मंत्र द्वारा शिवजी का जप करे। शिवजी के सम्मुख गोमुद्रा दिखाकर, जल में बैठकर तर्पण करें तत्पश्चात् पाँच ब्राह्मण को भोजन कराने का संकल्प करें। यदि इतनी सामर्थ्य न हो तो केवल एक ही ब्राह्मण को भोजन कराने का संकल्प करें। इस प्रकार जब तक पहला प्रहर व्यतीत न हो जाए, तब तक विविध प्रकार के उत्सव मनाता रहें।

हे नारद ! दूसरा प्रहर आरम्भ होने पर भी इसी प्रकार शिवजी का पूजन करे, परन्तु इस पूजन की विधि में इतना अधिक कहा गया है कि जौ का लखोहर तथा कमल के पुष्प पहले प्रहर से दुगुने होने चाहिएं तथा घृत, शहद सहित दूध का नैवेद्य लगाकर वीजपूर का अर्घ्य देना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक स्थान पर शिवजी के नाम का जप भी पहले प्रहर से दुगुना कर देना चाहिए।

हे नारद ! तीसरे प्रहर की पूजा भी इसी प्रकार करनी चाहिए, परन्तु उसमें इतना अधिक कहा गया है कि गेहूँ का लखोहर तथा मदार के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:42 PM

फूल इस पूजन में होने उचित हैं। अनेक प्रकार के धूप, दीप, नैवेद्य के लिए पूजा अनेक प्रकार के साग, अर्घ्य के लिए पक्का अनार तथा कपूर की आरती इन सबको पहले प्रहर से दूना करना चाहिए तथा शिवजी के मंत्र का जप भी पूर्व की अपेक्षा दुगुना करना उचित है।

हे नारद ! चौथे प्रहर की पूजा में इतना अधिक और कहा है कि मूँग, उड़द तथा प्रियंगु अर्थात् काकु का लखोहर, सातों प्रकार के अन्न, शंखाहुली तथा अन्न से बने हुए मिष्ठानों का नैवेद्य अथवा उड़द का नैवेद्य बनाकर भोग लगाना चाहिए। अनेक प्रकार के फलों अथवा केले के फल का अर्घ्य देना उचित है। शिवजी के मंत्र का पहले से दूना जप करके बहुत उत्सव मनाना चाहिए।

हे नारद ! चारों प्रहर की पूजा में शिवजी के ऊपर असंख्य विल्वपत्रों को चढ़ाना शुभ कहा गया है, क्योंकि विल्वपत्र शिवजी को अत्यन्त प्रिय हैं। बहुत-से मनुष्यों को एकत्रित कर चारों प्रहर नृत्य-गायन आदि का उत्सव करना चाहिए। इस प्रकार रात्रि भर जागरण करते हुए, शिवजी का ध्यान धरना सर्वोपरि कहा गया है। अन्य किसी भी प्रकार का कोई भी संकल्प मन में लाना उचित नहीं है। शिवरात्रि का माहात्म्य सुनते हुए रात्रि को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करना चाहिए। व्रतधारी को उचित है कि वह चारों प्रहर एक ही आसन पर बैठे तथा लोभ-रहित होकर यथाशक्ति धन खर्च करे। सूर्योदय होने पर व्रतधारी ब्राह्मणों को दंडवत् करता हुआ, अपने आसन से उठे। अपने मन में अत्यन्त प्रसन्न हो, अनेक प्रकार के उपहारों को एकत्रित कर, शुद्ध जल से भगवान् सदाशिव का अभिषेक करना चाहिए। फिर जितने ब्राह्मणों को भोजन कराने का संकल्प किया हो, उनके अतिरिक्त और भी जितने हो सके, उतने ब्राह्मणों को भोजन करावे। साथ ही भोजन कराते समय और जो भी लोग आ जावें, उन सब लोगों को भोजन करावें।

हे नारद ! जिन कार्यों को मैंने तुम्हें बताया है, वे सब धनवानों के करने योग्य हैं, परन्तु जो निर्धन हों, वह यदि उपर्युक्त सामग्रियों से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:42 PM

पूजन न कर सकें तो उसे कोई दोष नहीं होता। इस प्रकार चारों प्रहर तक पूजन करने के उपरान्त प्रातःकाल स्नान करके फिर पूजन करे और ब्राह्मणों से आशीर्वाद लेकर समस्त देवताओं सहित शिवजी का विसर्जन करें। जब इन कार्यों से निवृत्त हो जावे, तब ब्राह्मणों से आज्ञा प्राप्त कर, अपने परिवार सहित भोजन करें। हे नारद ! मैंने विष्णु जी से शिवरात्रि-व्रत की जो विधि सुनी थी, वह तुम्हें सुनायी है।''

तीसरा अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! आपने शिवरात्रि व्रत की विधि का जो वर्णन किया, अब मेरी यह इच्छा है कि आप उस उद्यापन की विधि को और सुनाने की कृपा करें, जिसे करने से शिवजी का व्रत पूर्ण होता है। जिसके द्वारा शिवजी अपने भक्तों पर प्रसन्न होकर, दोनों लोकों की कामनाएँ पूर्ण करते हैं।''

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! जब चौदह वर्ष तक शिवजी का व्रत निरन्तर कर लें, तब उसका उद्यापन करना उचित है। उद्यापन की विधि इस प्रकार है कि त्रयोदशी के दिन संयमपूर्वक रहे तथा चतुर्दशी के दिन निर्जल व्रत धारण करे। शिवजी का धाम दिव्यमंडल जिसे गौरी-तिलक कहा जाता है, की रचना करके लिंगतोभद्र तथा सर्वतोभद्र चक्र बनावे। यहाँ आठ कलशों की स्थापना कर, उन्हें फल-फूल तथा वस्त्रों से सुसज्जित करे। कलश के ऊपर शिव-गिरिजा एवं नन्दीश्वर की स्वर्ण-प्रतिमाओं की स्थापना करे। इन तीनों मूर्तियों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्वर्ण से बनवाना चाहिए। इतना सब करके, दीपक जलाकर दाहिनी ओर रखे तथा प्रसन्नतापूर्वक रात्रि भर जागरण करके, चारों प्रहरों में शिवजी का चार बार पूजन करे।

हे नारद ! इस प्रकार रात्रि भर पूजन करने के उपरान्त प्रातःकाल होने पर पुनः स्नान करे तथा सबके साथ मिलकर शिवजी का पूजन करे। फिर हवन करने के पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन करावे और उन्हें

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वस्त्र, आभूषण, धन आदि दान में देकर प्रसन्न करे। जिस आचार्य को वरण किया हो, उसकी सबसे अधिक सेवा करे। उसे विधिपूर्वक गोदान करे तथा समस्त सामग्री सहित शिव-गिरिजा एवं नन्दी की स्वर्णमूर्तियाँ उसी को दे दे। आचार्य को दण्डवत् प्रणाम करने के पश्चात् शिवजी को पुष्पाञ्जलि भेंट करता हुआ स्तुति करें। तदुपरान्त ब्राह्मणों की आज्ञानुसार स्वयं भी परिवार सहित भोजन करे। जो लोग साधन सम्पन्न हों, उन्हीं के लिए यह उद्यापन कहा गया है। जो सामर्थ्यहीन हों, वे साधारण रीति से पूजन करके शिवजी को केवल पुष्पांजलि भेंट द्वारा ही अपना उद्यापन पूरा कर सकते हैं। उद्यापन कर लेने से व्रत पूर्ण हो जाता है।

चौथा अध्याय

नारद जी ने कहा—"हे पिता ! शिवरात्रि व्रत का माहात्म्य सुनने से अभी मेरी तृप्ति नहीं हुई है। अस्तु, आप मुझे यह बताने की कृपा करें कि जिन लोगों ने बिना जाने हुए शिवरात्रि का व्रत किया, उन्हें क्या फल प्राप्त हुआ है?" यह सुनकर ब्रह्मा जी ने कहा—"हे पुत्र ! इस सम्बन्ध में तुम्हें एक कथा सुनाता हूँ, जो सब प्रकार से आनन्द करने वाली है। पुरातन समय में एक व्याध निषाद नाम से प्रसिद्ध था। वह सभी जीवों को दुःख देने वाला, हिंसक तथा अत्यन्त कठोर था। उसका परिवार बहुत बड़ा था। वह प्रतिदिन वन में जाकर जीव-जन्तुओं का संहार करता तथा चोरी आदि द्वारा धन प्राप्त करता था। बाल्यावस्था से ही उसने कोई शुभ कर्म नहीं किया था। जिस वन में वह रहता था, वहाँ किसी को चैन नहीं लेने देता था। इस प्रकार के कुकर्म करते हुए उसे बहुत समय व्यतीत हो गया।

हे नारद ! एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि उसके घर में भोजन समाप्त हो गया। तब उसके माता, पिता, स्त्री आदि ने क्षुधातुर होकर उससे यह कहा—"हम लोग भूखे मर जाते हैं। अस्तु, तुम हमारे लिए

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:43 PM

भोजन का प्रबन्ध करो।'' उन लोगों की बात सुनकर निषाद अपना धनुष-बाण ले एक वन में जा पहुँचा। जिस दिन की यह घटना है वह शिवरात्रि व्रत का दिन था, परन्तु निषाद इस बारे में कुछ नहीं जानता था। अस्तु, उस दिन सन्ध्या तक वन में फिरने पर भी दुर्भाग्यवश निषाद को कोई जीव-जन्तु दिखाई नहीं दिया। जब रात्रि का समय आया, तब वह निषाद अपने मन में अत्यन्त व्याकुल होकर यह विचार करने लगा कि मुझे यहाँ कोई शिकार तो मिला नहीं, तब घर जाकर ही क्या करूँगा? तदुपरान्त वह यह सोचकर एक नदी के तट पर जा पहुँचा।

हे नारद ! इस प्रकार निश्चय करके निषाद नदी के तट पर जो एक बेल का वृक्ष था उसके ऊपर छिपकर बैठ गया और टकटकी लगा यह देखने लगा कि यदि कोई जीव नदी के तट पर पानी पीने आवे, तो मैं उसका संहार कर डालूँ। जब रात्रि का पहला प्रहर समाप्त होने को हुआ, उस समय वहाँ एक प्यासी हिरणी उछलती-कूदती हुई आ पहुँची। उसे देखते ही निषाद ने अपने धनुष पर बाण चढ़ाया, जिसका प्रभाव यह हुआ कि उस धनुष-बाण के आघात से बिल्व वृक्ष के कुछ पत्ते तथा निषाद के पास रखा हुआ पीने का शुद्ध जल, वृक्ष के नीचे स्थापित शिवलिंग पर गिर पड़े। इस प्रकार भाग्यवश उसके पहले प्रहर की पूजा स्वयं ही पूर्ण हो गयी। उस अनजान अवस्था में शिव पूजन हो जाने के प्रभाव से निषाद के अनेक पाप नष्ट हो गये।

हे नारद ! उधर हिरणी ने जब निषाद को बेल के वृक्ष के ऊपर बैठे हुए तथा धनुष ताने हुए देखा तो उसे सम्बोधित करते हुए पूछा—''हे निषाद ! तुमने अपना धनुष क्यों ताना है?'' निषाद ने उत्तर दिया—''हे हिरणी ! मेरे परिवार के सभी लोग दिन भर के भूखे हैं। अस्तु मैंने यह विचार किया है कि मैं तुझे मारकर तेरे माँस से सब लोगों की क्षुधा का निवारण करूँ।'' यह सुनकर हिरणी ने चिन्तित होकर अपने मन में यह विचार किया कि मुझे किसी प्रकार इसका संकट दूर करना चाहिए। अस्तु, उसने निषाद को सम्बोधित करते हुए कहा—''हे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:43 PM

निषाद ! मेरा धन्य भाग्य है जो तुम मेरे माँस द्वारा अपना तथा अपने पारिवारिक जनों का मनोरथ पूर्ण करना चाहते हो। यद्यपि इसमें कोई सन्देह नहीं कि मेरे माँस से तुम्हारे परिवार का पेट भर जायेगा तथा मुझे इसमें कोई आपत्ति भी नहीं है तथापि मैं यह चाहती हूँ कि तुम मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लो।''

हे नारद ! हिरणी की बात सुनकर निषाद ने पूछा—''तुम क्या कहना चाहती हो?'' हिरणी बोली—''हे निषाद ! मेरे घर पर छोटे-छोटे अनेक बच्चे हैं। अस्तु, मैं यह चाहती हूँ कि उन सबको अपनी बहन को सौंप आऊँ। इतना करके मैं तुम्हारे पास लौट आऊँगी, तब तुम मुझे मारकर अपना प्रयोजन सिद्ध करना। संसार में सत्य के समान और कोई वस्तु नहीं हैं। यह पृथ्वी तथा आकाश भी सत्य के बल पर ही ठहरे हुए हैं। मैं भी अपने वचन को अवश्य सत्य सिद्ध करूँगी।'' इस प्रकार उस हिरणी ने घर हो आने देने के लिए निषाद से बहुत प्रार्थना की, परन्तु निषाद ने उसे स्वीकार नहीं किया।

हे नारद ! यह देखकर हिरणी ने अपने मन में अत्यन्त भयभीत हो, निषाद को विश्वास दिलाते हुए, इस प्रकार पुनः कहना आरम्भ किया—''हे निषाद ! यदि मैं अपने बच्चों का प्रबन्ध करके तुम्हारे पास लौटकर न आऊँ, तो मुझे वह पाप लगे जो वेद के विरुद्ध आचरण करने वाले मनुष्य को लगता है। उस समय निषाद ने हिरणी की बात पर विश्वास करके, उसे घर हो आने की आज्ञा दे दी। तब वह हिरणी जल पीने के उपरान्त अपने घर को चली गयी और निषाद उसी पेड़ पर बैठा हुआ, उसके पुनरागमन की प्रतीक्षा करने लगा।

हे नारद ! जब रात्रि का दूसरा प्रहर आया, उस समय उस हिरणी की बहन अपनी बहन को ढूँढती हुई उसी स्थान पर आ पहुँची। निषाद ने उसे देखते ही फिर अपने धनुष पर बाण को चढ़ाया, जिसके कारण अनेक बिल्वपत्र टूटकर शिवलिंग पर जा गिरे और उसके दूसरे प्रहर का शिवपूजन अपने आप हो गया। इस अज्ञानावस्था के पूजन से भी असंख्य पाप नष्ट हो गये। तब दूसरी हिरणी ने पहली हिरणी की भाँति

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:43 PM

व्याध से धनुष चढ़ाने का कारण पूछा और व्याध ने अपना उत्तर दुहरा दिया। तदुपरान्त उस हिरणी ने अपने मन में अत्यन्त भयभीत होकर इस प्रकार कहा—"हे निषाद ! मेरा बड़ा भाग्य है जो तुम मेरे माँस द्वारा अपनी तथा अपने परिवार की क्षुधा का निवारण करना चाहते हो। यह शरीर नाशवान् है। अस्तु, इसके द्वारा यदि परोपकार हो तो इससे अधिक आनन्द की बात क्या होगी? फिर भी मैं यह चाहती हूँ कि मैं अपनी छोटी लड़की को अपने पति को सौंप आऊँ, तत्पश्चात् यहाँ आकर तुम्हारे बाण का लक्ष्य बनूँ।" जब निषाद ने उसकी प्रार्थना को अस्वीकार किया, तब उस हिरणी ने विश्वास दिलाते हुए इस प्रकार कहा—"यदि मैं अपनी प्रतिज्ञा भंग करूँ तो मुझे वह पाप लगे जो अपनी स्त्री को छोड़कर परायी स्त्री के साथ भोग करने पर लगता है।" यह सुनकर निषाद ने उसे भी घर हो आने की आज्ञा दे दी। तब वह तो पानी पीकर चली गयी और निषाद उसके लौटने की प्रतीक्षा में जगता हुआ, धनुष ताने अपने स्थान पर बैठा रहा।

हे नारद ! उधर जब हिरणी देर तक घर लौटकर न पहुँची और रात्रि का तीसरा प्रहर आया, तब हिरण उसे ढूँढने के लिए स्वयं भी चिन्तातुर तथा तृषातुर हो, नदी की ओर चल दिया। जब वह तट पर पहुँचा तो उसे देखकर भी निषाद ने अपने धनुष को खींचा, जिसके कारण पेड़ से कुछ बिल्वपत्र फिर शिवलिंग के ऊपर गिर पड़े। इस प्रकार तीसरे प्रहर का पूजन पूर्ण हो गया। इस पूजन से निषाद के शेष बचे पापों में आध पाप और नष्ट हो गये। जब हिरण ने निषाद को धनुष खींचे हुए देखा तो उसका कारण पूछा तथा निषाद ने भी पहले समान उत्तर दे दिया। उसे सुनकर हिरण बोला—"हे निषाद ! मेरे धन्य भाग्य हैं जो तुम मेरे शरीर द्वारा अपने परिवार को तृप्त करना चाहते हो। मेरा एक बालक है, तुम उसे मुझे अपनी स्त्री को सौंप आने दो। बालक को सौंपने के उपरान्त मैं फिर यहीं आ जाऊँगा। तब मुझे मार कर अपनी अभिलाषा पूर्ण करना।"

हे नारद ! यह सुनकर निषाद ने उत्तर दिया—"हे हिरण ! तुम्हारे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:43 PM

समान दो पशु और भी पहले यहाँ आकर जा चुके हैं। वे भी तुम्हारे ही समान प्रतीज्ञा करके यहाँ से गये, परन्तु अभी तक लौटकर नहीं आये। इस प्रकार दो बार धोखा खाने के उपरान्त अब मैं तुम्हारे ऊपर विश्वास करने को तैयार नहीं हूँ। मैं तुम्हें किसी भी प्रकार लौटकर नहीं जाने दूँगा।'' निषाद ने ऐसे वचन सुनकर हिरण बोला—''हे व्याध ! मैंने अब तक सत्य की रक्षा की है और जीवन में कभी भी झूठ नहीं बोला है। मैं शपथपूर्वक तुमसे यह कहता हूँ कि चाहे जो हो, मैं तुम्हारे पास अवश्य लौटकर आऊँगा।'' यह सुनकर व्याध ने उसे भी जाने की आज्ञा दे दी। तब वह हिरण भी पानी पीकर अपने घर लौट गया।

हे नारद ! जिस समय घर पर हिरण तथा हिरणी सब एक हुए और उन्होंने अपना-अपना वृत्तान्त कहा तो वह एक-दूसरे का हाल सुनकर अत्यन्त शोक करने लगे। तब जो हिरणी सबसे पहले वधिक को विश्वास दिलाकर लौट आयी थी, वह अपने पति से इस प्रकार कहने लगी—''हे स्वामी ! सर्वप्रथम मैं उस बधिक से प्रतिज्ञा करके आयी हूँ। आप यहीं घर में रहकर बच्चों का पालन करते रहें।'' यह सुनकर दूसरी हिरणी ने कहा—''नहीं बहन ! यह कभी नहीं हो सकता। पहली स्त्री घर की स्वामिनी कहलाती है। अस्तु मैं आपको न जाने देकर स्वयं उस वधिक के पास जाऊँगी।'' अपनी दोनों स्त्रियों की ऐसी बातें सुनकर हिरण ने कहा—''पुरुष के रहते हुए स्त्री का जाना श्रेष्ठ नहीं है। अस्तु मैं अपने माँस से उस वधिक के परिवार को तृप्त करूँगा। बच्चों का पालन केवल माता ही कर सकती है।'' अपने पति के यह वचन सुनकर हिरणियों ने एक साथ कहा—''हे स्वामी ! हम विधवा होकर इस घर में कभी नहीं रहेंगी।

हे नारद ! इस प्रकार उन तीनों ने जब स्वयं जाने के लिए आग्रह किया, तब वे सबके सब उस वधिक के पास चले दिये। अपनी माताओं तथा पिता को जाते हुए देखकर बच्चों ने यह सोचा कि जब हमारे रक्षक ही नहीं रहेंगे तो हम किसके आश्रय पर जिएंगे। अस्तु, हमें भी इनके साथ चलना उचित है। तब वे भी उनके साथ चल दिये। इस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रकार हिरण का सम्पूर्ण परिवार उस वधिक के समीप जा पहुँचा। जब वधिक ने उन सबको अपने पास आते हुए देखा तो पूर्व की भाँति फिर अपना धनुष चलाया तो बिल्वपत्र तथा जल पुनः शिवलिंग के ऊपर गिर पड़े और उसके चौथे प्रहर का पूजन समाप्त हो गया। चौथा पूजन होते ही वधिक के सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गये। तब उसे श्रेष्ठ बुद्धि तथा उत्तम ज्ञान की प्राप्ति हुई। जिस समय हिरण ने दोनों हिरणियों तथा बच्चों के सहित उसके पास जाकर यह कहा—"हे वधिक ! अब तुम हमारे शरीर को शुद्ध करके, हम सबका संहार करो।" निषाद अपने मन में इस प्रकार विचार करने लगा कि जिन पशुओं को बुद्धिहीन कहा जाता है, वे मनुष्य की अपेक्षा कहीं अधिक धन्य हैं ; क्योंकि वे अपने शरीर को नष्ट करके भी पराया उपकार करने को तैयार रहते हैं। न जाने इन अशुभ कर्मों के कारण मैं किस अवस्था को प्राप्त होऊँगा?

हे नारद ! इस भाँति अपने मन में निश्चय करके वधिक ने आँखों से आँसू बहाते हुए उन हिरणों को सम्बोधित कर उच्च स्वर में कहा—"हे शुद्ध पशुओ ! तुम अपने घर लौट जाओ, तुम्हारा जीवन तथा तुम्हारा धर्म धन्य है। मैं तुम्हें प्रतिज्ञा के बन्धन से मुक्त करता हूँ।" जिस समय निषाद ने उच्च स्वर से यह शब्द कहा, उसी समय शिवजी अत्यन्त प्रसन्न होकर उसके सम्मुख प्रकट हो गये। उन्होंने वधिक का हाथ पकड़ते हुए इस प्रकार कहा—"हे निषाद ! हम तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हैं। तुमने शिवरात्रि का व्रत रखकर अपने सम्पूर्ण पापों को नष्ट कर दिया है, अब तुम्हारी जो इच्छा हो, वह वर हमसे माँग लो।"

हे नारद ! भगवान् सदाशिव के श्रीमुख से यह वचन सुनकर निषाद उनके चरणों पर गिर पड़ा। फिर हाथ जोड़े हुए केवल यह कह सका—"हे प्रभो ! मैंने आपके दर्शन करके ही सब कुछ पा लिया है।" तब भगवान भूतभावन ने अत्यन्त प्रसन्न होकर उसका नाम स्कन्द रक्खा और स्वयं ही अनेक वर देते हुए यह कहा—"हे निषाद ! तुम्हारे सभी मनोरथ पूर्ण होंगे। तुम श्रृङ्गवेरपुर को अपनी राजधानी बनाकर, वहाँ सुखपूर्वक राज्य करो। तुम्हारे अनेक सन्तानें होंगी तथा सभी देवता तुम्हारी प्रशंसा किया करेंगे। हमारे भक्त रामचन्द्र जी तुम्हें

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:43 PM 85

अपना सेवक जानकर अत्यन्त कृपा करेंगे। वे तुम्हारे घर पधारकर तथा तुम्हें अपना मित्र बनाकर संसार में यश प्रदान करेंगे।'' इतना कहकर भगवान् सदाशिव मौनं हो गये।

हे नारद ! भगवान् भूत भावन के दर्शन पाने से उन हिरणों के भी समस्त पाप नष्ट हो गये। तब उन्होंने भी मृगयोनि त्यागकर देव स्वरूप प्राप्त किया। तदुपरान्त वे शिवजी की कृपा से विमानों पर आरूढ़ हो, देवलोक को चले गये। वे मृग आज तक नक्षत्र रूप से आकाश में दिखाई देते हैं। इस चरित्र को करने के उपरान्त भगवान् सदाशिव प्रत्यक्ष रूप में तो अन्तर्धान हो गये तथा लिंगरूप में वहीं स्थित होकर व्याधेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुए। व्याधेश्वर शिवलिंग अर्वुद गिरि पर स्थित है। श्री शिवजी की कृपा से वह व्याध भी स्कन्द नाम से प्रसिद्ध हो, श्रृंगवेरपुर में जा पहुँचा तथा समस्त भीलों का राजा बनकर सुखपूर्वक राज्य करने लगा। जब त्रेतायुग में राजा रामचन्द्र जी ने अवतार लिया, तो उन्होंने स्कन्द के घर पहुँचकर उसे बहुत सम्मानित किया। रामचन्द्र जी ने अत्यन्त कृपा करके उसे शिवजी की भक्ति प्रदान की तथा शिवजी के अनुग्रह से वह इस लोक में सब प्रकार के सुख भोगकर, अन्त में सायुज्य मृत्यु को प्राप्त हुआ।

हे नारद ! शिवरात्रि के व्रत की ऐसी महान् महिमा है कि उस व्याध ने अनजान में ही शिवरात्रि का व्रत करके मुक्ति को प्राप्त कर लिया। सभी वेद तथा पुराणों ने शिवरात्रि व्रत को सब व्रतों का स्वामी कहा है। व्याधेश्वर शिवलिंग का यह चरित्र भी सम्पूर्ण मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। जो लोग इस चरित्र को पढ़ते, सुनते अथवा दूसरों को सुनाते हैं वे दोनों लोकों में आनन्द प्राप्त करते हैं।''

पाँचवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! अब मैं तुमसे वह वृत्तान्त कहता हूँ, जिस प्रकार गुणनिधि नामक ब्राह्मण ने शिवरात्रि व्रत करके आनन्द

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:43 PM

प्राप्त किया था। गंगा के तट पर द्रुपदपुरी नामक एक नगर बसा हुआ है। उस नगर को कम्पिला कहकर भी पुकारते हैं। वह स्थान अत्यन्त पवित्र है, क्योंकि वहाँ भगवान् सदांशिव रामेश्वर के नाम से तथा भगवती सत्यकाली के नाम से विराजमान हैं। उस नगर में यज्ञदत्त नामक ब्राह्मण शिवजी का परम भक्त था। वह दीक्षित नाम से प्रसिद्ध था। राजा ने उस ब्राह्मण को बहुत सम्मान तथा धन देकर प्रसन्न किया था। उसकी पत्नी परम धर्मात्मा एवं गृहस्थी के कार्यों में अत्यन्त कुशल थी। कुछ समय बाद उस ब्राह्मण के घर एक पुत्र ने जन्म लिया जिसका नाम गुणनिधि रखा गया। यज्ञदत्त ने उसे धर्म-कर्म का ज्ञान कराया एवं सम्पूर्ण विद्याएँ पढ़ायीं फिर बड़े होने पर उसका विवाह भी कर दिया।

हे नारद ! कुछ समय पश्चात् गुणनिधि बुरी संगति में पड़कर महादुष्ट बन गया। उसने वेद तथा पुराणों के धर्म को छोड़ दिया। माता ने स्वयं गुणनिधि को अनेक बार शुभ मार्ग का उपदेश दिया, परन्तु वह किसी भी प्रकार नहीं माना। धीरे-धीरे वह महाव्यभिचारी, चोर, मद्यपी, चुगुलखोर तथा माँसभक्षी बन गया। वह अपनी स्त्री को छोड़कर पर स्त्रियों के साथ रमण करने लगा। इन सब व्यसनों में उसने अपने पिता का धन नष्ट कर डाला। एक दिन वह अपने पिता की हाथ की अँगूठी को कहीं जुए में हार आया। संयोग से यज्ञदत्त ने उसे किसी एक जुआरी के हाथ में देख लिया उससे यह पूछा कि तुमने इस अँगूठी को कहाँ से पाया है। तब जुआरी ने उन्हें यह उत्तर दिया—"मैं इसे चुरा कर नहीं लाया हूँ। तुम्हारा पुत्र बहुत बड़ा जुआरी है, उसी से मैंने इस अँगूठी जुए में जीती है।"

हे नारद ! जुआरी की बात सुनकर यज्ञदत्त लज्जा से अपना मस्तक नीचाकर, घर लौट आया और अपनी स्त्री से गुणनिधि के बारे में यह पूछने लगा कि आजकल तुम्हारे पुत्र का चाल-चलन कैसा है। यद्यपि यज्ञदत्त को सब वृत्तान्त ज्ञात हो चुका था, फिर भी गुणनिधि किसी भी प्रकार के बुरे कर्म में नहीं है। यह सुनकर यज्ञदत्त ने क्रुद्ध हो कुश और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:43 PM

पानी माँगकर, गुणनिधि के नाम कुशोदक छोड़ दिया अर्थात् उसका त्याग कर डाला। यह देखकर गुणनिधि की माता ने हाथ जोड़कर अपने पति को समझाते हुए बहुत प्रार्थना की। तब यज्ञदत्त ने अपने क्रोध को शान्त कर लिया। परन्तु अब गुणनिधि ने अपने पिता के क्रोध का समाचार सुना तो वह उसके भय से रोता-पीटता हुआ घर से बाहर भाग गया।

हे नारद ! गुणनिधि को मार्ग में चलते-चलते जब सूर्यास्त हो गया, तब वह एक स्थान पर बैठकर रोने लगा। संयोगवश उस दिन शिवरात्रि थी। एक शिव भक्त पूजन की सामग्री सहित उसी मार्ग से जा रहा था, जहाँ गुणनिधि थक कर बैठा हुआ था। गुणनिधि को उस समय बड़ी ज़ोर की भूख लग रही थी। जब उसने यह देखा कि वे लोग उत्तमोत्तम पकवानों को शिवजी के ऊपर चढ़ाने के लिए ले जा रहे हैं, तो उसने सोचा कि मुझे भी इन लोगों के साथ शिव मन्दिर में जाना चाहिए। जब ये लोग इन वस्तुओं को शिवजी पर चढ़ाकर निद्रामग्न हो जायेंगे, तब मैं उन्हें उठाकर खा जाऊँगा, जिससे मेरी क्षुधा का निवारण हो जायेगा।

हे नारद ! इस प्रकार निश्चय करके उस शिव भक्त के पीछे चलकर, शिवालय में जा पहुँचा। शिव भक्तों ने मन्दिर के भीतर पहुँचकर षोडषोपचार द्वारा भगवान् सदाशिव की पूजा की, जिसे गुणनिधि ध्यानपूर्वक देखता रहा। तदुपरान्त जब वे लोग मूर्ति के पास से अलग हटकर कुछ ऊँघने लगे, तब वह सब को सोता हुआ जानकर मूर्ति के समीप जा पहुँचा और धीरे-धीरे पग बढ़ाता हुआ शिवजी पर चढ़े हुए नैवेद्य को उठाकर खा लेने की चेष्टा करने लगा। भक्त लोग बाहर के सहन में बैठे हुए थे तथा जहाँ शिवलिंग स्थापित था, वहाँ दीपक बुझ जाने के कारण अन्धकार हो गया था। गुणनिधि ने नैवेद्य को उठाने की इच्छा से अपने शरीर के वस्त्र से एक टुकड़ा फाड़कर सर्वप्रथम बत्ती जलायी, फिर उसने शिवजी के ऊपर चढ़े हुए नैवेद्य को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:43 PM

हाथ में उठा लिया। जब वह मन में अत्यन्त प्रसन्न होता हुआ शीघ्रतापूर्वक शिवालय से बाहर निकला, उस समय संयोगवश किसी शिव भक्त के पावों से उसका पाँव टकरा गया, जिसके कारण उसकी निन्द्रा भंग हो गयी और वह चोर-चोर कहकर चिल्ला उठा।

हे नारद ! शोर हो जाने पर सब लोग उठ बैठे। उसी समय नगर के रक्षक भी उस स्थान पर आ पहुँचे। उन्होंने अपने बाणों द्वारा गुणनिधि को मार डाला। किसी पूर्वजन्म के पुण्य के कारण गुणनिधि मृत्यु के समय तक शिवनिर्माल्य नहीं खा सका था। जो लोग शिवजी पर चढ़े हुए प्रसाद को जिसे शिवनिर्माल्य कहा जाता है—खा लेते हैं, उन्हें बहुत पाप लगता है तथा उन्हें अनेक प्रकार के दुःख उठाने पड़ते हैं। सब वेद तथा पुराणों ने इस बात की पुष्टि की है कि शिव-निर्माल्य खाने से बड़ा पाप लगता है। अस्तु, गुणनिधि की मृत्यु हो जाने पर यमराज के दूत उसे बाँधने के लिए आये, उसी समय शिवजी ने अपने गणों को बुलाकर यह आज्ञा दी—"हे गणो ! गुणनिधि ने शिवरात्रि का व्रत रखकर हमारे पूजन को अपनी आँखों से देखा है तथा हमारा निर्माल्य भी उसने नहीं खाया है। इसके अतिरिक्त उसने दीपक जलाकर अपने हाथ से हमारी आरती उतारी है। इसलिए हमने उसके सभी पाप नष्ट कर दिये हैं और उसे अपना सेवक बना लिया है। जो व्यक्ति शिवरात्रि के दिन हमारा पूजन देखता है, वह हमें अत्यन्त प्रिय है, क्योंकि शिवरात्रि का व्रत सब व्रतों से अधिक श्रेष्ठ है। अस्तु, हमारी कृपा से वह कलिंग देश का राजा होगा, तदुपरान्त कुबेर बनकर हमारे मित्र के नाम से प्रसिद्ध हो, तीनों लोकों में सुयश प्राप्त होगा।"

हे नारद ! शिवजी के मुख से यह आज्ञा सुनकर गणों ने यमदूत के पास पहुँचकर, उनके हाथ से गुणनिधि को छीन लिया और उसे शिवजी के पास ले आये। शिवजी की कृपा से गुणनिधि कलिंग देश का राजा होकर दम नाम से प्रसिद्ध हुआ। तदुपरान्त वह कुबेर बनकर, शिवजी के मित्र के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:43 PM

छठा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे पुत्र ! पूर्वकाल में सौमणि नामक एक ब्राह्मण-पुत्री परम सुन्दरी थी। उसके पिता ने एक योग्य ब्राह्मण-पुत्र के साथ उसका विवाह कर दिया। दोनों पति-पत्नी सुखपूर्वक विहार करते हुए अपना जीवन व्यतीत करने लगे। परन्तु संयोगवश उसका पति युवावस्था में ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। पति के मरने पर कुछ दिनों तक तो सौमणि शुद्ध आचरण से अपना समय व्यतीत करती रही, परन्तु बाद में कामदेव के वेग को सहन न कर सकने के कारण व्यभिचारिणी हो गयी।

हे नारद ! एक दिन जब वह वन में भ्रमण कर रही थी, उसी समय एक शूद्र से उसकी भेंट हो गयी। वह शूद्र उसे अपनी स्त्री बनाकर घर ले आया। उसके साथ रहकर सौमणि मद्य तथा माँस का भी भक्षण करने लगी। शूद्र के द्वारा उसने अनेक सन्तानों को भी जन्म दिया। एक दिन उसका शूद्र पति कहीं बाहर गया हुआ था। उसके पीछे सौमणि ने मद्यपान किया और माँस खाने की इच्छा से गोशाला में, जहाँ बहुत से बकरे भी बँधा करते थे, जा पहुँची। वहाँ उसने रात्रि के अन्धकार में एक बछड़े को बकरा समझकर मार डाला। जब वह उसे मारकर घर के भीतर लायी और यह जाना कि यह बकरा नहीं अपितु बछड़ा है, तब वह शिव-शिव शब्द का उच्चारण करने लगी। परन्तु इतने पर भी बछड़े के माँस को खा गयी तथा उसने कुछ माँस बाहर फेंककर यह प्रसिद्ध कर दिया कि उसे सिंह ने खा लिया है।

हे नारद ! मृत्यु के उपरान्त सौमणि ने एक चाण्डाली के घर में जन्म लिया। वहाँ वह जन्म से ही अंधी हुई। उसके माता-पिता उसे छोटी अवस्था में ही छोड़कर मर गये। अन्धी होने के कारण किसी ने उसके साथ विवाह नहीं किया। फिर उसे कुष्ठ रोग भी हो गया। एक दिन फाल्गुन मास की चतुर्दशी को जब शिव भक्त गोकर्ण क्षेत्र के मेले में जा रहे थे, तो वह भी भोजन पाने की इच्छा से उनके पीछे-पीछे चल

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:43 PM

दी। वहाँ वह दोनों हाथ फैलाकर भिक्षा माँगती थी, परन्तु कोई भी उसके घृणित रूप को देखकर पास नहीं आता था। संयोगवश किसी एक शिवभक्त ने थोड़े-से बिल्वपत्र उसके हाथ पर रख दिये। जब उसने यह देखा कि वे पत्ते खाने योग्य नहीं हैं, तो उसने क्रुद्ध होकर नीचे फेंक दिये। भाग्यवश से बिल्वपत्र एक शिवलिंग पर जा गिरे। तब अन्धी की उस अज्ञानावस्था की पूजा से शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए। रात्रि भर माँगते रहने पर भी किसी ने उसे खाने कुछ नहीं दिया, जिससे अज्ञानावस्था में उसका जागरण तथा निर्जल व्रत भी पूर्ण हो गया।

हे नारद ! प्रातःकाल होने पर जब सब लोग अपने-अपने घरों को लौटने लगे तो वह अन्धी चाण्डालिनी धीरे-धीरे चलती हुई अपने घर को चली, परन्तु मार्ग में ही एक स्थान पर गिरकर मर गयी। उस समय शिवजी ने अपने गणों को विमान सहित उसे लेने भेजा। जिस समय शिवजी के गण उस चाण्डालिनी को लेने के लिए पहुँचे, उस समय गौतम मुनि भी संयोगवश उसी स्थान पर जा पहुँचे। जब गौतम जी ने शिव गणों से यह पूछा कि तुम इस चाण्डालिनी को अपने साथ क्यों लिये जा रहे हो, तब गणों ने उन्हें सब हाल कह सुनाया। फिर शिवगण उस चाण्डालिनी को विमान पर बिठाकर शिवपुरी में ले गये। वहाँ वह मुक्त होकर भगवती गिरिजा की सखियों में सम्मिलित हुई। हे नारद ! शिवरात्रि का व्रत इस प्रकार श्रेष्ठ फल को देने वाला है। राजा मित्रसह भी इस व्रत को करके ब्रह्म हत्या के पाप से मुक्त हुआ था। जो लोग इस आख्यान को पढ़ते अथवा सुनते हैं, उन्हें भी दोनों लोकों में आनन्द प्राप्त होता है।"

सातवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! राजा मित्रसह ने शिवरात्रि का व्रत करके किस प्रकार ब्रह्म हत्या से मुक्ति पायी, वह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:43 PM

वृत्तान्त आप मुझे सुनाने की कृपा करें।" ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! शिवरात्रि का व्रत मुक्ति को देने वाला है। फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी के दिन इस व्रत का जागरण, शिवलिङ्ग दर्शन तथा उन पर बिल्वपत्र चढ़ाना अत्यन्त फलदायक कहा गया है। मोक्ष प्रदान करने में अन्य कोई व्रत इतना शीघ्र प्रभावशाली नहीं है।"

हे नारद ! वैवस्तव मनु के वंश में मित्रसह नामक एक राजा परम धर्मात्मा, वेद-पुराण तथा शास्त्रों को जानने वाला, नीतिज्ञ, दयालु, परम तेजस्वी, महावीर, ब्राह्मणों का सेवक, अत्यन्त सुन्दर तथा शुभ कर्मों को करने वाला हुआ। उसकी पत्नी का नाम दमयन्ती था, जो राजा नल की पत्नी दमयन्ती के समान परम-पतिव्रता थी। एक दिन वह राजा अपनी सेना सहित शिकार खेलने के लिए वन में गया। वहाँ उसने अनेक पशुओं का संहार किया। अन्त में उसकी रुचि ऐसी अधिक बढ़ी कि बहुत समय तक वह अपनी राजधानी में लौटकर नहीं आया। वन में ही डेरा डाले पड़ा रहा।

हे नारद ! उसी वन में राजा ने कमठ नामक एक राक्षस का संहार किया। उस राक्षस का दूसरा भाई भी वहाँ रहता था। जब उसे यह ज्ञात हुआ कि राजा ने मेरे भाई को मार डाला है, तो वह उनसे बदला लेने का उपाय सोचने लगा। निदान वह मनुष्य का रूप धारण कर, राजा के पास पहुँचा और उनसे यह प्रार्थना करने लगा कि आप मुझे अपना सेवक बना लें। राजा ने उस राक्षस की माया को नहीं जाना तथा उसे अपना रसोइया नियुक्त कर लिया। जब कुछ दिन पश्चात् राजा अपनी राजधानी में लौटकर आया तो उसने बड़ी प्रसन्नतापूर्वक अपने गुरु वशिष्ठ जी को भोजन का निमंत्रण भेजा। भोजन तैयार करने के लिए राजा ने उसी रसोइया रूपधारी राक्षस को आज्ञा दी।

हे नारद ! उस रसोइया रूपी राक्षस ने राजा का अहित करने के हेतु जो भोजन तैयार किया, उसमें मनुष्य का माँस पका दिया। जिस समय वह भोजन वशिष्ठ जी के सम्मुख परोसा गया, उस समय वशिष्ठ जी ने अपनी योग दृष्टि द्वारा यह जान लिया कि भोजन में मनुष्य का माँस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मिला हुआ है। तब उन्होंने अत्यन्त क्रुद्ध होकर राजा मित्रसह को यह शाप दिया कि तुम बारह वर्ष तक राक्षस बनकर रहोगे। वशिष्ठ जी द्वारा इस प्रकार शाप दिये जाने पर जब राजा ने विचार किया तो उसे यह भी ज्ञात हो गया कि इस भोजन में रसोइये रूपधारी राक्षस ने, मुझसे अपने भाई की मृत्यु का बदला लेने के लिए मनुष्य का माँस जान बूझकर मिला दिया है, फिर भी राजा का इसमें कोई दोष नहीं था। अस्तु, उन्होंने जब यह देखा कि वशिष्ठ जी ने निर्दोष होते हुए भी मुझे शाप दिया है, तो उसने यह इच्छा की कि मैं भी वशिष्ठ जी को शाप देकर यह प्रमाणित करूँ कि निर्दोष व्यक्ति को शाप देना उचित नहीं है। तब रानी ने राजा को वशिष्ठ जी को शाप देने से रोक दिया। राजा मित्रसह उसी क्षण राक्षस रूप हो गया और कल्माषपाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

हे नारद ! राजा कल्माषपाद वन में जाकर बहुत-से जीवों को दुःख पहुँचाना तथा उन्हें मार कर खाने लगा। एक दिन उसने एक युवा ब्राह्मण को, जो अपनी युवा स्त्री के साथ रमण कर रहा था, जा पकड़ा। उस समय ब्राह्मणी ने राजा को बहुत कुछ समझाया, परन्तु कल्माषपाद ने उसकी एक भी बात नहीं मानी तथा उस ब्राह्मण का सिर फोड़कर खा लिया। यह देखकर ब्राह्मणी ने अपने पति के साथ सती होने का उद्योग किया तथा चिता पर बैठते हुए राजा को यह शाप दिया कि जिस समय तू अपनी स्त्री से भोग करेगा, उसी समय तेरी मृत्यु भी हो जायेगी। इतना कहकर वह स्त्री अग्नि में भस्म हो, पतिलोक में जा पहुँची।

हे नारद ! बारह वर्ष की अवधि बीतने पर राजा पुनः मनुष्य रूप को प्राप्त हुआ तो अपने राज्य में जा पहुँचा। तदुपरान्त एक दिन उसने अपनी रानी के साथ भोग करने की इच्छा प्रकट की। रानी ब्राह्मण पत्नी के शाप का समाचार पा चुकी थी। अस्तु उसने राजा को समझाते हुए भोग करने से रोका। उस समय राजा ने मैथुन के बिना अन्य संसारी भोगों को तुच्छ समझ, राजपाट त्याग, वन में रहने का निश्चय किया

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:43 PM

तथा घर से निकल गया। वन में उसकी भेंट एक मुनि से हुई। उनसे उपदेश पाकर राजा तीर्थयात्रा करने के लिए स्थान-स्थान पर भ्रमण करने लगा। जिस समय राजा मित्रसह राक्षस रूप में था और उसने ब्राह्मण की हत्या की थी, तभी से उसके पीछे ब्रह्म हत्या भी लगी रहती थी। उससे मुक्ति पाने के हेतु जब वह तीर्थयात्रा करता हुआ जनकपुर में पहुँचा, तो वहाँ उसकी भेंट गौतम मुनि से हुई। मुनि को देखकर राजा ने यह प्रार्थना की—''हे मुने ! ब्रह्म हत्या को दूर करने के हेतु मैंने अनेक तीर्थों में भ्रमण किया है, परन्तु वह किसी भी प्रकार दूर नहीं होती है, अतः आप मुझे कोई ऐसा उपाय बताने की कृपा करें, जिससे मेरा यह पाप नष्ट हो जाये।''

हे नारद ! राजा मित्रसह की प्रार्थना सुनकर गौतम जी ने कहा— ''हे राजन् ! तुम इस ब्रह्म हत्या से मुक्ति पाने के हेतु पश्चिम समुद्र के तट पर गोकर्ण क्षेत्र में जाकर महाबल शिवलिंग का पूजन करो। भगवान् सदाशिव के समान मुक्ति देने वाला अन्य कोई नहीं है। हम भी उसी गोकर्ण क्षेत्र से चले आ रहे हैं।'' ऋषि से यह उपदेश सुनकर राजा मित्रसह गोकर्ण क्षेत्र में जा पहुँचा। वहाँ महाबल शिवलिंग का पूजन करने, क्षेत्र में स्नान करने तथा शिवरात्रि का व्रत करने से वह मुक्त हो गया। ब्राह्मणी का शाप भी उस शिवभक्ति के कारण निष्फल हो गया। तब वह समस्त पापों से मुक्त हो, घर लौट आया तथा आनन्दपूर्वक अपनी रानी के साथ भोग-विलास करने लगा। हे नारद ! शिवरात्रि का व्रत मोक्ष प्रदान करने वाला है। राजा मित्रसह का यह वृत्तान्त भी अत्यन्त आनन्ददायक है। जो लोग इस चरित्र को प्रतिदिन पढ़ते अथवा सुनते हैं, उनकी इक्कीस पीढ़ी तर जाती हैं।''

आठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं चतुर्दशी के व्रत का माहात्म्य कहता हूँ। यदि यह व्रत अनजान में भी हो जाए तो भी श्रेष्ठ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

फल प्रदान करता है। पूर्व समय में किरात देश का विमर्षण नामक एक राजा था। वह अत्यन्त बलवान्, धैर्यवान्, दुष्ट, अन्यायी, नीच, हिंसक, कामी, क्रोधी, कठोर, सभी जीवों का मांस खाने वाला तथा सभी वर्णों की स्त्रियों के साथ भोग करने वाला था। परन्तु इतना सब होते हुए भी वह चतुर्दशी के व्रत को बहुत प्रिय समझता था। दोनों पक्षों की चतुर्दशी को वह शिवजी का विशेष रूप से पूजन करता तथा बड़ा उत्सव मनाकर शिव-व्रत करता था। उस दिन वह शिवजी के सम्मुख नृत्य-गायनकर, सब लोगों को दान देता और सभी पाप कर्मों को त्याग देता था।

हे नारद ! विमर्षण की रानी का नाम कुमुदवती था। वह परम सुशीला पतिव्रता तथा कलाकुशल थी। एक दिन उसने अपने पति को अधर्मों में लिप्त देखकर इस प्रकार कहा—"हे स्वामिन् ! आप प्रतिदिन माँस भक्षण करते हैं तथा सभी प्रकार की स्त्रियों के साथ भोग-विलास में संलग्न रहते हैं। आपने बहुत-से जीवों का वध भी किया है तथा प्रत्येक प्रकार का पाप कर्म आपको प्रिय है। परन्तु इतने पर भी आप शिवजी का पूजन किया करते हैं, यह देखकर मुझे अत्यन्त आश्चर्य होता है। अस्तु मैं आपसे यह जानना चाहती हूँ कि आपने शिवजी के प्रति ऐसी प्रीति का उपदेश कहाँ प्राप्त किया है?"

हे नारद ! रानी के ऐसे वचन सुनकर विमर्षण ने हँसते हुए उत्तर दिया—"हे रानी ! पूर्वजन्म में मैं एक कुत्ता था तथा प्रतिदिन पम्पासुर नामक नगर में भ्रमण किया करता था। मेरा सम्पूर्ण जीवन भूख-प्यास में व्याकुल हो, इधर-उधर भ्रमण करने पर व्यतीत हुआ। संयोगवश एक दिन मैं एक शिव मन्दिर के सम्मुख जा पहुँचा। उस समय मन्दिर में शिवजी के अनेक भक्त पूजन कर रहे थे। मुझे वहाँ खड़े देखकर जब उन शिवभक्तों ने मुझे मारकर भगाया, तो मैं कुछ देर के लिए तो इधर-उधर हट गया, परन्तु फिर शिवलिंग पर चढ़ी हुई सामग्री को खाने की इच्छा से, उसी स्थान पर जा पहुँचा। मैं उस शिवालय के चारों ओर बार-बार चक्कर काटता हुआ, भोजन के लोभ से शिवजी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:44 PM

का पूजन देखता रहा। तब मुझे मन्दिर के पास से हटते न देखकर, एक मनुष्य ने अत्यन्त क्रुद्ध हो, मेरे ऊपर बाण का प्रहार किया। उस बाण के लगते ही मैं निर्जीव होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। इस प्रकार शिवपूजन देखते हुए मेरी मृत्यु हुई।''

''हे प्रिये ! इस प्रकार मैंने पूर्वजन्म में चतुर्दशी का पूजन तथा दीपों की माला देखी थी। उस पुण्य के कारण मैं भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों का सम्पूर्ण हाल जानता हूँ। पूर्वजन्मों के संस्कारों के कारण में भक्ष्याभक्ष्य सभी वस्तुओं को खाता हूँ, तो भी चतुर्दशी के दिन शिवजी का पूजन करना नहीं छोड़ता। इस पूजन का ही यह प्रताप है कि मेरे अशुभ-कर्म शुभ-कर्मों में परिवर्तित हो जाते हैं। हे रानी ! मैं यह चाहता हूँ कि तुम भी शिवपूजन के माहात्म्य को समझकर चतुर्दशी के दिन भगवान् सदाशिव की पूजा किया करो।'' राजा के ऐसे वचन सुनकर रानी ने कहा—''हे प्रभो ! आप मेरे पूर्वजन्मों का हाल भी बताने की कृपा करें।''

हे नारद ! यह सुनकर राजा ने उत्तर दिया—''हे प्रिये ! पूर्वजन्म में तुम एक कबूतरी थीं। एक दिन तुम्हें माँस का एक टुकड़ा मिला। तभी एक गिद्ध ने तुम्हारा पीछा किया, जिससे भयभीत होकर तुम भागती हुई श्रीगिरि शिवालय पर जा बैठीं, परन्तु गिद्ध ने वहाँ भी पहुँचकर तुमसे माँस का टुकड़ा छीन लिया तथा तुम्हें घायल करके उड़ गया। उसी घायलावस्था में तुम शिवालय में गिरकर मृत्यु को प्राप्त हो गयीं। मृत्यु के समय तुमने शिवलिंग के दर्शन किये। उस पुण्य प्रताप से इस जन्म में तुम हमारी रानी हुई हो।'' तब उसने राजा से इस प्रकार कहा—''हे स्वामिन् ! अब आप कृपाकर अपने तथा मेरे भविष्य का वृत्तान्त और सुनावें।''

हे नारद ! यह सुनकर राजा ने कहा—''हे प्रिये ! अगले जन्म में, मैं सिन्धु देश का राजा बनूँगा और तुम राजा संजय की पुत्री बनकर जन्म लोगी। तब भी तुम्हारा विवाह मेरे साथ होगा। तीसरे जन्म में, मैं सौराष्ट्र के राजा का पुत्र होकर तुम्हारे साथ विवाह करूँगा। तब तुम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:44 PM

कलिंग देश के राजा की कन्या बनकर जन्म लोगी। चौथे जन्म में, मैं गान्धार देश के राजा का पुत्र होकर तुम्हारे साथ विवाह करूँगा। तब तुम मगध देश की राजा के यहाँ पुत्री का जन्म पाओगी। पाँचवें जन्म में, मैं उज्जयिनी के राजा का पुत्र बनूँगा और तुम राजा दशारण्य की पुत्री होकर मेरे साथ ब्याही जाओगी। छठे जन्म में मैं अनर्त देश के राजा का पुत्र बनूँगा और तुम राजा ययाति के कुल में उत्पन्न होकर मेरी पत्नी होगी। तदुपरान्त सातवें जन्म में पांचाल देश के राजा पद्मपर्ण के रूप में मेरा जन्म होगा और तुम विदर्भ देश के राजा के घर में बसुमती नाम से जन्म ग्रहण करोगी। जब तुम्हारे पिता स्वयम्वर की रचना करेंगे, तो मैं अन्य राजाओं को जीतकर तुम्हें ले आऊँगा और तुम्हारे साथ विवाह करूँगा। उस समय हम दोनों भगवान् सदाशिव की पूजा में संलग्न होकर भोग-विलास करते हुए सन्तान उत्पन्न करेंगे। अन्त में, हम दोनों अपने पुत्र को राज्य देकर वन में चले जायेंगे। वहाँ अगस्त्य मुनि से ज्ञान प्राप्त कर, शिवलोक को प्राप्त होंगे। तब हमारी गणना शिवजी के गणों में होगी। इस प्रकार चतुर्दशी व्रत के प्रभाव से हम सात जन्म तक राजा-रानी होते रहेंगे।''

हे नारद ! इस प्रकार की बहुत-सी बातें कहकर राजा विमर्षण ने अपनी पत्नी को सन्तुष्ट किया तथा अपना शेष जीवन शिव पूजन एवं चतुर्दशी व्रत धारण करने में बिता दिया। सातवें जन्म में इसी व्रत के प्रभाव से उसकी मुक्ति हुई। चतुर्दशी व्रत की ऐसी महान् महिमा है। राजा विमर्षण का यह वृत्तान्त भी आनन्द मंगलों को देने वाला है। जो लोग इसे पढ़ते अथवा सुनते हैं, उनकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।''

नौवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं प्रदोष अर्थात् त्रयोदशी का व्रत वर्णन करता हूँ। मैं उन स्त्री-पुरुषों को परम धन्य समझता हूँ, जो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इस व्रत को धारण करते हैं। प्रत्येक मास के दोनों पक्ष में दो त्रयोदशी आती है। इस व्रत का विधान यह है कि प्रातःकाल के समय स्नान आदि नित्य कर्मों से निवृत्त हो, भगवान् सदाशिव का पूजन करे तथा व्रत का संकल्प करके प्रदोष व्रत धारण करे। जब तीन घड़ी दिन शेष रह जाए, तब अपनी शक्ति के अनुसार पुनः स्नान कर मौन धारण करे तथा श्वेत वस्त्र पहने। सन्ध्या के समय जप करने के उपरान्त प्रेमपूर्वक भगवान् सदाशिव का षोडषोपचार पूजन करे तथा स्तुति करता हुआ, उन्हें प्रसन्नतापूर्वक दंडवत् प्रणाम करे। तत्पश्चात् ब्राह्मण भोजन कर चुके, तब स्वयं भी बिना नमक का भोजन करे।

हे नारद ! इस प्रकार किया हुआ प्रदोष व्रत सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने वाला होता है। इसके समान अन्य कोई व्रत नहीं है। वेद और पुराणों का यह कहना है कि प्रदोषकाल में किया हुआ शिवजी का पूजन अत्यन्त आनन्ददायक होता है, यह बात तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। इस सम्बन्ध में, मैं तुमसे एक विचित्र वृत्तान्त कहता हूँ, उसे ध्यानपूर्वक सुनो।

हे नारद ! पुरातन काल में उज्जयिनी पुरी में चन्द्रसेन नामक एक राजा शिवजी का परम भक्त हुआ। वह सदैव त्रयोदशी का व्रत रखता और विधिपूर्वक शिवजी का पूजन किया करता था। वह महाकाल लिंग की पूजा करता और हर समय उन्हीं के ध्यान में मग्न बना रहता था। एक दिन मणिभद्र नामक शिवजी के एक गण ने उस राजा पर प्रसन्न होकर, उसे चिन्तामणि नामक एक मणि दी। उस मणि का यह गुण था कि जिस मनुष्य के पास वह मणि रहती थी तथा जो मनुष्य उसे देखता, स्पर्श करता अथवा स्मरण करता था, वह सम्पूर्ण विपत्तियों से छूटकर अतुलनीय आनन्द को प्राप्त करता था। उस मणि का स्पर्श पाते ही सभी धातुएँ स्वर्ण की हो जाती थीं अस्तु, उस मणि को धारण करने के कारण राजा चन्द्रसेन सूर्य के समान तेजस्वी प्रतीत होने लगा।

हे नारद ! जब अन्य राजाओं को उस मणि का प्रभाव ज्ञात हुआ, तब उन्होंने चन्द्रसेन से उस मणि को स्वयं प्राप्त करना चाहा, परन्तु

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:44 PM

राजा ने किसी को भी वह मणि नहीं दी। निदान सब राजाओं ने एकत्रित होकर उसके नगर पर चढ़ाई कर दी। जब उज्जयिनी पुरी के चारों ओर उन राजाओं की सेनाएँ घेरा डाले पड़ी हुई थीं तथा सभी नगर निवासी अत्यन्त व्याकुल हो रहे थे, उस समय दूसरे दिन शिवजी का प्रदोष व्रत आया। तब राजा अपने शत्रुओं की कुछ भी चिन्ता न करके, तीन घड़ी दिन शेष रहने पर भगवान् महाकाल का पूजन करने के निमित्त मन्दिर जा पहुँचा। जिस समय राजा चन्द्रसेन महाकाल का पूजन कर रहा था, उसी समय एक स्त्री अपनी गोद में पाँच वर्ष के एक बालक को लेकर, कहीं से उसके पास आ पहुँची। राजा जिस प्रकार शिवजी का पूजन कर रहा था, उस विधि को उस स्त्री का बालक बड़े ध्यानपूर्वक देखता रहा। कुछ देर बाद जब वह स्त्री अपने पुत्र को साथ लेकर घर चली गयी, तब घर जाकर उस बालक के हृदय में शिवजी की ऐसी भक्ति उत्पन्न हुई कि वह कहीं से एक पत्थर का टुकड़ा उठा लाया और जिस प्रकार उसने राजा को पूजन करते हुए देखा था। उसी प्रकार स्वयं भी उसका पूजन करने का प्रयत्न करने लगा।

हे नारद ! जिस समय वह छोटा-सा बालक शिलाखण्ड का पूजन करने में संलग्न था, उसी समय उसकी माता ने उसको भोजन करने के लिए दो-तीन बार आवाज़ें दीं, परन्तु वह उन्हें सुनकर भी अपने स्थान पर निश्चल भाव से बैठा रहा। तब वह स्त्री स्वयं अत्यन्त क्रोध में भरकर उसके पास जा पहुँची। जब उसने बालक को एक पत्थर का पूजन करते हुए देखा तो पहले तो उसे खूब मारा, फिर उस शिवलिंग को उठाकर दूर फेंक दिया। इसके बाद वह उसे हाथ पकड़कर घर के भीतर खींच ले गयी। तब वह बालक हाय-हाय करके रोने लगा तथा उसी अवस्था में मूर्च्छित हो गया। मूर्च्छावस्था में उसने एक दृश्य देखा, जिसमें यह जान पड़ता था कि एक शिवालय रत्नों से बना हुआ है। उसके मध्य में एक रत्नजटित सिंहासन रखा है तथा उस सिंहासन पर उसका शिवलिंग प्रतिष्ठित था। उस दृश्य को देखकर बालक ने भगवान् सदाशिव की अत्यन्त स्तुति करते हुए यह प्रार्थना की—"हे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:44 PM

प्रभो ! मेरी माता मूर्ख है, अतः आप उसका अपराध क्षमा कर दें।''

हे नारद ! सन्ध्या के समय जब उस बालक की आँख खुलीं तो उसने यह देखा कि उसका घर सचमुच ही रत्न तथा स्वर्ण से निर्मित परम सुन्दर हो गया है। इस अद्‌भुत चरित्र को देखकर बालक ने उस शैय्या के समीप पहुँचकर अपनी माता को जगाया। जब माता ने अपनी आँखें खोलीं और वह अद्‌भुत चरित्र देखा तो अत्यन्त प्रसन्नता में भरकर अपने पुत्र से कहने लगी—''हे पुत्र ! यह सब शिवजी की कृपा का फल है। अस्तु किसी प्रकार का आश्चर्य नहीं करना चाहिए।'' जब राजा चन्द्रसेन को यह समाचार मिला कि उस बालक की भक्ति से प्रसंन्न होकर शिवजी ने ऐसी कृपा की है, तो वह स्वयं उस मन्दिर को देखने गया। वहाँ उसने बालक की तथा उसकी माता की अत्यन्त प्रशंसा की। जब अन्य आक्रामक राजाओं को यह समाचार मिला, तो वे उस नगर पर शिवजी की ऐसी कृपा देखकर अपने-अपने घर को लौट गये।''

दसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! जब अन्य राजाओं ने अपने दूतों द्वारा शिवजी की कृपा का यह समाचार सुना, तो उन्हें अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उस समय उन सब ने परस्पर विचार किया कि जिस स्थान पर शिवजी की ऐसी कृपा है, वहाँ हम किस प्रकार विजय प्राप्त कर सकते हैं? अस्तु, सभी एकत्रित हो, शस्त्र डाल, राजा चन्द्रसेन के समीप जा पहुँचे और उससे अपने अपराधों की क्षमा याचना करने लगे। तदुपरान्त सबने उस स्त्री के घर पहुँचकर वह दृश्य अपनी आँखों से देखा तथा उस बालक की अत्यन्त प्रशंसा की। फिर उन्होंने उस बालक को अपनी ओर से असंख्य धन देकर, सब गोपों का राजा बनाया।

हे नारद ! जिस समय सब राजा उस बालक के घर उपस्थित थे,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:44 PM

उसी समय हनुमान जी ने वहाँ प्रकट होकर सबको अपने दर्शन से कृतार्थ किया। हनुमान जी को देखकर सब राजाओं ने दंडवत् की। तब हनुमान जी उस बालक को अपनी गोद में लेकर सब लोगों को सम्बोधित करते हुए इस प्रकार बोले—"हे राजाओ ! राजा चन्द्रसेन के ऊपर शिवजी की अत्यन्त कृपा है। भगवान् सदाशिव ने त्रयोदशी व्रत का माहात्म्य प्रकट करने के लिए ही यह सब चरित्र किया है। अब उचित है कि तुम सब लोग भी भगवान् सदाशिव के सेवक बनो। विशेषकर जब त्रयोदशी के दिन शनिवार हो, तब उसका महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है। दोनों पक्षों की त्रयोदशी तिथियों में शुक्लपक्ष की चतुर्दशी अधिक शुभ कही गयी है। इस बालक ने शुक्लपक्ष की शनिवार युक्त चतुर्दशी को शिवजी का पूजन किया, इसलिए इसे ऐसी शुभ गति प्राप्त हुई है। इस बालक की आठवीं पीढ़ी में नन्द नामक गोपों का एक राजा उत्पन्न होगा। उसके घर में भगवान् विष्णु कृष्ण रूप में अवतार लेंगे। आज से वह बालक श्रीकर के नाम से संसार में प्रसिद्ध होगा। तुम सब लोग अपने-अपने घर जाओ और भगवान् सदाशिव की पूजा में संलग्न रहो। तुम सब प्रदोष व्रत में भस्म आदि धारण कर प्रदोष के भीतर ही भगवान् सदाशिव का पूजन किया करना।"

हे नारद ! इतना कहकर हनुमान जी ने श्रीकर को शिव पूजन की विधि का उपदेश दिया। सर्वप्रथम उन्होंने नाम के माहात्म्य का वर्णन किया, फिर भस्म धारण करने की रीति बतलायी, अन्त में रुद्राक्ष की महिमा सुनाकर अन्तर्धान हो गये। उस समय श्रीकर ब्राह्मण के साथ भगवान् सदाशिव का पूजन तथा त्रयोदशी का व्रत करने लगा। राजा चन्द्रसेन तथा श्रीकर दोनों की शिवभक्तों में प्रमुख तथा त्रयोदशी का व्रत धारण करने वालों में अत्यन्त प्रसिद्ध हुए। हे नारद ! त्रयोदशी व्रत की ऐसी महिमा है। त्रयोदशी व्रत का यह माहात्म्य सम्पूर्ण मनोरथों को प्रदान करने वाला है। जो लोग इस कथा को पढ़ते, सुनते अथवा दूसरों को सुनाते हैं, वे भी दोनों लोकों में आनन्द प्राप्त करते हैं।"

❁❁❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:44 PM

ग्यारहवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! आप मुझे त्रयोदशी व्रत का माहात्म्य सुनाने की कृपा कीजिये।" ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! शिवजी का ध्यान करने वाले मनुष्य संसार में परम धन्य हैं। जो मनुष्य अन्य सब धर्मों को त्याग कर, केवल भगवान् सदाशिव का पूजन करते हैं, वे भव बन्धन से छूटकर, मुक्ति पद को प्राप्त करते हैं। जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक त्रयोदशी का व्रत धारण करता है, उस पर शिवजी सदैव अपनी कृपा बनाये रहते हैं। त्रयोदशी का व्रत करने से शिवजी के चरणों में प्रेम बढ़ता है। ऐसे मनुष्य को सभी ऋद्धि सिद्धियाँ अनायास ही प्राप्त हो जाती हैं।

हे नारद ! त्रयोदशी के व्रत में भगवान् सदाशिव का पूजन प्रदोष काल में करना चाहिए। इस व्रत में भगवान् शंकर के अतिरिक्त अन्य किसी देवता की पूजा करना उचित नहीं है।" जो मनुष्य प्रदोष व्रत धारण करता है, वह कभी भी दरिद्री नहीं रहता। प्रदोष काल में भगवान् सदाशिव की पूजा करना ही श्रेष्ठ है। ऐसी पूजा करने वाले लोग, धन, सन्तान, स्त्री, पुत्र आदि सभी वस्तुओं को प्राप्त करते हैं। प्रदोष काल में सभी देवता भगवान् सदाशिव का पूजन करने के लिए उनकी शरण में जाते हैं। उस समय शिवजी शिवरानी सहित सिंहासन पर शोभायमान होते हैं।

हे नारद ! प्रदोष काल में शिवजी की जो सभा जुटती है, उसका कुछ वर्णन इस प्रकार है कि उस समय सब देवता तथा ऋषि-मुनि शिव-गिरिजा के चारों ओर बैठकर उनका भजन तथा कीर्तन करते हैं। विष्णु जी मृदंग बजाते हैं, मैं करताल बजाता हूँ, सरस्वती वीणा बजाती हैं, लक्ष्मी गीत गाती हैं, तुम भी वीणा बजाते हो, अन्य सब देवता तथा उपदेवता सेवा में खड़े होकर उनके यश का वर्णन करते हैं। इस प्रकार प्रदोषकाल में सभी देवता शिवजी की सेवा में संलग्न रहते हैं। इतने पर भी यदि कोई मनुष्य शिवजी के अतिरिक्त किसी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:44 PM

अन्य देवता का प्रदोष काल में पूजन करता है तो वह देवता पूजन करने वाले पर अत्यन्त क्रुद्ध होकर यह कहता है कि कैसा मूर्ख है, जो इस समय शिवजी का ध्यान न करके, हमारी पूजा कर रहा है। इसलिए यही उचित है कि प्रदोषकाल में अन्य सबको त्यागकर, केवल भगवान् सदाशिव का ही पूजन किया जाए इस संबंध में मैं तुम्हें एक विचित्र आख्यान सुनाता हूँ, उसे ध्यानपूर्वक सुनो।

हे नारद ! दक्षिण दिशा में विदर्भ नामक देश में सत्यरथ नामक एक राजा राज्य करता था। वह न्याय तथा दया का आश्रय लेकर, धर्म पूर्वक अपनी प्रजा का पालन करता था इसलिए उसके राज्य में कोई भी दु:खी न था। एक बार शाल्व नामक राजा ने उसके नगर पर चढ़ाई कर दी। उस युद्ध में राजा सत्यरथ मारा गया। तब उसकी रानी नगर से भागकर, बाहर विपिन की ओर चल दी। रात भर चलती हुई, जब सवेरे वह एक तालाब के समीप पहुँची, तो वहाँ उसने शुभ लग्न में एक पुत्र को जन्म दिया। प्रसव के उपरान्त रानी को ज़ोर से प्यास लगी, जिससे वह तालाब के तट पर पानी के लिए जा पहुँची। जैसे ही उसने तालाब में से पानी लेने को हाथ आगे बढ़ाया, वैसे ही एक घड़ियाल ने उसे निगल लिया। इस प्रकार रानी भी मृत्यु को प्राप्त हो गयी। तब वह बालक अपने स्थान पर अकेला खड़ा हुआ, क्षुधा-तृषा से व्याकुल हो, रुदन करने लगा।

हे नारद ! उस बालक को रोते हुए देखकर शिवजी को बहुत दया आयी। तब उनकी कृपा से एक विधवा ब्राह्मणी, अपने पाँच वर्षीय पुत्र को साथ लिये उसी स्थान पर जा पहुँची, जहाँ वह बालक पड़ा हुआ था। जिस समय वह स्त्री उस बालक को अकेला पड़ा हुआ देखकर आश्चर्य में भरकर यह विचार कर रही थी कि इस नवजात शिशु को यहाँ कौन छोड़ गया है तथा इसका पालन किस प्रकार होगा। उसी समय भगवान् सदाशिव एक भिक्षुक ब्राह्मण का स्वरूप धारण कर, उस स्थान पर जा पहुँचे और ब्राह्मणी से कहने लगे—"हे ब्राह्मणी ! तुम सन्देह त्याग इस बालक का पालन करो।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे नारद ! ब्राह्मण रूपी शिवजी के मुख से यह वचन सुनकर उस विधवा ब्राह्मणी ने कहा—"हे महात्मन् ! आप मुझे इस बालक के पूर्वजन्म का वृत्तान्त सुनाने की कृपा करें।" शिवजी बोले—"हे ब्राह्मणी ! यह बालक पूर्वजन्म में एक राजा का पुत्र था। एक समय यह त्रयोदशी व्रत धारण करके शिवजी का पूजन कर रहा था, उसी समय इसे अपने सेवकों द्वारा नगर में उत्पात होने की सूचना मिली। तब वह अपने पूजन को अधूरा छोड़कर शत्रु को देखने के लिए चल दिया। जब इसने उत्पात मचाने वाले व्यक्ति को देखा, तो क्रुद्ध होकर अपनी तलवार द्वारा उसका सिर काट डाला। तदुपरान्त यह उसी अशुद्ध दशा में भोजन करने चला गया तथा पूजन को पूर्ण करना भूल गया। उसी अपराध के कारण अब वह विदर्भ नरेश के यहाँ उत्पन्न होकर, ऐसी बुरी दशा को प्राप्त हुआ।"

"हे ब्राह्मणी ! त्रयोदशी का व्रत त्याग देने पर किसी भी मनुष्य को सुख नहीं मिल सकता। इसकी माता ने अपने पूर्वजन्म में अपनी सौत को छल द्वारा मार डाला था। उसी अपराध के कारण इस जन्म में उसे घड़ियाल खा गया है। तुम्हारे साथ जो एक पुत्र है उसके पूर्वजन्म का वृत्तान्त यह है कि इसने पूर्वजन्म में कुधान्य का दान ग्रहण किया था, इसलिए अब यह दरिद्री बनकर तुम्हारे बालक के रूप में उत्पन्न हुआ है। अब तुम्हें उचित है कि तुम अपने बालक की तथा इस राजपुत्र की देखभाल करो। जब ये बालक कुछ बड़े हो जाएँ, तब तुम इन दोनों से शिवजी का पूजन कराना। शिव-पूजन के प्रताप से ये दोनों सब प्रकार की संसारी धन-सम्पत्तियों को प्राप्त करेंगे तथा तुम्हें भी सुख पहुँचावेंगे। मृत्यु के उपरान्त तुम तीनों ही मुक्ति पद को प्राप्त करोगे।" इतना कहकर भगवान् सदाशिव ने उस ब्राह्मणी को अपने मुख्य स्वरूप का दर्शन दिया। उस रूप को देखकर ब्राह्मणी ने अत्यन्त प्रसन्न हो, दंडवत् प्रणाम तथा स्तुति की। तत्पश्चात् शिवजी अन्तर्धान हो गये।"

❀❀❀

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:44 PM

बारहवाँ अध्याय

नारद जी ने कहा—"हे पिता ! इसके पश्चात् क्या चरित्र हुआ?" ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! वह ब्राह्मणी उस राजपुत्र को तथा अपने पुत्र को साथ लेकर चक्र नामक नगर में आकर रहने लगी। वह भिक्षाटन करके उन बालकों का पालन करती थी। कुछ समय बाद जब वे बालक बड़े हुए तो उन्होंने सुगमतापूर्वक सभी विद्याओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया। एक दिन उन दोनों बालकों ने शाण्डिल्य मुनि को अपने शिष्यों सहित भगवान् सदाशिव के गुणों का वर्णन करते हुए देखा। तब वे उनसे मंत्र लेकर, शिवजी की आराधना करने लगे। मुनि के उपदेश से उन्होंने प्रदोष व्रत रखना भी आरम्भ कर दिया।

हे नारद ! जब उन्हें व्रत करते हुए चार महीने व्यतीत हो गये, तब यह घटना घटित हुए कि एक दिन वे दोनों नदी में स्नान करके शिवजी का बाना धारण किये, अपने घर को लौट रहे थे कि उन्हें मार्ग में शिवजी की कृपा से धन से भरा हुआ एक घड़ा दिखाई दिया। वे उस घड़े को उठाकर अपनी माता के पास ले आये। उस धन को देखकर माता ने यह आज्ञा दी कि तुम दोनों इस धन को बराबर-बराबर बाँट लो। यह सुनकर राजपुत्र ने उत्तर दिया—"हे माता ! इस धन को तुम्हारे पुत्र ने पाया है। अस्तु, मैं इसे ग्रहण नहीं करूँगा। भगवान् सदाशिव जब मुझ पर कृपा करेंगे, तब मैं स्वयं ही असंख्य धन प्राप्त कर लूँगा।" इतना कहकर उस राजपुत्र ने वह सम्पूर्ण धन ब्राह्मणी के पुत्र को दे दिया और स्वयं पहले के समान शिव-पूजन एवं प्रदोष व्रत करता रहा।

हे नारद ! इसी प्रकार जब एक वर्ष और व्यतीत हो गया, तब एक दिन वे दोनों किसी वन में जा पहुँचे। वहाँ एक परम सुन्दरी गन्धर्व कन्या खड़ी हुई थी। राजपुत्र उस कन्या के पास जा पहुँचा। वह कन्या भी राजपुत्र को देखकर प्रेम मग्न हो गयी। तदुपरान्त दोनों में परचिय का आदान-प्रदान हुआ। उस कन्या ने कहा—"हे राजपुत्र ! मैं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:44 PM

109

कोद्रविक नामक गन्धर्व की पुत्री हूँ। मेरा पिता सब गन्धर्वों का राजा है। मैं गान विद्या में अत्यन्त प्रवीण हूँ। यह सब भगवान् सदाशिव की कृपा की है जो मैंने यहाँ तुमको प्राप्त किया है। अब तुम मेरे पति बनना स्वीकार करो।'' यह कहकर उसने राजपुत्र के कंठ में एक मोतियों की माला पहना दी। तब राजपुत्र ने कहा—''हे गन्धर्व पुत्री ! मैं जाति-पाति से बहिष्कृत तथा राज्य से हीन हूँ। अभी तो तुमने अपने पिता की आज्ञा भी प्राप्त नहीं की है। इस प्रकार माला पहनना कहाँ तक उचित है!'' गन्धर्व पुत्री ने उत्तर दिया—''हे स्वामिन् ! मैं अपने माता-पिता की आज्ञा लेकर तुम्हारे साथ विवाह करूँगी और तुम्हारी रानी बनकर रहूँगी। तुम आज से तीसरे दिन अमुक स्थान पर आ जाना। वहीं मेरी व तुम्हारी पुनः भेंट होगी।'' इस प्रकार कहकर वह गन्धर्व कन्या चल दी। तब राजपुत्र भी अपने घर लौट आया।

हे नारद ! तीसरे दिन जब वह राजपुत्र निश्चित स्थान पर पहुँचा, तो वहाँ उसने गन्धर्व कन्या तथा उसके पिता को पहले से ही उपस्थित पाया। उस समय गन्धर्व राज ने राजपुत्र को सम्बोधित करते हुए इस प्रकार कहा—''हे राजपुत्र ! मैं भगवान् सदाशिव के यहाँ नृत्य-गायन करने के लिए गया था, वहाँ श्री शंकर जी ने मुझे यह बताया कि पृथ्वी पर धर्मगुप्त नामक एक राजपुत्र अपने माता-पिता तथा राज्य से हीन होकर, आज कल गुरु के उपदेश द्वारा त्रयोदशी का व्रत कर रहा है। उसके व्रत के प्रभाव से उसके सभी पितर पापों से मुक्त होकर, हमारे लोक में आ पहुँचे हैं। अस्तु तुम्हें उचित है कि अब तुम राजपुत्र के समीप पहुँचकर उसकी सहायता करो, जिससे वह अपने शत्रुओं पर विजय पाकर फिर से अपने सिंहासन पर आरूढ़ हो सके।''

हे राजपुत्र ! शिवजी की उस आज्ञानुसार मैं तुम्हारे पास आया हूँ। सर्वप्रथम मैं अपनी पुत्री का विवाह तुम्हारे साथ किये देता हूँ, इसके अनन्तर मैं तुम्हारे शत्रुओं का नाश करके, तुम्हारा राज्य वापिस दिलवाऊँगा। तुम अपने राज्य को फिर प्राप्त करके अपनी रानी सहित संसारी भोग भोगोगे तथा अन्त में शिवलोग को प्राप्त होओगे।'' इतना

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कहकर गन्धर्वराज ने अपनी पुत्री का विवाह उस धर्मगुप्त नामक राजपुत्र के साथ कर दिया। तदुपरान्त वह राजपुत्र के सब शत्रुओं का नाश कर आया और उसे उसका राज्य वापस दिला दिया। इतना सब चरित्र करने के उपरान्त गन्धर्व अपने देश को लौट गया। तब राजा धर्मगुप्त अपनी रानी सहित सुखपूर्वक राज्य करने लगा। उसने अपनी माता के समान ब्राह्मणी को तथा उसके पुत्र को भी अपने साथ बुला लिया। हे नारद ! त्रयोदशी का व्रत इस प्रकार चारों पदार्थों को देने वाला है। जो लोग इस चरित्र को पढ़ते-सुनते अथवा दूसरों को सुनाते हैं, उन्हें भी दोनों लोकों में अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है।''

तेरहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! पुरातन काल में एक बार देवताओं तथा दैत्यों में बड़ा युद्ध हुआ। देवताओं के अधिपति इन्द्र थे और दैत्यों का अधिपति वृत्रासुर था। उस युद्ध में वृत्रासुर ने अपना शरीर इतना बड़ा किया कि किसी भी देवता में उसका सामना करने की सामर्थ्य नहीं रही। तब सब देवता युद्ध स्थान को छोड़कर भाग खड़े हुए और बृहस्पति की शरण में जाकर इस प्रकार कहने लगे—''हे प्रभो ! वृत्रासुर ने हमें युद्ध क्षेत्र में पराजित कर भाग दिया है। हममें इतनी शक्ति नहीं है कि जो किसी भी प्रकार उसका सामना कर सकें। अस्तु, आप कृपा करके कोई उपाय बतलाइये, जिससे हमें विजय प्राप्त हो।''

हे नारद ! देवताओं की प्रार्थना सुनकर बृहस्पति ने भगवान् सदाशिव का ध्यान धरते हुए उत्तर दिया—''हे देवताओ ! यह वृत्रासुर अपने पूर्वजन्म में चित्ररथ नामक एक राजा था। इसने विधिपूर्वक त्रयोदशी का व्रत धारण किया था तथा शिवजी की सेवा करके उनकी कृपा प्राप्त की थी। परन्तु शिवरानी द्वारा शाप दिये जाने के कारण यह इस जन्म में वृत्रासुर बनकर प्रकट हुआ है। अस्तु, यदि तुम वृत्रासुर पर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:44 PM

विजय प्राप्त करना चाहते हो तो प्रदोष व्रत धारण कर, भगवान् सदाशिव का पूजन करो। प्रदोष व्रत धारण करने वाला मनुष्य अपने सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त करता है। हम तुम्हें प्रदोष के व्रत की विधि बतलाते हैं, उसे ध्यानपूर्वक श्रवण करो।

हे देवताओ ! प्रदोष का प्रारम्भ कार्तिक मास से करना चाहिए। इस प्रकार प्रत्येक मास की त्रयोदशी तिथि को व्रत धारण करके एक वर्ष पर्यन्त शिवजी का पूजन करना चाहिए। यदि कभी शुक्लपक्ष में त्रयोदशी के दिन शनिवार पड़े तो वह अति उत्तम फल देने वाला होता है। जब सन्ध्याकाल से पूर्व प्रदोष काल आवे, तब किसी प्रसिद्ध शिवलिंग का पूजन करे। तदुपरान्त स्नान कर, मौन धारण करे तथा गो-घृत के बहुत-से दीपक जलावे। इन दीपकों की संख्या एक सौ से लेकर सहस्त्रों तक उचित है। यदि इतने दीपक जलाने की सामर्थ्य न हो तो दस-बीस दीपक अवश्य जलाने चाहिएँ। इसके उपरान्त सब प्रकार की सामग्री, श्रेष्ठ नैवेद्य प्रेमपूर्वक शिवजी की भेंट करे तथा शतरुद्री का पाठ-श्रवण करे। अन्त में दो सौ बार शिवलिंग की परिक्रमा करके ब्राह्मणों को भोजन करावे। फिर स्वयं भी भोजन करे। हे देवताओ ! यदि इस उपाय से तुम सब लोग व्रत करोगे, तो भगवान् सदाशिव तुम पर अत्यन्त प्रसन्न होकर तुम्हें वृत्रासुर पर विजय प्राप्त करने की शक्ति प्रदान करेंगे। बृहस्पति के मुख से यह वचन सुनकर सभी देवता अत्यन्त प्रसन्न हुए। तदुपरान्त उन्होंने अपने गुरु की आज्ञा के अनुसार प्रदोष व्रत धारण किया। फिर शिवजी की कृपा का आश्रय लेकर जब उन्होंने वृत्रासुर के साथ युद्ध किया और इन्द्र के व्रज द्वारा वृत्रासुर मृत्यु को प्राप्त हुआ, तब अपने शत्रु पर विजय पाकर सभी देवता अत्यन्त प्रसन्न हुए।''

इतनी कथा सुनाकर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं तुम्हें त्रयोदशी के व्रत की अन्य विधि सुनाता हूँ, उसे जान लेने से अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है। वह विधि इस प्रकार है कि त्रयोदशी के व्रत के दिन चाँदी का बैल तथा सोने के शिव-गिरिजा की मूर्तियाँ बनवाये।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:44 PM

शिवजी की मूर्ति इस प्रकार हो कि उसमें दस भुजा, पाँच मुख, तथा तीन नेत्र रहें। इन मूर्तियों के ताँबे के कलश में स्थापित करे। कलश के चारों ओर पंचरत्न के फल तथा फूल स्थापित करे। इसके साथ ही एक चाँदी अथवा मिट्टी का दूसरा कलश भी समीप ही स्थापित करे। उस कलश को वस्त्र, माला तथा आभूषणों से सुसज्जित करे। फिर षोडशोपचार विधि द्वारा भगवान् सदाशिव का पूजन करे। चारों प्रहर रात्रि जागरण कर, उत्सव मनाये तथा शिवजी को दंडवत् प्रणाम करता हुआ अनेक प्रकार से स्तुति करे। पूजन के उपरान्त हवन करे। तत्पश्चात् विसर्जन करके ब्राह्मणों को सुस्वादु भोजन कराये। फिर ब्राह्मणों से आज्ञा लेकर स्वयं भी भोजन करे।

हे नारद ! प्रदोष व्रत की दूसरी विधि यह है कि जब त्रयोदशी के दिन शनिवार पड़े तथा शुक्लपक्ष हो, उस दिन सन्तान प्राप्ति के हेतु त्रयोदशी का व्रत आरम्भ करे। यदि तेरस मंगलवार की हो तो वह भी शुभ होती है। शुक्रवार को पड़ने वाली तेरस स्त्री, सन्तान तथा भाग्य की वृद्धि करती है। रविवार के दिन पड़ने वाली त्रयोदशी आयु-वृद्धि तथा रोग शान्ति के लिए फलदायक कही गयी है। व्रती को चाहिए कि वह संकल्प करके सन्ध्या के समय प्रीतिपूर्वक भगवान् सदाशिव का पूजन करे। चारों ओर दीपक जलाकर, अपने मनोरथ को प्रकट करता हुआ, शिवजी की अनेक प्रकार से स्तुति करे। फिर नन्दी के अण्डकोष को देखकर, उसके दोनों सिंगों के बीच के भाग को देखे। तदुपरान्त उसकी पूँछ का दर्शन करे। ऐसा करने से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। संसार में जितने भी तीर्थ हैं। वे सब बैल के अण्डकोष में स्थित रहते हैं। तदनन्तर ब्राह्मणों को यथाशक्ति दक्षिणा देकर भोजन करावे और मौन व्रत धारण करे। अन्त में, स्वयं भी लवण-रहित होकर भोजन करे अथवा खीर खाये। इस प्रकार एक वर्ष तक त्रयोदशी का व्रत धारण करे। यदि एक वर्ष तक व्रत करने की सुविधा न हो तो शनिवार की त्रयोदशी का केवल एक बार ही प्रदोष व्रत धारण करके सब व्रतों का फल प्राप्त कर ले।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:45 PM

हे नारद ! प्रदोष व्रत की विधियाँ अनेक प्रकार की हैं। तुम्हें यह बताता हूँ कि स्त्रियों को प्रदोष व्रत किस प्रकार करना चाहिए। स्त्रियों को उचित है कि वे माग शीर्ष अर्थात् अगहन मास के शुक्लपक्ष की त्रयोदशी को व्रत आरम्भ करें। उन्हें चमेली वृक्ष की डाल से दतौन करनी चाहिए तथा भरुआ के पुष्प शिवजी के ऊपर चढ़ाने चाहिएँ। स्नान आदि से निवृत्त होकर जब वे शिवजी का पूजन करने बैठें, तो सर्वप्रथम शिवलिंग के ऊपर भरुआ के पुष्प चढ़ावें, फिर अन्य विधियों से षोडशोपचार पूजन करके, नारंगी का अर्घ्य दें तथा फेनी एवं चिरौंजी का नैवेद्य लगावें। मार्ग शीर्ष मास के पूजन में शिवजी का नाम अनङ्ग होता है। स्त्रियों को चाहिए कि वे पूजन आदि से निवृत्त होकर, रात को शहद का भोजन करें।

हे नारद ! पौष मास में शिवजी का नाम लटेश्वर होता है। अस्तु, स्त्रियों को चाहिए कि वे इस मास में गूलर की दतौन करें तथा जाती-पुष्प को शिवजी के ऊपर चढ़ावें। अनार का अर्घ्य देकर अशोक बत्ती का नैवेद्य लगावें। उन्हें स्वयं श्वेत चन्दन को खाना चाहिए।

हे नारद ! माघ मास में शिवजी का नाम योगेश होता है। अस्तु, स्त्रियों को चाहिए कि वे इस मास में विष्णुकान्ता की दतौन करें, कुन्द के पुष्प शिवजी पर चढ़ावें, बीजपूर का अर्घ्य दें तथा ईख का नैवेद्य लगावें।

हे नारद ! फाल्गुन मास में शिवजी का नाम वीरेश होता है। अस्तु, इस मास में स्त्रियों को अनार की दतौन करनी चाहिए। उन्हें शिवजी के ऊपर धतूरे के पुष्प चढ़ाने उचित हैं।

हे नारद ! चैत्र मास में शिवजी का नाम भव होता है। अस्तु, इस मास में मल्लिका अर्थात् बेले की दतौन करनी चाहिए, धतूरे को शिवजी पर चढ़ाना चाहिए और उसी का अर्घ्य देकर, खजूर का नैवेद्य लगाना चाहिए। इस मास में रात्रि के समय स्वयं कपूर खाना उचित है।

हे नारद ! वैशाख मास में शिवजी का नाम महादेव होता है। अस्तु, इस मास में स्त्रियों को उचित है कि लटजीरे की दतौन करें, शिवजी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:45 PM

के ऊपर चमेली का पुष्प चढ़ायें, उत्पल का अर्घ्य दें तथा पटुक नामक अन्न का नैवेद्य लगावें।

हे नारद ! ज्येष्ठ मास में शिवजी का नाम प्रद्युम्न होता है। अस्तु, इस मास में स्त्रियों को सहदेई की दतौन करनी चाहिए, शिवजी के ऊपर बकुल का पुष्प चढ़ाना चाहिए। रात्रि के समय स्वयं लौंग खाना उचित है।

हे नारद ! आषाढ़ मास में शिवजी का नाम उमापति होता है। अस्तु, इस मास में स्त्रियों को उचित है कि वे नारंगी की दातौन करें तथा शिवजी के ऊपर कदम्ब के पुष्पों को चढ़ावें। स्वयं रात्रि को तिल खानी चाहिए।

हे नारद ! श्रावण मास में शिवजी का नाम शूलपाणि होता है। इस मास में स्त्रियों को उचित है कि वे जाती की दतौन करें तथा कमल का पुष्प शिवजी के ऊपर चढ़ावें। जामुन के फलों का अर्घ्य देकर, दूध का नैवेद्य लगाना उचित कहा गया है। रात्रि के समय स्वयं पूए खाने चाहिएँ।

हे नारद ! भाद्रपद मास में शिवजी का नाम सदव होता है। इस मास में व्रती स्त्रियों को कंकोल की दतौन करनी चाहिए तथा चम्पक के फूलों से शिवजी का पूजन करना चाहिए। स्वयं रात्रि के समय अगुरू का भोजन करना चाहिए।

हे नारद ! आश्विन अर्थात् क्वार मास में शिवजी का नाम कामदेव होता है। अस्तु, इस मास में व्रती स्त्रियों को कंकोल की दतौन करनी चाहिए तथा कनेर के पुष्प शिवजी के ऊपर चढ़ाने चाहिएँ। रात्रि के समय स्वयं काशीफल का भोजन करना चाहिए।

हे नारद ! बारहवें कार्तिक मास में शिवजी का नाम जगदीश्वर होता है। अस्तु, व्रती स्त्रियों को उचित है कि वे इस मास में ऊर्जकदम्ब की दतौन करें तथा शिवजी के ऊपर रक्त-उत्पल चढ़ावें। रात्रि के समय में फल खाना चाहिए।

हे नारद ! इस प्रकार जो स्त्री प्रदोष करती है, उसे सिद्धि प्राप्त होने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:45 PM

में कोई संशय नहीं रहता। इस भाँति एक वर्ष तक व्रत धारण कर लेने पर उद्यापन कर देना उचित है। इस विधि के सुनने तथा पढ़ने से भी दोनों लोकों में आनन्द प्राप्त होता है।''

चौदहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे पुत्र ! अब मैं एकादशी व्रत का माहात्म्य कहता हूँ। एकादशी तिथि सब तिथियों में श्रेष्ठ तथा उत्तम है। शिवजी को दोनों पक्षों की एकादशी प्रिय है। शुक्लपक्ष की एकादशी में अन्न-जल रहित होकर व्रत धारण करना चाहिए। उसकी विधि यह है कि प्रातःकाल उठकर नियमपूर्वक स्नान तथा शिवजी का पूजन करें। पूरा दिन शिवजी के भजन-कीर्तन में बिताये। सन्ध्या के समय पुनः स्नान करें तथा शिवजी का पूजन कर उन्हें प्रसन्न करें। शिवजी को प्रसन्नता प्रदान करने के हेतु गाल बजाये तथा आरती उतारें।

हे नारद ! कृष्णपक्ष की एकादशी में सन्ध्या समय भोजन करना तथा शुक्लपक्ष की एकादशी में निर्जल रहना उचित है, परन्तु यदि दोनों ही पक्षों में निर्जल व्रत धारण किया जाए तो उसका फल और अधिक शुभ होता है। अस्तु, इसे कभी नहीं त्यागना चाहिए। एकादशी का व्रत रखने वाला मनुष्य संसार में सम्पूर्ण भोगों को भोगकर, अन्त में शिवपुरी को प्राप्त करता है। इस सम्बन्ध में, मैं तुमसे एक कथा कहता हूँ, उसे ध्यानपूर्वक सुनो।

हे नारद ! सूर्यवंशी राजा मान्धाता ने इस व्रत को किया था। संयोगवश एक बार अयोध्या में बड़ा अकाल पड़ा तथा अन्न उत्पन्न न होने के कारण प्रजा अत्यन्त व्याकुल हुई। तब सभी प्रजाजन एकत्रित होकर राजा के समीप पहुँचे और हाथ जोड़कर इस प्रकार प्रार्थना करने लगे—''हे पृथ्वीपति ! ऐसा कौन-सा पाप हुआ है जिसके कारण अकाल पड़ा है और हम लोगों को भारी कष्ट भोगना पड़ रहा है। हे महाराज ! हम लोग भूख से मरे जा रहे हैं। अस्तु, आपके

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:45 PM

शरणागत् हैं। आप हमारी रक्षा कीजिये और कोई ऐसा श्रेष्ठ उपाय बताइए जिससे सब लोगों का कष्ट दूर हो।''

हे नारद ! प्रजाननों के मुख से यह वचन सुनकर राजा मान्धाता ने अत्यन्त लज्जित हो ब्राह्मणों को बुलाया और उनका सम्मान करते हुए हाथ जोड़कर यह पूछा—''हे महानुभावो ! आप मुझे यह बताने की कृपा करें कि मेरे देश में वर्षा क्यों नहीं हो रही है? इसके साथ ही आप कोई ऐसा उपाय भी बतलावें, जिसके करने से वर्षा होकर सब लोगों को आनन्द प्राप्त हो।'' राजा की प्रार्थना सुनकर सब ब्राह्मणों ने विचारकर उत्तर दिया—''हे राजन् ! वर्षा न होने का कोई कारण हमें ज्ञात नहीं होता, परन्तु वर्षा होने के लिए हम तुम्हें उपाय बताते हैं।'' इतना कहकर ब्राह्मणों ने वर्षा होने के अनेक उपाय बताए, परन्तु उन्हें करने पर भी किसी प्रकार वर्षा नहीं हुआ। यह देखकर राजा अत्यन्त निराश तथा चिन्तित हो राजधानी त्याग, वन को चल दिये। वहाँ लोमश नामक एक तपस्वी रहते थे। वे तपस्वी बड़े आत्मदर्शी, ज्ञानी तथा शिवजी के भक्त थे। राजा ने उन्हें सिद्ध जानकर बहुत प्रकार से स्तुति-प्रशंसा की। फिर हाथ जोड़कर इस प्रकार कहा—''हे सर्वज्ञ प्रभो ! अयोध्या में वर्षा न होने के कारण सम्पूर्ण प्रजा अत्यन्त दुःखी है। अब मैं व्याकुल होकर अपनी राजधानी त्याग, यहाँ वन में चला आया हूँ। सौभाग्य से मुझे आपके चरणों के दर्शन प्राप्त हुए हैं। आप कृपा करके कोई ऐसी युक्ति बताइये जिससे वर्षा हो।''

हे नारद ! राजा की प्रार्थना सुनकर लोमश ऋषि ने उत्तर दिया—''हे राजन् ! भगवान् सदाशिव की कृपा से मैं तुम्हें वर्षा होने का एक सरल उपाय बतलाता हूँ। तुम्हें उचित है कि तुम अपनी सम्पूर्ण प्रजा सहित एकादशी का व्रत धारण करो तथा भगवान् सदाशिव का पूजन करो। इस व्रत में शिवजी का पूजन करने के पश्चात् ही भोजन करना चाहिए। ऐसा करने से तुम्हारे राज्य में अवश्य वर्षा होगी।'' लोमश मुनि से यह वचन सुनकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हो, अपनी राजधानी को लौट आये, फिर उन्होंने अपनी प्रजा सहित एकादशी व्रत धारण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:45 PM

किया। उसके प्रभाव से खूब वर्षा हुई और सम्पूर्ण प्रजा का दुःख दूर हो गया।

हे नारद ! इस व्रत के करने से राजा मुचुकन्द, राजा जनक तथा राजा सगर ने सम्पूर्ण मनोकामनाओं को प्राप्त किया था। रामचन्द्र जी ने भी एकादशी का व्रत धारणकर सफलता प्राप्त की थी। अब मैं तुम्हें रामचन्द्र जी की कथा सुनाता हूँ। राजा दशरथ के पुत्र रामचन्द्र जी बड़े प्रतापी थे। भाग्यवश उन्हें वनवास प्राप्त हुआ। वहाँ लंका का राजा रावण उनकी पत्नी सीता को हर ले गया। तब रामचन्द्र जी सीता का पता लगाते हुए पम्पापुर में जा पहुँचे। वहाँ हनुमान से भेंट हुई। उनकी सहायता से वे सेना एकत्रित कर, समुद्र के तट पर पहुँचे, परन्तु जब उन्होंने यह देखा कि समुद्र को पार करना अत्यन्त कठिन् है, तो वे उपाय की खोज में इधर-उधर भ्रमण करने लगे। संयोगवश एक स्थान पर उन्हें लोमश ऋषि तपस्या करते हुए दिखाई दिये। तब उन्होंने ऋषि के समीप पहुँचकर सब वृत्तान्त कह सुनाया और यह प्रार्थना की कि आप मुझे कोई उपाय बताइए जिसके आश्रय से मैं सेना रहित लंकापुरी में पहुँचकर रावण का संहार कर सकूँ।

हे नारद ! रामचन्द्र जी की प्रार्थना सुनकर लोमश ऋषि ने यह उत्तर दिया—"हे राम ! प्रथम तो तुम विष्णु जी के अवतार हो, दूसरे शिवजी के परम भक्त हो। वे सभी कार्य सिद्ध कर देंगे। जो भी प्राणी मनुष्य शरीर धारण करता है, उसे कोई-न-कोई कष्ट अवश्य उठाना पड़ता है, इसलिए तुम्हें भी यह दुःख हुआ है, क्योंकि तुम मनुष्य का शरीर धारण कर प्रकट हुए हो। अब तुम्हें उचित है कि तुम एकादशी का व्रत करो तथा शिवजी का पूजन करके कुछ दिन फलाहार करो। शुक्लपक्ष की एकादशी में निर्जल व्रत करने तथा शिव-गिरिजा का ध्यान धरने से तुम्हें सिद्धि प्राप्ति होगी। वेद और पुराणों का कथन है कि एकदाशी के समान फलदायक कोई दूसरा व्रत नहीं है।"

"हे नारद ! लोमश ऋषि की शिक्षानुसार रामचन्द्र जी ने एकादशी व्रत धारण किया। उस व्रत के प्रभाव से उन्होंने समुद्र पर सेतु बाँधा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:45 PM

तथा शिवलिंग की स्थापना कर, शिवजी को प्रसन्न किया। तदुपरान्त वे अपनी सेना सहित लंका में जा पहुँचे। फिर उन्होंने रावण को वंश सहित मार डाला। एकादशी का व्रत ऐसा ही फल देने वाला है। यह व्रत विष्णु जी तथा शिवजी दोनों का कहा गया है। इस व्रत को करने से शिवजी तथा विष्णु जी दोनों ही प्रसन्न होते हैं। इस व्रत का माहात्म्य सुनने से भी दोनों लोकों में आनन्द की प्राप्ति होती है।''

पन्द्रहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं अष्टमी के व्रत का माहात्म्य कहता हूँ। तुम ध्यानपूर्वक सुनो! अष्टमी का व्रत प्रत्येक मास में करना चाहिए। भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को शिव-पूजन की विधि इस प्रकार है कि प्रदोष, काल में दूब लाकर शिवजी का पूजन करे तदुपरान्त फल, फूल, धूप एवं बिल्वपत्र शिवजी के ऊपर चढ़ाकर अर्घ्य, नैवेद्य, दही, चावल और लावा समर्पित करे। इस प्रकार शिवजी का पूजन करने से कोई भी पाप नहीं रह जाता। पूजन करने वाले का शरीर अत्यन्त तेजस्वी हो जाता है तथा उसे सभी मनोरथों की प्राप्ति होती है। पूजन करने वाले को चाहिए कि वह शिवजी की प्रसन्नता के हेतु दंडवत् प्रणाम करे तथा अनेक प्रकार से स्तुति करता हुआ उनके गुण-चरित्रों का पठन-पाठन एवं श्रवण करें। इस व्रत में शिवजी का पूजन करने के उपरान्त ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। तत्पश्चात् स्वयं बिना नमक का भोजन करना चाहिए।''

हे नारद ! इस प्रकार भाद्रपद मास की अष्टमी को जो लोग व्रत रखते हैं, उनके सभी दुःख नष्ट हो जाते हैं। इस व्रत के कारण ब्रह्म हत्या का पाप भी नष्ट हो जाता है। दूवर्नष्टमी का व्रत शिवजी को अत्यन्त प्रिय है। चारों वर्णों को इस व्रत को धारण करने का अधिकार है। सब वर्णों की स्त्रियाँ भी इस व्रत को कर सकती हैं।

हे नारद ! मार्गशीर्ष अर्थात् अगहन मास के कृष्णपक्ष में इस व्रत

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:45 PM

को निर्जल रहकर धारण करना चाहिए। अगहन मास की अष्टमी का व्रत कालाष्टमी व्रत के नाम से प्रसिद्ध है। इसी दिन दोपहर के समय भैरव जी ने जन्म लिया था। अतः इस व्रत को भैरव व्रत भी कहते हैं। यह सब व्रतों का राजा तथा चारों फलों को प्रदान करने वाला है। भैरव व्रत करने वाले को संसार में कोई भी वस्तु अलभ्य नहीं रहती। इस व्रत को करके अनेक लोगों ने मुक्ति प्राप्त की है। यह व्रत करने की विधि यह है कि मध्याह्न काल में उत्सव करके रात्रि के चारों प्रहर जागरण में बिताये तथा हर प्रहर में शिवजी का पूजन करता रहे। दूसरे दिन प्रातःकाल होने पर स्नान करके भगवान् सदाशिव का पूजन करे तथा ब्राह्मणों के छोटे-छोटे आठ बालकों को भोजन कराये। इसके पश्चात् अन्य ब्राह्मणों को भोजन कराये तथा उन्हें दान-दक्षिणा देकर प्रसन्न करें। जब ब्राह्मण भोजन करके विदा हो जाएँ, तब स्वयं भी अपने कुल, परिवार तथा इष्ट मित्रों सहित शिवजी का स्मरण करते हुए, भोजन करें। इस भैरव व्रत को एक वर्ष तक निरन्तर करना चाहिए। जो लोग इस व्रत को करते हैं, उन्हें चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है।

हे नारद ! एक समय सभी देवता तथा ऋषि-मुनि एकत्रित होकर परस्पर विचार करने लगे कि परब्रह्म कौन है? जब वे स्वयं कोई निश्चय न कर सके तो मेरे पास आकर यह पूछने लगे—''हे ब्रह्मन् ! आप हमें यह बताने की कृपा करें कि परब्रह्म, अविनाशी, अनादि, अनन्त, निर्गुण, सर्गुण, सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी तथा सबसे श्रेष्ठ कौन है? वेदान्तीजन सच्चिदानन्द कहकर किसका भजन करते हैं? शेष जी किसके भय से पृथ्वी को अपने मस्तक पर धारण किये हुए हैं?''

हे नारद ! यह सुनकर मैंने उन्हें उत्तर दिया—''हे देवताओ तथा ऋषि-मुनियो ! तुम जिसे जानना चाहते हो, वह हमारे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है।'' हे नारद ! मैंने यह बात शिवजी की माया के वशीभूत होकर कही थी, अस्तु, मेरी इस बात को सुनकर विष्णु जी अत्यन्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:45 PM

क्रुद्ध हुए। फिर वे स्वयं शिवजी की माया के वशीभूत होकर मुझसे इस प्रकार कहने लगे—"केवल नामों के बल इतराना ही तुम्हें शोभा नहीं देता। सच पूछा जाए तो परब्रह्म हमारे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है। वेद का अर्थ न समझ पाने के कारण ही तुम ऐसे उल्टे वचन कह रहे हो।"

हे नारद ! इस विषय को लेकर मुझ में तथा विष्णु जी में बहुत विवाद होने लगा। तब हम दोनों ने यह निश्चय किया कि इस सम्बन्ध में वेदों से भी क्यों न पूछ लिया जाए। अस्तु, जब हमने वेदों से पूछा कि तुम परब्रह्म किसे कहते हो, तब उन्होंने यह उत्तर दिया—"हे ब्रह्मा तथा हे विष्णु ! परब्रह्म तो केवल भगवान् सदाशिव ही हैं। वे तीनों गुणों से भिन्न हैं तथा उन्हीं के अंगों द्वारा तुम दोनों की उत्पत्ति हुई है।" वेदों के मुख से यह शब्द सुनकर हम दोनों अत्यन्त क्रुद्ध हुए। उस समय प्रणव ने हम दोनों को टोकते हुए कहा—"हे ब्रह्मा तथा हे विष्णु ! तुम वेदों के वचन को असत्य समझते हो, यह उचित नहीं है, तुम्हें संसारी जीवों के समान सत्य-मार्ग को भुलाकर, संशय में नहीं पड़ना चाहिए।

हे ब्रह्मा तथा हे विष्णु ! कैलाशवासी भगवान् सदाशिव अपनी इच्छानुसार कभी शरीर धारण करते हैं और कभी अशरीर हो जाते हैं। उनकी सभा में सभी देवता पहुँचकर शीश नवाते हैं। उस समय लक्ष्मी शिवजी के गुणों का गान करती हैं, सरस्वती वीणा बजाती हैं, इन्द्र बाँसुरी बजाते हैं, नारद भी वीणा बजाते हैं और तुम दोनों मृदंग बजाकर ताल देते हो।"हे नारद ! इस भांति बजाते हैं और तुम दोनों मृदंग बजाकर ताल देते हो।""हे नारद ! इस भाँति प्रणव ने मुझे तथा विष्णु जी को बहुत कुछ समझाया, परन्तु शिवजी की माया के वशीभूत होने के कारण हम दोनों की समझ में एक भी बात नहीं आयी।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:45 PM

सोलहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! जिस समय यह वार्तालाप चल रहा था, उसी समय हम दोनों के बीच में एक ज्वाला-ज्योति प्रकट हुई। उस ज्योति से सम्पूर्ण पृथ्वी तथा आकाश परिपूर्ण हो गये। तदुपरान्त उस ज्वाला के बीच से एक व्यक्ति प्रकट हुआ, उसके शरीर का रंग नील लोहित था। वह अपने मस्तक पर चन्द्रमा, हाथ में त्रिशूल धारण किये तथा एवं अन्य अंगों में आभूषणों के स्थान पर सर्प लपेटे हुए था। उसे देखते ही मैंने अपने पाँचवें मुख से यह कहा—"अरे, हमारे बीच में यह कौन उत्पन्न हुआ?" तदुपरान्त मैंने उसे सम्बोधित करते हुए कहा—"तुम तो वही हो, जिसे हमने अपनी दोनों भौंहों के बीच से उत्पन्न किया था? तुम्हें रोते देखकर हमने तुम्हारा नाम रुद्र रखा था। इस समय तुम यहाँ क्यों आये हो?"

हे नारद ! मेरी बात सुनकर शिवजी ने अत्यन्त क्रोध करके एक व्यक्ति को उत्पन्न किया। वह व्यक्ति भक्तों को प्रसन्नता प्रदान करने वाला तथा शत्रुओं को दुःख देने वाला था। काल के समान प्रकट होने के कारण वह कालराज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसे देखकर काल भी भयभीत हो गया। अस्तु, उसे काल भैरव भी कहा गया। सम्पूर्ण विश्व का भरण करने की शक्ति रखने वाला होने के कारण वह भैरव भी कहलाया।

हे नारद ! तदुपरान्त भगवान् सदाशिव ने भैरव को यह आज्ञा दी—"हे भैरव ! प्रजापति ब्रह्मा ने हमारी निन्दा की हैं। अस्तु, तुम संसारी जीवों को शिक्षा देने के लिए इसे दंड दो। आज से हम तुम्हें अपनी काशीपुरी का कोतवाल भी नियुक्त करते हैं।" शिवजी के मुख से यह वचन सुनकर भैरव ने मेरे पाँचवें मस्तक को, जिसके द्वारा मैंने शिवजी की निन्दा की थी, काट डाला। तत्पश्चात् शिवजी भैरव को ब्रह्म हत्या से मुक्त होने की युक्ति बताकर, अन्तर्धान हो गये।

हे नारद ! ब्रह्म हत्या से मुक्ति पाने के हेतु भैरव मेरे मस्तक को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अपने हाथ में लिये हुए तीनों लोकों में भ्रमण करते रहे, परन्तु ब्रह्म हत्या ने स्त्री रूप धरकर उनका कहीं भी पीछा न छोड़ा। पृथ्वी पर सब जगह भ्रमण करने के उपरान्त भैरव देवताओं के लोक में घूमने लगे। जब वे विष्णु जी के लोक में गये, तब विष्णु जी ने उनकी प्रार्थना करते हुए इस प्रकार कहा—"हे प्रभो ! आपके कंठ में अनेक ब्रह्माओं के मस्तकों की माला विराजमान है। यदि आपको ब्रह्म हत्या का पाप लग सकता होता, तब पहले कल्पों में भी अवश्य लगता, इस बार ही कोई नयी बात नहीं है। हे स्वामी ! आपके स्मरण मात्र से ब्रह्म हत्या दूर हो जाती है, तब स्वयं आपको कोई पाप लगना उपहास मात्र है। प्रलय काल में जब आप सम्पूर्ण सृष्टि का संहार कर देते हैं, तब भी आपको कोई दोष नहीं लगता। इस समय आप केवल एक ब्रह्मा का मस्तक काटकर ही ऐसा स्वरूप क्यों बनाये हुए हैं?"

हे नारद ! भैरव जी से इस प्रकार कहकर विष्णु जी ब्रह्म हत्या को सम्बोधित करते हुए बोले—"हे ब्रह्महत्या ! तू भैरव जी का पीछा छोड़ दे।" ब्रह्महत्या ने उत्तर दिया—"हे विष्णु जी ! मैं भगवान् सदाशिव की आज्ञा से इनके पीछे लगी हुई हूँ।" यह सुनकर विष्णु जी चुप हो गये और भैरव जी आगे चल दिये। जिस समय भैरव जी मुक्ति क्षेत्र काशीपुरी में पहुँचे, उस समय ब्रह्म हत्या स्वयं अदृश्य हो गयी। इस प्रकार शिवजी ने संसार के सम्मुख काशी की महिमा को प्रकट किया।

हे नारद ! काशी की महिमा का वर्णन किसी प्रकार नहीं किया जा सकता। भैरव जी की ब्रह्म हत्या तीनों लोकों की परिक्रमा करने पर भी दूर नहीं हुई थी, परन्तु काशी में जाकर वह अपने आप अदृश्य हो गयी। काशी जी में कपालमोचन तीर्थ सबसे अधिक फल देने वाला है। उसका स्मरण करने मात्र से ही बड़े-बड़े पाप नष्ट हो जाते हैं। सभी वेद तथा पुराणों का कहना है कि कपालमोचन तीर्थ के समान अन्य कोई तीर्थ नहीं है। वहाँ भगवान् सदाशिव भैरव जी के स्वरूप में सदैव विराजमान रहते हैं। उनके सभी पाप सदा के लिए समाप्त हो जाते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:45 PM

सप्तमी तथा चतुर्दशी तिथि एवं रविवार तथा सोमवार के दिन भैरव जी का पूजन करने से सब पापों से मुक्ति मिलती है। जो मनुष्य भैरव जी की आठ परिक्रमा करते हैं, उनके तीनों प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं जो लोग भैरव की कथा सुनते अथवा दूसरों को सुनाते हैं, उन्हें भी बड़ा पुण्य होता है।''

सत्रहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं सोमवार के व्रत की महिमा का वर्णन करता हूँ। सोमवार के व्रत को सभी स्त्री-पुरुष कर सकते हैं। जो लोग इस व्रत को करते हैं, उनके दोनों लोक सुधर जाते हैं तथा उन्हें सम्पूर्ण मनोकामनाओं की प्राप्ति होती हैं। सोमवार का व्रत करोड़ों जन्मों के पापों को नष्ट करने वाला है। अस्तु, प्रत्येक शिव भक्त को उचित है कि वह सोमवार के दिन व्रत रखकर सन्ध्या के समय शिवजी का पूजन करें। जो विधान त्रयोदशी व्रत का है, वही इस सोमप्रदोष के लिए भी उचित है। शिवजी के अतिरिक्त इस व्रत में अन्य किसी देवता का ध्यान करना उचित नहीं है।

हे नारद ! सोमशिव का भजन करने से सभी लोगों को अपने मनोरथ प्राप्त होते हैं। इस व्रत के द्वारा भाग्यहीन सौभाग्य, सन्तानहीन सन्तान तथा निर्धन अतुल सम्पत्ति प्राप्त करते हैं विधवा स्त्री तथा क्वारा पुरुष भी इस व्रत को धारण कर सकता है। इस संबंध में हम तुम्हें इतिहास सुनाते हैं, उसके द्वारा तुम यह जान सकोगे कि इस व्रत के प्रभाव से चित्राङ्गद मृत्यु से किस प्रकार बचा रहा तथा उसकी स्त्री ने किस प्रकार इस व्रत को करके अपने पति सहित शिवलोक में स्थान प्राप्त किया।

हे नारद ! आर्यावर्त्त देश में चित्रवर्मा नामक एक राजा परम प्रतापी, धर्मात्मा, दयालु, यज्ञ करने वाला तथा शिवजी का परम भक्त था। उसने अनेक सुन्दर पुत्रों को जन्म दिया। कुछ समय बाद उसके

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:45 PM

घर में एक कन्या ने जन्म लिया। वह कन्या भी परम सुन्दरी थी। जब उसने ज्योतिषियों को बुलाकर उस कन्या के लक्षण पूछे, तब ज्योतिषियों ने ग्रह-नक्षत्रों का विचार करते हुए यह उत्तर दिया—"हे राजन् ! यह कन्या पार्वती के समान श्रेष्ठ, दमयन्ती के समान सुन्दरी, सरस्वती के समान बुद्धिमान्, लक्ष्मी के समान कलाओं का ज्ञान रखने वाली तथा अदिति के समान सन्तानवती होगी। इसका नाम सीमन्तिनी होगा। यह आठ पुत्रों को जन्म देगी तथा संसार में यश प्राप्त करेगी।" ज्योतिषियों की यह बात सुनकर राजा तथा रानी अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने ज्योतिषियों को बहुत-सा धन दिया ; परन्तु उसी समय एक बुद्धिमान् ब्राह्मण ने निर्भीकतापूर्वक यह कहा—"हे राजन् ! तुम्हारी यह पुत्री चौदह वर्ष की आयु में विधवा हो जायेगी, इसमें कोई सन्देह नहीं है।" इस बात को सुनते ही राजा तथा रानी को अत्यन्त शोक हुआ, परन्तु फिर धैर्य धारण कर उन्होंने सब ब्राह्मणों को विदा कर दिया तथा स्वयं भगवान् सदाशिव का ध्यान धरने लगे।

हे नारद ! जब वह कन्या युवावस्था को प्राप्त हुई और उसने अपनी सहेलियों के मुख से यह सुना कि एक ब्राह्मण ने चौदह वर्ष की आयु में मेरे विधवा हो जाने की बात कही है, तो वह अत्यन्त चिन्तित एवं दुःखी होकर याज्ञवल्क्य मुनि की पत्नी मैत्रेयी के पास जा पहुँची। उसने मैत्रेयी को दंडवत् प्रणाम करने के उपरान्त सब वृत्तान्त कह सुनाया तथा यह प्रार्थना की—"आप मुझे कोई ऐसा उपाय बताइये, जिससे मेरे पति की आयु की वृद्धि हो।" उस समय मैत्रेयी ने कहा—"हे राजपुत्री ! तुम भगवान् सदाशिव तथा भगवती गिरिजा की अराधना करो। तुम सोमवार का व्रत धारण करके सोम शिव का पूजन किया करो। सन्ध्या के समय श्री शिवजी के पूजन करने के उपरान्त ब्राह्मणों को भोजन कराना, तत्पश्चात् स्वयं भोजन किया करना। इस उपाय से शिव गिरिजा प्रसन्न होकर तुम्हारे संकट को दूर कर देंगे। यह विश्वास रखो।" मैत्रेयी से यह उपदेश पाकर सीमन्तिनी अपने घर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लौट आयी तथा विधिपूर्वक सोमवार का व्रत धारण कर, उमा-महेश्वर का पूजन करने लगी।"

❀❀❀

अठारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! नैषध देश के राजा नल और दमयन्ती के सम्बन्ध में पहले भी कहा जा चुका है। वे दोनों राजा-रानी शिवजी के परम भक्त थे। उनके एक बालक उत्पन्न हुआ, जिसका नाम इन्द्रसेन था। इन्द्रसेन भी शिवजी का परम भक्त था। इन्द्रसेन के घर चित्राङ्गद नाम के एक बालक का जन्म हुआ। चित्राङ्गद चन्द्रमा के समान सुन्दर, सम्पूर्ण विद्याओं तथा कलाओं में प्रवीण एवं अपने पिता के समान ही शिवजी का परम भक्त था। राजा चित्रवर्मा ने उसे सब प्रकार से योग्य देखकर अपनी पुत्री सीमन्तिनी का विवाह उसके साथ कर दिया। विवाह के उपरान्त चित्राङ्गद कुछ समय तक अपने ससुर के घर में ही रहा। एक दिन वह अपने सेवकों के साथ नाव पर चढ़कर यमुना नदी में जल-विहार कर रहा था कि अचानक ही वह नाव पानी में डूब गयी। इस समय दोनों किनारों पर खड़े हुए लोग हाहाकर करने लगे।

हे नारद ! जब राजा चित्रवर्मा ने यह समाचार सुना तो वह अत्यन्त व्याकुल हो, नदी के तट पर जा पहुँचा और उच्च स्वर से रुदन करने लगा। रानी भी मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। जिस समय सीमन्तिनी को अपने पति के डूबने का समाचार मिला, उस समय वह भी विकलता के कारण मूर्छित हो, पृथ्वी पर गिर पड़ी। राज्य के मंत्री, सभासद तथा प्रजा में से ऐसा कोई भी व्यक्ति न था, जो इस समाचार को पाकर अत्यन्त व्याकुल न हुआ हो। जब राजा इन्द्रसेन के पास यह समाचार पहुँचा तो वह भी अपनी पत्नी सहित शोक-समुद्र में डूब गये। सीमन्तिनी ने पहले तो पति के साथ सती हो जाने की इच्छा प्रकट की, परन्तु जब पिता ने ऐसा करने से मना किया, तब वह वैधव्य-धर्म में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:45 PM

स्थित रहकर, भगवान् सदाशिव का पूजन करती हुई, अपना जीवन व्यतीत करने लगी। पति की मृत्यु हो जाने पर भी उसने सोमवार का व्रत करना नहीं छोड़ा। जब सोमवार का दिन आया तो उसने मैत्रेयी की आज्ञानुसार दिन भर निर्जल व्रत रखकर, प्रदोष काल में शिव-गिरिजा का पूजन किया तथा अत्यन्त प्रेमपूर्वक उत्सव मनाया। इस प्रकार वैधव्यावस्था में उसे तीन वर्ष का समय व्यतीत हो गया। इधर तो यह हाल था, राजा चित्राङ्गद के पिता राजा इन्द्रसेन के ऊपर शत्रुओं ने चढ़ाई कर दी तथा उनका सम्पूर्ण राजपाट छीनकर, उन्हें रानी सहित बन्दीगृह में डाल दिया, परन्तु सीमन्तिनी के व्रत के प्रभाव से जल में डूबे हुए राजा चित्राङ्गद ने बहुत आनन्द प्राप्त किया। वह जमुना से जीवित निकल आया। भगवान् सदाशिव की ऐसी कृपा देखकर उसके श्वसुर आदि को जो प्रसन्नता हुई, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।''

उन्नीसवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने पूछा—''हे पिता ! आप मुझे यह बताने की कृपा कीजिये कि चित्राङ्गद यमुना में डूबने पर भी मरने से किस प्रकार बच गया?'' ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! वह वृत्तान्त इस प्रकार है कि जिस समय चित्राङ्गद जल के भीतर पहुँचा, तो उसने वहाँ नागों की अनेक स्त्रियों को क्रीड़ा करते हुए देखा। उन स्त्रियों की दृष्टि भी जब राजा पर पड़ी तो वे उसकी सुन्दरता पर मोहित हो गयीं और उसे अपने साथ पाताल में ले गयीं। चित्राङ्गद ने पाताल में जाकर यह देखा कि जहाँ नागों के अनेक नगर बसे हुए हैं। जिस समय चित्राङ्गद नागों के राजा तक्षक के रत्न जटित सिंहासन के समीप पहुँचा, उस समय वहाँ की विचित्र सामग्री एवं दास-दासियों की शोभा को देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया। तदुपरान्त उसने परम तेजस्वी नागराज तक्षक को प्रणाम किया। तक्षक ने भी उसे अत्यन्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:46 PM

सुन्दर देखकर अपनी स्त्रियों से पूछा—''यह राजपुत्र यहाँ किस प्रकार आया है? तुमने इसे कहाँ से प्राप्त किया है?'' उस समय नाग-कन्याओं ने यह उत्तर दिया—''हे राजन् ! हमें इसके कुल आदि के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं है। हम इसे यमुना नदी के जल में पड़ा हुआ देखकर, यहाँ ले आयी हैं।''

हे नारद ! नाग-स्त्रियों की बात सुनकर तक्षक ने चित्राङ्गद से पूछा—''हे राजपुत्र ! तुम कौन हो?'' चित्राङ्गद ने भगवान् सदाशिव का स्मरण कर, प्रणाम करते हुए राजा तक्षक को सब वृत्तान्त कह सुनाया तथा यह कहा—''हे प्रभो ! पूर्व जन्मों के अनेक पुण्यों के प्रताप से ही आज मुझे आपके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मेरे पितरों को भी आज तक आपके शुभ-दर्शन नहीं हुए। मैं यहां आकर अपने को परम सौभाग्यशाली समझता हूँ।'' चित्राङ्गद के ऐसे विनम्र वचन सुनकर नागराज तक्षक ने अत्यन्त प्रसन्न होते हुए कहा—''हे राजपुत्र ! अब तुम अपने मन में किसी प्रकार की चिन्ता मत करो तथा सुखपूर्वक यहाँ निवास करो। हाँ, एक बात तुम मुझे यह अवश्य बता दो कि तुम किस देवता का पूजन किया करते हो?'' यह सुनकर चित्राङ्गद ने उत्तर दिया—''हे प्रभो ! सभी वेदों में जिन्हें महादेव कहकर वर्णन किया गया है, मैं उन्हीं भगवान् सदाशिव का पूजन करता हूँ।''

हे नारद ! चित्राङ्गद के मुख से भगवान् सदाशिव की प्रशंसा सुनकर नागराज तक्षक ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा—''हे राजपुत्र ! तुम्हारी बात सुनकर हम अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। तुम शुद्धमार्ग को जानने वाला तथा शिवजी के भक्त हो। तुम यहाँ रहकर सुखपूर्वक राज्य करो। यहाँ सर्वत्र आनन्द ही आनन्द है। न तो यहाँ कोई वृद्ध होता है और न रोगी होता है। यहाँ का कोई निवासी मृत्यु को भी प्राप्त नहीं होता।'' नागराज के मुख से यह वचन सुनकर चित्राङ्गद ने उत्तर दिया—''हे प्रभो ! मुझे यहाँ रहने में कोई आपत्ति नहीं है, परन्तु मेरे माता-पिता, स्त्री तथा प्रजाजन मुझे जल में डूबा हुआ जानकर अत्यन्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दुःख को प्राप्त हो रहे होंगे। पता नहीं उनकी क्या हालत होगी? अस्तु, यदि आप कृपा करके मुझे उनके समीप पहुँचा दें तो श्रेष्ठ हो।" यह सुनकर नागराज तक्षक ने अत्यन्त प्रसन्न होकर चित्राङ्गद को कुछ दिन तक तो अपने घर ठहराकर स्वागत-सत्कार किया तदुपरान्त एक दिन अनेक प्रकार के रत्न, वस्त्र, आभूषण आदि सामग्री उसे भेंट कर तथा काम्यक नामक एक घोड़ा देकर, उसके साथ अपना एक पुत्र तथा एक राक्षस कर दिया और उन्हें यह आज्ञा दी कि तुम इस राजपुत्र को घर तक विदा कर आओ। विदा करते समय तक्षक ने चित्राङ्गद को यह विश्वास भी दिलाया कि जिस समय तुम हमें याद करोगे, उसी समय हम तुम्हारे पास पहुँच जायेंगे, अस्तु नागराज से विदा होकर, चित्राङ्गद उन सेवकों के साथ घोड़े पर चढ़, यमुना तट पर आ खड़ा हुआ। वहाँ पहुँचकर तक्षक का पुत्र तथा चित्राङ्गद घोड़ों पर चढ़े हुए नदी के किनारों पर भ्रमण करने लगे।"

बीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! जिस दिन चित्राङ्गद लौटकर नदी तट पर पहुँचा, उस दिन सोमवार था। अस्तु, सीमन्तिनी शिवजी का व्रत धारण किये हुए, अपनी सखियों सहित वहाँ यमुना-स्नान करने के लिए आयी थी। जब उसने वहाँ पर दो राजपुत्रों को घोड़े पर सवार घूमते हुए देखा, तो चित्राङ्गद को पहचानकर, अपने मन में यह विचार करने लगी कि मेरे पति यहाँ किस प्रकार आ पहुँचे हैं।

हे नारद ! तब चित्राङ्गद ने घोड़े से उतरकर सीमन्तिनी को अपने समीप बुलाया और उसकी ओर आश्चर्यचकित होकर देखते हुए यह पूछा—"हे भद्रे ! तुम किसकी पुत्री तथा किसकी पत्नी हो? बाल्यावस्था में ही तुम विधवा कैसे हो गयी? तुम्हारी ऐसी दुर्बल-दशा क्यों हो गयी है?" यह सुनकर सीमन्तिनी तो लज्जा के कारण कोई उत्तर न दे सकी, परन्तु उसकी सखी ने चित्राङ्गद से यह कहा—"हे महानुभाव ! यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:46 PM

राजकुमारी राजा नल के पौत्र चित्रवर्मा की पुत्री है। इसका नाम सीमन्तिनी है। इनके पति की मृत्यु आज से तीन वर्ष पूर्व यमुना नदी में डूबकर हो गयी, अब ये विधवा होकर अपनी माता के घर ही रहती है। अस्तु, आज सोमवार का व्रत होने के कारण यहां स्नान के निमित्त आयी हैं।''

हे नारद ! इस प्रकार जब सखी सीमन्तिनी का परिचय दे चुकी, तब सीमन्तिनी ने स्वयं चित्राङ्गद से इस प्रकार कहा—''हे बटोही ! आप कौन हैं? क्या आप किन्नर, गन्धर्व तथा सिद्ध जनों में से कोई हैं अथवा शरीर धारण किये हुए साक्षात् कामदेव ही हैं? आपको देखकर मुझे अपने पति का स्मरण हो आया है। इतना कहकर सीमन्तिनी मूर्छित हो, पृथ्वी पर गिर पड़ी।'' तब चित्राङ्गद ने उसे धैर्य बँधाते हुए इस प्रकार कहा—''हे राजपुत्री ! तुम्हारा पति अभी तक जीवित है। तुम्हारे शुभ कर्मों एवं सोमवार के व्रत के प्रभाव से वह शीघ्र ही तुम्हारे समीप आने वाला है। हम तुम्हारे पति के मित्र हैं और यहाँ तुम्हें उनके आगमन का सन्देश देने को आये हैं, परन्तु यह बात अभी किसी के सम्मुख प्रकट मत करना।'' चित्राङ्गद के मुख से यह शब्द सुनकर जब सीमन्तिनी ने उसकी ओर ध्यानपूर्वक देखा तो यह निश्चय हो गया कि मेरा पति यही है। उस समय वह अपने मन में सोचने लगी कि याज्ञवल्क्य की पत्नी के वचन तथा शिवजी की कृपा से ऐसा होना कुछ असम्भव नहीं।

हे नारद ! जिस समय सीमन्तिनी इस प्रकार विचार कर रही थी, उसी समय चित्राङ्गद ने उसके कान में कुछ बात कही, जिसके कारण वह अत्यन्त प्रसन्न हुई। चित्राङ्गद ने यह कहा था कि तुम अपने माता-पिता के पास जाकर यह समाचार कहो, तब तुम अपने पति को प्राप्त करोगी। इतना कहकर चित्राङ्गद तक्षक के पुत्र को साथ ले, वहाँ से चलकर अपनी राजधानी में जा पहुँचा। वहाँ उसने अपने शत्रुओं के पास तक्षक के पुत्र के द्वारा यह सन्देश भिजवाया कि या तो तुम लोग हमारा राज्य वापस कर दो, अन्यथा हम तुमको मार डालेंगे। जिस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:46 PM

समय तक्षक के पुत्र ने शत्रुओं से यह बात कही, उस समय वे शीघ्र ही चित्राङ्गद की शरण में आ पहुँचे। उन्होंने उसका राज्य लौटाकर, राजा-रानी को बन्दीगृह से मुक्त कर दिया।

हे नारद ! जब चित्राङ्गद ने अपने माता-पिता से सब हाल कहा, तो वे उस वृत्तान्त को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा अपने पुत्र को कण्ठ से लगाकर आशीर्वाद देने लगे। फिर उन्होंने राजा चित्रवर्मा के पास अपने सेवक को भेजकर यह सन्देश पहुँचाया कि चित्राङ्गद सकुशल लौट आये हैं और वे शीघ्र ही सीमन्तिनी को लेने के लिए आपके यहाँ पहुँच रहे हैं। राजा चित्रवर्मा ने जब यह समाचार सुना तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। कुछ समय बाद चित्राङ्गद भी उनके समीप जा पहुँचा। तब राजा ने अत्यन्त प्रसन्न होकर सीमन्तिनी के साथ उसका दुबारा विवाह किया तथा बहुत-सा दान दहेज देकर विदाई दी। चित्राङ्गद ने नागराज तक्षक से जो वस्तुएँ प्राप्त की थीं, उन सबको सीमन्तिनी को भेंट कर दिया। इस प्रकार दोनों ही कुल प्रसन्न हो गये। जब सीमन्तिनी को लेकर चित्राङ्गद अपने घर लौट आया तो राजा इन्द्रसेन उसे राज्य सौंपकर स्वयं अपनी रानी सहित वन को चले गये। वहाँ शिवजी की कृपा से उन्होंने मुक्ति पद को प्राप्त किया। तदुपरान्त राजा चित्राङ्गद ने दस सहस्त्र वर्षों तक मगध देश का सुखपूर्वक राज्य किया। उसके घर आठ पुत्र तथा एक पुत्री उत्पन्न हुई। जब तक चित्राङ्गद जीवित रहा, तब तक उसने तथा सीमन्तिनी ने शिवजी के व्रत को नहीं त्यागा। वे प्रति सोमवार को व्रत रखते रहे तथा उत्साहपूर्वक शिवजी का पूजन करते रहे।''

इक्कीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! प्राचीन काल में विदर्भ देश में वेदमित्र नामक एक विद्वान् ब्राह्मण रहता था। उसका मित्र सारस्वत नामक एक अन्य वेदपाठी ब्राह्मण था। कुछ समय उपरान्त वेदमित्र

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:46 PM

तथा सारस्वत के यहाँ एक-एक पुत्र ने जन्म लिया। उन दोनों के नाम सामवान् तथा सुमेधा हुए। वे दोनों बालक स्वभाव तथा कार्यों में एक-दूसरे के समान थे। उन्होंने एक ही गुरु ने विद्या पढ़ी तथा अपनी सेवा द्वारा माता-पिता को प्रसन्न किया। जब वे बालक बड़े हुए तो एक दिन दोनों के माता-पिता ने इस प्रकार कहा—"अब तुम सोलह वर्ष के हो गये। अस्तु, हम तुम्हारा विवाह करना चाहते हैं, परन्तु विवाह के लिए धन आवश्यक होता है, इसलिए सर्वप्रथम तुम धन का संग्रह करो। हम तुम्हें धन-प्राप्ति का एक उपाय बतलाते हैं, उनके अनुसार आचरण करने पर तुम्हें यथेष्ट धन की प्राप्ति होगी। वह उपाय यह है कि तुम दोनों यहाँ के राजा के पास जाओ और उन्हें अपनी विद्या के चमत्कार से प्रसन्न कर, धन प्राप्त करो।"

हे नारद ! माता-पिता की आज्ञा स्वीकार कर वे दोनों राजा के समीप जा पहुँचे। वहां उन्होंने अपनी विद्या की चतुरता प्रकट कर, राजा से धन प्राप्त किया। जब वे घर लौटने को हुए, उस समय राजा ने उसने यह कहा—"हे ब्राह्मण पुत्रो ! हम तुम्हें और भी अधिक धन की प्राप्ति के लिए एक उपाय बताते हैं, सुनो। उपाय यह है कि मगध देश का राजा चित्राङ्गद तथा उसकी रानी सीमन्तिनी प्रति सोमवार को व्रत धारणकर, ब्राह्मणों को दान दिया करते हैं, तथा स्त्रियों सहित उन्हें भोजन कराते हैं। अस्तु, तुम उनके यहाँ इस प्रकार जाओ कि तुम में से एक तो स्त्री का स्वरूप धारण कर ले और दूसरा उसका पति बन जाए। ऐसा करने पर जब तुम्हें वहाँ से धन प्राप्त हो जाए, तब तुम फिर लौटकर हमारे घर आना।"

हे नारद ! राजा के वचन सुनकर उस ब्राह्मण पुत्रों ने अत्यन्त भयभीत होकर उत्तर दिया—"हे राजन् ! हमें ऐसे धन की आवश्यकता नहीं है। अस्तु, हम आपकी आज्ञा का पालन करने में असमर्थ हैं। कृपा करके आप हमें धर्म के विरुद्ध चलने का उपदेश मत कीजिये।"

हे नारद ! यह सुनकर राजा ने वेद का प्रमाण देते हुए उन बालकों से कहा—"हे ब्राह्मण पुत्रो ! हम तुम्हें वेद की आज्ञानुसार ही यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:46 PM

कहते हैं कि देवता, गुरु, माता, पिता तथा राजा की आज्ञा का तिरस्कार करना उचित नहीं है। वह आज्ञा चाहे उचित हो, चाहे अनुचित, उसका पालन करना सभी मनुष्यों का धर्म है।'' राजा की इस आज्ञा को उन दोनों ने स्वीकार कर लिया। तब सामवान् ने तो स्त्री का वेष बनाया और सुमेधा उसका पति बनकर राजा चित्राङ्गद के समीप जा पहुँचा। सन्ध्या के समय शिवपूजन करने के उपरान्त जब राजा-रानी ने सभी ब्राह्मणों को उनकी पत्नियों सहित शिव-पार्वती का रूप जानकर दान देना आरम्भ किया, तब सुमेधा और सामवान् भी पति-पत्नी के रूप में उनके सम्मुख उपस्थित हुए। उस समय रानी सीमन्तिनी भगवान् को कृत्रिम नारी के रूप में देखकर बहुत हँसी। फिर भी राजा-रानी ने उन दोनों को गौरी-शंकर का स्वरूप जानकर पूजा तथा भोजनादि कराकर, बहुत दक्षिणा देने के उपरान्त विदा किया। वहाँ से छुट्टी पाकर जब दोनों ब्राह्मण पुत्र अपने घर की ओर चले और बीच में एक वन में पहुँचे, उस समय स्त्री रूपधारी सामवान् के हृदय में ठीक वैसे ही भाव जाग्रत हुए, जैसे एक काम-पीड़िता नारी के हृदय में होते हैं। उस अवस्था में उसने समेुधा को सम्बोधित करते हुए यह कहा—''देखो, यह वन भोग-विलास करने के लिए कैसा उपयुक्त है। आओ, हम-तुम दोनों यहाँ मैथुन करें। सामवान् की बात सुनकर सुमेधा ने यह समझा कि वह हँसी कर रहा है। अस्तु, वह मुस्कराता हुआ, बिना कोई उत्तर दिये आगे बढ़ने लगा। कुछ दूर और चलकर स्त्री रूपधारी सामवान् ने फिर पहले के समान काम-पीड़ित होकर उससे कहा—''हे पति ! इस समय कामदेव के बाणों से मैं अत्यन्त दुःखी हो रही हूँ। भला तुम मेरे साथ रति क्यों नहीं करते हो? जब तक तुम मेरे साथ रति नहीं करोगे, मुझसे आगे नहीं चला जाएगा, अतः तुम मेरी इच्छा को पूर्ण करो।'' इन शब्दों को सुनकर जब सुमेधा ने पीछे मुड़कर देखा, तो उसे ज्ञात हुआ कि वास्तव में ही सामवान् एक परम सुन्दरी स्त्री के रूप में बदल गया है और उसके नेत्रों से काम वासना प्रकट हो रही है। तब उसने उसे सम्बोधित करते हुए कहा—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

"हे सामवान् ! तुम वेदपाठी, ब्रह्मचारी, निष्पाप ब्राह्मण पुत्र हो, फिर भला मुझ से ऐसी बातें क्यों कर रहे हो?"

हे नारद ! सुमेधा के यह वचन सुनकर सामवान् ने, जोकि उस समय वास्तव में पूर्ण रूपेण स्त्री हो चुका था, इस प्रकार कहा—"हे पति ! यदि तुम्हें विश्वास न हो तो मेरे गुप्त अंग को देख लो। उससे तुम्हें विदित हो जायेगा कि मैं अब पुरुष नहीं, अपितु स्त्री हूँ।" यह सुनकर सुमेधा ने अत्यन्त आश्चर्य में भरकर जब उसके अंगों की ओर दृष्टिपात किया तो यह जानते हुए देर न लगी कि वास्तव में सामवान का कथन सत्य है। इस आश्चर्य को देखकर वह चकित रह गया और शिवजी का ध्यान धरने लगा। तभी उस स्त्री ने इस प्रकार फिर कहा—"हे युवक ! मैं काम के वेग से अत्यन्त पीड़ित हूँ। तुम मेरी अभिलाषा को पूर्ण करो।" तब सुमेधा ने उत्तर दिया—"हे बन्धु ! हम तुम दोनों वेदपाठी ब्राह्मण पुत्र हैं। इस समय तुम अवश्य स्त्री रूप को प्राप्त हो गये हो, परन्तु तुम्हें इससे मुक्ति पाने के हेतु शिव-गिरिजा का ध्यान धरना चाहिए। विदर्भ-नरेश ने अपनी धूर्त्तता से हमें ठग लिया है। यदि हम उसके कथनानुसार कार्य नहीं करते, तो ऐसी विपत्ति कभी नहीं आती। यदि फिर भी तुम स्त्री बने रहो तो मैं अपने पिता से आज्ञा लेकर, तुम्हें अपनी पत्नी बना लूँगा।" इतना कहकर सुमेधा ने शिवजी की माया तथा रानी सीमन्तिनी के व्रत के प्रभाव की अपने मन में अत्यन्त प्रशंसा की।

हे नारद ! इस प्रकार सुमेधा ने स्त्री रूप सामवान् को बहुत कुछ समझाया, परन्तु काम के वशीभूत होने के कारण उसने एक भी बात नहीं मानी। उसने सुमेधा को जबरदस्ती छाती से लगा लिया। तदुपरान्त वे दोनों घर पहुँचे। उस समय दोनों के पिता सब हाल देख, अत्यन्त क्रुद्ध हो, विदर्भ-नरेश के समीप गये और उसे सम्बोधित करते हुए इस प्रकार कहने लगे—"हे राजन् ! तुमने हमारे पुत्रों से ऐसा बुरा-कर्म क्यों कराया, जो इनमें से एक बालक स्त्री बन गया। अब भला, हमारे पितर किस प्रकार मुक्त हो सकेंगे? इस बालक के अतिरिक्त हमारे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कुल में अन्य कोई सन्तान भी नहीं है।" सारस्वत ब्राह्मण राजा से इस प्रकार कहकर मूर्च्छित हो, पृथ्वी पर गिर पड़ा। तब राजा ने सामवान् को स्त्री रूप में देखकर अपने मन में अत्यन्त आश्चर्य करते हुए यह उत्तर दिया—"हे ब्राह्मणो ! मैं यह कभी नहीं समझता था कि तुम्हारा बालक वास्तव में ही स्त्री बन जायेगा। मैंने तो अधिक धन की प्राप्ति के लिए ही, इन्हें ऐसी युक्ति बतायी थी। आप कोई ऐसा उपाय बतावें जिसके करने से इस बालक का स्त्री भाव दूर हो जाए।"

हे नारद ! ब्राह्मणों ने यह सुनकर राजा से कहा—"हे राजन् ! तुम अपने हृदय में शिवजी की भक्ति दृढ़ करो तथा उन्हीं से हमारे बालक की मुक्ति का उपाय पूछो।" यह सुनकर राजा अपनी रानी सहित शिव-गिरिजा का पूजन करने लगा। उसने अनेक प्रकार के उपायों द्वारा शिव-गिरिजा को प्रसन्न कर लिया तथा गिरिजा जी ने प्रकट होकर राजा से वर माँगने के लिए कहा। उस समय राजा उनकी प्रार्थना करते हुए बोला—"हे भगवती ! मैं यह चाहता हूँ कि सारस्वत-ब्राह्मण का पुत्र, जो स्त्री बन गया है, वह फिर से पुरुष हो जाए।" राजा की इस प्रार्थना को सुनकर भगवती गिरिजा ने उत्तर दिया—"हे राजन् ! हम अपने भक्त को किसी प्रकार अवज्ञा नहीं करना चाहतीं। अस्तु, तुमसे यह कहती हैं कि तुम बालक का विवाह सुमेधा के साथ कर दो।" इतना कहकर जब गिरिजा अन्तर्धान हो गयीं, तब राजा ने दोनों ब्राह्मणों को बुलाकर सब वृत्तान्त कह सुनाया। उसे सुनकर सारस्वत ने अपने लड़के का विवाह सुमेधा के साथ कर दिया। तब वे दोनों पति-पत्नी प्रसन्नतापूर्वक विहार करने लगे। भगवती गिरिजा की कृपा से सारस्वत ब्राह्मण को एक दूसरे पुत्र की प्राप्ति हुई। हे नारद ! रानी सीमन्तिनी ने सोमवार का जो व्रत किया था, उसकी महिमा का यह प्रत्यक्ष चमत्कार तुम्हें मैंने सुनाया है। इस चरित्र को जो कोई सुनता, सुनाता अथवा पढ़ता है, उसे भी दोनों लोकों में आनन्द प्राप्त होता है।"

❁❁❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बाईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! अब मैं तुम्हें वार्षिक व्रतों के सम्बन्ध में सुनाता हूँ। उन्हें धारण करने से व्रती को सब प्रकार के आनन्द प्राप्त होते हैं तथा अन्त में मुक्ति प्राप्त होकर, शिवजी का सामीप्य-लाभ होता है। वार्षिक व्रतों में एक व्रत उमा महेश्वर नाम से प्रसिद्ध है। उमा महेश्वर व्रत चैत्र तथा मार्गशीर्ष मास के शुक्लपक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा अथवा अमावस्या को करना चाहिए। इस व्रत का नियम यह है कि प्रातःकाल उठ कर संकल्प करे, तदुपरान्त नित्यकर्म आदि से निवृत्त हो, नदी में स्नान करे। फिर अपने घर में आकर श्रेष्ठ मंडप तथा पाँच कलशों की स्थापना करे। कलशों को शुद्ध वस्त्र से ढाँके तथा उनके ऊपर शिव तथा गिरिजा की स्वर्ण-प्रतिमा स्थापित करे। प्रतिमा में शिवजी का स्वरूप, शंख, चक्र, गदा, पद्मयुक्त तथा गिरिजा का स्वरूप वस्त्राभूषणों से युक्त होना चाहिए। तत्पश्चात् विधिपूर्वक उनका पूजन तथा हवन करके पंचाक्षरी मंत्र का जप करना चाहिए।

हे नारद ! प्रदोष-काल में शिवजी का दुबारा पूजन करके ब्राह्मणों को सपत्नीक भोजन करावे तथा उन्हें दान-दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट करे। तदुपरान्त स्वयं दूध सहित मीठा भोजन करे। इसी प्रकार एक वर्ष तक दोनों पक्ष में इस व्रत को धारण करता रहे। जो लोग इस विधि में उमा महेश्वर व्रत को धारण करते हैं, उनकी तीन पीढ़ियाँ तर जाती हैं। ऐसे लोगों को संसार में सुख तथा परलोक में शिवजी का सामीप्य प्राप्त होता है। इस सम्बन्ध में हम तुमसे एक कथा कहते हैं।

हे नारद ! प्राचीन काल में वैदर्भ नामक एक ब्राह्मण अनर्त देश में रहा करता था। वह ब्राह्मण अत्यन्त धनवान्, बलवान् तथा विद्वान् था। उसके अनेक सन्तानें थीं, जिनमें शारदा नामक एक कन्या बड़ी विदुषी थी। जब वह कन्या बारह वर्ष की हुई, तब एक अन्य धनवान् वृद्ध ब्राह्मण ने वैदर्भ के पास जाकर यह कहा कि तुम अपनी पुत्री का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:46 PM

विवाहा हमारे साथ कर दो। वह ब्राह्मण राजा का मित्र था। अस्तु, उसकी माँग सुनकर वैदर्भ पहले तो बहुत चिन्तित हुआ, परन्तु अन्त में यह विचार करके कि इस माँग को अस्वीकार करने पर राजा भी उसका विरोधी हो जायेगा, उसने शारदा का विवाह उस बूढ़े ब्राह्मण के साथ कर दिया।

हे नारद ! मध्याह्न काल में तो विवाह हुआ और उसी दिन संध्याकाल में जब वह ब्राह्मण नदी के तट से सन्ध्या करके लौट रहा था, मार्ग में सर्प के काट लेने से उसकी मृत्यु हो गयी। यह देखकर दोनों कुल के लोग अत्यन्त दुःखी हुए, परन्तु विधि के विधान में परिवर्तन करना सामर्थ्य की बात न जानकर, धैर्य धारण कर, चुप हो गये। शारदा विधवा होकर अपने माता-पिता के घर रहने लगी। जब कुछ समय व्यतीत हो गया, तब एक दिन यह घटना घटी। शारदा के पिता तथा भाई किसी स्थान पर विवाह में सम्मिलित होने के लिये गये हुए थे। उनके लौटकर आने से पूर्व ही अन्धे वैध्रुव मुनि अपने शिष्यों का हाथ पकड़े हुए शारदा के घर जा पहुँचे। शारदा ने उनकी अत्यन्त सेवा की तथा भोजन कराया। उस समय वैध्रुव मुनि ने उसे वरदान देते हुए यह कहा—"हे शारदे ! तुम्हें अपने पति के द्वारा एक पुत्र की प्राप्ति होगी तथा देवताओं की कृपा से वह बालक बड़ा धर्मात्मा होगा।" मुनि के यह वचन सुनकर शारदा ने अत्यन्त चकित हो, हाथ जोड़कर इस प्रकार कहा—"हे प्रभो ! मेरे पति की मृत्यु तो विवाह के दूसरे दिन ही हो गयी थी। अस्तु, आप मुझे यह बतावें कि आपका कथन किस प्रकार सत्य होगा?"

हे नारद ! शारदा के मुख से यह शब्द सुनकर वैध्रुव मुनि ने कहा—"हे पुत्री ! नेत्रहीन होने के कारण मैं तुम्हें बिना देखे ही ऐसा वर दे बैठा हूँ, फिर भी मैं भगवान् सदाशिव को प्रसन्न करके अपने वचन को सत्य करूँगा। तुम भी मेरी आज्ञा मानकर उमा महेश्वर व्रत को धारण करो।" मुनि के यह वचन सुनकर शारदा अत्यन्त प्रसन्न हुई। उसने उत्तर दिया—"मैं आपकी आज्ञानुसार उमा महेश्वर का व्रत

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:46 PM

अवश्य धारण करूँगी।'' यह सुनकर मुनि ने उसे व्रत की विधि बतला दी। उसी समय शारदा के पिता तथा भाई भी लौटकर घर आ गये। उन्होंने जब सब वृत्तान्त सुना तो मुनि से इस प्रकार बोले—''हे प्रभो ! आपने अत्यन्त कृपा की जो यहाँ आकर हमें अपना दर्शन दिया है। हमारी यह पुत्री आपकी शरण में है। अब आप कृपा कर यहीं शिवालय में निवास कीजिए। जब इसका व्रत समाप्त हो जाए, तब आप जहाँ चाहें, वहाँ चले जाइयेगा ; परन्तु उस समय तक यहीं निवास कीजिये।'' वैध्रुव मुनि ने इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। तब शारदा उनके बताये अनुसार उमा महेश्वर का व्रत रखने लगी और वे उसे उपदेश करते रहे।''

तेईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! इस प्रकार शारदा को व्रत करते हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया, तब उसने व्रत का उद्यापन किया। मुनि ने भी जप, तप, योग आदि द्वारा भगवती गिरिजा को प्रसन्न किया। दोनों की ऐसी भक्ति देखकर श्री गिरिजा ने प्रसन्न होकर दर्शन दिये। उनके दर्शन पाकर मुनि का अन्धापन दूर हो गया। उस समय मुनि तथा शारदा ने गिरिजा जी की स्तुति की।

हे नारद ! तब गिरिजा जी ने प्रसन्न होकर दोनों को सम्बोधित करते हुए यह कहा—''मैं तुम्हारी इच्छाओं को पूरा करूँगी। तुम जो चाहते हो, वह कहो?'' यह सुनकर मुनि बोले—''हे मातेश्वरी ! मैंने अनजान में शारदा को यह वरदान दिया है कि तुम अपने पति द्वारा एक पुत्र को जन्म दोगी। अस्तु, आप मेरे इस वचन को सत्य करने की कृपा करें।'' यह सुनकर भगवती गिरिजा बोलीं—''हे मुनि ! मैं तुम्हें शारदा के पूर्व जन्म का वृत्तान्त सुनाती हूँ।''

''हे मुनि ! पूर्वजन्म में शारदा एक दरिद्र ब्राह्मण की पुत्री थी। यह एक व्यक्ति को ब्याही गयी, जिसके घर में पहले से भी एक पत्नी थी।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:49 PM 84

वहाँ इसने अपनी सौत को अनेक प्रकार के कष्ट दिये। इसका पति भी इसकी सुन्दरता पर ऐसा मोहित था कि उसने भी अपनी पहली पत्नी की ओर ध्यान देना छोड़ दिया। फलस्वरूप वह चिन्तातुर हो कुछ दिनों में मृत्यु को प्राप्त हो गयी। इसके पड़ोस में एक युवा ब्राह्मण रहता था। एक दिन उसने इसकी सुन्दरता पर मोहित होकर इसका हाथ पकड़ लिया। तब शारदा ने उसे अनेक प्रकार के दुर्वचन कहकर धिक्कारा। परन्तु वह इसके मोह में व्याकुल होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

"हे मुनि ! शारदा ने अपनी सौत को बहुत कष्ट पहुँचाया था, इसलिए यह इस जन्म में विधवा हुई है तथा निरन्तर इक्कीस जन्मों तक विधवा ही होती रहेगी। इस बार यह उस ब्राह्मण की पत्नी होकर विधवा हुई, जिसने पूर्वजन्म में इसके विरह में अपने प्राण त्याग दिये थे। इसका पूर्व-जन्म का जो पति था, वह पाण्डुदेश में एक ब्राह्मण के घर उत्पन्न हुआ है। वह अत्यन्त धनी, सुन्दर, बुद्धिमान् तथा शिवभक्त है। मैं यह वरदान देती हूँ कि उसके साथ इसकी प्रतिदिन स्वप्न में भेंट हुआ करेगी। उसके रहने का स्थान यहाँ से तीन सौ सात योजन दूर है। शारदा अपने उस पूर्व-जन्म के पति के साथ स्वप्न में भोग-विलास करके शुभ घड़ी में एक पुत्र को जन्म देगी। उस बालक को देखकर बालक का पिता अत्यन्त प्रसन्न होगा।"

हे नारद ! मुनि से इस प्रकार कहकर पार्वती जी ने शारदा से कहा—"हे शारदा ! तुम्हारा पति तुम्हें प्रतिदिन स्वप्न में मिला करेगा। उसके साथ भोग-विलास करती हुई तुम एक पुत्र को जन्म दोगी। तुम्हारा पुत्र बहुत बलवान्, धनवान् तथा यशस्वी होगा। इस व्रत के प्रभाव से तुम भी अन्त में मुक्ति को प्राप्त करोगी।" इतना कहकर भगवती गिरिजा अन्तर्धान हो गयीं।

हे नारद ! प्रातःकाल होने पर मुनि ने यह सब वृत्तान्त शारदा के माता-पिता को सुनाया। तदुपरान्त मुनि तो अपने स्थान को चले गये और शारदा प्रतिदिन स्वप्न में अपने पति से भेंट करने लगी। कुछ दिनों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:49 PM

बाद जब वह गर्भवती हुई तो बन्धु-बांधवों ने तथा अन्य लोगों ने उसे व्यभिचारिणी समझकर, धिक्कार देना आरम्भ किया। लोगों ने शारदा के माता-पिता से यह भी कहा कि वे उसे घर से निकाल दें। जब शारदा के माता-पिता इस बात के लिए तैयार हो गये, उस समय आकाशवाणी हुई—''शारदा ने कोई कुकर्म नहीं किया है। जो लोग इसे दोष लगायेंगे, उनकी जिह्वा फट जायेगी।'' इस आकाशवाणी को सुनकर शारदा के पिता, भाई, बन्धु आदि अत्यन्त प्रसन्न हुए, परन्तु कुछ लोग आश्चर्य में भरकर यह कहने लगे कि आकाशवाणी के बहाने यह किसी ने झूठी बात कह दी है। परिणाम यह हुआ कि ऐसे कहने वाले लोगों की जीभ तुरन्त फट गयी।''

चौबीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! शुभ घड़ी प्राप्त होने पर शारदा ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। वह बालक सूर्य के समान प्रकाशवान् था। उसका नाम शारदेव रखा गया। बड़ा होने पर उसने अल्पकाल में ही तीन वेद पढ़ लिया तथा शिवजी की भक्ति में संलग्न रहकर माता की सेवा करने लगा। विवाह हो जाने के पश्चात् उसने अनेक सन्तानों को जन्म दिया। एक बार वह अपनी माता को साथ लेकर गोकर्ण तीर्थ में स्नान करने के लिए, शिवरात्रि के दिन जा पहुँचा। वहाँ शारदा का पति वह ब्राह्मण भी आया हुआ था, जिसे शारदा स्वप्न में प्रतिदिन देखा करती थी। शारदा वहाँ उसे पहचान कर अत्यन्त आनन्दित हुई। उधर जब उसने यह भी देखा कि वह स्वप्न में जिस स्त्री तथा पुत्र को देखा करता है वे यहाँ उपस्थित हैं, तो वह भी अत्यन्त आनन्दित हुआ। तदुपरान्त वह वास्तविक भेद को जानने के लिए शारदा के पास आया और इस प्रकार पूछने लगा—''हे भद्रे ! तुम किसकी पुत्री तथा किसकी पत्नी हो? तुम्हारा नाम क्या है? तुम बारम्बार हमारी ओर क्यों देख रही हो, इसका कारण बताओ।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:49 PM

यह सुनकर शारदा ने रो-रोकर अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त उसे सुना दिया। तब उस ब्राह्मण ने हँसकर पूछा—"यह पुत्र किसका है? इसे देखकर मेरे हृदय में पिता के समान प्रीति सम्पन्न होती है। जब तुम विधवा हो गयीं, तब यह बालक किस प्रकार उत्पन्न हुआ?" यह सुनकर शारदा ने लज्जित होते हुए उत्तर दिया—"हे स्वामिन्! यह बालक आपके द्वारा ही उत्पन्न हुआ है। इसका नाम शारदेव है और यह सम्पूर्ण विद्याओं को जानने वाला है।" यह सुनकर उस ब्राह्मण ने मुस्कराते हुए कहा—"यह तो बड़े आश्चर्य की बात है कि तुम्हारा पति तुम्हारा हाथ पकड़े बिना ही मृत्यु को प्राप्त हो गया और तुम इस बालक को जन्म दे बैठीं।" अस्तु, जो वृत्तान्त सत्य हो, वह हमें बताओ। तब शारदा ने लज्जा त्यागकर सब सच्चा वृत्तान्त कह सुनाया, जिससे ब्राह्मण को अपने मन में यह निश्चय हो गया कि शारदा मेरी ही स्त्री है।

हे नारद! उस समय शारदा तथा उसके पति को अत्यन्त प्रसन्नता हुई—"तब शारदा ने अपने व्रत का आधा फल उस ब्राह्मण को दे दिया और स्वयं भी अपने पति के साथ रहकर उसके आधीन हुई। व्रत का फल प्राप्त होते ही उस ब्राह्मण को अपने पूर्वजन्म का स्मरण हो आया। तब वह अत्यन्त प्रसन्न हो, अपने माता-पिता की आज्ञानुसार शारदा तथा उसके बालक को अपने घर ले गया। वहाँ शारदा ने उसकी बहुत सेवा की। सांसारिक भोग करने के पश्चात् जब वह ब्राह्मण मृत्यु को प्राप्त हुआ, तब शारदा भी उसके साथ सती हो गयी। उस समय वे दोनों विमान में बैठकर शिवपुरी में जा पहुँचे।

हे नारद! शारदा की यह कथा अत्यन्त पवित्र है। इसे सुनने तथा सुनाने से दोनों लोकों में अत्यन्त आनन्द मिलता है। यह स्त्रियों के पति की आयु में वृद्धि करती है। उमा महेश्वर व्रत को राजव्रत कहा जाता है। जो स्त्रियाँ इस व्रत को धारण करती हैं, वे अपने दोनों कुलों को पवित्र कर देती हैं।"

इति श्रीशिवमहापुराणे ब्रह्मानारदसम्वादे भाषायां दशमखण्डस्समाप्तः ॥ १० ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:50 PM

ॐ नमः शिवाय

श्री शिव महापुराण
(सरल भाषा)

ग्यारहवाँ खण्ड

पहला अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! मैंने तुम्हें शिवजी के निर्गुण तथा सगुण दोनों स्वरूपों के चरित्र सुनाये। अस्तु, अब तुम जो और सुनना चाहो मुझे बताओ?"

इतनी कथा कह कर सूत जी ने कहा—"हे शौनकादि ऋषियो ! ब्रह्मा जी के मुख से यह वचन सुन कर नारद जी ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हुए इस प्रकार कहा—"हे पिता ! आप ने अत्यन्त कृपा करके मुझे शिव-चरित्र सुनाया जिससे मुझे श्रेष्ठ धर्म की प्राप्ति हुई है। अब मेरी अभिलाषा है कि आप मुझे सम्पूर्ण ब्रह्मांड की स्थिति के सम्बन्ध में बताने की कृपा करें, जिससे मेरे मन में कोई सन्देह नहीं रहे।"

हे शौनकादि ऋषियो ! नारद जी की यह प्रार्थना सुन कर ब्रह्मा जी ने प्रसन्न हो कर कहा—"हे पुत्र ! भगवान् भूतभावन सब प्राणियों द्वारा पूजनीय हैं। यद्यपि सदाशिव जी तीनों गुणों से परे हैं, तो भी वे ब्रह्माण्ड के उपकार के लिए सगुण रूप ग्रहण करते हैं। वे सब के स्वामी हैं तथा उन्हीं का स्मरण करना सब लोगों को उचित है। इस प्रकार कहते हुए ब्रह्मा जी आनन्द मग्न हो गये। उस प्रसन्नता में उनके नेत्रों से आँसुओं की धारा बह निकली। तत्पश्चात् वे भगवान् सदाशिव के चरणों का बारम्बार स्मरण करते हुए, इस प्रकार बोले।

हे नारद ! तुम परम धन्य हो, क्योंकि तुमने बारम्बार भगवान् सदाशिव के चरित्रों के सम्बन्ध में प्रश्न करके मेरे आनन्द की वृद्धि की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:50 PM

है। जो लोग भगवान् सदाशिव के चरित्र सुनने के लिए किसी से कुछ प्रश्न करते हैं, वे बिना परिश्रम के ही भव-सागर से पार हो जाते हैं। हे पुत्र ! शिवजी के स्वरूप दो प्रकार के हैं—एक क्षर, दूसरा अक्षर। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में ये दोनों स्वरूप गुप्त, प्रकट रूप से विद्यमान हैं। जिस प्रकार शिवजी के स्वरूप दो प्रकार के हैं, उसी भाँति उनकी माया भी दो प्रकार की है, पहली विद्या, दूसरी अविद्या। शंकरजी सगुण रूप, माया से परे, शरीर से रहित तथा परमेश्वर हैं। सगुणरूप शिवजी की लीला से लोकों का अस्तित्व प्रकट होता है। चौदहों भुवन तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उन्हीं के द्वारा निर्मित हैं।

हे नारद ! मनुष्यों को सर्वप्रथम भगवान् सदाशिव के विराट् रूप का ध्यान धरना चाहिए। उस विराट् रूप में सात लोक ऊपर तथा सात लोक नीचे स्थित हैं। नीचे के लोकों के नाम इस प्रकार हैं—1. अतल, 2. वितल, 3. सुतल, 4. तलातल, 5. महातल, 6. रसातल तथा 7. पाताल। इन नीचे के लोकों को विराट् स्वरूप शिवजी के चरणों के समान समझना चाहिए। ऊपर के लोकों के नाम इस प्रकार हैं—1. भूर्लोक, 2. भुवर्लोक, 3. स्वर्लोक, 4. महर्लोक, 5. जनर्लोक, 6. तपर्लोक तथा 7. सत्यलोक। इन लोकों को शिवजी के शरीर का ऊपरी भाग समझना चाहिए। उपलोकों की गणना भी उन्हीं भागों में होती है। अब तुम विराट् स्वरूप का वर्णन और अधिक विस्तारपूर्वक सुनो। उस विराट् स्वरूप का चरणतल पाताल, टखना रसातल, पिंडलिया महातल, घुटने तलातल, जांघें सुतल, शरीर का एक भाग वितल, दूसरा भाग अतल तथा रानें महातल हैं। इसी प्रकार ऊपर के लोकों को यों समझना चाहिए कि भूर्लोक नाभि, भुवर्लोक छाती, स्वर्लोक मुख, जनलोक मस्तक, तपलोक सिर, सत्यलोक कण्ठ तथा महर्लोक हृदय हैं। वह इस प्रकार सिर से पाँव तक चौदहों लोकों को विराट् रूप का अंग समझकर ध्यान धरना उचित है।

हे नारद ! अब तुम चौदहों लोकों के विस्तार का वृत्तान्त सुनो। यह सम्पूर्ण ब्रह्मांड चौदहों लोकों में बँटा है। भूतल के सात खण्ड हैं। वह एक अयुतयोजन लम्बा है। वहाँ स्वर्गलोक से भी अधिक आनन्द

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:50 PM

उपस्थित हैं। वहाँ के सभी खण्ड अत्यन्त प्रकाशवान् तथा सुन्दर हैं। वहाँ भोग-विलास के लिए परम सुन्दरी स्त्रियाँ तथा असंख्य धन विद्यमान है। वहाँ देवताओं के स्थान रत्नों से जड़ित परम सुन्दर हैं, जिन्हें देखकर विश्वकर्मा को भी लज्जा आती है। वहाँ किसी को दुःख, शोक, वृद्धावस्था, मृत्यु, चिन्ता आदि नहीं होती। रसायन-सेवन करने के कारण वहाँ सभी प्राणियों के शरीर अत्यन्त तेजस्वी तथा दीप्तिमान रहते हैं। उस स्थान पर बहुधा, दैत्य, दानव, सर्प आदि रहते हैं। वे अपना समय प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करते हैं। महाशिरोमणि के प्रकाश द्वारा वहाँ कहीं अंधेरा नहीं रहता। दिन-रात प्रकाश ही फैला करता है। वहाँ की पुष्प-वाटिका में सहस्त्रों प्रकार के छायादार वृक्ष फल-फूलों से लदे रह कर हृदय को अत्यन्त आनन्द प्रदान करते हैं। उन पर बैठे हुए विविध प्रकार के पक्षी अपनी मधुर वाणी से सब लोगों का मन वश में कर लेते हैं।

हे नारद ! वहाँ की नदियों में कमल के फूल खिले रहते हैं तथा विविध प्रकार की मछलियाँ एवं जल-जन्तु भ्रमण करते रहते हैं। उनके राजा शेषनाग हैं। उनके सम्मुख अप्सराएँ सदैव नृत्य किया करती हैं तथा नागों की कन्याएँ सेवा में संलग्न रहती हैं। इस प्रकार मैंने संक्षेप में नीचे के सातों खण्डों का वर्णन किया। अब तुम प्रत्येक लोक का अलग-अलग वर्णन सुनो।"

दूसरा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! सर्वप्रथम तुम अतल लोक का वृत्तान्त सुनो। वहाँ पुण्य करने वाला मनुष्य पहुँचता है। इस लोक का राजा मयदानव का पुत्र है। उसने छियानवे मायाओं का निर्माण किया है। भगवान् सदाशिव की सेवा किये बिना अतल लोक किसी को प्राप्त नहीं होता। अतल लोक का विस्तार दस सहस्त्र योजन है। मयदानव का पुत्र भगवान् सदाशिव के ध्यान में हर समय मग्न रहता है

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:50 PM

तथा बिना परिश्रम किये लोकों में भ्रमण करता रहता है। यहाँ स्त्रियाँ तीनों लोकों को अपने कामपाश में आबद्ध कर लेने वाली हैं। जो मनुष्य पूर्वजन्म में शुभ-कर्म करता है, वही दूसरे जन्म में अतललोक में जाकर इन स्त्रियों के साथ विहार करता है।

हे नारद ! अतललोक की स्त्रियाँ हाटक अर्थात् स्वर्ण के रस को पी कर विहार करती हैं। इन स्त्रियों के दर्शन तथा स्पर्शमात्र से ही मनुष्य इनकी प्रीति में डूब जाता है। इस लोक जैसा आनन्द देवताओं को भी प्राप्त नहीं होता। जो लोग हाटक रस पीने वाली इन स्त्रियों के साथ संभोग करते हैं, इन्हें दस सहस्त्र हाथियों का बल प्राप्त हो जाता है। इस हाटक रस को प्राप्त करने के लिए मयदानव के पुत्र ने हाटकेश शिवजी का बड़ा पूजन किया था। मयदानव हाटकेश शिवजी की इस प्रकार स्तुति किया करता है—"हे भगवान् सदाशिव ! आप अनाथों के नाथ, तीनों लोकों का दु:ख दूर करने वाले तथा सब को आनन्द प्रदान करने वाले हैं। आपकी सेवा द्वारा असंख्य लोगों ने मुक्ति प्राप्त की है। आप सब का मनोरथ पूर्ण करने वाले हैं। अस्तु, मेरे ऊपर भी निरन्तर अपनी कृपा बनाये रहें।" इस प्रकार स्तुति करता हुआ मयदानव का पुत्र शिवजी की कृपा से उस अतल लोक का राज्य तथा अप्रमेय आनन्द प्राप्त करता है।

हे नारद ! अब तुम वितललोक का वृत्तान्त सुनो। यह लोक अतललोक से नीचे, ऊँचाई में दस सहस्त्र योजन तथा अंडे के समान गोल है। यह लोक तालाबों, नदियों तथा नहरों से सुशोभित है, जिनमें कमल के फूल खिले रहते हैं। इस लोक का राजा बलि है। वह सब प्रकार से भगवान् सदाशिव का पूजन किया करता है। इस लोक में शिवजी हाटकेश लिंगरूप से अपने गणों सहित विराजमान रहते हैं तथा तीनों लोकों का पालन करते हुए, शिवरानी के साथ विहार किया करते हैं। उनके मस्तक से निकलने वाली जलधारा हाटक रस के नाम से प्रसिद्ध है। उसे पी कर अग्नि अत्यन्त बलवान् रहता है। वायु के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

संगम द्वारा उस अग्नि के मुख से जो थूक बाहर गिरता है, उसे हाटक अर्थात् कंचन कहते हैं, उस हाटक के आभूषण बना कर वहाँ के निवासी सभी दैत्य पहनते हैं। वहाँ की स्त्रियाँ भी उन्हीं आभूषणों को धारण कर, अपने पतियों की सेवा में संलग्न रहती हैं।

हे नारद ! राजा बलि शिवजी की जिस प्रकार स्तुति करते हैं, वह संक्षेप में इस तरह है—"हे देवताओ के स्वामी ! आप शरणागतों का पालन करने वाले, सम्पूर्ण संसार के दुःखों को नष्ट करने वाले हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र आपके ही स्वरूप हैं। नारद, शारद तथा शेष भी आपके गुणों का सम्यक् वर्णन नहीं कर पाते।" इसी प्रकार वहाँ के निवासी भगवान् सदाशिव की स्तुति एवं पूजा करते हुए सदैव प्रसन्न रहते हैं।

हे नारद ! अब तुम सुतललोक का वृत्तान्त सुनो। उसका विस्तार दस सहस्त्र योजन चौकोर है। वहाँ राजा विरोचन का पुत्र बलि राज्य करता है। उसने विष्णु जी को दान देकर अत्यन्त प्रसन्न किया था। उसके हृदय में भगवान् सदाशिव का प्रेम सदैव विद्यमान रहता है। शिवभक्त होने के कारण उसे विष्णु जी भी नहीं मार सके। उसने विष्णु जी को ब्राह्मण रूप में देखकर सब प्रकार का विरोध भुला दिया था तथा अपना अनिष्ट देखते हुए भी धर्म को नहीं छोड़ा था। उस राजा बलि द्वारा ही बाणासुर का जन्म हुआ था। बाणासुर ने एक पर्वत को अपने बल द्वारा मसल कर मिट्टी कर डाला था। बलि के नगर की रक्षा विष्णु जी स्वयं किया करते हैं।"

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! राजा बलि ने किस पुण्य के प्रभाव से ऐसा उच्च पद तथा श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त किया था?" ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवभक्त होने के कारण ही विष्णु जी उसे पराजित नहीं कर सके। मैं तुम्हें उसके पूर्व जन्म का तथा दूसरे जन्म का वृत्तान्त सुनाता हूँ।"

❂❂❂

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:50 PM

तीसरा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! पुरातन-काल में कण्व नामक एक मनुष्य महापापी तथा ब्राह्मणों की निन्दा करने वाला था। उसने अनेक जीवों की हिंसा भी की। कुछ समय बाद वह ऐसा दरिद्र हुआ कि उसके शरीर पर कौपीन तक नहीं रह गयी। तब वह चोरी और छल द्वारा अपना समय व्यतीत करने लगा। एक दिन वह एक वेश्या के लिए पान, फूल तथा चन्दन लिये दौड़ा चला जा रहा था कि उसी समय संयोग से पृथ्वी पर गिर कर मूर्छित हो गया। कुछ देर बाद जब उसे चैतन्यता प्राप्त हुई तो उसने पृथ्वी पर गिरे हुए पान-फूल आदि का शिवजी के नाम संकल्प कर दिया तथा अपने मुख से नमः शिवाय शब्द का उच्चारण करता हुआ मृत्यु को प्राप्त हो गया। यमराज के दूत उसे महापापी जान कर, बाँध कर यम को समीप ले गये। उस समय यम ने उसे सम्बोधित करते हुए यह कहा—"हे कण्व ! तूने संसार में अनेक दुष्कर्म किये हैं तथा अपने धर्म को त्यागा है। अस्तु, तुझे हम घोर नरक में डाल कर कष्ट देंगे।"

हे नारद ! यमराज की बात सुनकर कण्व ने उत्तर दिया—"हे समदर्शी धर्मराज ! आप जो यह कहते हैं कि मैं पापी हूँ सो ठीक नहीं है, एक शुभ कर्म करने के कारण मेरे सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गये हैं। कण्व के मुख से यह वचन सुनकर यमराज ने चित्रगुप्त को अपने पास बुला कर कहा—"हे चित्रगुप्त ! तुम इस पापी की ढिठाई तो देखो कि यह अपने को निष्पाप बता रहा है। मैं इसे नरक में डालना चाहता हूँ। अस्तु, इसके पाप-पुण्य का जो लेखा-जोखा हो, उसे तुम मेरे सम्मुख उपस्थित करो।" यमराज के मुख से इन शब्दों को सुन कर चित्रगुप्त ने शिवजी को स्मरण किया। तदुपरान्त कण्व को शिवजी का कृपापात्र जान कर इस प्रकार उत्तर दिया—"हे महाराज ! यद्यपि इस मनुष्य ने जीवन भर महापाप किये हैं, परन्तु मृत्यु के समय इसके मुख से नमः शिवाय शब्द निकला है। इतना ही नहीं, वेश्या के निमित्त जिस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:50 PM

सामग्री को यह लिये जा रहा था, उसे भी इसने शिवजी को समर्पित किया है। अस्तु, एक महापुण्य के कारण इसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गये हैं। मेरे विचार से आप इसे स्वर्ग भेजें तथा तीन घड़ी के लिए इन्द्रासन पर भी बैठावें। वहाँ इसकी जो इच्छा हो, वह कार्य करे।''

हे नारद ! चित्रगुप्त की बात सुन कर यमराज ने धर्मराज का उत्तम स्वरूप धारण कर, कण्व को अपना दर्शन दिया तथा शिवभक्त होने के कारण उसकी अत्यन्त प्रशंसा भी की। उस समय देव गुरु बृहस्पति जी ऐरावत हाथी को लिये हुए अन्य देवताओं के साथ धर्मराज के समीप आ पहुँचे। वे कण्व को ऐरावत हाथी पर बैठा कर इन्द्रलोक को ले गये। वहाँ उसे तीन घड़ी के लिये इन्द्रासन पर बैठा दिया गया। जिस समय देवराज इन्द्र को हटा कर कण्व उसके सिंहासन पर बैठा, तो अपने हृदय में उसे अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

हे नारद ! जब कण्व इन्द्रासन पर बैठ गया, उस समय तुम ने उसके पुण्यों को क्षीण करने के निमित्त उसे यह सलाह दी कि तुम इन्द्राणी को अपने पास बुलाओ और उसके साथ भोग-विलास करके आनन्द प्राप्त करो। परन्तु तुम्हारी बात सुनकर कण्व ने यह उत्तर दिया—''हे नारद ! हमें इन्द्राणी से कोई प्रयोजन नहीं है।'' इतना कहकर कण्व ने तुम्हें तो विदा किया तथा स्वयं अपने पुण्य को बढ़ाने के हेतु दान देना आरम्भ कर दिया। उसने अगस्त्य ऋषि को ऐरावत हाथी, विश्वामित्र को उच्चैःश्रवा घोड़ा, गालव्य ऋषि को कामधेनु गौ तथा कल्पवृक्ष देकर अन्य वस्तुएँ भी ऋषि-मुनियों को दान कर दी। तीन घड़ी के भीतर ही उसने समस्त शिव क्षेत्रों में जा कर भगवान् सदाशिव का पूजन किया तथा ब्राह्मणों को दान देकर सन्तुष्ट कर दिया।

हे नारद ! जब तीन घड़ी का समय व्यतीत हो गया, तब देवराज इन्द्र पुनः अपने सिंहासन पर आरूढ़ हुए। उस समय इन्द्र ने शिवजी की माया के वशीभूत हो, इन्द्राणी को अपने समीप बुला कर क्रोध प्रकट करते हुए यह कहा—''हे शची ! कण्व ने तुम्हारे साथ मैथुन अवश्य किया होगा। अस्तु, तुम जो सत्य बात हो, उसे हमें बताओ।'' उस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:50 PM

समय इन्द्राणी ने हँसते हुए यह उत्तर दिया—"हे स्वामिन ! कण्व
बहुत शुद्ध व्यक्ति है। वह अत्यन्त निर्मल है तथा शिवजी उसके ऊपर
अत्यन्त दयालु हैं। भगवान् शंकर की कृपा से वह माया-मोह आदि से
छूट कर परम पवित्र हो चुका है।"

चौथा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! इन्द्राणी की बात सुनकर इन्द्र
अत्यन्त लज्जित हुए। तदुपरान्त जब उन्होंने यह देखा कि ऐरावत
हाथी, उच्चैःश्रवा घोड़ा, कामधेनु गौ तथा कल्पवृक्ष आदि वस्तुएं
कहीं भी दिखाई नहीं देतीं तब उन्होंने बृहस्पति से यह पूछा—"हे
गुरु ! इन सब वस्तुओं को यहाँ से कौन चुरा ले गया? बृहस्पति ने उत्तर
दिया—"हे इन्द्र ! तुम्हारी सभी वस्तुओं को कण्व ने दान कर दिया
है। उसने अपना जन्म सफल बनाने के हेतु तीन घड़ी में ही सम्पूर्ण
शुभ-कर्म कर लिये हैं।" यह सुनकर इन्द्र ने अत्यन्त चिन्तित हो कर
कहा—"हे प्रभो ! अब आप मुझे यह बताइये कि मैं अपनी वस्तुओं
को फिर कैसे प्राप्त कर सकूँगा।" बृहस्पति ने उत्तर दिया—"हे इन्द्र
इस सम्बन्ध में तुम यमराज के पास जा कर उपाय पूछो।"

हे नारद ! बृहस्पति की सलाह मान कर इन्द्र यमराज के पास गये
और उनसे इस प्रकार कहने लगे—"हे यमराज ! तुमने कण्व को
हमारा पद देकर उचित नहीं किया। उसने तीन घड़ी के भीतर ही हमारी
सम्पूर्ण वस्तुएँ दान कर दीं। अब तुम उन वस्तुओं को हमें किसी प्रकार
लौटा कर दिलवाओ।" इन्द्र की बात सुनकर यमराज ने कण्व को
अपने पास बुला, अत्यन्त क्रुद्ध हो, इस प्रकार कहा—"हे कण्व
तुझे पराई सम्पत्ति नष्ट करने का क्या अधिकार था? भला तुझे ऐसा
कर्म करने का साहस किस प्रकार हुआ।" यह सुनकर कण्व ने निर्भय
हो कर उत्तर दिया—"हे यमराज ! जब तक मैं वहाँ का स्वामी रहा
तब तक मैंने जो जी में आया किया। ऐसी स्थिति में आप मेरे किसी भ

CC-0. Late Pt: Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:50 PM

कार्य को पाप कैसे कह सकते हैं?'' यमराज बोले—''दान देना तो पृथ्वी में उचित कहा गया है, क्योंकि वहाँ दान देने का फल प्राप्त होता है। देवताओं के लोक में दान देने का फल नहीं मिलता।''

हे नारद ! इस प्रकार यमराज ने कण्व को बहुत डराया-धमकाया, परन्तु वह तनिक भी भयभीत नहीं हुआ। उस समय चित्रगुप्त ने हँसते हुए यह कहा—''हे धर्मराज ! कण्व ने वेद के अनुसार उत्तम धर्म किये हैं। अस्तु, वह नरकगामी नहीं हो सकता। अस्तु, कण्व ने देव लोक में रह कर शिवजी के नाम पर जो दान दिया है, वह भी उचित है। इस पुण्यकर्म के कारण कण्व के सभी पाप नष्ट हो गये हैं।''

हे नारद ! चित्रगुप्त की यह सम्मति सुनकर धर्मराज ने इन्द्र से कहा—''हे देवराज इन्द्र ! तुम ने सौ अश्वमेध यज्ञ करके इन्द्रलोक को प्राप्त किया है तथा कण्व ने अपने शुभ कर्मों द्वारा सभी पापों को नष्ट कर डाला है। उचित है कि अब तुम अगस्त्य आदि सभी मुनियों के पास जाओ और उनकी सेवा करके धन आदि भेंट में देकर, अपनी वस्तुएँ प्राप्त कर लो। इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है।'' यह सुनकर इन्द्र यमराज के पास से लौट आये। तदुपरान्त उन्होंने मुनियों की सेवा-सुश्रूषा एवं भेंट आदि द्वारा अपनी वस्तुएँ पुनः प्राप्त कर लीं।

हे नारद ! दूसरे जन्म में कण्व वृषपर्वा की पुत्री के गर्भ से जिसका नाम सुरुचि था और जो विरोचन को ब्याही गयी थी, उत्पन्न हुआ। विरोचन ने अपना मस्तक इन्द्र को दान देकर तीनों लोकों में यश प्राप्त किया था। कण्व ने इन्हीं विरोचन का पुत्र हो कर तीनों लोकों में बलि के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बलि शिवजी की सेवा करके सदैव आनन्दित रहा। इन्द्र का मनोरथ पूर्ण करने के हेतु विष्णु जी वामन-ब्राह्मण का स्वरूप धारण करके उसके समीप दान लेने गये। बलि ने विष्णु जी का छल जानते हुए भी उन्हें प्रसन्न किया। उस दान के प्रभाव से वह इस समय सुतललोक का राजा है तथा विष्णु जी उसके नगर में रह कर प्रतिदिन उसे अपने दर्शनों से कृतार्थ किया करते हैं।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:50 PM

पाँचवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे पुत्र ! अब तुम तलातल लोक का वृत्तान्त सुनो। यह सुतललोक के नीचे बसा हुआ है तथा उसका विस्तार भी सुतललोक जितना ही है। इस लोक का राजा मयदानव है। वह अत्यन्त मायावी है। मयदानव ने ही त्रिपुर को इस प्रकार बनाया था कि वह किसी देवता को दिखाई भी नहीं देता था। शिवजी की कृपा प्राप्त करके उसे दैत्यों में इतनी प्रतिष्ठा मिली है, जितनी प्रतिष्ठा देवताओं में विश्वकर्मा को प्राप्त है। तलातललोक के उद्यान फल-फूलों से युक्त हैं। उस लोक को भी स्वर्ग के समान ही समझना चाहिए।

हे नारद ! मयदानव वहाँ रह कर अपनी सम्पूर्ण प्रजा सहित शिवजी का स्मरण एवं पूजन किया करता है।"

इतनी कथा सुना कर ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! अब तुम पाँचवें महातललोक का वृत्तान्त सुनो। उस लोग में कद्रू का पुत्र तक्षक राज्य करता है। तक्षक के फण में इतने रत्न जड़े हुए हैं कि वहाँ कभी भी अंधेरा नहीं होता। तक्षक, सुषेण, कुहुक आदि महाविषधर सर्प, जिनके मस्तक में मणियाँ लगी हुई हैं, वहाँ निवास करते हैं। उनके विहार के हेतु सब प्रकार की सुख-सामग्री वहाँ उपस्थित हैं। वे सब भगवान् सदाशिव के परम भक्त हैं।

हे नारद ! तक्षक प्रतिदिन शिवजी के स्मरण, पूजन एवं ध्यान में संलग्न रह कर इस प्रकार स्तुति किया करता है—"हे भगवान् सदाशिव ! आप भक्तों का पालन करने वाले हैं। आपकी महिमा को ब्रह्मा, विष्णु, शेष, शरदा, नारद, व्यास आदि देवता तथा ऋषि-मुनि भी नहीं जान पाते।"

हे नारद ! अब तुम रसातललोक का वृत्तान्त सुनो। यह लोक महातल के नीचे बसा हुआ है तथा उसका विस्तार भी अन्य लोकों के समान है। उस लोक में कालकेय तथा कवच नामक दानव एवं दैत्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:50 PM 84

निवास किया करते हैं। वे सब अत्यन्त प्रतापी तथा बलवान् हैं। एक बार देवताओं ने उन्हें परम तेजस्वी जान कर उनके राजा पण के समीप सुरमा को भेजा था। सुरमा ने वहाँ पहुँच कर यह कहा था कि विष्णु जी सब दैत्यों को मार कर तीनों लोकों को अपने आधीन करना चाहते हैं। अस्तु, तुम लोग उनसे त्राण पाने के हेतु भगवान् सदाशिव का पूजन करो। सुरमा की बात सुन कर वहाँ के सभी निवासी अत्यन्त भयभीत हुए। तभी वे दिन-रात भगवान् सदाशिव का स्मरण, पूजन एवं ध्यान करने लगे। शिवजी के कृपापात्र हो जाने के कारण अब वे सब पूर्णतया निर्भय हैं।

हे नारद ! अब तुम पाताललोक का वृत्तान्त सुनो। यह लोक रसातल के नीचे है तथा विस्तार में भी उसी के समान है। रसातललोक में वासुकि, शंख, कुलिक, धृतराष्ट्र, धनंजय, कमल, अश्वतर, देवदत्त तथा कर्कोट आदि नाग निवास करते हैं। उनके फणों में पाँच से लेकर सहस्रों की संख्या में मणियाँ लगी हुई हैं। वे मणियाँ ऐसी प्रकाशवान् हैं कि उनसे दिन और रात का भेद नहीं जाना जाता। उस लोक में जरा, मृत्यु, निर्बलता, दुःख शोक आदि का कोई भी भय नहीं है। शिवजी के कृपापात्र होने के कारण उन्हें किसी प्रकार का भय, शोक अथवा दुःख नहीं है।

हे नारद ! पाताल लोक के राजा वासुकि नामक नाग हैं। वे भगवान् सदाशिव की हर समय इस प्रकार स्तुति किया करते हैं—"हे आदि-अन्तहीन भगवान् सदाशिव। आप तीनों लोकों को उत्पन्न करने वाले, पालन करने वाले तथा संहार करने वाले हैं। आप ही सब के स्वामी परब्रह्म हैं। आप सर्वथा स्वतन्त्र होते हुए भी भक्त के आधीन रहते हैं। यही आपकी विशेषता है।"

हे नारद ! जिन सात लोकों का यह वृत्तान्त मैंने तुमसे कहा, उन्हें सप्ताम्बर कह कर पुकारा जाता है।"

❁❁❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:50 PM

छठा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! मैंने जिन सातों लोकों का वर्णन किया, उन सब का विस्तार दस-दस सहस्त्र योजन है। वे सब अंडे के समान गोल तथा सुडौल हैं एवं उनकी लम्बाई सात लाख योजन है। उन सातों लोकों के नीचे एक अन्य लोक और है, जिसे शेषलोक कहा जाता है। वह लोक इन सब लोकों का मूल है। उसका विस्तार बीस सहस्त्र योजन है। उसमें सहस्त्र फणधारी शेषजी विराजमान रहते हैं। वे अपने मस्तकों पर पृथ्वी को धारण किये हुए हैं तथा शिवजी के तामसी रूप हैं। उनके नाम संकर्षण एवं अनन्त आदि हैं। वे प्रतिदिन भगवान् सदाशिव का स्मरण किया करते हैं। वे प्रलयकाल आने पर रुद्र की दोनों भौंहों के बीच में उत्पन्न हो कर ग्यारह शरीर धारण करते हैं तथ अपने प्रकाश द्वारा प्रलय करके सब का नाश कर देते हैं। उस समय उनका स्वरूप महाभयानक होता है तथा उनके हाथों में त्रिशूल दिखाइ देता है। प्रलय कर चुकने के उपरान्त वे सुन्दर स्वरूप धारण कर लेते हैं।

हे नारद ! शेषजी का पूजन तथा श्रवण करने से सब प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है। उनकी पूजा से शिवजी प्रसन्न होते हैं क्योंकि वे शिवजी के परम भक्त तथा उन्हीं के एक स्वरूप हैं। वे शिवजी की इस प्रकार स्तुति किया करते हैं—''हे भगवान् सदाशिव आप भक्तों को आनन्द प्रदान करने के लिए पृथ्वी पर अवतार ग्रहण करते हैं। आप दुष्टों को दण्ड देने वाले तथा सेवकों को आनन्द प्रदा करने वाले हैं। जिस समय हलाहल विष उत्पन्न होने पर सम्पूर्ण सृष्टि जली जा रही थी, तब आप ने ही उस विष को पीकर तीनों लोकों का दुःख दूर किया था। काल भी आप से भयभीत रहता है। फिर मैं आपकी महिमा का वर्णन किस प्रकार करूँ?''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:51 PM

सातवाँ अध्याय

इतनी कथा सुन कर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! अब आप मुझे यह बताइये कि नरकलोक किस स्थान पर स्थित है? उनकी गणना तीनों लोकों में होती है अथवा वे कहीं भिन्न है?'' ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! नीचे के जिन सातों लोकों का मैंने वर्णन किया है, उन सब में पाताललोक के नीचे ये नरकलोक जल पर स्थित है। नरकलोक में पापियों को दण्ड देने के स्थान हैं। उन सब की संख्या पचपन करोड़ है। उनमें जो बड़े-बड़े नरक हैं, मैं उनका वर्णन तुमसे करता हूँ।

हे नारद ! मुख्य नरक इक्कीस हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

1. तामिश्र, 2. लौह-दण्ड, 3. महाभैरव, 4. शालूकरौरव, 5. कुमदल, 6. भीष्म, 7. भंयकर, 8. पूजरज, 9. कालसूत्र, 10. संघात, 11. तापन, 12. कंकाल, 13. संजीवन, 14. महापथ, 15. विचर्चित, 16. अन्ध, 17. कुम्भीपाक, 18. असिपत्र, 19. पतन, 20. अग्निमन्थन तथा 21. संदिग्ध। कुछ मुनियों ने प्रमुख नरकों की संख्या अट्ठाइस कही है। उनमें इक्कीस तो उपर्युक्त हैं, शेष सात इस प्रकार हैं—1. क्षारकद्रम, 2. राक्षस-भोजन, 3. शूलप्रात, 4. दण्डशूल, 5. घोर, 6. अवटिनिराधन तथा 7. सूचीमुख।

हे नारद ! इन नरकों में यमराज अत्यन्त भयानक स्वरूप धारण कर पापियों को दण्ड देते हैं। वे स्वयं दक्षिण की ओर पितरलोक में रहते हैं तथा पितरों की सम्मति से ही पापियों को दण्ड देते हैं। पापियों के कर्मों का लेखा-जोखा रखने वाले चित्रगुप्त हैं। मेरे बारह पुत्र जो श्रवण नाम से प्रसिद्ध हैं, प्रत्येक प्राणी के शुभाशुभ कर्मों का समाचार चित्रगुप्त के पास पहुँचाते हैं। यमराज की सभा में पृथ्वी के वे सभी धर्मात्मा राजा, जिन्होंने जीवन भर धर्मपूर्वक राज्य किया है। सभासद् के रूप में उपस्थित रहते हैं। वे सम्पूर्ण लोकों से आने वाले प्राणियों के शुभाशुभ कर्मों का विचार कर, उनके लिए दण्ड अथवा स्वर्ग सुख का निश्चित करते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:51 PM

हे नारद ! अब मैं तुम्हें यह बताता हूँ कि किस पाप के करने से कौन-सा नरक प्राप्त होता है। जो लोग दूसरे की स्त्री अथवा धन का अपहरण कर लेते हैं, वे यमदूतों द्वारा तामिश्र नरक में डाले जाते हैं। जो लोग छलपूर्वक किसी स्त्री का पतिव्रत-धर्म नष्ट कर देते हैं, उन्हें अन्धतामिश्र नरक में पहुँच कर बहुत दुःख उठाना पड़ता है। जो लोग मान तथा ममता में पड़ कर अन्य जीवधारियों के साथ शत्रुता रखते हैं, केवल अपने परिवार का पालन करने में ही संलग्न रहते हैं तथा प्राणियों की हिंसा करते हैं, उन्हें रौरव नरक में पहुँच कर अपना माँस स्वयं खाना पड़ता है। रौरव नरक को सब नरकों में अत्यन्त दारुण कहा गया है।

हे नारद ! जो लोग निर्दयी बन कर पक्षियों को मारते हैं, उन्हें कुम्भीपाक नरक में ले जा कर जलते हुए तेल में डाला जाता है। जो लोग ब्राह्मण तथा पितरों के विरोधी होते हैं, उन्हें कालसूत्र नामक नरक में जा कर बहुत दुःख उठाना पड़ता है। उसकी सम्पूर्ण भूमि ताँबे की है, जो सूर्य तथा अग्नि की ऊष्णता से हर समय जलती रहती है। जब पापी को उस नरक में डाला जाता है, तब वह वहाँ की ऊष्णता को सहन न कर सकने के कारण चारों ओर भागता है, परन्तु उसे कहीं भी आश्रय नहीं मिलता। जो लोग अपने मुख्य धर्म को त्याग कर पाखण्डी हो जाते हैं, उन्हें असिपत्र नामक नरक में डाल कर, अग्नि के समान ऊष्ण पृथ्वी पर दौड़ाया जाता है तथा उनके शरीर को तलवार की धार के समान पैने पत्तों से काटा जाता है। जो लोग प्रतिदिन पंचयज्ञ किये बिना भोजन कर लेते हैं, मानो वे कौए के समान हो कर कृमिभक्षण करते हैं। मृत्यु के उपरान्त ऐसे लोग कीड़े बनते हैं और उन्हें कीड़े ही खाने पड़ते हैं।

हे नारद ! जो लोग शास्त्र-वर्जित स्त्रियों के साथ मैथुन करते हैं, वे खम्ब नामक नरक में डाले जाते हैं। वहाँ लोहे का एक खम्बा अग्नि के समान दिन-रात जला करता है। उन पापियों को उसी खम्बे से लिपटा कर जलाया जाता है। जो लोग पशुओं के समान मैथुन के अतिरिक्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:51 PM

अन्य किसी शुभ कर्म में ध्यान नहीं लगाते, उन्हें कंटक तथा शाल्मलि नामक नरकों में डाला जाता है। जो लोग राजा अथवा अधिकारी हो कर धर्म के विरुद्ध आचरण करते हैं अथवा पुरातन धर्मों का खण्डन कर नवीन मत को प्रकट करते हैं, वे वैतरणी नामक नदी में डाले जाते हैं। उसमें मल, मूत्र, रक्त, केश, अस्थि, नख, माँस, पीव आदि भरे हुए हैं। उसमें सभी पापियों को गोता लगाना पड़ता है। जो लोग शौच, धर्म, नियम, लज्जा आदि का त्याग कर वेश्याओं के साथ भोग करते हैं, उन्हें पूयोदक नामक नरक में जा कर भोजन के बदले मल, मूत्र, मेद, मज्जा आदि खाने पड़ते हैं। जो ब्राह्मण जाति के लोग वन्य-पशुओं का शिकार करते हैं, उन्हें विकराल नामक नरक में जाना पड़ता है।

हे नारद ! जो लोग मिथ्या पाखण्ड फैला कर यज्ञ के बहाने निर्द्रयतापूर्वक जीवों का वध करते हैं, वे विशेष नामक नरक में डाले जा कर दुःखी किये जाते हैं। जो लोग अपनी स्त्री को छोड़ कर दूसरे वर्ण की स्त्री के साथ मैथुन करते हैं, उन्हें लालाभक्ष नामक नरक में जा कर वीर्य पीना पड़ता है। जो लोग चोरी, लूटमार तथा औरों के धन छीनने का कार्य करते हैं अथवा गाँवों को उजाड़ देते हैं, उन्हें सारमेयादन नामक नरक में जाना पड़ता है। जो लोग लोभ से अथवा दान प्राप्त करने की इच्छा से मिथ्या साक्षी देते हैं, उन्हें अनन्त नामक नरक में जाना पड़ता है। उस नरक में चारों ओर घोर अन्धकार भरा हुआ है। वहीं एक सौ योजन ऊँचा एक पर्वत है। यमदूत पापी मनुष्य को उस पर्वत के ऊपर ले जा कर सिर के बल नीचे डालते हैं; जिसके कारण उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं, फिर भी वह मृत्यु को प्राप्त नहीं होता। इस प्रकार बहुत समय तक उसे कष्ट उठाना पड़ता है। जो ब्राह्मण अथवा स्त्री हो कर मद्यपान करते हैं, उन्हें अन्धकूप नामक नरक में जा कर बहुत कष्ट उठाना पड़ता है।

हे नारद ! जो मनुष्य वर्णाश्रम, धर्म, जप-तप, नियम, आचार-विचार आदि के विरुद्ध चले तथा कठोरता, अन्याय आदि का आश्रय

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:51 PM

ले, उसे क्षार नामक नरक में सिर के बल नीचे डाला जाता है। जो लोग किसी मनुष्य की बलि देते हैं तथा जो स्त्री माँसभक्षण करती है, उसे शृक्षभोजन नामक नरक में जा कर दुःख उठाना पड़ता है। जो लोग जीवों को मार कर प्रसन्न होते हैं अथवा जाल डालकर जीवों को पकड़ते हैं, जो लोग निर्दोष मनुष्य के साथ विश्वासघात कर उन्हें मार डालते हैं अथवा जो लोग दया भाव को त्याग देते हैं, उन्हें शूलप्रोत नामक नरक में पड़ कर भूख-प्यास का दुःख उठाना पड़ता है। वहाँ चील, कौए आदि पक्षी अपनी चोचों से उनका माँस नोंच-नोंच कर खाते हैं। जो लोग अतिथियों की ओर क्रुद्ध-दृष्टि से देखते हैं अथवा अन्धे आदमियों को सीधे मार्ग से भटकाने तथा गड्ढे में गिराने का प्रयत्न करते हैं, उन्हें निरोधन नामक नरक में पहुँच कर बहुत दुःख उठाना पड़ता है। जो लोग धन के गर्व में भरे रहते हैं अथवा धन-संग्रह करके अन्य लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं, वे सूचीमुख नरक में डाले जाते हैं।

हे नारद ! इस प्रकार नरकों की संख्या सहस्त्रों में है। विस्तारभय से उन सब का वर्णन नहीं किया गया। जो लोग धर्मात्मा होते हैं, वे स्वर्ग के लोक में जा कर विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करते हैं। जब तक मनुष्य का कोई पाप अथवा पुण्य शेष रहता है, तब तक उसे मृत्यु लोक में बारम्बार आ कर जन्म लेना पड़ता है। जब पाप और पुण्य दोनों बराबर हो जाते हैं, तब प्राणी आवागमन से छूट जाता है। इस कथा को सुनने सुनाने तथा पढ़ने से भी दोनों लोकों में आनन्द की प्राप्ति होती है।"

आठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे पुत्र ! नीचे के लोकों का वर्णन तो हो चुका, अब तुम ऊपर के लोकों का वृत्तान्त सुनो। क्षितिलोक में मनुष्य रहते हैं। क्षितिलोक का विस्तार पचास करोड़ योजन का है। इस लोक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:51 PM

में सात द्वीप हैं, जिन्हें चारों ओर से दिग्गज घेरे हुए हैं। इन द्वीपों के नाम इस प्रकार हैं—1. जम्बूद्वीप, 2. प्लक्ष द्वीप, 3. शाल्मलि द्वीप, 4. कुश द्वीप, 5. क्रौंच द्वीप, 6. शाक द्वीप तथा 7. पुष्कर द्वीप। ये सातों द्वीप क्रमानुसार एक-दूसरे से लम्बाई में दुगुने हैं। इन सातों द्वीपों के चारों ओर खाई की भाँति सात समुद्र हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—1. क्षारोदधि, 2. इच्छुरसोदधि, 3. सुरोदधि, 4. घृतोदधि, 5. क्षीरोदधि, 6. मण्डोदधि तथा 7. शुद्धोदकोदधि।

हे नारद ! मनु के पुत्र राजा प्रियव्रत इन सातों द्वीपों के एकछत्र सम्राट् थे। प्रियव्रत ने अपने सातों पुत्रों को एक-एक द्वीप का राज्य दिया था। राजा प्रियव्रत के सातों पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं—1. आग्नीघ्र, 2. इध्मजीह्व, 3. मुखबाहु, 4. कनकरेता, 5. धृतपृष्ठ, 6. मेधातिथि तथा 7. वीतिहोत्र।

इतनी कथा सुना कर सूत जी ने कहा—"हे शौनकादि ऋषियो ! यह वृत्तान्त सुन कर नारद जी ने ब्रह्मा जी से कहा—"हे पिता ! आप ने सृष्टि का यह वर्णन बहुत संक्षेप में किया। अस्तु मेरी इच्छा है कि आप मुझे इसे विस्तारपूर्वक सुनाने की कृपा करें।"

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! जम्बूद्वीप का विस्तार नियुत योजन का है। यह कमल के फूल के समान गोल है। इसके भीतर नौ खण्ड तथा आठ पर्वत हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—1. भद्राश्वखण्ड, 2. हरिवर्षखण्ड, 3. किम्पुरुषखण्ड, 4. घृतखण्ड, 5. केतुमालखण्ड, 6. हिरण्मयखण्ड, 7. करतखण्ड, 8. कुरुखण्ड तथा 9. इलावर्त्तखण्ड। पर्वतों के नाम इस प्रकार हैं—1. गन्धमादन, 2. निषध, 3. हेमकूट, 4. हिमालय, 5. माल्यवान, 6. नीलिगिरि, 7. श्वेत तथा 8. शृंगवान्। इन नौ खण्डों में जो खण्ड इलावर्त्त नामक है, उसके मध्य में सुमेरु नामक एक स्वर्ण का पर्वत है। वह पर्वत अन्य सभी पर्वतों का राजा है तथा द्वीप के बीचों-बीच सुशोभित है। इलावर्त्तखण्ड के चारों ओर अनेक पर्वत हैं।

हे नारद ! सुमेरु पर्वत को भी चारों ओर से चार पर्वत घेरे हुए हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:51 PM

उनके नाम इस प्रकार हैं—1. मन्दर, 2. मेरु, 3. सुपार्श्व तथा 4. कुमुद। इन पर्वतों पर क्रमानुसार चार वृक्ष हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—1. आम्र, 2. जामुन, 3. कदम्ब तथा बरगद। यहाँ चार ही समुद्र हैं वे इस प्रकार हैं—1. दधि का, 2. शहद का, 3. ऊख के रस का तथा 4. शुद्ध जल का। यहाँ देवताओं के विहार करने के निमित्त चार वन हैं। जिनके नाम इस प्रकार हैं—

1. नन्दनवन, 2. क्षेत्ररथ, 3. वैभ्राजक तथा 4. सर्वतोभ्रद। सुमेरु पर्वत के पूर्व की ओर हेमकूट तथा देवकूट नामक दो पर्वत हैं, दक्षिण की ओर कैलाश तथा करवीर नामक पर्वत हैं तथा उत्तर की ओर त्रिशृंग तथा मकर नामक पर्वत हैं।

हे नारद ! जम्बूद्वीप के इन नौ खण्डों में भरतखण्ड कर्मक्षेत्र अर्थात् शुभ कार्य करने के लिए सर्वोत्तम है, क्योंकि भरतखण्ड में किये हुए श्रेष्ठ कार्य उत्तम फल देने वाले होते हैं, इस कर्म-भूमि में जो मनुष्य पाप-पुण्य के जैसे कर्म करता है, उसे वैसा ही फल भी प्राप्त होता है। इस खण्ड में क्रमानुसार चार युग बदलते हैं, जबकि अन्य खण्डों में सदैव त्रेता युग वर्तमान रहता है।''

नौवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! सभी खण्डों के निवासी भगवान् सदाशिव की सेवा-पूजा में संलग्न रहते हैं। मधुखण्ड में समस्त नागों के राजा शेषनाग अत्यन्त प्रेमपूर्वक भगवान् सदाशिव का पूजन किया करते हैं तथा इस प्रकार स्तुति करते हैं—''हे प्रभो ! आप मृत्युञ्जय हैं। जब आपकी जैसी कृपा होती है, वैसा ही स्वरूप धारण कर लिया करते हैं। आप ही सम्पूर्ण संसार को उत्पन्न करने वाले, पालन करने वाले तथा नष्ट करने वाले हैं। आप सब के स्वामी हैं तथा सब लोग आपकी आज्ञानुसार कार्य किया करते हैं। हे नाथ ! अब आप मुझे श्रेष्ठ ज्ञान दें तथा मेरे हृदय में अपनी भक्ति को निरन्तर भरते रहें।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे नारद ! इसी प्रकार भद्राश्व खण्ड में वहाँ के राजा हयग्रीव भगवान् सदाशिव का सदैव पूजन किया करते हैं तथा शिवजी का मंत्र जपते हुए इस प्रकार स्तुति करते हैं—"हे अशरण-शरण परब्रह्म शंकर जी ! आपके चरित्र परम विचित्र हैं। हे नाथ ! आप मेरे ऊपर अपनी कृपा दृष्टि बनाये रहें तथा मुझे अपना सेवक जान कर, काम, क्रोध, मद, लोभ, माया आदि से दूर रखें।"

हे नारद ! हरिवर्षखण्ड में विष्णु के अवतार नृसिंह जी भगवान् सदाशिव का पूजन तथा अराधना करते हुए इस प्रकार स्तुति करते हैं—"हे जगदीश्वर भगवान् सदाशिव ! आपके समान अन्य कोई देवता नहीं है। आप सम्पूर्ण संसार के स्वामी तथा सब को उत्पन्न करने वाले हैं। आपकी उत्पत्ति किसी के द्वारा नहीं हुई।" इस प्रकार नृसिंह जी शरभनाथ शिवजी का पूजन करते हुए उन्हीं के ध्यान में संलग्न रहते हैं।

हे नारद ! किम्पुरुष खण्ड में रामचन्द्र जी भगवान् सदाशिव का पूजन करते हुए इस प्रकार प्रार्थना करते हैं—"हे शंकरजी ! आप भक्तों का दुःख दूर करने वाले तथा सब के स्वामी हैं। आप अत्यन्त दयालु तथा अपने भक्तों को मोक्ष प्रदान करने वाले हैं। आपकी कृपा से ही मैंने रावण तथा अहिरावण का संहार किया। यह भी आप के चरणों का प्रताप है कि मैं सब लोकों का स्वामी बना हुआ हूँ।"

हे नारद ! भरतखण्ड में नर नारायण भगवान् सदाशिव का मंत्र जपते हुए इस प्रकार स्तुति करते हैं—"हे प्रभो ! आप मन, वचन, कर्म, इन्द्रिय तथा विचार से परे हैं। वेद भी आपकी महिमा का वर्णन करते हुए आश्चर्यचकित रह जाते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, सनकादिक सभी आपकी सेवा में संलग्न रहते हैं।" हे नारद ! नर नारायण के समीप भगवान् सदाशिव सदैव स्थित रहते हैं। उस स्थान का नाम संसार में केदार प्रसिद्ध है। जो मनुष्य केदार में पहुँच कर अपने शरीर को त्यागते हैं, उन्हें शीघ्र मुक्ति प्राप्त होती है।

हे नारद ! केतुमाल खण्ड में कामदेव अपनी सेना सहित शिवजी का पूजन करते हुए इस प्रकार प्रार्थना करते हैं—"हे स्वामिन् ! आप

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:51 PM

दुष्टों को भय देने वाले तथा भक्तों की रक्षा करने वाले हैं। आपने मुझे अपनी क्रोधाग्नि से जला कर अत्यन्त कृपा की थी। आप मेरे सम्पूर्ण पापों को नष्ट कर देने की कृपा करें, क्योंकि शरण में आये हुए प्राणी को आप उदारतापूर्वक क्षमा कर देते हैं।''

हे नारद ! रम्यक खण्ड में विष्णु जी शिवजी का पूजन करते हुए इस प्रकार स्तुति करते हैं—''हे प्रभो ! आप सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वामी हैं। आपकी महिमा का वर्णन्न शेषजी से भी नहीं हो सकता। लक्ष्मी जी सदैव आपकी सेवा में संलग्न रहती हैं। अस्तु, आप मेरे ऊपर सदैव अपना अनुग्रह किये रहें।''

हे नारद ! हिरण्य खण्ड में लक्ष्मीपति पितरों सहित भगवान् सदाशिव की सेवा में संलग्न रहकर शिवमंत्र का जाप करते हैं तथा इस प्रकार स्तुति करते हैं—''हे देवेश्वर ! आप आपने भक्तों को आनन्द प्रदान करने वाले, त्रिभुवनपति, निर्विकार, अनादि, अनन्त, दीनानाथ तथा शरणागतवत्सल हैं। हम यही प्रार्थना करते हैं कि आप हम लोगों पर सदैव अपनी कृपा बनाये रहें।''

हे नारद ! कुरुखण्ड में वाराह जी भगवान् सदाशिव के षडक्षरी-मंत्र का जप करते हुए इस प्रकार स्तुति करते हैं—''हे गिरिजेश्वर ! आप सम्पूर्ण ब्रह्मांड के स्वामी हैं। आप ही ने गज, गंगा, हर, श्रीकर, नन्दी, किरात, आदि को मुक्ति प्रदान की है। मैं आपकी शरण में हूँ।''

हे नारद ! इस प्रकार सभी खण्डों में भगवान् सदाशिव का पूजन किया जाता है। यह जम्बूद्वीप की कथा परम पवित्र तथा सम्पूर्ण कष्टों को दूर करने वाली है। इसके पढ़ने, सुनने तथा सुनाने से अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है।''

दसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''जम्बूद्वीप का वृत्तान्त मैंने तुम्हें सुनाया। इसी द्वीप के अन्तर्गत आठ उपद्वीप भी हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:51 PM

1. स्वर्णप्रस्थ, 2. चन्द्र, 3. शुक्ल-परिवर्तन, 4. रमणक, 5. मन्दिरहरण, 6. जन्य, 7. सिंहल तथा 8. लम्ब। इस जम्बूद्वीप के चारों ओर खारे जल का समुद्र है।

हे नारद ! जम्बूद्वीप के बाद प्लक्षद्वीप का स्थान है। उसका सम्राट् सुछवि नामक एक बड़ा राजा हुआ। उस राजा के सात पुत्र थे, जिनके नाम इस प्रकार है—1. शिव, 2. यवस, 3. सुभद्र, 4. वेशान्त, 5. क्षेम, 6. अमृत तथा 7. अभय। उस राजा ने अपने इन सातों पुत्रों को द्वीप के सात खण्ड करके बाँट दिये। वे सातों खण्ड इन्हीं सातों लड़कों नाम से प्रसिद्ध हुए। इस द्वीप में सात पर्वत हैं तथा चार वर्ण के लोग रहते हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

1. ऊर्ध्वायन, 2. परमहंस, 3. पतङ्ग तथा 4. सत्याङ्ग। मनुष्य को इनके दर्शन भी देवताओं के दर्शन के समान अत्यन्त कठिनता से प्राप्त होते हैं। यह सब सूर्य का पूजन करते हैं तथा उन्हीं के मंत्र को जपते हुए इस प्रकार प्रार्थना करते हैं—"हे सूर्यदेवता ! आप भगवान् सदाशिव के रूप हैं। आपका शरीर तीनों गुणों से युक्त है। आप सम्पूर्ण रोगों को नष्ट करते हैं।"

हे नारद ! इस प्रकार प्लक्षद्वीप के निवासी सूर्यनारायण के माध्यम से शिवजी का पूजन करते हैं। इस द्वीप के चारों ओर ईख के रस का समुद्र है।

हे नारद ! अब तुम शाल्मलिद्वीप का हाल सुनो। प्लक्षद्वीप जम्बूद्वीप से दुगुना बड़ा है तथा शाल्मलिद्वीप का विस्तार प्लक्षद्वीप से दुगुना है। इस द्वीप के चारों ओर सुरोद-समुद्र है। प्रियव्रत का पुत्र यज्ञबाहु इस द्वीप का सम्राट् था। उसके सात पुत्र उत्पन्न हुए, जिनके नाम इस प्रकार हैं—"1. सुराचन, 2. सोमस्व, 3. रमणक, 4. देवभद्र, 5. भद्र, 6. आप्यायन तथा 7. अविज्ञात। राजा यज्ञबाहु ने शाल्मलिद्वीप के सात खण्ड करके, अपने सब पुत्रों में बाँट दिये। वे द्वीपखण्ड उन्हीं बालकों के नाम पर प्रसिद्ध हुए।

हे नारद ! शाल्मलिद्वीप के निवासी चन्द्रमा का पूजन करते हैं और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:51 PM

उन्हीं का मंत्र जपते हुए इस प्रकार प्रार्थना करते हैं—"हे चन्द्रमा ! आप भगवान् सदाशिव के कृपा पात्र हैं। अस्तु, हम आपको शिवजी का ही स्वरूप समझते हैं। आप अपने शीतल स्वभाव से सब को शीतलता प्रदान करते हैं तथा सभी जड़ी-बूटियों का निर्माण आपके ही द्वारा होता है। इस प्रकार आप अमृत के कुण्ड हैं। संसार का आरोग्य आप ही के ऊपर निर्भर है। आप हमारे ऊपर कृपा बनाये रहें।"

हे नारद ! शाल्मलिद्वीप के उपरान्त कुशद्वीप है। उस द्वीप को घृत का समुद्र चारों ओर से घेरे हुए है। राजा प्रियव्रत का पुत्र हिरण्य उस द्वीप का सम्राट् हुआ। हिरण्य के सात पुत्र हुए जिनके नाम इस प्रकार हैं—1. वसुदान, 2. दृढ़रुचि, 3. नामगुप्त, 4. सत्यव्रत, 5. विविक्त, 6. वामदेव। इस द्वीप में भी सात पर्वत हैं तथा सात नदियाँ हैं। राजा हिरण्य ने इस द्वीप को सात खण्डों में विभाजित करके अपने पुत्रों को बाँट दिया था। अस्तु, यह सभी खण्ड नहीं राजपुत्रों के नाम पर प्रसिद्ध हुए।

हे नारद ! कुश द्वीप के निवासी अग्नि को शिवजी का स्वरूप जान कर उनका पूजन, स्मरण एवं ध्यान करते हैं तथा इस प्रकार प्रार्थना करते हैं—"हे अग्नि ! आपके बिना संसार का कोई भी कार्य नहीं चल सकता। आप भगवान् सदाशिव के रूप हैं। अस्तु, आप हमारे ऊपर कृपा बनाये रहें।"

हे नारद ! पाँचवाँ क्रौञ्चद्वीप कुशद्वीप से विस्तार में दुगुना है। उसके चारों ओर दूध का समुद्र है। वहाँ क्रौंच नामक एक पर्वत है, जिस पर स्कन्ध जी विराजमान रहते हैं। उस द्वीप का सम्राट् राजा प्रियव्रत का पुत्र धृतपृष्ठ हुआ। धृतपृष्ठ के सात पुत्र उत्पन्न हुए, जिनके नाम इस प्रकार हैं—1. अनन्त, 2. बुद्ध, 3. मेघ, 4. मेघपृष्ठ, 5. भ्राजिष्ठ, 6. लोहित तथा 7. वनस्पति। इस द्वीप में भी सात पर्वत तथा सात नदियाँ हैं। राजा धृतपृष्ठ ने इस द्वीप को सात खण्डों में विभाजित करके अपने पुत्रों में बाँट दिया, तब वे सभी खण्ड उन्हीं राजपुत्रों के नाम से प्रसिद्ध हुए।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:51 PM

हे नारद ! क्रौञ्चद्वीप के निवासी शिवजी को जल रूप समझ कर जल-मंत्र द्वारा स्मरण करते हैं तथा प्रार्थना करते हुए इस प्रकार कहते हैं—"हे जलरूप भगवान् शंकर ! आप सब को आनन्द देने वाले तथा सब के प्राणों को स्थिर रखने वाले हैं। आपके द्वारा ही सब को तृप्ति प्राप्त होती है।"

हे नारद ! क्रौञ्चद्वीप के बाद छठा शाकद्वीप है। इस द्वीप का विस्तार तैंतीस लाख योजन का है। इसे चारों ओर से दही का समुद्र घेरे हुए है। इस द्वीप में शाक नामक एक वृक्ष है, जो अपनी सुगन्धि द्वारा सम्पूर्ण द्वीप को सुगन्धित किये रहता है। राजा प्रियव्रत का पुत्र मेधातिथि इस द्वीप का सम्राट् हुआ। मेधातिथि के सात पुत्र उत्पन्न हुए, जिनके नाम इस प्रकार हैं—1. पुरोज, 2. मनोज, 3. पवमान, 4. धूम्रानीक, 5. चित्ररूप, 6. बहुरूप तथा 7. विश्वाधार। इस द्वीप में भी सात पर्वत तथा सात नदियाँ हैं। मेधातिथि ने इस द्वीप के सात खण्ड करके अपने पुत्रों में बांट दिये, तब वे खण्ड उन्हीं राजपुत्रों के नाम से प्रसिद्ध हुए।

हे नारद ! शाकद्वीप के निवासी भगवान् सदाशिव को वायुरूप जान कर वायुमंत्र द्वारा उनका पूजन, स्मरण तथा ध्यान किया करते हैं। वे सब स्तुति करते हुए इस प्रकार कहते हैं—"हे वायुरूप भगवान् सदाशिव ! दस प्रकार के शरीर कहे गये हैं, परन्तु वे सब आप के बिना निर्जीव हैं। आप तीनों लोकों के भीतर बाहर आते-जाते रहने पर भी सदैव निष्पाप तथा निर्मल बने रहते हैं। तीनों लोकों के सभी जीव आपके आश्रित हैं तथा सभी प्राणी आपके वश में रहते हैं। आपकी सहायता तथा शक्ति पा कर ही योगीजन ब्रह्मपद को प्राप्त करते हैं। हम सब आपकी शरण में हैं।"

हे नारद ! शाकद्वीप के पश्चात् पुष्करद्वीप है। उसका विस्तार शाकद्वीप से दुगुना है। उसके चारों ओर मीठे जल का समुद्र घिरा हुआ है। इस द्वीप में पुष्कर नामक तीन पत्ती के आकार का एक कमल-पुष्प है। इस द्वीप में केवल एक ही पर्वत है, जिसे मानसोत्तर कहा जाता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:51 PM

है। राजा प्रियव्रत के पुत्र वीतिहोत्र इस द्वीप के सम्राट् हुए। वीतिहोत्र के रमणक तथा घातिक नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। तब वीतिहोत्र ने पुष्करद्वीप के दो खण्ड करके अपने दोनों पुत्रों में बाँट दिये। वे दोनों खण्ड उन्हीं राजपुत्रों के नाम से प्रसिद्ध हुए।

हे नारद ! पुष्करद्वीप के सभी निवासी केवल कर्म को ही भगवान् सदाशिव का स्वरूप समझते हैं तथा स्तुति करते हुए इस प्रकार कहते हैं—"हे कर्मरूप परब्रह्म ! हम आपको प्रणाम करते हैं। आपके अधीन देवता, मुनि आदि सभी प्राणी हैं। आपके द्वारा ही तीनों लोकों के सभी प्राणियों को सुख-दुःख की प्राप्ति होती है। अस्तु, हे कर्म रूप भगवान् सदाशिव ! हम आपको दंडवत् करते हैं। आप सदैव हमारे ऊपर अनुग्रह बनाये रहें।"

इतनी कथा सुनकर ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! इन सातों द्वीपों के ऊपर लोकालोक हैं। वह बहुत ऊँचा तथा विशाल है। उसे ग्रह, नक्षत्र, सूर्य तथा ध्रुव भी नहीं लांघ सकते। उसका विस्तार पचास करोड़ योजन का है। वहाँ तूर्यभाग नामक एक पर्वत है और उसके चारों ओर मेरे द्वारा स्थापित किये हुए दिग्गज स्थित हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—

1. अपराजित, 2. वामन, 3. गतपर्व, 4. पुष्कर, 5. शंखचूड़ तथा 6. ऋषभ। उस स्थान पर भगवान् विष्णु जी अपने भक्तों सहित निवास करते हुए सम्पूर्ण संसार का पालन करते हैं। लोकालोक के आगे योगी जनों के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति नहीं पहुँच सकता। मनुष्यों की दृष्टि में वह स्थान दिखाई नहीं देता। अस्तु, उनका वहाँ पहुँचना असम्भव है। हे नारद ! भू लोक का वर्णन मैंने तुम से किया।"

ग्यारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! भूलोक के ऊपर भुवर्लोक है। उसकी लम्बाई सूर्य तक एक लाख मील से भी अधिक है। वहाँ प्रत्येक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:52 PM

जीव अपने पुण्यों के अनुसार पहुँचता है और अनेक प्रकार के सुखों का उपभोग करता है।

हे नारद ! पहले उपलोक का नाम पिशाचपुर है। वहाँ भूत-प्रेत आदि रहते हैं। वे पृथ्वी के अंश नहीं हैं। वे तीनों लोको में भ्रमण कर सकते हैं तथा प्रसन्न हो कर दूसरों को वरदान भी दे सकते हैं। उन्हें कभी किसी प्रकार का दुःख नहीं होता। जो लोग अपने कर्मवश उस लोक में जा कर भूत-प्रेत होते हैं, उनका वृत्तान्त मैं तुमसे कहता हूँ, सुनो। किसी की संगति अथवा अधीनता के कारण कुछ सामग्री एकत्रित कर, किसी मनोरथ की प्राप्ति के हेतु, किसी देवता की विधि रहित हो कर जो पूजा करते हैं। वे मृत्यु के उपरान्त पिशाचपुर में जा कर भूत-प्रेत का शरीर प्राप्त करते हैं।

हे नारद ! पिशाचपुर के ऊपर गुह्यकलोक है। वहाँ के निवासी भगवान् सदाशिव के भक्त हैं। वे अपने कुल देवताओं का पूजन करते हैं तथा उन्हीं की आज्ञानुसार आचरण करते हैं। वे श्रेष्ठ मार्ग द्वारा धन संचय करते हैं तथा सभी लोगों के साथ स्नेह का व्यवहार रखते हैं। गुह्यकलोक के राजा मणिग्रीव अपने गणों सहित भगवान् सदाशिव का पूजन करते हैं और उन्हीं के ध्यान में लीन रहते हैं।

हे नारद ! गुह्यकलोक के ऊपर तीसरा गन्धर्वलोक है। उसमें चारण तथा गन्धर्वों का निवास है। वे लोग गान-विद्या में अत्यन्त चतुर हैं। वहाँ किसी को कोई दुःख नहीं होता। गन्धर्वों के राजा विश्वावसु अपनी सम्पूर्ण प्रजा सहित भगवान् सदाशिव के मंत्र का जप करते हैं और उनकी स्तुति करते हुए यह कहते हैं—"हे भगवान् सदाशिव जी ! आप तीनों लोकों के स्वामी, आदि-अन्त से परे परब्रह्म हैं। ब्रह्मा तथा विष्णु जी आदि सभी देवता एवं ऋषि-मुनि आपकी सेवा किया करते हैं।"

हे नारद ! गन्धर्वलोक के ऊपर चौथा विद्याधरलोक है। वहाँ विद्याधर निवास करते हैं, जो सम्पूर्ण विद्याओं के जानकार हैं। जो लोग शास्त्र के आज्ञानुसार योग्य व्यक्तियों को विद्या दान करते हैं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:52 PM

अथवा श्रेष्ठ द्रव्य द्वारा विद्यार्थी को शिक्षा दिलाते हैं, वे मृत्यु के उपरान्त विद्याधरलोक को प्राप्त होते हैं। वे पंचाक्षरी मंत्र का जप करते हुए, उत्तम स्तोत्र का पाठ करते हैं तथा इस प्रकार प्रार्थना करते हैं—"हे गिरिजापति ! आप सम्पूर्ण सृष्टि के उत्पन्नकर्त्ता, सब के स्वामी, निष्पाप, अविनाशी, भक्तवत्सल तथा उपकारी हैं। आप हमारे ऊपर भी अपना अनुग्रह करें।"

हे नारद ! विद्याधरलोक के ऊपर पाँचावाँ सिद्धलोक है। जो लोग भगवान् सदाशिव का दृढ़तापूर्वक पूजन करते हैं तथा अपने धर्म के पालन में स्थिर रहते हैं, वे उस लोक में निवास पाते हैं। वहाँ के सिद्धजन भगवान् सदाशिव का मंत्र जपते हुए इस प्रकार प्रार्थना करते हैं—"हे प्रभो ! आपका स्वरूप परमहंसों जैसा तथा वेष भूत-प्रेतों जैसा है, परन्तु आप भक्त की प्रत्येक मनोकामना को पूर्ण करते हैं। हे दयालु ! आप हमारे ऊपर अपनी विशेष कृपा सदैव बनाये रहें।"

हे नारद ! सिद्धलोक के ऊपर छठा अप्सरालोक है। वहाँ रम्भा आदि साठ सहस्र अप्सराएँ निवास करती हैं। वे नृत्य-गायन में अत्यन्त प्रवीण हैं। वे अप्सराएँ इन्द्र की सदैव सहायता किया करती हैं; क्योंकि योगियों तथा तपस्वियों के तप में विघ्न डालने के लिए इन्द्र उनका उपयोग करते हैं। जो स्त्रियाँ संसार में धर्मपूर्वक अपने पतिव्रत-धर्म की रक्षा करती हैं, वे इस लोक में पहुँच कर सुखपूर्वक बहुत समय तक भोग-विलास का आनन्द उठाती हैं।

हे नारद ! अप्सरालोक के ऊपर सातवाँ राहुलोक है। वहाँ सिंहिका नामक राक्षसी का पुत्र राहु निवास करता है। राहुलोक से दस सहस्र योजन नीचे सूर्यनारायण रहते हैं। जिस समय देवताओं को अमृत बाँटा जा रहा था, उस समय भगवान् विष्णु जी ने अपने चक्र द्वारा राहु का मस्तक काट डाला था। तत्पश्चात् जब राहु ने शिवजी की बड़ी तपस्या की, तो भगवान् भूतभावन ने उसे ग्रह बना दिया। तब से वह निर्भय हो कर देवताओं के समान आकाश में रहने लगा। मस्तक कट जाने के कारण राहु ने सूर्य-चन्द्रमा से शत्रुता बढ़ायी। अब भी वह अवसर पा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:52 PM

कर सूर्य तथा चन्द्रमा को कभी-कभी घेरे लेता है। उस समय भगवान् विष्णु जी अपने चक्र द्वारा उसे हटा देते हैं। संसार में ऐसे अवसर को ग्रहण के नाम से पुकारा जाता है। सूर्य का मंडल दस सहस्त्र योजन, चन्द्रमा का मंडल बारह सहस्त्र योजन तथा राहु का मंडल तेरह सहस्त्र योजन लम्बा है। इसलिए राहु सूर्य तथा चन्द्रमा पर प्रबल हो जाता है। ग्रहण के समय जो लोग थोड़ा भी दान-पुण्य करते हैं, उन्हें बहुत फल मिलता है।

हे नारद ! जिस समय विष्णु जी ने राहु का मस्तक काट डाला, तब वह उस स्थान से भाग कर शिवजी का तप करने लगा था। उसके तप से प्रसन्न हो कर शिवजी ने उसे ग्रह बना दिया। तभी से वह अपने लोक में स्थित हो कर भगवान् सदाशिव का पूजन करके इस प्रकार स्तुति किया करता है—"हे प्रभो ! आप अपने भक्तों को प्रसन्नता प्रदान करने वाले हैं तथा उनके सब प्रकार के दुःखों का नाश करते हैं। मेरी यही अभिलाषा है कि आप मुझे अपने चरणों की भक्ति प्रदान करने की कृपा करें।"

बारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! मैंने तुम्हें उपलोकों सहित भुवर्लोक का वृत्तान्त सुनाया, अब तुम स्वर्लोक के विषय में सुनो। स्वर्लोक भुवर्लोक के ऊपर स्थित है। उसमें भी कई उपलोक हैं। स्वर्लोक का विस्तार सूर्यमंडल से लेकर ध्रुवमंडल तक है। अब तुम सूर्यनायण के संबन्ध में कुछ वृत्तान्त सुनो।

हे नारद ! सूर्य की गति तीन प्रकार की है। उसे शीघ्र, मध्य तथा सम जानना चाहिए। उनके नाम ये हैं—1. उत्तरायण, 2. दक्षिणायन, 3. विषुवत् ! सूर्य की इन गतियों द्वारा छः ऋतु तथा बारह महीने प्रकट होते हैं। तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाले सूर्य का रथ केवल एक पहिये का है। उसका एक सिरा सुमेरू पर्वत के ऊपर रहता है और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:52 PM

दूसरा मानसोत्तर के पर्वत के ऊपर। उनका रथ तेल पेरने के कोल्हू के समान चारों ओर घूमता है। सूर्य के घोड़ों को छन्द तथ सारथी को अरुण कहते हैं। उनके रथ के आगे-आगे अँगूठे के बराबर आकार वाले साठ सहस्त्र बालखिल्य ऋषि उच्च स्वर से वेद-मन्त्रों का पाठ तथा सूर्य के यश का वर्णन करते चलते हैं। उनके अतिरिक्त सप्तर्षि तथा नाग आदि भी सूर्य की सेवा में प्रस्तुत रहते हैं। सप्तर्षि प्रत्येक मास में बदल जाते हैं अर्थात् एक मास में जो सप्तर्षि उनके साथ रहते हैं, दूसरे मास में उनके स्थान पर दूसरे सप्तर्षि आ जाते हैं और पहले वाले हट जाते हैं। सूर्य के रथ का विस्तार नौ सहस्त्र योजन है। वह एक लाख योजन ऊँचा है। इस प्रकार सूर्य सम्पूर्ण सृष्टि को प्रकाश तथा आनन्द प्रदान करते हैं।

हे नारद ! सूर्य ने ऐसा उच्च पद भगवान् सदाशिव का तप करके प्राप्त किया है। वह कथा संक्षेप में इस प्रकार है—मेरे पुत्र मरीचि के द्वारा कश्यप का जन्म हुआ। जब कश्यप ने गृहस्थाश्रम को स्वीकार किया, तब दक्ष प्रजापति ने अपनी तेरह कन्याओं का विवाह उनके साथ कर दिया। उन तेरह कन्याओं में से जिस कन्या का नाम अदिति था, उसने बारह पुत्रों को जन्म दिया। उन बारह पुत्रों में से एक सूर्य है। इस प्रकार सूर्य का जन्म कश्यप द्वारा अदिति के गर्भ से हुआ है।

हे नारद ! सूर्य ने शिवजी का उग्र तप किया। तदुपरान्त शिवजी ने उन्हें दर्शन दिये। सूर्य ने भगवान् शंकर के मनोहारी स्वरूप को देखकर दंडवत्-प्रणाम किया। फिर प्रार्थना करते हुए यह कहा—"हे प्रभो ! आप घट-घटव्यापी, अन्तर्यामी, अप्रमेय, महिमा-सम्पन्न, पुरातन-पुरुष, दुःखहारी, भक्तवत्सल तथा आदि अन्त से हीन हैं। मेरा धन्य भाग्य है, जो आपने शरीर धारण कर मुझे दर्शन प्रदान करने की कृपा की। हे नाथ ! आपने मुझे दर्शन दिये, इससे अधिक सौभाग्य की बात और क्या हो सकती है? मेरी यही कामना है कि मैं हर समय आपकी सेवा किया करूँ।"

हे नारद ! इतना कहकर जब सूर्य चुप हो गये, तब शिवजी ने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:52 PM

अत्यन्त प्रसन्न हो कर, उन्हें बिना माँगे ही वर देते हुए यह कहा—"हे सूर्य ! तुम परम तेजस्वी तथा प्रकाशवान् हो कर सब जीवों के कर्मों के साक्षी रहोगे तथा अपने भक्तों को सब प्रकार के आनन्द प्रदान करते रहोगे। तुम्हारी सेवा करने वालों के रोग दूर हो जाया करेंगे।" इस प्रकार सूर्य को वरदान देने के उपरान्त भगवान् सदाशिव अन्तर्धान हो गये। तब सूर्य प्रसन्न हो कर अपने लोक में लौट आये। तभी से वे शिवजी का ध्यान धरते हुए, सम्पूर्ण सृष्टि को प्रकाशित किया करते हैं। जो लोग सूर्य का व्रत तथा सूर्य के निमिन्त तप, यज्ञ आदि करते हैं, वे सूर्यलोक में जा कर अत्यन्त आनन्द प्राप्त करते हैं।"

तेरहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! सूर्यलोक का वृत्तान्त तुम सुन चुके। अब चन्द्रलोक के सम्बन्ध में सुनो। चन्द्रलोक सूर्य से एक लाख योजन ऊपर है। वहाँ धर्मात्मा तथा पुण्यात्मा लोग आ-जा कर अत्यन्त आनन्द प्राप्त करते हैं। वहाँ किसी प्रकार का दुःख और शोक नहीं है। चन्द्रमा की किरणों से जो अमृत टपकता है, उसे पी कर वहाँ के निवासी सदैव हृष्ट-पुष्ट, अजर-अमर तथा आनन्दित बने रहते हैं। अब मैं तुम्हें वह कथा सुनाता हूँ, जिस प्रकार चन्द्रमा ने इतने उच्च पद को प्राप्त किया।

हे नारद ! मेरे मन द्वारा अत्रि मुनि की उत्पत्ति हुई थी। वे परम तेजस्वी, बुद्धिमान्, शीलवान् तथा विद्वान् हैं। उन्होंने कद्रम मुनि की पुत्री अनुसूया के साथ अपना विवाह किया। तदुपरान्त वे मेरी आज्ञानुसार अपनी पत्नी सहित ऋक्षकुल पर्वत जा कर, नर्मदा नदी के तट पर निवास करने लगे। वहाँ उन्होंने श्वास रोक कर सौ वर्षों तक कठिन तपस्या की। इस प्रकार का कठिन तप करते हुए जब अत्रि मुनि को बहुत समय व्यतीत हुआ और उनके मस्तक से एक अग्नि की ज्वाला निकल कर तीनों लोकों को भस्म करने लगी, उस समय सब

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:52 PM

देवता, ऋषि, मुनि आदि व्याकुल हो, मेरे समीप आये और प्रार्थना करते हुए यह कहने लगे—"हे प्रभो ! इस ज्वाला के कारण हम सब लोग भस्म हुए जाते हैं। अस्तु, आप किसी प्रकार इसे शान्त करने का उपाय करें।"

हे नारद ! देवताओं की प्रार्थना सुन कर मैं उन्हें साथ लेकर विष्णु जी के समीप गया तथा उन्हें प्रणाम करने के उपरान्त सब वृत्तान्त कह सुनाया। तब विष्णु जी अत्यन्त आश्चर्यचकित हो, हम सब लोगों को साथ लेकर शिवजी के समीप जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने दण्डवत्-प्रणाम तथा स्तुति करने के उपरान्त शिवजी से सब वृत्तान्त कहा। उस समय शिवजी ने यह उत्तर दिया—"हे देवताओ ! आप लोग अपने हृदय में चिन्तित मत होएं। अत्रि मुनि योग साधन कर, वायु को जीत, प्राणायाम किये हुए, तप एवं ध्यान में मग्न बैठे हैं। यह ज्वाला उन्हीं के मस्तक से प्रकट हुई है।" अब हम उन्हें जा कर वरदान देंगे।"

इतना कह कर शिवजी मुझे तथा विष्णु जी को साथ लिए हुए अत्रि मुनि के पास जा पहुँचे। उस समय हम तीनों ही देवता अपने मुख्य स्वरूप को धारण किये हुए थे तथा अपने मुख्य वाहनों पर आरूढ़ थे। हम तीनों ने एक साथ ही अत्रि मुनि से वर माँगने के लिए कहा और उन्हें यह विश्वास दिलाया कि आपके समान कठिन तप तीनों लोकों में किसी ने नहीं किया है। हम लोगों के मुख से यह वचन सुन कर अत्रि मुनि ने दण्डवत्-प्रणाम करने के उपरान्त प्रार्थना की, तदुपरान्त हाथ जोड़ कर यह कहा—"हे प्रभो ! मैंने तो केवल एक ही देवता का तप किया था, फिर क्या कारण है जो आप तीनों यहाँ पधारे हैं? सर्वप्रथम आप मुझे अपने एक साथ आगमन का कारण बतावें, तत्पश्चात् वर प्रदान करें।"

हे नारद ! अत्रि मुनि की बात सुन कर हम तीनों ने एक साथ कहा—"हे मुनि ! आपने जगदीश के दर्शन प्राप्त करने के निमित्त तप किया था। हम तीनों देवता जगदीश कहलाते हैं तथा हम तीनों में कोई अन्तर नहीं है। यही कारण है कि हम तीनों आपके तप से प्रसन्न हो कर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:52 PM

यहाँ आये हैं। आपने सन्तान प्राप्ति के हेतु यह तप किया है। अस्तु हम तीनों देवता अपने-अपने अंश द्वारा आपके यहाँ तीन पुत्रों के रूप में जन्म लेंगे तथा तीनों लोकों में प्रसिद्धि प्राप्त कर माता-पिता के सुयश को बढ़ावेंगे। इतना कह कर हम लोग अत्रि मुनि को भक्ति का वरदान दे, अपने-अपने लोक को लौट आये। तब अत्रि भी अत्यन्त प्रसन्न हो कर अपने घर को चले गये।

हे नारद ! उचित समय आने पर हम तीनों देवताओं ने अत्रि के घर अपने अंश द्वारा तीन पुत्रों के रूप में जन्म लिया। उस समय आकाश से पुष्प-वर्षा होने लगी तथा सम्पूर्ण संसार में आनन्द भर गया। मेरे अंश से चन्द्रमा, विष्णु जी के अंश से दत्तात्रेय तथा शिवजी के अंश से दुर्वासा का जन्म हुआ। यहाँ मैं तुम्हें केवल चन्द्रमा के सम्बन्ध में बताता हूँ। कुछ बड़े होने पर चन्द्रमा ने काशी जी में आ कर भगवान् सदाशिव के चरणों का ध्यान करते हुए कठिन तप किया। तब शिवजी ने प्रसन्न हो कर उन्हें वरदान दिया तथा सूर्य लोक के ऊपर रहने के लिए एक लोक भी प्रदान किया। इसके साथ ही शिवजी ने चन्द्रमा को समस्त ब्राह्मणों का राजा भी बना दिया। तब से चन्द्रमा अपने लोक में रह कर भगवान् सदाशिव का पूजन करते हुए इस प्रकार स्तुति किया करते हैं—"हे प्रभो ! आप तीनों लोकों के स्वामी एवं अन्तर्यामी हैं। ब्रह्मा, विष्णु जी आदि देवता आप के सेवक हैं। अस्तु, आप मेरे ऊपर सदैव कृपा बनाये रहें।"

हे नारद ! अब मैं नक्षत्रलोक का वर्णन करता हूँ। यह नक्षत्रलोक चन्द्रलोक से तीन लाख योजन ऊपर है। इसमें अश्विनी आदि नक्षत्र रहते हैं। नक्षत्रों ने इस लोक को कैसे प्राप्त किया, वह कथा मैं तुम से कहता हूँ। प्रजापति ने साठ कन्याओं को उत्पन्न किया था। उसमें अश्विनी से लेकर रेवती तक सत्ताईस कन्याओं ने काशी जी में जा कर कठिन तप किया। उनकी यह इच्छा थी कि हम सब शिवजी को अपना पति बनावें। अस्तु, जब शिवजी उनकी तपस्या से प्रसन्न हो कर वरदान देने के लिए गये, उस समय उन्होंने स्तुति-प्रणाम करने के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:52 PM

उपरान्त यह प्रार्थना की—"हे प्रभो ! आप अपने भक्तों की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले हैं, हमारी यह इच्छा है कि आप हम सब को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करें।" यह सुन कर शिवजी ने उत्तर दिया—"हे कन्याओ ! हम तुम्हें रहने के लिए चन्द्रलोक के ऊपर एक लोक देते हैं। तीनों लोकों में हमारे आठ रूप प्रसिद्ध हैं, उनमें एक चन्द्रमा का भी है। अतः हम तुम्हें यह वरदान देते हैं कि चन्द्रमा तुम्हारे पति होंगे। अब तुम अपने लोक में स्थित हो कर चन्द्रमा के साथ सुखपूर्वक विहार करो। पुरुषों के समान तप करने के कारण तुम्हारा नाम पुरुषों के समान प्रसिद्ध होगा।"

हे नारद ! इतना कह कर जब शिवजी अन्तर्धान हो गये, वे सब कन्याएँ लौट कर दक्ष प्रजापति के पास जा पहुँचीं। उस समय दक्ष ने शिवजी के वरदान का वृत्तान्त जान कर, उनका विवाह चन्द्रमा के साथ कर दिया। तब उन्होंने बारह राशियों के रूप में चन्द्रमा को अत्यन्त आनन्द प्रदान किया। वे सब नक्षत्रलोक में रहती हुई, भगवान् सदाशिव का पूजन करती हैं तथा इस प्रकार प्रार्थना किया करती हैं— "हे प्रभो ! आप सब देवताओं में श्रेष्ठ तथा सम्पूर्ण संसार के स्वामी हैं। आपके नाम, चन्द्रचूड़, मूड़, धूर्ज्जटि, तारक, शूलपाणि, त्रिपुरारि, शम्भु, गिरिजेश, वामदेव असितकंठ, सनातन, कामारि, त्र्यम्बक, परब्रह्म, परमात्मा आदि प्रसिद्ध हैं। आप हमारे ऊपर ऐसा अनुग्रह कीजिये कि हम सदैव निष्पाप रहें।"

चौदहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! नक्षत्रलोक से दो लाख योजन ऊपर शुक्रलोक है। शुक्र एक साथ ही सूर्य के आगे तथा पीछे चलते हैं। उनका आगे-पीछे चलना सूर्य की गति पर निर्भर रहता है। जो लोग संसार में काव्य करते हैं, वह शुक्रलोक को प्राप्त हो कर अनेक प्रकार के आनन्द उठाते हैं।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:52 PM

हे नारद ! शुक्र का जन्म हमारे पुत्र भृगु द्वारा हुआ था। उन्होंने काशी जी में जा कर शिवजी का कठिन तप किया। बहुत समय व्यतीत हो जाने पर भी जब उन्हें वर प्राप्त नहीं हुआ, तब वे एक पाँव पर खड़े हो कर पूरक प्राणायाम द्वारा अपने श्वास को ऊपर खींच, योग-मार्ग से शिवजी के ध्यान में स्थित हो गये। शुक्र के इस कठिन तप को देख कर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए और उनके समीप जा कर वर माँगने के लिए कहने लगे। उस समय शुक्र ने अत्यन्त प्रेम मग्न हो, दंडवत्-प्रणाम करने के उपरान्त इस प्रकार प्रार्थना की—"हे प्रभो ! आप सब के स्वामी, निर्दोष, मृत्युंजय, काल के भी काल, तीनों लोकों को उत्पन्न करने वाले, पालनकर्त्ता तथा संहारकर्त्ता हैं। हे नाथ ! आप मुझे मृत्युंजय-मंत्र प्रदान कीजिए; क्योंकि मैंने इसी अभिलाषा से तप किया है।"

हे नारद ! शुक्र की प्रार्थना सुन कर शिवजी ने उन्हें अभिलषित वरदान देते हुए कहा—"हे शुक्र ! हम तुम्हें नक्षत्रलोक के ऊपर रहने के लिए एक लोक भी देते हैं। तुम वहाँ निवास करो तथा दैत्यों के पुरोहित बन कर मृत्युंजय मंत्र की सहायता से सब प्रकार के सुखों का उपभोग करते रहो।" इतना कहकर जब शिवजी अन्तर्धान हो गये, तो शुक्र अत्यन्त प्रसन्न हो, अपने लोक में आ कर रहने लगे। वे भगवान् सदाशिव का हर समय स्मरण किया करते हैं तथा उन्हीं की सेवा में संलग्न रहते हैं।

हे नारद ! शुक्रलोक से दो लाख योजन ऊपर बुधलोक है। वह लोक सम्पूर्ण सुखों की खान तथा विचित्र मन्दिरों से सुशोभित है। वहाँ चन्द्रमा के पुत्र बुध भगवान् सदाशिव का ध्यान धरते हुए निवास करते हैं।

हे नारद ! तीनों लोकों में प्रशंसा प्राप्त करके चन्द्रमा को अत्यन्त अहंकार हो गया। तब कामदेव के प्रभाव से एक बार उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी और वे अपने गुरु बृहस्पति की पत्नी को भगा कर अपने घर ले आये। पहले तो बृहस्पति ने ही चन्द्रमा से अपनी पत्नी लौटा देने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:52 PM 84

के लिए कहा, परन्तु जब चन्द्रमा ने उनकी बात नहीं मानी, तब वे भगवान् सदाशिव की शरण में गये। उस समय बृहस्पति का पक्ष लेकर शिवजी चन्द्रमा से लड़ने के लिए आए और चन्द्रमा का पक्ष लेकर सभी दैत्य युद्ध करने को तैयार हो गये, उस समय दोनों पक्षों में घोर युद्ध हुआ। जब शिवजी ने चन्द्रमा को मारने के लिए अपना त्रिशूल उठाया, उस समय मैंने तथा विष्णु जी ने चन्द्रमा को बहुत कुछ समझाया। निदान हम लोग बृहस्पति की पत्नी तारा को चन्द्रमा के घर से निकाल कर शिवजी की शरण में ले गये। तब शिवजी ने बृहस्पति को उनकी पत्नी सौंपते हुए, अपना क्रोध शान्त किया।

हे नारद ! जब बृहस्पति ने तारा को गर्भवती देखा तो अत्यन्त क्रुद्ध हो कर यह आज्ञा दी—"हे तारा ! तुम इस गर्भ को तुरन्त गिरा दो।" यह सुन कर तारा ने अपने गर्भ को गिरा दिया। उससे एक अत्यन्त सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ। उस बालक को देख कर बृहस्पति तथा चन्द्रमा दोनों ही उसे प्राप्त करने की चेष्टा करने लगे। जब दोनों में विवाद बढ़ा तो यह निर्णय किया गया कि तारा से ही इस संबन्ध में पूछा जाए कि यह किसका बालक है? तारा ने लज्जा के वशीभूत हो कर उन दोनों से तो कुछ नहीं कहा, परन्तु जब मैंने पूछा तो उसने यह बताया कि यह बालक चन्द्रमा के वीर्य से उत्पन्न है।

हे नारद ! जब यह ज्ञात हो गया कि वह बालक चन्द्रमा के वीर्य से उत्पन्न हुआ है, तो बृहस्पति ने कुछ नहीं कहा। तदुपरान्त चन्द्रमा ने प्रसन्न हो कर उस बालक को उठा लिया तथा उसको अत्यन्त बुद्धिमान् देखकर उसका नाम बुध रख दिया। बड़े हो कर बुध ने काशी जी में जा कर अत्यन्त कठिन तप किया। तब शिवजी ने उसके समीप पहुँच कर वरदान माँगने के लिए कहा, तब वह दंडवत्-प्रणाम करने के उपरान्त इस प्रकार बोला—"हे प्रभो ! आप अनाथों के नाथ हैं। आपने कृपा करके मुझे अपना दर्शन दिया, इससे बढ़कर और क्या बात हो सकती है? अब आप जो चाहें, वह वर मुझे देने की कृपा करें।" यह सुनकर शिवजी ने अत्यन्त प्रसन्न हो बुध को ग्रह का पद

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:52 PM

देते हुए, रहने के लिए एक लोक प्रदान किया। उस समय सभी देवता वहाँ आ कर बुध की प्रशंसा करने लगे। तभी सूर्य तथा चन्द्रमा ने बुध को दो राशियाँ भेंट कीं। इसके उपरान्त जब शिवजी अन्तर्धान हो गये, तब बुध अपने लोक में आ कर सुखपूर्वक निवास करने लगे।

हे नारद ! बुधलोक से दो लाख योजन ऊपर भौमलोक है। वहाँ तीन पक्ष एक राशि पर रहने वाले मंगल स्थित हैं। उनकी कथा इस प्रकार है—जिस समय सती ने दक्ष के यज्ञ में आ कर अपना शरीर त्यागा तथा शिवजी दक्ष का यज्ञ विध्वंस करने के उपरान्त सती के वियोग में व्याकुल हो, सब वस्तुओं से मुख मोड़, श्वास चढ़ा, कठिन तप करने में प्रवृत्त हुए, उसके कुछ समय बाद तप की समाप्ति पर उनके मस्तक से पसीने की एक बूँद पृथ्वी पर गिर पड़ी। उस बूँद द्वारा उस बालक का जन्म हुआ, जिसका रंग कुंदरू फल के समान लाल था। उस समय पृथ्वी स्त्री का स्वरूप धारण कर, उस बालक के समीप आ स्तन-पान कराने लगी। तब शिवजी ने प्रसन्न हो कर पृथ्वी से यह कहा—"हे पृथ्वी ! यह बालक हमारे पसीने की बूँद से उत्पन्न हुआ है, परन्तु तुमने इसे अपना दूध पिलाया है। अस्तु, हम यह बालक तुम्हीं को दे देते हैं।" शिवजी के मुख से यह वचन सुनकर पृथ्वी अत्यन्त प्रसन्न हुई तथा उस बालक का पालन-पोषण करने लगी।

हे नारद ! भौम ने भी काशी जी में जा कर शिवजी का अत्यन्त कठिन तप किया। तदुपरान्त जब शिवजी उसे वरदान देने के लिए पहुँचे, उस समय उसने दंडवत्-प्रणाम करते हुए यह प्रार्थना की—"हे प्रभो ! आपके चरित्रों का पार किसी ने नहीं पाया है।" यह सुनकर शिवजी ने प्रसन्न हो कर कहा—"हे भौम ! हम तुम्हें तीसरा ग्रह नियुक्त करते हैं। तुम्हारा स्थान बुधलोक के ऊपर होगा। तुम वहाँ रह कर सदैव प्रसन्नता प्राप्त करोगे।" इतना कह कर जब शिवजी अन्तर्धान हो गये, तब भौम अपने लोक में रह कर भगवान् सदाशिव के चरणों का ध्यान धरते हुए, दिन-रात उन्हीं के पूजन में संलग्न हुए।

हे नारद ! भौमलोक से दो लाख योजन ऊपर बृहस्पतिलोक है। वहाँ के निवासी सदैव आनन्दित रहते हैं। बृहस्पति ने जिस प्रकार उच्च

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:53 PM

पद प्राप्त किया, वह कथा इस भाँति है। हमारे पुत्र अङ्गिरस द्वारा बृहस्पति का जन्म हुआ था। उन्होंने काशी में जा कर शिवजी का कठिन तपस्या की। तब शिवजी ने उन्हें प्रसन्न हो कर यह वर दिया— "हे बृहस्पति ! हम तुम्हें समस्त देवताओं का गुरु एवं ग्रह नियुक्त करते हैं। आज से तुम देव पुरोहित एवं आचार्य के नाम से प्रसिद्ध होगे। इतना कहकर जब शिवजी अन्तर्धान हो गये, तब बृहस्पति अपने लोक में आ कर देवताओं के गुरु बन, सुखपूर्वक निवास करने लगे।

हे नारद ! बृहस्पति लोक से दो लाख योजन ऊपर शनैश्चर लोक है। वहाँ सूर्य के पुत्र शनैश्चर सुखपूर्वक निवास करते हैं तथा भगवान् सदाशिव की स्तुति करते हुए यह कहते हैं—"हे प्रभो ! आप परमगति को देने वाले, दीनदयालु, भक्तवत्सल तथा सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी हैं।" इस प्रकार शनैश्चर शिवजी का स्मरण एवं कीर्तन करते हुए सदैव आनन्दित बने रहते हैं। वे एक राशि पर ढाई वर्ष तक रहते हैं, क्योंकि उनकी गति अत्यन्त मन्द है। उनकी दृष्टि जिस पर पड़ जाती है, उसे बड़ा दुःख मिलता है।

हे नारद ! शनैश्चर ने जो उच्च पद पाया उसका वृत्तान्त इस प्रकार है कि कश्यप के पुत्र सूर्य द्वारा छाया के गर्भ से, जो सूर्य की पत्नी है, शनैश्चर का जन्म हुआ था। शनैश्चर अपनी दृष्टि को सदैव नीचे की ओर झुकाये हुए अपना मुख देखा करते हैं, ताकि उनकी दृष्टि किसी के ऊपर न पड़ जाए। यदि कहीं वे अपनी दृष्टि ऊपर को उठा दें तो सम्पूर्ण सृष्टि के नष्ट होने में कोई सन्देह नहीं रह जायेगा। उन्होंने भी काशी जी में जा कर शिवजी का अत्यन्त कठिन तप किया था, तब शिवजी ने प्रसन्न हो कर उन्हें यह वर दिया—"हे शनैश्चर ! हम तुम्हें बृहस्पतिलोक के ऊपर रहने के लिए स्थान देते हैं। तुम ग्रह बन कर वहाँ सुखपूर्वक निवास करो।" तब से भगवान् सदाशिव की आज्ञानुसार शनैश्चर अपने लोक में आकर रहने लगे। वहाँ वे हर समय शिवजी का पूजन, ध्यान, कीर्तन एवं स्मरण किया करते हैं।"

❁❁❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:53 PM 4G 84

पन्द्रहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—शनैश्चर लोक से ऊपर सप्तर्षि लोक है। वहाँ मेरे सात पुत्र, जो सप्तर्षि के नाम से प्रसिद्ध हैं, निवास करते हैं। वे भगवान् सदाशिव का पूजन करते हुए इस प्रकार प्रार्थना करते हैं—''हे प्रभो ! आप सब के स्वामी हैं। आप ही यज्ञपति हैं तथा आप ही यज्ञरूप हो कर यज्ञ की रक्षा करते हैं। हमें अपना सेवक जान कर सदैव अनुग्रह करें।'' हे नारद ! जो धर्मात्मा ऋषि-मुनि होते हैं, वे इसी सप्तर्षिलोक में रह कर आनन्द उठाते हैं।

हे पुत्र ! अब तुम ध्रुवलोक का वृत्तान्त सुनो। वह लोक तेरह लाख योजन ऊँचा है। वहाँ अत्यन्त सुन्दर भवन बने हुए हैं, जो आठ प्रकार के रत्नों से सदैव सुशोभित रहते हैं। सभी ग्रह, नक्षत्र, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, इन्द्र, धर्मराज, ब्रह्मा, कश्यप आदि उस ध्रुव लोक की परिक्रमा करते हैं। जिस प्रकार खम्बे से बँधा हुआ पशु उसके चारों ओर घूमता है, उसी प्रकार समस्त ज्योतिगण ध्रुव लोक के चारों ओर घूमते रहते हैं। कुछ मुनियों का यह कहना है कि जितने भी नक्षत्र दिखाई देते हैं, वे सब शिशुमार चक्र में गुँथे हुए हैं, उन सब के ऊपर ध्रुव स्थित है।

हे नारद ! ध्रुव परम भाग्यवान् है। उन्होंने विष्णु जी की कृपा से ऐसा उच्च पद प्राप्त किया तथा शिवजी की सेवा करके अपने लोक को निश्चित बनाया। उनकी कथा इस प्रकार है—''स्वायम्भुव मनु ने शतरूपा के साथ अपना विवाह किया था। उनसे उत्तानपाद नामक एक पुत्र की उत्पति हुई। राजा उत्तानपाद प्रजा का धर्मपूर्वक पालन करने वाले, शूर-वीर, धर्मात्मा तथा उदार थे। उनके सुरुचि तथा सुनीति नामक दो रानियाँ थीं। ध्रुव का जन्म सुनीति के गर्भ से हुआ था। राजा उत्तानपाद ध्रुव की माता सुनीति की अपेक्षा सुरुचि को अधिक प्यार करते थे। एक दिन जब ध्रुव ने अपने पिता की गोद में बैठने की इच्छा की, उस समय सुरुचि ने कुछ ऐसे वचन कहे, जिन्होंने उनके हृदय को बींध दिया। तब ध्रुव रोते हुए अपनी माता के पास

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:53 PM

पहुँचे। सुनीति ने सब वृत्तान्त सुन कर यह कहा—"हे पुत्र ! ईश्वर की सेवा किये बिना किसी को आनन्द प्राप्त नहीं होता। अस्तु, तुम्हें उचित है कि तुम श्री भगवान् के चरणों का स्मरण करते हुए, तपस्या करो।" यह सुनकर ध्रुव ने उन्हें उत्तर दिया—"हे माता ! आपकी आज्ञा से मैं तपस्या करके ऐसा उच्च पद प्राप्त करूँगा जहाँ कोई भी नहीं पहुँच सका है।" इतना कहकर ध्रुव अपनी माता से आज्ञा ले, तपस्या करने के लिए घर से निकल पड़े।

हे नारद ! मार्ग में तुमने ध्रुव को उपदेश किया था। तदुपरान्त उन्होंने मधुवन में जा कर दस सहस्त्र वर्षों तक घोर तपस्या की। उस समय देवताओं ने यह प्रार्थना की—"हे प्रभो ! ध्रुव की तपस्या से तीनों लोक जले जा रहे हैं। अस्तु, आप उसे शीघ्र वरदान देने की कृपा करें।" यह सुनकर विष्णु जी ध्रुव के समीप जा पहुँचे तथा उनकी स्तुति-प्रार्थना सुनकर इस प्रकार बोले—"हे ध्रुव ! तुम्हारी समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी। अब तुम काशी जी में जा कर शिवजी को प्रसन्न करने के हेतु शिवजी की तपस्या करके उनसे यह वरदान माँगो कि हमें विष्णु जी ने जो वर दिया है, वह अचल हो जाए। शिवजी से वर प्राप्त करने के उपरान्त तुम छत्तीस सहस्त्र वर्षों तक राज्य करोगे। फिर ऋषिलोक से ऊपर लोक को प्राप्त करोगे।"

हे नारद ! इतना कह कर विष्णु जी ध्रुव को अपने गरुड़ पर बैठा, काशी जी में जा पहुँचे। वहाँ वे स्वयं तो मणिकर्णिका में स्नान करके भगवान् विश्वनाथ का पूजन करने के उपरान्त अपने लोक को चले गये और ध्रुव इन्द्रियों को वश में करके शिवजी का कठिन तप करने लगे। जब उनकी तपस्या से प्रसन्न हो कर शिवजी ने दर्शन दिया तथा वर माँगने के लिए कहा, उस समय ध्रुव ने दंडवत्-प्रणाम करने के उपरान्त यह प्रार्थना की—"हे प्रभो ! आप मुझे अपना सेवक जान कर यह कृपा कीजिये कि विष्णु जी ने मुझे जो वर दिया है, वह अचल हो जाए।" यह सुनकर शिवजी 'एवमस्तु' कह कर अन्तर्धान हो गये। इस प्रकार वर पाने के उपरान्त ध्रुव अपने पिता के पास लौट आये। उस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:53 PM 4G 84

समय राजा उत्तानपाद ने ध्रुव का अत्यन्त सत्कार किया तथा उनकी माता को भी बहुत प्रसन्नता हुई। तदुपरान्त राजा उत्तानपाद ध्रुव को राज सिंहासन पर बैठाकर, स्वयं तपस्या करने के हेतु वन में चले गये।

हे नारद ! ध्रुव ने छत्तीस सहस्त्र वर्षों तक पृथ्वी पर आनन्दपूर्वक राज्य किया, तदुपरान्त वे अपने पुत्र को राज्य सौंप कर वन में तपस्या करने चले गये। वहाँ अन्त समय में विष्णु जी की आज्ञानुसार विष्णु जी के गण उन्हें विमान में बैठा कर ध्रुवलोक में ले पहुँचे। वह ध्रुवलोक सप्तर्षि से ऊपर है। ध्रुव इस प्रकार स्तुति करते हैं—"हे प्रभो ! आप सब के स्वामी हैं। अस्तु, आप मेरे ऊपर अपनी कृपा बनाये रहें।"

❁❁❁

सोलहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे पुत्र ! सुरलोक ध्रुवलोक तक ही है। ध्रुवलोक से ऊपर महर्लोक है। वह पृथ्वी से एक करोड़ योजन की ऊँचाई पर स्थित है। उस लोक में अट्ठाइस करोड़ देवता रहते हैं। जो परम तपस्वी तथा शिवजी के उपासक हैं। उस लोक के सभी भवन स्वर्ण तथा रत्नों से निर्मित्त हैं। वहाँ किसी प्रकार का भय तथा शोक नहीं है। वे सब भगवान् सदाशिव के गुणानुवादों का वर्णन करते हुए इस प्रकार प्रार्थना करते रहते हैं—"हे प्रभो ! आप ब्रह्म, सनातन, सच्चिदानन्द स्वरूप तथा आदि-अन्त से रहित हैं। शेषजी में आप के यश का वर्णन करने की सामर्थ्य नहीं है। अस्तु, आप हमारे ऊपर कृपा रखते हुए, हमें सब प्रकार के सन्देहों से रहित बनावें।" इस प्रकार सभी देवता स्तुति किया करते हैं। इस लोक में वे तपस्वी भी पहुँचते हैं, जिन्होंने संसार में रह कर अत्यन्त कठिन तप किया होता है।

हे नारद ! महर्लोक से एक करोड़ योजन ऊपर जनलोक है। वहाँ के सभी भवन स्वर्ण रत्नों से निर्मित है। वहाँ भृगु आदि पवित्र मुनियों का निवास है। वे पंचाक्षरी-मंत्र का जप करते हुए भगवान् सदाशिव की इस प्रकार स्तुति किया करते हैं—"हे परब्रह्म सदाशिवजी ! आप

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:53 PM

अलख, अगोचर, निर्दोष तथा सम्पूर्ण देवताओं के स्वामी हैं। हमें अपना सेवक जान कर कृपा बनाये रहें।''

हे नारद ! जनलोक के ऊपर तपलोक है। वह पृथ्वी से चार करोड़ योजन ऊपर है। वहाँ निर्दोष सिद्धजन निवास करते हैं। वहाँ के सभी भवन आठ-आठ खण्डों के हैं तथा स्वर्ण-रत्नों एवं बहुमूल्य मुक्ताओं से सुसज्जित हैं। वहाँ वे मुनि लोग पहुँचते हैं, जो संसार में रह कर निष्काम भाव से तप करते हैं। सनकादिक तथा दक्ष आदि भी उसी लोक में निवास करते हैं और भगवान् सदाशिव का स्मरण करते हुए इस प्रकार स्तुति करते हैं—''गिरिजापति ! आपकी सेवा से ही ब्रह्मा तथा विष्णु ने उच्च पद प्राप्त किया है। आपकी कृपा से शेषजी पृथ्वी का भार अपने मस्तक पर रखते हैं। अस्तु, आप हम सब पर भी कृपा बनाये रहें।''

हे नारद ! तपलोक के ऊपर सत्यलोक है। वह पृथ्वी से आठ करोड़ योजन ऊँचा है। वहाँ किसी प्रकार का दुःख, शोक, चिन्ता, रोग, मोह आदि नहीं है। उस लोक को शिवजी की कृपा से मैंने प्राप्त किया है। जो लोग वेदपाठी होते हैं तथा माघ मास में प्रयाग में जा कर स्नान करते हैं, वे मेरे सत्यलोक में आते हैं।

हे पुत्र ! भगवान् सदाशिव की आज्ञानुसार मेरी उत्पत्ति विष्णु जी के नाभिकमल से हुई। जब मैंने बहुत समय तक तप किया, तब शिवजी ने भक्ति सहित मुझे अपना दर्शन प्रदान करने की कृपा की। उस समय उनका स्वरूप इस प्रकार था—मस्तक पर जटाएँ, गंगा की धारा तथा चन्द्रमा विराजमान, तीनों नेत्र लालिमा लिये हुए, भाल पर त्रिपुण्ड सुशोभित, रुद्राक्ष की माला पहने, चरण कमल के समान सुन्दर, जाँघें केले के खम्बे के समान सुच्चिक्कण, सम्पूर्ण शरीर सूर्य के प्रकाश के समान श्वेत—जिस पर भस्म लगी हुई तथा जिसे देख कर सैंकड़ों करोड़ कामदेव भी लज्जित हों तथा वामाङ्ग में भगवती आदिशक्ति विराजमान थीं।

हे नारद ! शिवजी के उस परम सुन्दर स्वरूप को देखकर मैं प्रेम-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:53 PM

मग्न हो गया। तदुपरान्त हाथ जोड़ कर स्तुति करते हुए इस प्रकार बोला—"हे प्रभो ! वेद, मन, वचन द्वारा आपकी प्रशंसा करते रहते हैं। भक्तों को प्रसन्नता प्रदान करने के हेतु आप अनेक प्रकार के अवतार धारण करते हैं। मंत्र, तंत्र, यंत्र, यामल, डामर, पंचरात्र, सोम, सावर, वाम, पाशुपत, नाकुल तथा कपाल आदि सभी मार्ग आपको ईश्वर कहते हैं। जिस प्रकार संसार में जल बहने के जितने मार्ग हैं, वे सब समुद्र में जा कर विलीन होते हैं, उसी प्रकार सब कर्म-धर्म आदि अन्त में आप से ही जा मिलते हैं। यद्यपि सब मतों ने आपका अनेक प्रकार से वर्णन किया है, परन्तु आप के यथार्थ रूप को कोई नहीं जान पाया है। वेद आपको मन तथा वचन से परे आश्चर्य रूप कहते हैं। इस प्रकार कोई भी आप के भेद को नहीं जान पाया, परन्तु आप स्वयं जिसके ऊपर कृपा करते हैं, वह सुगमता से जान लेता है। आपकी महिमा अप्रमेय है। आप मुझे अपना सेवक जान कर सदैव कृपा करें।"

हे नारद ! मेरी इस स्तुति को सुनकर शिवजी ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर कहा—"हे ब्रह्मन् ! तुम परमधन्य हो। हम तुम्हें यह वर प्रदान करते हैं कि तुम्हें संसार को उत्पन्न करने की सामर्थ्य प्राप्त होगी। तुम्हारा लोक सम्पूर्ण ब्रह्मांड के ऊपर होगा। तुम्हें हमारे समान ही ज्ञान की प्राप्ति होगी तथा तुम हमारे ही एक रूप कहलाओगे।" इतना कह कर शिवजी अन्तर्धान हो गये तब मैं उनकी आज्ञानुसार ब्रह्मलोक में निवास कर, सृष्टि-उत्पादन का कार्य करने लगा।"

सत्रहवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! तीनों लोकों का वृत्तान्त तो मैंने आपसे सुना, अब आप मुझे मन्वन्तरों का हाल सुनाने की कृपा करें। ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! चौहद मनु तथा मन्वन्तर हैं। वे संसार में अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। मनुओं के नाम इस प्रकार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:53 PM

हैं—1. स्वायम्भुव, 2. स्वारोचिष, 3. उत्तम, 4. तामस, 5. रैवत, 6. चाक्षुष, 7. वैवस्वत, 8. सावर्णि, 9. रुचि, 10. ब्रह्मसावर्णि, 11. वृषसावर्णि, 12. रुद्रसावर्णि, 13. देवसावर्णि तथा 14. इन्द्रसावर्णि ये चौदहों मन्वन्तर मेरे एक दिन में व्यतीत हो जाते हैं। प्रत्येक मन्वन्तर के सप्तर्षि देवता तथा इन्द्र अलग-अलग होते हैं। प्रत्येक मनु के दस-दस पुत्र हैं। ये सभी मन्वन्तर भूत, भविष्य तथा वर्तमान काल के हैं। जब ये चौदहों मन्वन्तर व्यतीत हो जाते हैं, उस समय को एक कल्प कहते हैं। वह कल्प मेरा एक दिन कहलाता है। जब एक चतुर्युगी व्यतीत हो जाती है। उसके पश्चात् प्रलय हो जाता है और मैं आनन्दपूर्वक सो जाता हूँ।

हे नारद ! अब मैं प्रत्येक मनु के पुत्रों, सप्तर्षियों, देवताओं तथा इन्द्र के संबन्ध में कहता हूँ कि किस मन्वन्तर में कौन-कौन से मनु के पुत्र, सप्तर्षि, देवता तथा इन्द्र होते हैं, ध्यानपूर्वक सुनो।

हे नारद ! पहले स्वायंभुव मनु के दस पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं—1. आग्नीघ्र, 2. अग्निवाह, 3. मेधा, 4. मेधातिथि, 5. वसु, 6. ज्योतिष्मत्, 7. द्युतिमान, 8. हव्य, 9. हवन तथा 10. शुभ्र। स्वायंभुव मन्वन्तर में जो सप्तर्षि होते हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं—1. मरीचि, 2. अत्रि, 3. अङ्गिरा, 4. पुलह, 5. क्रतु, 6. पुलस्त्य तथा 8. वशिष्ठ। इस मन्वन्तर में देवताओं को नाम याम तथा इन्द्र का नाम यज्ञ होता है।

हे नारद ! दूसरे स्वारोचिष मनु के पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं—1. हवि, 2. ध्रुव, 3. सुकृत, 4. ज्योति, 5. मूर्ति, 6. तप, 7. पृथु, 8. मनस्य, 9. नभ तथा 10. सूर्य। इस मन्वन्तर के सप्तर्षियों के नाम इस प्रकार हैं—1. उर्ज्जस्तम्भ, 2. परस्तम्भ, 3. ऋषभ, 4. वसुमत्, 5. ज्योतिष्मत्, 6. द्युतिमत् तथा 7. रोचिष्मत्। इस मन्वन्तर में देवताओं का नाम तुषित तथा इन्द्र का नाम रोचन होता है।

हे नारद ! तीसरे उत्तम नामक मनु के पुत्र इस प्रकार हैं—1. दक्ष, 2. ऊर्ज्जित, 3. ऊर्ज्ज, 4. मधु, 5. माधव, 6. शुचि, 7. शुक्रवह, 8. नभस्व, 9. नभ तथा 10. ऋषभ। इस मन्वन्तर में वशिष्ठ के पुत्र

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:53 PM 4G 84

जिन्हें ऊर्ज्ज कहा जाता है, सप्तर्षि होते हैं। देवताओं का नाम सत्यवेदश्रुति तथा इन्द्र का नाम सत्यजित होता है।

हे नारद ! चौथे तामस नामक मनु के पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं—1. द्युतिपात्, 2. सौतपस्य, 3. तप, 4. तापन, 5. तपरति, 6. शूल, 7. अकल्माष, 8. धन्वी, 9. खड्ग तथा 10. महर्षि। इस मन्वन्तर के सप्तर्षियों के नाम इस प्रकार हैं—1. गर्ग, 2. पृथु, 3. वाग्मी, 4. जन्य, 5. धाता, 6. कपीनु तथा 7. कपिवास। इस मन्वन्तर में देवताओं का नाम सत्य तथा इन्द्र का नाम विशिष होता है।

हे नारद ! पाँचवें रैवत मनु के पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं—प्रथम चार पुत्रों के नाम चौथे मनु के अन्तिम चार पुत्रों के समान हैं। शेष छः पुत्रों के नाम ये हैं—1. निरुत्सव, 2. आरण्यप्रकाश, 3. निदेह, 4. सत्य, 5. चित्, 6. क्रतु। इस मन्तवन्तर में सप्तर्षियों के नाम इस प्रकार होते हैं—1. देववाह, 2. जयश्रुति, 3. शिर, 4. कनकरोम, 5. पर्जन्य, ऊर्ध्वबाहु तथा 7. सोमप। इसमें देवताओं का नाम भूत तथा इन्द्र का नाम विभु होता है।

हे नारद ! छठे चाक्षुष मनु के पुत्रों के नाम वे ही हैं, जो अङ्गिरस के पुत्रों के नाम हैं। वे संख्या में दस हैं। इस मन्वन्तर के सप्तर्षियों के नाम इस प्रकार होते हैं—1. भृगु, 2. सुन्दर, 3. अम्बर, 4. विवस्वत्, 5. सुधर्म, 6. विरजा, तथा 7. सुहेतु। इस मन्वन्तर में पाँच प्रकार के देवता होते हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—1. आप, 2. प्रसूर, 3. क्रतु, 4. पृथूग्र तथा 5. खेल। इसमें इन्द्र का नाम मन्त्रद्रुम होता है।

हे नारद ! सातवें वैवस्वत मनु के पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं—''1. हे इक्ष्वाकु, 2. भृगु, 3. गरुड़धृष्ट, 4. शर्याति, 5. नरिष्यन्त, 6. नाभाग, 7. दिष्टक, 8 रोष, 9. पृषध्र तथा 10. वसुमान्।

इसमें सप्तर्षियों के नाम ये हैं—1. अत्रि, 2. वशिष्ठ, 3. कश्यप, 4. गौतम, 5. भरद्वाज, 6. विश्वामित्र तथा 7. जमदग्नि। इस मन्तन्तर में बारह आदित्य, बहत्तर मरुद्गण, ग्यारह रुद्र तथा विश्वामित्र देवता हैं। इसमें इन्द्र का नाम पुरन्दर होता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:53 PM

हे नारद ! आठवें सावर्णि मनु के पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं—1. वरिवान्, 2. अवन्तिवन, 3. सुमन्त, 4. धृत, 5. मान, 6. बसु, 7. वरिष्ठ, 8. आढ्य, 9. विष्णुराज तथा 10. सुमति। इसमें सप्तर्षियों के नाम इस प्रकार होते हैं—1. पाराशर, 2. व्यास, 3. अत्रिज, 4. कृपाचार्य, 5. द्रोणचार्य, 6. अश्वत्थामा तथा 7. गालव। इस मन्वन्तर के देवताओं के नाम अज, मरीच तथा कश्यप हैं एवं इन्द्र को बलि कहा जाता है।

हे नारद ! नौवें रुचि नामक मनु के पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं—1. धृष्टकेतु, 2. दीप्तकेतु, 3. पंचहस्त, 4. निकृत, 5. वृषकेतु, 6. पृथुश्रवा, 7. द्युम्न, 8. श्रव, 9. ऋचीक तथा 10. गयबृहत्। इस मन्वन्तर के सप्तर्षियों के नाम यह हैं—1. मेधातिथि, 2. वसु, 3. ज्योतिष्मान्, 4. धृतमत, 5. सावर्णि, 6. हव्य तथा 7. पुलह। इसमें देवताओं का नाम प्रियमुख तथा इन्द्र का प्रभु होता है।

हे नारद ! दसवें ब्रह्मसावर्णि मनु के पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं—1. अक्षय, 2. उत्तमौजस्, 3. भूरिसेन, 4. वृषसेन, 5. शतानीक, 6. निरमित्र, 7. जयद्रथ, 8. भूरिद्युम्न, 9. दर्श तथा सुवर्चि। इसमें देवताओं का नाम दृषद्वत् तथा इन्द्र का नाम शम्भु होता है।

हे नारद ! ग्यारहवें वृषसावर्णि मनु के पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं—1. सर्वगत, 2. सुरानीक, 3. क्षामक, 4. दर्शकुहू, 5. बाहू, 6. नामखण्ड, 7. मनु, 8. दृढेषु, 9. सुशर्मा तथा 10. अदाह। इस मन्वन्तर में सप्तर्षियों के नाम इस प्रकार होते हैं—1. हविष्मत्, 2. अनध, 3. निस्स्वर, 4. अष्टवर्ग, 5. चारुधृष्ट, 6. वशिष्ठ तथा 7. दत्त। इस मन्वन्तर में संगम, कामगम तथा निर्माण-प्रकाम नामक तीन प्रकार के देवता होते हैं तथा इन्द्र का नाम वेधृत होता है।

हे नारद ! बारहवें रुद्रसावर्णि मनु के पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं—1. देववान्, 2. उपदेव, 3. देवश्रेष्ठ, 4. सुरनाथ, 5. देवक, 6. देवप्रवर, 7. वरदेव, 8. देवप्रिय, 9. सुरप्रिय तथा 10. प्रियरेवा। इस मन्वन्तर में सप्तर्षियों के नाम इस प्रकार होते हैं—1. वशिष्ठसुत,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:53 PM

2. अत्रिसुत, 3. अङ्गिरासुत, 4. कश्यपसुत, 5. पुलहसुत, 6. पुलस्त्यसुत तथा 7. भृगुसुत। इसमें देवता पंचरहित के नाम से प्रसिद्ध होते हैं तथा इन्द्र का नाम क्रतुनाम होता है।

हे नारद ! तेरहवें देवसावर्णि मनु के पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं—1. चित्र, 2. विचित्र, 3. तप, 4. वृषधृत, 5. अघ्न, 6. क्षेत्रवृद्ध, 7. निर्भय, 8. द्रोण तथा 9. सुतप। इस मन्वन्तर के सप्तर्षियों के नाम इस प्रकार हैं—1. धृतमति, 2. हव्यपान, 3. तत्त्वदर्शी, 4. सुतपा, 5. परापक, 6. निरुत्सव तथा 7. निद्रह। इसमें देवताओं को सन्तराम तथा इन्द्र को दिवस्पति कहते हैं।

हे नारद ! चौदहवें इन्द्रसावर्णि मनु के पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं—1. बुध्न, 2. तरंग, 3. मेरू, 4. विष्णु, 5. प्रवीण, 6. सुनन्दन, 7. तेजस्वी, 8. सम्बल, 9. तनुग्र तथा 10. अनूप। इस मन्वन्तर के सप्तर्षियों के नाम इस प्रकार हैं—1. अग्नीध, 2. मागध, 3. अतिबाह्य, 4. शुचि, 5. युक्ति, 6. शुक्र, तथा 7. अजित्। इसमें देवताओं का नाम चाक्षुष तथा इन्द्र का नाम शुचि होता है।''

अठारहवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! मन्वन्तरों का वृत्तान्त सुनकर मुझे अत्यन्त आनन्द हुआ है। अब आप मुझे सातवें वैवस्वत मन्वन्तर का, जो इस समय व्यतीत हो रहा है, सब वृत्तान्त सुनाने की कृपा करें। इस मन्वन्तर में जो राजाओं की कथा हो, उन्हें भी कृपा कर कहें।'' ब्रह्मा जी बोले—''हे पुत्र ! अब मैं तुम से वैवस्वत मनु की सन्तानों की कथा कहता हूँ। वैवस्वत मनु की सन्तानों में अनेक धर्मात्मा राजा उत्पन्न हुए, उनकी कथा पुण्य को बढ़ाने वाली है।

हे नारद ! सूर्य का जन्म कश्यप से हुआ। सूर्य की संज्ञा नामक स्त्री द्वारा श्राद्धदेव तथा यम नामक दो पुत्र एवं यमुना नामक कन्या का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:54 PM

जन्म हुआ। संज्ञा मैथुन के समय सूर्य के तेज तथा बल को सहने में अशक्त हो गयी, तब उसमें यह सामर्थ्य न रही कि वह सूर्य के साथ फिर भोग करें। अस्तु, उसने मैथुन से छुटकारा पाने के हेतु अपने ही समान एक दूसरी स्त्री को उत्पन्न करके उसका नाम छाया रखा। जब छाया ने उससे अपने उत्पन्न का कारण पूछा, उस समय संज्ञा ने यह उत्तर दिया—"मैं तो अपने पिता के घर जाती हूँ। तुम मेरे बदले यहाँ रह कर मेरी तीनों सन्तानों को अपनी सन्तानों के समान समझकर पालन-पोषण करना तथा यह प्रयत्न करना कि कोई भी व्यक्ति इस भेद को न जान सके।" छाया ने यह बात स्वीकार कर ली। तब संज्ञा अत्यन्त लज्जित हो, अपने पिता के घर चली गयी। जब संज्ञा के पिता को उसके आने का कारण ज्ञात हुआ, तब उसने अत्यन्त अप्रसन्न हो कर संज्ञा को धमकाया तथा यह कहा कि तुम्हें अपने पति के घर रहना ही उचित है। यह सुनकर संज्ञा अपने पिता के घर से निकल, घोड़ी का स्वरूप धारण कर, उत्तर-दिशा की ओर एक वन में चली गयी तथा व्याकुल हो कर वहीं इधर-उधर भ्रमण करती रही।

हे नारद ! इस प्रकार संज्ञा तो घोड़ी का स्वरूप धारण किये वन में भ्रमण कर रही थी, उधर सूर्य इस भेद को न जान कर, छाया को ही संज्ञा समझते हुए उसके साथ रमण करते रहते थे। परिणामस्वरूप, छाया के गर्भ से दो बालक तथा एक कन्या की उत्पत्ति हुई। पहली बार उसके गर्भ से सावर्णि नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जो आठवाँ मनु हुआ। दूसरी बार शनैश्चर नामक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो सातवाँ ग्रह है। तीसरी बार तपती नामक एक कन्या उत्पन्न हुई, जिसका विवाह सावर्णि मुनि के साथ हुआ। जब छाया को संज्ञा की भाँति रहते हुए बहुत समय व्यतीत हो गया। तब उसकी बुद्धि में विरोध उत्पन्न होने से वह अपनी सन्तानों से अधिक प्रेम करने लगी तथा संज्ञा के पुत्रों से घृणा कर उठी। श्राद्धदेव तो इस बात को सह गये, परन्तु यम को छाया का ऐसा व्यवहार देखकर अत्यन्त क्रोध हुआ और उन्होंने उसे मारने की इच्छा से अपना पाँव ऊपर उठाया। उस समय छाया ने अत्यन्त क्रुद्ध

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:54 PM

हो कर यम को यह शाप दिया कि तुमने जो पैर मेरे मारने के लिए उठाया है, वह तुम्हारे शरीर से अलग हो कर गिर पड़ेगा।

हे नारद ! इस शाप को सुनकर यम अत्यन्त क्रुद्ध हो, सूर्य के समीप पहुँचे तथा उन्हें सब हाल सुनाते हुए यह प्रार्थना की—"हे पिता ! आप ऐसी कृपा कीजिए, जिससे मेरा पाँव गिरने से बच जाए।" यम की बात सुनकर सूर्य को अत्यन्त आश्चर्य हुआ और वे सोचने लगे कि यह क्या आश्चर्य है, जो माता अपने पुत्र पर इस प्रकार क्रोध करती है। फिर कुछ विचार करने के उपरान्त उन्होंने यम को धैर्य बँधाते हुए कहा—"हे पुत्र ! तुम चिन्ता मत करो। मुझे अत्यन्त आश्चर्य है कि तुम्हारे जैसे धर्मात्मा तथा सत्यवादी पुत्र को तुम्हारी माता ने किस प्रकार दोष लगा दिया है। संसार में किसी भी पिता में ऐसी सामर्थ्य नहीं है कि वह माता के दिये हुए शाप को दूर कर सके। हाँ, मैं तुम्हें यह वर अवश्य देता हूँ कि तुम अंग-भंग हो जाने पर भी पृथ्वी पर नहीं गिरोगे तथा तुम्हें कोई कष्ट भी नहीं होगा।"

हे नारद ! इस प्रकार यम को समझाने के उपरान्त सूर्य ने छाया के समीप जा कर यह कहा—"हे निर्बुद्धि स्त्री ! तूने यह कैसा दुष्कर्म किया है? माता के समीप सभी पुत्र एक समान होनी चाहिए। तू मुझे वास्तविक कारण बता।" यह सुनकर छाया ने प्रारम्भ से अन्त तक सब सच्चा हाल कह सुनाया और यह बता दिया कि वह संज्ञा के रूप में यहाँ रह अवश्य रही है, परन्तु वास्तव में संज्ञा नहीं है। यह सुनकर सूर्य अपने श्वसुर के घर जा पहुँचे। वहाँ जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि संज्ञा वन को चली गयी है, तो वे अपने तेज को कम करके संज्ञा को ढूंढ़ने के लिये निकले। जब उन्होंने वन में जाकर यह देखा कि संज्ञा घोड़ी का स्वरूप रखकर विचरण कर रही है, तो उन्होंने स्वयं घोड़े का रूप धारण कर, उसके साथ मैथुन करना चाहा। यह देखकर संज्ञा भयभीत हो, आगे की ओर भाग उठी। उस समय सूर्य ने अत्यन्त कामवश हो, अपना वीर्य मुख-मार्ग द्वारा संज्ञा के मुख पर छोड़ दिया। उस वीर्य के प्रभाव से संज्ञा की नासिका द्वारा दो पुत्र उत्पन्न हुए, जो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:54 PM

संसार में अश्विनी तथा कुमार के नाम से प्रसिद्ध हैं। अश्विनीकुमा
देवताओं के वैद्य हुए।

हे नारद ! इस चरित्र के उपरान्त सूर्य ने संज्ञा के सम्मुख अपन
स्वरूप अत्यन्त कोमल तथा सुन्दर रूप में प्रकट किया। उसे देखक
संज्ञा भी अत्यन्त प्रसन्न हो, वास्तविक स्वरूप धारण कर, अपने घ
लौट आयी। फिर छाया भी उसके साथ रह कर, स्नेहपूर्वक सम
व्यतीत करने लगी। संज्ञा के पुत्र श्राद्धदेव सातवें मनु हुए जो वैवस्त
नाम से प्रसिद्ध हैं। यमराज ने दिक्पाल हो कर उच्च पद को प्राप
किया। यमुना ने नदी हो कर श्रीकृष्ण चन्द्र जी से अधिक स्नेह पाया
इसी प्रकार छाया की सन्तानों में से सावर्णि आठवें मनु हुए तथ
शनैश्चर ग्रह-पद को प्राप्त किया। जो लोग इसे पढ़ते, सुनते अथव
सुनाते हैं, उन्हें दोनों लोकों में सुख प्राप्त होता है।''

उन्नीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे पुत्र ! अब मैं श्राद्धदेव अर्थात् वैवस्वत म
के वंश का वर्णन करता हूँ। इस वंश के राजा बड़े तपस्वी तथा प्रताप
थे। एक बार श्राद्धदेव ने वशिष्ठमुनि की सहायता से तेजस्वी तथ
भाग्यवान् पुत्र की प्राप्ति हेतु वरुण यज्ञ करना आरम्भ किया। उस
समय श्राद्धदेव की रानी ने वशिष्ठ जी से एकान्त में यह विनय की—
''हे ऋषि ! आप ऐसा उपाय कीजिये, जिससे मेरे गर्भ द्वारा पुत्र न ह
कर कन्या का जन्म हो। कन्या पुण्य को बढ़ाने वाली तथा मुक्ति क
प्रदान करने वाली होती है। अस्तु, आप मेरी प्रार्थना अवश्य स्वीका
करें।'' यह सुनकर वशिष्ठ जी ने पुत्र-प्राप्ति के मंत्र के बदले कन्या-
प्राप्ति के मंत्र को जपना आरम्भ कर दिया। परिणामस्वरूप यज्ञ पूण
होने पर बालक के बदले कन्या का जन्म हुआ। उस कन्या का नाम
इला रखा गया।

हे नारद ! उस समय श्राद्धदेव मनु ने वशिष्ठ जी से यह पूछा—''है

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गुरु ! मैंने पुत्र की कामना से यज्ञ किया था, परन्तु कन्या क्यों उत्पन्न हुई, इसका कारण बताने की कृपा करें।'' तब वशिष्ठ जी ने उन्हें वास्तविकता का ज्ञान कराते हुए कहा—''हे राजन् ! हम तुम्हारे मनोरथ को पूर्ण कर देंगे।'' इस प्रकार जब श्राद्धदेव की चिन्ता दूर हो गयी, तब उन्होंने इला की ओर प्रसन्नतापूर्वक देखा। जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि यह कन्या परम तेजस्विनी है, तो वे अपने मन में अत्यन्त प्रसन्न हुए। फिर उन्होंने इला को इडा नाम से सम्बोधित करते हुए, अपने पास बुला कर, यह कहा—''हे पुत्री ! तुम समीप आकर खेलो। उस समय इडा उन्हें उत्तर देते हुए बोली—''हे पिता ! मेरा जन्म मित्रावरुण के अंश से हुआ है। यद्यपि आपको पुत्र की आकांक्षा थी, परन्तु माता की अभिलाषा को पूर्ण करने के हेतु मेरा जन्म हुआ है। फिर भी मैं आपकी अभिलाषा भी पूर्ण कर दूँगी। आप मुझे मित्रावरुण के पास जाने की आज्ञा दे दीजिये।''

हे नारद ! यह सुनकर श्राद्धदेव ने इडा को मित्रावरुण के पास जाने की आज्ञा दे दी। तब वह उनके पास पहुँच, हाथ जोड़, स्तुति करती हुई इस प्रकार बोली—''हे प्रभो ! मैं आपके अंश से उत्पन्न हुई हूँ। अस्तु, आप जो आज्ञा देंगे, वह कार्य करने के लिए मैं प्रस्तुत हूँ।'' इडा के ऐसे वचन सुनकर मित्रावरुण ने अत्यन्त प्रसन्न होते हुए कहा—''हे इडा ! मैं तुम्हारे विनय तथा सत्यवादिता से अत्यन्त प्रसन्न हूँ। अब तुम संसार में मेरे नाम से प्रसिद्ध होओगी। तुम्हारा शरीर भी लड़के के रूप में परिवर्तित हो जायेगा। तुम्हारा नाम सुद्युम्न होगा।'' मित्रावरुण के यह वचन सुनकर इडा अत्यन्त प्रसन्न हो, मनु के पास लौट आयी। उन्हीं दिनों वशिष्ठ जी ने भगवान् सदाशिव को प्रसन्न करके यह वर माँगा कि श्राद्धदेव की पुत्री इडा पुत्र रूप में परिवर्तित हो जाये। अस्तु, शिवजी के वरदान एवं मित्रावरुण की कृपा से इडा लड़का हो गयी और सुद्युम्न नाम से संसार में प्रसिद्ध हुई।

हे नारद ! एक दिन सुद्युम्न शिकारियों का वेष धारण कर, शिकार खेलने के लिए उत्तर दिशा की ओर गया। वहाँ संयोगवश वह सुरगिरि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:54 PM

जहाँ पर शिवजी गिरिजा सहित विहार कर रहे थे, जा पहुँचा। उस स्थान पर पहुँचते ही वह अपने सभी साथियों सहित स्त्री रूप को प्राप्त हो गया। यह आश्चर्य देखकर सब लोग अत्यन्त चकित हुए। सुद्युम्न के वहाँ पहुँच कर स्त्री हो जाने का यह कारण था कि एक बार भगवती गिरिजा उस स्थान पर भगवान् सदाशिव के साथ विहार कर रही थीं, तब कुछ देवता शिवजी के दर्शन प्राप्त करने के हेतु उस स्थान पर जा पहुँचे थे, परन्तु जब उन्होंने यह देखा कि शिवजी विहार में मग्न हैं, तब वे लज्जापूर्वक वहाँ से लौट आये और बदरीवन में ठहर गये। जब गिरिजा को यह ज्ञात हुआ कि यहाँ देवता आये थे और उन्हें विहार करते हुए देख गये हैं, तो वे अपने मन में बहुत लज्जित हुईं। उस समय शिवजी ने गिरिजा के हृदय को सन्तोष प्रदान करने के हेतु यह कहा— ''हे गिरिजे ! भविष्य में जो भी मनुष्य इस स्थान पर आयेगा, वह स्त्री का रूप हो जायेगा।'' इसलिए जब वह वहाँ जा पहुँचा तो उस शाप के प्रभाव के कारण स्त्री हो गया।

हे नारद ! स्त्री हो जाने पर सुद्युम्न अत्यन्त दुःखी हो अपने साथियों-सहित इधर-उधर भ्रमण करने लगा तथा घर लौट कर नहीं गया। जिस समय वह वन में भ्रमण कर रहा था, तभी चन्द्रमा का पुत्र बुध भी उसके समीप आ पहुँचा। जब बुध ने परम सुन्दरी नारी के रूप में सुद्युम्न को देखा तो वह उस पर मोहित हो गया। स्त्री रूपी सुद्युम्न भी बुध पर आसक्त हो गया। तब वे दोनों परस्पर भोग करने लगे। उन दोनों के संयोग से पुरुरवा नामक एक अत्यन्त प्रतापी राजा का जन्म हुआ। राजा पुरुरवा संसार में अत्यन्त प्रसिद्ध हुआ। उसी समय से संसार में चन्द्रवंश का आरम्भ हुआ जिसमें आगे चल कर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जी ने अवतार लिया था। चन्द्रवंशी राजाओं की कथा अनेक हैं।

हे नारद ! पुरुरवा को जन्म देने के उपरान्त सुद्युम्न अत्यन्त दुःखी हो अपने गुरु वशिष्ठ का स्मरण करने लगा। तब वशिष्ठ जी प्रसन्न हो कर उसके पास पहुँचे। जब उन्होंने यह देखा कि सुद्युम्न स्त्री हो गया

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:54 PM 84

है, तब वे उसे पुरुष रूप प्रदान करने के हेतु शिवजी का तप करने लगे। कुछ समय उपरान्त शिवजी ने प्रसन्न हो कर उन्हें अपना दर्शन दिया तथा वर माँगने की आज्ञा दी। तब वशिष्ठ ने भगवान् सदाशिव की स्तुति एवं प्रार्थना करते हुए यह कहा—"हे प्रभो ! मेरी यह अभिलाषा है कि सुद्युम्न पहले की भाँति फिर से पुरुष शरीर को प्राप्त करे।" वशिष्ठ जी की प्रार्थना सुनकर शिवजी बोले—"हे वशिष्ठ ! हम ने उस वन को जो शाप दिया है, वह तो मिथ्या नहीं होगा, परन्तु हम तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हो कर यह वरदान देते हैं कि सुद्युम्न एक महीने तक स्त्री रूप में रहेगा और दूसरे महीने पुरुष हो जाया करेगा। वह अपने राज्य का विधिपूर्वक संचालन करेगा तथा हमारी कृपा से इसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा।" इतना कहकर शिवजी अन्तर्धान हो गये और सुद्युम्न पुनः पुरुष शरीर धारण कर अपने घर लौट आया तथा सुखपूर्वक राज्य करने लगा। उसने उत्कल, गय तथा विमल नामक तीन पुत्रों को जन्म दिया। उत्कल के नाम पर उत्कल देश प्रसिद्ध हुआ, गय ने गया को बसाया तथा विमल पश्चिम देश का राजा हुआ।"

बीसवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! जिस समय राजा सुद्युम्न राज्य को त्याग कर वन में चले गये, तदुपरान्त मनु ने क्या कार्य किये आप मुझे यह बताने की कृपा करें।" ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! मनु के दस पुत्र उत्पन्न हुए, उनमें सबसे बड़े का नाम इक्ष्वाकु था। उसी के वंश का मैं वर्णन करता हूँ। इक्ष्वाकु ने सौ पुत्रों को जन्म दिया। वे सब बड़े धर्मात्मा तथा प्रजापालक थे। उन पुत्रों में सबसे बड़े का नाम मलकक्ष था, उसने अयोध्या पुरी का सुखपूर्वक राज्य किया। एक बार श्राद्ध के समय माँस की आवश्यकता पड़ने पर इक्ष्वाकु ने मलकक्ष को शिकार कर लाने की आज्ञा दी। तब वे पिता की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:54 PM

आज्ञानुसार वन में गये और वहाँ से एक शशक को मारकर घर को लौटे। मार्ग में उन्हें इतनी ज़ोर की भूख लगी कि वे उसी शशक में से थोड़ा माँस खा गये। जो माँस शेष बचा, उसे राजा इक्ष्वाकु को लाकर दे दिया। उस भेद को वशिष्ठ जी जान गये। तब उन्होंने इक्ष्वाकु से यह कहा—"हे राजन् ! यह माँस जूठा होने के कारण श्राद्ध के योग्य नहीं है।" यह सुनकर राजा इक्ष्वाकु अपने पुत्र से अप्रसन्न हो राज्य को त्याग, वन में चले गये। वहाँ वशिष्ठ मुनि द्वारा प्राप्त ज्ञान से शिवजी का तप करते हुए परम पद को प्राप्त हुए।

हे नारद ! इक्ष्वाकु के चले जाने पर वशिष्ठ जी ने मलकक्ष को राजा बनाया। वह संसार में शशाद नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसके पश्चात् क्रमानुसार अन्य इक्ष्वाकुवंशी राजाओं ने राज्य किया।

हे नारद ! यह मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि वैवस्वत के उत्तराधिकारी इक्ष्वाकु तथा इक्ष्वाकु के मलकक्ष अर्थात् शशाद हुए। तदुपरान्त उनके उत्तराधिकारी रिपुञ्जय, कौस्तुभ, हरिवाह, अर्णाभ, हर्यश्व, प्रथु, चन्द्र, युवनाथ, सारस्वत, वृहदश्व, कपिल तथा दृढ़ाश्व—ये सब क्रमानुसार राजा हुए। दृढाश्व के पश्चात् हर्यश्व, निभिकुम्भ, संघताश्व, कृषाश्व, प्रसेनजित तथा युवनाश्व हुए। युवनाश्व के कोई पुत्र नहीं हुआ, जिससे वह अत्यन्त दुःखी हो अपनी एक सौ रानियों को लेकर वन में चला गया, वहाँ मुनियों ने राजा से पुत्र प्राप्ति के हेतु इन्द्र यज्ञ कराया। एक दिन भाग्यवश रात्रि के समय राजा तृषातुर हो पानी पीने के लिए उस स्थान पर गये, जहाँ यज्ञ की सामग्री रखी हुई थी। उस समय सब ऋषि-मुनि सो रहे थे। वहाँ एक कलश में मंत्रों से अभिषिक्त जल रखा हुआ था। राजा को उस जल के सम्बन्ध में कोई बात नहीं मालूम था। अस्तु, उसने प्यास बुझाने के लिए उस जल को पी लिया।

हे नारद ! प्रातःकाल होने पर जब मुनियों ने कलश को जल से रहित देखा तो सब लोगों ने पूछताछ की। उस राजा ने उन्हें बताया कि तृषातुर होने के कारण मैंने उस जल को पी लिया है। यह सुनकर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:54 PM

मुनियों ने उत्तर दिया—"हे राजन् ! यह वही जल था, जिसके द्वारा तुम्हारे घर में पुत्र उत्पन्न होता। परन्तु अब जो ईश्वर की इच्छा है, उसके सम्मुख किसी का क्या वश चल सकेगा?" निदान यज्ञ तो समाप्त हो गया और नियत समय आने पर राजा की कोख फाड़कर एक सुन्दर बालक ने जन्म लिया। जब वह बालक दूध के लिये रोने लगा, उस समय मुनियों की प्रार्थना पर इन्द्र ने प्रकट हो कर उसके मुँह में अपनी कनिष्ठा उँगली डालते हुए कहा—"मान्धाता" अर्थात् "मुझे पी।" इन्द्र की उँगली के अमृत को पी कर वह बालक जीवित बना रहा। अस्तु, वह संसार में मान्धाता के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जब मान्धाता बड़ा हो गया, तब युवनाश्व उसे राज्य सौंप कर स्वयं तप करने के हेतु वन में चले गये।

हे नारद ! राजा मान्धाता सम्पूर्ण भूमंडल के चक्रवर्ती सम्राट् हुए। वे त्रसदस्यु के नाम से भी प्रसिद्ध थे। उन्होंने दो पुत्रों को जन्म दिया, जिनमें एक का नाम पुरुकुत्स तथा दूसरे का नाम मुचुकुन्द था। राजा मुचुकुन्द ऐसे प्रतापी हुए कि स्वयं इन्द्र भी उनसे सहायता लेने के लिए आये। मुचुकुन्द के भाई पुरुकुत्स ने त्रय्यारुणि नामक पुत्र को जन्म दिया। त्रय्यारुणि ने राज्य पद को प्राप्त किया। उनके सत्यव्रत नामक एक ऐसा पुत्र उत्पन्न हुआ जिसने तेजस्वी मंत्रों को भ्रष्ट कर दिया। वह अपनी स्त्री को मार कर अनेक प्रकार के पाप करने लगा। उस समय राजा त्रय्यारुणि ने उसे अपने घर से निकाल दिया। तब वह रसोई घर के पास जा कर रहने लगा। उसके कुकर्मों को देख कर राजा त्रय्यारुणि राज्य को त्याग कर तप करने के हेतु वन में चले गये।

हे नारद ! राजा सत्यव्रत जिस वन में तप कर रहे थे, उन्हीं दिनों विश्वामित्र भी अपने घर-द्वार को त्याग कर तप करने के लिए वन में जा पहुँचे थे। सत्यव्रत भी उनके आश्रम के पास ही वन में रह रहा था। एक दिन विश्वामित्र की पत्नी दरिद्रता के कारण अपने मँझले पुत्र को कंठ में रस्सी बाँधकर बेचने लगी। वह उसके बदले में सौ गौ चाहती थी। सत्यव्रत ने दया करके उस बालक को छुड़ा दिया और स्वयं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:54 PM

उसका पालन-पोषण करने लगा। तब वह बालक गालव नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ। उसके द्वारा संसार में एक गोत्र गालव्य नाम से चला।

हे नारद ! सत्यव्रत विश्वामित्र का हर प्रकार से प्रतिपालन करता था। जिस समय तक सत्यव्रत वन में रहा, उस समय वशिष्ठ मुनि राजा के राज्य तथा कुटुम्ब का संचालन करते रहे। बारह वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी वशिष्ठ जी ने राजा सत्यव्रत को राज्य सिंहासन पर आ बैठने के लिए आमन्त्रित नहीं किया। एक बार सत्यव्रत क्षुधा से अत्यन्त पीड़ित हुआ। तब उसने क्रुद्ध हो कर वशिष्ठ मुनि की एक गाय को मार डाला और उसका माँस विश्वामित्र मुनि के साथ स्वयं खाया।

हे नारद ! वशिष्ठ जी को जब यह समाचार मिला तो उन्होंने सत्यव्रत को महान् पापी ठहराया। जब विश्वामित्र ने यह देखा कि वशिष्ठ न तो सत्यव्रत को उसके सिंहासन पर बैठा रहे हैं और न उसे सुख भोग ही करने देना चाहते हैं। इसके विपरीत उसे महापापी ठहरा बैठे हैं, तब उन्होंने सत्यव्रत को त्रय्यारुणि के स्थान पर अपने तपोबल के प्रभाव से चक्रवर्ती राजा बना दिया तथा सशरीर स्वर्ग पहुँचाया। जिस समय त्रिशंकु को देवताओं ने सशरीर स्वर्ग में आते देखा तो उन्होंने उसे स्वर्ग से नीचे गिरा दिया, परन्तु विश्वामित्र ने उसे पृथ्वी पर न गिरने देकर बीच में ही रोक दिया। तब वे राजा त्रिशंकु आकाश में लटका हुआ अब तक दिखाई देता है।

हे नारद ! राजा सत्यव्रत द्वारा हरिश्चन्द्र का जन्म हुआ, वे परम धर्मात्मा हुए। जब उनके कोई पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ, तो वे चिन्तित हो कर वन में जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने तुम से उपदेश पा कर वरुण की आराधना की तथा यह संकल्प किया कि मेरे जो पुत्र उत्पन्न होगा, उसे मैं वरुण को बलि देकर यज्ञ करूँगा। उस तप के प्रभाव से वरुण ने राजा को एक पुत्र दिया। उसका नाम रोहित रखा गया। जब वह बालक उत्पन्न हुआ तो वरुण ने राजा के पास पहुँच कर यह कहा— "हे राजन् ! तुम अपने संकल्प के अनुसार इस बालक की बलि देकर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:55 PM

हमारा यज्ञ करो। उस समय राजा ने यह उत्तर दिया—"हे वरुण देवता ! जो पशु दाँतों से रहित होता है, उसकी बलि नहीं दी जाती। जब इस बालक के दूध के दाँत गिर कर नये दाँत आ जायेंगे, तब हम इसकी बलि देंगे। यह सुनकर वरुण देवता अपने स्थान को लौट गये। कुछ समय बाद जब उस बालक के दूध के दाँत टूट गये तथा उसके स्थान पर नये दाँत भी उग आये, तब वरुण ने फिर राजा के पास पहुँच कर कहा—"हे राजन् ! अब तुम अपने पुत्र की बलि हमें दो। राजा ने पुत्र के मोह में पड़कर उस समय वरुण को यह उत्तर दिया—"हे वरुण ! जब पशु तरुण हो जाता है, तब वह बलि के उपयुक्त होता है। अस्तु, आप इस बालक को तरुण हो जाने दीजिये।"

हे नारद ! जब वह बालक तरुण हो गया, तब राजा ने उसे वन में भेज दिया जिससे उसकी प्राण-रक्षा हो जाए। जब वरुण फिर राजा के पास आये तथा उन्हें छल मालूम हुआ तो उन्होंने राजा को जलोदर रोग दे दिया। रोग के कारण वे अत्यन्त दुःख भोगने लगे। जब यह समाचार रोहित को मिला तब वह अपने पिता को देखने के लिए वन से घर को चला, परन्तु इन्द्र ने उसे बीच में ही ब्राह्मण का स्वरूप धारण कर रोक दिया और यह कहा—"हे रोहित ! तुम्हें घर जाने की आवश्यकता नहीं है। तीर्थों में भ्रमण करना अत्यन्त पुण्यदायक है।" इन्द्र की बात मान कर रोहित घर न जा कर तीर्थों में भ्रमण करता रहा। इस प्रकार छः वर्ष व्यतीत हो गये।

हे नारद ! तदुपरान्त रोहित ने अपने पिता को रोग दूर करने के लिए अजीगर्त्त के मँझले लड़के शुनःशेप को बलिदान के लिए खरीदकर, अपने पिता राजा हरिश्चन्द्र के पास भेजा। जब राजा ने रोहित के बदले उस बालक को बलिदान करना चाहा, उस समय शुनःशेप ने विश्वामित्र के बताये हुए दो मंत्रों का पाठ किया, जिनके प्रभाव से वरुण देवता उस पर प्रसन्न हो गये और उसकी जान बच गयी। तदुपरान्त वरुण देवता ने हरिश्चन्द्र के रोग को भी दूर कर दिया। हरिश्चन्द्र के उपरान्त रोहित राज्य सिंहासन पर बैठा। रोहित का पुत्र हरित हुआ। हरित से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:55 PM

चम्प, चम्प से विजय, विजय से मृग, मृग से वृक तथा वृक से बाहु उत्पन्न हुए।

हे नारद ! जिस समय बाहु राज्य सिंहासन पर थे, तब उनके ऊपर शत्रुओं ने चढ़ाई कर दी और उन्हें राज्य से भ्रष्ट कर दिया। तब वे अपनी स्त्री तथा पुत्र सहित भाग कर ऊर्ज्ज मुनि की शरण में गये। वहाँ राजा बाहु की पत्नी ने सगर नामक एक बालक को जन्म दिया। वह बालक विष सहित उत्पन्न हुआ था, इसलिए उसका नाम सगर रखा गया। बड़े होने पर सगर ने ऊर्ज्ज मुनि से एक परम तेजस्वी बाण प्राप्त किया तथा उसके द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की। तत्पश्चात् वह अपने पिता के राज्य सिंहासन पर आसीन हो, धर्मपूर्वक प्रजा का पालन करने लगा। इस प्रकार राजा मान्धाता के बाद क्रमशः मुचुकुन्द, पुरुकुत्स, त्रय्यारुणि, सत्यव्रत अर्थात् त्रिशंकु, हरिश्चन्द्र, रोहित, हरित, चम्पक, विजय, मृग, वृक, बाहु तथा सगर राजा हुए।''

❁❁❁

इक्कीसवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनाकर सूत जी ने शौनकादि ऋषियों से कहा—''हे ऋषियो ! नारद जी जब राजा सगर का वृत्तान्त सुन चुके, तब उन्होंने ब्रह्मा जी से इस प्रकार कहा—''हे पिता ! बाहु के पुत्र सगर विष सहित क्यों उत्पन्न हुए, यह आप मुझे बताने की कृपा करें।'' ब्रह्मा जी बोले—''हे पुत्र ! राजा बाहु दिन-रात स्त्रियों के भोग-विलास में पड़कर जब राजकाज से उदासीन हो गये, उस समय हैहय, तालजंप तथा शक्र नामक उसके तीन परम शत्रु राजा राक्षसों की सेना साथ ले, उनके नगर पर चढ़ाई करने के लिए आ पहुँचे। उन्होंने युद्ध में राजा बाहु को हरा दिया। तब राजा बाहु ऊर्ज्ज मुनि की शरण में जा पहुँचे और उन्हीं के पास रहने लगे।

हे नारद ! वहाँ राजा बाहु की पत्नी गर्भवती हुई। तब उसकी दूसरी सौतन ने ईर्ष्या के वशीभूत हो, गर्भ नष्ट करने के हेतु, उस रानी को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विष पिला दिया। जिस समय बड़ी रानी गर्भवती हुई, उसी बीच राजा बाहु की मृत्यु हो गयी। रानी ने अपने पति के साथ सती होना चाहा परन्तु ऊर्ज्ज मुनि ने गर्भवती होने के कारण उसे सती नहीं होने दिया। यद्यपि रानी के गर्भ को नष्ट करने के लिए उसकी सौतन ने विष पिला दिया था, तथापि भगवान् सदाशिव की कृपा तथा मुनि के आशीर्वाद से गर्भ स्थित बालक की मृत्यु नहीं हुई। समय पा कर शुभ लग्न में रानी ने एक तेजस्वी बालक को जन्म दिया। वह बालक विष सहित उत्पन्न हुआ था, इसलिए मुनि ने उसका नाम सगर रखा। बड़े होने पर मुनि ने सगर को सभी विद्याएँ सिखायीं तथा एक ऐसा बाण दिया, जिसका वार कभी निष्फल नहीं जाता था। तदुपरान्त उसने शिवजी का तप करके उनकी कृपा प्राप्त की।

हे नारद ! सगर ने युद्ध क्षेत्र में अपने सभी शत्रुओं को पराजित कर दिया। अब उसके शत्रु भाग कर वशिष्ठ जी की शरण में गये। सगर ने उनके प्राण तो नहीं लिये, परन्तु सब के स्वरूप को बिगाड़ कर, अनादर करते हुए अपने राज्य से निकाल बाहर किया। तत्पश्चात् राजा सगर ऊर्ज्ज मुनि को अपना गुरु बना कर, अश्वमेध यज्ञ करने लगे। उस यज्ञ में उन्होंने एक श्यामकर्ण घोड़े को दिग्विजय करने के लिए भेजा तथा अपने साठ सहस्त्र पुत्रों को भी असंख्य सेना सहित घोड़े की रक्षा के लिए साथ कर दिया। वह घोड़ा समुद्र के समीप जब आग्नेयकोण में पहुँचा, तब इन्द्र ने उसे छल करके चुरा लिया। इन्द्र उस घोड़े को कपिल मुनि के समीप बाँध कर अपने लोक को चले गये। जब राजपुत्रों ने यह देखा कि घोड़ा अदृश्य हो गया है, तो उन्होंने सम्पूर्ण पृथ्वी पर उसकी खोज की। जब कहीं पता नहीं चला, तो उन्होंने पृथ्वी को खोद डाला। पृथ्वी के गर्भ में जा कर उन्होंने यह देखा कि कपिल मुनि के पास वह घोड़ा बँधा हुआ है तथा मुनि ध्यान में मग्न बैठे हैं।

हे नारद ! घोड़े को वहाँ देखते ही सब राजपुत्रों ने एक साथ चिल्लाकर कहा—"इस धूर्त्त को तो देखो कि यह हमारा घोड़ा चुरा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:55 PM

कर तपस्या करने का ढोंग कर रहा है।" इतना कह कर वे कपिल मुनि को मारने के लिए दौड़े। उनकी चिल्लाहट सुनकर कपिल मुनि की समाधि भंग हो गयी। ज्योंहि मुनि की दृष्टि उन राजपुत्रों पर पड़ी, त्योंही वे सब जल कर भस्म हो गये। केवल पंचजन्य नामक एक बालक, जिसे असमंजस भी कहा जाता है और जो दूसरी रानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था, जीवित बचा रहा। उस असमंजस के पुत्र अंशुमान ने कपिलदेव के पास पहुँच कर उनकी बहुत प्रार्थना की तथा घोड़े को वापस लाकर, अपने पितामह का यज्ञ पूर्ण कराया।

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! आप अंशुमान का वृत्तान्त विस्तारपूर्वक कहने की कृपा करें।" ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! असमंजस राजा सगर की केशिनी नामक रानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। वह अपने पूर्वजन्म में एक योगी था। योग भ्रष्ट हो जाने के कारण ही उसने राजा के घर जन्म पाया था। बचपन में वह अयोध्या के बालकों को एकत्रित कर सरयू नदी के जल में डुबा कर मार डालता तथा अनेक प्रकार के उपद्रव मचाता था। जब प्रजा उसके अत्याचार से बहुत दुःखी हुई, तो राजा सगर ने असमंजस को घर से बाहर निकाल दिया। उस समय वह उन सब बालकों को, जिन्हें उसने सरयू नदी के जल में डुबा कर मार डाला था, जीवित अवस्था में पुनः लौटा आया।

हे नारद ! इसी असमंजस का पुत्र अंशुमान था। वह अपने पिता महाराजा सगर की अत्यन्त सेवा किया करता था। अस्तु, जब श्यामकर्ण घोड़ा लौट कर नहीं आया तथा राजा सगर के साठ सहस्त्र पुत्र भस्म हो गये, तब अंशुमान घोड़े का पता लगाने के लिए घर से निकला। वह अपने चाचाओं द्वारा खोदे हुए मार्ग से पृथ्वी के भीतर कपिल मुनि के समीप जा पहुँचा। अंशुमान ने मुनि को दंडवत्-प्रणाम तथा सेवा द्वारा प्रसन्न कर दिया। तब विष्णु जी के अवतार कपिलदेव जी ने प्रसन्न हो कर उससे यह कहा—"हे अंशुमान ! तुम इस घोड़े को ले जा कर राजा सगर का यज्ञ पूर्ण कराओ। तुम्हारे साठ सहस्त्र चाचा यहाँ जल कर भस्म हो गये हैं। जब ये गंगा जल का स्पर्श पावेंगे तभी,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:55 PM

इन्हें मुक्ति मिलेगी। अस्तु, तुम गंगा जी को पृथ्वी पर लाने का उपाय करो।'' मुनि के इन वचनों को सुनकर अंशुमान घोड़े को लेकर घर लौट आया तथा राजा सगर ने अपना यज्ञ पूर्ण किया। इस प्रकार सौ अश्वमेध यज्ञ करने के उपरान्त राजा सगर अंशुमान को राज्य सिंहासन पर बैठा कर, स्वयं तपस्या करने के हेतु वन में चले गये।''

बाईसवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! आप मुझे राजा सगर के साठ सहस्त्र पुत्रों तथा असमंजस के जन्म का वृत्तान्त सुनाने की कृपा करें।'' ब्रह्मा जी बोले—''हे पुत्र ! सुनो, राजा सगर की दो रानियाँ थीं। पहली का नाम सुमति तथा दूसरी का केशनी था। इन दोनों रानियों ने अपनी सेवा द्वारा ऊर्ज्ज मुनि को अत्यन्त प्रसन्न किया। जब मुनि ने उन्हें वर माँगने के लिए कहा, उस समय सुमति ने यह कहा—''हे मुनि ! आप मुझे साठ सहस्त्र पुत्र दीजिये।'' केशिनी ने यह कहा—''हे मुनि ! मैं केवल एक पुत्र ही चाहती हूँ।'' तब मुनि ने उन्हें अभिलषित वर प्रदान किया। फलस्वरूप सुमति के गर्भ से एक तूँबी उत्पन्न हुई। उस तूँबी में छोटे-छोटे साठ सहस्त्र बीज भरे हुए थे। जब उस तूँबी को घृत के कुण्ड में डाला गया, तब उससे साठ सहस्त्र बालक उत्पन्न हुए। वे सब बालक ही कपिल देव मुनि की क्रोधाग्नि में पड़ कर भस्म हो गये।

हे नारद ! मुनि के आशीर्वाद से केशनी ने एक पुत्र को जन्म दिया। वह संसार में पंचजन्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। पंचजन्य से अंशुमान तथा अंशुमान से राजा दिलीप की उत्पत्ति हुई। अंशुमान ने अपने पुत्र दिलीप को राज्य देकर गंगा जी को लाने के लिए घोर तपस्या की, परन्तु मनोरथ पूर्ण होने से पहले ही वे मृत्यु को प्राप्त हो गये। तत्पश्चात् राजा दिलीप भी अपने पुत्र भगीरथ को राज्य देकर गंगा जी को पृथ्वी पर लाने के लिए तप करने लगे। परन्तु वे भी अपने पिता की भाँति

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:55 PM

मनोरथ प्राप्त होने से पहले ही स्वर्गवासी हो गये। तदुपरान्त भगीरथ ने अपने तप द्वारा भगवती गंगा जी को प्रसन्न किया।

हे नारद ! भगीरथ के तप से प्रसन्न हो कर गंगा जी ने उसे दर्शन देकर यह कहा—"हे राजन् ! मैं तुम्हारी इच्छानुसार पृथ्वी पर आने के लिए तैयार हूँ, परन्तु मेरे वेग को रोकने की सामर्थ्य संसार में किसी में नहीं है। जिस समय में आकाश के नीचे गिरूँगी, उस समय अपने वेग के कारण पृथ्वी को फोड़ती हुई, पाताल में चली जाऊँगी। अस्तु, तुम सर्वप्रथम तपस्या द्वारा शिवजी को प्रसन्न करो। वे मेरे वेग को रोकने में समर्थ हैं। पृथ्वी पर गिरते समय वे मुझे अपनी जटाओं में धारण कर लेंगे। तदुपरान्त मैं उनकी जटाओं से निकल कर मन्द गति से बहती हुई तुम्हारी अभिलाषा को पूरी करूँगी।" इतना कहकर जब गंगा जी अन्तर्धान हो गयीं, तब भगीरथ ने शिवजी का तप करना आरम्भ किया। शिवजी ने प्रसन्न हो कर गंगा जी को अपने मस्तक पर धारण करना स्वीकार कर लिया। उस समय राजा भगीरथ को अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ।

हे नारद ! राजा भगीरथ की प्रार्थना पर जिस समय गंगा जी आकाश से गिरीं, उस समय तीनों लोकों में हाहाकर मचने लगा। तब शिवजी ने अपनी जटाओं को खोल दिया। गंगा जी उन जटाओं में इस प्रकार लुप्त हो गयीं कि दिखाई भी नहीं देती थीं। तत्पश्चात् राजा भगीरथ द्वारा प्रार्थना किये जाने पर शिवजी ने अपनी जटाओं में से गंगा जल की तीन बूँदें निचोड़ दीं। उनमें से पहली धारा पाताल को चली गयी, जिसका नाम भोगवती प्रसिद्ध है। दूसरी धारा आकाश को गयी जिसे मन्दाकिनी कहा जाता है। तीसरी धारा राजा भगीरथ के साथ पृथ्वी पर आयी जो भगीरथी के नाम से प्रसिद्ध है। फिर राजा भगीरथ गंगा जी को साथ लिये उस स्थान पर पहुँचे जहाँ सगर के साठ सहस्त्र पुत्रों की भस्म एक ढेर के रूप में पड़ी हुई थी। गंगा जल का स्पर्श पाते ही वे सभी राज पुत्र मुक्त हो कर, स्वर्ग को चले गये। अस्तु, राजा सगर के उपरान्त इक्ष्वाकु वंश में निम्नलिखित राजाओं ने क्रमानुसार राज्य किया—असमंजस, अंशुमान, दिलीप, भगीरथ,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रुतनाभि, सिन्धुदीप, अयुतायु, ऋतुपर्ण (जिन्हें सुदास भी कहा जाता है), अनुपर्ण, मित्रसह (जिन्हें कल्माषपाद भी कहा जाता है), ऋषभ, अनरण्य, मण्डिद्रुम तथा निषध (जिसे खट्वांग भी कहते हैं)। राजा खट्वांग चक्रवर्ती राजा हुआ, अतः उन्हें चक्रवर्ती कहकर भी सम्बोधित किया जाता है।''

तेईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! राजा खट्वांग के पुत्र दिलीप हुए। इन दिलीप को दीर्घबाहु भी कहा जाता है। दिलीप ने अपने गुरु की गाय नन्दिनी की बहुत सेवा की। उस सेवा के प्रताप से उन्हें रघु नामक पुत्र की प्राप्ति हुई। रघु ने सम्पूर्ण पृथ्वी को जीत कर अपना राज्य स्थापित किया। तभी से सूर्यवंश, जो राजा इक्ष्वाकु के नाम पर इक्ष्वाकु वंश के नाम से प्रसिद्ध था, संसार में रघुवंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। राजा रघु के पुत्र का नाम अज था। अज की पत्नी का नाम इन्दुमती था। अज ने अपने सभी शत्रुओं को युद्ध-भूमि में परास्त किया। अज के पुत्र राजा दशरथ हुए। राजा दशरथ पर शनिश्चर ग्रह का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा था। राजा दशरथ ने राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न नामक चार पुत्रों को जन्म दिया। इन चारों में रामचन्द्रजी विष्णु जी के मुख्य अवतार थे।

हे नारद ! इस प्रकार राजा दिलीप के वंश में क्रमानुसार निम्नलिखित राजा हुए—

रघु, अज, दशरथ, रामचन्द्र, कुश, अनित्य, निषध, पुण्डरीक, क्षेमध्वज, दिवा, आविक, परिपत्र, बलि, अस्थिल, वज्रनाभ, खगन तथा कंकनाभ। कंकनाभ जैमिनी के शिष्यों में प्रमुख थे, जिनके द्वारा याज्ञवल्क्य ने योगशास्त्र में दक्षता प्राप्त की थी। कंकनाभ के पश्चात् क्रमशः पुष्य, ध्रुवसिन्धु, सुदिति, अग्निपर्ण, अग्निशीघ्र तथा मरुत्त नामक राजा हुए।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे नारद ! राजा मरुत्त अमर है। उन्होंने ऐसा यज्ञ किया, जैसे कोई दूसरा नहीं हुआ है। कलियुग का आगमन जान कर वे भरतखण्ड को छोड़ कर सप्तर्षियों ने जहाँ आश्रय लिया, उस कलाप ग्राम में जा कर रहने लगे। कलियुग के समाप्त हो जाने पर राजा मरुत्त पुनः भरतखण्ड में आवेंगे तथा सूर्यवंश की वृद्धि करेंगे। मरुत्त के पुत्र राजा वाण हुए। वाण के पश्चात् क्रमशः प्रश्नकृतसिन्धु, उष्ण, सहस्त्रबाहु, पशुशाङ्किक, प्रसेनजित, तक्षक तथा बृहद्बल नामक राजा हुए। बृहद्बल को अर्जुन ने मारा डाला था। इक्ष्वाकु से लेकर वृहद्बलतक सभी राजा इक्ष्वाकुवंशी हैं।

हे नारद ! अब मैं तुम्हें उन राजाओं के नाम सुनाता हूँ, जो इस वंश में आगे चल कर होंगे। बृहद्बल के बृहदराण्य नामक पुत्र उत्पन्न होगा उसके वंश में निम्नलिखित राजा उत्पन्न हो कर अयोध्यापुरी का राज्य करेंगे—

उरुकत्रऋषि, वत्सनवृद्धि, प्रतिव्योम, द्वारक, सहदेव, वृहदश्व, भानुमान, प्रतीकाश, सुप्रतीक, मुहदेव, शुनकच्छत्र, पुष्कर, अन्तरिक्ष, सुप्ता अमित्रजित्, वृहद्राज, विरही, कृतंजय, रत्नंजय, शाकप्राश, सिद्धोद, लांगल, प्रसेनजित, क्षुद्रक, रंगयाम, सुरथ तथा सुमन्त्र इक्ष्वाकु वंश केवल राजा सुमन्त्र तक चलेगा। तदुपरान्त दूसरा वंश आरम्भ होगा। सूर्यवंश की यह कथा अत्यन्त पवित्र है। इसे पढ़ने तथा सुनने से दोनों लोकों में आनन्द प्राप्त होता है।''

चौबीसवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! आपने श्राद्धदेव तथा श्राद्ध का वर्णन किया। अब मेरी यह इच्छा है कि आप मुझे श्राद्ध का विधान विस्तारपूर्वक सुनाने की कृपा करें। श्राद्ध करने से पितर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं, परन्तु मैं यह नहीं जानता हूँ कि पितर कौन हैं।''

यह सुनकर ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया—''हे नारद ! जिस प्रकार तुमने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:55 PM

मुझसे पूछा है, उसी प्रकार भीष्म-पितामह ने भी यह प्रश्न मार्कण्डेय मुनि से किया था। उस समय मार्कण्डेय मुनि ने इस सम्बन्ध में सनत्कुमार से जो कुछ सुना था, उस वृत्तान्त का वर्णन किया था। अस्तु, मैं तुम्हें भीष्म पितामह तथा मार्कण्डेय के प्रश्नोत्तर रूप में इस सम्बन्ध में बताता हूँ।

हे नारद ! जिस समय भीष्म पितामह कुरुक्षेत्र में शरशैय्या पर लेटे हुए थे, उस समय राजा युधिष्ठिर ने उनके पास पहुँच कर यह प्रार्थना की—"हे पितामह ! जो मनुष्य संसार में पुत्र की इच्छा रखते हैं, उन्हें क्या करना उचित है? वंश-वृद्धि का कौन-सा उपाय होता है?" भीष्म पितामह ने कहा—"हे राजन् ! जो लोग श्राद्ध करते हैं, उन्हें सम्पूर्ण मनोरथों की प्राप्ति होती है। पितरों के प्रसन्न होने पर वंश की वृद्धि भी होती है तथा दोनों लोकों में अत्यन्त आनन्द मिलता है। अस्तु, पितरों की प्रसन्नता के हेतु श्राद्ध करना ही सब से सुगम साधन है।"

हे नारद ! यह सुनकर युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह से कहा—"हे प्रभो ! आपने पितरों की महिमा का वर्णन किया, वह उचित है, परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि कुछ लोगों के पितर नरक में रहते हैं, कुछ के स्वर्ग में रहते हैं और कुछ के संसार में भ्रमण करते रहते हैं। ऐसी अवस्था में वे अपनी सन्तानों का कल्याण किस प्रकार कर सकते होंगे?" भीष्म जी बोले—हे युधिष्ठिर ! इस सम्बन्ध में, मैं तुम्हें एक वृत्तान्त सुनाता हूँ। एक दिन जब मैं श्राद्ध करने को उद्यत हुआ, उस समय मेरे पिता महाराज शान्तनु दिव्य स्वरूप धारण कर मेरे समीप आये। जब मैंने उनके हाथ में पिण्ड रखना चाहा तो वे मुझ से इस प्रकार बोले—"हे भीष्म ! तुम्हें इस प्रकार पिण्ड देना उचित नहीं है। तुम पिण्ड को कुशा में रख कर पृथ्वी पर रख दो, तभी वह मुझे प्राप्त होगा।" यह सुनकर मैंने उनकी आज्ञानुसार पिण्ड दान किया, तब वे अत्यन्त प्रसन्न हो कर इस प्रकार बोले—"हे भीष्म ! जब तक तुम जीवित रहोगे, तब तक तुम्हारा बल नहीं घटेगा। जब तुम चाहोगे, तभी तुम्हारी मृत्यु होगी। यह वरदान हम तुम्हें देते हैं। इसके अतिरिक्त यदि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:55 PM

तुम और कुछ चाहो तो वह वर माँग लो। ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है, जिसे हम न दे सकें।''

हे युधिष्ठिर ! उनके मुख से यह वचन सुनकर मैंने प्रार्थना करते हुए यह कहा—''हे महाराजा ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं, तो आप मुझे पितर एवं श्राद्ध के सम्बन्ध में सब वृत्तान्त सुनाने की कृपा करें।'' तब महाराज ने मुझे उत्तर देते हुए यह कहा—''हे भीष्म ! हमने एक बार मार्कण्डेय मुनि से पितृ कल्प के बारे में पूछा था। उस समय उन्होंने हमें जो उत्तर दिया, वह हम तुम्हें सुनाते हैं। मार्कण्डेय जी ने हमें सुनाया कि एक बार हम तपस्या कर रहे थे, उसी समय हमारी दृष्टि अचानक आकाश की ओर उठ गयी। तब हमने यह देखा कि एक विमान में अँगूठे के समान आकार वाला एक बालक बैठा हुआ, अन्तरिक्ष में उड़ता चला जा रहा है। हमने उस बालक को दण्ड्वत-प्रणाम करने के उपरान्त यह कहा—''हे प्रभो ! आप कौन हैं, यह हमें बताने की कृपा करें?'' उस समय उस बालक ने उत्तर दिया—''हे मार्कण्डेय ! हमारा नाम सनत्कुमार है। हम चार भाई हैं तथा हम सभी अन्तरिक्ष में भ्रमण करते रहते हैं।'' यह सुनकर हमने सनत्कुमार जी से यह कहा—''हे प्रभो ! आप मुझे पितृ कल्प का वर्णन सुनाने की कृपा करें।'' तब सनत्कुमार जी ने जो उत्तर दिया, वह इस प्रकार है—

सनत्कुमार जी ने कहा—''हे मार्कण्डेय ! पूर्वकाल में जब ब्रह्मा जी ने देवताओं को उत्पन्न किया, तो उन्होंने सब को यह आज्ञा दी कि तुम हमारी सन्तान हो, अस्तु, यज्ञ किया करना, परन्तु देवताओं ने ब्रह्मा जी की इस आज्ञा को नहीं माना। वे केवल अपने ही प्रयोजन में लगे रहे। तब ब्रह्मा जी ने अत्यन्त क्रुद्ध हो कर यह शाप दिया—''हे देवताओ ! तुमने हमारी आज्ञा का तिरस्कार किया है। अस्तु, तुम सब ब्रह्मज्ञान एवं सत्यज्ञान से रहित हो कर माया में भटकते रहोगे।'' ब्रह्मा जी के इस शाप के कारण सब देवताओं का ज्ञान नष्ट हो गया। तब वे अत्यन्त दुःखी हो कर उनकी शरण में गये और अत्यन्त सेवा करके यह कहने लगे—''हे पिता ! आप हमारे अपराध को क्षमा कर, पुनः ज्ञान

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रदान करें। उस समय ब्रह्मा जी ने उनसे यह कहा—"हे देवताओ! तुम सब अपने विमानों से नीचे उतर कर, अभिमान त्याग, अपने पुत्रों के पास जाओ और इस सम्बन्ध में उनसे प्रार्थना करो।"

ब्रह्मा जी की इस आज्ञा के अनुसार सब देवता अपने पुत्रों के पास गये तथा उनसे यह कहने लगे कि तुम हमें ज्ञान प्रदान करो। उस समय उन सभी पुत्रों ने अपने-अपने पिताओं को सम्बोधित करते हुए इस प्रकार कहा—"हे पुत्रो! तुम अब पूर्ववत् पुनः ज्ञान प्राप्त करोगे।" जब देवताओं ने अपने पुत्रों के मुख से अपने लिए 'पुत्र' सम्बोधन सुना, तो वे अत्यन्त आश्चर्य में भर कर ब्रह्मा जी के पास गये तथा लज्जित हो कर यह प्रार्थना करने लगे—"हे पिता! यह तो बड़ा अन्धेर है कि हमारे पुत्र मुझ को अपना लड़का कहते हैं। आप कृपा करके यह भेद हमें समझावें। देवताओं की प्रार्थना सुनकर ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया—"हे देवताओ! तुम्हारे पुत्र ज्ञानी तथा विद्वान् हैं। तुमने जिन्हें उत्पन्न किया है, वे सब धर्म की वृद्धि करने वाले हैं। अस्तु, तुम सभी देवता परस्पर एक-दूसरे के पुत्र हो। अब तुम्हें यह उचित है कि तुम सब मिलकर यज्ञ करो, तभी हम तुम्हें आनन्द प्रदान करेंगे।"

हे मार्कण्डेय! ब्रह्मा जी के मुख से पितरों का यह मुख्य वृत्तान्त जान कर, सब देवता अत्यन्त प्रसन्न हुए। उसी समय से सब देवता तथा पितर संयुक्त हो कर संसार के सम्पूर्ण कार्यों को करते हैं। जो मनुष्य पितरों का श्राद्ध करते हैं, वे अपने सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त करते हैं। सभी पितर परस्पर एक-दूसरे के पुत्र हैं। इनमें सात प्रकार हैं। तीन प्रकार के पितर शरीर रहित हैं तथा चार प्रकार के पितर शरीरधारी हैं। हे मार्कण्डेय! पितरों की ऐसी महिमा जान कर तुम उनकी भक्ति करो। जप तथा योग आदि उपायों द्वारा भी जो परमपद को प्राप्त नहीं होता, वह प्रेमपूर्वक पितरों की सेवा करने से मिल जाता है। जो मनुष्य अपने गोत्र का उच्चारण कर, शुद्ध-मंत्रों द्वारा पितरों को पिण्डदान करते हैं, वे सदैव प्रसन्न रहते हैं। श्राद्ध के समय पिता, पितामह आदि सभी पिण्ड ग्रहण करने के लिए आते हैं। पितरों को तर्पण देने वाले दोनों लोकों में सदैव आनन्दित रहते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:56 PM

मार्कण्डेय मुनि बोले—"हे शान्तुन ! इस प्रकार पितरों की महिमा सुनाकर सनत्कुमार ने मुझे दिव्य दृष्टि प्रदान की। अस्तु, तुम्हें भी यह उचित है कि तुम पितरों की भक्ति करो, क्योंकि पितरों के समान श्रेष्ठ अन्य कोई नहीं है। जो पितरों की महिमा को पढ़ते हैं अथवा सुनते हैं, वे भी दोनों लोकों में अत्यन्त आनन्दित रहते हैं।"

पच्चीसवाँ अध्याय

यह वृत्तान्त सुनाकर भीष्म पितामह ने राजा युधिष्ठिर से कहा—"हे राजन् ! महाराज शान्तनु इतना कहकर पिण्डदान ग्रहण कर अन्तर्धान हो गये तब मैंने मार्कण्डेय मुनि के पास जा कर पितृकल्प के संबन्ध में पूछताछ की। उस समय मार्कण्डेय जी ने मुझे पितृकल्प के सम्बन्ध में सुनाते हुए यह कहा था—"हे भीष्म ! पूर्वकाल में भरद्वाज मुनि ने सात पुत्रों को जन्म दिया था। वे सब बड़े योगाभ्यासी हुए, परन्तु किसी कुकर्म के कारण योग भ्रष्ट हो, दूसरे जन्म में विश्वामित्र मुनि के पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए। उस समय उनके नाम इस प्रकार थे—1. पाकदिष्ट, 2. क्रोधन, 3. उदित, 4. हनुसर्प, 5. शुनक, 6. विषसर्प तथा 7. पितृवर्त्ती। इन सातों ने गर्ग मुनि को अपना गुरु बनाया। तदुपरान्त विश्वामित्र ने एक बार अप्रसन्न हो कर इन सातों लड़कों को शाप देते हुए अपने आश्रम से निकाल दिया। तब वे गर्ग के यहाँ चले गये। गर्ग मुनि के यहाँ एक कपिला गाय थी। वह प्रतिवर्ष एक बछड़े को जन्म देती थी। एक दिन वह गौ बिना किसी चरवाहे के अकेली वन में चली गयी। तब गर्ग मुनि ने इन सातों को गाय ले आने के लिए भेजा।

हे भीष्म ! जिस समय वे सातों गाय को लेकर लौट रहे थे, उसी समय उन्हें बड़े जोर की भूख लगी। तब उन्होंने अपनी बालबुद्धि के अनुसार गौ को मार कर भूख मिटाने का विचार किया। उनमें से कुछ बालक तो गाय को मारने के पक्ष में थे और कुछ यह कहते थे कि गुरु की गाय को मारना ठीक नहीं है। अन्त में, जो बालक सबसे छोटा था

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

और पितरों का भक्त था, उसने सब लोगों को सम्बोधित करते हुए यह सुझाव दिया कि तुम लोग सर्वप्रथम पितरों का आवाहन करके श्राद्ध करो, तदुपरान्त इस गाय को मारकर खा लो। ऐसा करने पर कोई पाप नहीं लगेगा। छोटे भाई की बात सब भाइयों को पसन्द आ गयी। तब उन्होंने गाय को मार कर अपनी भूख को बुझाया और गुरु के पास जा कर यह कह दिया—"हे गुरुदेव ! गाय को तो सिंह खा गया है, केवल उसका बच्चा शेष रह गया है।" गर्ग मुनि अत्यन्त कृपालु तथा सीधे थे। अस्तु, उन्होंने इस कथन को सत्य समझकर, कुछ नहीं कहा।

हे भीष्म ! मृत्यु के उपरान्त वे सातों भाई एक व्याध के घर में उत्पन्न हुए। यद्यपि उन्होंने वहाँ व्याध का जन्म पाया था, तो भी पूर्वजन्म के कारण वे जीवों की हिंसा नहीं करते थे। उन्होंने सारंग देश में स्थित हो कर धर्मव्रत का कठोर पालन किया। पूर्वजन्म में उन्होंने पितरों का तर्पण करने के उपरान्त गोवध किया था, इसलिए वे पूर्वजन्म के हाल तथा ज्ञान नहीं भूले थे। व्याध के घर जन्म लेने पर उनके नाम इस प्रकार हुए—1. नरवीर, 2. निवृत्ति, 3. शान्त, 4. निर्मन, 5. क्रतु, 6. शशि तथा 7. मातृव्रती। जब इनके माता-पिता मर गये तो ये सातों धनुष-बाण छोड़ कर, धर्म-मार्ग में स्थित हुए और समय आने पर मृत्यु को प्राप्त हुए।

हे भीष्म ! चौथे जन्म में वे सातों हिरण हुए और एक साथ ही कालिञ्जर पर्वत पर रहने लगे। उस समय उनके नाम इस प्रकार थे—1. नित्य, 2. त्रसित, 3. उन्मुख, 4. बधिर, 5. भद्र, 6. अनेत्र तथा 7. नारदप्रिय। हिरण के जन्म में भी उन सातों को अपने पूर्व जन्मों का स्मरण रहा। कुछ समय पश्चात् वहाँ भी वे मृत्यु को प्राप्त हुए। आज तक कालिञ्जर पर्वत पर उनके चरण-चिह्न दिखाई देते हैं।

हे भीष्म ! पाँचवें जन्म में ही वे शरद्वीप में चकवा-चकवी हो कर उत्पन्न हुए। उस समय उनके नाम इस प्रकार थे—1. निःस्पृह, 2. निर्मम, 3. शान्त, 4. अद्वन्द, 5. अपरग्र, 6. वृत्त तथा 8. निवृत्त। इस जन्म में भी उन्हें पूर्व-जन्म का स्मरण रहा। अस्तु, नदी के तट पर तपस्या करते हुए वे मृत्यु को प्राप्त हुए।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:56 PM

हे भीष्म ! छठे जन्म में वे मानसरोवर में जा कर हंस हुए। उस समय उनके नाम इस प्रकार थे—1. सुमन, 2. सुवाक्, 3. सिद्ध, 4. पंचम, 5. शुद्रदर्शन, 6. सुनेत्र तथा 7. स्वतन्त्र। मानसरोवर वहाँ स्थित है, जहाँ से सरयू नदी का उद्गम हुआ है। वह स्थान योगी, तपस्वी एवं सिद्धों के रहने का है, वहाँ भगवान् सदाशिव सदैव विराजमान रहते हैं। ये सातों हंस वहीं रहकर अपने पूर्वजन्मों का स्मरण किया करते तथा मन ही मन भगवान् सदाशिव का ध्यान धरते रहते थे।

हे भीष्म ! अब तुम दूसरा वृत्तान्त सुनो। इस पृथ्वी पर कम्पिला नामक एक देश है जो तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। वहाँ विभ्राज नामक एक धर्मात्मा राज्य करता था। एक दिन वह अपनी रानियों सहित शिकार खेलता हुआ मानसरोवर के समीप वन में जा पहुँचा। उस राजा की शोभा तथा सामग्री को देखकर स्वतंत्र नामक सब से छोटे हंस ने अपने मन में यह अभिलाषा की कि मैं इस राजा के समान हो जाऊँ तो बहुत शुभ हो। यदि मुझे अपने सम्पूर्ण नियम, तप आदि शुभ-कर्मों के प्रताप से राजा का जन्म मिले, तो इससे बढ़कर सुख कोई अन्य नहीं होगा। जिस समय स्वतन्त्र ने अपनी अभिलाषा अन्य हंसों पर प्रकट की, उस समय शुद्रदर्शन तथा सुनेत्र नामक दोनों हंसों ने यह कहा—"यदि तुम राजा बनो तो हमारी यह इच्छा है कि हम दोनों तुम्हारे मंत्री हों।" अपने भाइयों की बात को सुनकर सुवाक् बोला—"शिवजी की कृपा से स्वतंत्र कम्पिला नगर का राजा होगा तथा शुद्रदर्शन और सुनेत्र उनके मंत्री होंगे। यह सुनकर सुमन ने उत्तर दिया—"ये तीनों कुछ दिनों तक राजसुख भोग कर अन्त में योग मार्ग ग्रहण करेंगे। यह मेरा कथन है।" इस प्रकार परस्पर वार्तालाप करके वे सभी चुप हो गये।

हे भीष्म ! इसके उपरान्त राजा विभ्राज शिकार आदि खेल कर अपनी राजधानी में लौट आया। कुछ समय बाद वह अपने अनुज नामक पुत्र को राज्य सौंप कर स्वयं तपस्या करने के लिए उसी मानसरोवर पर जा पहुँचा, जहाँ वे सातों हंस निवास करते थे। राजा विभ्राज ने वहाँ कठिन तप करके परम पद को प्राप्त किया। जिस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:56 PM

स्थान पर उसने तप किया था, वह स्थान विभ्राजित-वन के नाम से इस संसार में प्रसिद्ध हुआ।

हे भीष्म ! इसके पश्चात् वे तीनों हंस, जिनके हृदय में राजा तथा मंत्री बनने की अभिलाषा उत्पन्न हुई थी, मृत्यु को प्राप्त कर, कम्पिलापुरी में उत्पन्न हुए। उनमें से स्वतन्त्र नामक हंस राजा बना और संसार में ब्रह्मदत्त के नाम से प्रसिद्ध हुआ। शुद्रदर्शन तथा सुनेत्र नामक दोनों हंसों ने एक श्रेत्रिय ब्राह्मण के घर में जन्म लिया। वे पाञ्चक तथा कुण्डरीक नाम से प्रसिद्ध हुए। जब ब्रह्मदत्त बड़ा हुआ तो कम्पिला देश का राजा तपस्या करने के लिए वन में चला गया। तब ब्रह्मदत्त राजा हो कर प्रजा का पुत्र के समान पालन करने लगा तथा श्रेत्रिय ब्राह्मण के पुत्र उसके मंत्री हो गये। इस प्रकार शिवजी की कृपा से उन्होंने अपने-अपने मनोरथों को प्राप्त किया। राजा ब्रह्मदत्त की रानी का नाम सुनीता था।

हे भीष्म ! शेष चार हंसों ने भी, जिन्होंने सांसारिक सुख का भी कोई लोभ नहीं किया था, एक श्रेत्रिय ब्राह्मण के घर में जन्म लिया। उस समय उनके नाम इस प्रकार हुए—

1. भ्रष्ट, 2. महात्मा, 3. नित्यदर्श तथा 4. निरतशुक। ये चारों बड़े ज्ञानी तथा योगभ्यासी हुए। इस प्रकार वे तीनों भाई—जो राजा तथा मंत्री बने थे, अपने योगपद से च्युत हो गये, परन्तु ये चारों पहले के समान योगमार्ग में संलग्न हुए। एक बार इन चारों ने महापथ की यात्रा करने का निश्चय किया।''

छब्बीसवाँ अध्याय

मार्कण्डेय जी ने कहा—''हे भीष्म ! जिस समय उस ब्राह्मण ने यह देखा कि उसके चारों पुत्र महापथ की यात्रा को जाने को प्रस्तुत हैं, उस समय उसने अत्यन्त दुःखी हो कर यह कहा—''हे पुत्रो ! तुम चारों तो महापथ की यात्रा को जाते हो, मैं अकेला घर पर रह कर क्या

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:56 PM

करूँगा? अब या तो तुम मुझे भी अपने साथ लेते चलो, अन्यथा मेरे क्रिया-कर्म का उपाय करते जाओ, जिससे मुझे इस वृद्धावस्था में कष्ट न भोगना पड़े। मैं इतना दरिद्र हूँ कि घर में भोजन के लिए कुछ नहीं है। मेरे धन के रूप में केवल तुम चारों ही हो। अस्तु, मुझे अकेला छोड़कर जाना तुम्हें उचित नहीं है।" यह सुनकर उन लड़कों ने उत्तर दिया—"हे पिता ! तुम कम्पिला नगरी के राजा ब्रह्मदत्त तथा उसके दोनों मन्त्रियों के पास जा कर हमारा संदेश कहना। वे तुम्हें असंख्य धन दे देंगे जिससे तुम्हारा जीवन सुखपूर्वक कट जायेगा।"

हे भीष्म ! इतना कहकर उन्होंने राजा ब्रह्मदत्त तथा उसके मन्त्रियों के नाम एक पत्र इस आशय का लिखा—"हे भाइयो ! हम तुम पूर्वजन्म के भाई हैं। पहले जन्म में कुकर्म करने के कारण हम व्याघ्र हुए। तदुपरान्त मृग, चक्रवाक तथा हंस हुए। तुमने वन में एक बार राजा को देखा, जिससे तुम्हारी आसक्ति राज्य पाने में हुई। उस आसक्ति के कारण तुम योग-भ्रष्ट हो कर, राजा तथा मंत्री बने हो और हम चारों इस ब्राह्मण के घर में उत्पन्न हुए हैं। अब हम लोग महापथ की यात्रा पर जा रहे हैं। अस्तु, उचित है कि तुम भी घर में व्यर्थ पड़े न रहकर हमारा साथ दो। हम अपने पिता को तुम्हारे समीप भेज रहे हैं। तुम उन्हें बहुत-सा धन देकर प्रसन्न करना तथा अपने पुत्रों को राजकाज सौंपकर हमारे पास शीघ्र आना।"

हे भीष्म ! इस प्रकार पत्र लिख कर उन चारों ने अपने पिता को विदा किया और स्वयं महापथ की यात्रा को चल दिये। वह ब्राह्मण अत्यन्त प्रसन्न हो कर, धन प्राप्त करने के लिए कम्पिला पुरी में जा पहुँचा, परन्तु उसे वहाँ राजा से भेंट करने का अवसर नहीं मिला। तब वह एक स्थान पर ठहर कर, राजा से भेंट करने की प्रतीक्षा करने लगा। संयोगवश उन्हीं दिनों राजा के घर एक पुत्र का जन्म हुआ। उसका नाम विश्वक्सेन रखा गया। विश्वक्सेन गुण, सौन्दर्य, बल तथा बुद्धि में अद्वितीय था। पुत्र उत्पन्न होने पर राजा ब्रह्मदत्त अपनी रानी तथा मन्त्रियों को साथ लेकर भ्रमण करने के लिए वन में जा पहुँचा, वहाँ उसने अनेक प्रकार से आनन्द मनाया।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:56 PM

हे भीष्म ! एक दिन राजा ने वन में किसी पशु को मैथुन करते हुए देखा, तब उसने यह इच्छा प्रकट की कि हम भी अपनी रानी के साथ संभोग करें। अस्तु, जब वह इस इच्छा से रानी के पास गया, तब रानी ने नम्रता, क्रोध, लज्जा, संकोच तथा विनय का आश्रय लेकर राजा को संभोग करने से रोका। जब राजा ने उसकी यह गति देखी तो पूछा—"हे रानी ! तुम इस प्रकार हठ तथा निषेध क्यों कर रही हो सो मुझे बताओ।" रानी ने उत्तर दिया—"हे राजन् ! यदि मैं इसका कारण आपको बता दूँगी, तो मेरी तुरन्त मृत्यु हो जायेगी। अस्तु, आप इस संबंध में मुझसे कुछ भी पूछने की कृपा न करें।" रानी के यह वचन सुनकर राजा अत्यन्त आश्चर्यचकित हो, निर्जल व्रत धारण कर, जगदीश्वर का ध्यान करने लगा। जब उसे व्रत रखते हुए छः दिन तथा छः रात व्यतीत हो गयी, तब परमेश्वर ने प्रकट होकर राजा से यह कहा—"हे राजन् ! प्रातःकाल होने पर तुम्हें सब वृत्तान्त ज्ञात हो जाएगा।"

हे भीष्म ! इतना कहकर जब परमेश्वर अन्तर्धान हो गये। तब प्रातःकाल होने पर राजा अपनी रानी तथा मंत्री को साथ लेकर राजधानी की ओर लौट चला। जिस समय वह राजधानी को लौट रहा था, तभी मार्ग में अवसर पा कर उस ब्राह्मण ने, जो राजा, के अन्य चार भाइयों का पिता था, वह पत्र राजा को दिया। उस पत्र को पढ़ते ही राजा का मन संसारी मोह-माया से विरक्त हो गया। तब उसने ब्रह्मण को बहुत-सा धन देकर विदा कर दिया। फिर स्वयं भी अपने पुत्र को राज्य-सिंहासन सौंप कर रानी सहित तपस्या करने के हेतु महापथ की यात्रा पर चला गया।

हे भीष्म ! जब राजा मानसरोवर को जा पहुँचा, तब वहाँ उसकी सुमीता नामक रानी ने, जो देवल की पुत्री थी, उसे बताया—हे स्वामिन् ! उस समय मैंने आपके साथ जो संभोग नहीं किया था, उसका कारण यह था कि मैं आपको संसारी भोग-विलास से विरक्त करके, यथार्थ मार्ग पर लाना चाहती थी। ईश्वर की कृपा से मेरा यह मनोरथ पूर्ण हुआ। आप इस अपराध के लिए मुझे क्षमा प्रदान कर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:56 PM

दें।" रानी के मुख से यह वचन सुनकर राजा ब्रह्मदत्त को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। तदुपरान्त वह वहीं रहकर, रानी सहित भगवान् शिवजी की तपस्या करने लगा और अन्त में परमपद को प्राप्त हुआ।

हे भीष्म ! कुण्डरीक नामक जो भाई मंत्री था, वह भी राजा के चले जाने के उपरान्त अपने पूर्वजन्मों का स्मरण कर, संसारी मोह-माया त्याग, सांख्यशास्त्र की रीति से योग धारण कर मुक्त हो गया तथा पांचक नामक दूसरा मंत्री भी वेद की रीति के अनुसार शिवजी का तप कर, योग-मार्ग द्वारा परमपद को प्राप्त हुआ। इस प्रकार विश्वामित्र के सातों पुत्र अनेक जन्मों में अनेक शरीर धारण करने के उपरान्त मोक्ष को प्राप्त हुए, उनकी मुक्ति का कारण पितरों की सेवा ही समझनी चाहिए। पितरों की भक्ति करने से मोक्ष अवश्य प्राप्त होती है।

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! भीष्म पितामह के मुख से पितरों की ऐसी महिमा सुनकर युधिष्ठिर को अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त हुई। तब से उन्होंने अपना मन पितरों की सेवा में विशेष रूप से लगाया। पितरों का यह चरित्र अत्यन्त पवित्र है। जो लोग इसे पढ़ते, सुनते अथवा दूसरों को सुनाते हैं, वे संसार में सब प्रकार के आनन्द प्राप्त कर, अन्त में मुक्त हो जाते हैं।"

इतनी कथा सुनाकर सूत जी ने कहा—"हे शौनकादि ऋषियो ! ब्रह्मा जी के मुख से शिवजी के गुण-चरित्रों का श्रवण कर, नारद जी अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा भगवान् सदाशिव का स्मरण-कीर्तन करते हुए, उनसे विदा लेकर भ्रमण करने हेतु चल दिये। भगवान् सदाशिव की महिमा तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। जो लोग श्री शिव-गिरिजा का स्मरण, पूजन एवं ध्यान करते हैं, उन्हें दोनों लोकों में अवश्य ही आनन्द प्राप्त होता है।"

इति श्रीशिवपुराणे ब्रह्मानारदसम्वादे भाषायां
एकादशखण्डस्समाप्तः ॥ ११ ॥ शिवार्पणमस्तु

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

12:57 PM

View 54

988 / 988